पब्लिशर—पाण्डुरङ्ग जावजी, } निर्णयसागर प्रेस, नंबर २६।२८
प्रिन्टर—रामचंद्र येसू शेडगे. } कोलभाट लेन, मुंबई.

श्रीः।

भूमिका।
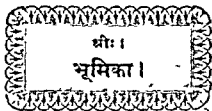
प्रिय पाठकगण !

संसारमें ऐसा कौनसा हिन्दुजाति मनुष्य है जो श्रीआनन्दकन्द वृन्दावनचन्द्र श्रीकृष्णचन्द्रकी लीलाको सुनना न चाहताहो. श्रीमहाराज जसोदानन्दजीके बालचरित्र ऐसे हैं कि भक्त इनके पढ़ने सुननेसे गद्गद कंठ और रोमाचित देह होजाते हैं और इस चरितामृतका श्रवणपुटसे पान करनेवालोंके लिये सांसारिक सब पदार्थ तुच्छ हैं, जो कोई भगवान्‌की बाललीलाओंका मनन करते हैं उनहीका जीवन सफल है और वेही धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थोंके भागी हैं।

देखिये एकतो श्रीकृष्णचन्द्रका सुन्दर चरित्र और दूसरे श्रीयुत परमभक्त ब्रजवासीदासजीकी कविता कैसी सरल और मधुर है कि बालसे वृद्धतक समझते हुये चले जाओ अक्षर २ में भक्तिरस टपकरहाहै, इतना होनेपरभी पाठकोंकी सुगमताके

श्री।

व्रजविलासकी लीलाओंका सूचीपत्र.

पूर्वार्द्धम्।

अथोत्तरार्द्धम् ।

विषयानुक्रम समाप्त.

श्रीः
श्रीब्रजवासीदासकृत
ब्रजविलास.

मुरलीधरजी.

श्री।

श्रीकुञ्जविहारिणे नमः।

अथ व्रजविलास।

मंगलाचरणम्.

सोरठा–होत गुणनकी खान, जाके गुण उर गनतही ॥
देवो सु दयानिधान, वासुदेव भगवत हरि ॥ १ ॥
मिटत तापत्रय फाँसि, जासु नाम मुखसों कहत ॥
वन्दों सो शुभराशि, नन्दसुवन सुन्दर सुखद ॥ २ ॥
अरुण कमलदलनैन, गोपवृन्दमर्दन शुभग ॥
करहु सो मम उर ऐनँ, पीताम्बर धर वेणुधर ॥ ३ ॥
वन्दों जगत अधार, कृष्णाग्रज बलदेवपद ॥
अभिमत फलदातार, नीलाम्बर रेवतिरमण ॥ ४ ॥
श्रीगुरु कृपानिधान, वन्दौं पद महि माथ धरि ॥
जासु वचन जलयाँन, नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥ ५ ॥

---

१ दया करो २ तीन प्रकारके ताप ३ पुत्र ४ लाल ५ समूह
६ आभूषण ७ घर ८ बलदेव ९ मनोवाछित १० नाव

वन्दौं सन्त कृपाल, पद सरोजरज राखि शिर ॥
जग हितरत शुभमाल, जिन निजगुण हरि वश करैं॥६॥

पुनि वन्दौं ब्रजदेश, परमरम्य पावन परम ॥
महिमा जासु सुदेश, राधानाथ विहारथल ॥ ७ ॥

प्रथम कृष्णकौ तात मनाऊँ * श्रीवसुदेव चरण शिरनाऊँ ॥
बहुरि देवकीपदजलजाता * वन्दन करौं कृष्णकी माता ॥
इनते और कौन बडभागी * ब्रह्म धन्यौ नरतनु जिनलागी ॥
वन्दौं नन्द महरके चरणा * सहित यशोमति मङ्गल करणा ॥
जिनकी महिमा भाग्य बडाई * निगमागम शिव शारद गाई ॥
वन्दौं रोहिणि पदजलजाता * कृष्णाग्रज बलदेवकी माता ॥
कीरतियुत वृषभानु गोपवर * वन्दौं चरणकमल रज शिरधर ॥
तात मात राधा रानीके * त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानीके ॥
कृष्ण कमल दृगनी कमलाके * कलुष विभंजन सब विमलाके ॥
वन्दौं श्रीराधापद अतुल * जिनके ध्यान मिटत भवभै कुल ॥
होत कृष्ण सहजहि वश ताके * प्रेमसहित गुण गावत जाके ॥
वन्दौं सो वृषभानुदुलारी * कृष्ण प्राण जीवन धन प्यारी ॥

दो०—राधाकृष्ण पदाम्बुजन, वन्दौं मैंहि शिर टेक ॥
ब्रजविलास हित दोयतन, प्रगट कियेहैं एक ॥

सो०—वन्दौं युगल किशोर, रूपराशि आनन्दघन ॥
दोऊ चन्द्र चकोर, प्रीति रीति रसवश सदा ॥

अपर गोप गोपी गोपाला * जिनके संग विचरहि नँदलाला ॥
गाय बच्छ बालक ब्रजवासी * जिनके सखा कृष्ण अविनाशी ॥

---

१ चरणकमलोंकी रज २ सुन्दर ३ पवित्र ४ वेदपुराण ५ बलदेवजी ६ पाप ७ डर ८ धारके ९ मायारहित

और जात जो मनहिं विवासी * वन्दौं सकल सुकृतकी रासी ॥
मधुरापुरी नारि नर नागर * गोकुलादि जो ग्राम उजागर ॥
श्रीयमुनासरि पय पुनीता * जासु दरश नहिं यमपुर भीता ॥
श्रवत वापी कूप तड़ागा * श्रीवृन्दावनादि वन बागा ॥
रंग मृग जलचर जीव विभागा * वन्दौं सकल सहित अनुरागा ॥
वन्दौं गिरि गोवर्द्धन देवा * अपर देव तिन सम नहिं सेवा ॥
सुरपति मेटि आदि हरिपूजा * आन देव तिन सम को दूजा ॥
अति रमणीय रेत यमुनातट * उपवन अमित सुभग वंशीवट ॥
जहँ नट श्रीहरि धेनु चराइ * सुन्दर श्यामल कुँवर कन्हाइ ॥
रास विलास जहाँ हरि कीन्हो * भक्तवछल भक्तन सुख दीन्हो ॥

दो०-जड़चेतन ब्रजदेशके, तृण तरु महिरँज जेत ॥
वन्दौं कीट पतङ्ग सब, पुनि पुनि प्रीतिसमेत ॥

सो०-ब्रजजनपद शिरनाय, विनय करौं करजोरि पुनि ॥
मोमनको अभिलाष, पूरण करिये जानजन ॥

ब्रजविलास कछु कहौं बखानी * परम पुनीत जान निजबानी ॥
सो तबलौं नहिं उरमें आवै * जबलग तुम्हरी कृपा न पावै ॥
मैं मन वच क्रम तुम्हरो दासा * तातें पुरवहु मोरी आसा ॥
यद्यपि मति इतनी मोहिं नाहीं * करौं उक्ति कछु निज तेहिमाहीं ॥
तहाँ एक मैं कियो विचारा * या विधि बल अपने उर धारा ॥
श्रीशुकदेव कही हरिलीला * सुनी परीक्षित सब गुणशीला ॥
सूरदास सोइ हरि रससागर * गायो बहुविधि परम उजागर ॥
फैल रह्यो सो त्रिभुवनमाहीं * गावत सुनत सुयश हरषाहीं ॥

१ समूह २ तड़ाग ३ बावड़ी ४ तालाब ५ पक्षी ६ इन्द्र ७ धरतीकी रज ८ पवित्र ९ कविता

विविध प्रकार चरित हरिकेरे * तामहि वरणे सुर[2] घनेरे ॥
सो वह प्रीति रीति सुखदाई * मेरे मन अतिशय करि भाई ॥
सो तो कथा अमित[1] विस्तारा * मोपै पायौ जात न पारा ॥
तामें ब्रजविलास सुखदाई * सो कछु कहिहौं कर चौपाई ॥

उपोद्घातः.

दो०–भाषाकी भाषा करौं, क्षमियो कवि अपराध ॥
जिहिं तिहिं विधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुतिसाध ॥

सो०–हरिपद प्रीति न होय, विन हरिगुण गाये सुने ॥
भवतें छुटन न कोय, विना प्रीति हरिपद भये ॥

तातें मैं सन्तन शिरनाई * गावौं हरियश जनसुखदाई ॥
जो ब्रजमें हरि कियो विलासा * सो कछु कहिहौं सहित हुलासा ॥
यामें इतनी कथा बखानौं * ताकी सूचनका यह जानौं ॥
श्रीवसुदेव देवकी व्याही * चल्यौ कंस पहुँचावन ताही ॥
तहाँ भई नभवाणी[4] वाही * सुनिके कंस डऱ्यौ पुनि ताही ॥
अठयों गर्भ होगयौ याके * तेरी मृत्यु हाथ है ताके ॥
तबै देवकी हतन विचाऱ्यौ * करि विनती वसुदेव उवाऱ्यौ ॥
सब सुत ताहि देनको भाखे * नृप तब दुहुँन बन्दिमें राखे ॥
षट् बालक तिनके नृप मारे * पातक भये भूमिपर भारे ॥
दुखित गई सो हरिके पासा * हरि ताको जिमि दई दिलासा ॥
पुनि संकर्षण गर्भहिं आये * तिनको बहुरि रोहिणी जाये ॥
सो सब कहिहौं मति अनुमाना * जैसी भाँतन सुन्यो पुराना ॥

दो०–पुनि भगवान अनादि अज[6], ब्रह्म सच्चिदानन्द ॥
प्रगट भये वसुदेवगृह, निजइच्छा सुखकन्द ॥

---

१ अनेक २ पंडित ३ बहुत ४ आकाशवाणी ५ षट्देवकी ६ जन्मरहित

सो०–तात मात सुखदैन, सुन्दर रूप दिखायके ॥
कियो परम उरचैन, दूर किये दुखद्वंद्व सब ॥

तात मात पुनि जिमि समझाये * लै गोकुल वसुदेव सिधाये ॥
यशुदा गोद राखि घनश्यामहिं * कन्या तासु गये लै धामहिं ॥
कंसासुर सो कन्या पाई * सो जैसे आकाश सिधाई ॥
तासु वचन सुनि अति भय माना * बालक हनन मंत्र तब ठाना ॥
बजे नन्दघर अनँद बधाये * व्रज युवतिन मिल मङ्गल गाये ॥
भयो नन्दघर अति उत्साहू * व्रजवासिनकी परम उछाहू ॥
प्रीति सहित सो सब सुख गैहो * जितनो निजमतिको बल पैहो ॥
बहुरि कंस पूतना पठाई * सो जैसे हरिके ढिग आई ॥
ताहि मारि जननीगति दीन्ही * प्राण पान करि पावन कीन्ही ॥
कागासुर पुनि जानिधि आयो * ताको पुनि हरि मारि बहायो ॥
बकुन्यो शकट चरणतें धान्यो * तृणावर्तको जानिधि मान्यो ॥
अन्न पराशनादि जे कर्मा * किये नन्द जिमि निजकुलधर्मा ॥

दो०–बालचरित्र पवित्र पुनि, जिमि कीने अभिराम ॥
जानु पाणि चलि सुख दियो, तात मातकौं श्याम ॥

सो०–व्रजजनके मन मोद, चले बहुरि पाँयन कछुक ॥
कीने बालविनोद, नन्द यशोमतिके अजिरं ॥

गर्ग आय लक्षण पुनि भाषे * पुनि सब व्रजवासी अभिलाषे ॥
पुनि बालनसंग खेलन लागे * बालखेल लीला अनुरागे ॥
विप्रपाक जैसे छुर लीनो * चन्दाहेतु बहुरि हठ कीनो ॥
कनछेदन लीला सुखदाई * कहिहौं सब आनन्द बधाई ॥

१ घर. २ मारनेके लिये. ३ माता. ४ पवित्र. ५ सुन्दर. ६ सुदुभन. ७ आंगन.

पुनि हरि खेरत माटी खाई * यशुमति लै साँठी उठिधाई ॥
माता आगे मुख जिमि बायो * ताहीमें त्रिभुवन दिखरायो ॥
शालिग्राम मेलि मुख लीन्हों * नन्दहि पूजामें सुख दीन्हों ॥
अ ह्वावनहित जिमि मचलाये * बहुत भाँति यशुमति फुसलाये ॥
ग्वाल संग बहुरि अनुरागे * माखन चोरीके रस पागे ॥
बहुरों माता क्रोध उपायो * भक्तिहेतु दावेंरी बँधायो ॥
यमलाअर्जुन वृक्ष ढहाये * धैनद सुतनके पाप नशाये ॥
पुनि वनगोचारन मन आन्यों * ग्वालन संग जान हठ ठान्यों ॥

दो०—बहुरि जाय वनमें हन्यौं, वत्सासुर नँदनन्द ॥
ग्वाल संग आनँदसहित, घर आये सुखकन्द ॥
सो०—सो करिके विस्तार, प्रेमसहित सब वरणिहौं ॥
निज मनिके अनुसार, ब्रजवासी प्रभुके गुणन ॥

गोदोहन जैसे पुनि कीन्हों * तात मात मनजन सुख दीन्हों ॥
मोती बये नन्दके धामें * सुर नर लखि चकृत भये जामें ॥
बहुरि जाय वन नन्दकुमारा * बका असुरको वदन विदारा ॥
बहुरों वारचरित चित दीने * भौंरा चकइ खेलन लीने ॥
श्रीराधामों प्रीति बढ़ाइ * कीने चरित लखित सुखदाई ॥
अघा असुर मारयो पुनि जाई * ग्वालन संग छाक वन खाइ ॥
भयो मोह जिमि विधिके मनमें * बालक वत्स हरे तिन वनमें ॥
तिनको रूप आप प्रभु कीन्हा * मनके बासिनको सुख दीन्हों ॥
सो सब कहिहौं कर विस्तारा * अघनाशन प्रभुचरित उदारा ॥
श्रीवृषभानु लली पुनि आइ * जैसे हरिसों गाय दुहाइ ॥

१ छड़ी २ रस्सो ३ कुबेर ४ आश्चर्ययुक्त ५ मुख ६ भक्तोंके ७ पापनाशक

कहिहौं सो रसकथा सुहाई * अति विचित्र जनमन सुखदाई ॥
बहुरो धेनुकको वध कीनो * विपनल्ते ग्वालन रखलीनो ॥

दो०-पुनि नाथ्यो काली उरग, जलमें पैठि मुरारि ॥
यमुनाजल निर्मल कियो, मजतें दियो निकारि ॥

सो०-कियो दवानल पान, राखिलिये मजलोग सब ॥
जिनके कृपानिधान, सदा भक्त संकटहरण ॥

बहुरि प्रलब असुर मन आयो * खेलतमें हरि ताहि नशायो ॥
पनघट यमुनातट पुनि जाई * गोपिनसों रस कियो बन्हाई ॥
चीरहरणलीला पुनि कीनी * कहिहौं सकल प्रेम रसभीनी ॥
पुनि वृन्दावनमें सुखशीला * ग्वालनसंग करी जो लीला ॥
वृन्दावनकी महत बड़ाई * श्रीमुख श्रीवल्लभू सों गाई ॥
कपिपैत्निनसों भोजन लीनों * भक्ति दान तिनकों प्रभु दीनों ॥
पुनि श्रीगोवर्द्धन गिरिराई * मन थापे सुरपैतिहि मिटाई ॥
सुरपति कोप कियो यह जानी * बरष्यो प्रलयकालको पानी ॥
तब प्रभु गिरि करधरि मन राख्यो * जै जै सब मनवासिन भाख्यो ॥
सो सब अनुपम कथा सुहाई * कृष्णकृपातें कहिहौं गाई ॥
नन्दहि पकरि वरुणके दासा * जिमि लै गये वरुणके पासा ॥
लाये श्याम तहाँतें जाई * मनमें भइ आनन्द बधाई ॥

दो०-बहुरों पुर वैकुंठजो, अति पुनीत निजधाम ॥
मजवासिनको करि कृपा, दिखरायो घनश्याम ॥

सो०-सो सब कथा अनूप, अति विचित्र पावन परम ॥
कहिहौं मतिअनुरूप, सन्तजनन मन भावनी ॥

१ सर्प २ ऋषिकी स्त्रियोंमें ३ इन्द्रको

पुनि जो करी श्याम सुखशील * अति अद्भुत ब्रजमें रसलीला ॥
श्रीराधा वृषभानुदुलारी * और सकल ब्रजगोपकुमारी ॥
तिनसों मिल श्रीकुंजविहारी * रस शृंगार लीला विस्तारी ॥
आनँदमयी सकल सुखकारी * गाय तरत भव सब नर नारी ॥
जिमि गोपिन हरिसों मन लायौ * प्रेम पंथ दृढ़करि दिखरायौ ॥
गोरस लै निकसीं ब्रजनारी * जिमि दधि दान लिये बनवारी ॥
भई प्रेम उन्मत्त गुवारी * लोक लाज तनु दशा विसारी ॥
बहुरि चरित्र कुँवरि राधाके * परम पवित्र हरण बाधाके ॥
जैसे मिली श्यामसों जाई * बहुरौं जैसी प्रीति दुराई ॥
पुनि सकेत चरित्र विविधपर * किये प्रिया प्रीतम अतिसुन्दर ॥
गर्व विरह अभिलाष परस्पर * अति रहस्य लीला सुन्दरवर ॥
कहिहौं सकल कथा सुखदाई * भक्ति रसज्ञनके मन भाई ॥

दो०-देखि मुकुरमें लाडिली, पुनि जैसो निजरूप ॥
विवश भई सो गायहौं, लीला परम अनूप ॥

सो०-पुनि नैनन अनुराग, अरु मुरलीकी प्रियकथा ॥
कहिहौं सहित विभाग, प्रेम सुधारससों भरी ॥

बहुरौं शरदरैनि अति पावन * श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तहाँ श्याम बाँसुरी बजाई * घर घरसें ब्रजनारि बुलाई ॥
कियो रास रस रसिक बिहारी * भई प्रेमगर्वित तहँ नारी ॥
अन्तर्धान चरित तब कीन्हौं * गर्व गोपिकनको हरिलीन्हौं ॥
कियो महामङ्गल पुनि रासा * बाढ्यो परमानन्द हुलासा ॥
पुनि जलकेलि करी मनभावन * कहिहौं चरित सकलअलिपावन ॥

१ लाला २ मजबूत ३ छुपाई. ४ आपसमें. ५ शीशा ६ घमंड.

मान चरित लीला सुखदाई * करी बहुरि जिमि कुँवर कन्हाई ॥
विस्तर सहित कहौं सो वरनी * भरी प्रेमरस आनँद करनी ॥
बहुरौं जाय हिंडोला झूले * भये सकल गोपिन अनुकूले ॥
ऋतु बसन्त फागुन जब आयो * कियो फागरँग सब मन भायो ॥
सो रसकथा सकल सुखदानी * मतिसमान सब कहौं बखानी ॥
पुनि विद्याधर श्राप नसायो * अजगर तनतें ताहि छुड़ायो ॥

दो०–शंखचूड़ मान्यो बहुरि, अधम निशाचर नीच ॥
पुनि मान्यो वृषभा असुर, हरि ब्रजवासिन बीच ॥

सो०–वध्यौ बहुरि गोपाल, केसि ब्योमा असुर जिमि ॥
दुष्टदलन नँदलाल, कहिहौं चरित पुनीत सब ॥

बहुरि आय नारद यश गायो * सुनिके श्याम बहुत सुख पायो ॥
तबहिं कंस अक्रूर पठायो * लेन कृष्णको सो ब्रज आयो ॥
भये सुनत ब्रज लोग उदासी * मधुपुरि चले बहुरि सुखरासी ॥
जब अक्रूर हृदय दुख पायो * तब हरि जलमें दरश दिखायो ॥
भये सुखी लखि प्रभुप्रभुताई * सो सब चरित कहौं सुखदाई ॥
गये बहुरि मथुरा रजधानी * मान्यो प्रथम रँजक अभिमानी ॥
बसन लुटाय बसन पहिराये * बहुरि सुदामाके घर आये ॥
कुवजाने चन्दन हरि लीन्हौं * ताको रूप अनूपम दीन्हौं ॥
तोन्यो धनुष असुर बहु मारे * द्विरदँजीति पुनि दन्त उपारे ॥
भिरे बहुरि मल्लनसों जाई * कियो युद्ध तिनसों दोउ भाई ॥
जीति मल्ल सब असुर सँहारे * टन्यो कंस लखि अति बलमारे ॥
गये नृपति पहँ तब दोउ भाई * दियो मंचतें भूमि गिराई ॥

१ अकासके गवये आदि. २ मथुरा. ३ धोबी. ४ कुवलयापीड़ हाथी. ५ धरती.

दो०–मारि कंस पुनि केशधरि, दियौ यमुनजल डारि ॥
उग्रसेन राजा कियौ, चमर छत्र शिरढारि ॥

सो०–बहुरि दियौ सुख जाय, बन्दि काटि पितु मातकी ॥
सुन्दर दरश दिखाय, भयौ तहाँ मङ्गल परम ॥

कहिहौं सकल चरित विस्तारी * भवभयभंजन मङ्गलकारी ॥
करि मधुपुरिके लोग सनाथा * कुबजासदन बसे ब्रजनाथा ॥
नन्द बिदा करि ब्रजहिं पठाये * बिछुरत ब्रजबासिन दुखपाये ॥
हरि तजि नँद आये ब्रज जबही * भइ यशोदा व्याकुल तबही ॥
गोपी सुनि हित कुबजा हरिको * कियो परेखौ अति गिरिधरको ॥
भइ बिरहवश सब ब्रजबाला * कहिहौं सो सब प्रेम बिशाला ॥
पुनि कुलरीति जानि वसुदेवू * हरि हलधरको कियो जनेवू ॥
विद्यानिधि पुनि जानत राई * विद्यापढन लगे दोउ भाई ॥
पूरण काम गुरूके कीन्हे * मरे पुत्र प्रभु तिनके दीन्हे ॥
ज्ञानगर्व उद्धव मन जानी * पठये ब्रजहि श्याम सुखमानी ॥
सो उद्धव गोपीसंवादा * प्रेम भक्ति रसकी मर्यादा ॥
कहौं सो कथा विचित्र सुहाई * भक्त जननकों अति सुखदाई ॥

दो०–पुनि उद्धव जैसे गये, प्रेमभक्तिको पाय ॥
ब्रजबासिनकी सब कथा, कही श्यामसों जाय ॥

सो०–ब्रजहिं रहे ब्रजराज, ब्रजवासिनके प्रेमवश ॥
किये सुरनके काज, धारि चतुर्भुज रूप पुनि ॥

सो द्वारका चरित्र सुहाये * प्रवर पुराणनमें सब गाये ॥
अति विचित्र हरि चरित अपारा * काहू गाय लह्यो नहिं पारा ॥

१ बाल २ सपार ३ कुब्जाके घरसे

मतिसमान बुध जन सब गावैं * गाय गाय तनु पाप नशावैं ॥
हरिपदपकंज प्रीति बढ़ावैं * मन चचलको तहाँ रमावैं ॥
मनविलास हरिको अतिपावन * रम माधुर्य चरित्र सुहावन ॥
तातें कछुक कहतहौं गाइ * सब सन्तनके पद शिरनाइ ॥
यामें कछुव बुद्धि नहिं मेरी * उक्ति उक्ति सब सूरहिकेरी ॥
कियो सूर रससिंधु उधारा * तामें प्रेम तरग अपारा ॥
हरिके चरित रत्न निधि माना * मजविलास सो सुधासमाना ॥
पदरचना करि सूर बखान्यो * कोमल विमल मधुर रस सान्यो ॥
समय समयके राग सुहाये * अति विस्तार भाव मन भाये ॥
ताको स्वाद कह्यो नहिं जाइ * कहत सुनत श्रवणन सुखदाइ ॥

दो०–अतिशय करि मोहत मनहिं, गॅन्थनगुणके सग ॥
कहत बनै तामें नहीं, क्रमसों कथाप्रसग ॥

सो०–मेरे मन अभिलाष, प्रभु प्रेरित ऐसौ भयौ ॥
कहिहौं यह रस भाष, क्रमसों कथा प्रसग सब ॥

तातें निजमनकी रुचि जानी * यहि विधि करौं प्रबध सुबानी ॥
द्वादश चौपाई प्रति दोहा * तह पुनि एक सोरठा सोहा ॥
कहूं कहूं शुभ छन्द सुहाइ * भाषा सरल न अर्थ दुराइ ॥
कहत सुनत समुझत मनभाई * ध्यान रूपमय कथा सुहाइ ॥
कर्म धर्म नहिं नीति बखानी * केवल भक्ति प्रेम सुखदानी ॥
जानि कृष्णके चरित पुनीता * कहिहैं सुनिहैं सन्त सप्रीता ॥
बहुरि कहत दोऊ करजोरी * सुनियो विनय कृपा करि मोरी ॥
चूकपरी जो मोतन होइ * सुनन सुधारि लीजिये सोइ ॥

१ दूर करें २ कमल ३ सूरदासकी ४ अमृत ५ बारह

मैं नहिं कवि न सुजान कहाऊँ * कृष्णविलास प्रीति करि गाऊँ ॥
सो विचार करि श्रवणन कीजै * काव्य दोष गुण मन नहिं दीजै ॥
ऐसें सबको विनय सुहाई * कृष्ण चरित बरणौं सुखदाई ॥
कृष्णचरित आँनदके रासा * मङ्गल करण हरण भववासा ॥

दो०-विघ्न विनाशन शुभ करण, हरण तापत्रयशूल ॥
चरित ललित नँदनन्दके, सकल सुखनके मूल ॥

सो०-चरणकमल उरधार, श्रीराधा नँदलालके ॥
सुन्दररस श्रृंगार, ब्रजविलास अब बरणिहौं ॥

सम्वत शुभ पुराणै शत जानौं * तापर और नर्छेनहि आनौं ॥
माघ सुमास पक्ष उजियारा * तिथि पचमी सुभग शशिवारा ॥
श्रीवसन्त उत्सव दिन जानी * सकल विश्व मन आनँद दानी ॥
मनमें करि आनन्द हुलासा * ब्रजविलासकौ करौं प्रकासा ॥
वन्दौं प्रथम कमलपदनीके * श्रीवल्लभ आचारज जीके ॥
श्रीलक्ष्मण भट कुँवर उदारा * जन उद्धारन हित अवतारा ॥
माया व्याधि मिटाय अनेका * कियो प्रेम मारग दृढ़ एका ॥
श्रीगोकुलवासि सुख उपजायो * कृष्ण नामको दान चलायो ॥
विरहानलमें सुभग शरीरा * वाणी प्रेम सिन्धु गम्भीरा ॥
हरिप्रापतिकी रीति बताई * विरह रूप करि प्रगट दिखाई ॥
विरह भयो जिनको सब नेमा * विरह रूप धरि जिनको प्रेमा ॥
विरहै भरी भक्ति विस्तारी * तातें गोकुल गैल निहारी ॥

दो०-द्वापरलगु धरि सुरनहित, कृष्ण सँहारे दुष्ट ॥
श्रीवल्लभ वपु धरि कियो, प्रेमपंथ फलि पुष्ट ॥

१तीननरहके तार २धर ३अटारह ४सत्ताईस ५सोमवार ६विरहकी आंच

सो०–मन बच क्रमसों चित्त, श्रीवल्लभ चरणन लग्यो ॥
वही आश वहि चित्त, वहि साधन वहि मुक्तफल ॥

पुनि श्रीवल्लभ कुलहि मनाऊँ * चरणकमल तिनके शिर नाऊँ ॥
श्रीगोकुलमें जिनको धामा * विश्वविदित सुन्दर गुणग्रामा ॥
प्रेमभक्तिकी ज्योति बिराजै * तेज प्रताप जगतपर राजै ॥
जिनके मन्दिर दरसिये ऐसे * नन्द महरिके सुनियत जैसे ॥
तहा कृष्णकी नित नवलीला * बाल विनोद भरी सुख शीला ॥
तिनकी शरण जीव जो आवै * तौ दृढ भक्ति कृष्णकी पावै ॥
देत श्रवैण मन अति सुखदाई * कृष्ण नाम रस सुधा पियाई ॥
भक्ति दानको परम उदारा * जगत विदित श्रीगोकुलद्वारा ॥
नामदै महल वल्लभप्यारी * परम कृपालु दीन दुखहारी ॥
श्रीमोहनजी नाम गुसाईं * सुन्दर श्याम श्यामकी नाईं ॥
परम विशाल कमलदल लोचन * दया दृष्टिउरतापविमोचन ॥
मधुर मनोहर शीतल बानी * प्रेम सुधारसनों लपटानी ॥

दो०–तिन तीरथपनि मधि दियो, कृष्ण नाम मोहिं दान ॥
दीन जानि राख्यो शरण, लगिकै मेरे कान ॥

सो०–तिनके पद उर राख, ब्रजविलास वर्णन करौं ॥
मोमनको अभिलाष, पूरण करिहैं जानि जन ॥

चन्दतहाँ सब सूर सुजानैं * जिन्हैं सूर सम सब कोउ मानैं ॥
प्रेमरूप वाणी परकासा * प्रफुलित अम्बुज मुनि हरिदासा ॥
कृष्णरूप बिन और न देख्यौ * जगत विषय तृणसम करि लेख्यौ ॥
राखे नैन सन्त करि ध्याना * दिव्य दृष्टि करि सुयश बखाना ॥

---

१ घन २ घर ३ कान ४ अमूल ५ चलन ६ प्रयाग ७ सूय ८ कमल

लीला श्याम जन्मभर गाई * रहसकेलि सब प्रगट जनाई ॥
वाणी भांति अनेक बखानी * कृष्णप्रेमरससों लपटानी ॥
चढे कठोर मोहवश जेऊ * होत प्रेमवश सुनिकैं तेऊ ॥
कीन्हीं अति उपकार जगतकौ * मारग दयौ चलाय भगतकौ ॥
मोहि बड़ाई करि नहिं आवै * जिनकौ गायो सब कोउ गावै ॥
चरण शीश धरि तिन्हैं मनाऊँ * यह अपराध क्षमा करि पाऊँ ॥
मोतें यह अति होत ढिठाई * बरत विष्णुपदकी चौपाई ॥
सो मम दोष न उरमें धरिये * सफल मनोरथ मेरौ करिये ॥

दो०–अब सन्तनकी मण्डलिहिं, वन्दतहौं शिरनाय ॥
विना कृपा जिनकी भये, हरियश गाय न जाय ॥

सो०–करिहैं मोहि सहाय, गुणगाहक परहित करन ॥
तिनकौ सहज सुभाय, संतत सन्त कृपालुचित ॥

सन्त मण्डलीको शिर नाऊँ * जिनकी कृपा विमल मति पाऊँ ॥
जिनकी कृपा विघ्न सब नासै * जिनकी कृपा कृष्णगुण भासै ॥
जिनकी प्रेम भक्ति फल पाई * जिनकी कृपा कुमति मिटिजाई ॥
जिनकी कृपा होय गुणनाना * जिनकी कृपा सर्व कल्याना ॥
जिनकी कृपा मोहतम नासै * जिनकी कृपा ज्ञान परकासै ॥
जिनकी कृपा सकल सुखमूला * होहु सो सन्त मोहिं अनुकूला ॥
जय जय जय श्रीकुंजबिहारी * नन्दनन्दन वृषभानु दुलारी ॥
मंगलमूरति आनन्दकारी * लीला ललित भक्तभयहारी ॥
रूपनिधान प्रेमकी रासी * श्रीवृन्दावन धामनिवासी ॥
अखिल लाम गुण सुखके धामा * पूरणकाम श्याम अरु श्यामा ॥

१ गिर २ हमेशा ३ मोहरूपी अधकार ४ पर ५ सब

युगल किशोर ध्यान उर धरिकै * सुभग कमल पद वन्दन करिकै ॥
ब्रजविलास रस परम हुलासा * गावतहीं ब्रजवासी दासा ॥

अथ कथाप्रसङ्गवर्णनम् ॥

दो०-तत्त्व नाम पद परम गुरु, पुरषोत्तम जगदीश ॥
कृष्ण कमल लोचन सुखद, सकल देव मणि शीश ॥
सो०-वन्दौं नन्दकिशोर, वृन्दावनवासी सदा ॥
श्रीराधा चितचोर, आनँद दैन भवभयहरण ॥

वरणौं कथा सुन्दर सुखदैनी * अघहरणी वैकुण्ठनिसैनी ॥
कृष्णचरणपंकजरति दैनी * जन पावन करती जिमि वैनी ॥
श्रीकलिन्दतनया तट पावन * बसत मधुपुरी परम सुहावन ॥
जाकी महिमा सुर मुनि गावैं * तीनि लोक पर वेद बतावैं ॥
दरशन तें नर पावन होई * कृष्णकृपा बिन सुलभ न सोई ॥
उग्रसेन तहँ बसैं नरेशा * नीतिनिपुण सह धर्म सुवेशा ॥
ताको सुवन कंस अतिपापी * असुर बुद्धि भो जगसतापी ॥
लियो तात गहि बन्दीशालै * आपन भयो कंस भूपाला ॥
तात अनुज तहँ देवक नामा * सुता तासु देवकी ललामा ॥
दइ कंस वसुदेवहि ताही * लोक वेदकी रीति विवाही ॥
दायज दियो अनेक विधाना * हय गज रथ पट भूषण नाना ॥
दासी दास बहुत सँग दीन्हें * दान मान परिपूरण कीन्हें ॥

दो०-तब चढाइ रथ देवकी, आप भयो रथवान ॥
पहुँचावन अति हेतुसों, चल्यो सहित अभिमान ॥

---

१ बादल २ पाप ३ त्रिवेणी ४ यमुना ५ पुत्र ६ पिता ७ कैदखाना ८ सुन्दर

सो०–तेहि क्षण गिरा विशाल, होत भई आकाशतें ॥
होय कंसको काल, देवकिके सुत आठवें ॥

कंसासुर सुनि वचन अकासा * भयो चकित मन मिट्यो हुलासा ॥
शत्रुसमान देवकी मानी * रथतें उतरि पन्यो अभिमानी ॥
खड्ग निकासि हाथमें लीन्हों * यह विचार अपने मन कीन्हों ॥
अबही याहि मारि दुख मेटों * पुनि क्लेश काहेको मेटों ॥
केश पकरि देवकि गहि लीन्हीं * नहिं कछु कानि बहिनकी कीन्हीं ॥
तब वसुदेव दीन है कहहीं * तिय बध नहीं भूप यश लहहीं ॥
बहुरो यह पुनि स्वमा तिहारी * राजन कीजै काज विचारी ॥
सुन वसुदेव भई नभ बानी * तुमहूँ सुनी कछु नाहिं छिपानी ॥
तातें उग्र शोच किन करिये * पीछे काहेको दुख भरिये ॥
वृक्ष फलै जो विषफल आगे * ताहि बनै पहिलेही त्यागे ॥
जो नहिं हतौं आज यह बाला * मिटै न उरसों शोच विशाला ॥
कन्या और व्याहि तोहिं देहौं * याहि मारि उर शोच नशैहौं ॥

दो०–मुनिजन गुरुजन संगजे, तिन्हहिं कह्यो तिहिकाल ॥
वृथा होत है यशफल, यह न उचित महिपाल[४] ॥

सो०–यहै तुह्मारे मान, आनकदुन्दुभि देवकी ॥
उन्हैं न हतिये जान, वेद विरोध न कीजिये ॥

पुनि वसुदेव कह्यो करजोरी * राजन सुनिय विनय कछु मोरी ॥
वृथा देवकीको जनि मारो * याको सुत है शत्रु तुम्हारो ॥
सब सुत याके हमसों लीजै * जीवदान याको प्रभु दीजै ॥
यह वाचा हम तुमसों भाषै * चन्द्र सूर साखी दै राखै ॥

१ वाणी २ तरवार ३ बहिन ४ राजा ५ वसुदेव ६ सूर्य

भली बात यह सवहिन जानी * भावी विवश कंसहू मानी ॥
हरि कीनों चाहैं सो होई * ताहि मिटावनहार न कोई ॥
निन्हैं सहित नृप घर फिरि आये * करि अगोट दोऊ रखवाये ॥
प्रथम पुत्र जब देवकि जायो * लै वसुदेव कंस पहँ आयो ॥
बालक देखि कंस हँसि दीन्हौं * इन तौ कछु अपराध न कीन्हौं ॥
अठवाँ गर्भ शत्रु है मेरो * सो दीजो तुम मोहिं सवेरो ॥
यह कहि अपनो पाप क्षमायो * तब वसुदेव हर्षको पायो ॥
ऐसे बाल फेरि जब दीन्हौं * तब वसुदेव गमन हँस कीन्हौं ॥

दो०–तब ऋषि नारद कंस पहँ, लिये हस्ततल बीण ॥
गुण गावत गोविन्दके, आये परम प्रवीण ॥

सो०–उठ्यो देखिकै कंस, शीशनाइ पद वन्दिकै ॥
बैठाये परसंस, शुभ आसन ऋषि नारदहि ॥

समाचार जो कछु [1] आये * सो सब ऋषिको कंस सुनाये ॥
सुनि नृप वचन विहँसि ऋषि बोले * तुम यत रहत शत्रुसों भोले ॥
जाके तुम यह अति भय मानों * अठवाँ कौन सु तुम कछु जानों ॥
जो वह प्रथमहि आयो होई * देवचरित्र जानत कछु कोई ॥
आठलकीर खैंचि दिखराई * गिनतीमें सब आठौं आई ॥
यह समझाय गये ऋषि ज्ञानी * कंसासुर उर अति भय मानी ॥
तेहि क्षण बालक फेरि मँगायो * लै वसुदेव तुरतही आयो ॥
लियो भृङ्गादि करैमें ताही * पटकत भयो शिलापर वाही ॥
याही विधि षट् बालक मारे * मात पिता अति भये दुखारे ॥
कहत अहो श्रीपति असुरारी * तुम बिन कासों करहिं पुकारी ॥

१ होनहार. २ हाथमें.

यह सन्ताप मिटै कब भारी * बेगि लेहु प्रभु सुरति हमारी ॥
केहि विधि नाथ राखिये प्राना * करत कर्म निरवंश निदाना ॥

दो०–विपति विनाशन दुखदमन, जनरंजन सुरराय ॥
अब हमकों कोऊ नहीं, तुमविन और सहाय ॥

सो०–विनती प्रभुहि सुनाय, मनमहँ दम्पति दुखित अति ॥
होत न प्रकट जनाय, कंस असुरके त्रासतें ॥

भई भूमि जब अधिक दुखारी * बढ्यौ पाप असुरनको भारी ॥
सहि न सकी तब गोतनुधारी[1] * शिव[2] विरंचि[3] पै जाय पुकारी ॥
सकल सुरन मिलि कियो विचारा * हमतें नहि उतरै भुविभारा ॥
विनय करिय चलि श्रीपतिपाहीं * कृपा करैं तब सब दुख जाहीं ॥
भूमि सहित सुर सकल सिधारे * क्षीरसिंधुतट जाइ पुकारे ॥
जहँ श्रीपति श्रीसहित निवासी * पुरुषोत्तम अविगति अविनासी ॥
धेनु अग्र करि विनय सुनाई * जय जय जय त्रिभुवनके साँई ॥
जय सुखकन्द सन्तहितकारी * जय जगवन्द्य भूमि भयहारी ॥
जय जय असुरसमूहनिकन्दन * जय जय भक्तनके उर चन्दन ॥
जय जय जय प्रणतारतमोचन * दैत्यदलन सुरशोचविमोचन ॥
जय जय जय प्रभु अन्तर्यामी * सुनिय विनय सचराचरस्वामी ॥
हरिये प्रभु सो वेग उपाई * हरिये नाथ भूमि गरुवाई ॥

दो०–धरिय मँनुजतनु[7] दनुजहति, करिय धरणि उद्धार ॥
परसत पदपंकज मिटहिं, सकल भूमि अघभार ॥

---

१ गौरूप. २ गायका रूप ३ ब्रह्मा ४ भगवान् ५ धरती. ६ मारीधन ७ मनुष्यदेह

सो०—पाहि पाहि भगवन्त, शरणागतवत्सल हरे ॥
क्षमा करहु अघ कत, दीन दुखित जन जानि हरि ॥
दास वचन सब धनु पुरारी * भइ गिरानभ मगलकारी ॥
नादु मकल सुर घर भय लागी * धरिहौं नरतनु तुम हित लागी ॥
प्रथम जन्म देवकी वसुदेवा * मोमा माग्नियो करि सेवा ॥
तुमसम पुत्र हमारे होई * मैं तिनकों वर दीनो सोई ॥
तैसे नन्द यशोदा जानो * दूध पियावन उनहित मानो ॥
गर्भ देवकीके अवतरिहौं * बालचरित गोकुलमें करिहौं ॥
तुमहू गोपवेष व्रज होऊ * मम सग सुख पावो सब कोऊ ॥
यह कहि सुरनै विदा हरि कीन्हों * आय सुयोग दीठि वर दीन्हों ॥
सुसम गर्भ देवकीके * तहा शेष मम अश बसेरा ॥
सो आर्कर्षणके क्षणमाहीं * राखो गर्भ रोहिणी पाहीं ॥
नारि नवहि हरि आयसु पायो * तापशण ताहि वहीं पहुचायो ॥
हरिचरित्र कछु जान न कोइ * जो कछु करत चहैं सो होई ॥
दो०—नय कृपालु जनके सुखद, अविगति कमलाकन्त ॥
निज आगम देवकि उदर, दिय जनाय भगवन्त ॥
सो०—तनु द्युति बढ़ी अपार, परम प्रकाशित भवन सब ॥
आनन मुकुर निहार, अति प्रमन्न मन देवकी ॥
निजमुख मुकुर देवकी देख्यो * शरद चन्द्र पूरण सम लेख्यो ॥
मिट्यो तिमिर भ्रम अति सुख पायो * जान्यो वसुधाल हरि आयो ॥
प्रभु आगमन जानकर देवा * आये सकल करावन सेवा ॥

---

१ आकाशवाणी २ देवताओंको ३ योगमाया ४ खींचना ५ पेट ६ शीशा ७ अधकार भ्रम

नैभते गर्भस्तुति सब करही * जय जय जय जय जय उचरहीं ॥
जय ब्रह्मा शिव सेव्य सदाई * जय वेदान्त भेद सुरसाई ॥
जय तीरथपद भवनिधि बोहितै * प्रणतपाल जय दीननके हित ॥
जय सङ्कल्प सत्य गुणधामा * जय मनवांछित पूरण कामा ॥
जय गोद्विजहित नरतनुधारी * जय सन्तनपति गति अपहारी ॥
जय कृपालु आनन्द वरूथी * वन्दत चरण सकल सुरयूथा ॥
जय पुरुषारथ अमित अनूपा * महापुरुष चराचर भूपा ॥
जय अहीश नित नव गुण गावैं * तदपि नाथ गुण अन्त न पावैं ॥
जो मुनिजन मन ध्यान न आवैं * भक्ताधीन वेद यश गावैं ॥

दो०-अलख अरूप अनीह अज, प्रभु अद्वैत अनादि ॥
गर्भवाससो देवकी, कौतुकनिधि सर्वादि ॥

सो०-किनहुँ न पायो भेव, शेष महेश गणेश विधि ॥
नमो नमो तिहि देव, परम विचित्र चरित्र शुभ ॥

करि विनती सुरमर्दनै सिधारे * परमानन्दमगन मन मारे ॥
तब देवकि पति पास बखाने * कोमल वचन प्रेमतें साने ॥
हो पिय सो उपाय कछु कीने * अवकै यह बालक रखलीजै ॥
बुधि बल छल पिय कीजै सोई + जामें कुलको नाश न होई ॥
मैं मन वच अवकै यह जाना * है मम उदर देव भगवाना ॥
कहा करौं कछु यत्न न पाऊं * कौन भाँति यह गर्भ दुराऊं ॥
सत्य धर्म बरु जाय तो जाऊ * पतियहि सुतहित करिय उपाऊ ॥
कर्म धर्म सब हरि हित भारौं * सो हरितनि कछु धर्महिं राखौं ॥
सुनहु पिया अम को हितकारी * जो यह बालक लेहि उबारी ॥

१ आकाशसे २ नाव ३ समूह ४ शेष ५ अपन स्थानको ६ छिपाऊ

शिर ऊपर बैठे रखवारे * पाँयन पड़े निगड़[1] अति भारे ॥
कंस असुर अघवंश विनाशन * केहि विधिसों उबरै तियँतासन[2] ॥
ऐसो को समरथ जग पाई * जो इहि अवसर होय सहाई ॥

दो०–षट् बालक वध सुरतिकरि, दम्पति[3] दुखित विचार ॥
अति आकुल भय कंसके, दृगँन[4] चली बहि धार ॥

सो०–करुणासिन्धु दयाल, तात मात अति दुखित लखि ॥
प्रगट भये तिहि काल, दुखमोचन लोचनसुखद ॥

योगशक्ति हरि आयसु पाई * प्रगटी नन्दभवनसों जाई ॥
ताके प्रकटतही नरनारी * भये नींदवश देह बिसारी ॥
भादों कारी निशि अति पावन * आठैं बुध रोहिणी[5] सुहावन ॥
अखिललोकपति जन सुखदायक * आये जन्म लियो सुरनायक ॥
शीशमुकुट कल कुण्डल कानन * शैरदमयंक[6] सरस शुभ आनँन ॥
चारु चरण पंकजदल लोचन * चितवन सुखद तीपत्रय मोचन ॥
कुटिल अलक भ्रूमेचँकताई * जन मन हरण परम सुखदाई ॥
पीत बसन तनु श्यामतमाला * उर श्रीवँत्स चारु मणिमाला ॥
भुजा विशाल मनोहर चारी * शंख चक्र गद अँम्बुज धारी ॥
अंग अंग सब भूषण नीके * परम विचित्र भावतेजीके ॥
चरण सरोज उदित नख जोती * कमल दलन राखे जनु मोती ॥
परम प्रताप सुभग शिशु वेषा * अद्भुत रूप देवकी देखा ॥

---

१ बेड़ी. २ स्त्रीको त्रास देना. ३ स्त्रीपुरुष. ४ नेत्रोंसे. ५ एक नक्षत्र. ६ शरदका चांद. ७ मुग. ८ सुन्दर. ९ कमलपत्र. १० तीन प्रकारके ताप. ११ श्यामभौंहें. १२ छातीका चिन्ह. १३ कमल.

दो०–देखि अमितछवि चकितमति, पति ढिगलिये बुलाय ॥
दम्पति परमानन्द मन, परे हर्ष सुत पाय ॥
दो०–भरे प्रेम जल नयन, अति सनेह आकुल शिथिल ॥
बोले गदगद बैन, जोरि पाणि विनती करत ॥

प्रभु किहि विधि तुव गुणन वखानौं * तुम मायावश तुमहि न जानौं ॥
सहसानन जाके गुण गावैं * नेति नेति जेहि निर्गम बतावैं ॥
जाकी भ्रुविलास अनयासा * अखिललोक उपजै अरु नासा ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावैं * कृपा करहु तब दरशन पावैं ॥
जो सबतें पर अज अविनाशी * सो किमि कहिय उदर मम वासी ॥
परम विचित्र चरित्र तुम्हारे * मोहतहैं प्रभु मनहि हमारे ॥
तात मातके वचन सुहाये * सने प्रेमवश प्रभु मन भाये ॥
बोले तात मात सुखदानी * मधुर मनोहर अमृतसमवानी ॥
सुनहु मात मैं तुमहि सुनाऊँ * प्रथम जन्मकी कथा बताऊँ ॥
तुम याच्यो मोहिं कर तप भारे * तुमसमान सुत होय हमारे ॥
जन हित विरद मोर श्रुति गायो * सो कैसे करि जात लजायो ॥
ताते मैं वर तुमकों दीन्हों * सो हम आय सत्य अब कीन्हों ॥

दो०–शिव ब्रह्मा सनकादिमुनि, ध्यानसकत नहिं पाय ॥
सो मैं तुम्हरे प्रेमवश, दियो दरश निज आय ॥
सो०–कौतुकनिधि सुरराय, करत चरित मुनि मनहरण ॥
महा मोह उरझाय, दियो बहुरि पितु मात मन ॥

करहु तात अब वेग उपाई * हमहि कसतें लेहु बचाई ॥
गोकुल हमहिं देहु पहुँचाई * तहाँ यशोदा कन्या जाई ॥

१ नन्द यसोदा २ हाथ ३ शेषनाग ४ वेद ५ वेदमें

मोरि राखिहैं यशुदा पासा * कन्या ले आवहु अनयासा ॥
सो कन्या लै कंसहि दीजै * तात हमारो नाम न लीजै ॥
ऐसहि मात पिता समुझाइ * भये तुरत शिशु यदुकुलराइ ॥
देखि चरित सुनि प्रभुकी बाता * विसरैं हृय विवश पितुमाता ॥
सुत उठाय उरसों लपटायो * प्रेम विवश लोचन जल छायो ॥
कहति देवकी पति सुनि लीजै * गमन वेग गोकुलको कीजै ॥
जबलगि सुनहि न वह हत्यारो * मन वच क्रम नृपकी न पत्यारो ॥
बनै नाथ उर धीरज धारे * नाहिन इतने भाग्य हमारे ॥
जो यह सुख नयनन पुट पीजै * ऐसे सुतको यश सुनि लीजै ॥
दरसन सुखित दुखित महतारी * शोचत विकल कंसभयभारी ॥

दो०–अति अँधियारी अर्ध निशि, भट घेरे चहुँओर ॥
कौन भाँति जैहैं दई, पाँय निगॅड अति घोर ॥

सो०–बरषत अतिजल जोर, घन गरजत, चमकत चपल ॥
बीच यमुन अति घोर, पार कवन विधि पाइ हैं ॥

कहा करौं अब काहि पुकारौं * कौन भाँति धीरज उर धारौं ॥
कंस सरोष तबहिं किन मारौ * विनती करि पति वृथा उवारौ ॥
ऐसो सुन निठुरत महतारी * कौन भाति जीव दुखभारी ॥
कृपासमुद्र भक्तसुखदानी * सुनत मातुकी आरतवानी ॥
कृपाकरी सब भ्रम भय टारे * गिरे निगॅड पाँयनतें भारे ॥
तब वसुदेव हृय तिहि ठाहीं * लक्ष धेनु मनसा मनमाहीं ॥
पुन गोद लै तुरत सिधाये * द्वार कपाटै खुले सब पाये ॥

१ बालक २ हृय ३ रात ४ बेडी ५ दुखकी भरी वानी ६ बेड़ी ७ किवाड़

वसुदेवजी कृष्णजीको गोकुल लिये जाते हैं.

रखवारे सब सोवत देखे * सेपदि चले उर हर्ष निशेखे ॥
तबहीं मघवा वृष्टि निवारी * मन्द समीर भई श्रमहारी ॥
हरिमुख चन्द्रप्रभा तम नाशै * क्षण क्षण तड़ित पंथ परकाशै ॥
प्रभुपर शेष छाँह फनछाई * आगे सिंह दहाड़त जाई ॥
सो वसुदेव न जानत भेवा * पहुँचे जाय यमुनतट देवा ॥

दो०–सरित[6] देखि गम्भीर अति, मनमें शोच विचार ॥
गोकुलके सम्मुख धँसो, प्रभुप्रताप उरधार ॥

सो०–यमुनापति पहिचानि, मन आनँद हुलस्यो हियो ॥
परसन हित पदपानि, अति प्रवाह ऊँचो उठ्यो ॥

गुल्फै जंघ कटिलों जल आयो * तब हरिको कछु ऊर्ध्व उठायो ॥
ज्यों ज्यों वसुदेव सुतहि उठावें * त्यों त्यों जल ऊपरको आवे ॥
नाक प्रयन्त नीर जब आयो * तब हरिपद अंबुको लटकायो ॥
परशि नीर हुंकारहि दीनो * तुरतहि भयो गुल्फतें हीनो ॥
भयो पार लैकै घनश्यामहि * गये वसुदेव नन्दके धामहि ॥
तहाँ सकल जन सोवत पाये * सुत लै यशुमति पास सिधाये ॥
कन्या तहाँ पुनीत निहारी * लई उठाय राखि दैलारी ॥
फिरि फिरि सुतको वदन निहारी * चले तुरत भय कंस विचारी ॥
जो सम्पति निगमागमैं गाई * योगी जनन जानि नहिं पाई ॥
सनकादिक सरवस निधि[14] प्राना * शंकर जासु धरतहैं ध्याना ॥
शारद नारदादि यश गावैं * सहसैवदनहु[15] पार न पावैं ॥

---

१ शीघ्र. २ इन्द्र. ३ पवन. ४ बिजली. ५ रास्ता. ६ यमुना. ७ टकना. ८ जांघ. ९ कमर. १० ऊंचा. ११ नीचेको. १२ श्रीकृष्णको. १३ वेद पुराण. १४ ब्रह्मा. १५ शेषनाग.

अहो विलोकहु भाग्यवडाई * सोई सोवत यशुमति माई ॥

दो०–उहां देवकी प्रेमवश, अति व्याकुल अकुलात ॥
बालक अरु वसुदेव कहँ, पठै बहुत पछितात ॥

सो०–बैठत उठत अधीर, व्याकुल सोई सेजपर ॥
पोंछत नयनन नीर, बोलि सकत नहिं कंस भय ॥

मनमन सुरै मनाय सनमानै * मत यह भेद दई कोउ जानै ॥
रखवारे कहुँ जान न आहीं * मत कोउ दुष्ट मिलै मग माहीं ॥
यातें अधिक शोच मोहिं भारी * क्यों दुरिहै शशिमुखै उजियारी ॥
मग महँ यमुना अति गम्भीरा * केहि विधि पहुँचैगे वहितीरा ॥
गोकुल पहुंचे धौं मगमाहीं * भई बेर पति आये नाहीं ॥
यहि विधि शोचविवश अकुलाई * इकक्षण कल्पसमान विहाई ॥
पहुँचे वसुदेव तिहि क्षण जाई * बूझत उठी पुत्रकुशलाई ॥
केहि विधि पुत्र राखि पति आये * समाचार वसुदेव सुनाये ॥
कन्या दई देवकी जवहीं * द्वारकपाट गये लगि तवहीं ॥
बेडी व्हैगइ पग ततकाला * कन्या रोय उठी तिहि काला ॥
चहुँ दिशि जागि परे रखवारे * तुरत कंस पहँ जाय पुकारे ॥
सुनतहि उठि अति आतुर धायो * लीन्हे खड्ग तहाँ चलि आयो ॥

दो०–कन्या लै तब देवकी, आगे राखी आय ॥
दीन वचन आधीनह्वै, कंसहि कही सुनाय ॥

सो०–अहो भ्रात यह दान, तुम हम कहँ अब दीजिये ॥
है कन्या जिय जान, याते भय तुमकों नहीं ॥

सुनत कंस भैगिनीकी वानी * मृत्यु त्रासते शठ रिसमानी ॥

१ देवता. २ छुपैगा ३ चन्द्रसमानमुख ४ किवाड ५ तरवार ६ वहन

यामें कछू होय छल कोई * को जाने विधनागति गोई ॥
यह विचार कन्या गहिलीनी * पटकनकी मनसा तिहि कीनी ॥
करते छूटिगई आकाशा * दिव्यरूप तहँ कियो प्रकाशा ॥
बोलनि भई गैगनतेँ बानी * अरे मन्दमति अधम अज्ञानी ॥
ममहत्या तैं लई वृथाहीं * तेरो रिपुँ प्रगट्यो ब्रजमाहीं ॥
सर्पग्रसित जिमि दादुरँ होई * माखी खान चहत शठ सोई ॥
तैसे तू यह मारन मोहीं * आयो काल निकट शठ तोहीं ॥
ऐसे कहिके स्वर्ग सिधारी * कंसहि सोच भयो सुनि भारी ॥
पर्यो देवकी चरणनमाहीं * मैं मारे तुव पुत्र वृथाही ॥
क्षमा करौ मेरे अपराधा * है विधिकी गति अलखँ अगाधा ॥
वसुदेवहुमन क्षमा कराई * निगडँ दिये पगतेँ कटवाई ॥

दो०–गयो शोच व्याकुल सदनँ, पर्यो सेजपर जाय ॥
जागतही बीती निशाँ, नींद परी नहिं ताय ॥

सो०–हरिके चरित अनूप, असुरविमोहन सुरसुखद ॥
नर न परत भवकूप, सहज प्रेम गावहिं सुनहिं ॥

कृष्णजन्मोत्सववर्णन.

यशुदा जब सोवततेँ जागी * सुतमुख देखतही अनुरागी ॥
पुलक अंग उर आनँद भारी * देखि रही मुखशशि उजियारी ॥
गद्गद कण्ठ न गद्धु कहि आयो * हर्षवन्त व्है नन्द बुलायो ॥
आवहु कन्त पुत्रमुख देखो * बडौ भाग्य अपनो करि लेखो ॥
भये प्रसन्न आजु सब देवा * सफल भई सबहिनकी सेवा ॥
सुनत नन्द प्रिय तियकी बानी * प्रेममग्न तनुदशा भुलानी ॥

---

१ छिपो हुई. २ आकाशसे. ३ शत्रु ४ मेंडक ५ जो दीखे नहीं ६ बेड़ी. ७ घर ८ रात. ९ स्त्रीकी.

हर्षित व्है उठि आतुर धायो * यशुमतिसुतकौ बदन दिखायो ॥
देखत सुख उर सुख भयो जैसो * कहि न सकहि श्रुति शौरद तैसो ॥
कहा कहौं तिहि क्षणकी शोभा * मनहु महा छबितरके गोभा ॥
आनँदमगन नन्द मनमाहीं * जानत नहिं हमको केहि ठाहीं ॥
रोयउठे तब नन्दके लाला * जागि परे सब ग्वालिनग्वाला ॥
जित तितके हर्षित उठ धाये * मनहुँ रंकै धन लूटन आये ॥

दो०–देहिं बधाई नन्दकों, परैं यशोदा पाँय ॥
कहँ पियारे लालकों, नेक हमहिं दिखराव ॥

सो०–अति हर्षित नँदराय, कह्यौ बजावन सोहिलेौ ॥
नारि उठीं सब गाय, लाग्यो बजन बधावनों ॥

छं०–सुरसिद्धमुनिन्दा परम अनन्दा सुनि गोकुल हरि आये
दुन्दुभी बजावत मंगल गावत तियनै सहित उठि धाये ॥
विद्याधर किन्नर सुघर कण्ठवर करत गान सचुपाये ॥
गरजत तिहिकाला मधुररसाला घनगति जनन जनाये ॥
बाजत करताला बरषत माला सुरतैरसुमन सुहाये ॥
सब करैं किलोलैं हर्षित बोलैं जय जय जय सुख पाये ॥
नभमहँ ध्वनि होई सुन सबकोई भये सबन मन भाये ॥
संतन हितकारी असुर सँहारी आवत क्षिति सुर छाये ॥
शिव ब्रह्मादिक मुनि सनकादिक परम प्रफुल्लित गाता ॥

१ मरग्वनी. २ दरिद्री ३ बधाई ४ नगारे ५ स्त्रियों ६ मेघकीसी गर्जना. ७ कल्पवृक्षके फूल ८ पृथिवीपर

गुणिगण सब गावैं प्रभुहि सुनावैं आनँद उर न समाता ॥
भए मन चीते सब भय बीते प्रगटे दनुजनिपाता ॥
अति मनमें हर्षें पुनि पुनि वर्षें सुमन जो सुरतरुजाता ॥
सुरतिय मनमाहीं निरखि सिहाहीं यशुमतिके बड़ भागा ॥
इनसम हम नाहीं पुण्यनमाहीं कहैं सहित अनुरागा ॥
योगी जेहिं ध्यावैं ध्यान न पावैं करि करि योग विरागा ॥
जो वेद न जानें नेति बखानें सो सुत ह्वै उरलागा ॥

दो०–भरे परम आनन्द सुर, उपजावत अनुराग ॥
बार बार वर्णन करैं, नन्द यशोमति भाग ॥

सो०–रहे सदनै सुर भूल, गोकुलको उत्सव निरखि ॥
जन्मे मंगलमूल, ब्रजवासी हर्षित सबै ॥

ब्रजवासिन सबहिन सुनि पायो * नन्दमहरघर ढोटा जायो ॥
परमानन्द लोग सब धाये * नन्दराय तब विप्र बुलाये ॥
काढ़ि लग्न ग्रह योग सुधायो * अति विचित्र सब द्विजन सुनायो ॥
करत वेदध्वनि अति सुखपाई * देहि नन्दको सकल बधाई ॥
तब अस्नान महरि उठि कीन्हों * भाल तिलक नन्दन रैरीन्हों ॥
नान्दकर्म करि पितर पुजाय * भूषण वसन द्विजन पहिराये ॥
गैया लक्ष सवत्स सुहाई * वाटी दूध नवीन मँगाई ॥
सब विधि सकल अलंकृत कीनी * करि संकल्प द्विजनकों दीनी ॥
मुदित विप्र सब देहैं असीसा * चिरजीवहु सुत कोटि बरीसा ॥

---

१ दैत्यनाशक २ देवांगना ३ घर ४ नांदीश्राद्ध ५ सिंगारी ६ ब्राह्मणोंको

हँसि हँसि बहुरि महरि नँदराई * हितकुटुम्ब सब निकट बुलाई ॥
बहु सुगन्धि मथि तिलक बनाये * भूषण बसन विविध पहिराये ॥
हुते जु कुलमें वृद्ध जिठेरे * तिन सों पाँय परे सब केरे ॥

दो०–वैन्दी मागधँ सूतँ गण, भरे भवन बहु आय ॥
लैलै नाम बुलाय सब, पेंरिसोपे नँदराय ॥

सो०–मन वांछित सबलेहिं, जो जाके भावे मनहिं ॥
नन्द भरे रस देहिं, किये अयाँची याचकनि ॥

सुनि सुनि धाई ब्रजकी नारी * ले कर कमलन कंर्चन थारी ॥
मङ्गल साज साज सब लीन्हें * सहजशँगार सुभग तनु कीन्हें ॥
चाँरु चीर्रतनु दृँग कजरारे * भाँल तिलक कुच शिथिल सँवारे ॥
माँग सिंदूर तरोना कानन * रोरी रङ्ग कियें कछु आनन ॥
अँगिया अङ्गकसे छबिछाजे * विविध भाँति उर हार बिराजे ॥
अति आनन्द मगन मनफूलीं * अचल उड़त सँभारन भूलीं ॥
निज निज मेल मिलीं सब गावें * विहरत नन्दधामको आवें ॥
इक भीतर इक आँगनमाहीं * इक द्वारे मँग पावत नाहीं ॥
सबकों यशुमति निकट बुलावें * मुख उघार सुतको दिखरावें ॥
देहि अशीश परो शिशुपायन * जीवहु जबलग नँभ तारागन ॥
पूरण काम भयो ब्रज सारो * धन्य यशोदा भाग्य तिहारो ॥
धन्यसो कोखि जहाँ सुत राख्यो * पुण्य तिहारो जात न भाख्यो ॥

---

१ वदनादि गानेवाले २ भाट ३ पौराणिक ४ प्रसन्न किये ५ याचना न करनेवाले ६ सुवर्ण ७ सुन्दर ८ शरीरमें वस्त्र ९ नेत्र. १० माथा. ११ मार्ग १२ आकाश

दो०-धन्य दिवस धनि राति यह, धन्य लग्न तिथिवार ॥
जहँ जायो ऐसो सुवनै, थिर थाप्यो परिवार ॥

सो०-पुनि पुनि शीश नवाय, देहि अशीश मनाय सुर ॥
जियहु सुवन नँदराय, रूप अचल जुरवी धुनी ॥

परमानद नद अनुरागे * चित्र विचित्र वस्त्र बहु मांगे ॥
सारा सुँरँग घमवक्रे लहँगे * अति चटरीले मोल न महगे ॥
सिगरी अधू बोल पहिराई * जो जैसी जाके मनभाइ ॥
दई अशीश मुदित मननारा * फूली कमल कलीसा न्यारी ॥
एकरैंहमि निजनिज गृह नाहीं * इक हुलसा आवैं गृहमाहीं ॥
एक यह एकनसों धाइ * हाँ यह बात भली सुनि आइ ॥
महरि यशोदा ढोटा जायो * नदद्वार सखि बजन बधायो ॥
चलो वेग सखि देखिये सोइ * निधनासों चाहतही जो ॥
इक नाचें इक ढोल बजावें * एक नदकी गागर गावें ॥
एक माथिये द्वार बनावें * एकै बदनवार बँधावें ॥
ध्वज पताक तोरण छबिछाइ * घर घर होत अनद बधाइ ॥
पुनि पुनि सुमनै दव बषावें * फूलनसों सब गोकुल छावे ॥

दो०-ध्वज पताक तोरण कलश, वदनवार दुवार ॥
गोपनके घर घर बँधे, तोरन मगलचार ॥

सो०-नदसदन छवि चार, वरणिसकै सो कौन कवि ॥
लियो जहाँ अवतार, छविसागर त्रिभुवनधनी ॥

ग्वाल वृन्द सब सुनि उठि धाये * बाल वृन्द सब निकट बुलाये ॥
घसि बन धातु चित्र सब कीन्हे * गुनी भूषित भूषण लीन्हे ॥

१ पुत्र २ रगीन ३ एकान्तमें ४ पुष्प ५ गरू सहिया ६ गिरमिटी

यद्यपि अरु भूषण तनुमाहीं * तद्यपि अहिरन गुंज सुहाहीं ॥
एक कहे एकन समुझाई * आज वनहिं कोऊ नहिं जाई ॥
गैयाँ लेपन सहित बनावो * चित्र विचित्र वेगि लै आवो ॥
पूत नन्दके घर है जायो * भयो सवनके मनको भायो ॥
कितनो गहेर करत बिन काजा * वेगि चलो सब सहित समाजा ॥
दधि माखनके माठ भराये * कछु इक हरदी रंग मिलाये ॥
लिये शीशपर केतिक गावें * केतिक ताल मृदंग बजावें ॥
मिल मिल निज निज यूथन माहीं * नंद सदन निरखत सब जाहीं ॥
देखि नन्द अति आनँद पावें * हँसि हँसि सबको निकट बुलावें ॥
छुइ छुइ चरण भेट धरिआगे * देहिं बधाई अति अनुरागे ॥

दो०-नाचत गावत मगन मन, भई सदन अति भीर ॥
मनु आये उत्साह सब, धरि धरि गोप शरीर ॥

सो०-देहधरे आनन्द, मनहुँ नंद तिन मधि लसैं ॥
जन्मे आनँदकन्द, कहि न सकहिं सुरस सहसमुख ॥

इक नाचत इक गावत ठाढे * इक कूदत अति आनँद बाढे ॥
छिरकत एक दूध दधि टोलैं * एक कुलाहल करत कलोलैं ॥
मचो नंद घर दधिको कोंदौं * वरसत दूध दहीं जनु भादौं ॥
एक धाय एकनपै जाहीं * एकै मिलन डारि गलबाहीं ॥
एक एकके पायँन परहीं * इक दधि दूर्वाक्षत शिर धरहीं ॥
अति उछाह सबके मनमाहीं * राजा राव गनत कछु नाहीं ॥
गोकुल मध्य देखिये जितहीं * करत गोप कौतूहल तितहीं ॥
एकै लूटि नंदकों लेहीं * एकै एकनकों धन देहीं ॥

१ अहेर २ घर ३ कीचड़. ४ दूबचावल. ५ खेल.

स्नान हित करि नंद बुलावैं * पट भूषण तिनको पहिरावैं ॥
एक कहैं हम तब कछु लेहैं * जब लालन मुख देखनदेहैं ॥
एक जो एकन ते कछु लेही * ते निशंक एकनको देहीं ॥
अति आनंदमगन पशुपालक[1] * नाचत तरुण[2] वृद्ध अरु बालक ॥

दो०–गोकुलको आनंद सब, कापै वर्ण्यो जाय ॥
जहां परम आनंदमय, लियो जन्म हरि आय ॥

सो०–नित नव होत विलास, हरि मुकुंदके जन्मतें ॥
ब्रज संपदा सुपास, सुर[3] भूलहिं कौतुक निरखि ॥

जबतें जन्म लियो हरि आई * सुख संपति ब्रज घर घर छाई ॥
सब उदार सब परमप्रवीना[4] * सब सुंदर सब रोगविहीना ॥
मुदित जहाँ तहँ सब ब्रजवासी * सब यशुमतिसुत प्रेम उपासी ॥
नंदसदन बरन्यौं किमिजाही * शैनसुरेश[5] लखि विभ्रमजाही[6] ॥
अति प्रकाश मन्दिरके माहीं * फैलिरहीं हरि छविकी छाहीं ॥
ग्वाल गाय गोपनकी भीरा * कहुँ दधि कहुँ माखन कहुँ क्षीरा ॥
भूमि बाग बन गिरि[7] रमणीया * खग मृग सर सरिता[8] कमनीया[9] ॥
बिटपै वेलि सब सहित फूल फल * दिशा प्रकाशित निर्मल जल थल ॥
सुरनी सुर सुरभी सम तूला * भयो सकल ब्रज मंगलमूला ॥
विभव भेद यह कोउ न जाने * आदिहिंते हम ऐसे माने ॥
कृष्णजन्म आनंद बधाई * सुरपुर नाग तिहू पुर माई ॥
ब्रजवासिन गण अधिक उछाहू * करि नहिं सकहिं सहमसुख काहू ॥

---

१ ग्वाल. २ जवान. ३ देवता. ४ बहुत चतुर. ५ सौइन्द्र ६ भौचक होजाय. ७ पहाड़. ८ नदी. ९ सुन्दर. १० वृध.

दो०—ब्रजको सुख को कहिसकै, सुखमा बढ़ी अपार ॥
सुखनिधान भगवान जहँ, लियो मनुजअवतार ॥
सो०—प्रकटे गोकुलचंद, संत कुमुद वन मोदकर ॥
तम कुल असुरनिकंद, मजजन चारु चकोरहित ॥

नित नव भीर नंदके द्वारे * याचक जन सब होय सुखारे ॥
गाँव गाँवत सुनि सुनि आवैं * मन भायो सब कोऊ पावैं ॥
पाँचदिवस इहिविधि सुख पायो * छठयों दिवस छठीको आयो ॥
मन्दिर मकल सुवास लिपायो * जहा तहाँ चित्रित करवायो ॥
बीथी चारु सुगंधि सिंचाई * द्वारन वंदनवार बँधाई ॥
जानि कुटुम्ब मित्र हित जेते * नंदराय न्योते सब तेते ॥
ठौर ठौर बहु व्यंजन होई * भोजन करहिं आये सब कोई ॥
गोपवधू सब बनि बनि आवैं * लालनकों पहिरावन ल्यावैं ॥
जरिकस कुरता भूषण टोपी * रत्नसमेत प्रेम रंग ओपी ॥
रोरी अक्षत पान मिठाई * धरि धरि कंचन थारिन लाई ॥
गावहिं मंगल कोकिल बानी * नंदभवन आवहिं हर्षानी ॥
करि आदर यशुदा बैठावैं * देखि श्याम धन सब सुख पावैं ॥

दो०—वृषभानादिक गोपवर, ब्रजवासी समुदाय ॥
आये सब नँदरायगृह, भूषण वसन बनाय ॥
सो०—अति आदर करि नंद, शुभ आसन दीने सबन ॥
सबके मन आनंद, बजत दुदुंभी नचत नट ॥

कहूँ ग्वाल गावहिं हेरी * कहूँ खिलावत गाय घनेरी ॥
बंदीमागध भाट सुनावैं * कितहूँ ढाढी ढाढिनि गावैं ॥

१ नाना भाँति २ भिखारी ३ पकवान ४ नगारे

देहिं गोपगण तिनकों दाना * भूषण वसन धेनु मणि नाना ॥
परजा सकल खिलौना ल्यावैं * अति अद्भुत कापै कहि आवैं ॥
धरहिं नंदके आगे आनी * रानहिं सब अतिशय सुख मानी॥
तिनहीं देहि निछावरि हरिकी * कोमल श्यामल सुन्दर वरकी ॥
विश्वकर्मा पलना गढ़ि लायो * रत्नखचित शुभरंग सुहायो ॥
लालन हितसों नंद रखायो * विश्वकर्मा सब वांछित पायो ॥
एसे दिवस यामयुग आयो * तव सब गोपन नंद जिमायो ॥
छिरकि सुगंध पान कर दीन्हों * तव सब गोपन भोजन कीन्हों ॥
मंगलमय रजनी नव आई * गाय उठीं सब नारि सुहाई ॥

अथ कुरताटोपीवर्णन ॥

दो०–कुरता टोपी पीतरँग, लालनको पहिराय ॥
लै उछंगमें पूजन छठी, बैठीं हर्षित माय ॥

सो०–करि कुलकौ व्यवहार, करी आरती श्यामकी ॥
करति निछावरि नार, तन मन धन शशिमुख निरखि॥

नेग जोग सव नेगिन पायो * दियो सवनि यशुदा मन भायो ॥
प्रातहि उठि लाला अन्हवायो * सुदिन शोधि पलना पढ़रायो ॥
निरखिनिरखि यशुदा वलिजाई * अरुण चरण वर कोमलताई ॥
व्रजवासी जीवन नँदलाला * मातु सुकृत फल मदन गोपाला ॥
नितनव मंगल होहिं सुहाये * मंगलनिधि जवतें हरि आये ॥
नंद सुवन वपाश्रु तु सोइ * यशुमति सुकृत अवाश बनोई ॥
तहँ घनश्याम श्याम तनु उनये * मन्दहसनि दामिनिद्युति धुनये ॥

१ बहुत २ धारमद्दर ३ रात्रि ४ गोद ५ चन्द्रसमान मुख
६ बिजलीके समान कान्तिमान्

गर्जन मद मधुर किलकारी * मज्जन मोरन आनँदकारी ॥
दौदुर गुणगण गावहिं दासा * परम प्रीति मन परम हुलासा ॥
पलना पचरँग मणि छबिछाई * इन्द्र धनुष उपमा तिनपाई ॥
गज मुक्तनकी लर लटकाई * सोइ मानों बगपाँति सुहाई ॥
मन घर घर सुख संपति छाई * सोई मनहुँ भूमि हरिआई ॥

दो०-वर्षत परमानद जल, नद सदैन जगमाहिं ॥
ध्यान भूमि दृग सरित मग, जनउर सिंधुसमाहिं ॥

सो०-पूरण होत सुनाहिं, यद्यपि निशि वासर भरत ॥
बढ़त एहरि पुलकाहिं, हरि मुख शशिराका निरखि॥

कंसहि उहाँ नींद निशि नाहीं * अति चिंता व्याकुल मन माहीं ॥
बैठ्यो निकसि सभा उठि प्राता * मन्त्री बोलि कहहि सब वाता ॥
मेरो रिपु प्रगट्यो ब्रजमाहीं * कौन भाँति पहिचानौं ताहीं ॥
जाते जाय वेगि वह मारो * ऐसो तुम कछु मर्ने विचारो ॥
दिन दिन बडो होय अवसोई * को जानै फिरि वैसी होई ॥
बोल्यो एक असुर सुनु राजा * क्यों डरपत इतनेके काजा ॥
मोपै एक मंत्र सुनिलीनै * धर्म वाज कछु होन न दीनै ॥
जप तप होम होन नहिं पावैं * विप्रन साधुन असुर सतावैं ॥
जो यह देव होयगो कोऊ * सहिनहिं सकै प्रकट है सोऊ ॥
तब तेहिं असुर जाय संहारै * याविधि शत्रु तुम्हारो मारै ॥
बोलौ एक वात यह नीकी * औरौ सुनौ हमारे जीकी ॥
देश देशर्न असुर पठावो * वालक मासैकके जे पावो ॥

१ मेढक २ प्रसन्न ३ घर ४ सम्राट ५ राक्षस ६ एक महीनेके

दो०–तिन सबहिनको वध करैं, वचन न पावै कोय ॥
इनहीं में वह होयगौ, मार्‍यौ जैहै सोय ॥

चौ०–कह्यौ कंस हर्षाय, कहे मंत्र दोऊ भले ॥
पठवहु असुर निकायें, जायकैं कारजसँभरि ॥

याविधि असुर विदा बहु कीन्हीं * बाल वधनकौ आयसु दीन्हौं ॥
कह्यौ जाय ब्रज वेगहि कोई * तहँके बालक मारै सोई ॥
कह्यौ पूतना आयसु पाऊँ * तो यह कारज मैं करिल्याऊँ ॥
सकल घोषशिशु जाय नशाऊँ * जो कहिये तौ जीवत ल्याऊँ ॥
क्षणमें रूप मोहिनी धारौं * वशीकरण पढि सब पर टारौं ॥
घिनि कंकोल उरोजन लाऊँ * ब्रजवासिनके बाल पियाऊँ ॥
तौ पूतना नाम कहवाऊँ * जो नृपकौ कारज करि आऊँ ॥
तुरत कंस तेहि आयसु दीन्हौं * सुनतहि वचन गमन तिन कीन्हौं ॥
तादिन नंद मथुपुरी आयौ * राज अंश कछु नृप कहँ ल्यायौ ॥
नृप दरबार ताहि पहुँचायो * समाचार वसुदेवको पायो ॥
छोड़ि बंदितें[4] नृपने राखे * हते मित्र सुनिकैं अभिलाखे ॥
मिलनगये तिनकों नँदराई * उठि वसुदेव मिले हर्षाई ॥

दो०–कुशल पूंछि करि परसपर, वारम्वारसप्रीति ॥
बैठारे नंदराय ढिंग, करिकै आदर रीति ॥

सो०–तब बोले नँदराय, सुनिय दैव भावी प्रबल ॥
तासौं कछु न बसाय, जगत भ्रमत जाके विवश ॥

तुम अति कष्ट कंसते पायौ * सुनि सुनि भयौ बहुत पछतायौ ॥
आजु देखिकै चरण निहारे * भये हमारे नैन सुखारे ॥

---

१ समूह. २ ब्रजवासी ग्वालबाल. ३ छातीसे. ४ कैदखानेसे.

अथ पूतनावधलीला ॥

तब वसुदेव कही मृदुवानी * अहो नन्द तुम सत्यबखानी ॥
कर्मरेख नहिं जात मिटाई * विधिकी गति कछु जात न पाई ॥
सुन्यो नंद सुत भयो तुह्मारे * तब तें अति सुख भयो हमारे ॥
तुमकों जरा आय नियराई * बड़ी बैसमें विधि भयो सहाई ॥
तब नँद हलधर जन्म सुनायो * प्रथमहिं तिन्हें रोहिणी जायो ॥
तिनको उत्सव प्रगट न कीनों * कंस त्रास अपने उरलीनों ॥
सुनि वसुदेव बहुत सुख पायो * तब ऐसे कहि वचन सुनायो ॥
सुनहु नंद तुम नीके जानों * कंसनृपति कृत नाहिं छिपानों ॥
तातें अब ये दोऊ बालक * अपने मानि करौ प्रतिपालक ॥
अब तुम वेगि गोकुलहि जाहू * बालक हित पतियाहु न काहू ॥

दो०–जित तित भेजे कंसके, करत असुर अनरीति ॥
प्रजा लोगके बालकन, तातें है अति भीति ॥
सो०–गई पूतना आज, ब्रजके बालक घातिनी ॥
करि है कछू अकाज, वेग धाम सुधि लीजिये ॥

अथ पूतनावधलीला ॥

सुनि वसुदेव वचन नँदराई * भये विदा तुरतें भय पाई ॥
निकसत शकुन अशुभ मग पायो * तातें अधिक शोच उर छायो ॥
क्षिप्र चले कछु सुधि तनु नाहीं * बालककी चिन्ता मनमाहीं ॥
इहां पूतना ब्रजमें आई * रूप मोहनी प्रगट बनाई ॥
गँरल बाटि कुचसों लपटायो * ऊपर सुभग शृंगार बनायो ॥
अतिही कपट छवीली सोहे * जो देखै ताको मन मोहे ॥
इत उतहै नँद धामहिं आई * देखि रूप यशुदा मन भाई ॥

१ ब्रह्माकी. २ वृद्धावस्था. ३ पास. ४ उमर. ५ दाऊजी. ६ डर ७ जहर.

देखि रही मुख सुन्दरताई * कै यह नर कै सुरपीजाइ ॥
वाकी वधू कौनकी वेटी * अवलौं ब्रजमें कवहु न मेटी ॥
विन पहिंचाने आदर कीन्हौं * बैठनकौं शुभ आसन दीन्हौं ॥
अहो महरि पालागन मेरो * हौं आई सुत देखन तेरो ॥
हरिपलनापर मन मुसुकाई * यशुमति कछु गृहकाज सिधाई ॥

दो०–तबहिं राक्षसी दुष्टमति, पल्नाके ढिग जाय ॥
निरखि बदन मुख चूमिकै, लीन्ह उछग उठाय ॥

सो०–दियौ कमल मुखमाहिं, विषलपट्यो अस्तन तुरत ॥
पकर दुहूँ करमाहिं, लगे करन पयपान हरि ॥

पयसँग प्राण खिचे तब ताके * है गये अंग शिथिल सब ताके ॥
तब सो लगी छुड़ावन बालक * सो क्यों छुटै दुष्टकुल्घालक ॥
पयँ सँग प्राण खीचि हरि लीन्हा * पठै स्वर्ग जननीगति दीन्हा ॥
परी मृतक है असुर सुनारी * योजनलौं निजतनु विस्तारी ॥
यशुमति धाय दरशि गुहरायो * पलना पर बालक नहिं पायो ॥
त्राहि त्राहि करि सब जन धाये * व्याकुल विपुल नन्द गृह आये ॥
अति व्याकुल यशुमति महतारी * ढूढहिं श्यामहि रोवत भारी ॥
हरि ताकी छाती लपटाने * करत चरित जो अचरज साने ॥
ढूढत ढूढत उर पर पाये * लै उठाय माता उर लाये ॥
दुख सुख ताकौ कह्यो न जाइ * जिमि मणि गइ भुँजगन पाई ॥
सुखित भई सब ब्रजकी बाला * कहति बच्यौ अति नँदको लाला ॥
नन्द यशोमति भाग्य बडेरी * सुनकी बरवर टरी बरेरी ॥

---

१ देवनारी करी २ नारी ३ चूचियास ४ हाथ ५ दूध ६ चार पोतनक ७ सप

दो०–आई अद्भुत रूप धरि, अति विपरीत कुमारि ॥
कपट हेतु नहिं सहिसक्यौ, तेहि मार्‍यौ करतारि ॥
सो०–कहत यशोमति माय, पुनि पुनि सबके पायँपरि ॥
उबर्‍यौ आजु कन्हाय, तुम पंचनके पुण्यतें ॥

बड़ो कष्ट यह सुतने पायो * आजु विधाता बहुत बचायो ॥
कोउ कह भाग्यवन्त नँदराई * कुलके देवन करी सहाई ॥
कोउ कह नेक मोहिं सुत देरी * देसहुँ मुख मैं पुनि तू लेरी ॥
कोउ मुख चूमि बलैयाँ लेई * ले उछंग पुनि यशुदहिं देई ॥
मच्यो कान्ह सब ब्रज सुधिपाई * घर घर बजों अनंद बधाई ॥
तबहिं नंद गोकुलमें आयो * देखि पूतनहिं अति भय पायो ॥
जो वसुदेव कही ही बानी * सो सब मनमें सांची जानी ॥
तहँ सब ब्रजवासी जुरि आये * समाचार सब प्रकट सुनाये ॥
तब सुखपाय गये नँद धामहिं * देख्यो आय सुवैन घनश्यामहि ॥
बदनविलोकि हर्षि उरलाये * बहुत दानदे देव मनाये ॥
तब ब्रजवासी सकल बुलाये * अंग पूतनाके कटवाये ॥
बाहर एक ठौर सब कीन्हें * अग्नि लगाय फूँकि सब दीन्हें ॥

दो०–अति सुगंध ता अंगमें, कीन्ही अग्नि प्रकास ॥
हरी परस परतापते, ब्रज सब भयो सुवास ॥
सो०–रहे अचम्भौ पाय, ब्रजबासी चकित सबै ॥
चरणकमल चित लाय, नंदसुवन महिमा सुनत ॥

हरि रोये मातानी कनियाँ * दूध पियायो तब नँदरनियाँ ॥
पुनि पलना पौढ़ाय झुलावै * हुलरावै दुलराय मल्हावै ॥

१ देरा. २ मुख.

लालनके हित नींद बुलावै * मधुरे सुर जोई सोइ गावै ॥
रेलालनकी आव निंदरिया * तोहि बुलावत श्याम सुंदरिया ॥
जो करि कपट लालको आवै * तौ अनकीलैं विधि विनशावै ॥
अहो देवता या कुलकेरे * मैं पूजिहौं कमलपद तेरे ॥
वेगि बड़ी करदे यह बालक * ब्रज जन प्राण पूतना घालक ॥
दुतियाके शशि लौं शिशु बाढे * आँवा लौं अरि उर नित डाढै ॥
सोवै मेरो बाल कन्हाइ * माता मुखकी बलि बलि जाइ ॥
सोवत देखि मौन गहि रहइ * जागत देखि बहुरि कछु कहइ ॥
अँग फरकाय अल्प मुसुकाने * ता छबिकी उपमा को जाने ॥
बार बार शिशु बदन निहारै * यशुमति अपनो भाग्य विचारै ॥

दो०—हुलरावत गावत मधुर, हरिके बाल विनोद ॥
जो सुख सुर मुनिको अगम, सो सुख लेत यशोद ॥

सो०—कबहूँ लेत उछंग, उर लगाय चूमत मुखहि ॥
निरखि मनोहर अंग, कबहु झुलावत पालनें ॥

दर्शनको नित सुर मुनि आवैं * बाल विनोद निरखि सुख पावैं ॥
कहैं परस्पर सुर नर नारी * हरिके अद्भुत चरित निहारी ॥
अलख अगोचर अज अविनाशी * पुरुष पुरातन निश्वनिवासी ॥
जाको भेद न शिव मुनि जानैं * ब्रह्मा पढ़ि पढ़ि वेद बखानैं ॥
सो हुलरावत नंदकी घरणी * पूरण भई पुरातन करणी ॥
मन अभिलाष बढ़ावत भारी * हुलसत हँसन दंत किलकारी ॥
हर्षि प्रगटें हर्षि मनमाहीं * धन्य धन्य कहि मन धर जाहीं ॥

१ मारनको २ चन्द्रमा ३ बालक ४ थोड़े ५ गोदी ६ जो दीखनमें न आवे ७ जो इन्द्रियनि परे हो ८ जिसका जन्म नहो ९ पुरुष

नित नव कौतुक होहिं अकासा * ब्रजवासिनमन अमित हुलासा ॥
यशुदा नितनव लाड़ लड़ावें * निरखि २ ब्रज जन सुख पावें ॥
नित नव मंगल नँदके धामा * नित नव रूप श्याम अभिरामा ॥
भक्तवछल भक्तन हितकारी * भक्तन हित नाना तनुधारी ॥
भजत संत यह हृदय विचारी * जन ब्रजवासी हैं बलिहारी ॥

दो०–जब हरि मारी पूतना, सुनि डरप्यो नृप कंस ॥
प्रगट भयो ब्रज शत्रु मम, यह जानी निःशंस ॥

सो०–वसो तासु उरमाहिं, ताही क्षणते अचल हरि ॥
भूलत इक छिन नाहिं, शत्रु भाव लाग्यो भजन ॥

अथ कागासुरवधलीला ॥

कागासुर नृप निकट बुलायो * ताहि मतो सब कहि समुझायो ॥
आवहु वेगि नंदसुत मारी * करियहु कारज बुद्धि विचारी ॥
आयसु धरि सिर गर्व बढायो * काग रूप तिहि असुर बनायो ॥
वेगवन्त उठि गोकुल आयो * प्रेरितकाल अवधि नियरायो ॥
बैठ्यो नंद धामपर आई * पलना पौढे बाल कन्हाई ॥
ताको आवतही हरि जान्यो * काग न होय असुर पहिचान्यो ॥
यशुदा हरिको सोवत जानी * कछु गृह कारजमें लपटानी ॥
तबहि असुर पलनापर आयो * चाहत हरिको चोंच चलायो ॥
कंठ पकरि हरि करसों लीन्हीं * चोंच मरोरि फेंकि तिहि दीन्हीं ॥
पन्यो जाय नृपपास उतान्यो * यह ब्रजवासी काहु न जान्यो ॥
तुरत कंस तिहि बूझन धायो * बीते याम बोल तब आयो ॥
सुनहु कंस यह बाल न होई * है अवतार महाबल कोई ॥

१ सुन्दर. २ महर.

दो०-एक हाथसों पकरि मोहि, फेंकि दियो तुम पास ॥
ह्वै है तुह्मरो काल वह, मैं कीन्हो विश्वास ॥
सो०-अति डरप्यो महिपाल, कागासुरके वचन सुनि ॥
यद्दि सो गयो विशाल, जम्यो जु उरमें शोच तरु ॥
सभा मध्यं सब असुर सुनाई * बार बार शिरधुनि पछिताई ॥
ब्रजमें उपज्यो मेरो काला * ताको अबही ते यह हाला ॥
दनुज सुता पूतना पठाई * ताको इकछन माँझ नशाई ॥
कागासुरके ऐसे हाला * सोतो दिन दिन होत विशाला ॥
है कोउ वीर जु ताहि नशावै * मम कारज करि आप बचावै ॥

अथ शकटासुरवधलीला ॥

ऐसो कौन कहीं मैं जासों * अबकै जाय भिरै जो तासों ॥
असुरनको ये नृपति सुनायो * शकटासुर मन गैंवबढायो ॥
उठि कै पान नृपतिसों मागे * कहा श्याम यह मेरे आगे ॥
तव प्रताप तेहि पलमें मारौं * वही तौ सब ब्रजको सहारौं ॥
कंस हर्ष तेहि बीरा दीन्हौ * शूर सराहि बिदा तेहि कीन्हौं ॥
यहाँ श्याम पलना पर खेलैं * करगहि पद अँगुठा मुख मेलैं ॥
अपने मन यह करत विचारा * इह मम पद संतन आधारा ॥
दो०-ये पद पंकज राखि उर, निरखत शम्भु सुजान ॥
इनको रस मन मधुप करि, करत निरंतर पान ॥
सो०-पुनि इनपदको ध्यान, करत ब्रह्मसनकादिमुनि ॥
एकमी अति सुखमान, उरतें क्षण टारत नहीं ॥
इन पदपंकज रस अनुरागा * मगन सकल सुर नर मुनि नागा ॥

१ सभा २ बीच ३ घमंड

ऐसोधौं का रस इनमाही * सोतो मोहिं विदित कछु नाहीं ॥
मोको यह रस दुर्लभ भारी * देखौं धौं मैं ताहि विचारी ॥
तातें पद अँगुठा मुख मेलैं * लैलै स्वाद मगन रस खेलैं ॥
ताअन्तर शकटासुर आयो * पवनरूप काहु न लखि पायो ॥
मारे शकट[१] नन्द घर केरे * पलनाके ढिंग हुते घनेरे ॥
तिनमें सो शठ[२] आय समान्यौं * नन्दसुवन[३] तबहीं यह जान्यौं ॥
तावौ हरि यक लात चलाई * गिन्यौ शकट तब अति हहराई ॥
दैनुज[४] निधनें[५] काहू नहिं जान्यौ * गिन्यौ शकट यह सबहिन मान्यौ॥
सुनत शब्द सब व्याकुल धाये * नन्द आदि सब जुरि तहँ आये ॥
यशुमति दौरि श्यामको लयऊ * सबके मन अति विसमय भयऊ ॥
कारण कहा कहैं नर नारी * गिन्यौ शकट आपुहितें भारी ॥

दो०-पलनाढिंग खेलत हुते, कछुक गोपके बाल ॥
तिनन कह्यौ डान्यौ शकट, पलनातें नँदलाल ॥

सो०-सोनहिं करी प्रतीति, काहू बालनकी कहीं ॥
यह तौ कछु विपरीति, भई कुशल अति श्यामको ॥

यशुमति अति मन पछिताई * भये आज कुलदेव सहाई ॥
बार बार उरसों सुत लाई * निरखि नन्द पुनि पुनि बलि जाई॥
मेरे निधनी के धन छैया * लगै मोहिं तेरि रोग बलैया ॥
ऐसे बहु विधि लाड़ लडाये * पय[६] पिपाय पलना पौढ़ाये ॥
मन्द मन्द करठोंकि सुनावै * कछु इक मधुर मधुर सुर गावै ॥
सोवत श्याम शुभग सुंदर वरँ * चौंकि चौंकि शिशु दशा प्रगटकरा॥
लिये मातु छतियाँ लपटाई * जनु फणि मणि उर माँझ दुराई ॥

१ छकड़ा. २ मूर्ख. ३ पुत्र. ४ असुर ५ मरण. ६ दूध. ७ अच्छा.

प्रात निरखि मुख आनद कीन्हा * चूमि वदन सुतको पय दीन्हा ॥
कोमल धाम अजिर नव आया * तब सुत पलना पर पौढायो ॥
आप मथन दधि भवन सिधारी * नदहि सुतक ढिंग बैठारी ॥
निरखि नन्द सुत आनद भारा * कमल वदन छवि रहे निहारा ॥
चुम्बी दैदै सुतहि खिलावै * निरखि निरखि सुख अति सुख पावै

दो०–किलकि उठे लखि तात मुख, कैर पददग अनुराय ॥
झपट झटकि उलटे परे, सुखनिधि त्रिभुवनराय ॥

सो०–सो छबि कहिय न जाय, निरखि नन्द टेरत महरि ॥
आप न सकत उठाय, अति कोमल मम सकुचमन ॥

नन्दहि टेरत सुनि नन्दरानी * तजी सुरत दधि मथन मथानी ॥
नाने महरि गिरे सुखदाइ * तातें अति आतुरे उठिधाई ॥
नदहि देखि हमतिहैं पासा * तब धीरज धरि कियौं हुलासा ॥
उलटि पर्यौ सुत देख्यौं आई * उठि न सकत कर सेन लगाइ ॥
सोछवि निरखि मातु सुख पायो * तुरत मुदित उलटाय उठायो ॥
उर लगाय मुख चुम्बन लागी * कहत आज मैं भई सभागी ॥
पिर्देकरान हरि उलटन लागे * डेढ़ मासके भये सभाग ॥
चिरजीवहु मम कुँवर कन्हाइ * आज करों मैं अनद बधाई ॥
नँदरानी मन नारि बुलाइ * यह सुनि सब आनद कर धाई ॥
हरिको निरखि परम सुख पायो * हरषित सबहिन मगल गायो ॥
बाटी घर घर पान मिठाई * नन्दसुवन मनजन सुखदाई ॥
धनि धनि मजकी बाल सभागी * हरिक बालचरित अनुरागी ॥

१ हाथ २ जल्दी ३ पन्केवल

हरिको लैकैं गयो अकाशा * धूरि धुंध गोकुल चहुँपासा ॥
जहाँ तहा नर नारि छिपाने * प्रलयकालसम करि सब माने ॥
यशुमति दौरि अजिरमें आई * तहा न पायो कुँवर कन्हाई ॥
नन्द नन्द करि शोर लगायो * तेरौ सुत अँधवायु उड़ायो ॥
दौरो वेगि गुहार लगावो * ब्रजवासिनको वेरि बुलावो ॥
अति व्याकुल खोजत नँदरानी * जित तित फिरत भुवन बिलखानी ॥
तृणावर्तको हरि धरि कीन्हो * ग्रीव लिपट तिहि नीचे लीन्हो ॥
कठिन शिला पर ताहि गिरायो * ताके ऊपर आपुन आयो ॥
चूर चूर करि ताके गाता * कीन्हे मुक्तिमुक्तिके दाता ॥
धूरि धुन्द सब तुरत विनाशी * खोजत हरिहिं विकल ब्रजवासी ॥
ब्रजवनितन उपवनमें पाये * लिये उठाय कण्ठ लपटाये ॥
अति आतुर यशुमति पै लाइ * ह्वैगइ घर घर आनँद बधाई ॥
दो०–लिये धायकें मायने, छतिया रही लगाय ॥
नन्द निरखि सुख पायकें, मैंनसी बहुतिक गाय ॥
सो०–बार बार ब्रजनारि, देहि बसन भूषण मगन ॥
जित तित कहैं विचारि, नयो जन्म हरिको भयो ॥
उबरे श्याम महरि बड़भागी * देखहु धौं कहु चोट न लागी ॥
रोग लेउँ करि जाउँ बलाई * हरिहैं ब्रजके जीवन माई ॥
भली न प्रकृति यशोदा तेरी * इकलो हरिको छाँड़त हेरी ॥
घरको काम इनहुँ ते प्यारो * बौरी अजहूँ सुरति सँभारो ॥
बहुत बच्योरी आज कन्हाई * भयो पुरबलो पुण्य सहाइ ॥
यशुमति सबसों कहत लजानी * अब मैं सीख तिहारी मानी ॥

१ गापिया २ शीघ्र ३ मकरध्वजी ४ पागल

मोहि कहा हो यह सुखभाई * मैं तो रंकै परी निधिपाई ॥
अब मैं अपनो लाल चितैहौं * एकौ क्षण काहू न पत्यैहौं ॥
ऐसे कहि सबसों नँदरानी * कीन्हीं विदा सकल सन्मानी ॥
यशुमति हरिको गोद खिलावै * देखि देखि मुख नयन सिरावै ॥
अति कोमल श्यामल तनु देखी * बार बार पछितात विशेषी ॥
कैसे बच्यो जाउँ बलिहारी * तृणावर्तकी घात निवारी ॥

दो०-नाजानौं किहि पुण्यते, को करिलेत सहाय ॥
कियो काम सब पूतना, तृणावर्त यह आय ॥

सो०-मातु दुखित जियजानि, कृपासिन्धु वत्सलभगत ॥
बालचरित सुखदानि, करन लगे सुन्दर परम ॥

खेलत मातु उँछंग कन्हाई * करत बाललीला सुखदाई ॥
जननी बेसँर लटकत देखी * चितवत ताहि बिसारि निमेषी ॥
ताहि गहनको पाँणि चलायो * तब जननी कछु वँदन उचायो ॥
नहिं पहुंचे तब अति उकताई * सो छवि निरखि मातु बलि जाई ॥
जननी वदन निकट करि लीन्हो * तब हरिहुलसिकिलकि हँसिदीन्हो
बिहँसत चमकि परीं दुन्दतियाँ * जनु युग बिज्जुँ बीजकी पतियाँ ॥
प्रमुदित निरखि यशोदा फूली * प्रेममगन तनुकी सुधि भूली ॥
बाहरते तब नंद बुलाये * परमानन्द सहित उठि धाये ॥
हो पति सफल करौ दृग आई * देखहु सुतमुख दँतुलि सुहाई ॥
हर्षित हरिहिं गोद नँद लीन्हों * निरखि तानमुख हरि हँसि दीन्हो
देखत वदन नयन सियराने * दूध दाँत किधौं छबिके दाने ॥
अहो महरि बड़ भाग्य तुम्हारे * सफल फले मनकाज हमारे ॥

---

१ दरिद्री. २ समुद्र. ३ गोद. ४ नथनी. ५ हाथ. ६ मुख. ७ बिजली.

दो०-कछु दिन घट पट मासके, भये श्याम सुखदान ॥
अन्न पराशनक दिवस, बूझहु विप्र विहान ॥
सो०-सुनि पुलके नँदराय, भये पराशनयोग हरि ॥
प्रेम रह्यो उर छाय, सो सुख कापै जाय कहि ॥

अथ अन्नप्राशनलीला ॥

प्रातकाल उठि विप्र बुलायो * राशि बूझि शुभ दिवस धरायो ॥
यशुमति सो दिन आछो पायो * सखिन बोलि शुभगान करायो ॥
युवति महेरिको गारी गावैं * और महरको नाम सुनावैं ॥
मणि कञ्चनके थार मगाये * भांति भांतके वासन आये ॥
नन्दघरनि महावधू बुलाइ * ते सब अपनी जाति सुहाई ॥
कोउ जिवनार कोउ पकवाना * षट्रसके बहु करत विधाना ॥
बहु प्रकारके व्यंजन ठाने * जिनके स्वाद न जायँ बखाने ॥
अति उज्ज्वल कोमल शुभनीके * कियो विविध विधि मनहुँ अमीके ॥
यशुमति नन्दहि बोलि कह्यो तब * बोलो महर जाति अपनी सब ॥
आय गये नन्दरावल महर घर * ल्याये बोलि सबन आदरकर ॥
बैठारे सब आनि अथाइ * भीतर गये आप नन्दराइ ॥
यशुमति हरिको उबटि न्हवाये * सुन्दर पट भूषण पहिराये ॥
दो०-तनु झँगुली शिर चौतनी, कर चूरा दुहुँ पाँय ॥
बार बार मुख निरखिकै, यशुमति लेति बलाय ॥
सो०-लै बैठे नँदराय, जानि शुभघरी गोद हरि ॥
लीने सदन बुलाय, गोप सकल आनँद भरे ॥

---

१ नन्दराय २ अमृत ३ बलैया

बैठे सकल गोपगण आई * अति आनन्दमगन नँदराई ॥
कनकथार[1] भरि खीर धराइ * मिश्री घृत मधु डारि मिलाइ ॥
लगे नन्द हरि मुख जुठरावन * गोपवधू लागीं सब गावन ॥
आगन बाजी विविध बधाई * शख निशान भेरि सहनाई ॥
षटरसके व्यजनह[2] जेते * हरिके अधर छुवाये तेते ॥
तनक अधर जल पोंछि सुहाये * हरिको यशुमति पै पहुँचाये ॥
रूपवन्त युवती सचुपायो * लैलै मुख चुवति उरलायो ॥
विप्र बोलि दक्षिणा दीही * नाना वस्तु निछावरि कीन्हा ॥
गोपन संग महरि नँदराई * बैठे पनवारे पर जाई ॥
अति रुचि सबहिन भोजन कीनौं * बीरा बहुरि सबनको दीनौं ॥
गोपवधू सब महरि जिमाई * देकै पान सुगधि सिचाँइ ॥
इहि विधि सुख बिलसैं ब्रजवासी * निरखैं श्याम सुभग गुनराशी ॥

दो०–सुर सिहाहिं ललचाहि मुनि, लखि ब्रजजनके भाग ॥
धन्य धन्य कहि सुमनझरि, करहि सहित अनुराग ॥

सो०–नित नव मगलचार, नित नव लीला श्यामकी ॥
को कवि चरणै पार, शेष न पावैं पार जिहि ॥

नेति नेति जिनको श्रुति[4] गावैं * तिनको ब्रजजन गोद खिलावैं ॥
जो सुख नद भवनके माहीं * तीनि लोकमह सो कछु नाहीं ॥
नित नयो सुख यशुमति पावै * नये नये नित लाड़ लड़ावै ॥
नयन ओट[3] हरि करत न कैसे * उँगवत रहै[5] फणिकमणि जैसे[6] ॥
निंदति निमिषैं होत पल ओटा[7] * निरखतही सुख पावति ढोटा ॥

---

१ सोनेकी थाली २ पदार्थ ३ ओट ४ वेद ५ दबते रहे ६ सर्पकी मणि ७ पलकका लगना

तनक कपोलें अधर अरुणारे * तनक तनक धँच घूघर वारे ॥
कुटिल भ्रुकुटि की रेख सुहाइ * मसिबिंदुक तापर सुखदाई ॥
नयन नासिका भाल विशाला * कलरल बोलन परमरसाला ॥
अर्ले दशन चिबुं कदर ग्रीवाँ * तनुधन श्याम मृदुल छबि सीवा ॥
मातु निरखि नयनन सुख पावै * प्रेम विवश मति गति बिसरावै ॥
निरखि रूप यशुमति अनुरागै * कहत कहू मम दीठि न लागै ॥
तब अचरातर लेत छिपाई * टारत बार लोन अरु राइ ॥

दो०-कबहुँ झुलावति पालने, कबहुँ खिलावति गोद ॥
कबहुँ सुवावति पलगपर, यशुदा सहित विनोद ॥

सो०-नित प्रति ब्रजकी बाम, आवें यशुमतिके सदन ॥
मुदित निरखि घनश्याम, लैलै गोद खिलावहीं ॥

मात समझ मैंथनीते लेई * कछु खवाय कछु कैर धर देई ॥
खेलत सात कान्ह मणि अँगना * इत उत करत घुटुरुवन रिंगना ॥
दो०-करचूरा पैंगपैंजनी, तनु रंजित रजपीत ॥
उर हरि नँख कटि किंकिणी, मुखमंडित नँवनीत ॥
सो०-होत चकित चितचाय, बजत पैंजनी शब्द सुनि ॥
सुर मुनि रहत लुभाय, बालदशाके चरित लखि ॥
खेलत आँगन बाल गोविंदा * तात मात उर करत अनन्दा ॥
चलत पाणि पदकी परछाहीं * प्रतिबिम्बतमणि आँगनमाहीं ॥
मनहुँ शुभग छवि महितटपाई * जलभाजन जल लेन सराई ॥
किधौं आनि पद कोमलतासन * धरि धरि देत कमलके आसन ॥
निरखि शुभग शोभा सुखदनियाँ * लिये हरषि सादर नदकनियाँ ॥
नीलजलजैंतनु सुन्दर श्यामा * शुभग अंग सब छविके धामा ॥
अरुण तरुण नख ज्योति सुहाई * कोमल कमल चरण सुखदाई ॥
रनुझुनु पैंजनि पाँयन बाजैं * मैनसिजयंत्र सुनत सुर लाजैं ॥
कटि किंकिणी जटित खनकारी * पीत झँगुलिया सुभग सँवारी ॥
कर कमलनि चूरा छविलाजै * रुचिर बाहुभूषण अतिराजै ॥
कठुला हार जो अंग सुहाए * बिच बिच पदिक मैंबाल पुहाए ॥
चारु चिबुक युति बरणि न जाई * गोलकपोल परम छवि छाई ॥
दो०-अँरुण अधरमधि देंसन युँति, प्रकट हँसनमें होति ॥
मानहु सुन्दरता सदँन, रूप रत्नकी ज्योति ॥

१ हांडीसे. २ हाथ. ३ पायँजेब. ४ नोह ५ कमर ६ तागडी. ७ माखन. ८ हाथ. ९ परछाई पडती है. १० नीलकमलके समान श्यामशरीर. ११ काम. देवरूपी यंत्र. १२ मूगा १३ लाल. १४ होट. १५ दांत १६ चमक १७ घर.

सो०-मधुर तोतरे बैन, श्रवणसुखद मुनिमनहरण ॥
सुनत होत चित चैन, समुझत कछुक बनै नहीं ॥
नासा सुभग कमरदल लोचन * भाल विशाल तिलक गोरोचन ॥
भृकुटि निकट मेंसिविन्दुक लाग्यो * मानो अलि शावक सोय न जाग्यो ॥
लाल चौतनी शीश सुहाई * विविध रंग मणिगण लटकाई ॥
बाल दशाके कच धुंधरारे * छिटकिरहे कछु धूमघुमारे ॥
मंजुल तारनकी चपलाई * बालदशाकी ललित सुहाई ॥
चन्द्रवदन सुखसदन कन्हाई * निरखि नन्द आनँद अधिकाई ॥
वदनैं चूमि उँरसो लपटायो * सो सुख कापै जात बतायो ॥
ब्रजयुवती सब चितवत ठाढीं * मनहुँ चित्र पुतरी लिखि काढी ॥
प्रेममगन नँद सुवन निहारैं * गृहकारजकी सुरति विसारैं ॥
ब्रजयुवती हरिसों मन लावैं * नन्दसुवन सबके मन भावैं ॥
ब्रजवासी प्रभु सबके नायक * प्रेमविवश जनके सुखदायक ॥
बालचरित लेखि सुर सुख पावैं * योगदशा सनकादि भुलावैं ॥

दो०-करत बाललीला ललित, परमपुनीत उदार ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरि, सन्तनके आधार ॥
सो०-कापै वरण्यो जाय, बालचरित नंदलालको ॥
कल्प न सकहि न गाय, शेष कोटि शारद सहस ॥

अथ नामकरणलीला ॥

इकदिन श्रीवसुदेव विज्ञानी * पठये बोलि ग मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा विधिवत बैठायो * युग पदकमल शीश तब नायो ॥

१ काजल २ भौरा. ३ मुख ४ छाती. ५ देखकर ६ दोनो

बहुरि कह्यों सुनिये ऋषिराई * जबते भयो कंस दुखदाई ॥
जबतें गोकुल नन्द अवासा * आय रोहिणी कियो निवासा ॥
जाके गर्भ जन्म सुत लीन्हों * कंस त्रासतें प्रगट न कीन्हों ॥
नामकरण ताको अबनाई * भयो नाहिं तुम विना गुसाँई ॥
करिकै कृपा तहाँ प्रभु जइये * ताको नाम राखिकै अइये ॥
सुनि वसुदेव वचन सुख पायो * हर्षसहित मुनि गोकुल आयो ॥
नन्दराय ऋषि आगम जान्यो * अपनो वडो भाग्य करि मान्यो ॥
चरण धोय चरणोदक लीन्हों * अर्घासन अतिहित करि दीन्हों ॥
वडी कृपा कीन्ही ऋषिराजू * मोसम धन्य आन नहिं आजू ॥
अति पुनीत भोजन बनवायो * विविध भाँति ऋषिराय जिमायो ॥

दो०-बहुरि महरि ऋषिरायसों, कह्यो जोरि कर दोय ॥
किहि कारज प्रभु आगमन, कहौ कृपा करि सोय ॥

सो०-तब बोले ऋषिराज, पठ्योहै वसुदेव मोहि ॥
नामकारणके काज, सुभग रोहिणीसुवनको ॥

सुनत नन्द अति भये सुखारे * लै आये कनियाँ दोउ वारे ॥
मुनि चरणनमेले दोउ भाई * दई असीस मुदित ऋषिराई ॥
हरिकी छवि अति आनँदकारी * देखि रहे मुनि पलक विसारी ॥
प्रथम नन्द बलहाँथ दिखायो * जन्मदिवस मुनिपास सुनायो ॥
देखि गर्ग उठि कियो विचारा * है यह शिशु सब जगत अधारा ॥
अतिशुभ लक्षण बलको धामा * धन्यो नाम तिनको बलरामा ॥
बहुरि नन्द चरणन शिर नायो * कह्योकि ऋषि मम भागन आयो ॥
तुम सर्वज्ञ अहो मुनिनाथा * देखिये यह बालकको हाथा ॥

१ डरसे. २ पवित्र. ३ गोद. ४ बलदेवजीका

सो०-मधुर तोतरे बैन, श्रवणसुखद मुनिमनहरण ॥
सुनत होत चित चैन, समुझत कछुक बनै नहीं ॥
नामा सुभग कमलदल लोचन * भाल विशाल तिलक गोरोचन ॥
भृकुटि निकट मसिविन्दुक लाग्यो * मानो अलि शावक सोय न जाग्यो ॥
लाल चौतनी शीश सुहाई * विविध रंग मणिगण लटकाई ॥
बाल दशावे कच घुघरारे * छिटकिरहे कछु घूमघुमारे ॥
मंजुल तारनदी चपलाई * बालदशारी ललित सुहाई ॥
चन्द्रवदन सुखसदन कन्हाई * निरखि नन्द आनँद अधिकाई ॥
वदन चूमि उरसों लपटायो * सो सुख कापे जात बनायो ॥
मनयुवती सव चितवत ठाढा * मनहु चित्र पुतरी लिखि काढा ॥
प्रेममगन नँद सुवन निहारैं * गृहव्यारजकी सुरति विसारैं ॥
मनयुवती हरिमों मन लावैं * नन्दसुवन सबके मन भावैं ॥
ब्रजवासी प्रभु सबके नायक * प्रेमविवश जनके सुखदायक ॥
बालचरित लखि सुर सुख पावें * योगदशा सनकादि भुलावैं ॥
दो०-करत बाललीला ललित, परमपुनीत उदार ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरि, सन्तनके आधार ॥
सो०-कापै वरण्यो जाय, बालचरित नदलालको ॥
कल्प न सकहिं म गाय, शेष कोटि शारद सहस ॥

अथ नामकरणलीला ॥

इकदिन श्रीवसुदेव विज्ञानी * पठये बोलि ग मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा विधिवत बैठायो * गुरुपदकमल शीश तव नायो ॥

१ काजल २ भोरा ३ गुरु ४ ज्ञानी ५ देखकर ६ दोनो

बहुरि कहौं सुनिये ऋषिराई * जबते भयो कंस दुखदाई ॥
जबतें गोकुल नन्द अवासा * जाय रोहिणी कियो निवासा ॥
जाके गर्भ जन्म सुत लीन्हों * कंस त्रासतें प्रगट न कीन्हों ॥
नामकरण ताको अवताई * भयो नाहि तुम विना गुसाँई ॥
करिकै कृपा वहाँ प्रभु जइये * ताकों नाम राखिकै अइये ॥
मुनि वसुदेव वचन सुख पायो * हर्षसहित मुनि गोकुल आयो ॥
नन्दराय ऋषि आगम जान्यो * अपनो बडो भाग्य करि मान्यो ॥
चरण धोय चरणोदक लीन्हों * अर्घासन अतिहित करि दीन्हों ॥
बडी कृपा कीन्ही ऋषिराजू * मोसम धन्य आन नहिं आजू ॥
अति पुनीतै भोजन बनवायो * विविध भाँति ऋषिराय जिमायो ॥

दो०-बहुरि महरि ऋषिरायसों, कह्यो जोरि कर दोय ॥
किहि कारज प्रभु आगमन, कहौ कृपा करि सोय ॥

सो०-तब बोले ऋषिराज, पठयोहै वसुदेव मोहि ॥
नामकारणके काज, सुभग रोहिणीसुवनको ॥

सुनत नन्द अति भये सुखारे * लै आये कनियाँ दोउ बारे ॥
मुनि चरणनमेले दोउ भाई * दई अशीस मुदित ऋषिराई ॥
हरिकी छबि अति आनँदकारी * देखि रहे मुनि पलक विसारी ॥
प्रथम नन्द बलदेव दिखायो * जन्मदिवस मुनिपास सुनायो ॥
देखि गर्ग उठि कियो विचारा * है यह शिशु सब जगत अधारा ॥
अतिशुभ लक्षण बलको धामा * धन्यो नाम तिनको बलरामा ॥
बहुरि नन्द चरणन शिर नायो * कह्योकि ऋषि मम भागन आयो ॥
तुम सर्वज्ञ अहो मुनिनाथा * देखिये यह बालककों हाथा ॥

१ घरमें. २ पवित्र. ३ गोद ४ बल्देवजीका.

मुनिवर देखत चिह्न भुलान्यौं * प्रेममगन सब तनु पुलकान्यों ॥
पुनि पुनि हरिको वदन निहारी * बोल्यो मुनिवर सुरत सँभारी ॥
धन्य नन्द धनि महरि यशोदा * धनि धनि धन्य खिलावत गोदा ॥
सुनहु नन्द मैं मत्य बखानों * इनको तुम सुत करि मत जानों ॥

दो०–रूपरेख जाके नहीं, अलेख अनादि अनूप ॥
सो भक्तनहित अवतऱ्यो, निज इच्छा अनुरूप ॥

सो०–इनते बडो न कोय, ये कर्ता सब जगतके ॥
जो ये करैं सो होय, तुमसों हम साँची कहैं ॥

इनके नाम अमितै जगमाहीं * तदपि कहौं मैं कछु तुम पाहीं ॥
इन कबहू वसुदेवके धामा * लियो जन्म सुंदर वर श्यामा ॥
ताते वासुदेव इक नामा * सो सुमिरत पावहिं नर कामा ॥
कहिहैं कृष्ण बहुरि जगमाहीं * जाके सुमिरत पाप नशाहीं ॥
अरु ये जैसे कर्मनि करिहैं * तैसे नाम जगत निस्तरिहैं ॥
दुष्ट दैत्यन सन्तन सुखदाई * भूमिभार हरिहैं दोउ भाई ॥
तुम कबहूँ तपकरि यह मागा * तुमहिं खिलावैं अति अनुरागा ॥
तातें सुत करि तुम इन पायो * मनजानों इनको निज जायो ॥
ये अति सुखदायक मजके रे * करिहैं अति आनन्द घनेरे ॥
सुनि ऋषिमुख हरि यश सुखराशी * आनंदे सब ब्रजके वासी ॥
सुनि नन्द यशुमति सुख पायो * मुनि चरणनको शीश नवायो ॥
बहुत भेंटले आगे राखी * अस्तुति बहुत भांतिसों भाखी ॥

---

१ जो दीख न सके २ जिसकी उपमा न हो ३ वेहद ४ मारनके लिये ५ प्रीति

दो०-विदा भये ऋषिराज तब, नन्दभाग्य बड़ भाखि ॥
चले मधुपुरीकों हरषि, हरि मूरति उरराखि ॥
सो०-कह्यो हर्षि ऋषिराय, सब वृत्तान्त बसुदेवको ॥
सुनत बहुत सुखपाय, ऋषिहिं पूजि कीन्हे विदा ॥
यशुमति समुझि गर्गकी बानी * आपुनि अति बड़भागिन जानी ॥
हरिको लै उरसों लपटायो * प्रमुदित अस्तनपानै करायो ॥
श्याम राम मुख निरखत मोदा * मातु रोहिणी और यशोदा ॥
रवँकि रवँकि हरि बैठत गोदा * भावत हरिके बाल विनोदा ॥
हरिको गोद लिये दुलरावैं * पुनि पुनि तुतरे बोल बुलावैं ॥
कबहुँक गावत दैकर तारी * कबहुँ सिखावत चलन मुरारी ॥
तनक तनक भुज टेक उठावैं * क्रम क्रम ठाढो होन सिखावैं ॥
पुनि गहि भुजपद द्वैक चलावैं * लरखरात लखि मन सुख पावैं ॥
मनहीं मन यों विधिहि मनावैं * कबधौं अपने पायन धावैं ॥
कबहुँक छोंड़ देत अँगनैया * खेलत मुदित तहाँ दोउ भैया ॥
गौर श्याम बलराम कन्हैया * संगहि संग फिरत दोउ भैया ॥
जिमि बछराके पाछे गैया * ब्रजवासी जनलेत बलैया ॥
दो०-धवलै धूरि धूसरिततनु, बाल विभूषण अंग ॥
अंजन रंजित दृग चपल, निरखत लजत अनंगै ॥
सो०-विहरत आनँदकन्द, मणिमय आंगन नन्दके ॥
यदुकुलकैरवँचन्द, दहन दनुजकुलवन अनल ॥
कबहूँ ठाढि होति गहि मैया * कबहूँ डोलत चलत कन्हैया ॥

१ दूधपिलाया. २ श्रीकृष्ण. ३ सफेद. ४ कामदेव. ५ यदुकुलरूपी कमोदनीको प्रकाशित करनेको चंद्रमा

पान फूल फल डार रसाला * हरदिदूब दधि अक्षत माला ॥
मंगल द्रव्य सकल मँगवाई * बहुमेवा बहुभाँति मिठाई ॥
यशुमति कीन्ह उबटि अन्हवाये * अंग पोछि भूषण पहिराये ॥
टोपी जरकस पीत झँगुलिया * दमकत द्वै द्वै चार दँतुलिया ॥
कठुला कंठ बघनखानीको * किये भाल केसरको टीको ॥
लटकत ललित ललाट लटूरी * वरणि न जाय बदन छविरूरी ॥
दो०-नयन आँज भ्रुकुटी निकट, कियो मातु मसिबिन्दु ॥
करि शृँगार हरि मुख निरखि, चूम्यो मुख अरविन्द ॥
सो०-लिये गोद सुखकन्द, नन्द बोलि यशुमति कह्यो ॥
बोलहु भूसुर वृन्द, लग्नघरी आवत चली ॥
काहेको अब गहरू लगावत * विप्र वेगि काहे न बुलावत ॥
नन्द खिझि वर विप्र बुलाये * पदपखारि आसन बैठाये ॥
लै उछंग लालन नँदराई * बैठे हर्षि चौकपर जाई ॥
वेद मंत्र विधि सहित पढ़ावत * बरसगाँठि सुख सहित जुड़ावत ॥
ब्रजनारी सब बनिबनि आवैं * मंगल तिलक श्यामको लावैं ॥
गावत मंगल कोकिल बैनी * हरि दर्शन प्यासी मृगनैनी ॥
तिलक सबनि मोहनके दीन्हो * देखि देखि सुख अति सुख लीन्हो ॥
विप्रन बहुत दक्षिणा पाई * बाँटी सबको पान मिठाई ॥
धन मणि चीर निछावरि कीन्हे * बार बार नेगिनको दीन्हे ॥
तब सारि पंचरंग मँगाई * हर्षित महरि बधुन पहिराई ॥
देत अशीश सकल अतिमोदा * लेत यशोमति भरि भरि गोदा ॥
नित नव गोकुल होत बधाई * सदा श्याम जनके सुखदाई ॥

१ चावल. २ कालीबिन्दी. ३ कागज. ४ देरे. ५ जल्दी. ६ पैर धोकर. ७ गोद.

कुलही चित्र विचित्र झगुलिया * दमकि उठत द्वैललित दँतुलिया ॥
मुनिमनहरण मजुमसि विंदा * सुखद चारु लोचन अरविंदा ॥
कलवल वचन तोतरे बोलै * गहि मणिखभ डगत डगडोलै ॥
निरखत झुक झाकत प्रतिबिम्बै * देत परम सुख पितु अरु अम्बै ॥
मथति जहाँ दधि नँदकी रानी * होत खरे तहँ टेकिमथानी ॥
मात तनिकदधि देति खवाई * लेत प्रीति सों सो सुखदाई ॥
क्षीर समुद्र जासु रजधानी * तनकदहीसों तिन रुचि मानी ॥
तनिकसो वदन तनिकसी दँतिया * तनिकसों अधर तनिकसी बतियाँ ॥
तनक बदन दधि तनक कपोलनै * तनक हँसन मन हरण अमोलन ॥
तनक तनक वर तनकै माखन * तनक अँगुरिया तनकै चाखन ॥
तनक तनक भुज चरण सुहाये * तनक स्वरूप मैनोज लजाये ॥

दो०–तनक विलोकन जासुकी, सकल भुवन विस्तार ॥
तनक सुने यश होतहै, तनक सिन्धु संसार ॥

सो०–तनक रहत नहिं पाप, तनक नाम जाके लिये ॥
मिटत सकल भवतापै, तनक कृपा जापै करहिं ॥

अथ वरसगांठलीला ॥

वरसगांठ लालनकी आई * द्विपटमासके भये कन्हाई ॥
फूली फिरत यशोमति माई * घरघर ते सब वधू बुलाई ॥
प्रमुदित मंगल गान करायो * आनँद उमगे तूर बजायो ॥
आंगन सकल सुगंधि लिपायो * रुचिरचि मोतिन चौक पुरायो ॥
फूले फिरत नन्द सुत भारी * लिये गोपगण सकल हँकारी ॥
द्वारन बन्दनवार बधाये * ध्वजपताक रचि विविध बनाये ॥

१ माता २ गाउ. ३ कामदेव ४ संसाररूप दुःख ५ वरसदिनके.

पान फूल फल थार रसाला * दरदिव दधि अछत माल ॥
मगल द्रव्य सकल मँगवाई * बहुमेवा बहुभाँति मिठाई ॥
यशुमति कीह उवटि अन्हवाये * अंग पोंछि भूषण पहिराये ॥
टोपी जरकस पीन झँगुलिया * दमकन दैदै चार दँतुलिया ॥
कठुला कठ बधनखांकी * किये भाल केसरको टीको ॥
लटकन ललित ललाट लटूरी * वरणि न जाय वदन छविरूरी ॥

दो०-नयन आँज भृकुटी निकट, कियो मातु मसिबिन्दु ॥
करि शृँगार हरि मुख निरखि, चूम्यो मुख अरविन्द ॥

सो०-लिये गोद सुखकन्द, नन्द बोलि यशुमति कह्यो ॥
बोलहु भूसुर वृन्द, एकघरी आवत चली ॥

काहेको अब गहर लगावत * विप्र वेगि काहे न बुलावत ॥
नन्द विप्र वर विप्र बुलाये * पग पखारि आसन बैठाये ॥
लै उछंग लाल नदराइ * बैठ हर्षि चौकपर आई ॥
वेद मन्त्र विधि सहित पढ़ावत * बरसगाठि सुर महित जुड़ावत ॥
ब्रजनारी सब बनिबनि आवैं * मगल तिलक श्यामको लावैं ॥
गावत मगल कोकिल बैनी * हरि दरशन प्यासी मृगनैनी ॥
तिलक सबनि मोहनके दीन्हों * देखि देखि मुख अति सुख लीन्हों ॥
विप्रन बहुत दक्षिणा पाई * बाँटी सबको पाग मिठाई ॥
धन मणि चीर निछावरि कीन्हे * बार बार नेगिनको दीन्ह ॥
तब मांगी पटरंग मँगाई * हर्षित महरि कधुन पहिराई ॥
देत अशीश सकल अतिमोदा * लेत यशोमति भरि भरि गोदा ॥
नित नव गोकुल होत बधाई * सदा श्याम जनके सुखदाई ॥

१ चावल २ कालीबिन्दी ३ कमल ४ देरै ५ जल्दी ६ पैर धोकर ७ गोद

दो०–धन्य यशोमति धन्य नँद, धन धन बालविनोद ॥
धन्य सुमन जिन जननके, रहत सुधारस ओद ॥

सो०–धनि धनि व्रजकी बाल, कहि कहि सुर वर्षहिं सुमन ॥
धन्य धन्य नँदलाल, दैत्यदलन सज्जनसुखद ॥

कान्ह चलत पद द्वै द्वै धरनी * होत मुदित लखि नदकी घरनी ॥
करत हुती अभिलाषा जोई * निरखत अपने नयनन सोई ॥
रुनुकु झुनुकु नूपुर पग बाजै * डगमगात डोलत छवि छाजै ॥
बैठ जात पुनि उठत तुरतहीं * देहरिलौं चलिजात तुरतहीं ॥
धाम अवधि राखन अम्बाई * गिरि गिरि परत नाघि नहिं जाई ॥
कीन्हीं तीन पैड जिन वसुधा * देहरिताहि नँघावत जसुदा ॥
पकरि पाणि क्रम क्रम उतरावै * लखि सुर मुनि मन विस्मय पावै ॥
कोटिन अंड रचै पलमाहीं * पलमें बहुरि मिटावै ताहीं ॥
ताहि खिलावत यशुमति ग्वारी * नाना विधि सुख करि करि भारी ॥
कबहूँ दै करतारि नचावै * कबहूँ मधुर मधुर सुर गावै ॥
देखि श्याम ग्वालनिके ताँई * आपुन गावत तारि बजाई ॥
पग नूपुर कटि किंकिणि कूजै * लखि छवि मन अभिलाषहि पूजै ॥

दो०–शोभित कठुला कंठ कल[1], उर हरिनैख[2] छविराश ॥
मनहुँ श्याम घनमें कियो, नवशशिविमल प्रकाश ॥

सो०–जननि कहत बलिजाउँ, नचहु लेहु नवनीत सद ॥
धरत कनक झुन पाउँ, त्रिभुवनपति नवनीत हित ॥

बोलन लगे श्याम कल्यानी * कछुक तोतरी कछुक सयानी ॥
नदहि तात यशोदा मैया * बलभौं दाऊ कहत कन्हैया ॥

---

१ धरती २ सुन्दर ३ नाह

प्रातहि उठि माँगत दोउ भैया * माखन रोटी देरी मैया ॥
अँचरागहँ न मानत बाता * अति आतुर ठुनकत दोउ भ्राता ॥
सुनि सुनि मधुरवचन सुरर पावैं * ताते जननी गेहरू लगावै ॥
जननि मध्य सन्मुख संकर्षण * पाछे ठाढे सुभग श्यामतन ॥
मनौ सरस्वति सँग युगपक्षी * राजहँस अरु मोर विपक्षी ॥
कबँरी गही श्याम खिझलाई * मुक्ता माँग गही वल भाई ॥
मनहुँदुहुन निज निज भखलीनो * जननी सों झगरो यह कीनो ॥
नंद देखि हँसि हँसि गएलोटी * यशुमति मुदित कर्मकी मोटी ॥
कतहौ आँरि करत गहि चोटी * यहँ बात मोहन तेरी खोटी ॥
जो चाहौ सो लेउ दोउ भैया * करहु कलेवा मैं वलि जैया ॥

दो०–दियो कलेऊ मात उठि, माखन रोटी हाथ ॥
खात खवावत बालकन, सकल विश्वके नाथ ॥

सो०–जेहि ध्यावैं योगीश, सनकसनंदन आदि मुनि ॥
कौतुकनिधि जगदीश, करत चरित संतनसुखद ॥

अथ ब्राह्मणलीला ॥

चलत लाल पैंजनिके चायन * पुनि पुनि हर्षित लखि लखि पायन ॥
विविध ग्वाल बालन सँगलीने * डगमगात डोलत रँगभीने ॥
कबहूँ दौरि द्वार लौं जाहीं * कबहूँ भजि आवैं घर माहीं ॥
ब्राह्मण एक नन्दके आयो * महाभाग्य हरिभक्त सुहायो ॥
गोपनको सो पूज्य कहायो * पुत्रजन्म सुनिके उठि धायो ॥
यशुमति देखि अनन्द बढायो * आदर करि भीतर बैठायो ॥
पाँय धोय जल शीश चढायो * पाक करनको भवन लिपायो ॥

१ देर. २ केशवेश. ३ झगड़ा.

दो०–धनि धनि गोकुल नन्दधनि, धन्य यशोदा माय ॥
धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज, जहँ प्रगटे हरि आय ॥

सो०–सफलजन्म प्रभु आज, प्रकट भयो सब सुकृतफल ॥
दीनबन्धु ब्रजराज, दियो दरश मोहिं कृपाकरि ॥

बार बार कहि नँदके आँगन * लोटत द्विज आनंद मगनमन ॥
मैं अपराध कियो बिन जाने * कोजाने किहि भेष समाने ॥
भक्तहेतु यश रहत सदाई * यहै नाथ तुम्हरी बदयाई ॥
जेजे शरण तुम्हारी आये * तेते भये पुनीत सुहाये ॥
पैतित उधारन यश विस्तारा * अधजारन इक नाम तुम्हारा ॥
देह धरत गो द्विज हित लागी * पायो दरश भयो बड़भागी ॥
हितकी चितकी मानन हारे * सबके जियकी जाननहारे ॥
शरण २ प्रभु शरण तुम्हारी * दीनदयालु कृपालु मुरारी ॥
हँसत श्याम यशुमति ढिंग ठाढ़े * प्रेम मगन मन आनंद बाढ़े ॥
निजजन जानि कृपा अति कीनी * प्रेम भक्ति हरि ताको दीनी ॥
प्रेम मगन द्विज बारहिं बारा * कहि जै जै जै नन्दकुमारा ॥
पुनि २ पुलकत देत अशीशा * बिदा भयो घरको द्विज ईशा ॥

दो०–देख चरित यशुमति चकित, परी विप्रके पांय ॥
दिये रत्न बहु दक्षिणा, चले हर्ष द्विजराय ॥

सो०–यशुमति लिये उठाय, गोद खिलावत कान्हको ॥
चितै वँदन बलिजाय, आनँद निधि सुखको सदन ॥

अथ चन्द्रप्रस्तावलीला ॥

शोभा मेरे हरिपै सोहै * मै बलि बलि पैटनरको कोहै ॥

१ पापी. २ पापनाशक. ३ श्रीकृष्ण. ४ मुख. ५ समान.

मेरो श्याम मनोहर जीवन * विहँसि श्याम लागे पंय पीवन ॥
ठाढ़ी अँजिर यशोदा रानी * गोदी लिये श्याम सुखदानी ॥
उदय भयो शशि शरद सुहावन * लागी सुतकों मात दिखावन ॥
देखहु श्याम चन्द्र यह आवत * अति शीतल दृगताप नशावत ॥
चिते रहे हरि इकटक ताही * करते निकट बुलावत वाही ॥
मैया यह मीठो कैसारो * देखत लगत मोहि अति प्यारो ॥
देहि मँगाय निकट मै लैहौं * लागी भूख चन्द्र मैं खैहौं ॥
देहि वेग मैं बहुत भुखानो * माँगतही माँगत रिरहानो ॥
यशुमति हँसत करत पछतायो * काहेको मैं चन्द्र दिखायो ॥
रोवन है हरि जिनहीं जाने * अबधौं कैसे करिवे माने ॥
विविध भाँति कर हरिहि भुलावै * आन बतावै आन दिखावै ॥

दो०–कहति यशोदा कौन विधि, समझाऊँ अब कान्ह ॥
भूलि दिखायो चन्द्र मैं, ताहि कहत हरिखान ॥

सो०–अनहोनी क्यो होय, तात सुनो यह बात कहुँ ॥
याहि खात नहिं कोय, चन्द्र खिलौना जगतको ॥

यहै दत नित माखन मोको * क्षण क्षण तान देत मो तोको ॥
जो तुम श्याम चन्द्रको लैहौ * बहुरो फिर माखन कहँ पैहौ ॥
देखन रहौ खिलौना चन्दा * हठ नहिं कीजै बालगोविन्दा ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई * जो भावै सो लेहु कन्हाई ॥
पाऱ्यागी हठ अधिक न कीजै * मैं बलि रिसही रिस तनु छीजै ॥
रासि २ काह परत पनियाते * दे शशि कहत नंद रनियाते ॥
यशुमति कहती कहा धौं कीजै * मागत चन्द्र कहाँते दीजै ॥

---

१ दूध. २ आंगन ३ नेत्र, ४ भगवान. ५ नंदरानीसे

तव यशुमति इक जलपुट लीनो * करमें लै तिहि ऊंचो कीनो ॥
ऐसे कहि श्यामहिं बहकावै * आव चन्द्र तोहि लाल बुलावै ॥
याहीमें तू तनु धरि आवै * तोहिं देखि लालन सुख पावै ॥
हाथ लिये तोहि खेलत रहिहै * नेक नहीं धरणीपर धरिहै ॥
जलपुट आनि धरणिपर राख्यो * गहि आन्यौ शशि जननी भाख्यो॥

दो०-लेहु लाल यह चन्द्र मैं, लीनो निकट बुलाय ॥
रोवै इतनेके लिये, तेरी श्याम बलाय ॥

सो०-देखहु श्याम निहारि, या भाँजनमें निकट शशि ॥
करी इती तुम भारि, जा कारण सुन्दर सुवन ॥

ताहि देखि मुसिक्याय मनोहर * बार बार डारत दोऊ कर ॥
चन्दा पकरत जलके माहीं * आवत कछु हाथमें नाहीं ॥
तब जलपुटके नीचे देखै * तहाँ चन्द्र प्रतिबिंबै न पेखै ॥
देखत हँसी सकल ब्रजनारी * मगन वाल छवि लखि महतारी ॥
तवहिं श्याम कछु हँसि मुसकानें * बहुरो मातासों विरुझानें ॥
ल्यों गोरी मा चन्दा ल्यों गो * बाहिर अपने हाथ गहोंगो ॥
यह तौ कलमलात जलमाहीं * मेरे करमें आवत नाहीं ॥
बाहर निकट देखियत वाही * कहो तौ मैं गहिल्यावों ताही ॥
कहति यशोमति सुनहु कन्हाई * तव मुख लखि सकुचत उडुराई ॥
तुम तिहि पकरन चहत गुपाला * तातें शशि भजि गयो पताला ॥
अब तुमतें शशि डरपत भारी * कहत अहो हरि शरण तुम्हारी ॥
विरुझाने सोये दैत्यारी * लिय लगाय छतियाँ महतारी ॥

---

१ शरीर. २ पात्रमें. ३ पुत्र. ४ परछाई. ५ चंद्रमा ६ मुख.

दो०-लैपौढाये सेजपर, हरिको यशुमतिमाय ॥
अति विरझाने आज हरि, यह कहि २ पछताय ॥

सो०-करसों ठोकि सुनाय, मधुरेसुर गावत कछुक ॥
उठि बैठे अतुराय, चटपटाय हरि चौंकिकै ॥

अथ पुरातनकथालीला ॥

पौढो लाल कहत महतारी * कहौं कथा इक श्रवणैन प्यारी ॥
हर्षे यह सुनि मन बनवारी * पौढि गये हँसि देत हुँकारी ॥
नगर एक रमणीय सुहावन * नाम अवध अति सुंदर पावन ॥
बडे महल तह अगम अटारी * सुंदर विशद चारु गच ढारी ॥
बहुत गली पुर बीच सुहाई * रहैं सदा सब सुगँधि सिंचाई ॥
भाँति भाति बहु हाट बजारू * अति शृँगार जनु विश्व शृँगारू ॥
तहाँ नृपति दशरथ रजधानी * तिनके नारि तीन पटरानी ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा * तिन जने सुत चार पवित्रा ॥
राम भरत लक्ष्मण रिपुहन्ता * चारौं अति सुन्दर गुणवन्ता ॥
तिनमें राम एक व्रतधारी * अतिसुन्दर जनके हितकारी ॥
विश्वामित्र एक ऋषिराई * तिनहिं सतावैं निशिचैर आई ॥
तिन नृपसों द्वैसुत लै माँगे * अपनी रक्षाके हित लागे ॥

दो०-राम लषण ऋषि लैगये, दनुज हते तिनजाय ॥
ऋषिदीनी विद्या बहुत, तिनको अति सुख पाय ॥

सो०-तहाँ जनक इकभूप, धनुषयज्ञ ताने रच्यो ॥
कन्या तासु अनूप, जुरे तहाँ भूपैति अमितै ॥

१ पानौरो २ साफ ३ राक्षस ४ बला अतिबला ५ राजा ६ बेहद

ऋषि लैगये कुँवर तहँ दोऊ * जनकराय सन्माने सोऊ ॥
धनुष तोरि भूपन सुखभारी * राम विवाही जनककुमारी ॥
चारहु कुँवर व्याह तहँ आये * भये अवध पुर अनँद बधाये ॥
रामहिं देन लगे नृपराजू * सज्यो सकल अभिषेकै समाजू ॥
ताही समय कैकयी रानी * चेरीकी मतिसों बौरानी ॥
वचन माँगि राजासों लीनो * वनको बास रामको दीनो ॥
सुनि पितुवचन धर्म हितकारी * नारी सहित भये वचनारी ॥
तिन्हँ चलत भ्राता सँग लाग्यो * उनके जात पिता तनुत्याग्यो ॥
चित्रकूट गये भरत मिलन जब * दै पद पाँवँर कृपा करी तब ॥
युवती हेतु कपट मृग मारा * राजिवलोचन राम उदारा ॥
रावण हरण कियो तब नारी * सुनत श्यामघन नींद निसारी ॥
चौंकि कह्यो लक्ष्मण धनुदेहू * देख भयो यशुदहि सन्देहू ॥

छं०–सन्देह जननीमन भयो हरि चौंकधौं काहे परयो ॥
कहुँदीठ खेलतमें लगी धौं स्वप्नमें कान्हर डरयो ॥
बहु भाँति देव मनाय पढ़ि २ मंत्र दोष निवारही ॥
कँ पियति पानी वारि पुनि २ राइ लोन उतारही ॥

दो०–साँझहिते विरझाय हरि, करी चन्द्रहित आरि ॥
झिझकि उठ्यो धौं ताहि ते, गह्यो सुरत उरधारि ॥

सो०–बड़भागी नंदनारि, महिमा वेद न कहिसकैं ॥
हरिको वदनें बिहारि, विसरावत त्रय तौंप दुख ॥

---

१ राजतिलक. २ खड़ाऊँ. ३ श्रीकृष्ण. ४ मुख. ५ संताप.

अथ कर्णच्छेदनलीला ॥

प्रात नन्द उठि हरिपै आये * मुखछवि देखनकौं अतुराये ॥
निरखिके द्वद नयन अति आरत * हरखै करि मुखतें पट टारत ॥
स्वच्छ सेजतें वदन प्रकास्यौ * छ्वतिमिर नयननिको नास्यौ ॥
मनहुँ मथनपै निधि उघराई * फेणु फोरि कै दई दिखाई ॥
धाये मन जन चतुर चकोरा * इकटकरहे वदनशशि ओरा ॥
फूली कुमुदनिसी महतारी * कहत उठहु सुतमैं बलिहारी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा * जो भावै सो करहु कलेवा ॥
सद माखन मिसरी तब आनी * कछु खवाय धोयो मुखपानी ॥
देखि वदन छवि महरि सिहानी * कहति नन्दसों यशुमति रानी ॥
कनछेदन अब हरिका कीजे * कुंडल सहित देख मुखलीजे ॥
बोलि विप्र शुभ दिवस गनायो * जाति कुटुंब सब न्योत बुलायो ॥
कुलव्यौहार कियो सब साजा * विविध भाँति बहु बाजन बाजा ॥

छं०—बाजी बधाई विविध आँगन नारि मंगल गावहीं ॥
सुर निरखिमनअतिहर्षि सुमननि वर्ष गोकुल छावहीं ॥
करि प्रथम मुंडन श्यामको पुनि कर्ण बेधन विधलई ॥
धरिकै सुपारी पान ऊपर बहुरि गुर भेली दई ॥
हँसत सुरगण सहित विधिहरि मात उर अति धुकधुकी
अतिहि कोमल श्रवणै बेधत सकत नहिं सन्मुख तकी ॥
भरि साँक रोचन देत श्रवणनि निकट करि अतिचातुरी ॥
इँदुर मगाये कनक के कछ कहाँ छेदन आतुरी ॥

---

१ रात २ चन्द्रमारूपसुख ३ ऐड़ा ४ कान. ५ सलाई

देख रोवत जननि लीन्हे विहँसि तबहीं झुकि अैली ॥
हँसत नँद सब युवति गावत झमकि भीतर लेचली ॥
कहति सुरवनिता परस्पर धन्य धन ब्रजभामिनी ॥
नहिं न इनकी किंकरीसम हम सकल सुरकामिनी ॥

दो०–करति निछावरि ब्रजवधू, धन मणि भूषण चीर ॥
सकल अशीशत नंदसुत, जहँ तहँ याचक भीर ॥

सो०–पहिरावत नंदराय, ब्रजयुवतिन भूषणवसन ॥
आनँद उर न समाय, मनहुँ उगम चहुँ दिश चल्यो ॥

निनहीं नवमुद मंगल ताके * मंगल मूरति हरि सुत जाके ॥
जेहि विधि तात मात सुख पावैं * सुखनिधान सोइ चरित उपावैं ॥
जाको भेद वेद नहिं पावैं * नंदभवन सो कान छिदावैं ॥
निज भक्तन हित नरतनु धारी * करत बाललीला सुखकारी ॥
हरि अपने रगनि कछु गावैं * नंदभवन भूषण मनभावैं ॥
ननक तनक चरणनसों नाचै * मन २ रीझ विविध विधिराचै ॥
मन्द मन्द पग नूपुर बाजै * बाल विभूषण अंग विराजै ॥
कबहूँ भुज उठाय गुहरावैं * धौरी धूमरि गाय बुलावैं ॥
कबहूँ माखन लै मुख नावैं * कबहुँ खम्भ प्रति बीच खवावैं ॥
माखन माँग दुहूँ करैं लेईं * एक भाग प्रतिबिंबहिं देईं ॥
तासों कहत लेन क्यों नाहीं * डारदेन काहे गहिमाहीं ॥
दुर देखत यशुमति महतारी * उर आनंद करति अतिभारी ॥

दो०–हरषि जननि मुख चूमकै, लीनो गोद उठाय ॥
परमानंदरस मगन मन, सो सुख किमि कहि जाय ॥

---

१ सखी. २ गोपियां. ३ पाखंभ. ४ हाथ.

सो०–कौतुक निधि भगवान, करत चरित नित २ नये ॥
सुन्दर श्याम सुजान, व्रजवासिनके प्रेमवश ॥

अथ माटीखानलीला ॥

खेलत श्याम धामके द्वारे * सोहत ग्वलरिया सँगवारे ॥
अति अज्ञान सबनि मति भोरी * सबकी प्रीति श्याम सँग जोरी ॥
एक वैस तन परम सुहाये * करत बाललीला सुख पाये ॥
गावत हँसत देत किल्कारी * लखि २ सुख पावत महतारी ॥
निरखि रूप सब व्रजजन मोहैं * कोटि काम नहिं पटतैरसोहैं ॥
तनु पुलकित अति गद २ बानी * निरखि मनहिं मन महरि सिहानी ॥
तबहिं श्यामघन माटी खाई * यशुमति देखि साँटि[2] लै धाई ॥
पकरी भुजा श्यामकी जाई * कहति कहा मह करत कन्हाई ॥
उगल्हु वेगि वदनतें माटी * नाहीं तौ मारिहौं साँटी ॥
सबदिन झुठवनहै सब ग्वालन * मोसों अब वह करिहौ लालन ॥
तब मोहन चीनी खगैराई * कहति कि मैं माटी नहिं खाई ॥
झूटहि मोको लोग लगावे * माटी मोनो नेकनभावै ॥

दो०–झूँठ कहत तोसों सबै, माटी मोहिं न सुहाय ॥
नहिं माने जो मात तू, दिखराऊ मुँह बाय ॥

सो०–दीनो मुखहि उघारि, नयन मूँदि माता निकट ॥
देखि चकित नँदनारि, तनुकी सुरत रही नहीं ॥

दिखरायो त्रिभुवन मुखमाहीं * नभ शशि रवि तारा इक ठाहीं ॥
सुर सागर सरिता गिरि कानन * सुर सुरनायक शिव चतुरानन ॥
मरल लोक लौं स्य यम ताला * महि मटल सब अग जग जाला ॥

---

१ समान. २ छड़ी ३ ढीठता ४ मुख

देखि चरित यशुमति अकुलानी * करते माँटि गिरति नहिं जानी ॥
वदनै मूदि तब हँसे हरि खोले * टरमसेन माता सों बोले ॥
मैया मैं माटी नहिं खाई * यशुमति चकित रही अरगाई ॥
कहत नंदसों यशुदारानी * हरिकी कथा नजात बखानी ॥
माटीके निमैं करि मुख बायो * तीन लोक तामहिं दिखरायो ॥
स्वर्ग पताल धरैणि वन वागा * सुर नर असुर विपुल खगै नागा॥
अपर सुद्धि कहि जाति सुनाहीं * देखो सकल वदनके माहीं ॥
मोको परत साँच सब जानी * जो कछु कही गर्ग ऋषिवानी ॥
चकित नंद सुनि अचरजवानी * मन मन करत विचार विनानी ॥

दो०—नन्द कहत सुनि बावरी, हरि अति कोमल गात ॥
अचरज तेरी बातको, पुनि पाछे पछतात ॥

सो०—अचरज तेरी बात, को जानै देख्यो कहा ॥
कुशल रहौ दोउ भ्रात, राम श्याम खेलत हँसत ॥

कहति श्यामसों यशुमति मैया * मैं तेरी बलिहारि कन्हैया ॥
मैं अजान रिस बीच न जानी * वृथाश्याम तुम पर रिस सानी ॥
जरहु हाथ जिन साँटि उठाई * बरहु आँखि जिन दीठ दिखाई ॥
मधु मेवा दधि माखन छाँडी * खात लाल तुम काहे माटी ॥
मिसरीईं दूध पियो तुम न्यारे * बलको बाँट न देहु दिवारे ॥
कहत नंदसों यशुमति मैया * दुहौ लालकी ठाढी गया ॥
कजरीको पय पियो गुपाला * जो तेरि चोटी बढे विशाला ॥
सब लरकनमें तो तनुमाहीं * वेग वैस बल थी अधिकाहीं ॥
मात वचन सुनिके अनुरागे * ज्यों त्यौं करि पय पीवन लागे ॥

१ मुख. २ नेत्र. ३ बहाना. ४ पृथ्वी. ५ पक्षी. ६ कालीगाय.

खिन पीवत खिन २ कचटोवै * देखि २ मुख हँसति यशोवै ॥
मैया कब बाढैगी चोटी * यह तौ है अबही लौं छोटी ॥
तूजो कहतहि बलकी ह्वैहै * छान्त गुहत गोडैलों जैहै ॥

दो०–कितीबार भइ पयै पियत, चोटी बड़ी न होहि ॥
कहि कहि झूठी बात नित, दूध पियावत मोहि ॥

सो०–सुनि सुनि भोरी बात, सुन्दर श्याम सुजानकी ॥
यशुमति मन न अघात, हँसिलीने उर लाय हरि ॥

भोरहिं महर यमुनतट धाये * दरशन करि अतिही सुख पाये ॥

अथ शालिग्रामलीला ॥

करि अस्नान नन्द घर आये * पूजा हित यमुनाजल लाये ॥
तुलसीदल अरु कमल पुनीता * प्रभु निमित्त आने अति प्रीता ॥
पाय धोय प्रभु मन्दिर आये * करी दण्डवत प्रेम बढ़ाये ॥
असल दीप पात्र सब धोये * पूजाके सब साज सजोये ॥
छाप तिलक सब अंग सवारे * प्रभु पूजाविधि करन सवारे ॥
कुँवर कान्ह खेलत वे आये * देखन पूजा विधि चितलाये ॥
विधिवत देव नन्द अन्हवाये * चन्दन तुलसी फूल चढ़ाये ॥
भूषण वसन अलंकृत कीन्हे * धूप दीप अतिहित कर दीन्हे ॥
पट अन्तर दै भोग लगायो * आरति चरणनि शीस नवायो ॥
तबही श्याम निहसि उठि बोले * कहत तातसों वचन अमोले ॥
बाबा तुम जो भोग लगायो * सोतो देव कछू नहिं खायो ॥
सुनि हरिवचन श्रवण सुखदाई * चिते रहे मुख हँसि नँदराई ॥

---

१ पैर २ दूध ३ छाती ४ भंडार

दो०–कहत नंद सुत पायके, यों नहिं कहिये तात ॥
देवनको कर जोरिये, कुशल रहो जिहि गात ॥
सो०–हँसत श्याम सुखदानि, नंद स्वरूप न जानहीं ॥
रह्यो तिनहिं सुत मानि, करत ब्रह्मलीला सगुण ॥
देखन जननि तहां दुरि ठाढ़ी * मगन प्रेमरस आनँद बाढ़ी ॥
बैठे नँद समाधि लगाई * तब यह लीला रची कन्हाई ॥
शालग्राम मेलि मुख माहीं * बैठि रहे हरि बोलत नाहीं ॥
ध्यान विसर्जन करि नँद जागे * शालग्राम न देखे आगे ॥
खोजत चकित चित्त नँदराई * इष्टदेव किन लिये चुराई ॥
इतउत खोजत पावत नाहीं * भयो बड़ो अचरज मनमाहीं ॥
विहँसत हरिके मुखमें जाने * देखत महरि महर मुसकाने ॥
सुनहु तात जननी बलिजाई * उगिलहु शालग्राम कन्हाई ॥
सुनते तबहिं काढ़ि व्रजनाथा * दियो देवता नँदके हाथा ॥
हरिके चरित कहत नहिं आवें * बालविनोद मोद उपजावें ॥
लखि लखि मात पिता पुलकाहीं * देखि देखि सुर सिद्ध भुलाहीं ॥
धन्य धन्य सब व्रजके वासी * विहरत जहाँ ब्रह्म अविनाशी ॥
दो०–परते पर परब्रह्म जो, निर्गुण अलख अनूप ॥
सो व्रज भक्तन प्रेम वश, विहरत बालक रूप ॥
सो०–प्रेम मगन पितु मातु, निशि दिन जात न जानहीं ॥
क्योंहूं मन न अघात, सुनत वचन देखत दरश ॥

अथ अन्हवावनलीला ॥

यशुमति दयामहिं कह्यो न्हवावन * सुनतहि मचलि परे मनभावन ॥

1 टिरी. 2 छोड़कर. 3 जो देखनपड़े. 4 तान.

उवटन लै आगे गहि बाहीं * लोटिगये हरि मानत नाहीं ॥
तव यशुमति बहुभाँति दुलारे * मैं बलि उठहु न्हवाऊँ प्यारे ॥
उवटन पाछे धर्यो चुराई * फुसलावत सुत श्याम कन्हाई ॥
मैं बलि ऐसी आरि न कीजै * जो चाहौ सो मोपै लीजै ॥
कहत लाल रोवै दुख पावै * ऐसो को जो तोहि खिझावै ॥
अतिरिसते मैं बलि तनु छीजै * सुन्दर कोमल अंग पसीजै ॥
बरजतही बरजत विरुझाने * करिकरि क्रोध मनहिं अकुलाने ॥
धरत धरत धरणीपर लोटे * गहि माताके चीर निझोटे ॥
गहि गहि अँगके भूषण तोरैं * दधि माखनके भाजन फोरैं ॥
धर्यो तात दल जननी पासैं * मानत नाहिं ताहि लैरिसि श्रासैं ॥
महैरि बाहु धरिकै तव आने * अजहीं तेल उवटने साने ॥

दो०–तब दुचती करि मातुको, गिरत परत गये भाज ॥
नेक निकट लागे नहीं, मनमोहन ब्रजराज ॥

सो०–तब पुचकारे मात, सौंम भेदें कहि कहि वचन ॥
मैं बलि आवहु तात, नहि आवहु तो जानिहौ ॥

तुम मेरी रिसको हरि जानी * मोको नीकी विधि पहिचानी ॥
जो नहिं आवहु मदनगोपाला * आज तुम्हें तौ बाँधौं लाला ॥
तवहिं नन्द उतते चलि आये * कहतहरिहिकिनअतिहिखिनाये॥
लै कनियाँ उरसों लपटाये * वदन चूमि यशुमति पहँ ल्याये ॥
मन खिजवत मोहनहि अयानी * लै हियलाल लिये नँदरानी ॥
क्योंहुं यत्न करिकै जब पायो * तब उवटन हरिके अंग लायो ॥
पुनि तातो जल न्हान समायो * दियो न्हवाय वदन शशि धोयो ॥

१ देखकर २ दुखपावै ३ नंदराय ४ दुखामत ५ जोड़तोड़ ६ चन्द्रमा

सरस बसन लैकै तनु पोंछ्यो * बहुरो बदनसरोज अँगोछ्यो ॥
अञ्जन दोऊ दृग भरि दीनो * अपर चारु चखोड़ा कीनो ॥
सब अँगके भूषण मंगवाये * क्रम क्रम लालनकों पहिराये ॥
ऐसी रिस नहिं कीजै याहा * अब बहु खाउ जाउ बनि नाहा॥
तब तुतरात कह्यो याहेरा * जो मोनो भावै सो देरा ॥

दो०–कहत जननि या वचनपर, मैया बलि बलि जाय ॥
जोइ जोइ भावे लालको, सोइ सोइ ल्यावे माय ॥

सो०–किये अमित पकवान, मैं अपने सुतके लिये ॥
सो सब कहौं बखान, जो भावै सो लीजिये ॥

मदमाखन अरु दही सजायो * तुम्हरे हित पय औटि जमायो ॥
खोया औट्यो मधुर मलाई * तापर मिश्री पीसि मिलाई ॥
अरु दधिको अति सरस सवाँरा * तामहिं सोंठि मिरच रुचिकारा ॥
खीर बरा करिकै दधि बोरे * मानहु चन्द्र अमी मधु खोरे ॥
सुरमा और जलेबी बोग * जेहि जवत रुचि होत न थोरी ॥
अरु लडुआ बहुभाति सँवारे * जे मुख मेलहु कोमल प्यारे ॥
अरु गूझा बहु पूरिन पूरे * अति सुवास उज्ज्वल अति रूरे ॥
पापर घेवर घीउ चभोरे * मिश्रीसे तल ऊपर बोरे ॥
सुन्दर मालपुआ मधु साने * तब तुरत धरि रोहिणि आने ॥
अतिही सुन्दर सरस अँदरसे * घृतदधि मधु मिलि स्वादनसरसे॥
सरस सवाँरी दाल मखूरी * अरु कीन्हो सीरा घन पूरा ॥
पूरी सुनिके हिय हरि हरपे * तब जेवनपर मनकरि करपे ॥

१ नम २ अगूठा

दो०-सुनत यशोदा सुरतही, ले आई हरषाय ॥
बलदाऊको टेरिके, लीन्हे नन्द बुलाय ॥

सो०-षटरसके परकार, जे वरणे यशुदा प्रथम ॥
परसि धरे सब थार, जेंवत हरि बलबीर दोउ ॥

जेंवत एक थार दोउवीरा * हरषि श्याम रुचिरारयो सीरा॥
तब शीतल जल लियो मगाइ * भरि झारी यशुमति लैआई ॥
जल अँचवावत नैन जुडाने * दोऊ हर्षि हर्षि मुसकाने ॥
तब जननी हँसि चुरू भराये * तनक तनक कछु मुख पखराये ॥
रचि रचि उनरे पान खवाये * अतिही अधर अरुण हैआये ॥
ठाढे तहाँ सकल ब्रजदासा * लागिरहे जूठनिकी आशा ॥
तनक तनक कछु मोहन खायो * उबर्यो सो ब्रजदासन पायो ॥
सखावृन्द प्रिय द्वार पुकारे * खेलन आवहु कान्ह पियारे ॥
तृषित दरश रस चातकदासा * हरिष बरषि नवघनै छवि पासा ॥
विनय बचन सुनि हर्ष कृपाला * चले मनोहर चाल रसाला ॥
लघु लघु ललित चरण वर लाला * कमलनैन उर बाहु विशाला ॥
चन्द्रवदन तनु छवि घनश्यामा * अंग अंग भूषण अभिरामा ॥

दो०-निरखत छवि नंदलालकी, थकित सकल सुरवृंद ॥
निहचल चखनँ चकोरजनु, तकत शरदको चन्द ॥

सो०-अति आनन्द उमंग, मिले सखनको जाय हरि ॥
व्रीड़तं कोटि अनंग, क्रीडत बालकवृन्द सब ॥

---

१ ठंडेहुए २ होंठ ३ लाल ४ मेघ ५ छाये ६ सुंदर ७ नेत्र. ८ शरमाते हैं ९ कामदेव

खेलत दूरि गये कहुँ कान्हा * सगन संग धावतहैं नान्हा ॥
बहुत अबेर भई घनश्यामहि * खेलत ते आये नहिं धामहि ॥
नंदहि तात मातु मोहिं कानन * योंही सुनत सुहात जु आनन ॥
मन अवेसेर करत महतारी * पलक ओट रहि सकत न न्यारी॥
देखन द्वार गलीमें ठाढी * सुनमुख दरश लालसा बाढी ॥
तत्क्षण हरि खेलनते आये * दौरि मातु लै कण्ठ लगाये ॥
खेलन दूरि जात किन कान्हा * मैं बलि तुम अबहीं अति नान्हा ॥
आज एक वन हाऊ आयो * तुम नहिं जानत मैं सुनि पायो॥
इक लरिका भजि आयो तबही * सो यह मोसों कहिगयो अबहीं ॥
कहतो पकरि लेतहै तिनको * लरिका करि जानतहै जिनको ॥
चलहु भाजि चलिये निज धामहि * यह सुनि टेर लिये बलरामहि ॥
कनियाँ करि लै आई धामहिं * बड़भागिनियशुमति सुनश्यामहि

दो०-रूपरेख जाके नहीं, विधिहरि अन्त न पाय ॥
हाऊसों डरपाय तिहिं, यशुमति राखत स्वाय ॥

सो०-भावबश्य भगवान्, भावइ करिके पाइये ॥
भक्तनके सुखदान, तिहि तैसे जैसे भजे ॥

ब्रजवीथिनें खेलत मनमोहन * हलधर सुबल सुदामा गोहन ॥
और गोप बालक बहुतारे * एक वैयस सब हरिके प्यारे ॥
बाल विनोद मोदमन दीने * नानारंग करत रस भीने ॥
तारी हाथ मारि सब भाजैं * धावत धरत होड़ कर बाजैं ॥
बरजत बलि हरि तुमति दौरे * लगिहैं चोट गोड़ किहुँ तोरे ॥
तब हरि कह्यो दौरि मैं जानों * मेरो गात बहुत बलवानों ॥

१ फिकर. २ मुख. ३ गलियां. ४ उमर. ५ पैर

है श्रीदामा जोड़ हमारी * नासों मारि भजों मैं तारी ॥
बोलि उठ्यौ तबहा श्रीदामा * तारी मारि भजो तुम श्यामा ॥
तबहीं श्याम भजे दैलारी * धर्यो जाय श्रीदाम हँकारी ॥
तब हरि कह्यो बदौं नहिं तोहीं * ठाढो भयो छियो तब मोहीं ॥
ऐसे कहि हरि तारि रिसाने * कहत सखा सब श्याम खिझाने ॥
तबतो कह्यो दौर मैं जानौं * हारे श्याम बुरो अब मानौं ॥

दो०–बोलि उठे बलराम तब, इनके माय न बाप ॥
हारि जीति जाने नहीं, लरकन लावत पाप ॥

सो०–ये हैं तनुके श्याम, झूठहिं झगरत सखन सँग ॥
रूठि चले हरि धाम, लखि उदास पूँछनि जननि ॥

मै बलि क्यों उदास हरि आयो * कौने मेरो लाल खिजायो ॥
मैया मुहि दाऊ दुख दीन्हौं * मोसों कहत मोलको लीन्हौं ॥
कहा करौं या रिसके मारे * मैं नहि खेलन जात दुआरे ॥
पुनि पुनि कहत कौन तेरी माता * को तेरो तातै कौन तेरो भ्राता ॥
गोरे नन्द यशोदा गोरी * तुम तो कारे आये चोरी ॥
मोसों कहत देवकी जाये * ले बसुदेव यहा निशिँ आये ॥
मोल कछू वसुदेवहि दीह्नौं * ताके पल्टे तुमको लीन्हो ॥
ऐसे कहि कहि मोहिं खिझावै * अरु सब लरकन यहै सिखावै ॥
मोहीं कौ तू मारन धावै * दाउहि कबहुँ न खीन डरावै ॥
रोप सहित सुनि बतियाँ भोरी * बढत मातु उर प्रीति न थोरी ॥
सुनहु श्याम बलराम चवाई * झूठहिं तोहि खिजावत जाई ॥
मोहि गोधनकी सौंह कन्हैया * मेरो सुत तू मैं तेरि मैया ॥

१ घर २ माता ३ पिता ४ रात

दो०-पाछे ठाढ़े सुनत सब, नन्द श्यामकी बात ॥
लीन्हें गोद उठाय हँसि, सुन्दर श्यामलगात ॥
सो०-बलको धरियो नन्द, सुनि मनहर्षे श्याम तब ॥
लीला नटवर चन्द, करत चरित जनमनहरन ॥

अथ भोजनकरनलीला ॥

भोजनके समये नँदराइ * वरे मुरति बलराम कन्हाइ ॥
वधी बुलाय लेहु दोउ भैया * मोमँग नेवँ आय कन्हैया ॥
खेलत बहुत बेर भइ आजा * उनबिन भोजन कीने राजा ॥
यशुमति सुनत चली-अतुराई * मज घर घर टरत दोउ भाई ॥
कहत बोल लेहु कोउ श्यामहिं * खेलत ह धौं काके धामहि ॥
जेंवन सिद्ध सिरात धरोई * उन बिन नद न जेवत सोई ॥
ऐसे नन्दरि सुनि बैना * आये खेलत ते सुख दैना ॥
चलहु तात मैया बलि जाइ * जवनको बैठे नदराइ ॥
परसौ थार धर्यौ मग हेरति * मैं तबहीं सों तुमको टेरति ॥
दौरि चलहु आगे गोपाला * छाड़ि देहु गति मन्दमराला ॥
चलहु वेगि दौरी दोउ भाई * सो राया जो आगे जाई ॥
जो पैहै पहिले बलि भाइ * तौ हँसिहै तोहिं ग्वाल कन्हाइ ॥
दो०-आये दौरे श्याम तब, तुरतहिं पॉय पसारे ॥
बैठे जेंवन नन्दके, सग दोऊ सुकुमार ॥
सो०-कछु डारत कछु खात, कछु लपटानो पाँणि दुहुँ ॥
शुभगसाँवरे गात, बालकेलि रस वश खरे ॥

---

१ याद २ हंसकीसी धीमी चाल ३ घोवर ४ हाथ

बड़ी कौर मेल्त मुख भीतर * आय गई तब मिरचि दशनें तर।
तीक्षण लगी नयन भरि आये * रोवत बाहरको उठि धाये ॥
रोहिणि पूंछि देत मुखमाहीं * लिय लगाय उरसों गहि बाहीं ॥
मधुर ग्रास लै तात निहोरे * लै बैठे पुमलाय अँकोरे ॥
जवत बाह नन्वी कनिया * छबि निरखत ठाढ़ी नँदरनिया ॥
बेसनके व्यंजन विधि नाना * बराबरी बहु शाक विधाना ॥
मूग ठरहरी हींग लगाइ * दाल चनाकी पीत सुहाई ॥
राजभोगकी भात पसायो * उज्वल कोमल सुगँध सुहायो ॥
बेसन मिली कनककी रोटी * सदघृत बोरा पतरी छोटी ॥
आव आदि बहुभाति सथाने * दोउ भैया जवत रुचि माने ॥
मिसरी दधि ओदन मिश्रित कर * लेत श्याम सुन्दर अपने कर ॥
आपुन खात नँद मुख नावै * सो छबि कहत कौनपै आवै ॥

दो०–भोजन कर अचमन कियो, लै झारी नन्दराय ॥
अपने करसों श्यामको, दीनो वदँन धुवाय ॥

सो०–को करि सकै बखान, भाग्य यशोमति नन्दके ॥
ब्रह्म रह्यो रुचिमान, बाल रूप जिनके सदनें ॥

अथ पयछुड़ावन लीला ॥

बैठे श्याम मातकी कनिया * पियत दूध सुन्दर सुखदनियाँ ॥
बार बार यशुमति समुझावै * हरिसों अस्तन पान छुडावै ॥
कहति श्याम तू भयौ सयानो * मेरो कह्यो लाल अब मानो ॥
दूध पियत देखत लरिका सब * हसततोहिं नहि लाजरगत अब॥
जैहै दात बिगरि सब तेरे * अजहूँ छाडि कह्यौ करि मेरे ॥

१ दाल २ मुख ३ घर

सुनत वचन मुसकाय कन्हाई * अचरौ तरमुख लियो छिपाई ॥
आये तवहीं सखा बुलावन * मात कह्यौ खेलहु मनभावन ॥
यह सुनि हर्षि उठे वनवारी * माँगतदे चौगान कहारी ॥
मथनीके पाछे कहि दीन्हीं * हर्षित श्याम तहाँतें लीन्हीं ॥
लै चौगान वड़ाकर आवे * चले सखन देखत अनुरागे ॥
कहत सखनसों हरि हरषाई * खेलहु गे किहिं ठोहर भाई ॥
खेलत वनिहै घोषे निकासू * हरषि चले सब सहित हुलासू ॥

दो०-कान्हर हलधर वीर दोउ, भये भुजा बर जोर ॥
श्रीदामा अरु सुवल मिलि, जुरे सखा इकठोर ॥
सो०-और सखनके वृन्दें, बाँटि लिये जुरि जोटैं जुठ ॥
अति आनँद नँदनन्द, दियो बटा दरकाय महि ॥

अथ चौगानखेलनलीला ॥

हरि अपनी बातन हैंजाहीं * एक एक सन पावत नाहीं ॥
इतते उत उतते इत घेरैं * बटा मारि चौगाननि फेरैं ॥
दौरत हँसत खसतैं उठि मारैं * आप आपनी जीत विचारैं ॥
जम्यो खेल अति मगन कन्हाई * देखत सुर मुनि रहे लुभाई ॥
जीतत सखा श्याम जब जाने * करौ खेल कछु तव मचलाने ॥
कहत सखा सब सुनहु गोपाला * रुगँटैयांको कौन खिवाला ॥
श्रीदामासों हौ तुम हारे * झूठी सोहैं खाउ ललारे ॥
खेलतमें को काकौ सैयां * कहा भयो जो नन्दगुसैयाँ ॥
ताते तुम गर्वित मन महियाँ * तनक बसत हम तुह्मरी छहियाँ॥

---

१ अंचल. २ सुधीसे. ३ गेंद. ४ ग्वाल. ५ समूह. ६ जोड़. ७ गिरताहै. ८ रोंगटी. अर्थात् बेइमानी.

अति अधिकारे तनावत ताते * तुम्हरे अधिक गाय कछु नाते ॥
अब नहि खेलहिं संग तुम्हारे * भये सखा सब रिस करिन्यारे ॥
खेल्यौ चाहत त्रिभुवन राइ * दियो दाव तब पीठ चढ़ाई ॥

दो०–जाके गुणगण अगमअति, निगम न पावत ओर ॥
सो प्रभु खेलत ग्वाल सँग, बँधे प्रेमकी डोर ॥

सो०–खेलत भइ अबेर, जननी टेरत श्यामको ॥
आवहु धाम सबेर, साँझ समय नहिं खेलिये ॥

साझ भई घर आवहु प्यारे * बहुरि खेलियो होत सवारे ॥
आपुहि जाय बाहु गहि आने * सुभग श्याम तनु रज लपटाने ॥
बोलिलिये यशुमति बलरामहिं * लै आइ दोऊ सुत धामहिं ॥
धरि झारि तातो जल ल्याइ * तेल परसि दीन्हे अन्हवाइ ॥
सरस बसन तनु पोंछि सवारे * लै गोदी भीतर पगु धारे ॥
करहु नियारू कछु दोउ भाइ * पुनि तुमको राखौं पौंढ़ाइ ॥
सीरा पूरी सरस सवारी * और धरा मेवा बहु न्यारी ॥
दीन्हीं परसि कनकँकी थारी * बलमोहन दोउ करत बियारी ॥
मिश्री मिलै दूध औंटाई * लै आइ तब रोहिणि माइ ॥
प्रेमसहित दोउ जननि जिमावत * देखि देखि छबि नयन जुड़ावत ।
खात खात मोहन अलसाने * बारहि बार श्याम जमुहाने ॥
आरससों कर मौर उठावत * नैनन नींद झमकि झुकि आवत ॥

दो०–उठहु लाल तब मातु कहि, धोये मुख अरबिन्द ॥
पौढ़ाये लै सेजपर, बर्ल अरु बाल गोविन्द ॥

१ अलसाय २ बेर ३ सोनेकी ४ उठेरनौटे ५ धसक ६ दाऊजी

सो०–सोये बाल मुकुंद, दोउ भैया सुख सेजपर ॥
जननी अति आनन्द, शोचत गुण गोपालके ॥

माखन मोहनको प्रियलागै * भूखो छिन न रहत जब जागै ॥
ताहि बदों जो गहरु लगावै * नहि महिमानै जो इन्द्र मनावै ॥
मैं इहि जानत बात श्यामकी * दूर्गें मीचे नवनीतै खानकी ॥
लै मथनी दधि धऱ्यो विलोई * जबलगि लालन उठहिं न सोई ॥
भोर भयो जागहु नँदनंदन * संग सखा ठाढे जगवंदन ॥
सुरँभी पयँहित बच्छ पियाये * पंछी तरु तजि चहुँदिशि धाये ॥
चन्द्र मलिन उडुगँण द्युति नाशी * निशि निघटी रवि किरणि प्रकाशी
कुमुदिनि सकुची वारिज फूले * गुंजत मधुप लता लगि झूले ॥
दरशन देहु मुदिन नर नारी * व्रजवासी प्रभु जन सुखकारी ॥
सुनि जननीके वचन रसाला * खोले दृगराजीव विशाला ॥
हँसत उठे संतन सुखदाई * मुखछवि देखि मातु बलिजाई ॥
हरि कछु करहु कलेऊ प्यारे * मैं माखन मथि धरेउ सँवारे ॥

दो०–रोटी अरु माखनतनक, देरीमा मोहिं हाथ ॥
लै आई जननी तुरत, कछु मेवा धरि साथ ॥

सो०–करत कलेऊ श्याम, माखन रोटी मानि रुचि ॥
त्रिभुवनपति सुखधाम, चार पदारथ हाथ जेहि ॥

अथ माखनचोरीलीला ॥

मैयारी मोहिं माखन भावै * और कछू अति रुचि नहिं आवै ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई * सो मोको नेकहु न सुहाई ॥
व्रजयुवती इक पाछे ठाढी * हरिके वचन सुनत रुँति बाढी ॥

१ देर. २ आंखे. ३ मरखन ४ गौ. ५ दूधके लिये. ६ तारे ७ प्रीति.

मन मन कहत कबहु अपने घर * माखन खात लखौं सुंदर वर ॥
बैठे जाय मथनियाँ पाहीं * अपने वैरनि काढिकै खाहीं ॥
मैं बरु देखहु कहूँ छिपाइ * कैसे मोघर नाहि कन्हाई ॥
हरि अन्तर्यामी सब जानें * ग्वालिनि मनकी प्रीति पिछानें ॥
गये श्याम ता ग्वालिनिके घर * ठाढे भये जाय द्वारे पर ॥
इत उत देखत कोऊ नाहीं * तब पैठे ताके घर माहीं ॥
हरिको आवत ग्वालिनि जान्यो * परममुदित अतिही सुख मान्यो ॥
रही दबकि दुरि डीठि लगाई * हरिवैठे मथनी ढिग जाइ ॥
देखी माखन भरी कमोरी * खान लगे करि अति मतिभोरी॥

दो०–चितै रहे मणि खम्भमें, हरि अपनी प्रति छाहँ ॥
जानि दूसरो ग्वाल तिहि, प्रभु सकुचे मनमाहँ ॥

सो०–तासो करत सधान, कहत लेहु आधो तुमहुँ ॥
हम तुम एक समान, भलो बन्यो है सग अब ॥

प्रथम आज मैं चोरी आयो * तुमकौं देखि बहुत सुख पायो ॥
अब तुम मेरे सग नित आवो * यह काहूको मतिहि जनावो ॥
सुनि सुनि हरिके मुखकी बानी * उमँगि हँसी मन युँवतिसयानी॥
श्याम चौंकि मुख तासु निहारी * भाजि चले मन खोरि मुरारी ॥
अति आनँद ग्वालिन मनमाहीं * पूँछत सखी परस्पर ताहीं ॥
पायो आन परो कछु तेरा * कहा तोहि अति आनँद हेरा ॥
गद्गद कंठ पुलक तनु तेरो * सो किन कहै कहा सुख हेरो ॥
तनु न्यारो जिय एक हमारो * हमैं तुम्है कछु भेद न न्यारो ॥
सुनहु सखी मैं तोहि बताऊँ * जो सुख भयो सो तोहिं सुनाऊ

१ अपने हाथोंसे २ मटर ३ दही ४ श्रीकृष्ण ५ शरीर

यशुमति सुन सुन्दर सुनु गोरी * आयो आजु हमारे चोरी ॥
खम्भ निकट मथनीको मासन * लियो निकासि लग्योसो चाखन
मैं ढुँरि भीतर देखन लागी * वा मोहन छवि पर अनुरागी ॥

दो०-देखि खम्भ प्रतिबिंबकों, मन कछु सकुचे श्याम ॥
अर्ध भाग तेहि देन कहि, प्रगट करौं जिन नाम ॥

सो०-तब न रह्यो मोहिं धीर, हँसी मनोहर वचन सुनि ॥
कहा कहौं तुम वीर, मन हरि लिन्हों साँवरे ॥

मोहिंदेरिा तब गयो परोंई * सखि सो छवि कछु वरणि नजाई
सुनि हरि चरित सखी अनुरागी * अति सुख पाय प्रेम रस पागी ॥
कहतकि मैं देखन नहिं पायो * सोइ अभिलोप जासु उर छायो ॥
हरि अन्तर्यामी सब जानैं * सबके मनकी रुचि पहिचानैं ॥
इहिविधि मासन प्रथम चुरायो * कीन्हों ग्वालिनिको मनभायो ॥
भक्त बछल संतन सुखकारी * पुनि मनमहँ यह बात विचारी ॥
अब सब ब्रज घर मासन खाऊँ * मासन चोर नाम कहवाऊँ ॥
बालरूप मोहिं यशुमति जानैं * ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि मानैं ॥
मित्रभाव करि ग्वाल बखानैं * प्रीति रीत सब मोसों मानैं ॥
इनहींके हित गोकुल आयो * करों सबनके मनको भायो ॥
यह विचार हरि निज उर ठाना * भक्त कृपा अँम्बुधि भगवाना ॥
बाल सखा सब निकट बुलाई * तिनसों हँसिहँसि कहत कन्हाई

दो०-माखन खइये चोरिकै, सब ब्रज घर घर जाय ॥
कीजे बाल विहारयों, मेरे मन यह आय ॥

१ छाहीं. २ छुपकर. ३ परछाईं. ४ मान ५ इच्छा ६ समुद्र ७ आपसमें.

सो०-सुनि हरषे सब ग्वाल, देत परस्पर तारि सब ॥
भली कही नँदलाल, तुम विन यह बुधिको करे ॥
चले सखन लै माखन चोरी * एक बयसे सबहिन मति भोरी ॥
देख्यौ झांकि झरोखा ओरी * मथति एक ग्वालिनि दधि गोरी ॥
धयौ मठा मथनीमें जानों * ऊपर माखनहै लपटानो ॥
ग्वालिनि गई कँमोरी मांगन * पाई घात तबहिं सुन्दर घन ॥
सखन समेत ताहि घर आये * दधिमाखनसबहिन मिलि खाये ॥
छुछी मटुकी छांडि सिधाये * हँसत हँसत सब बाहर आये ॥
आयगई द्वारे सोइ बाला * घरसों निकसत देखे ग्वाला ॥
माखन कर मुख दधि लपटानो * ग्वालिनि यह कछु भेदनजानो ॥
देखि रही हँसि मुखकी शोभा * निरखि रूप लाग्यो मन लोभा ॥
चर्मकि गये हरि सखन समेता * तबहीं ग्वालिनि गई निकेता ॥
देखी जाय मथनियाँ खाली * चकित विलोकतइत उत ग्वाली ॥
मन हरि लीन्हों मदन गोपाला * जान्योग्वालिनि हरिके ख्याला ॥
दो०-घर घर प्रगटी बात यह, सखावृन्द लै साथ ॥
चोरी माखन खातहैं, नन्दसुवन ब्रजनाथ ॥
सो०-सबके मन अभिलाँष, चोरी पकरन पाइये ॥
धरियो माखन राख, यहै ध्यान सबके हिये ॥
कहत परस्पर ग्वालि सयानी * सब मोहनके रूप लुभानी ॥
माखन खान देहु गोपालहि * मत बरजों कोउ श्यामतमालहि ॥
तुम जानत हरि कछू न जाने * वे मोहनहैं परम सयाने ॥

१ उमर २ मटकी ३ तरुण स्त्री ४ भाजगये ५ घर
६ सखाओंके समूह ७ इच्छा

कोउ कहत पकर जो पाऊं * तो अपने गहि कठ लगाऊं ॥
एक कहत जो मेरे आवै * तौ माखन हम हरिहि खवावै ॥
कहत एक जो मैं गहिपाऊँ * तौ हरिको बहु नाच नचाऊं ॥
कोउ कहत जो हरिको पैये * तौ गहि यशुमतिपै लै जैये ॥
इक कह आजु हमारे आये * द्वारहिते मोहिं देखि परैये ॥
इहि विधि प्रेम मगन सब बाला * सबके हृदय ध्यान नदलाला ॥
निशि वाँसर नहिं नेक बिसारैं * मिलिवे कारण बुद्धि बिचारैं ॥
गये श्याम सूने ग्वालिनि घर * सखा सबै ठाढे द्वारे पर ॥
देख्यो भीतर जाय कन्हाई * दधि अरु माखन धर्यौ मलाइ ॥

दो०–सदमाखन देख्यौ धर्यो, हरषे श्यामसुजान ॥
सखा बुलाये सैनदे, लै लै लागे खान ॥

सो०–इत उत चितवत जात, कछु सशय मनमें किये ॥
बाँटत दधि अरु खात, उठि उठि झाँकत द्वारतन ॥

देखतसो ग्वालिनि अतरकरि * मगनमई अति उर आनद भरि ॥
लीन्ही बोलि सखी ढिंग बासी * तिन्हें दिखावत हरि सुखरासी ॥
दखि सखी शोभा अति बाढी * उठि अवँलोकि ओटकै ठाढी ॥
जिहिविधिसों दधि लेत कन्हाई * सखन देत अरु आपन खाई ॥
बदनै समीप पाणि अति राजै * माखन सहित महाछवि छाजै ॥
है उपहार जलजै मनुआई * मिलत चन्द्रमों वैर बिहाई ॥
गिरि गिरि परत बदनतें ऊपर * दुइ दधिसुतकैं बुन्द सुभगतर ॥
मनौ प्रलय चल आगम हरषत * इन्दुसुधाके कणका वरषत ॥

---

१ भागगये २ दिन ३ देखकर ४ मुख ५ हाथ ६ कमल ७ मक्खन ८ चन्द्रमाको अमृतकी

सुखछवि देखि थकित ब्रजनारी * कहत न बनै रही उरधारी ॥
बालविनोद मोद मन फूलीं * भई शिथिल मद तनु सुधिभूलीं ॥
बरननको स्फुरत न बानी * रही निहारि विचारि सयानी ॥
गये ठगोरी लाय कन्हाई * रहीं ठगीसी सब सुखपाई ॥

दो०–विश्व भरण पोषण करण, कल्पतरोवर नाम ॥
सो प्रभु दधिचोरी करत, प्रेमविवश सुखधाम ॥

सो०–नित उठि करत विहार, ब्रजमें घर घर साँवरो ॥
ब्रजजन प्राणअधार, माखन चोरी ब्याजकरि ॥

श्याम एक ग्वालिनि घर आये * चोरी करत पकरी तिन पाये ॥
कहत वरी तुम बहुत ढिटाई * अवतौ घात परेही आई ॥
निशि वासर मोहिं बहुत खिझायो * दधि माखन सब मेरो खायो ॥
दोउ भुज पकरि कह्यो कित जैहौ * दधि माखन दै छूटन पैहौ ॥
ताके मुखतन चितै कन्हाई * बोले वचन मधुर मुसकाई ॥
तेरीसौं छुयौ मैं न राई * सखा सब खाय गये पराई ॥
चारु चितौनि चित्त उरझानो * उरते रोष जात नहिं जानौं ॥
सुनत मनोहर हरिकी बतियाँ * लिये लगाय ग्वालिनी छतियाँ॥
बैठो श्याम जाउँ बलिहारी * मैं लाऊं दधि खाउ बिहारी ॥
हरिको लेन चली दधि गोरी * हरिहँसि निकसी गये ब्रजखोरी॥
रही ठगीसी ग्वालिनि भोग * मन लैगयो सांवरो चोरी ॥
हरि गये और ग्वालिनीके घर * देख्यो जाय न कोऊ भीतर ॥

दो०–माखन काढि निशक है, लागे खान कन्हाय ॥
ग्वालिनि आवत जानि घर, तव उठि रहे छिपाय ॥

१ निकसतीहैं २ बहाना

सो०-ग्वालिनि घरमें आय, मथनी ढिंग ठाढी भई ॥
भाजन रीतो पाय, चकित विलोकति चहूँदिशि ॥

अवहिं गई आई इन पावन * आयो माखन कौन चुरावन ॥
भीतर गई तहां हरि पाये * पकरी भुजा भये मन भाये ॥
तव हरि कहि निजनाम लजाये * नयनैसरोज कछुक भरिआये ॥
देखि बदन छवि आनंदहीके * दीन्हें जान भावते जीके ॥
भयो ग्वालिमन परमहुलासा * कहन चली यशुमतिके पासा ॥
जो तुम सुनहु यशोमति माई * हंसिहौ सुनि हरिकी लरिकाई ॥
आज गये हरि मो घर चोरी * देखी माखन भरी कमोरी ॥
मैं गइ आन अचानक जबहीं * रहे छिपाय सकुचिकै तबहीं ॥
जब मैं कह्यो भवनमें कोरी * तब मोहिं कहि निज नाम निहोरी ॥
लगे लेन लोचन भरि आँसू * तब मैं कानन तोरी सासू ॥
सुनत श्याम सब रोहिणिकनियाँ * सकुचत हँसत मंद मुसुकनियाँ ॥
ग्वालि विहँसि हरितनटरपायो * माखनचोर पकरि मैं पायो ॥

दो०-करौ नोयकी दाँमरी, बांधो अपने धाम ॥
लाय लिये उर रोहिणी, बाँधि सकै को श्याम ॥

सो०-यशुमति उर आनन्द, बालचरित सुनि श्यामके ॥
कहत सुनो नँदनन्द, ऐसो काम न करहु सुत ॥

पुनि इक गृह गए नन्ददुलारे * देखि फिरे तहँ ग्वाल दुआरे ॥
तब हरि ऐसी बुद्धी उपाई * फाँदि परे पिछवारे जाई ॥
सूनो भवन कहूँ कोउ नाहीं * मानहु इनको राज सदाहीं ॥
भाँडे मूँदत धरत उतारत * दधि अरु माखन दूध निहारत ॥

१ कमलनयन. २ आनंद. ३ हांडी. ४ कौन ५ नेत्र. ६ वन. ७ रस्सी.

रैनिजमायो गोरस पायो * लगे खान मनु आप जमायो ॥
आहट सुनि युवती घर आई * झलकत देखे कुवर कन्हाइ ॥
अधियारे घर श्याम गये दुरि * दधि मटुकी ढिंग बैठि रहे मुरि ॥
सकल जीव उर अतरवासी * तहा कछुक चेटक परकासी ॥
ग्वालिनि हरिको इत उत हेरे * पावत नाहीं धाम अँधेरे ॥
कहति अवहिं देख्यो नँदनन्दन * कितहि गयो पछतात मनहिं मन॥
परिगये दीठि[३] ओट मथणीके * सुदर श्याम प्राण गथनीके ॥
तवहिं ग्वालिनी भुजगहि लीन्हीं * कहत दुरो अब तो मैं चीन्हो ॥

दो०-कहौ कहा चाहत फिरत, धाम अँधेरेमाहिं ॥
बूझे बदन दुराचते, सूधे चितवत नाहिं ॥
सो०-दधि मथनीमे हात, अबका उतर बनाइ हौ ॥
सखा नहीं कोउ साथ, कहिये अब कैसी बनै ॥

मैं जान्यो यह घर है मेरो * ता धोखे इत हैगयो फेरो ॥
दृष्टि परी चींटी दधिमाही * काढनि लग्यो तिन्हें इहिं ठाहीं ॥
सुनि मृदु[५]वचन ग्वालि मुसकानी * तुमहौ रतिनागर हम जानी ॥
उरलगाय मुख चुवन कीन्हों * विधिहि मनाय बिदा करि दीन्हो॥
हरि दरशन बिन क्षण नसुहाई * उरहन मिसि[६] यशुमतिपहँ आई ॥
सुनहु महरि निजसुतकी करणी * करत अचगरी जात न बरणी ॥
नितप्रति करत दूध दधि हानी * कहँलगि करैं कान नँदरानी ॥
मैं अपने मन्दिर अधियारे * माखन धर्यो दुराय सँवारे ॥
सोइ ढूढि लियो हरि जाई * अति निशक नहिं नेक डराई ॥

---

१ रात २ छुप ३ दृष्टि ४ छिपानेहै ५ कोमल ६ वहाना ७ जसोदा ८ छुपाकर

बूझे उत्तर तुरत बनावै * चींटी काढनको करनावै ॥
सुनि ग्वालिनिके वचन सयानी * हंसिके बोध कियो मँदरानी ॥
यशुमति कहत श्यामसों प्यारे * परघर काहे जात ललारे ॥

दो०–सब लोचनें आगे सदा, खेलहु सखन बुलाय ॥
तुम्हरे बाल विनोद लखि, मेरो हियो सिराय ॥

सो०–मोपै लीजे श्याम, दधि माखन मेवा मधुर ॥
सब कछु तेरे धाम, परघर जाय बुलाय तुम ॥

माखन माँग्यो कुँवरकन्हाई * मुदित मातु तुरतहिं लै आई ॥
गली खवावन हिय हरषानी * श्याम कह्यो लैही निज पानी ॥
दियो हाथ धरि भरिकै दोना * चले खात खेलत हरि लोना ॥
सखन संग खेलत वैनमाली * यमुना जाति सखी इक ग्वाली ॥
आप चले ताके घरमाहीं * पूछत बात कौनहै काहीं ॥
लखे तहाँ शिशुँ दोय अयाने * नीर देखते रोय डराने ॥
इत उत देख्यो गोरस नाहीं * ऊंचे धन्यो सिकहरनैं माहीं ॥
तब मनमोहन रच्यो उपाई * आनि तहां ऊखल औंधाई ॥
तापर एक सखा बैठारी * ताके कंध चडे बनवारी ॥
ऐसी विधि करि गोरस पायो * दधि माखन सबही मिलि खायो ॥
दूध ढारि बछँरू सब छोरे * दिये निकासि बनहिंकी ओरे ॥
मँही छिरक लरकन टरपाई * चले अग्रजति सखा कन्हाई ॥

दो०–ग्वालिन आवत देखिकै, सखाये सब दौरि ॥
फँसिभीतर मोहन परे, रोंकि लई तिन पौरि ॥

---

१ नेत्र २ हाथ. ३ श्रीकृष्ण. ४ बालक. ५ छींका ६ बछड़े ७ दही.

सो०–रोष भरी मुख बात, प्रेम भरयो अन्तरहियो ॥
कहत महरके तात, जात कहाँ दधिचोर अब ॥

तब हरि ताके मुखतन देखी * कीन्हे उर नखघात विशेखी ॥
अति रिस ग्वालिनि मन उपजाई * दोउ भुज पकरि महरिपै लाई ॥
मानौ महरि कह्यो तुम मेरो * अति उतपात करत सुत तेरो ॥
राख्यौ गोरस छिके चढाई * ग्वाल कन्ध चढि लिये कन्हाई ॥
माखन खाय दूध ढरकायो * मैंही छिरक बालकन खायो ॥
और कहत सकुचतहौं बाता * कहा दिखाऊँ तुमको गाता ॥
ईं गुण बडे श्यामके माई * इहां सकुचि लरिका है जाई ॥
बरजत क्यों नहिं सुतहि अनेरो * कहा अहो नितप्रतिको झेरो ॥
जो कछु राखै दूरि दुराई * तहीं तहीं ते लेत चुराई ॥
तापर देत बछरुवन छोरी * बन बन फिरत वही चहुँ ओरी ॥
चोरी अधिक चुरत बनवारी * सुनहु महरि हम इनते हारी ॥
कहँलगि इनके गुणन बखानौं * तुम इनको सूधो मति जानौं ॥

दो०–सुनत ग्वालिनीके वचन, यशुमति हरि तन देखि ॥
भये सकुचयुत मुख निरखि, कोमल लँलित विशेखि

सो०–कहत लगावत लोग, झूँठहि सब मेरे सुतहि ॥
कब भये चोरी योग, पाँच बरषके तनिकसे ॥

इहिमिसि देखनको सब आवैं * चोरी मेरे सुतहि लगावैं ॥
ऐसो तो मेरो न अन्याई * अतिही बालक कुँवर कन्हाई ॥
छीके बँधे भरन अति ऊंचे * तहँ इनको कैसे भुज पहुचे ॥

१ नोंह. २ पुत्र. ३ दही. ४ शरीर. ५ झगडा. ६ छिपाकर. ७ सुन्दर. ८ लायक ९ बहाने.

कौन वेग इतनो ह्वैआयो * तेरो गोरस कैसे खायो ॥
हाथ नचावत आवत दौरी * नीम न करहि समुझिहै बौरी ॥
घरही माखन भरी कँमोरी * कबहू लेन न अगुरिन बोरी ॥
इतनी सुनत रिसि घनश्यामैं * हँसि चली ग्वालिनि निज धामैं
हरिसों कहति महरि समुझाइ * मैं बलि कछु जिन खाहु कन्हाइ ॥
तुम्हरे कारण षटरस नाना * करि करि राखौं विविध विधाना
इतो उपाय करत कितनाई * परघर दधि माखनहि लगाई ॥
ब्रजकी बाढी ग्वालि गँवारी * हाट बाट दधिबेचनहारी ॥
नहिं कछु खान न कान निहारैं * बोलन वचन कटुक मुख फारैं ॥

दो०-झूँठो दोष लगायके, नित उठ आवत प्रात ॥
सन्मुख बादैंति धाक तहा, निकट बनावत बात ॥
सो०-नौलख दुहियइ गाय, दूध दही तेरे घनो ॥
तक्वि चोरी जाय, बुरी मानिहैं नन्दसुनि ॥

हरि माखन चोरी रस भीने * कैसे रहै प्रेमके बीने ॥
एक ग्वालि घरमाम अँधेरे * अति श्यामल तनु परत नहेरे ॥
कछुक धरो गोरस तहँ पायो * प्रथम सुगन्धिर भोग लगायो ॥
कियो प्रगट दीपक गृह ग्वाली * तब दखे भीतर वनमाली ॥
भुजा चार धरि दरश दिखायो * ग्वालिनिलखि अति अचरज पायो
दधि माखनके बूँद सुहाये * सुभग श्याम उर अति छवि छाये ॥
मानहु यमुना जलके माहीं * दखि परत उडुगँण परछाहीं ॥
इहिछविनिरखि रही छकि ग्वाली * बहुरो भये द्विभुज वनमाली ॥
देखि चरित हरषी ब्रजबाला * चकित बिलोकति दृग विशाला ॥

१ मायल २ हांडी ३ उतरटके थ्यान ४ बोलताहै ५ टेढी ६ तरे

मन मन कहति कहा मैं देख्यो * यह नागरनके स्वप्न विशेष्यो ॥
प्रेममगन तनुकी सुधि भूली * गद्गद कंठ रोमावलि फूली ॥
मल हरि लीनो रूप दिखाई * चले वहांते कुंवर कन्हाई ॥

दो०–देखि श्यामके चरित तब, ब्रजनारी सुख पाय ॥
होहिं हमारे पुरुष हरि, माँगहिं विधिहिं मनाय ॥

सो०–घर घर करत विलास, नाना भेष दिखाय हरि ॥
ब्रज जन परमहुलास, देखि चरित गोपालके ॥

देखी श्याम ग्वालि इक ठाढी * गोरस मथति प्रात छविबाढी ॥
डोलत तनु उपज्यो गिरि अचल * वेणी चलन पीठपर चंचल ॥
यौवन मदमाती इठिलानी * वरषत रजु दुहु करन मथानी ॥
इत उत अंग मोर झक झोरी * गोरे अंग दिननकी थोरी ॥
मनी उरोजन अंगिया गाढी * मनहु काम साच भरि बाढी ॥
रीझि रहे लखि नन्ददुलारे * लागे खेलन तासु दुआरे ॥
फिरि चितई ग्वालिनि द्वारेतन * परिगये दृष्टि श्याम सुन्दर घन ॥
बोलि लिये हरुवे सूने घर * लिय लगाय उरमों सुन्दर वर ॥
उमग अंग अंगिया उर दरकी * तिहिं अवसर सुधि रही न घरकी ॥
तबहीं सुन्दर श्याम सुजाना * भये वरस द्वादश अनुमाना ॥
सो छबि देखि छकी मननारी * बहुरि भये शिशुरूप निहारी ॥
हरिके कौतुक अति सुखदाई * दखि रही मति गति निमराई ॥

दो०–माखन लै तब श्याम मुख, धरत आपने पान ॥
अति आनन्द उमग उर, विसरी ग्वालि सुजान ॥

---

१ झका २ कौन ३ आनन्द ४ खेंचतीहै ५ धीरे ६ बारह ७ मेल

सो०-रसिकशिरोमणि श्याम, माखन खाय रिझाय तिय ॥
आये अपने धाम, छविसागर नागर नवल ॥

मन हरि लीन्हो कुँवर कन्हाई * बिन देखे छिन रह्यो न जाई ॥
उरहनके मिसे ग्वालिनियानी * आई देखन हरि मुसकानी ॥
सुनहु महरि सुतके गुन जैसे * कहा कहौं कहि जात न तैसे ॥
माखन खाय मही ढरकायो * चोली फारि अबहिं भजि आयो ॥
गोरस हानि सही लै माई * अब कैसे सहिजात सुढाई ॥
बाँचहिं बोलि उठे बनवारी * ढूँढहिं मोहिं लगावत ग्वारी ॥
खेलत ते मोहिं लियो बुलाई * दोउ भुज भरि लीनो उरलाई ॥
मेरे कर अपने उर धारी * आपुनहीं चोली पुनि फारी ॥
माखन आपहि मोहिं खवायो * मैं कब दही मही ढरकायो ॥
अति भोरी सुनि हरिकी बानी * यशुमति ग्वालिनसों रिसियानी ॥
जानति हूँ जु कटाक्ष तिहारी * अति भोरो सुत मेरो बौरी ॥
दैदै दगा बुलावति ताही * मोह सोह करत जो भावत जाही ॥

दो०-बोलि बोलि निज निज भवन, भेटति भरि भरि अंक ॥
भोरे भोरे बालको, ग्वालिनि निलज निशंक ॥

सो०-तापर उरहेन लाय, फिरत दिखावनि लाज तजि ॥
कान्हहिं दोष लगाय, आपुन अति भोरी भई ॥

निन उठि उरहन लै उठि धावैं * बिना भीतेही चित्र बनावैं ॥
मिसे करि करि मेरे गृह आई * रहन श्याम तनु दीठि लगाई ॥
मेरो पाँच वर्षको कान्हा * अजहूँ रोय पय माँगत नान्हा ॥
कहँ तू यौवनकी मदमाती * हरिके संग फिरत अठिलाती ॥

१ बहाना. २ छोरा. ३ छातीमें नोहमारकर. ४ दीवार ५ बहाना. ६ नजर.

ग्वालिनि सुनत यशोमति बैना * मनहरि लीन्हों राजिवै नैना ॥
आवत रोष प्रीति मनमाहीं * उत्तर देत बनत कछु नाहीं ॥
कछुक न उत्तर कहि रिसियाई * चली भवन उर राखि कन्हाई ॥
यशुमति यहै सिखावति श्यामहि * किनहो जात पराये धामहिं ॥
ये सब गोरसकी मदमाती * फिरत ढीठ ग्वालिनि इतराती ॥
नित उठि उरहन देत बिहाने * मुख सँभारि नहिं बात बखाने ॥
रुचि उपजै तुम्हरे मन जोई * मोपे माँगिलेहु किन सोई ॥
यहि कहि मधुर वचन निज ताता * सुख उपजावत मेरे गाता ॥

दो०–अपनेहिं आँगन खेलिये, सखन सहित दोउ भाय ॥
मोहिं सुख दीजै आपने, बालविनोद दिखाय ॥

सो०–सुन्दर घन ब्रजनाथ, कोटि काम शोभाहरण ॥
गोप बाल लै साथ, करत बाललीला ललित ॥

मथुरा जात लखी इक ग्वाली * चरचि लई ताको बनमाली ॥
बैठि रहे ताके पिछवारे * सखा सगरे नन्ददुलारे ॥
कहति परोसिन सों समुझाई * सुनि लीन्हों सो कुँवर कन्हाई ॥
बेंचन जाति सखी हौं दहियो * तौली मेरे घर तन लहियो ॥
सद मारान द्वैमाट धरोई * सौंपि जाति हौं तोको सोई ॥
दरतो और कछू मन नाहीं * नन्दसुवन सखि आय न जाहीं ॥
योंकहि चली ग्वालिनी जबहीं * सखन सहित हरि पैठे तबहीं ॥
कछु ग्वालनकी आहट पाई * सो पुनि फेरि घराहि फिरि आई ॥
देखि सखा सब चले पराई * पकरे ग्वालिनि धाय कन्हाई ॥
औरन जानि जान मैं दीन्हे * तुम किन जात अचगरी कीन्हे ॥

१ प्रमन्न २ सबेरे. ३ शरीर ४ चाह लीनी,

बाँह पकरि कै चली लिवाई * कहत यशोमति देखहु माई ॥
उरहन देन सदा रिसमानों * अब अपनो सुत आय पिछानो ॥

दो०-यहै उरहनो नित्यको, सत्य करनके काज ॥
मैं गेहि ल्याई श्यामकों, बाँह पकरिकै आज ॥

सो०-हरि बैठे निज धाम, खेलत जननीके निकट ॥
कौतुकनिधि घनश्याम, करत चरित संतनसुखद ॥

यशुमति सुनि ग्वालिनिकी बानी * देखन चली सुतहि अकुलानी ॥
गये तहाँ व्है सुना पैराई * देखि यशोमति अतिरिसियाई ॥
तेरे आँखिन मनि हियें नाहीं * बर्दन देखि पहिचानत नाहीं ॥
देखहुरी याकी गति माई * या कन्याको कहत कन्हाई ॥
तैं जो बेरे सुतको नामा * सूधी करि पायो है श्यामा ॥
तू यदि बाँह कौनको ल्याई * खेलत मेरे धाम कन्हाई ॥
रही बाल हरिको मुख चाही * समुझि समुझि मनमें पछिताही ॥
बाँह पकरि मैं घरते ल्याई * कीन्हें कैसे चरित कन्हाई ॥
जात बनै ना कछु कहि जाई * रही ग्वालि ठगिनी सकुचाई ॥
महरि कहत चलि जाहि इहाँतें * मैं जानत सब तुह्मरी बातें ॥
हरिके चरित कहा कोउ जानै * ग्वालिनि तन दुरि मुरिमुसकाने ॥
हरिते हारि चली गृह ग्वाली * बुधि करि जीते श्याम तमाली ॥

दो०-बहुरि गये इक ग्वालिघर, मनमोहन घनश्याम ॥
सखन सहित हरषित भये, सूनो पायो धाम ॥

सो०-सब घर लियो ढँढोरि, माखन खायो चोरि हरि ॥
भाजन डारे फोरि, गोरस दियो लुढ़ाय महि ॥

१ पकड़कर. २ दूसरेकी. ३ हिरदा. ४ मुख. ५ छिपकर. ६ वासन. ७ धरतीपर.

सोवति लरिकन चुटकि जगाये * महीछिरकि डरपाय रुवाये ॥
बड़ो माट इक घीको मोरो * बहुत दिननको चिकनो चोखो ॥
सोऊ फोरि कियो बहु टूका * चले हँसत सब मिलिदैकूका ॥
आइ गई ग्वालिनि तिहि काला * निकसत धरिपाये नँदलाला ॥
देख्यो घर बासन सब फोरे * रोवत बाल मही सों बोरे ॥
दोऊ भुज गाढेही लीन्हैं * जाय महरि ढिंग ठाढे कीन्हैं ॥
कहति सरोष यशोमति आगे * अब पति रहिहै या मनलागे ॥
ऐसे हाल किये गृह मेरे * सुनो महरि लक्षण इनकेरे ॥
माखन खाय दही ढरकायो * मही छिरकि बालकन रुवायो ॥
बासन फोरि धरे सब घरके * उपज्यो पूत सपूत महरिके ॥
घीको माट सुगर्नको राख्यो * सोऊ फोरि टूक करि नाख्यो ॥
चलौ दिखाऊं घरको हाला * राखहु बाँधि आपनो लाला ॥

दो०-जननी खोजति कान्हको, करत फिरत उत्पात ॥

नित उठि उरहन सहति हौं, तू नहिं मानत तात ॥

सो०-बड़े बापके पूत, चोर नाम मगटयो जगत ॥

उपज्यो पूत सपूत, नाम धरावत तातको ॥

जननीके खीझत हरि रोये * भरि आये नैननिके कोये ॥
हूँढहिं मोहिं लगावत धर्गरी * मेरे ख्याल परी हैं सिगरी ॥
यशुमति रोवति दखि कन्हाई * अंचल पोंछि लीनो उरलाई ॥
कहति सबै युवतिन यह भावै * नितही नित उठि गोरहिं आवै ॥
मेरे बौंढहि दोष लगावैं * झूठहि उरहन मोहिं सुनावैं ॥

१ गोबरर २ दही ३ घर्गांदोर ४ बहुत पुराना ५ उधम ६ प्यारे. ७ दिखाओ ८ घिसाई ९ गुण १० बालकको

कबहि गयो घेरे दरवाजे * दूध दही माखनके काजे ॥
धन मानी इतराती डोलै * सकुचनि नाहिं सँभारि न बोलै ॥
मेरो कान्ह तनक सो माई * ताहि ग्वावन झूँठ लगाई ॥
कब हरि तेरो माखन लीनो * मेरे बहुत दई को दीनो ॥
कहा भयो घर गयो तिहारे * छियो तनक दधि बालकवारे ॥
ग्वालिन सुनि यशुमतिकी बानी * कहति महरि तुम उलटिरिसानी ॥
नित उठि होय जासुकी हानी * सो क्योंकहे आन नँदरानी ॥

दो०–तुम कछु लावत औरही, लेहु आपनो गाउँ ॥
जहाँ बसे नहिं पैनि रहै, तजनि कह्यो सो ठाँउँ ॥

सो०–पूतहि देत पठाय, भदहाई घर घर करन ॥
उरहन देत रिसाय, को बसिहै ऐसे नगर ॥

सखा भीरलै पैठत धाई * आप ग्वाद तो सहिये माई ॥
जो कछु गोरस घरमें पावै * कछु डारे कछु सखन लुटावै ॥
कहँलो सहैं नितकी हानी * बतलौं करे नंदकी कानी ॥
इक दिन मेरे मन्दिर आयो * मोको देखत ऐंडन वितायो ॥
जब मैं सन्मुख पकरन धाई * तबके गुण कहा कहौं सुनाई ॥
भाजि रह्यो दूँरि देखत जाई * मैं पीढी अपने गृह आई ॥
हरै हरै आये शिरहाने * चोटी पाटी बाँधि पराने ॥
सुनि मैया याके गुण मोसों * ये सब झूठ कहतिहैं तोसों ॥
खेलतते मोहिं लियो बुलाई * मोपै दधिकी नाँटि कढाई ॥
टहल करौं मैं याके घरकी * यह सोवे पति संग निपैरकी ॥

---

१ भगवानका. २ छोटे. ३ दुश्मन. ४ जगह. ५ डर. ६ गुण. ७ छुपकर. ८ भागे. ९ बेखटके.

सुनत वचन यशुमति मुसुकानी * ग्वालिनि हसि मुख मोरिलजानी
सुनहु महरि सुतके गुणकाने * समुझहु हैं भोरे कै स्याने ॥
दो०-करत फिरत उत्पात अति, सब ब्रज घरघर जाय ॥
नित उठि खेलत फागसी, गरियौवत न लजाय ॥
सो०-बाहर तरुण किशोर, बोलत वचन विचित्र पर ॥
इहाँ होत शिशु भोर, तुम अचरज मानत नहीं ॥
यौंकहिगइ ग्वालिनी धामहि *यशुमतिपुनिपुनिसिखवतश्यामहि
घर गोरस जिन जाहु पराये * तातरिसात उरहनो लाये ॥
लघु दीरघता कछु नहिं जाने * झगरो आय झूँठतव ठानै ॥
नौ लख धेनु दूध घी तेरे * और बहुत बन चरैं अनेरे ॥
तिनिन माखन खात चुराई * छाँडि देहु अब यह लरिकाई ॥
यौंकहि जननी कंठ लगायो * सुन्दर श्याम हर्ष तब पायो ॥
खेलन गये बहुरि नंदलाला * लिये जाय पुनि सोइ ख्याला ॥
ऐपर ग्वालि उरहनले आइ * आइ यशुमति पै रिसयाइ ॥
तेरो सुत मम माखन खायो * सखन सहित अबहीं भजिआयो ॥
मैं गइ यमुन भरनको पानी * दुपहर दिवस सून घरजानी ॥
गयो भवनमें खोल किवारा * छींकन तें दधि लियो उतारी ॥
खाय लुटाय बहाय पराने * वारबै दै बरजो नहिं माने ॥
दो०-कीन्हो अनिही लाडलो, लाड लडाय बहुत ॥
अबहीं ते ये ढँग करत, आयो नोखो पूत ॥
सो०-सुनि ग्वालिनिके बैन, कहत यशोमति कान्हसों ॥
सिखयो मानत नैन, हैं सेठियौ ढाटति भइ ॥

---

१ गारी देतेमें २ चालाक ३ प्यारे ४ गुनी ५ दूसरी ६ एकतर्फ ७ छड़ी

माखन खात पराये घरको * मेरे रहत जहाँ तहँ डरको ॥
नितप्रति मथियत सहँस मथानी * तेरे कौन बँगुरी हानी ॥
जिनने अदिर जिवन घर मेरे * दैचन खात मैही बहुतेरे ॥
पूत पढावत नन्द महरिको * चोरी करत उघारत घरको ॥
मैया मैं नहिं माखन खायो * मेरे बदन सखन लपटायो ॥
भाजन ऊचे छिकन चढायो * समुझ देखि मैं कैसे पायो ॥
मैं ये नान्हे हाथ पसारी * किहि बिधि माखन लियो उतारी ॥
मुख दधि पोछत वदन छपाई * दोना पाछे पीठि दुराई ॥
डारि साँटि यशुमति मुसुकानी * गहि उर लायलिये सुखदानी ॥
बाल विनोद मोद मन मोह्यो * निरखत वदन श्याम सुत सोह्यो ॥
भक्ताधीन वेद यश गावै * सो हरि भक्ति प्रताप दिखावै ॥
यशुमतिको सुख निरखि अगाधा * बिसरी शिव मुनि सदा समाधा ॥

दो०-धन ब्रजवासी धन्य ब्रज, धनि धनि ब्रजकी गाय ॥
जिनको माखन चोरि हरि, नित उठि घर घर खाय ॥

सो०-रहे सकल सुर भूल, मनविलास हरिको निरखि ॥
हरषहिं बरषहिं फूल, धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि ॥

आइ कहत और इक ग्वाली * सुनहु यशोमति सुतकी चाली ॥
भाज गये मम भाजन फोरी * माखन खाय मही महि ढोरी ॥
दाव देत पैठत घरमाहीं * काहू बिधि कर आवत नाहीं ॥
सखा संग लीन्हें इक ठौरी * नाचत फिरत साँवरी खोरी ॥
बाट घाट कोउ चलन न पावै * गारी दै दै सबन बुलावै ॥

१ हजार २ चैन ३ दही ४ मुख ५ बासन ६ डर ७ अथाह
८ बासन

गोरस हानि करत है सिगरौ * कहलगि कीजै नित उठि झगरौ ॥
घरघर करत फिरत सुत चोरा * एसीविधि बसिहे ब्रजकोरी ॥
सुनत गोपिकाकी रिसयानी * कहत स्याममों नन्दकी रानी ॥
तू नहिं मोहि टरात मुरारी * बकत बकत तोमों पचिहारी ॥
षटरस भरे धरे घरमाहीं * सो तू खात पियत क्यों नाहीं ॥
परघर चोरी को नितनाई * देत उरहनो ग्वालि सदाई ॥
मोको कृपणै कहत सब आइ * तेरे घर ढोटहु न अघाई ॥

दो०–सुनि सुनि लाजनि मरति मैं, तू नहिं मानत बात ॥
अब तोहिं राखो बाँधिकै, जानी तेरी घात ॥

सो०–सुनिरी ग्वालिनिवात, कहे देत अब तोहि मैं ॥
जबहीं पावहु घात, मेरी सों यहि मारियौ ॥

अबतं मोको बहुत खिजाइ * माँटिनै मारि करौ पहुनाई ॥
अजहूँ मानि कह्यौ करि मेरौ * तू घरघर मति फिरै अँनेरौ ॥
जननी रिस लगि स्याम डराने * अब नहिं जैहौं धामै बिराने ॥
यों कहि निकरि गये हरिद्वारे * खेलत मदन संग गम्यारे ॥
तबहा ग्वालि और इक आइ * मो यशुमतिमां कहत सुनाइ ॥
नदमहरि सुत भलौ पढायौ * ब्रजघर बीथिनि सोर मचायौ ॥
मारि भजत काहूके लरिका * खोलतई काहूको फरका ॥
काहूको दधि माखन खाई * काहूके घर करत भँडाई ॥
गारि दन सकुच नहिं माने * गैल चलत हठ झगरौ ठाने ॥
कह कह हरिके गुणनि बखैये * तोसों उरहन दत लजैये ॥
कछु टोना सों पढिकर आई * जोइ भावत सोइ करत कन्हाई ॥

१ मधुर २ छन्दियोंसे ३ मिट्टाको ४ घर ५ गलियोंमें

पीताम्बर ओढ़त शिरनाई * अंचल दै दै हरि मुसकाई ॥

दो०–तेरीसों तोसों कहति, मैं सकुचति यह बात ॥
तेरो सुत हरि लखतिही, सकुचि छनिक ह्वै जात ॥

सो०–नेक दिखावहु आँखि, नहिं अबते यह ढंग भले ॥
कबलगि कहिये राखि, करत अचैकरी श्याम अति ॥

अथ दाँवरीबंधनलीला ॥

यशुमति सुनि हरिके गुणगाथा * रिस करि उठी साँटिलै[2] हाथा ॥
कहति जो ऐसी रिसमें पाऊँ * तो हरिकी गति तुमहिं दिखाऊँ ॥
कैसे हाल करों हरि केरे * लागे नातै आज हैं मेरे ॥
छोटौ नहीं आज बिन मारे * भये श्याम अब बहुत दुलारे ॥
इहि अन्तर आई इक गोपी * बाँह गहे हरिको मुख कोपी ॥
भलो महरि सूधो सुत जायो * चोरी हार खोलि दिखरायो ॥
किन नहिं सुतको गाढ़ लड़ायो * कौने नहीं कठिन करि जायो ॥
तेरो कछुक अधिकरी माई * बरजत नाहिन नेक कन्हाई ॥
यशुमति हरिको भुज गहि लीन्हो * कहति बहुरि अपनो ढँग कीन्हो ॥
हरुवे मटिया टेक लगाई * आज बाँधि मेटौं लँगराई ॥
गहे भुजा सुतकी जिरानी * इत उत रैजु खोजत नँदरानी ॥
हरि जननी उर कोप निहारी * मनमन बिहँसत कौतुककारी ॥

दो०–अग्नि प्रेरि त्रिभुवनधनी, दियो क्षीर उफनाय ॥
यशुमति लखि तजि हरि भुजा, लगी सँभारन जाय ॥

सो०–इहि बिधि भुजा छुड़ाय, दधिभाजन फोरन लगे ॥
माखन मुँह लपटाय, गोरस दियो लुढ़ाय सब ॥

---

१ ढिठाई. २ छड़ी. ३ निता. ४ बोचमें. ५ धीरेसे. ६ ढिठाई. ७ रस्सी.

रिसमैरिस औरै उपजाई * जानि जननि अभिलाषै कन्हाई ॥
देखि यशोमति अतिरिसि पागी * पकरि श्यामको बांधन लागी ॥
गर्व जानि नहिं दाँम समाई * सब रजु द्वै आँगुरि घटि जाई ॥
पुनि पुनि यशुमति और मँगावै * हरिके तनु सब ओछी आवै ॥
देखि यशोमति अति रिसबाढी * मन पछितात ग्वालिनी ठाढी ॥
देखि सखी यशुमति बौरानी * हरिको बाँधन चहत सयानी ॥
हरिको त्रिभुवनपति नहिं जाने * जिनते सकल कलेश नशाने ॥
अखिल ब्रह्मांड उदरमें जाके * बाँधति महिर उदर रँजु ताके ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ध्यानी * इनहू जिनकी गति नहिं जानी ॥
जलथल जिनकी ज्योति समानी * कही गर्ग सब प्रकट बखानी ॥
मुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई * ताहूपर परतीति न आई ॥
तिनहिं देख बाँधति नँदरानी * अचरज कथा न जाति बखानी ॥

दो०–आप बँधावत प्रेम वश, भक्तन छोरत फंद ॥
बदत वेद वाणी विदित, भक्त बछल नँदनन्द ॥

सो०–जननिहिं अति रिस जान, यमला अर्जुन सुरतिकरि ॥
दीनबंधु भगवान, जनहित गये बँधाय प्रभु ॥

जननीके मनकी रुचि जानी * आप बँधायो शारँगपानी ॥
कहत यशोमति लै करडोरी * बाधों तोहिं सकै को छोरी ॥
लै लै रजु ऊखलसों जोरै * हरि लखि बदन नैन जल ढोरै ॥
यह सुनि मनयुवती उठि धाई * देखि श्यामको सब मुसुकाई ॥
कहति इन्हें कोऊ मत छोरो * बहुरि श्याम अब माखन चोरो ॥
ऊखल बाँधि यशोमति डोरी * मारनको सँटियाँ करतोरी ॥

१ इच्छा. २ घमंड. ३ रस्सी ४ पागल. ५ पेट ६ रस्सी. ७ इच्छा. ८ श्रीकृष्ण. ९ मुख १० छड़ी.

साँटी देखि ग्वालि पछितानी * विकल भई मन अति अकुलानी ॥
कहति यशोमतिसों सब ग्वेरी * ऐसी कहा पूत पै कोपी ॥
कहा भयो जो बालक पाहीं * ढरक गई मथनी मद्दि माहीं ॥
घरघर गोकुल दई दिवारी * तू बाँधत हरिकी सुकमारी ॥
ऐसी तोहि बूझियत नाहीं * गोरस लगि बाँधत सुतबाहीं ॥
चूक परी हमते इहि भोरें * लहन दियो बकस कैरजोरें ॥

दो०-बार बार जोवत बैंदन, हुचकिन रोवत श्याम ॥
वज्रहुते तेरो हियो, कठिन अहो नँद बाम ॥

सो०-कित रिस करति अचेत, छोर उदरते दाँवरी ॥
डार कठिन करपेत, लोचन भरि भरि लेत हरि ॥

जाहु चली अपने अपने घर * तुमहि सबै मिल ढीठ कियो वर॥
बन्धन छोरनको अब आई * मोको मति बरजो कोउ माई ॥
मोहि आपने बाबा कीसों * अब न पत्यावें श्यामको बीसो ॥
देखि चुरी मैं इनके ख्याला * उपजे बड़े नंदके लाला ॥
मैं देवैन हित पय औटायो * कोरी मडुकी दही जमायो ॥
जावन दियो न पूजन पायो * सो सब फोरि भूमि ढरकायो ॥
जिहि घर देव पितर कछु काके * भयो कान्हसो सुत घर जाके ॥
कहत एक सुन यशुमति दौरी * दधि कारण सुत बाँधत दौरी ॥
तैं यह सीख कौनपै लीन्ही * इतनी रिस बालकपै कीन्ही ॥
जो अतिही अचकरो कन्हाई * तऊ कोखको जायो माई ॥
नेक देखि धौं हरिहि निहारी * कैसे डरत लकुटि उरभारी ॥
शोभित सजल साँवरे लोचन * नीरजदल अति ओस मरेजन ॥

१ हाथ २ सुत. ३ बीसों विस्वे. ४ देवता. ५ धरती. ६ ढीठ. ७ नीलकमल.

दो०–नमित वदने सूखत अधर, कछुक सकुचमें रोस ॥
सॉझ होत निमि बात वश, शोभित पकजे कोस ॥

सो०–निरखि नयन सुख देत, हरिपै सर्वस वारिये ॥
प्रकटे नन्दनिकेते, को जानै किहि पुण्य वश ॥

एक कहति जो आयसु पाऊँ * तौ माखन निज घरते लाऊँ ॥
जिहि कारण कीनी रिस हरिते * अजहुँ न डारत मथिया करते ॥
देखि डरात तोहि हरि कैसे * सकुचत नैलज शीतै भय जैसे ॥
वेगि छोरि बंधनपट त्यागी * ले लगाय उर श्याम सभागी ॥
कहन लगीं अब वद्धि बनि दानी * माखन मोहि देतिहैं आनी ॥
मानों मेरे घर कछु नाहीं * तब नहि उरहन देत लजाहीं ॥
ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो * उरहन दे दे मूड पिरायो ॥
रिसहीमें मोको गहि दीनो * सबको ज्ञान जानि मैं लीनो ॥
बोली अँपर एक व्रजनारी * देखहु यशुमति सुतहि निहारी ॥
मुख छवि कोटि चन्द्र बलिहारी * यहहैं साह कि चोर विहारी ॥
नाहिन तरुण किशोर कन्हाई * कितहिं करत इनसों रिस माई ॥
कहा भयो जो उरहन आने * बालक हरि अबहा कहा जाने ॥

दो०–श्रमित भ्रमितजो त्रसते, चपल सँजलहग कोर ॥
मनहुँ मीनबँसी विधे, करत सलिलै झकझोर ॥

सो०–लैउठाय उरधारि, छोरि उदरते दाँवरी ॥
प्राण दीजिये वारि, मोहन मदनगोपाल पर ॥

---

१ मुख २ कमलकी कली ३ नन्दका घर ४ कमल ५ पाला ६ पकड़कर ७ दूसरी ८ जवान ९ थकीहुई १० घूमतीहुई ११ डरसे १२ आसूभरे नेत्र १३ मछली पकड़नेका कांटा १४ पानी

तेरो कठिन हियो है माइ * यहाँ एक ग्वालिनि समुझाइ ॥
एमो माखन दधि बहि जाइ * बाँधे कमलनयन नहिलाइ ॥
जो मूरति शिव ध्यान लगावैं * सपनेहु सुर नहिं देखन पावैं ॥
निगमनहू सोचत नहिं पाइ * मोर्नै दे करँतार नचाइ ॥
याहीर्त तू गैव भुलाइ * घर बैठे तेरे निधि आइ ॥
याहूको सुत रोवन देषी * लेत धाय उरलाय विशेषी ॥
अब यह कित सीखी चतुराइ * तिनसुनसों इतनी कठिनाइ ॥
कहन एक देखहु नँदनारी * ववके ऊखल बँधे मुरारी ॥
गयो छुधाते मुख कुम्हिलाइ * अति कोमल तनु श्याम कन्हाइ ॥
भए बर बीते जुगयामा * हरिके निकट आयगो घामा ॥
तू लागी गृहकारन माहीं * है निर्दयी दया कछु नाहीं ॥
घरको काज इनहुते प्यारो * यशुमति नेक न हृदय विचारो ॥

दो०–जैलजलोर लोचन सजल, भये त्रास ते दीन ॥
चितवत तेरे वदनै तन, मन मोहन आधीन ॥
सो०–केतिक गोरस हान, जाकों तोरत कानतू ॥
नारि दीजिये प्रान, रोम रोम पर श्यामके ॥

हरिको देखि सखा इक धायो * तिन हैलधरसों जाय सुनायो ॥
अहो राम तुम्हरो लघु भैया * बाँध्यो आन यशोदा मैया ॥
याहूके लरिकहिं हरि मार्यो * यशुमति पै तिन जाय पुकार्यो ॥
तबते हरिहि बाँधि बैठायो * छोडति नाहिंन सबहि छुड़ायो ॥
सो हम तुमहिं जनावन आये * हलधर सुनत तुरत उठि धाये ॥

---

१ श्रीकृष्ण २ विधाता ३ घमंड ४ खजाना ५ कमल ६ डर ७ मुख ८ दाऊजी

माता डरतनु अतिहि नसाये * हरिहि देखि लोचन भरि आये ॥
कहन भले दोउ भुजा बँधाये * ऊखलमों बाँधे हरि पाये ॥
मैं बरजे कइ बार कन्हाई * अजहूँ छोडि देहु लँगराई ॥
दोउ कर जोरि कहतरी मैया * काहेको बाँध्यो मेरो भैया ॥
श्यामहि छोडि बाँध वरमोहीं * और कहा कहिये अब तोहीं ॥
मेरो प्राण अधार कन्हाई * ताकी भुज मोहिं बधि दिखाई ॥
कौन काज गोरस धन धामा * जिहि कारण बाध्यो घनश्यामा॥

दो०–छुवत और जो तनु कोऊ, आज देखतो सोय ॥
तू जननी कछु वश नहीं, जो कछु करे सो होय ॥

सो०–तेरे वश हरि आहिं, को जानै किहि पुण्यते ॥
तू पहिचानत नाहिं, गोरस हित बाँधत हरिहि ॥

सुनहु बात हलधर तुम मेरा * करन देहु सेवा इनकेरी ॥
माखन खात परायो जाई * प्रगटत चोरी नाम कन्हाई ॥
तुमहीं कहो कमी किहि केरी * नवैंनिधिकी मेरे घर ढेरी ॥
हौं हारी बरनत दिनराता * मानत नाहिंन मेरी बाता ॥
कहा करौं हरि अतिहि खिजाइ * भयो बहुतही ढीठ कन्हाई ॥
मेरो कह्यो तनक नहिं मानै * नित उठि टेक आपनी ठानै ॥
भोर होत उरहन लै आवै * मजयुवतिनके मोहिं लजावै ॥
जहँ तहँ धूम मचावत जाई * घरनहिं रहते क्षणक कन्हाई ॥
तुमहूँ दोष देत हौ मोही * कान्हरतें प्यारो दधि तोहीं ॥
तोहिं तजि और कहो किहि मैया * औरको मेरो मान रखैया ॥
तेरी सों जननी सुन मोही * उरहन देत झूठ सब तोहीं ॥

१ डर पाये २ कृष्ण ३ सताना

है सब मनको श्याम पियारो * श्याम सकल मनको रखवारो ॥
दो०–दधि माखन पय कान्हको, कान्हाकी सब गाय ॥
मोहूको बल कान्हको, तू नहिं जानत माय ॥
सो०–बलदाऊकी बात, सुनि हँसिकै यशुमति कह्यो ॥
तुम बकमति दोउ भ्रात, जानत मैं तुम्हरे चरित ॥
हरिहि देखि हलधर मुसकाने * यहतुम गति तुमविन को जाने॥
को तुम छोरन बाँधनहारा * तुम छोरत बाधत संसारा ॥
कारन करन करत मनमाने * अति हित यशुमति हाथ बिकाने॥
असुर सँहारन जन दुखमोचन * कैमलापति रौजीवविलोचन ॥
भक्तनके बश रहत सदाई * ताहीते कछुओ न बसाई ॥
हरि यमलार्जुन तरुतन हेरे * मनमें कहत दास ये मेरे ॥
अबहीं आजु इन्हें उद्धारों * दुसैह शाप मुनिवैर को टारों ॥
इनहींके हित भुजा बँधाई * परसि विटेप अब देहुँ गिराई ॥
दारुण दुख इनको सब टारों * इहि मिसि हरि बंधन निरवारों॥
भक्तवछल हरि दीनदयाला * करुणासिन्धु अगाध कृपाला ॥
भक्ताधीन वेद यश गावैं * पावन पतितनाम कहवावैं ॥
भक्तहेतु नाना तनुधारी * करत चरित भक्तन सुखकारी ॥
दो०–ब्रजवासी प्रभु भक्ति हित, आप बँधायो दाम ॥
ताही दिनते प्रकटहै, दामोदर सो नाम ॥
सो०–नंदनँदन घनश्याम, जनरंजन भंजन विपति ॥
मेटत जिनको नाम, पाप शाप त्रय तीप दुख ॥

१ विष्णु. २ कमल. ३ कठिन. ४ नारद ५ पेड़. ६ कठिन. ७ कहाना. ८ अथाह. ९ रम्भी. १० प्रसन्न करनेवाले. ११ दुख.

यशुदा बाहिर छाँडि कन्हाई * लगी मथन दधि भीतर जाई ॥
कहत वचन रसरिस लपटाने * खात फिरत दधि धामविराने ॥
घररस छाँडि आपने धामा * चोरी प्रकट करतहैं श्यामा ॥
मारि भजत ब्रजलरिकन आई * जहाँ तहाँ ब्रज धूम मचाई ॥
रहौ तुमहु हलधर चुप साधी * इनकी मेटन देहु उपाधी ॥
ऊखलसों बाँधे वनवारी * कहत यशोमति सों ब्रजनारी ॥
कान्हहुँते तोहिं माखन प्यारो * अरी देखि तरसत हरिवारो ॥
डारिदेहि मथनी नँदरानी * व्हैहै हरिकी भुजी पिरानी ॥
दूध दही हरिपै सब वारो * मोहन जीवन प्राण हमारो ॥
हरुवे बोलि उठी नँदरानी * जाहु सबै तुम युवति सयानी ॥
मैं खीजत लरिकहि गुण काजे * तुम कित झुरत दई बिनकाजे ॥
लरिकहि त्रास दिखावत रहिये * अवहींते अवगुण नहिं चहिये ॥

दो०—युवति चलीं विरझाय सब, कहत यशोदहिं पोचं ॥
मूरखसों कहिये कहा, करत प्रेम वश शोच ॥

सो०—कहा करैं बलि जाउँ, कहत चलीं सब श्यामसों ॥
धरत यशोदहिनाउ, अति कठोर मानत नहीं ॥

तबहिं श्यामसुंदर यह ठानी * युवती धाम गई सब जानी ॥
गृहकारज जननी अटकायो * आप यमलअर्जुन पहँ आयो ॥
परसत पात उठे झहराई * परे शब्द आघातँ सुहाई ॥
उखरे मूलै सहित अरराई * दिये धरणि दोउ तरुन गिराई ॥
भये चकित सब ब्रजके वासी * रहे सकुचि तनु सुधि नासी ॥

१ वाह्. २ जल्दी ३ पेव ४ खिसयानी होकर ५ डरपोक. ६ दोनूध. ७ झटका ८ जड. ९ धरनी. १० पेड़.

कोउ भूमि कोउ तकत अकासा * रहे धरिक लों जकि मन त्रासा ॥
याही अन्तर युगलै कुमारा * प्रगटे धनदतनैय सुकुमारा ॥
नारद शाप पाय दोउ भाई * भये हुते भजमें तरुआई ॥
हरिके परसन निजगति पाई * भये पुनीन मिटी जड़ताई ॥
तिन्हें कृपालु अनुग्रह कीन्हो * चारि भुजाकरि दरशन दीन्हो ॥
देखि दरश अति पुलक शरीरा * परे चरण दोउ बंधु अधीरा ॥
बारबार पदरज शिरधारी * जोरि पाणि अस्तुति अनुसारी ॥

छं०-अनुसारि अस्तुति युगल प्रेमानँद मगन सन्मुखखरे ॥
जै जै भगत हित सगुण सुंदर देह धरि ध्यावत हरे ॥
जो रूप निर्गम न नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे ॥
सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उर धरे ॥
धनि धन्य ब्रज धन गोप गोपी गाय दधि माखनमँही ॥
धन्य गोविंद बाल लीला करत माखन चोरही ॥
धनि धनि उरहनोदेत नित उठिधन्य अनरस बढ़ावही ॥
धन्य जननी बाँधि राखति जाहि बेद न पावही ॥
धन्य सो तरु जासुको रँजु श्याम भुजन बँधाइयो ॥
धन्य सो तृण जासु ऊखल धनि सुजन गढ़ि लाइयो ॥
धन्य ऋषि धनि शाप दीन्ह्यो अति अनुग्रहसो कियो ॥
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दरशन दियो ॥
अब कृपा करि देहु वर प्रभु चरण पंकज मति रहै ॥

१ दोनों. २ कुवेरके पुत्र. ३ वेद. ४ धरती. ५ रस्सी. ६ कमल.

जहाँ जन्महिं कर्म वश तहँ एक तुहारी रति रहै ॥
दीनबन्धु कृपालु सुन्दर श्याम श्रीब्रजनाथजू ॥
राखिये निज शरण अब प्रभु करिय हमहिं सनाथजू ॥
दो०-बार बार पद नाय शिर, विनती प्रभुहिं सुनाय ॥
प्रेम मगन निरखत बदन, हर्ष सहित दोउ भाय ॥
सो०-साधु साधु कहि श्याम, भक्ति दान तिनको दियो ॥
विदा किये घनश्याम, हर्षिगये निज पुर युगल[1] ॥

वृक्ष शब्द सुनि यशुमति धाई * देखे अँजिर[2] न कुँवर कन्हाई ॥
परे विटप[3] महि लखि अकुलानी * श्याम दबे तरुतर यह जानी ॥
आरत महरि पुकारन लागी * बाँधे हरिमैं परमअभागी ॥
सुनत शोर ब्रज जन उठि धाये * नन्द द्वार सब आतुर आये ॥
देखि गिरे तरु मनहिं डराने * ढूँढत श्यामहिं अतिहि सकाने ॥
बारबार सब करहिं विचारा * गिरे कौन बिधि विटप अपारा ॥
देखे दुहूँतर बीच कन्हाई * रहे त्रसित[4] ऊखल लपटाई ॥
धाय लिये भुज छोरि उठाई * ब्रज युवतिन उर लीन्हे लाई ॥
कहत सबै नन्दहि बडभागी * बचे श्याम कछु चोट न लागी ॥
कबहूँ बाँधत मारत कबहूँ * देत दोष यशुमतिको सबहूँ ॥
नयन नीर[5] भरि दौरि यशोदा * लियो लगाय कठ भरि गोदा ॥
जरहु सो रिस जिन तुमको बाँध्यो * जरहु हाथ जिन जेवरि साँध्यो ॥
दो०-नन्द मोहिं कहिहैं कहा, देखत तरवर आय ॥
कुशल रहो अब भ्रात दोउ, मैं ले मरहुँ बलाय ॥

१ दोनों २ आंगन. ३ पेड. ४ दुखित ५ जल.

सो०–श्याम रहे लपटाय, अति सभीत उर मातुके ॥
वार वार बलि जाय, यशुमति मन पछितात अति ॥

मजयुवती लै लै उर लावैं * निरखि वदन मनमन सुख पावैं॥
मुख चूमत यह कहि पछितांहीं * कैसे बचे अगम तरु माहीं ॥
बड़ी आयु हरिकी है माई * जहाँ तहाँ विधि होत सहाई ॥
प्रथम पूतना मारन आई * पय पीवत वह तहाँ नशाई ॥
तृणावर्त लै गयो उड़ाई * आपहि गिर्‌यो शिलापर आई ॥
कागासुर आवत नहिं जान्यो * मुनी कहति जिय लेत परान्यो ॥
शकटासुर पलना ढिग आयो * को जानै तिहि काहि गिरायो ॥
कौन कौन करवर विधि टारी * ऊखलसों बाँधे महतारी ॥
तहँ वैउ उवन्यो आजु कन्हाई * ऊपर वृक्ष परे महराई ॥
सबदिन पेलि करत मनभाई * पुण्य नन्दके बच्यो कन्हाई ॥
भुजपर बन्दन चिह्न निहारी * कहत यशोमतिसों भ्रजनारी ॥
ये गुण यशुमति अहहिं विहारे * सकुची महरि निरखि हरि प्यारे॥

दो०–तबहिं नन्द आये घरहिं, दोउ तरु गिरे निहारि ॥
श्याम चपल बाँधे सुने, देत महरिको गारि ॥

सो०–बाँधतिहै विन काज, मेरे हरि बारे सुतहिं ॥
कुशल करी विधि आज, शोचत नँद लखि तरुवरन ॥

तबहिं तात कहि धाय कन्हाई * लिये नंद कनियाँ सुख पाई ॥
चूमि बदन उरसों लपटाये * प्रेम पुलकि लोचन भरि आये ॥
मेरे लाल मैं तुम पर वारी * काहेको बाँधे महतारी ॥
कैसे गिरे वृक्ष अति भारी * चली नाहि कहुँ तनक बयारी ॥

१ हृदय. २ मुख. ३ वृक्ष.

बार बार शोचत नँदराई * पूछत त कछु लख्यो कन्हाई ॥
श्याम कही मैं कछु न जानों * ऊखल ढिंग मैं रह्यो छिपानों ॥
कहत नन्द हरि बैंदन निहारी * बडी आज विधि करवेर टारी ॥
बहुत दान हरि हाथ दिवायो * द्विज चरणन लैलै सुत नायो ॥
देहिं अशीश बिप्र सुख मानी * भये प्रसन्न नन्द सुनि बानी ॥
तबहीं श्याम जननि पहँ आये * हंपि यशोमति कण्ठ लगाये ॥
भूखो भयो आज मेरो बारो * काको मुखहीं प्रात निहारो ॥
लाई उरहन ग्वालिनि भिनहीं * यह सब कियो पसारो तिनहीं ॥

दो०–पहिले रोहिणिसों कह्यो, तुरत करो जिवनार ॥
ग्वाल बाल सब बोलिके, बैठे नन्दकुमार ॥

सो०–वेगि खाउरी मात, भूख लगी मोको बहुत ॥
आज न खायो प्रात, सुनत बचन यशुमति हँसी ॥

रोहिणि चितै रही यशुमति तन * शिर धुनि २ पछिताति मनहिंमन॥
परसहु हरिहि विलम्बनै लावहु * भूखे हरि तिन वेगि जिमावहु ॥
बहु व्यंजन बहु भाँति रसोई * कहँ लगि वरणि कहै कवि कोई ॥
परसत जाति यशोमति मैया * जेंवत श्याम सखा बल भैया ॥
जो जो व्यंजन यशुमति राखे * तनक तनक मोहन सब चाखे ॥
श्याम कही अब मात अघानो * अब मोको शीतल जल आनों ॥
अँचवन करि अँचये दोउ भैया * अति सुख पायो लखि दोउ मैया॥
सहित सुगंधि पान कर लीन्हे * बाँटि सकल ग्वालनको दीन्हे ॥
भ्राता सहित आप हरि खाये * अधिक अधर अरुणं ह्वै आये ॥
निरखत बदन मुकुरके माहीं * व्रजवासी जन बलि बलि जाहीं ॥

१ मुख २ अती ३ देर ४ पदार्थ ५ तृप्त होना ६ होट ७ लाल ८ मुख ९ शीशा

भोजन करत भयो सुख जैसो * वरणि सकै नहिं शारद[1] तैसो ॥
जो सुख नंदभवनके माहीं * सो सुख तीनि लोकमें नाहीं ॥

दो०-सुख यशुमति अरु नंदको, को करि सकै बखान ॥
सकल सुखनकी खानि हरि, जहाँ रहे सुखमान ॥

सो०-कोटि कोटि ब्रह्मण्ड, इक इक रोम विराटतनु[2] ॥
सो अपने भुजदंड, लिय उछंग यशुमति हरषि ॥

यशुमति कहत श्याममों प्यारे * सुनहु बात मेरि नन्ददुलारे ॥
अपनेही आँगन तुम खेलो * मेरो कह्यो कबहुँ नहिं [3]पेलो ॥
कहत चोर व्रजवनिता तोहीं * सुनि सुनि लाज लगति है मोहीं ॥
ताते रोष होत मम मेरे * तब बाँधत मारत जिमि चेरे ॥
हलधर आज कहत है मोहीं * झूठहि नाम धरत सब तोहीं ॥
ग्वालिनि हँसन कहत इक ऐसे * चोरी नाम फिरत अब कैसे ॥
चोर कहत [4]ढैयती सब मोकों * झूठहि माय कहत सब तोको ॥
मैं खेलों बाहर जहँ जाई * चितै रहत सब मेरी धाँई ॥
अपने घर सब मोहि बुलावैं * सुख चूमति गहि गहि उरलावैं ॥
माखन मोहि निज करन खवावैं * हाथ जोरिकै बिबिधि मनावैं ॥
देखत जबहि लेत मोहिं टेरी * मैं नहिं जाउँ सौंह मोहिं तेरी ॥
यशुमति निरखि बदन मुसकानी * उनकी बात सबै मैं जानी ॥

अथ आँखमिचौनीलीला ॥

दो०-टेरि लेहु सब निज सखन, अरु भैया बलराम ॥
सुख दीजै मेरे [5]हगन, चलहु आपने धाम ॥

---

१ सरस्वती. २ भगवानका विराट स्वरूप ३ टालो. ४ स्त्रियां. ५ तरफ.

सो०–यह सुनि हर्ष बढाय, बोलि लिये हलधर सखा ॥
खेलहिं आँख मुँदाय, कहत सबनसों मुदित हरि ॥

हलधर कह्यो आँखको मूंदै * हरषि कह्यो हरिजननि यशोदै ॥
हरि अपनी तब आँख मुदाई * जहाँ तहाँ सब रहे लुकाई ॥
कान लागि जननी समुझाये * हैं घरमें बलराम छिपाये ॥
बलदाऊको आवन देहौं * श्रीदामाको चोर बनैहौं ॥
इत उत में सब बालक आई * यशुमति गात छुवन सब धाई ॥
श्याम छुवनके कारण धावत * अति अकुलात छुवन नहिंपावत ॥
धाये सुबल छुवन तब श्यामा * गह्यो जाय तिरछे श्रीदामा ॥
कहत नन्दकी सोह जनाये * जननी ढिंग भुजगहि लै आये ॥
हँसि हँसि कहत सखासों रामा * अबतो चोर भयो श्रीदामा ॥
हर्षित कहत यशोदा मैया * जीयो मेरो पूत कन्हैया ॥
जाकी माया जगत खिलावै * ब्रह्मा जाको अंत न पावै ॥
ताहि यशोदा खेल खिलावै * बाल्य जिमि वचनन फुसलावै ॥

दो०–जाके उर त्रैलोक थल, पंच तत्त्व चौखान ॥
सो बालकव्है खेलई, यशुदाके गृह आन ॥

सो०–दुर्लभ जप तप योग, ज्योतिरूप जग धाम हरि ॥
धन्य सो ब्रजके लोग, बालक करि मानत तिन्हें ॥

कहत भई यशुमति महतारी * भई रात अब घनहुँ मुरारी ॥
कछु वियारु अब कछु प्यारे * बहुरि खेलिये होत सवारे ॥
मोको तो कछु रुचि नहिं आवै * तू कहि भोजन कहा बतावै ॥
बेसन मिली मनवैकी पूरी * कोमल उज्ज्वल है अति रूरी ॥

१ चार खान अर्थात् स्वेदज उद्भिज अंडज और जरायुज २ मेहूकी

अबहीं तातीं, तुरत बनाई * रोहिनि तुम्हरे हेतु कन्हाई ॥
निबुआ आम करौंदा सँधानो * आमीं तुम अतिही रुचि मानो ॥
बलके संग बियारू कीजे * मेरे नयननको सुख दीजे ॥
तनक तनक धरि कंचन थारी * लै आई रोहिनि महतारी ॥
श्याम राम मिलि करत बियारी * अति अनंद दोउ जननि निहारी
खात खात दोऊ अलसाने * मुख जँभात जननी पहिचानें ॥
जल अँचवाय कमल मुख धावे * बाँह पकरि पलका पौढाये ॥
सोवत राम श्याम दोउ भैया * हँरवे पाँय पलोटति मैया ॥

दो०–सोये श्याम सुजान हरि, सुखसों बीती रात ॥
बहुरि कलेऊके लिये, जननि जगाये प्रात ॥

सो०–दियो कलेऊ मात, माखन प्यारे श्यामको ॥
मुदित निरखि दिन रात, यशुमति हरिके चरितको ॥

अथ वृन्दावनगमनलीला ॥

महर महरि यह मनहिं बिचारी * गोकुल होत उपद्रव भारी ॥
जबते जन्म भयो हरिकेरो * नितहिं होत उतपात घनेरो ॥
अकेस्मात गिरे तरु भारी * बच्यो बडनके पुण्य मुरारी ॥
ताते अब तजिये यह गाऊँ * बसिये चलि कहुँ उत्तम ठाऊँ ॥
नन्दराय तब गोप बुलाये * समाचार ये सबनि सुनाये ॥
सबहिनके मनमें यह आई * बसिये अनत कहूँ अब जाई ॥
नितहि उपाधि नई जिहि ठाहीं * बसिबो भलो तहाँको नाहीं ॥
नंद कही मैं मनहिं बिचारी * है इकठाउँ बहुत सुखकारी ॥
वृन्दावन गोवर्दन पासा * तहँ सबकों सब भाँति सुबासा ॥

1 टैटी. 2 दाऊजी 3 आचमन कराकर 4 धीरे. 5 एकाएकी. 6 वृन्द.

तहा गोपगण सब सुख पैहैं * बनमें गोधनवृन्द चरैहै ॥
यह विचार सबके मन भायो * चलिवेको शुभ दिवस धरायो ॥
वृन्दावन सब चले गुवाला * पाच बषके मदन गोपाला ॥
दो०–शकट सौज सब सानिकै, गोधन दिये हँकाय ॥
चले गोप गोपी हरषि, वृन्दावन समुदाय ॥
सो०–निरखि अनूपमै ठाम, शकट दिये सब छोरिकै ॥
सबके मन बस श्याम, बसे सकल वृन्दा विपिनै ॥
बसे सकल वृन्दावनमाहीं * अति आनद गोप मनमाहीं ॥
गाय बच्छ सबही सुख पायो * चरत निकट तृण हरित सुहायो ॥
हलधर धेनु चरावन जाहीं * मनमोहन लखिमनहि सिहाहीं ॥
प्रात चले सब गाय चरावन * जननीसों बोले मैंनभावन ॥
मैं हूँ गाय चरावन जैहौं * बडो भयो अब नाहि डरैहौं ॥
संग सखा अरु हलधर भैया * इनके संग चरैहौं गैया ॥
बालन सग यमुनतटमाहीं * खेलहिंगे सब बटकी छाहा ॥
अपनी रुचि मनके फल खैहौं * तेरा मों यमुना नहिं न्हैहौं ॥
ऐसी अबहिं कहौ जिनै बारे * देखहु अपनी भाति ललारे ॥
तनक पायँ चलिहौ किहि मानी * गैयन आवत ह्वैहै राती ॥
प्रात जात गैयन लै चारन * आवत साझ लखीं सब ग्वालन ॥
तुम्हरो कमल बँदन मुरझैहै * रेंगत धाम माहा दुखपैहै ॥
दो०–तेरी सो मोहिं धाम नहिं, लागत भूख न नेक ॥
कह्यो कान्ह मानत नहीं, करै आपनी टेक ॥

---

१ छकड़ा २ जिसके समान कोई न हो ३ वन ४ मनको अच्छा लगानेवाला ५ मन ६ छा? ७ कमलसमान मुख ८ डोलनेमें

सो०–चले चरावन गाय, ग्वाल बाल बलदेव घन ॥
टेरि टेर सुनाय, गोधन करि आगे लिये ॥

टेरी टेर सुनत [1]रविकनकी * गये दौरि हरि अति रचि मनकी॥
इत उत यशुमति जबहि निहारी * दृष्टि न परे श्याम बनवारी ॥
बनन न जान्यो जात कन्हाई * टेरति यशुमति पीछे धाई ॥
जात चले [2]गैयन संग धावत * बलदाऊ को टेरि बुलावत ॥
पीछे जननी आवत जानी * फेरि फेरि चितवत भय मानी ॥
हलधर आवत देखि कन्हाई * ठाढ़े किये सखा समुदाई ॥
पहुँची जननि भये सब ठाढ़े * रिस करि दोउ भुज पकरे गाढ़े ॥
बल कह जान देहु सँग मेरे * बनतें ऐहैं आज सबेरे ॥
कह्यो यशोमति [3]बलहि निहारी * देखन रहियो मैं बलिहारी ॥
माता सँग गये बनहि कन्हाई * यशुमति यहै कहत घर आई ॥
देखो हरि कैसो ढँग लीन्हों * अपनी टेक पर्‍यो सोइ कीन्हों ॥
आज जाय देखहु बनमाहीं * कहाँ परोस धर्‍यो निहि ठाहीं ॥

दो०–माखन रोटी और जल, शीतल [4]छाँक बनाय ॥
दई बेगही ग्वाल सँग, यशुमति बनहिं पठाय ॥

सो०–चिन्तामणि सुरधेनु, पंच सुधारस कल्पतरु ॥
अनुदिन जाके एक, खात छाक सो ग्वालसँग ॥

वृन्दावन खेलत नंदलाला * भयो हिये आनन्द विशाला ॥
जहँ जहँ ग्वाल गाय सग जाहीं * तहँ तह आप फिरत बनमाहीं ॥
बलदाऊसों कहत कन्हाई * नित ल्यावहु मोहिं संग लिवाई ॥
आज मरूँ करि आवन पायो * जननी तुह्मरे कहे पठायो ॥

१ मित्र. २ मृग. ३ दाऊजीको. ४ कलेऊ.

कालिह कौनिविधि करि वन ऐहा * यशुमति पै आवन नहिं पैहौं ॥
सोवत बोलि लीजियो मोको * सोहैं नन्द बबाकी तोको ॥
पुनि पुनि विनय करत सुखदाई * बलसों सखन समेत सुनाई ॥
सध्यासमय निकट जब आइ * घर कहँ चलौ कह्यो बैल भाइ ॥
गैयन घेरि करी यक ठौरी * चले सदनै सब गावत गौरी ॥
आवत बनते धेनु चराई * ग्वालन मध्य श्याम सुखदाई ॥
जिहिजिहि भाँति ग्वाल मुख भासैं * सुनि सुनि मनमोहन उर राखैं ॥
नाहैंसुर पुनि आपुनि गावैं * तारी देत हसत सुख पावैं ॥

दो०—मोर मुकुट वनमाल उर, पीताम्बर पहराय ॥
गोपदरॆज छवि वदनॆ पर, आवत गाय चराय ॥

सो०—छुटीं अल्क छविदेत, जर्लजवदन पर मधुप जनु ॥
आवत सखन समेत, नदसुँवन ब्रज प्राण धनु ॥

देखत नन्द यशोदा ठाढे * रोहिणि अरु ब्रज जन सुख बाढे॥
गायन सग श्याम जब आये * लै बलाय जननी उर लाये ॥
आन गयो हरि गाय चरावन * मैं बलि जाउँ तनकसे पाँवन ॥
मो कारण कछु बनते लाये * तुमको मिलि मैं अति सुख पाये॥
आचर सों सब अँग अँग झारे * वदन पोंछि मुख चूमि दुलारे ॥
खाउ कछुक जो भावै मोहन * देरी माखन रोटी सोहन ॥
दिये जिमाय तुरत दोउ भैया * अति आनन्द मगन मन मैया ॥
कहत जननिसों श्रीब्रजनाथा * प्रात नितहि जैहौं बलसाथा ॥
मैं अपनी अब गाय चरैहौं * तेरे कहे घरहि नहिं रैहौं ॥

---

१ सौगन्द २ बलदेवजी ३ घर ४ गौरीराग ५ सुर ६ गौवं खुरकी रज ७ मुख ८ कमल ९ भौंरा १० पुत्र

ग्वाल बाल गायनके माहीं * नेकहु डर लागत मोहि नाहीं ॥
आवन सोवों नन्द दुहाई * रहिहीं जागत कहत कन्हाई ॥
सब मिलि गाय चरावन जाहीं * मैं क्यों रहीं बैठि घर माहीं ॥

दो०–सोय रहौ अब श्याम तुम, जननि कहै चुचकारि ॥
प्रात जान कहिहौं तुम्हें, वनको मैं बलिहारि ॥

सो०–ज्यों त्यों राखे स्वाय, प्रात देन वन जान कहि ॥
जननी दावत पाँय, श्रमित जानि बन गमनके ॥

बहुते दुख हरि सोय गयोहै * ज्यों त्यों करि मन बोध लयोहै ॥
साँझहि तें लाग्यो इहि बातैं * जान कहत वन उठि पुनिप्रातैं ॥
यह तो संग लागि बलरामहि * गये लिवाय आज वन श्यामहि ॥
अब तो सोय रह्यो करि ऐसे * प्रात निवार करों धौं कैसे ॥
कहत नंद बलके सँगजाई * इत उत आवन दे फिरि धाई ॥
भोरि भयो यशुमति कह प्यारे * जागहु मोहन नन्ददुलारे ॥
बीती निशि[1] रवि किरण प्रकाशी * शशि[2] मलीन उडुगण[3] द्युतिनाशी ॥
सुनहु शब्द बोलत खगमाला * खोलहु अम्बुजनयन[4] विशाला ॥
सुनत श्याम जननीकी बानी * जानि उठे सन्तन सुखदानी ॥
लाई तुरत कलेऊ मैया * माखन रोटी खान कन्हैया ॥
टेरत ग्वाल सखा सब द्वारे * आये तबके होत सकारे ॥
खेलहु बन भीतरही प्यारे * दूर कहूँ मतिजाहु ललारे ॥

दो०–टेरि उठे बलराम तब, आवहु धाय कन्हाय ॥
जात ग्वाल बनको सबै, चलहु चरावन गाय ॥

सो०–श्याम जोरि दोउ हाथ, जननीसों हाहाकरत ॥
जैहौं ग्वालन साथ, गोचारन वृन्दा विपिन[5] ॥

१ घकेडुप. २ रात. ३ चंद्रमा. ४ तारागण. ५ कमल. ६ बन.

तुम्हरो संग न छाँडत राई * बनहिं डरात बहुत मैं माई ॥
जात चले सब हर्ष बढाये * खेलत श्याम संग सुख पाये ॥
कोउ गावत कोउ वेणु बजावै * कोउ नाचत कोउ कूदत आवै ॥
देखि देखि हरि अति हर्षांहीं * हँसत सखनसों दै गलबाहीं ॥
भली करी तुम मोको लाये * आज यशोमति हर्ष बढाये ॥
इहि विधि गोधन लै सब ग्वाला * यमुनातट पहुँचे नँदलाला ॥

दो०–दई धेनु चगेराय सब, चरन आपने रंग ॥
गाय चरावत नन्दसुत, मिलि ग्वालनके संग ॥

सो०–उर मुक्तनकी माल, शीश मुकुट कटि पीत पट ॥
हाथ लकुटिया लाल, डोलत ग्वालन संग प्रभु ॥

अथ वत्सासुरवधलीला ॥

खेलत श्याम सखनके माहीं * यमुनाके तट तरुँकी छाहीं ॥
वत्सासुर तिहि अवसर आयो * पठयो कंस काल नियरायो ॥
वत्सरूप धरि आय समान्यो * कृष्ण ताहि आवतही जान्यो ॥
बलै तन चितै कह्यौ मुसकाई * तुम याको जानत हौ भाई ॥
यह तो असुर वत्स ह्वै आयो * हमको मारन कंस पठायो ॥
हलधरहूँ देख्यौ धरि ध्याना * कहत साँच तुम श्याम सुजाना ॥
ग्वालनहूँसों कहत कन्हाई * बछरा घेरि करो इक ठाई ॥
लाये घेरि वत्स सब ग्वाला * वह नहिं घिरहि चपल बिकराला ॥
बारबार हरि ओर निहारै * दाँव घात मनमाहिं विचारै ॥
तब हरि कह्यो याहि मैं ल्यावत * तुमको याकौं छुवन न पावत ॥
हाथ लकुटिया लै हरि धाये * वत्सासुरके सन्मुख आये ॥

१ छोडदीनी २ मोतियोंकी. ३ लकडी. ४ वृक्षकी. ५ बलरामजी.

टेरत मोहि दाऊरी मैया * जैहौं बनहिं चरावन गैया ॥
बन फल तोरि देत मोहिंआई * आपुन घेरत गैयन धाई ॥
जैहौं अरु ग्वालन सँग नाहीं * मोहिं खिझावैत वे बनमाहीं ॥
मैं अपने दाऊ सँग रैहौं * देखत वृंदावन सुख पैहौं ॥
आगे दै लावत मगमाहीं * तू क्यों जान देत मोहिं नाहीं ॥
लीन्हो यशुमति बलहिं बुलाई * सुनहु लाल हरिके गुण भाई ॥
कहत यशोमतिसों बल भैया * जान देहु मोसंग कन्हैया ॥
अपने ढिग ते नेकु न टारौं * जियपरतीत नेक नहिं धारौं ॥
तू काहे डरपति मन माहीं * जान देत हरिको क्यों नाहीं ॥
हँसी महरि सुनि बलकी बानी * जाहु लिवाय कहत नँदरानी ॥
मैं बलिहारी तुम्हरे मुखकी * तुमहूँ कहत श्यामके रुखकी ॥
अति आनद भयो हरि धाये * दोऊ संग खरकमें आये ॥

दो०–धाय धाय भेंटत सखन, उर अति हर्ष बढ़ाय ॥
पठयो मैया मोहिं बन, चलहिं चरावन गाय ॥

सो०–कहत सखा सुख पाय, चलहु श्याम देखौं बनहिं ॥
बनमाला पहिराय, करत चित्र बन धातु तन ॥

चले बनहिं सब गाय चरावन * सखा सग सोहत मनभावन ॥
ग्वाल बाल सब कछुक सयान्हे * नदसुवैन तिनमें कछु नान्हे ॥
गाय गोप गोसुत बन जाई * तिनके मध्य श्याम सुखदाई ॥
हरिसों भगा कहत समझाई * छोडि कहू जिन जाहु कन्हाई ॥
वृंदावन अति सघन विशाला * जैहो भूलि कहूँ नन्दलाला ॥
सुनत श्यामघन तिनकी बाता * मनमन हँसन कहत जगत्राता ॥

१ खिझाते. २ गैलमांहि ३ बेटा ४ जगतके रक्षक

तुम्हरी सग न छाँडत राई * वनहिं डरात वहुत मैं भाई ॥
नात चले सव हर्ष बढाये * खेलत श्याम सग सुख पाये ॥
कोउ गावत कोउ वेणु बनावे * कोउ नाचत कोउ कूदत आवे ॥
देखि देखि हरि अति हर्षाहीं * हसत सखनसों दै गलवाहीं ॥
भली करी तुम मोको लाये * आन यशोमति हर्ष बढाये ॥
इहि विधि गोधन लै सब ग्वाला * यमुनातट पहुचे नँदलाला ॥

दो०–दई धेनु बगेराय सव, चरन आपने रग ॥
गाय चरावत नन्दसुत, मिलि ग्वालनके सग ॥

सो०–उर मुक्तनकी माल, शीश मुकुट कटि पीत पट ॥
हाथ लकुटियाँ लाल, डोलत ग्वालन सग प्रभु ॥

अथ वत्सासुरवधलीला ॥

खेलत श्याम सखनके माहीं * यमुनाके तट तरुकी छाहा ॥
वत्सासुर तिहिं अवसर आयो * पठयो कस बाल नियरायो ॥
वत्सरूप धरि आय समान्यो * कृष्ण ताहि आवतही जान्यो ॥
बले तन चितै कह्यौ मुसकाई * तुम याको जानत हौ भाई ॥
यह तो असुर वत्स है आयो * हमको मारन कस पठायो ॥
हलधरहूँ देख्यौ धरि ध्याना * कहत साच तुम श्याम सुजाना ॥
ग्वालनहूसों यह्त वहाई * बछरा घेरि करो इक ठाई ॥
लाये घेरि वत्स सब ग्वाला * वह नहि घिरहि चपल विकराला ॥
बारवार हरि ओर निहारै * लाव घात मनमाहिं विचारै ॥
तब हरि कह्यो याहि मैं ल्यावत * तुमको याका छुवन न पावत ॥
हाथ लकुटिया लै हरि धाये * वत्सासुरके सनमुख आये ॥

१ छोड़दीनी २ मोतियोंकी ३ लकड़ी ४ वृक्षकी ५ बलरामजी

हरिको जबहिं जुदो करि पायो * असुर कोपकरि मारन आयो ॥

छं०-धायो असुर करि क्रोध मारन श्यामको सन्मुख गयो ॥
है गयो निसपाप सबहीं जोरा सुरपुरके भयो ॥
धायके हरि चपरि ताको पकरि पॉय फिराइयो ॥
पटक्यो धरणि तनु असुर प्रगट्यो फेरि श्वास न आइयो ॥

दो०-वत्सासुर सुरपुर[1] गयो, अधम असुर तनु त्याग ॥
सुर हर्षत वर्षत सुमन, गगन[2] सहित अनुराग ॥

सो०-धाय परे सब ग्वाल, चकित कृष्ण वल देखिके ॥
धन्य धन्य नन्दलाल, कहत परम आनँदभरे ॥

असुर देखि सब अचरज पायो * कहत हमैं हरि आज बचायो ॥
बछरा करि हम जान्यो याही * यह तो असुर भयानक[4] आही ॥
आज सबनि धरिकै यह खातो * और कौन पै जात निपातो[5] ॥
हर्षि हर्षि हरिको उर लायो * असुर निकन्दन नाम सुनायो ॥
कहत ग्वाल धनि धन्य कन्हाई * धन्य धन्य व्रज प्रगटे आई ॥
यह ऐसो तुम अति सुकुमारा * किहिविधि भुजन फिराय पछारा ॥
सबहीके देखत पलमाहीं * मार्यो असुर डरे तुम नाही ॥
अबलौं हम न तुमहि पहिचान्यों * हो तुम वडे सबनतें जान्यों ॥
कोउ वनमाल आनि पहिरावै * कोउ वनधातु रँगरि तनुलावैं ॥
कोउ कुण्डल शिर मुकुट सँवारैं * अलिकावलिकोउ तिलक सुधारैं ॥
गात भुजनपर कोउ वठिहारैं[6] * तनु देखत कोउ वदन निहारैं ॥
वनफल तोरि धरत कोउ आगे * कहत खाउ मीठे अति लागे ॥

१ स्वर्ग. २ आकाश ३ भगवान्. ४ डरानेवाला. ५ नाशकरनेवाले. ६ विस्तार

दो०–इहि विधि हरिको पूजिकै, ग्वाल बाल हरषाय ॥
साँझ निकट आवत चले, घरको धेनु चराय ॥

सो०–परम मुदित सब ग्वाल, असुर मारि आवत घरहिं ॥
गावैं शब्द रसाल, ब्रजवासी प्रभुके गुणन ॥

सखन मध्य सोहत नँदनन्दन * जलद श्यामतनु चित्रित चंदन ॥
मोरमुकुट पट पीत सुहावन * इंद्र धनुष दामिनिहि लजावन ॥
मुक्तमाल वनमाल विराजै * बक शुक अवलि मनहुँ छबिछाजै॥
हाथ लकुट कल कुण्डल कानन * कोटिकाम छबि शोभित आनन॥
कुटिल अलक भ्रुव नैन विशाला * गोपदरज कन दुति छबिजाला ॥
बल मोहन बनतें बनिआवें * निरखि निरखि ब्रजजन सुखपावें
सखनसहित हरि धामहिं आये * हर्षि यशोमति कण्ठ लगाये ॥
कहत ग्वाल सुनु यशुमति मैया * है तेरो रणधीर कन्हैया ॥
वत्स रूप एक दानव बनमें * आय समान्यो बछरागनमें ॥
हम ताको कछु जानि न पायो * सो वह हरिको मारन धायो ॥
क्षणहीं मांहिं ताहि हरि मान्यो * हम देखत महिपटकि पछान्यो ॥
यह कोउ बड़ो पूत तै जायो * भाग्य हमारे ब्रजमें आयो ॥

दो०–सुनि ग्वालनके वचन तें, वत्सासुरको घात ॥
यशुमति सबके पाँय परि, बार बार पछितात ॥

सो०–भयो महरि उर त्रास[1], बचे आज हरि असुरतें ॥
मैं न बिगान्यो कास[2], भयो सहायक आनि हरि[3] ॥

---

१ डवरा. २ दैव. ३ भय.

यशुदा शोच करत तू जाये * यह तो रुयाल कान्हके भाये ॥
पर्वततुल्य विकट तनु जाही * कियो प्राण विन क्षणमें ताही ॥
तुम्हरी रक्षाको यह नाहीं * हम सबको रक्षक यह आहीं ॥
याके चरणकमल चित ल्यै * बारबार याकी बलि जैये ॥
ग्वालन यों हरिके गुण गाने * ब्रजजन सब आश्चर्य भुलाने ॥
लीलासागर हरि सुखदानी * मोहे सब नरनारि सुबानी ॥
हँसि जननीसों कहत कन्हाई * देख्यो मैं वृन्दावन जाई ॥
अति रमणीक भूमि द्रुम नीके * कुज सघन निरखत सुख जीके ॥
अति कोमल तृण हरित सुहाये * यमुनाके तट बच्छ चराये ॥
वनफल मधुर मिष्ट अति नीके * भूख मिटी खाये तिनहींके ॥
सखन संग खेलत वटछाहीं * वनमें मोहि लगत डर नाहीं ॥
रोहिणि सहित यशोदा माता * मुदित सुनत हरिकी मृदु बाता ॥

दो०–मोहिं लियो मन जननिको, मधुरे वचन सुनाय ॥
वत्सासुरको शोच उर, क्षणमें दियो मिटाय ॥

सो०–लगे दुहन सब गाय, जहँ तहँ हर्षित गोपगण ॥
गये तहाँ हरि धाय, गाय दुहन चाहत सिखन ॥

अथ धेनुदुहनलीला ॥

धेनु दुहत हरि देखत ग्वालन * कहत मोहिं सिखवो गोपालन ॥
मैं दुहिहौं मोहिं देहु सिखाई * बैठि गये तिन संग कन्हाई ॥
कैसे गैया थनहि लगावत * कैसे नोयें पगन अटकावत ॥
दुहरुन गहत दोहँनी कैसे * मोहि बताय देउ तुम तैसे ॥
कैसे धार दूधकी होई * देहु दिखाय मोहिं सब कोई ॥

१ वृक्ष २ मीठे ३माता ४गायके पैर बांधनेकी रस्सी ५दूध दोहनेका बासन

कहत ग्वाल तुम सुनो कन्हाई * भई अँबार आज अति भाई ॥
तुमको सिखवैं दुहन सवारे * अब कछु लगिहै चोट तुम्हारे ॥
श्याम कह्यो सबही समुझाई * भोर दुहौं निजनन्द दुहाई ॥
मेरी माँ मोहिं लीनो टेरी * मैं दुहिहौं निज गाय सवेरी ॥
दुष्टदलन सन्तन सुखदाई * ठाढ़े गैयन माँझ कन्हाई ॥
आवहु कान्ह साँझरी बिरियाँ * कहत जननि यह बड़ी कुबिरियाँ ॥
लरिकाई कछु छाँड़त नाहीं * सोवहु लाल आय घरमाहीं ॥

दो०-आये हरि यह सुनतही, जननी लिये अँकवार ॥
लै पौढ़ाये सेजपर, अजिरैं चांदनी चार ॥

सो०-कहत कहत कछु बात, सोय गये वश नींदके ॥
कहत यशोमति मात, सोय गयो हरि अजिरहीं ॥

दोउ जननी हँसिके हरिको * सेज सहित लीन्हें भीतरको ॥
बहुत आज हरि सोय गयो है * अतिहि नींदके वशहि भयो है ॥
नेक न बैठत थिर घरमाहीं * खेलनमें मन रहित सदाहीं ॥
रोहिणी कहत देउ किन सोवन * खेलत हारि गयो मनमोहन ॥
माता हरखै पवन डुरावति * निरखि वदन सुन्दर सुख पावति ॥
प्रात जगावन नन्दकी रानी * उठहु श्याम सुन्दर सुखदानी ॥
नाहिनरहो सोइयत लाला * सुनु सुत प्रात समय शुचि काला ॥
उग्योतरणि कुमुदिनि सकुचानी * घरघर ग्वालिनि मथत मथानी ॥
बारबार टेरत सब ग्वाला * माखनकह्यो तुम दुहन गोपाला ॥
होत अबार गाय सब ठाढ़ी * भरि भरि क्षीरै भार थन बाढ़ी ॥

१ देर २ गोद ३ आगन ४ धीरेसे. ५ पवित्र ६ सूर्य ७ दहीको हाड़ी ८ दूध ९ बोझ

वत्स पुकारत आरत ताई * दुहत नाहिं तुम सोंइ दिखाई ॥
तुम्हरे लिये ग्वाल सब ठाढे * देखत बाट प्रेम उर बाढे ॥

दो०–यह सुनतहि तुरतहि उठे, शशि मुखते पट टार ॥
धेनु दुहन सीखन चले, मोहन नन्दकुमार ॥

सो०–लाउ रोहिणी मात, वेगि नतकसी दोहनी ॥
कह्यो सिखावन तात, आज मोहिं गैया दुहन ॥

रोहिणि तुरत दोहनी ल्याइ * घर घरते देखन सब आइ ॥
अटपट आसन बैठि कन्हाइ[१] * गोथन कर लीन्हों सुखदाई ॥
धार अनतहा जात निहारी * हँसे नन्द यशुमति महतारी ॥
चितै चोर चित हरि हसे दीन्हो * मनवासी जन बलि बलि कीन्हो ॥
किये यशोमति आनँद भारा * दियो दान विप्रनहि हँकारी ॥
गावत मंगल ब्रजकी नारी * दुही गाय सन्तान हितकारी ॥
अति आनदमगन नँदराई * बैठे प्रमुदित गोप अथाई ॥
लिये गोप सुन्दर घनश्यामहिं * ब्रजके जीवन जन सुखधामहिं ॥
आयो तहाँ एक बनजारो * मूँगा मोती बेचन हारो ॥
तिहि लखि अटके नदकुमारा * देहि देहि धहि बारम्बारा ॥
दीरघ मोल कह्यो व्यापारी * रहे ठगे सब गोप निहारी ॥
करपर राखि रहे हरि मोती * देत नहीं लखि सुन्दर जोती ॥

अथ मोतीबोनेकी लीला ॥

दो०–मुक्ता ले हरि घर गये, बये अजिरें बलवीर ॥
आलबाल धल रोपिको, पुनि पुनि सींचत नीरँ ॥

---

१ हाथमें २ ब्राह्मणोंको ३ देखकर ४ बड़ा ५ आंगन ६ थामला ७ जल

सो०-हँसत यशोमति मात, कहत करत मोहन कहा ॥
यह नहिं जानत बात, ये करता सब जगतके ॥

भये तुरत गारी दल तामें * यशुमति अजिर मुक्त फल जामें ॥
फूलत फलत न लागी वारा * ब्रह्मादिक निन करत विचारा ॥
सुर नर मुनि कोउ मर्म न जानें * देखि दगि अति अचरज मानें ॥
नन्दभवन हरि मुक्त नमाये * ब्रज वनितन गुहि हार बनाये ॥
ब्रजवासी यह प्रभुकी लीला * मत्र गुण समरथ सब गुणशीला ॥
क्षणमहँ जासु रचायसु माया * प्रकट करत ब्रह्माड निकाया ॥
ब्रह्मादिक नहिं पार न पावैं * नदअजिर सो ख्याल बनावैं ॥
जाकी महिमा लखै न कोइ * निगुण सगुण धर वैपु सोइ ॥
लोक रचै जानी प्रतिपारै * सो ग्वालन सग लीला धारै ॥
शिव विरंचि मुनि ध्यान न आवैं * ताहि यशोमति गोद खिलावै ॥
अगम अगोचर लीला धारी * सो वृंदावन कुंजविहारी ॥
वडे भाग्य सब ब्रजके वामा * जिनके सँग विहरत अविनासी ॥

दो०-धनि धनि ब्रजके नारि नर, धनि यशुदा धनि नद ॥
विहरत जिनके सँदनमे, ब्रह्म सचिदानद ॥

सो०-कहि कहि देवसिहाय, धन्य धन्य ब्रज बाग बन ॥
जहा चरावत गाय, सकल सुरन शिर मुकुटमणि ॥

अथ बकासुरवधलीला ॥

प्रात चले उठि गाय चरावन * हलधर सुन्दर श्याम सुहावन ॥
देखत छवि ब्रजसुदरि ठाढी * करत परस्पर आनँद बाढी ॥
कहु सखी ब्रजते बन जाहा * वल मोहन ग्वालनक माहीं ॥

१ गुहे २ शून ३ शरीर ४ ब्रह्मा ५ घरमें

रोहिणिसुत छबि गौर सुहाई * यशुमति सुवन श्याम सुखदाई ॥
ओढै नील पीतपट सोहैं * सो छबि निरखि वदन मन मोहैं ॥
युगल जैलद घन दामिनि जानौ * जो रतिनाथ परस्पर मानौं ॥
शीश मुकुट कल कुंडल कानन * झलकैं निम्बकपोल्न आनन ॥
सखन मध्य सोहत नँदलाला * मद हँसनि दृग कमल विशाला ॥
कटि किंकिणि कर लकुट सुहाये * जात चले वन मनहिं चुराये ॥
रहीं थकित लखि सब ब्रजनारी* गये वनहिं विहरत वनवारी ॥
वन वन फिरत चरावत गैया * हलधर श्याम सखा इकठैया ॥
करत विहार विविध वनमाहीं * बालकेलि रस वरणि न जाहीं ॥

दो०–कबहूं गावत सखन सँग, कबहुँ बजावत वेनु ॥
धौरी धूमरि नाम ले, कबहुँ बुलावत धेनु ॥
सो०–कबहुँ नचावत मोर, सुन्दर श्यामलजलदजन ॥
गरज मुरलि घन घोर, बरषत परमानदतन ॥

खेलत विविध खेल मनभावन * श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तृषित जानि गैयन नँदलाला * यमुना चलहु जल देन गुपाला ॥
लेहु बुलाय सुरभिगण टेरी * सुनत ग्वाल सब लाये घेरी ॥
गोधनवृंद हाकि सव लीन्हीं * ग्वालन गमन यमुनतट कीन्हीं ॥
तहाँ बकासुर छलकरि आयो * माया रचित स्वरूप बनायो ॥
एक चोंच भूँतल महँ लाई * एक रही आकाश समाई ॥
मगमें बैठ्यो वदन पसारी * ग्वालन देखि भयो भय भारी ॥
बालक जातहते जे आगे * ताहि देखि सो पाछे भागे ॥

१ मेघ २ बिजली ३ कामदेव ४ सुंदर ५ कमर. ६ प्यासा
७ पृथ्वीतल ८ मुख

कहत भये सब हरिसों आइ * आगे एक बलाय कन्हाइ ॥
आवत नितहि ग्वाल इहिठाहीं * ऐसो कबहु लेरयो हम नाहीं ॥
तबहिं कृष्ण ताको पहिचान्यों * यहै बकासुर मैं यह जान्यों ॥
पलमें आज याहि मैं मारों * असुर चोंच धरि बदन बिदारों ॥

दो०–निडर श्याम आगे भये, चले बकासुर पास ॥
कहत सखा सब श्यामसों, नहि जीवनकी आस ॥

सो०–अबहूँ नहीं डरात, बचे कितै उतपातते ॥
चले कहा हरि जात, हम बरजत मानत नहीं ॥

तब हरि कह्यो चलहु तेहि पासा * सब मिलि मारि करहिं बकनाशा ॥
तब हरि सग चले सब ग्वाला * देख्यो जाय बकहि बिकराला ॥
ताके निकट गये सब जबहीं * लियो लील हरिको बक तबहीं ॥
जान्यो असुर ग्रास मैं कीन्हों * तबही बदन मूदि वै लीन्हों ॥
ग्वाल पुकारत आरत भागे * बलसों आय कहन सब लागे ॥
हम बरजत हठि गये कन्हाइ * लीन्हे लीलि असुर बकधाइ ॥
हरिचरित्र कछु जानि न जाहीं * उपजी आगि असुर तनुमाहीं ॥
लाग्यो जरन भयो अति व्याकुल * हरिको उगिलदियो अतिआकुल ॥
बहुरों पकरनको मुख बायो * चोंच पकरि हरि चीरि बहायो ॥
मरत चिकार असुर अति भारी * व्याकुल भये ग्वाल भय भारी ॥
ग्वालन विकल देखि बलरामा * कहत असुर मार्‍यो घनश्यामा ॥
टेरि उठे उत कुवर कन्हाइ * आवहु सखा वृन्द सब धाइ ॥

दो०–बक विदारि हरि सखनको, टेरत आवहु धाय ॥
चोंच फारि मारेउँ असुर, तुमहू करो सहाय ॥

---

१ देखा २ समूह ३ नाश करके

सो०-गये सखा सब धाय सुनत श्यामके वचन वर ॥
निरखि नयन सुख पाय, पुनि पुनि भेंटत पुलकतनु ॥

कहत परस्पर सखा स्याने * ये कोउ ब्रज प्रगटे हम जाने ॥
इह नाहिं कोउ घात करैया * ये हैं असुरनके दलवैया ॥
जबते इहै यशोमति जाये * तबते असुर कितेकउ आये ॥
तृणा पूतना शकटा मारे * तब ये रहे बहुत हीं बारे ॥
हम देखत वत्सासुर मान्यो * कितक बात यह बका बिदान्यो ॥
इनके गुण कछु जान न जाहीं * हम अपने जिय डरे वृथाहीं ॥
धनि यशुमति जिन इनको जाये * धनि हम इनके सखा कहाये ॥
बकहि मारि सुंदर घनश्यामा * यमुनातट आये सुखधामा ॥
सैरभीगण सब नीरे पियाये * सखन समेत आप प्रभु आये ॥
घसि वन धातु चित्र तन किन्हीं * मोरमुकुट माथे धरि लीन्हीं ॥
वनमाला रचि सखन बनाई * प्रेम सहित हरिको पहिराई ॥
वनफल मधुर गोप लै आये * सखन सहित हरि भोग लगाये ॥

दो०-चले मोहन घरको चले, जानि साँझकी बेर ॥
लीनी गैयाँ घेरि सब, मुरलीकी धुनि टेर ॥

सो०-चले बजावत बेन, ग्वालवृन्दके मध्य हरि ॥
अँग अँग छबिको ऐन, ब्रजजन मोहन साँवरो ॥

सुनि मुरलीकी टेर रसाला * देखनको धाई ब्रजबाला ॥
कहत परस्पर अति सुख पावत * देखु सखी बनते हरि आवत ॥
नाना रंग सुमनकी माला * श्यामहिये छबि देत विशाला ॥
मोरपक्ष शिर मुकुट विराजै * मधुर मधुर मुख मुरली बाजै ॥

१ गायोंका समूह २ जल ३ समूह ४ रस भरी ५ पृथ्वी

भ्रुकुटी निकट निरख सुखदाई * तिलक रेख छबि बरणि न जाई॥
कुण्डल लोल अलक घुघरारा * निरखु सखी लागत अति प्यारी
नासानिकट अधर अरुणाई * ननु शुक बिम्बहिं चोंच चलाई॥
मन्द हँसनि धन दामिनि जैसे * दुरि दुरि प्रगट होतहैं तैसे ॥
तनु घनश्याम कमलदल नैना * बोलत मधुर मनोहर बैना ॥
मुख अरविंद मन्द मुर गावत * नटवर रूप सखन मन भावत ॥
सब अंग चन्दन खौरि बनाये * गुंजामाल मन लेत चुराये ॥
या मोहन छवि पर बलि जैये * नन्दादन दरसत सुख पैये ॥

दो०–ग्वालबाल गोधन लिये, हरि हलधर दोउ भाय ॥
साँझ समय बनते चले, आये धेनु चराय ॥
सो०–राँभति धाई गाय, वत्स सुरति कर पय स्रवत ॥
हर्षि यशोदा माय, कहति श्याम आवत घरहिं ॥

इतनी कहत श्याम घर आये * जननी दौरि हर्षि उर लाये ।
अजलरिका सब तुरतहि धाये * महरि महर पद शीश नवाये ॥
ऐसो पूत धन्य तुम जायो * इनको गुण कछु जात न गायो॥
आज गये बन गायचरावन * चले यमुनतट जलहि पियावन ॥
तहाँ असुर इक खगतनुधारा * रह्यो यमुनतट बदन पसारी ॥
एक चोंच महिसों लपटाई * एक रह्यो आकाश लगाई ॥
हम बरनत पहिले हरि धायो * ताके मुखमें जाय समायो ॥
हम सब डरपि भये बल धामा * अति व्याकुल तनु भयो निराशा
कैसे धौं हरि बाहर आयो * चोंच फारि तेहि मारि गिरायो॥
सुनत नन्द यशुमति ब्रजनारी * चकित चित्तरहे हरिहि निहारी॥

१ टेढी २ होठ ३ बिजली ४ घुंघरू ५ कमल ६ दूध

यशुदा कहति कहा कोउ जाने * नित प्रति होत आनकी आने ॥
भयो आज कोउ सुकृत सहाई * विधिकी गति कछु जानि न जाई

दो०–जन्म भयो है श्यामको, तबतें यहै उपाधि ॥
कहा सन्यो हमरे यतन, विधिगति अगम अगाधि ॥

सो०–किन धौं करी सहाय, को जानै भावी प्रबल ॥
को मेरे पछिताय, करी अयानी बूझबिन ॥

लै बलायछतियाँ हरि लाये * प्रेम सलिलै लोचन भरि आये ॥
मैं बलिजाउँ कहत कछु खाहू * तुम कित गाय चरावन जाहू ॥
नन्द महरसों पिता तुम्हारे * मोसी मात जाय बलिहारे ॥
खेलत खात रहो अपने घर * दधि माखन पकवान विविधवर
निरखि वदन सुनि वचन तुम्हारे * लोचन श्रवणै सिरातै हमारे ॥
दुष्टदलन भक्तन सुखदानी * बोले मधुर मातुसों बानी ॥
मया मैं न चरैहौं गैया * अब बन मेरी जात बलैया ॥
मोसों सबै ग्वाल बन जाई * गाय घिरावत है बरिआई ॥
दौरत मेरे पाँय पिराहीं * जब मैं बैठि रहों तरुछाँहीं ॥
जो न पत्याय बूझ बल भाई * देहिं आपनी सौंह दिवाई ॥
यह सुनतहि यशुमति रिसियानी * गारि देत ग्वालन दुखमानी ॥
मैं पठवत लरिकहि बन जाई * आवहि तनिक मनहि बहलाई ॥

दो०–जानहिं कहा चरायकै, अबहीं मोहन गाय ॥
अति बारो मेरो सुँवन, मारत ताहि रिँगाय ॥

सो०–हरि जनके सुखदाय, को जानै हरिके चरित ॥
मधुरे वचन सुनाय, मोहि लियो मन मातको ॥

---

१ पानी. २ कान. ३ ठंडे होनेहैं. ४ पुत्र. ५ डुलाती है.

अथ चकईभवँराखेलनलीला ॥

कछुक रात्रि हरि निशिको सोये * प्रात जगाय जननि मुखधोये ॥
कियो कलेऊ कछु सुखदाई * जननी सो बोले हर्षाई ॥
दे मैया भवँरा चक डोरी * खेलत रहिहौं अजकी खोरी ॥
हर्षि जननि आरे पर भाखे * तुमहित नये मोल लै राखे ॥
लै आये हरि तुरत तिवारी * भये मगन अति रङ्ग निहारी ॥
वार वार हर्षित मुख भारौं * मैया विन अरुझे लै रारौं ॥
बिहँसि चले फेरत चक डोरी * खेलन सखन सग व्रज खोरी ॥
जैसे आप सखा सब तैसे * सुन्दर कोटि मनोभवँ जैसे ॥
निरखि २ छवि गोप किशोरी * वार वार डारत तृण तोरी ॥
सवहिनको मनमोहन भावैं * सव व्रजतिय हरिसों मन लावैं ॥
यह वासना करैं व्रजवाला * होहिं हमारे पति नँदलाला ॥
हरि अन्तर्यामी सव जानै * सवके मनकी रुचि पहिचानै ॥

दो०–चित दै जो हरिको भजै, कोऊ कौनहु भाव ॥
ताको तैसेई सदा, प्रकटत त्रिभुवन राव ॥

सो०–भक्तनके सुखदान, भक्तवछल भगवान हरि ॥
नारि पुरुष नहिं मान, प्रेम भावके वश सदा ॥

गोपिनके यह ध्यान सदाई * नेक न अन्तर होहिं कन्हाई ॥
हरि उनके मनकी रुचि जानी * करहिं बात उनके मनमानी ॥
मारग चरत तिन्है हठि रोकै * खेलत साँझ जहाँ तहँ टोकै ॥
चकई भँवरा डोरि फिरावैं * तिनके भूषणसों अरुझावै ॥
वाहूसों हरि बैदन सकोरैं * वाहूसों दृग बैदन मरोरैं ॥

१ रातको २ कामदेव ३ मुख ४ मुख

कान्हसों आँखिया मग्वावै * आप हसे अरु उन्हें हसावै ॥
युवतिनके मन बसे कन्हाई * देखे बिन इक पल न सुहाई ॥
हरिको खेलत माझ सिखावैं * सब मैरी दे गारी गावैं ॥
गेंद उरोजन माहिं दुरावैं * इहि विधि हरिसों अंग छुआवैं ॥
कंचुकि फारि आपुही लेहीं * यशुमति जाय उरहनो देहीं ॥
अंतर भुज गहि हरिहि दुरावैं * कहैं चलो नँदरानि बुलावैं ॥
यशुमतिपै तुमको लै जैहैं * कुंटिल भौंह किय हम न डरैहैं ॥

दो०–यों व्रजबनितन नेहवश, आनँद छबि घनरास ॥
रसिक पुरंदर साँवरो, व्रजमें करत विलास ॥

सो०–अब बरणौं सुखखानि, हरि वृषभानु कुमारिको ॥
प्राण एकही जानि, प्रथम मिलन दोउ देहको ॥

अथ राधाजूके प्रथममिलनकी लीला ॥

खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी * मेघश्याम तनु पीत पिछौरी ॥
श्रवणन कुण्डलकी छबि छाजै * मोर पखनको मुकुट विराजै ॥
दशन दमक दामिनि द्युति थोरी * हाथ लिये फेरै चकडोरा ॥
गये यमुनके तट मनमोहन * नाहिं तहां सखा कोउ गोहन ॥
औचक दृष्टि परी तहँ राधा * प्रेमराशि गुण रूप अगाधा ॥
नयन विशाल भाल दिय रोरी * नील वसन तनुकी छबि गोरी ॥
वेनी पीठ भरत झक झोरी * अति छबि पुंज दिननिंदी थोरी ॥
संग लरिकिनी आवत देखी * चितै रहे मुख रोक निमेखी ॥
राशि रहे घनश्याम कन्हाई * अनुपम छबि लखि रहे लुभाई ॥
नयन बयन मिलि परा ठगोरी * बूझत श्याम कौन तैं गोरी ॥

१ छाती २ आगे ३ लट्टो ४ दांत ५ बिजली ६ मग

रहत वहाँ यारी है वेदी * अरला नहा वहू बनमेगी ॥
काहेको हम मनतन आवैं * खेलत रहत आपने गावैं ॥
दो०–सुनत रहत श्रवणन सदा, नँदढोटा ब्रजमाहिं ॥
घर घरते नित चोरिकै, माखन दधि लै खाहिं ॥
सो०–बिहँसि कह्यो घनश्याम, तुम्हरो कहा चुराय हैं ॥
आवहु किन मम धाम, नितहि खेलिये संग मिलि ॥
रसिकशिरोमणि नागर दोऊ * प्रीति पुरातन¹ जान न कोऊ ॥
ब्रजवासी प्रभु कुंजविहारी * बातन भुरै रु² हरिप्यारी ॥
प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो * गुप्त प्रेम शिशुता प्रकटान्यो ॥
कहत श्याम मन कत सकुचावहु * खेलन कबहुँ हमारे आवहु ॥
दूर नहीं कछु सँदन हमारो * श्रवणन सुनियत बोल पुकारो ॥
लीनो मोहिं टेरि नँदपोरा * कांह नाम मेरो सुनु गोरी ॥
गूधी बहुत देखियत तुमहू * ताते साथ कीनियत हमहू ॥
तुम्ह बना वृषभानु दुहाई * घग पहर खेल्हु इतआइ ॥
गैया गिनन न जन नह * तिनके स हमहु उतएह ॥
जो तुम गाय दुहावन एहौ * सरक माय ता मोरो पैहौ ॥
रसिकशिरोमणि जान न राइ * इमि प्यारी सकेत बुलाइ ॥
सुनत गू हरिकी मृदुबानी * मनहीं मन प्यारी मुसुकानी ॥
दो०–गुप्त प्रीति प्रकटी नहीं, दोउअन हृदय छिपाय ॥
मनमोहन प्यारी चली, घरको नयन चलाय ॥
सो०–चली सदन सुकुमारि, उनमें उरझो साँवरो ॥
जानी बड़ी अबारि, मात त्रास डर आनिकै ॥

१ पुरानी २ मोहलीनी ३ घर ४ जानेंगे

कहत सखिनसों चली कुँवरिवर * को जैहै खेलन इनके घर ॥
चलो वेग अपने घर जाहीं * भई अवार यमुनतटमाहीं ॥
वचन कहत ऊपर मुखमाहीं * हृदय प्रेम दुख मन हरिपाहीं ॥
गई भवन वृषभानुकुमारी * जननी कहति कहां हुति प्यारी॥
अबलौं कहां अबार लगाई * गैया खरक देख मैं आई ॥
ऐसे कहि मातहि बहराई * अन्तर्गत बस रहे कन्हाई ॥
विरहविकल तनु गृह न सुहाई * सुंदर श्याम मोहनी लाई ॥
खान पान कछु नेक न भावै * चंचल चित्त पुलकितनु आवै ॥
मात पिताको मानत त्रासैं * नयनन हरि दर्शनकी आसा ॥
कहत दोहनी दे मोहिं मैया * जैहौं खरक दुहावन गैया ॥
अहिर दुहत तब गाय हमारी * जब अपनी दुहि लेत सवारी ॥
घरी एक मोहिं लगि तहँ जाई * तू मति आउ खरक अतुराई ॥

दो०–लई मातसों दोहनी, चली दुहावन गाय ॥
मन अटक्यो नँदलालसों, गई खरक समुहाय ॥

सो०–मगैं मग सोचत जाय, कब देखों वह साँवरो ॥
जिन मन लियो चुराय, खरक मिलन मोसों कह्यो ॥

देखे जाय तहां हरि नाहीं * भई चकित प्यारी मनमाहीं ॥
कबहूँ इत कबहूँ उत डोलै * प्रेमविकल कछु मुख नहिं बोलै ॥
देखे नन्द सङ्ग हरि आवत * ललकि लगे लोचन सुख पावत॥
देखी श्याम राधिका ठाढी * लई बुलाय प्रीति अति बाढी ॥
कह्यो महर लेखि खेलहु दोऊ * दूरि कहूं मति जैयो कोऊ ॥
सुनि वृषभानुसुता इत आई * अपने साथ खेलाउ कन्हाई ॥

१ माता. २ भय. ३ रास्ता. ४ देखकर.

हरि तन रहियो नेक निहारे * कोई कहूँ गाय जिन मारे ॥
नन्द ववाकी बात सुनो हरि * जाहु न मो ढिगतें कतहूँ टरि ॥
महर सौंपि हमको तुम दीन्हों * राधे हरिह बाँह गहि लीन्हों ॥
तुमको कहूँ जान नहिं दैहों * जो जैहो तौ पकरि लै ऐहौं ॥
मेरी बाह छोड़दे राधा * कहत श्याम ऊपर मन साधा ॥
तुम्हरी बाँह न तजौं कन्हाई * महर खीझिहैं हमसों आई ॥

दो०–परम नागरी राधिका, अति नागर ब्रजचन्द ॥
करत आपनी घात दोउ, बँधे प्रेमके फन्द ॥

सो०–समुझि पुरातन नेह, ब्रजविलास हित तनु धरे ॥
चलन चहत वन गेह, युगल विहारी कुंजके ॥

तवहिं श्याम घन घटा उठाई * गर्ज मेघ महि चहु दिशि छाई ॥
पवन झकोर चली झकझोरी * चपला[1] चपल चमक चहुँ ओरी ॥
ह्वैगइ भूमि सकल अँधियारी * तैसिय तरु तमाल[2] द्युतिकारी[3] ॥
डरे देखिकै कुँवर कन्हाई * यह्यो राधिकासौं नँदराई ॥
बाहैं सगलिये धरजारी * भई अकाश घटा अति भारी ॥
लिये बाहगहि कुवर कन्हाई * चले युगल वन घर हरषाई ॥
नवल राधिका नवल विहारी * पुलक अंग मन आनँद भारी ॥
नवल नेह नवरँग मन भायो * नवल कुंजवन शुभग सुहायो ॥
नवल सुगन्ध नवल तरु फूले * गुंजत भ्रमर मत्त रस भूले ॥
शुभग यमुनजल पवन झकोरै * उठत श्याम छवि कुंज हिंडोरै ॥
वनजँ[4] विपुल वहुरंग सुहावन * चारु विचित्र पुलिन अति पावन ॥
गये युगल तहँ रसिक रसीले * नागर नवल प्रेम रसगीले ॥

१ बिजली २ तमाए ३ शोभायमान ४ कमल

दो०–विहरत विविध विलास वन, युगल रूपकी रास ॥
गुण गावत मुनि वेध विधि, अहिपैति पति कैलास ॥
सो०–अति रहस्य सुखदाय, वनविहार नँदलालको ॥
क्यों सुकहैं कवि गाय, वेद भेद पावैं नहीं ॥

श्लोक गीतगोविन्द ॥

मेघैर्मेदुरमम्बर वनभुव श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तमीरुरयं त्वमेव तदिम राधे गृह प्रापय ॥ इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयो. प्रत्यध्वकुजद्रुम राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रह केलय

चले सँदन प्रभु कुंजविहारी * गृह पठई अकैम दै प्यारा ॥
प्यारीकी सारी हरि लीन्ही * पीत पिछौरी प्यारिहि दीन्ही ॥
वादर जह तह दिये उनाई * आये सदन श्याम सुखदाई ॥
रही यशोमति हरिहिं निहारी * ओढ़े देखि शीशपर सारी ॥
मन भों कहत कहा यह पाइ * पीत पिछौरी कहाँ गँवाई ॥
यशुमति तुरत आँखि पहिचानी * व्रनयुवतिन भुरये यह जानी ॥
पूछत हरिहिं विहसि नँदरानी * तरुणिनकी सिखइ बुधि ठानी ॥
पीत पिछोरी कितहिं विसारी * यह तौ लाल तियनकी सारी ॥
जानि लई जननी हरि जानी * तब इक बुद्धि तुरत उर आनी ॥
मैं लै गाय गयो यमुनारी * तहँ बहु भरति हतीं पनिहारी ॥
निदरी गाय भजीं सब नारी * बची बसुरिया बहुत सवारी ॥
हौले भजो औरकी सारा * सो लै चादर गई हमारी ॥

१ दोनों २ सर्पराज ३ महादेवजी ४ गुप्त ५ घर ६ गोद

दो०-पीत पिछौरी श्यामकी, मैं पहिंचानत वाहि ॥
मैयारी में जायके, घर लै आवत ताहि ॥
सो०-हरि मायाको जानि, पीताम्बर ताको कियो ॥
जननि दिखायो आनि, कहत लै आयो ताहिसों ॥

राधा गई सदन समुहाई * हाथ दोहनी दूध भराई ॥
परम प्रीति हरि बसन दुरायो * जननी द्वारहिते गुँहरायो ॥
औरकी और कहत मुख बानी * जननी दौरि देखि भय मानी ॥
कहत दीठि लागी कहुँ वारी * उर लगाय पहिचान निहारी ॥
बूझत नेहविकल महतारी * कहा भयो राधा तोहिं प्यारी ॥
अबहीं खरक गई तूनीके * आवत कौन व्यथा भइ जीके ॥
इक लरिकिनी संगही मेरे * कारेटमी आय निहि नेरे ॥
मूर्च्छि परी वह धरणिमझारी * मैं डरपी अपने जिय भारी ॥
श्याम वरन इक ढोटा आयो * कहत सुनो वह नँदको जायो ॥
कछु पढ़िके उन तुरतहि झारी * जानत नहीं कौनकी वारी ॥
मेरे मन भरि त्रास गयोरी * अब कछु नीको नेक भयोरी ॥
अति प्रवीण वृषभानुदुलारी * यह कहि समुझाई महतारी ॥

दो०-सुनि जननी राधावचन, उरसों लीन्ही लाय ॥
कहत टरी करिवरबड़ी, बार बार पछिताय ॥
सो०-एक सुता है तात, पायो देवन द्वारपरि ॥
भई आज कुशलात, बची सर्प्पते लाडिली ॥

सीही कछुक कुँवरि पै जननी * घर नहि रहत फिरत भइ हरनी ॥

१ बुलाया. २ भय. ३ चतुर.

कितनो कहत ताहि मैं हारी * दूर कहूं बाहर जिनजारी ॥
है लरिकिनी सवन घरमाहीं * तोसी निडर कहूँ कोउ नाहीं ॥
कबहूँ खरिक कबहु बन जाई * कबहूँ फिरत यमुनतट धाई ॥
चितै अकाश धैरत पग धरनी * बात कहत लागत तोहिं जैरनी ॥
सात वर्षकी भई कुमारी * बहुत महर वृषभानुदुलारी ॥
आज कुशल कुलदेवन कीन्ही * विधि बचाय विपधरते लीन्ही ॥
शीतल जल लै तुरत न्हवाई * अंग अँगोछ वसन पहिराई ॥
वारहि वार कहत कछु खारी * अब कहुँ खेलन दूरि न जारी ॥
यह सुनि हँसी मनहि मन प्यारी * हृदय ध्यानहरि कुंजविहारी ॥
कहा दूर अब कतहुँ न जैहौं * गाँम धरहि खेलत नित रहिहौं ॥
जिनके गुणन विरंचि भुलाने * तिनके चरित कहा कोउ जाने ॥

दो०–जनरञ्जन भञ्जन कॅलुप, राधा नन्दकुमार ॥
गुप्त प्रकट लीला करत, ब्रजमें युँगल विहार ॥

सो०–देखि अँनूपम बाल, माता पित गुरजन हरिहि ॥
असुर लखत विकराल, नव किशोर चित चोर तिय ॥

सर्व रूप सब घटके वासी * सब विधि करन सकल सुखरासी॥
सर्व भाव सब फलके दायक * सर्वोपरि सब गुणके लायक ॥
सर्व आदि सब अन्तर्यामी * सबते परे सकलके स्वामी ॥
माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा * प्रेम प्रीति दोउ परम अगाधा ॥
छबि शृंगार मनहुँ इक जोरी * करत विहार श्याम अरु गोरी ॥
बसे श्याम श्यामा उर माहीं * देखे विन भावत क्षण नाहीं ॥

१ धरती. २ जलन. ३ सर्प ४ पाप ५ दोनों. ६ जिसके समान कोई न हो ७ गहरा ८ छाती

खेलन मिसु वृषभानुकिशोरा * आइ नन्द महरिकी पौरा ॥
टेरत मधुर वचन सकुचाई * घर भीतर ह्वै कुवर कन्हाई ॥
सुनत श्याम कोकिलसम बानी * अति आतुर राधा पहिचानी ॥
मातासों कछु कलह करत धरि * तुरतहि सो बिसराय दियो हरि॥
तू पहिंचानति इनको मैया * कहत बारही बार कन्हैया ॥
मैं यमुनातट काल्हि भुलान्यों * बाँह पकरि मोको इन आन्यों ॥

दो०–तू सकुचति आवति इहा, मैं दै सौंह बुलाय ॥
अति नागर जननी हृदय, दियो प्रेम उपजाय ॥

सो०–भीतर लेहु बुलाय, कहत मात हरिसों निरखि ॥
चले श्याम सुखदाय, लखि प्यारी आनँद भयो ॥

नैन सैन लखि दोउ सुख पायो * बिरह ताप दुख द्वन्द नशायो ॥
मनहीं मन आनद अति भारा * भये मगन दोउ रूप निहारी ॥
कहत श्याम राधा किन आवै * तुमको यशुमति माय बुलावै ॥
बाँह पकरि लाये बनवारी * यशुमति बोलि निकट बैठारी ॥
देखि रूप मनमाँझ सिहानी * बूझत नन्दमहरकी रानी ॥
मनमें तोहिं न कबहु निहारी * कौन गाव है तेरो प्यारी ॥
को तेरो तात कौन महतारी * कहा नाम तेरो है प्यारी ॥
भूलि गयो है काल्हि कन्हाइ * भल करी तू कर गहि ल्याइ ॥
धन्यकोसि जिन तोमह धारा * धन्य घरा तू जिहि अवतारा ॥
देखि रूप यशुमा अभिलाषी * मनहिंमासों बिनती करिभाषी ॥
नयन विशाल वदन शुभ छोरी * भली बनी है सुन्दर जोरी ॥
बार बार बूझत हरषाई * ह तू कान महरकी जाइ ॥

१ निमित्त २ कोमल ३ माता ४ योनी

दो०—मैं बेटी वृषभानुकी, तुमको जानत माय ॥
बहुत बार मिल्नो भयो, यमुनाके तट आय ॥

सो०—अब मैं लीन्ही जान, बेतो ढुँल्टा है बड़ी ॥
हैं लँगरैं वृषभान, गारि देत हँसि नँदघरनि ॥

राधा बोलि उठी इत आई * धरी कहू बाबा लँगराइ ॥
ऐसो समरथ भयउ न पायो * हसि यशुमति राधा उर लायो ॥
कहति महरि धीरत इम जोटी * अब धीजत है तेरा चोटी ॥
जसुमति राधा कुँवरि मनारी * प्रेम सहित बारनि निरवारी ॥
बड़े बार कोमल अनियारे * लै सुमनासुत औंछ सँवारे ॥
माँग पारि बेनी रचि गूथी * मानहु सुन्दर छबिरी यूँथी ॥
गोरे बदन बिन्दु धरि वन्दन * मानो इन्दु मध्य भुवनन्दन ॥
सारी नई सुरंग निवारी * यशुमति अपने हाथ सँवारी ॥
बदन पोंछि अचरसों दीन्हों * उर आनन्द निरखि छबिकी हो॥
तिल चावरी बतासे मेवा * कुवरि गोदभरि विनवति देवा ॥
कह्यो थाइ सँग खेलहु नाइ * यह सुनि कुँवरि मनहिं हरषाइ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी राधा * खेलत दोउ छबिसिंधु अगाधा ॥

छं०—छबिसिंधु परमअगाध दोऊ नन्दमदन विराजहीं ॥
लखि रूपकोटिककामरति घनदामिनी[5]द्युति लाजहीं ॥
यशुमति विलोकति चकित देखति रूप मन आनँदभरी ॥
सोइ भाय देख्यो दुहुनके उर जोइ अभिलाषा करी ॥

दो०—खेलत दोउ झगरनलगे, भरे परम अह्लाद ॥

---

१ छिनाल २ नटखट ३ नदरानी ४ झुंड ५ मेघ और बिजलीकी चमक ६ सुधी।

मानों घन अरु दामिनी, करत परस्पर वाद ॥

सो०—अमियं वचन रसमूल, अकथनीयछवि अमितगुण ॥
रही यशोमति भूल, युगल किशोर निहार लखि ॥

चली महरिसों कहि सुकुमारी * सदन आपने जानि अबारी ॥
यशुमति निरखि कह्यो हरषाई * खेल्यो करि हरि संग नित आई ॥
बोलि उठे मोहन सुन राधा * तू कत सकुच करै जियबाधा ॥
मैं बोलत तू आवत नाहीं * जननीसों डरपनि मनमाहीं ॥
तोको लखि मैया सुख पावै * देखि चितौ करि छोह बुलावै ॥
सुनि मोहनके वचन सयानी * चितै रही सुख मन मुसकानी ॥
विहँसि चली वृषभानुदुलारी * हरिमूरति उर टरत न टारी ॥
गइ सदन वृषभान महतारी * कहाहुती अबलौंगि प्यारी ॥
वेनी गूँथि माँग किन कीन्हा * बेंदी भाल लाल किन दीन्हा ॥
खेलन रही नंदके द्वारी * यशुमति बोलि निकट बैठारी ॥
बूझन नाम लगी पुनि मेरो * बाबाको पूछेउ अरु तेरो ॥
मोहिं चितै पुनि सुतहि निहारी * कछु सविनोंमां गोद पसारी ॥

दो०—मेरी शिर बेनी गुही, बँदी लाल बनाय ॥
पहिराई निज हाथसों, सारी नई मँगाय ॥

सो०—तिल चाचरि दै गोद, विधना सों विनती करी ॥
उर करिकै अति मोद, तोहिं विहँसि गारी दई ॥

विहँसि कह्यो तोको नँदरानी * वह जेंगी तैंसी हमजानी ॥
तोहि नाम धरि धर्यो बखानो * कह्यो धूत वृषभानु महाको ॥

१ अमृत २ सूपसे ३ ढग

तब मैं कह्यो ठग्यो कत तुमहीं * हसिलपटानि लगी तब हमहीं ॥
सुनि कीरति राधाकी बात * सरल स्वभाव भरी शिशुतातें ॥
कहत ज्वाव तै नीको दीन्हो * बेटी दाव आपनो लीन्हो ॥
जो कछु मोहू कह्यो नदघरणी * सो सबहे उनहीकी करणी ॥
हँसि हँसि कीरति कहत सुभाये * मनमें अति आनद बढाये ॥
फेरि फेरि यशुदाकी बातें * बूझति है जननी राधातें ॥
सुनि सुनि बरसाने की नारी * गावत यशुमतिको हितकारी ॥
सुनि बातें कीरति मुसकानी * नँदरानीके जियकी जानी ॥
मेरी सुता विमल चंपलासी * वै हरि मेघ श्याम छबिरासी ॥
बाढ्यौ उर आनँद हुलासी * कीरति गइ समुझि पति पासी ॥

छं०–समुझि पतिके पास कीरति गई अति आनँदभरी ॥
प्रीति रीति जनाय हित सो बात सब परगट करी ॥
भयो अति उरसाह दर्पनि हर्षि मन आनद भरे ॥
नित्य दूलह श्याम श्यामा वेद गुण गावत खरे ॥

दो०–युगल किशोर स्वरूप वर, वृन्दावन रसखान ॥
नव दुलहिन दूलह सदा, राधा श्याम सुजान ॥

सो०–दूलह दुलहिन चार, माडव वृन्दा विपिनके ॥
गावत नित्य विहार, शेष महेश गणेश विधि ॥

कहत यशोमतिसों हरि प्यारे * जहँनहु रहत खिलौना डारे ॥
राधा तिन लै जाय चुराई * आवत सांझ सवार सदाई ॥
चितै रहति मुरलीकि घाहीं * मेरो प्राण बसत इहिमाहीं ॥

---

१ नदकी स्त्री २ त्रिभुवनकी ३ छोपुरना ४ मण्डप ५ ध्यान

तेरे भाये नेक न माता * राखु उठाय मान मों बाता ॥
बलझूको पतियाय न राई * राखु खिलौना सबहिं छिपाई ॥
कहत जननि हँसि लालन मेरे * को लै जाय खेलौना तेरे ॥
नेक सुनत ताको जो पाऊँ * वाको ब्रजते बास नशाऊँ ॥
बिन देखे तू वाको कहिहै * सो वहु कैसेकै प्रगटैहै ॥
आवतही राधा लै जैहै * फिर तू पाछेते पछितैहै ॥
अजहूँ राखु उठाय मबारी * माँगेते पुनि देहै गारी ॥
जननी हरिकी बतियाँ भोरी * श्रवण सुनत रुचि होत न थोरी ॥
टेव आपने सुतकी जाने * विरझाने क्योंहू नहि माने ॥

दो०–सैंततिहै हरिके हरषि, महरि खिलौना जान ॥
भौंरा चकई मुरलिका, गेंद बटा चौगान ॥

सो०–यशुमति सुखकी रास, नन्द भवन भूषणपरम ॥
ब्रजमें करत विलास, ब्रजबासी जन जाहि बलि ॥

कहत श्यामसों यशुमति मैया * पियहु दूध कछु लेहु बलैया ॥
आज सवार दुही मैं गैया * सोई दूध प्याव मोहिं मैया ॥
और दूध रुचि मोहिं न आवै * जोतू कोटि यतन करि प्यावै ॥
जननी तबहिं सौंह करि ल्याई * यह धौरीको दूध कन्हाई ॥
तुमते और कौन मोहि प्यारो * ओट धयो तुम्हरे हित न्यारो ॥
तातो जानि वदन नहिं ल्यावै * फूँकि फूँकि जननी पय प्यावै ॥
पय पीवत मोहन अलसाये * सुन्दरसेन जननि पौंढाये ॥
प्रात जगावत नन्दनिरानी * उठहु लाडिले शारँगपानी ॥
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे * ठाढे ग्वाल बाल सब द्वारे ॥

१ दूर करदू २ दूध ३ श्रीकृष्ण

हरहु ताप मुख कमल दिखाई * करौ कलेऊ मिलि दोउ भाई ॥
सदमाखन दधि रैनिजैमायो * माँगिलेहु अरु जो मन भायो ॥
सखा वृन्द सब लेहु बुलाई * उठहु लाल जननी बलिजाई ॥

दो०-सब हँसि चितये सेजतें, उठे श्याम सुखदान ॥
यशुमति जल झारी लिये, मुख धोयो निज पान ॥

सो०-बोलि उठे बलराम, उठे सवारे आज हरि ॥
हर्षि मिले घनश्याम, दाऊजू कहि भ्राततों ॥

द्वारे सों सब सखन बुलायो * देखि वदन सबहिन सुख पायो॥
सखन सहित सुन्दर सुखदाई * कियो कलेऊ कछु दोउ भाई ॥
गैयनलै बन चले गुवाला * संग चले मोहन नदलाला ॥
टेर सुनत बालक सब धाये * घर घरके बछरन लै आये ॥
सखा कहत सब सुनहु कन्हैया * चलहु आज वृन्दावन भैया ॥
यमुनातट सब बच्छ चरैंहैं * वशीवट खेलत सुख पैहैं ॥
भली कही हँसि कह्यो गोपाला * चले सकल वृन्दावन ग्वाला ॥
कोउ टेरत कोउ घेरलै आवैं * कोउ सुरभी गण जोर जलावैं ॥
कोउ शृंगी कोउ वेणु बजावैं * कोउ परस्पर होरी गावैं ॥
हेरटेर सुनत मनमोहन * कहत मोहिं सिखवहु निज गोहन॥
हरि ग्वालन सँग टेर उठाई * हँसे सकल पूरी नहिं आई ॥
कहत श्याम अबके फिरिलीनो * अबके जाय तनैं हँगिदीजो ॥

दो०-गावत खेलत हँसत सब, सखा वृन्द गो साथ ॥
पहुँचे वृन्दावन सघन, वृन्दावनके नाथ ॥

---

१ रातका जमायाहुआ २ हाथ. ३ गाय ४ धौरी ५ पुकारनी

सो०-फिरत चरावत धेन, दीनबधु दुष्टनदलन ॥
कृष्ण कमल दल नैन, सबै अंग सुन्दर सुखद ॥

अथ अघासुरवधलीला ॥

तहाँ अघासुर वनमें आयो * कमराज करि कोप पठायो ॥
ताके एक बहिनह भैया * मारे प्रथमहिं कुवर कन्हैया ॥
एक पूतना जो व्रज आइ * बकासुर अरु बक दोउ भाइ ॥
तिनको वैर असुर उर धारा * कियो गव मनमें अति भारा ॥
आज रानको मारन कीन * और वैर भाइनको लीजै ॥
गिरि समान अँजगरतनु भारी * पर्यो असुर मग वदन पसारी ॥
वन घन नदी रची सुखमाहीं * मायाकृत पहिचानत नाहीं ॥
वाहा पग निकसे नन्दलाला * गाय वच्छ लीन्ह सब ग्वाला ॥
हरि अतयामी निय जानी * कपट रूप यह लखि अभिमाना ॥
यावो आन तुरत सहारा * असुर मारि भूभार उतारा ॥
ग्वालन जेहि पवत करि जान्यो * तासु वदन गिरि कदर मान्यो ॥
दखि सुहावन तृण हरियार * गाय वच्छ बैठे सब धाइ ॥

दो०-गाय वच्छ ग्वालन सहित, सब मुख गये समाय ॥
कहत परस्पर आज वन, सुरभी चरहिं अघाय ॥

सो०-सब मुख गये समाय, असुर सकोरयो वदन तब ॥
अंधकार गयो छाय, मानों घन घेरो निशा ॥

अति अकुलाय उठ तब ग्वाला * गाय वच्छ सब नियन निहाला ॥
कहत परे धों हम कह आइ * नाहि नाहि घनश्याम कन्हाई ॥

१ साप २ रास्ता ३ सर्प

सबके प्राण गये इहि बारा * तुमबिन कौन उबारन हारा ॥
श्रवण सुनत प्रभु आरत बानी * भये दुखित चिन्ता उर आनी ॥
दीनबंधु भक्तन सुखदाई * पैठे आप अघा मुख आई ॥
अघा असुर उर अति हरषाई * लियो ओठ सों ओठ लगाई ॥
विद्याधर मुनिवर गंधर्वा * अति भय विकल मगन सुर सर्वा ॥
तबहि कृष्ण मन बुद्धि उपाई * अविगत गति भक्तन सुखदाई ॥
मुखते देह दुगुण विस्तारी * रुधी श्वास भै त्रास देवारी ॥
सक्यो नहीं तब असुर सम्हारी * कियो शब्द आघात पुकारी ॥
फूटि गये शिर दशन दुवारी * निकसी प्राण ज्योति उजियारी ॥
सो वह ज्योति सर्गको धाई * बहुरि आय हरिमाझ समाई ॥

दो०–वाही मग अघ वदनतें, निकसे गोकुलराय ॥
कहत सखन आवहु निकसि, मैं करि लई सहाय ॥

सो०–अतिहि सकाने ग्वाल, गाय बच्छ व्याकुल सकल ॥
मिट्यो तिमिर तिहि काल, जहँ तहँ हर्ष वचन सुनि ॥

बच्छ सहित बाहर सब आये * हरिको देखि परमसुख पाये ॥
हम अज्ञान वृथा भय भाई * श्याम हमारे साथ सहाई ॥
धन्य धाह भनि धनि पितु माता * जिन जायो सुतको ब्रज त्राता ॥
गिरिसम असुर सर्प तनु धारी * ताहि हन्यो तुमहो असुरारी ॥
कहत याह तुम करी सहाई * तब मान्यौ मैं असुर अन्याई ॥
जो तुम मेरे सग न होते * तौ यह मायो जात न मोते ॥
देखि अघासुरवध सुर ज्ञानी * वर्षि सुमनै कहि जै जै बानी ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा * अति आनँद गुण गावत सर्वा ॥

१ दुवारी २ दैल ३ श्रीकृष्ण, ४ फूल

अघा असुरकी करत बडाई * हरिमधि जाकी ज्योति समाई ॥
करत अनेक यत्न मुनि ग्रामा * अंतकाल दुर्लभ हरिनामा ॥
सो हरि अंतकाल जगपावन * बसे आप अघ मुख दुख दावँन ॥
इहि सम और कौनके भागा * कहत देव सब अति अनुरागा ॥

दो०–जै जै जै प्रभु जगत हित, जगन्नाता जगदीस ॥
जाको मारनहूं प्रगट, तारन विश्वा वीस ॥

सो०–हर्पि सुमन बरपाय, जय जय ध्वनि नभ करत सुरँ ॥
गाय ग्वाल सुख पाय, अति आनँद निरखत हरिहि ॥

तबहिं सखनसों बिहँसि कृपाला * बोले करुणासिंधु गोपाला ॥
जलहु सकल बंशीवट छाहीं * आई हैहै छाक तहाँहीं ॥
भोजन करिये सब मिलिजाई * बछरा हाँकि लेहु अगुवाँई ॥
हर्षि चले तहँते बलवीरा * आये सब बंशीवट तीरा ॥
बंशीवट अति सुगम सुहावन * और चहूदिशि बहु द्रुमँ पावन ॥
चरत बच्छ सब बनके माहीं * बैठे आय श्याम वटछाहीं ॥
आस पास गोपनके बालक * मध्य श्याम सुंदर जगपालक ॥
मोर मुकुट कल कुण्डल कानन * कोटि काम छवि मोहन आनँन ॥
गेरुकादि चित्रित तनु श्यामा * पीतवसन वनमाल ललाँमा ॥
बहु विशाल लकुटीकर लीन्हें * गुंजनके आभूपण कीन्हे ॥
सखा वृन्द सब सुन्दर सोहैं * निरखत रूप मदन मन मोहैं ॥
प्रेम मगन मन परम हुलासा * करत परस्पर हास विलासा ॥

दो०–तहां छाक घर घरनते, आई भरि भरि भार ॥
यशुमति पठये कान्हको, व्यंजन बहुत प्रकार ॥

---

१ मारक. २ आकाश. ३ देवता. ४ आगे. ५ वृक्ष. ६ मुख. ७ सुन्दर.

सो०–छाक पठाई मात, हर्षि कहत हरि सखनसों ॥
दधिलवनी बहुभाँत, सब मिलि भोजन कीजिये ॥

वन भोजन विधि करत कन्हाई * छाक सबै इकठाँव रखाई ॥
जलते पुरइन पात मगायो * दोना बहु पलाशके लायो ॥
कछु फल वृन्दावनके नीके * लिये मँगाय भावते जीके ॥
बैठे मंडल जोरि गोपाला * मध्य श्याम सुंदर नँदलाला ॥
भाँति भाँति व्यंजन रस पागे * परसि धरे सबहिनके आगे ॥
कछुक हथेरिन पर धरि लीन्हो * शाक खोलि अंगुरिन बिच कीन्हो ॥
मुरली मुकुट काँख तर लीने * भोजन करन लगे रस भीने[1] ॥
मधु मंगल पर सैन्य सुदामा * सुबल सुमनसा अरु श्रीदामा ॥
अपर अनेक गोप सुन लीने * जेंवत सब मिलि श्याम प्रवीने[2] ॥
लेत परस्पर कौर छुड़ाई * कबहुँ किनको देत कन्हाई ॥
कबहूँ काहू देन बुलावैं * डहँकि ताहि अपने मुख नावैं ॥
मीठे खाटे स्वाद बखानें * हास विलास करत सुखमानें ॥

दो०–देखत सुरगण सिद्ध मुनि, चढ़े विमान अकाश ॥
लखि कौतुक चकित सबै, गये कमलभवे पास ॥

सो०–कह्यो ब्रह्मसों जाय, कहत जाहि वर ब्रह्म सुम ॥
सो ग्वालन सँग खाय, छोरि छोरि करते कलेर ॥

अथ ब्रह्माके मोहकी लीला ॥

हरिमाया मोहे सब प्रानी * नर ब्रह्मा[3] कह सुर मुनि ज्ञानी ॥
सुनि विरंचि सुरगनकी बानी * भयो मोह उरमें यह आनी ॥
गोकुल जन्म कौन यह आयो * मैं कछु याको[4] भेवें[5] न पायो ॥

१ भीगे. २ चतुर. ३ ब्रह्मा. ४ भाग. ५ भेद.

परचौलै देखौं प्रभुताई * बाल बच्छ हरि ल्यावौं नाई ॥
जो सवज्ञ ईश भगवाना * ऐहैं तुरत मँगाय सुजाना ॥
यह निचार विधि मन ठहरायो * चल्यो तुरत वृन्दावन आयो ॥
देखि सरितै वनमें अति पावन * पुहुँप लता द्रुमै परम सुहावन ॥
अति रमणीक चहुँ पासा * वशीवट मधि सुखद निवासा ॥
गोप मण्डली मण्डन मोहन * भोजन करत सखन सग गोहन॥
देखि विरंचि चकित भ्रम भारी * बछरा हरि लीन्हे बनवारी ॥
हरि अन्तर्यामी सब जानी * विधिके[4] मनकी रुचि पहिचानी॥
तब पठये द्वै ग्वाल कन्हाई * लावहु वत्स घेरि सब जाई ॥

दो०–ग्वाल सकल वन ढूंढिकै, फिरि आये हरि पाहिं ॥
कहत बच्छ गे दूरि कहुँ, खोज पाइयत नाहिं ॥
सो०–तब हँसि कह्यो कन्हाय, तुम सब यहँ बैठे रहौ ॥
मैंधौं देखौं जाय, चले आप बहराय तब ॥

तब गे दूर बनहिं जनत्राता * तबहीं बालक हरे विधाता ॥
प्रभुलीलाकी गम कछु नाहीं * गर्वित गयो लोक निजपाहीं ।
निजमायासों करि मति भोरा * राखे बाल बच्छ इक ठोरा ॥
गुणसागर नागर नदनन्दन * वशीवट आये जगवन्दन ॥
दीनबधु भक्त हितकारी * यह अपने मनमाहि विचारी ॥
बालबच्छ जो मन नहिं जैहैं * मात पिता इनके दुख पैहै ॥
ताते रूप सबनको धारों * या विधि तिनको दुख निवारों ॥
बाल बच्छ विधि लै गये जेते * भये श्याम तब आपुन तेते ॥
वयोरूप वैस गुणशीला * बसिय बुद्धि पराक्रम लीला ॥

१ नदी २ फूल ३ वृक्ष ४ ब्रह्माके

रङ्ग रेख जैसो जिहिमाहीं * अग चिह्न अतर कछु नाहीं ॥
बोलन हसन चलन चतुराई * हेरन टरन फेरन राइ ॥
भूषण वसन लकुट कर जैसे * भये श्याम तव आपुन तैसे ॥
दो०–मारन उद्धारन यदपि, हैं समर्थ भगवान ॥
तदपि जान निज दास विधि, करी तासुकी कान ॥
सो०–अपनो करि विधि जान, अनजानत ढीठो करी ॥
ताते कीन्हे आन, मन भायो विधिको कियो ॥

कह्यो श्याम सब सखन बुलाई * लावहु घेरि वत्स सब जाई ॥
ब्रजको चलहु साँझ नियराई * हर्षि चले बालक समुदाई ॥
चहूँपास सब सखा सुहाये * मध्य श्याम वछरन अगुवाये ॥
वेणु बिशाल रसाल बजावत * अपने अपने रँग सब गावत ॥
राँभति गाय वच्छ हित लागीं * देखत ब्रज युवती अनुरागीं ॥
मोर मुकुट कुंडल बनमाला * हँसन मनोहर नयन विशाला ॥
गोपदरेन मुख पर छविछाई * मनहुँ चन्द्रवदन अमिय निवाई ॥
ब्रजवनिता सब तन मन वारत * निरखि रूप भेटत चित वारत ॥
पहुचे ब्रजहिं श्याम सुदर वर * गये वच्छ बालक निज निज घर ॥
गोकुल ग्वाल बाल हर्षाई * लीन्हे तात मात उरलाई ॥
परम प्रीति करि भोजन दीन्हों * कृष्णचरित काहू नहिं चीन्हों ॥
यशुमति कहत सुतहि मिलिप्यारे * वनहिरात कत करत लगारे ॥
दो०–मैं सबेर घरको चल्यो, सखा करत सब रात ॥
देखि अगम वनमें डऱ्यो, वे डरपावत जात ॥

१ धाम २ गाविया

सो०–बारबार पछिताय, लै बलाय यशुमति कहत ॥
श्यामहिं गाय चराय, काल्हि जायँ येई सबै ॥

यह सुनिके हँसि कहत कन्हाई * काल्हि चरावन जात बलाई ॥
लागी भूख बहुत मोहिं हैरी * भोजनको तुरतहिं कछु देरी ॥
सुनत तुरत माखन लै आई * तब लौं खाहु जननि बलि जाई ॥
है जल तैस घामको प्यारे * तेल परस तनु न्हाहु ललारे ॥
जाते मनको श्रमै मिटि जाइ * भोजन करहु बहुरि दोउ भाई ॥
तब जननी गहि बाह न्हवाये * जेवनको बलराम बुलाये ॥
अति रुचिसों जेंवत दोउ भाई * परम प्रीति परसतहैं माइ ॥
जेइँ उठे अचमन तब कीन्हो * बीरा दुहुँन रोहिणी दीन्हो ॥
जानि उनींद सेन बिछाई * जननी पौढ़ाये दोउ भाइ ॥
श्याम,राम सोवत दोउ भैया * सुख पावत निरखत दोउ मैया ॥
अधम रह्यो विधि गर्व नवायो * ब्रजवासिन कछु भेद न पायो ॥
बाल वत्स हरि नये उँपाये * सब जानत वेईहैं आये ॥

दो०–ग्वाल वत्स नव कृत तिन्हैं, ब्रजवनिता अरु धैन ॥
पूरवप्रीतिहुते अधिक, करत रहत उर चैन ॥

सो०–ब्रज मंगल भगवान, ब्रह्म सच्चिदानंद प्रभु ॥
भक्तनके सुखदान, लगे देन सुख घरन घर ॥

तब बिरंचिके मन यह आई * ब्रजके लोगन देखौं जाई ॥
ह्वैहै करत विलाप कलापा * बिन बच्छन गैयन सन्तापा ॥
आय बिरंचि तुरत तहँ देख्यो * घरही घर सब कौतुक पेख्यो ॥
जहतहँ दुहत गाय पशुपालक * खेलत निजनिज घर सब बालक ॥

१ तथा २ मिट्जाना ३ उत्पन्न किये ४ ब्रह्मा

देखि विरंचि चकित मनमाही * हैं यह व्रज कैधौं वह नाहीं ॥
मैं विधना सब सृष्टि उपाई * यह रचना धों किनहिं बनाई ॥
कैधौंहौं यहि भ्रमहि भुलाना * है हरि अविनाशी नहिं जाना ॥
अन्तर्यामी जानत सबही * बाल वच्छ धौं ल्याये तबहीं ॥
अति सम्भ्रम विधिज्ञान भुलायो * गयो फेरि निजलोकहि धायो ॥
देखे वत्स बाल जहँ राखे * चकित बहुरि व्रजको अभिलाखे ॥
क्षण भूतल[1] क्षण लोक सिधारो * बालवत्स दुहुँ ठार निहारो ॥
वर्ष दिवस इहि भाति बिताई * भयो थकित अतिउर भ्रमछाई ॥

दो०–मोहविकल अति देखिकैं, सुंदर श्याम सुजान ॥
प्रकट कियो जन जानि निज, विधिके उरमें ज्ञान ॥

सो०–हृदय भयो तब शुद्धि, ये पूरण अवतार प्रभु ॥
धिक धिक मेरी बुद्धि, बैर बढ़ायो कृष्णसों ॥

मै मतिहीन भेवै[2] नहिं जान्यो * मोहविवश प्रभुसों छल ठान्यो ॥
यह अपराध बहुत मैं कीन्हो * निज अज्ञान न प्रभुको चीन्हो ॥
भई गलानि बहुत मन माहीं * सन्मुख होय सकत विधिनाहीं ॥
भयो शोच उरमाझ विशेषा * प्रभु प्रभाव तब परगट देखा ॥
बालक वत्स सहित सब साजू * कृष्णरूप सब लख्यो समाजू ॥
शिव ब्रह्मादिक देव अनेका * देखे अधिक एकतें एका ॥
चरण कमल वन्दन प्रभु केरे * गावत गुण गन्धर्व घनेरे ॥
देखि चकित चित भर्म नशान्यो * पूरण ब्रह्म कृष्ण पहिचान्यो ॥
शरण शरण कहि अति अतुराई * पर्यो चरण कमलनपर आई ॥
अनजानत मैं करी ढिठाई * क्षमा करहु त्रिभुवनके राई ॥

१ पृथ्वी. २ भेद

मैं प्रभु तुम प्रताप नहिं जान्यो * तुम्हरी मायामाझ भुलान्यो ॥
चूक परी मोते निज भोरे * नाथ न वनै तुम्है मुख मोरे ॥

दो०–मैं अपराधी हीनमति, पर्यो मोहके जाल ॥
ममकृत दोष न मानिये, तुम प्रभु दीनदयाल ॥

सो०–कह जानों तुव भेव, मैं ब्रह्मा तुम्हरो कियो ॥
तुम देवनके देव, आदि सनातन अजितै अज ॥

जो जनते गिरैं बिन जाने * सो अपराध न प्रभु कछु माने ॥
जो शिशु अङ्क दोष उरमाहीं * माता कबहू मानत नाहीं ॥
तोष पोष ताको वह करइ * विस्मत चित्त अक्ले भरइ ॥
रेद रसना दल जौ रिस होइ * कहौ कौन परखीजै सोइ ॥
निजतनु व्याधी पीर जन पाव * यदपि यत्न करि नहा बचाव ॥
वैसेही प्रभु मोरो बीज * क्षमि मम दोष शरण गहि लीजै ॥
तुम जाने बिन जीव सत्राहीं * उपति परलय माझ समाहीं ॥
तुम करि कृपा जनावहु जाको * सो जानै तुम्हरी प्रभुताको ॥
मैं विधि एक लोकको सांइ * तिमि ब्रैम गूलरमाझ गोसाइ ॥
तुम्हरे रोम रोम प्रति गाता * कोटि कोटि ब्रह्माड विधाता ॥
कोटि खद्योत प्रकाश कराहीं * रवि सम क्योंहू होहिं सुनाहीं ॥
अब प्रभु बनै सभारे तोहीं * राखिय चरण शरण निज मोहीं

दो०–अतिही अगम अगाध हरि, अविगति गतिको जान ॥
तासु पार चाहा लह्यो, मैं विधि अति अज्ञान ॥

सो०–करिय विरदकी लाज, ममकृत दोष न मानिये ॥

१ भूलसे २ जो जीता न जाय ३ जिसका जन्म नहो ४ लड़का ५ दांत ६ जीभ ७ भुनगा ८ पटवीजना ९ यश

दीनबन्धु मजराज, शरणागत पालन हरे ॥

जब निधि यही दीन बहु बानी * शरण शरण कहि अति भयमानी
तब नहिं बाल बच्छ कछु देखे * एकै रूप कृष्ण निधि पखे ॥
कृपा करी तब श्रीब्रजनाथा * हस्तकमल परस्यो विधिमाथा ॥
अभय कियो विधि शोच मिटायो * चरणकमलते शीश उठायो ॥
बार बार पदकमल निहोरा * अस्तुति करत दुहूँ कर जोरी ॥
जो जग धाम श्याम सुखराशी * ज्योति स्वरूप सबै उरवासी ॥
गुणगण अगम निर्गम नहिं पावैं * ताहि यशोदा गोद खिलावैं ॥
भूजल अनलै अनिलै नभैछाया * पाँच तत्त्व मिलि जगतउपाया ॥
काल डरै जाके भय भारा * सो ऊखल बाँधे महतारी ॥
जग करता पालन संहरता * विश्वम्भर सब जगके भरता ॥
ते गैयन सँग ग्वालन माहीं * प्रजर्म हसि हँसि जूठनिखाहीं ॥
बड़े भाग्य ब्रजवासिन केरे * तिनके प्रेम रहत तुम घेरे ॥

अब देहु ब्रजको वास मुहिं, प्रभु आश यह मेरे हिये ॥
रेणु तृण द्रुम लता खग मृग, होहिं जो तुम्हरे किये ॥
यह नित्य ब्रजलीला तुम्हारी, तुम अनुग्रह ते लही ॥
महत श्रीवृन्दाविपिनको, अमित मित सक को कही ॥
लोक मोहिं न सुहात अब प्रभु, आन विधि कोउ कीजिये
मोहि ग्वालनको करो भृत, खाय जूठनि दीजिये ॥
बार बार मनाय युग पद, नाथ पद बर माँगहूँ ॥
हिरहौं वृन्दा विपिनें रज, चरणपंकज लागहूँ ॥

दो०-करि स्तुति गद्गद वचन, दृग जल पुलक शरीर ॥
पन्यो चरणपंकज बहुरि, विधि अति प्रेम अधीर ॥

सो०-तब हँसि बोले श्याम, गर्वप्रहारी भक्तहित ॥
जाहु आपने धाम, वचन हमारो मानि अब ॥

और काहि अब करो विधाता * तुमहौ कर्म धर्मके दाता ॥
तुमते है यह सब संसारा * मम मायाको नाहिंन पारा ॥
ताते अब मम आयसु कीजै * ब्रजकी जाय प्रदक्षिण दीजै ॥
जाते तनुके पाप नशाहीं * बहुरि जाहु लोकहि सुखमाहीं ॥
हरि उर हार विविध पहिरायो * बिदाकिया सब शोच नशायो ॥
प्रभु आयसु माथेपर धारी * पाय प्रसाद हरपि सुखचारी ॥
ब्रज दाहिनें फिर पाप नशाये * बाल वत्स प्रभु पहँ पहुँचाये ॥
बार बार चरनन शिरनाई * निधि निज लोक गये सुखपाई ॥
ग्वालन यह कछु मर्म न जान्यो * वाहि समय सबहिन मनमान्यो ॥

१ वृक्ष. २ पक्षी. ३ नौकर. ४ वन. ५ ब्रह्मा. ६ प्रदक्षिणा.

हरिसों कहत बिलँब कहँलाई * हम तुम बिना छाक नहिं खाई ॥
तुम सब भोजनमाँझ भुलाने * बच्छ जाय बन दूर हिराने ॥
खोजत खोजत क्योंहूं पाये * सो मैं लै तुम पहँ पहुंचाये ॥

दो०–अब राखौ सब घेरिकै, दूरि निकसि नहिं जाहिं ॥
सब सुचिते ह्वैके सबै, रुचिसों भोजन खाहिं ॥

सो०–ऐसे कहि ब्रजराय, सखन सहित भोजन कियो ॥
बहुरि यमुन तट जाय, जल अँचयो धोयो बँदन ॥

सन्ध्यासमय चले घर ग्वाला * मध्य श्याम सुन्दर नँदलाला ॥
बच्छ घेरि आगे करि नीके * काँधनपर धर लीन्हे छीके ॥
जन जन शृङ्ग बजावत गावत * बनते बने ब्रजहि हरि आवत ॥
घर आये ब्रज मोहन लाला * कहत यशोमतिसों सब ग्वाला ॥
अहो महरि बन आज कन्हाई * महादुष्ट इक मान्यो जाई ॥
उरग रूप निगले शिशु बच्छा * करी आज सबकी हरि रच्छा ॥
गिरिकन्दर सम तिन मुखबायो * पैठिश्याम तिहि तुरत नैशायो ॥
याके बल हम डरत न काहू * फिरत सकल बन सहित उछाहू ॥
जीते सबै असुर बनमाहीं * यह काहूते हार्यो नाहीं ॥
बीते वर्ष कहत सब ग्वाला * आज अघा मान्यो नँदलाला ॥
यह प्रभु लीला अपरम्पारा * कौन कौन को मुरै न पारा ॥
यशुमति सुनि चकित पछिताई * मैं बरजत बन जात कन्हाई ॥

दो०–केली करवरते बच्यो, तऊ न नेक डरात ॥
अति विचित्र गति ईशकी, जानी जात न बात ॥

---

१ पिया. २ मुख. ३ नाश करदिया.

सो०-खीझनि यशुमति मात, मानत नहिं मेरो कह्यो ॥
श्याम मनहिं मुसकात, अब बनमें नहिं जाइहौं ॥
हरिकी लीला कहत न आवै * सुर नर असुर सबहिं भरमावै ॥
पय पीवत पूतना नशाई * पटक्यो तृणा शिलापर नाई ॥
तीन लोक मुखमें दिखराये * यमला अर्जुन वृक्ष ढहाये ॥
बकासुर बक बहुरि नशायो * अघा मारि विधि गर्व नवायो ॥
यशुमति यह पुरुषारथ देखी * तापर खिझ पछिनात विशेखी ॥
अघा मारि आये नँदलाला * घरघर कहत फिरत सब ग्वाला ॥
सुनि सुनि सब युवति उठि धाई * चकित विलोकन हरिमुख आई ॥
मन मन करत यहै अनुमाना * इनकी सर कोऊ नहिं आना ॥
येइ हैं सबके रखवारे * येइ हैं पति प्राण हमारे ॥
कहत परस्पर सुनहु सयानी * हैं ये जगपति हम यह जानी ॥
प्रममगन सबके नरनारी * लहत परम सुख हरिहि निहारी ॥
मन मोहन सुन्दर सुखरामा * भोजन माँगत यशुमतिपासा ॥

दो०-लाड़ु लाल जो भावई, रचिसौं सखनसमेत ॥
सद मासन व्यजन सरस, करि राखे तुम हेत ॥

सो०-दे रोटी नैवनीत, और मोहि भावै नहीं ॥
दियो मात अति प्रीत, खात हँसत मिलि सखनसँग ॥

॥ गोदोहनलीला ॥

हँसि जननीसों कहत कन्हैया * दोहनि दे दुहिहौं मैं गैया ॥
नंद बबा मोहिं दुहन सिखायो * ग्वालनकी सर दुहन पढायो ॥
धौरी धूमरि कारि गैया * तुरतहि दुहिल्यावों दे मैया ॥

१ खुखानी है २ घमण्ड ३ मक्खन

भयो मोहिं बल माखनखाई * अब न डरात बूझ बल भाई ॥
तोहिं नहीं पतियारो आवे * बैठि ऊठ कर भाव बतावै ॥
अगुरि भाव देखि हसि माता * उर लगायलिये साँवलगाता ॥
कहत कहा इतनी बुधि पाई * हाथ निरखि मुख बलि बलि जाई ॥
लै दोहनी दई कर माता * हर्षित चले दुहन सुखदाता ॥
बछरा छोरि तुरत थन लायो * मात दुहत लखि हृष बढायो ॥
सखा परस्पर कहत बढाई * हमहू ते तुम करत बढाई ॥
दुहन देहु कछु दिन मोहिं गैया * तब करियो मेरी सर भैया ॥
जब लगि एक दुहौ तबताई * दश न दुहौं तो नन्द दुहाई ॥

दो०—सखा कहत सब झूठही, नद दुहाई खात ॥
प्रात साथ हम दुहहिंगे, देखहिं को अधिकात ॥

सो०—कह्यो कान्ह हर्षाय, भली कही तुम बात यह ॥
प्रात दुहहिंगे गाय, हम तुम होड लगायके ॥

श्रीवृषभानुकुवरि मनमाहीं * श्याम सुरत क्षण विसरत नाहीं ॥
दरश लालसा दृगन न थोरी * देखोइ चहत बहोरि बहोरी ॥
उठे प्रभात दोहनी लीन्ही * सुरत श्याम दर्शनकी कीन्ही ॥
जननी देखि कह्यो दुलराई * जाति किते राधा अतुराई ॥
खरकहिं जात दुहावन मैया * दुहत सवेर ग्वाल सब गैया ॥
काल्हि तनक मैं विलँबै लगाई * उठे अहिर सब मोहिं रिसाई ॥
गई गाय सब बच्छ पियाई * रीती दोहनि लै फिरि आई ॥
तुमहूँ खीझन लगि तब मोहीं * जात सबारे आन कहि तोहीं ॥
ऐसे कहि जननी समुझाई * घरते चली मनहि समुझाई ॥

१ छानीसे २ दखरर ३ देर ४ मिर्दासी

नदसदन आई हरिप्यारी * दुहत गाय गृह द्वार निहारी ॥
दुहत परस्पर अति सुख पायो * निरखि बदन छवि हर्ष बढ़ायो ॥
राधहि देखि महरि नँदरानी * लइ बुलाय निकट हर्षानी ॥

दो०—दर्पनिको सुख देखिकै, मुदित यशोमति माय ॥
बार बार लखि युगल छवि, मनहीं मन बलिजाय ॥

सो०—महरि मुदित मुसकाय, मथन कह्यो दधि कुँवरिसों ॥
आन दुहाइ दिवाय, आयसुते ठाढ़ी भई ॥

नेति पाणि गहि अति अनुरागी * रीतोइ माट बिलोवन लागी ॥
बैगर भइ श्याम गति सोरी * मन लग्यो नहिं कुँवरि किशोरी ॥
वृषभहिसों छोड़ि लै गैया * बिसरि गई ठाढ़ी जित गैया ॥
दम्पति दशा देखि नँदरानी * रही चकित नहिं जात बखानी ॥
राधासों बदि प्रगट जनायो * फिर यह तोको मथन सिखायो ॥
निज घर मथति धमही नाही * पै मेरे घर आय भुलाही ॥
मैं नाहिं मथन कबहुँ दधि दीनी * तुम गोरि साँइ बवारी दीनी ॥
ताते मथन करन में लागी * तुम्हरो वचन मही नहिं त्यागी ॥
तव नँद मैरी मथन बतायो * राधे हरि तन ध्यान लगायो ॥
दुहन श्याम गैया बिसराइ * लैया वृषभ पाव अटकाइ ॥
दोहनी श्याम माँग तब लीन्ही * तुरत मथा इक लै कर दीन्ही ॥
महत दुही हरि करो चढ़ाइ * हसत गोप बालनमिलुदाई ॥

दो०—हँसत कहत हरिसों सबै, कह तुम रहे लुभाय ॥
सुनत सखनकी बात नहिं, प्यारीसों चितलाय ॥

---

१ घर २ पाम ३ धीपुरुष ४ घो

सो०-प्रिया वदन रँग लाय, रहे श्याम इकटक निरखि ॥
देहदशा विसराय, भूलि गये सब चतुरता ॥

यशुमति कहत राधिकहिटेरे * येढँग हैरी प्यारी तेरे ॥
ऐसो हाल मथत दधि तेरो * हरि भयो मानहु चित्र चितेरो ॥
तेरो मुख सम शशि नहिं आजै * नयनन लखि खर्जन गति लाजै ॥
चपलाहूँते चमकत हैरी * करिहै कहा श्यामको तेरी ॥
मेरो कह्यो सुनत कछु नाहीं * है धौ कहा गुणत मनमाहीं ॥
इकटक दीठि तबहिते ल्याई * तनुकी सुरति सबै बिसराई ॥
अबहीं ते ऐसे ढँग योहीं * अबहीं बहुत होनहै तोहीं ॥
ऐसे ढंगहि लगायो श्यामहिं * काज नहीं कछु तेरे धामहिं ॥
चितयो मतिहि करे टकलाई * हिलिमिलि खेल श्याम सँग आई ॥
कैरहो वैठि आपने धामहिं * धेनु दुहनदे मेरे श्यामहिं ॥
देखत तोहिं श्याम सुधि जाई * तू चितवति तनु सुधि बिसराई ॥
सुधरेहि जो इहाँ तु आवै * ऐसो ढँग मोको नहिं भावै ॥

दो०-करत अचकरी आयतू, यह नहिं मोहि सुहाय ॥
सूधे खेलहि श्याम सँग, कैतू इत मति आय ॥

सो०-ऐसे महरि रिसाय, सीख दई हरि भाव तेहिं ॥
तब कछु मन सुधि पाय, बोली अति भोरे वचन ॥

मोहि खीजति वरजत सुत नाहीं * नित उठि मोहि बुलावन जाहीं ॥
मोहि कहत बिन तोहिं निहारे * रहत न मेरे प्राण सुखारे ॥
छोह लगत मोको सुनि बानी * तब आवत मैं इहा वरजानी ॥
मुख पावति आवति मैं तातें * तुम कछु लावत औरहिं बातें ॥

१ दृष्टि २ चद्रमा ३ एक तरहका पक्षी ४ बिजलीसे ५ ढीठता

यशुमति सुनि प्यारीकी बानी * भोरे भाय समुझि सकुचानी ॥
बाँह पकरि उरमें लै लावति * प्यारी मनमों रोवै सिखावति ॥
हमन कहत मैं तोसों प्यारी * मोमें कछु बिलँग जनिलागी ॥
सिखवन तोहिं धीरज गुनवारी * मैं तेरा जैसे महतारी ॥
सुनियत महरि सुघर अधिकाई * गृहकारज कछु तोहिं सिखाई ॥
सुनि यशुमतिके वचन सप्रीती * बोली अति नागरि शिशुरीती ॥
मैया मोसों टहल करावै * खीझत जात देखि नो पावै ॥
सुनि यशुमति राधाकी बानी * श्री वृषभानु लाडिली जानी ॥

दो०—अति सप्रेम दुलैरायकै, लई बहुरि उर लाय ॥
श्रीराधाके चित्ततें, दीनो क्षोभै मिटाय ॥

सो०—कांपै धरणी जाय, हरि प्यारीकी चतुरता ॥
लीनी सहज सुभाय, बात नहीं यशुमति भुरै ॥

कहत सखा हरिसों मुसकाई * दुहत कहा तुम आज कन्हाई ॥
कालिह दुहन कहे होड़ लगाई * बिसर गई सब आन बड़ाई ॥
गिरनि दोहनी कम्पित हाथा * नोवत वृषभ चरन लै साथा ॥
सुनि ग्वालनके बचन गोपाला * कछुक सकुचि बिहसे नँदलाला ॥
बच्छ छोरदियो सखिकु चलाई * आय जननिसों कहत कन्हाई ॥
मुरली मुकुट देहि पट मेरो * सुनि आऊँ दाऊँ मोहिं टेरो ॥
जननी हरषि तुरत सब दीनो * लै हरि मुकुट शीश धरिलीनो ॥
चारु पीत पट कटि लपटाई * कर मुरली लै मधुर बजाई ॥
मुरलीमें कहि प्यारी प्यारी * गये बुलाय सखिन सुखकारी ॥
लखि प्यारी हरिकी चतुराई * कहति यशोमतिसों अतुराई ॥

---

१ मुग्धा २ आरवान ३ प्यार करके ४ क्रोध ५ पीतांबर

जाति धरहि प्रातहि मैं आई * खरिक दुहावनको निजगाई ॥
पायो ग्वाल खरिक कोउ नाहीं * खोजति मैं आई इतमाहीं ॥
दो०–इहाँ अजिर गैया दुहत, देखे आय कन्हाय ॥
तनके दोहनि तनक कर, देख रही चित लाय ॥
सो०–सुनि अति सरस सुभाय, सने प्रेम प्यारी वचन ॥
यशुमति मन सुख पाय, कहत कुवँरिसो जान घर ॥
जा प्यारी घर आवत रहियो * हमरो मिलन महरिसों कहियो ॥
यह सुनि कुवँरि चली हर्षाई * मन हरि लीन्हों कुवँर कन्हाई ॥
गई खरिक कर दोहनि लीने * चितवत मनौ जहँ श्याम प्रवीने ॥
तहा मिलीं बहु सखी सहेली * बूझति राधहि कहा अकेली ॥
मात दुहावन मात पठायो * तहाँ खरिक कोउ अहिर न पायो ॥
इत आई मैं ग्वाल बुलावन * जात खरिक अब गाय दुहावन ॥
बोलि उठे हरि तब इत आवो * हम दुहि देहँ दोहनी लावो ॥
दुहन देन कहि श्याम बुलाई * सुनत गई प्यारी सुख पाई ॥
कहति सखी सब मन मुसुकाई * कहाँ प्रीति इन आय लगाई ॥
बरसाने यह ब्रजहि कन्हैया * आई कहाँ दुहावन गैया ॥
हरि मुख लखि वृषभानुकिशोरी * प्रेमविवश भइ तँनु सुधि भोरी ॥
मोहन लई दोहनी करते * प्रिया प्रीतिरसवश भइ वरते ॥
दो०–धेनु दुहावत लाडिली, दुहत नन्दको लाल ॥
सो सुख कापै जाय कहि, देखत ब्रजकी बाल ॥
सो०–बछरा पद अटकाय, गोथन लीन्हो हाथ हरि ॥
प्रिया बदन दृग लाय, दूध धार छाँडत छलन ॥

---
१ शरीरके २ हाथ ३ रास्ता ४ शरीर

दुहत धेनु अतिही छबि बाढ़ी * प्यारी पास दुहावन ठाढ़ी ॥
एक धार दुहती मैं टारे * प्यारी तन इक धार पसारे ॥
हरि करते पयधार छुटाहीं * लसत छींट प्यारी मुखमाहीं ॥
मनहु मयङ्क चन्द्रक पसारी * शोभित जहँ तहँ चन्द्र सुधारी ॥
दै धाँ पै निधि खोरि मयङ्का * लसत सुधासह खोय कलङ्का ॥
लसत नीलाम्बर कनक किनारी * मोरत मुखहिं मुदित मन प्यारी ॥
मनहु शरदै शशि सुधा उदारा * घनदामिनि घेर्यो इक बारा ॥
इहि विधि रहमम निरखत दोऊ * हेतु हिये थोरे नहिं कोऊ ॥
मनहु उभय आनँद सर भारी * मिलन चहत मर्याद बिसारी ॥
हाव भाव रस दम्पति पूरे * निरखत लखितादिक दुर दूरे ॥
इहि विधि श्रीवृषभानुदुलारा * हरिपै धनु दुहावत प्यारी ॥
विलसत मजविलासबनप्यारे * ये सुख तीन भुवनते न्यारे ॥

दो०—दुहौ कुवँर नँद लाड़िले, श्रीराधाकी गाय ॥
दोहनि देत न हँसि प्रिया, माँगत हाहाखाय ॥

सो०—त्यों त्यों हँसत कन्हाय, ज्यों ज्यों प्रिय हाहाकरत ॥
सो सुख बरणि न जाय, अरझे दोऊ प्रेमरस ॥

फिर हाहाकर कहत कन्हाइ * अबकै दर्हौं नन्द दुहाइ ॥
फेरि करी हाहा हँसि प्यारी * दई दोहनी बिहँसि निहारी ॥
हाव भाव करि मन हरि लीन्हों * कुवँरिहि काह निदा तब कीन्हो ॥
यह छबि निरखि सखी हर्षानी * चली अग्र है चतुर सयानी ॥
प्यारी निरखि श्याम सुन्दरको * चलन चहत पग चलत न घरको
अँतर नेव न हरिसों भाव * पुरातनसकुच बहुरि सकुचाव ॥

---

१ चन्द्रमा २ नीलाम्बर ३ मरदका ४ दानों ५ रीति ६ भेद

धिक यह लाज कहत मनमाहीं * निरखन देत श्याम जो नाहीं ॥
कछु दिन ज्यों त्यों और बिताई * दूर करौं पुनि इहि दुखदाई ॥
यह विचार मनमें ठहराई * चली सदन उर राखि कन्हाई ॥
मुरि मुरि नद नंदन तन हेरे * आवति विरह बिथा तन घेरे ॥
आगे धरत परत पग नाहीं * मन फेरत मनमोहन पाहीं ॥
चितवत श्याम खरिकमहँ ठाढे * प्यारी तन मन आनँद बाढे ॥

दो०–भये दृगनते ओट दोउ, गये सदन सुखरास ॥
विरह विकल प्यारी गई, ज्यों त्यों सखियनपास ॥

सो०–सखियन आवत देपि, श्रीवृषभानुकुमारिको ॥
उर आनंद विशेपि, हर्षि सबै ठाढी भई ॥

बूझति सबै सखी मुसकानी * कहहु राधिका कुवँरि सयानी ॥
और अहिर तुम्हरे कित प्यारी * हरि दुहि दीन्ही गाय तुम्हारी ॥
यह सुनि चकित भई मति भोरी * गिरी धरणि मुरझाय किशोरी ॥
देखि सखी सब आतुर धाई * लई उठाय कुवँरि उरलाई ॥
क्यों नागरी गिरी मुरझाई * दूध दोहनी दई गिराई ॥
यह वाणी कहि सखिन सुनाई * कारे मोहिं डसीरी माई ॥
भई विकल कछु तनु सुधि नाहीं * कहत सखी सब आपसमाहीं ॥
अबही देखत नीके आई * कहा भयो कारे कित खाई ॥
यह तो कारो कुवँर कन्हाई * हमहूँ को जिन फूँक लगाई ॥
जाकी मुर मुसकन विष बाँको * याके रोम रोम विष ताको ॥
तन मन दृगन साँवरो छायो * देह गेह सब नेह भुलायो ॥
सब सखियन मन यह ठहराई * लैराधिकहिं सदन पहुँचाई ॥

१ घर २ नेत्रोसे. ३ पृथ्वी ४ काले सापने ५ मृदु.

दो०-लेहु महरि कीरति सुता, अपनी देखहु आय ॥
फहुँकारे याको डसी, गिरी धरणि मुरझाय ॥

सो०-ल्यावहु गुणी बुलाय, वेग यत्न याको करहु ॥
गयो बदन कुम्हिलाय, ज्यों त्यों हम लाई इहाँ ॥

जैननी सुनत उठी अकुलाई * रोवति धाय कंठ लपटाई ॥
प्रात गई नीके उठि घरते * मैं बरजी मान्यो नहिं अरते ॥
अतिहि हठीली कह्यो न मानै * सोई करनि जु मनमें आनै ॥
ढरी मात लगि अँग सब जूडे * अतिही शिथिल स्वेदैजल बूडे ॥
महरि नगर ते गुनी बुलाये * सुनत सकल आतुँर उठि धाये ॥
मंत्र यंत्र बहु भाँति जगावें * थके सकल कछु भेद न पावें ॥
गारुड हरि जो रहे मनमाहीं * महरि निकल अति मन पछिनाहीं
फिर फिर बूझत सखिन बुलाई * कहु प्यारी कहि तुमहि सुनाई ॥
कहत सखी सब परम सयानी * सुनहु महरि इतनी हम जानी ॥
हम आगे यह पाछे आई * गिरी धरणि दुहनी ढरकाई ॥
यही कह्यो कारे मोहिं खाई * तब हम आतुर लई उठाई ॥
सो कारो हमहूँ पुनि देख्यो * लग्यो सबन विष याहि विशेख्यो

दो०-सो अब हम तुमसों कहैं, मानिलेहु यह बात ॥
बड़ो गारुडी रायहे, नंदमहरको तात ॥

सो०-ल्यावहु ताहि बुलाय, देखतही विष जायगो ॥
तुरतहि लेहि जिवाय, हम नीके यह जानहीं ॥

देखहु धौं यह बात हमारी * एकहि मंत्र जियावहिं झारी ॥
त्रिभुवनगुनी और नहिं ऐसो * है वह नंद महरिको जैसो ॥

१ माता. २ पसीने. ३ जल्दी. ४ सांपवाला.

कीरति महरि सुनी यह बानी * अपने मनहिं साँचकर मानी ॥
इकदिन राधा हू यह बानी * मोसों कही हती यह जानी ॥
कीरति चली नदके धामहिं * बोलन आतुर गारुड़ श्यामहिं॥
महरि यशोदहि जाय पुकारो * अहो गारुडी सुवन तुम्हारो ॥
मेरी सुता लाडिली गोरी * बिह्वल विकल परी मति भोरी ॥
प्रातहि खरिक दुहावन आइ * तहँ कहूँ कारे डसिखाई ॥
नेक पठै सुत काज विचारो * यह यश हैहै बडो तुम्हारो ॥
सुनि यशुमति कीरतिकी बानी * कहत महरि तुम भई अयानी॥
मन्त्र यन्त्र यह जानै मेरो * अतिही बाल वर्ष पँचकेरो ॥
किन तुमको दीनो बहँकाई * यह तुम बूझो गुणिन बुलाई ॥

दो०—मैं चकित तुम वचन सुनि, यह अचरजकी बात ॥
श्याम भयो कब गारुडी, तुम आई अतुरात ॥

सो०—अबलों सुनी न कान, भयो श्याम कब गारुडी ॥
बालक अति अज्ञान, यन्त्र मन्त्र जानै कहां ॥

महरि गारुडी कुवँर कन्हाई * इक दिन राधा मोहिं सुनाई ॥
एक लरकिनी कारे खाई * जाको तुरतहि श्याम जियाई ॥
ताते मैं आई अतुरानी * पठवहु सुतहि नेक नँदरानी ॥
है मम कुवँरि विकल अधिकाई * प्रात खरिक कारे कहुँ खाई ॥
बड़ो धर्म यशुमति यह लीजै * वेगि बुलाय कान्हको दीजै ॥
यह सुनिकै यशुमति मुसकाई * अबहिं हती मेरे घर आई ॥
है राधा मोहन कछु कारन * चुप है मनमें लगी विचारन ॥
वहाँ सखी ललितादि सयानी * प्यारिहि देखि हृदय अनुमानी॥

१ पुत्र २ बावरी ३ छह

याहि हसी बंसीधर कारे * चितवन पण मुसकन निधारे॥
प्रेम प्रीति दौंहारत जारे * लगे न मन्त्र गुणी सब हारे॥
थके सकल करि विविध उपाई * यह विष मोहन विन नहिं जाई॥
सखी एक हरि पास पठाई * तिन मोहनसों जाय जनाई॥

दो०–अहो महरिके लाड़िले, मोहन श्याम सुजान॥
कित सीखे यह गोदुहन, हमसो कहौ बखान॥

सो०–दुहि दीनी जिहि गाय, आज भोरही खरिकमें॥
वेग विलोकौ जाय, निज नयनन ताकी दशा॥

जबते दुहि दीन्ही तुम गैया * अहो अनोखे गाय दुहैया॥
घर लौं कुवँरि जान नहिं पाई * बीचहि धरणि गिरि मुरझाई॥
देखत संग सखी सब धाई * जैसे तैसे गृह पहुँचाई॥
सो अब तनुकी सुधि न सम्हारे * मग निकस नहिं दृगन उघारे॥
सकसकात तनु स्वेदै बहाई * उलटि पलटि भरि लेत जँभाई॥
कहति मोहिं कारे अहिखाई * कियो यत्न बहु गारुड आई॥
ताहि कछु उपचार न लागै * तुमरो नाम लेत कछु जागै॥
हौं पठई इक सखी सयानी * यह विष तुमरो निहचै जानी॥
यह कारो अहिरूप तुम्हारो * मुसकनि विष ताऊपर डारो॥
अब जो चाहौ ताहि जियावो * वेगि चलो तिन गहर लगावो॥
अतिहि विकल वह विरह अधीरा * दरश दिखाय हरौ तनु पीरा॥
तुम अश्विनीकुमार कन्हाई * वेगि चलो हरि लेहु जिवाई॥

दो०–नजर दीठ इकरावरी, टेर कहत हम कान्ह॥
नहिं जागति तो देहिंगी, नन्द द्वार सब प्रान॥

१ पृथ्वी २ नेत्र. ३ शरीर ४ पसीना ५ उपाय ६ देर ७ स्वर्गके वैद्य

सो०—व्याकुल जननी तास, घरनि महर वृषभानुकी ॥
गई यशोमति पास, वेगि जाय सुधि लीजिये ॥

कीरति आगम सुनत कन्हाई * कीनी विदा सखी मुसुकाई ॥
जो कहुँ डसी भुजङ्गम प्यारी * तौ हम आय देहिंगे झारी ॥
ऐसे कहि हरि सदनहि आये * देखि यशोमति निकट बुलाये ॥
तू कछु जानत मत्र कन्हैया * बूझति विहँसि यशोमति मैया ॥
कीरति महरि बुलावन आई * कुवँरि राधिका कारे खाई ॥
आनहु झारि वेगि सँग जाई * कुवँरि जिवाये अतिहि भलाई ॥
गारुड भयो भले सुत जानी * आज सुनी श्रवणन यह बानी ॥
मैया एक मत्र मैं जानों * तेरीसों कहि सत्य बखानों ॥
अँहि काट्यो मो दृष्टि जु आवै * मोपे क्योंहू मरण न पावै ॥
जननि कह्यो सुत जाउ कन्हाई * देहु राधिकहि जाय जिवाई ॥
जननी वचन सुनत ब्रजनाथा * चले हर्षि कीरतिके साथा ॥
चली महरि हरि सग लिवाई * गइ वृषभानु पुरा समुहाई ॥

दो०—रुदतिमहरि लखि कुवँरिको, अतिहि गई कुम्हलाय ॥
शिथिल अंग वाणी निरखि, लीनी कण्ठ लगाय ॥

सो०—तबहिं श्यामके पाय, परी कुवँरि लैके महरि ॥
मोहन देहु जिवाय, अति व्याकुल मेरी सुता ॥

आये गारुड़ कुवँर कन्हाई * कुवँरि कान्हने यह सुनि पाई ॥
धन्य धन्य आपनको जानी * हृदय हर्ष दृग आनँद पानी ॥
प्रगट रोम तनु स्वेद बढाई * विहूल देखि जननि अकुलाई ॥
अन्तर भाव भेद हरि जाने * रसिकशिरोमणि मन मुसकाने ॥

१ घर. २ कानोंसे. ३ साप. ४ नगर.

तब कछु पढिकै कुँवर कन्हाई * मुरलि अंगसों दई छुवाई ॥
तत्क्षण लोचन कुँवरि उघारे * सन्मुख सुंदर श्याम निहारे ॥
निरखत दृगन परम सुख लीनो * सकुच सँभारि बसैन सम कीनो॥
बूझत बात जाननिसों प्यारी * आज कहा यह है महतौरी ॥
*जननी कहति डरपि डरखाई * तोहिं मरतते कान्ह जिवाई ॥*
करत लाज तू कारी प्यारी * कारिवैर बड़ी आज विधि टारी॥
यों कहि महरि हृदय अनुरागी * नंदसुवनके पांयन लागी ॥
बड़ो मंत्र तुम कियो कन्हाई * सुता हमारी मरत जिवाई ॥

दो०–उर लगाय मुख चूमिकै, पुनि पुनि लेत बलाय ॥
धन्यकोखि यशुमति महरि, जहां अवतरे आय ॥

सो०–कछु मेवा पकवान, कह्यो खान घनश्यामसों ॥
विदा किये दै पान, कीरति श्याम सुजानको ॥

महरि मनहिं मनमें अनुमानी * जोरी भली विधाता बानी ॥
मग घर घर यह बात चलाई * बड़ो गारुडी कुँवर कन्हाई ॥
सखी कहत हरिसों मुसकाई * भले भले हो गारुडराई ॥
प्रगट्यो गारुड नाम तुम्हारो * भले आज तुम विषहिं उतारो ॥
जननि कहति मेरो अति बारो * अबहीं कौन करै निरवारो ॥
जान्यों कठिन बसन मझकारो * अब यह मंत्रहि मतिहि बिसारो॥
फिर कारो कहुँ करहिं पसारो * हम तब लेहैं नाम तुम्हारो ॥
यह गारुडी कहां तुम पाई * प्यारी एकहि टेर जिवाई ॥
अब हम जानी बात तुम्हारी * जाहु आपने सदैन विहारी ॥
रसिकमुकुटमणि कुंजविहारी * हँरा बशकीनी घोषँकुमारी ॥

१ दर्शनमय. २ कपडे. ३ माता. ४ बलाय ५ टटकी ६ घर. ७ गोपी.

विवश भई सब ब्रजकी बाला * गये सदन मोहन नँदलाला ॥
ब्रजविलास बिलसत ब्रज प्यारो * ब्रजवासी जनको रसवारो ॥

दो०–प्यारो सुत नँदरायको, जाकी लीला नित्त ॥
तिनहींको हरि डसतहैं, जिनको उज्वल चित्त ॥

सो०–धन्य धन्य ब्रजबाल, धनि धनि ब्रजके ग्वाल सब ॥
जिनके सँग नँदलाल, दुहत चरावत गाय नित ॥

प्रात होत बल मोहन लाला * गाइ बच्छ सबलै सँग ग्वाला ॥
चले चरावन ब्रज वनमाही * क्रीडा करत सकल मग जाहीं ॥
देखि मुदितै सब ब्रजकी बाला * वृन्दावन गये मदनगुपाला ॥
गैया बगैर गई वनमाहीं * बैठे काहु कदमकी छाहीं ॥
सखालिये सँग सुबल सुदामा * क्रीडा करत सहित बलरामा ॥
ग्वाल जहाँ तहँ गाय चरावैं * आनँद भरे कृष्णगुण गावैं ॥
करत विहार विविध सब ग्वाला * गये दूरि बन सघन विशाला ॥
कोऊ गैयन घेरन धायो * कोऊ बछरन लै बिल्गायो ॥
हलधर रहे कहूँ वनजाई * आप अकेले रहे कन्हाई ॥
मन मन कहत श्याम सुखदाई * सखा रहे कत वन बिरमाई ॥
गौरँभन कहुँ सुनियत नाहीं * गये निकसि धौं कित वनमाहीं ॥
आलस गात्त जानि मनमाहीं * बैठे बशीवटकी छाहीं ॥

दो०–सखा वृन्द हलधर सहित, लिये बच्छ अरु गाय ॥
वृन्दावन घन छांडिकै, रहे ताल वन जाय ॥

सो०–मन हरपे सब ग्वाल, देखि भूमि सुन्दर परम ॥
फरे विपुल तरु ताल, अति रसमय मीठे मधुर ॥

---

१ मसन २ घिरगई ३ भूले भटके ४ गौका रभाना

अथ धेनुकवधलीला ॥

गोधन वृन्द दिये वगराई * लगे खान फल मन हरषाई ॥
अचैयो बल रस ताल रसाला * बाढ़यो उर आनद विशाला ॥
सुरत नन्दनन्दनकी आई * कह्यो सखनसों कहा कन्हाई ॥
ल्यावहु धरि नाय सब गैया * चल्यौ वेगि जहँ कुवँर कन्हैया ॥
सुनत सखा हलधरकी वानी * वनमें श्याम अकेले जानी ॥
आतुर गैयन घेरन धाये * टर दइ सब ग्वाल बुलाये ॥
तहा असुर इक धेनुकनामा * खरके रूप रह वनधामा ॥
सोयो हुतो विटपकी छाया * सुनत शोर खर तामेंस धाया ॥
अति बलवान विशाल कराला * परम भयकर मानहु काला ॥
दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे * भाज जित तित भयके मारे ॥
असुर महावल गर्व बढ़ाइ * बलके सम्मुख गरजो आइ ॥
मत्त तालके रस बलराइ * देखि असुर मन रिस उपजाइ ॥

दो०–नेट सँभारि उठि कोपकरि, असुर प्रचार्यो जाय ॥
अग्रज माता श्यामको, तिहुँ पुर जासु बड़ाय ॥

सो०–बलको आवत जानि, असुर जोरि दोऊ चरण ॥
चपर चलाई आनि, बहुरो हठ ठाढ़ो भयो ॥

बहुरो फिर मारनको धायो * बल जुको तामन तब आयो ॥
तबहिं असुर फिर चरण चलायो * गहि लीनो करिकोप फिरायो ॥
पटक्यो लै तरताल हिलाइ * भयो प्राण विन तरुहिं गिराइ ॥
तरुसों तरु टूट भहराइ * उठ्यो सकल वन घन घहराइ ॥
और बहुत धेनुक परिवारा * कीन्हों बल सबको सहारा ॥

१ सुन २ पिया ३ गधा ४ गुस्सा हाकर ५ बलदेवजी ६ दुलत्ती

मान्यो असुर महा दुखदाई * ग्वाल बाल सब करत बड़ाई ॥
आये सब वृन्दावनमाहीं * जहँ तहँ श्यामहिं टेरत जाहीं ॥
चढ़ि चढ़ि द्रुमन पुकारत ग्वाला * आवहु हो मोहन नँदलाला ॥
ल्याये घेरि मिली सब धेनू * आवहु मधुर बजावहु वेनू ॥
कोमल चरण काहूँ मति धावहु * कंटक कठिन मही इत आवहु ॥
ऐसे हरिको टेरत जाहीं * तृषित भये सब वनके माहीं ॥
ग्वाल बाल सब यमुनहि आये * बलरस मत्त न पहुँचन पाये ॥

दो०-गोप गाय अचैवत भये, कालीदहको नीर ॥
निकसत सब अकुलायकें, बैठ गये जल तीर ॥

सो०-परे सकल मुरझाय, जहां तहां विप झारते ॥
ग्वाल बच्छ अरु गाय, भये मनो विन प्राण सब ॥

हरि ठाढे वंशीवट छाहीं * बारहिं बार कहत मनमाहीं ॥
अबहिं रहे सब संग चरावत * निकसि गये धौंकितवन धावत ॥
गौरौंभनै[१] ग्वालनके बैना * श्रवणनमाँझ परत कछु हैना ॥
तरु चढि इत उत गैयन हेरत * लै लै नाम सखनको टेरत ॥
कालीदह तन आहट पाई * शोधलेत उत चले कन्हाई ॥
बन बन ढूंढत हरि तहँ आये * गाय ग्वाल सब मूर्छित पाये ॥
मनमें ध्यान करतहीं जान्यो * कालीअहिं ह्याँ आय समान्यो ॥
रहत इहाँ खगपति भयमानी * अँचयो इन ताको विषपानी ॥
अमीदृष्टि[३] प्रभु सकल निहारी * तुरत उठे सब भये सुखारी ॥
देखि कृष्णाको अति सुखपाई * मिले सकल प्रेमातुर धाई ॥
बोले हरि मृदुवचन सुहाये * तुम सब मोहि छोड़िके आये ॥
कितते कित इत निकसे आई * मैं बन ढूंढि रह्यौ पछिताई ॥

१ पीत हुये. २ गायोंका रँभाना. ३ अमृतकी दृष्टिसे.

दो०-खोज लेत आयो इहाँ, देखे सब बेहाल ॥
मुरछि परे काहे धरणि, भयो कहा जंजाल ॥

सो०-गाय वच्छ अरु ग्वाल, उठे एकही बार पुनि ॥
कहा कियो इह ख्याल, देखि मोहिं अचरज भयो ॥

सुनि हरिवचन परम सुखदाई * कहत सखा सब सुनहु कन्हाई ॥
अँचयो तृषित[1] यमुन जल आई * तबहि गिरे सब तट अकुलाई ॥
कारण हम कछु जान्यो नाहीं * भये प्राणबिन सब क्षणमाहीं ॥
इह हम जानी कुवँर कन्हाई * तुमहीं हमहि जिवायो आई ॥
हौ तुम ब्रज जनके रखवारे * तहाँ तहाँ तुम हमहि उबारे ॥
तब हरि बलदाउको हेरो * कह्यो चलहु बन होत अंधेरो ॥
सखा बोलि ल्याये बलरामहिं * हँसे देखि सुन्दर घनश्यामहिं ॥
बड़ी देर भइ तुम्है कन्हैया * रहे अकेले बनमें भैया ॥
चलहु वेगि अब घरको जाहीं * लेहु लिवाहि गाय वनमाहीं ॥
हेरी[2] देत चले सब ग्वाला * गावत गुण सुन्दर गोपाला ॥
गोधन आगे दिये चलाई * सरान मध्य मोहन बलभाई ॥
चले ब्रजहि ब्रज जन सुखदाई * निरखि बदन[3] छबि मर्दन[4] लजाई ॥

दो०-सुनि ब्रज सुन्दरि परस्पर, कहत मुरलि सुर घोर ॥
आवत बनबसि अहर[5] निशि[6], आगम नंदकिशोर ॥

सो०-धाई गृह तजि काज, निरखनको मन भावतो ॥
सुन्दर सुत ब्रजराज, लाज साज सब छोड़िकै ॥

वे देखो आवत बल मोहन * सुबल सुदाम सुदामा गोहन ॥
मेघश्याम तनु गैयन पाछे * शीश मुकुट कटि काछनी काछे ॥

१ प्यासा. २ आवाज. ३ मुख. ४ कामदेव ५ दिन. ६ रात.

कमलवदन कर वेणु बजावै * गौरी राग मिले सुर गावै ॥
नयन विशाल कमल ते आछे * कोटि मर्दनकी छबिको बाँछे ॥
कुंडल श्रवणै वदन छबि छाई * गोरज छबि कहुँ चंद्र छिपाई ॥
निरखि मुदित सब ब्रजकी बाला * पहुँचे आय सदन नँदलाला ॥
ब्रज जीवन बल मोहन भैया * निरखि जननि दोउ लेत बलैया ॥
ग्वाल कहत धनि यशुदा माता * धनि धनि बल मोहन दोउ भ्राता ॥
नरतनु धरे देव ये कोऊ * ब्रज अवतार लियो इन दोऊ ॥
ये हैं सब ब्रजके रखवारे * गाय गोपके राखनहारे ॥
गेंर्दभ रूप असुर इक भारो * ताहि आज हलधर वन मारो ॥
हम सब यमुनातट मुरझाई * तहां कान्ह सब मरत जिवाई ॥

दो०–अब हम काहू डरत नहिं, येहैं हमैं सहाय ॥
बल मोहनके बल फिरत, बन बन चारत गाय ॥
सो०–परत गाढ़ जब आय, तब तब होत सहाय हरि ॥
चिरजीवैं दोउ भाय, यशुमति ये तेरे कुँवर ॥

यशुमति सुनि ग्वालनकी बानी * कह्यो गर्ग सब सत्य बखानी ॥
नित नव चरित सुनत हरिकेरे * हैं कोऊ ये बडन बडेरे ॥
धन्य धन्य ये ब्रजमें आये * धन्य धन्य हम सुन वरि पाये ॥
अतुंलित कर्म दुहुनके जानी * दोउ जननी मनमाँझ सिहानी ॥
श्याम राम दोऊ नँदरानी * लिये लाय छाती हरषानी ॥
भूखे जान तुरत अन्हवाये * षटरस व्यंजन सरस जिमाये ॥
भोजन करि अँचैये दोउ भाई * लीन्हे पान संत सुखदाई ॥

१ कामदेव २ रद्द करता है ३ कान ४ गधा ५ जो तुल न सके ६ कुल्ला आचमन किया

पौढे सेज दास हितकारी * ब्रज जन वासीहैं बलिहारी ॥
चिंतामणि हरि जन सुखदानी * कालीकी चिन्ता उर आनी ॥
ग्वाल गाय नित वनको जाहीं * दुख पावत काली दहमाहीं ॥
विषधरको रहवो जलमाहीं * वृन्दावन ढिंग नीको नाहीं ॥
कालिहिकाढि इहां ते दीजे * यमुनाको जल निर्मल कीजे ॥

दो०-यह विचार मनमें करत, भये नींदवश श्याम ॥
यशुमति हरि पौढायकै, आपलगी गृह काम ॥
सो०-खरैं न बोलन देत, घरमें काहूको महरि ॥
बल मोहनके हेत, जागि परैं मति नींदते ॥

शिव सनकादि दिवस निशिध्यावैं * कबहूँ जाको अन्त न पावैं ॥
ब्रह्म सनातन आनँदखानी * सो नँद सदन सोवत सुखदानी ॥
देखो नंद कान्ह अति सोवत * श्रमितै जानि वनके सुख जोवत ॥
मानत नाहिं कहो किन कोऊ * आप हठीले भैया दोऊ ॥
करसों पोंछत शुभग शरीरा * कहियत यहै प्रेमकी पीरा ॥
निजपलका तहँ लियो मँगाई * सोये हरिके ढिंग नंदराई ॥
यशुमति हू पौढी तहँ आई * निशिबीते अधिकी अधिकाई ॥
जाग उठे तब कुवँर कन्हैया * कहाँ गईं मो ढिंगते मैया ॥
सँग सोवत जान्यो बल भाई * अतिही श्याम उठे अकुलाई ॥
जागे नँद अरु महरि यशोदा * हरिको ऐंचिलियो नँद गोदा ॥
काहे झिझकि उठ्यो अनियासा * तुरतहि दीपक कियो प्रकासा ॥
सपने गिरो यमुन जल जाई * काहू मोको दियो गिराई ॥

१ घर. २ सुखदायक. ३ थके हुये.

दो०–नित प्रति मैं बरजत रहौं, तू हठि यमुनाजाय ॥
सुधि रह गई अन्हानकी, जिन हौं लाल दराय ॥

सो०–कोरे ले नँदराय, पौढाये निज संग तब ॥
वृंदावन तू जाय, किहि कारण जित तित फिरत ॥

अब तू वृन्दावन जनि जाई * तहाँ कौनधौं रहत बलाई ॥
सोये दंपति बीच कन्हाई * तुरतहि गई नींद फिर आई ॥
सपनो सुनि जननी अकुलानी * कहत नंदसों यशुदारानी ॥
देख्यो मैं यह स्वप्न कन्हाई * या झगरे जीवन दोउ भाई ॥
यहै यत्न इनको अब कीजै * गाय चरावन जान न दीजै ॥
गृहसपति द्वै तनय दुठौना * इनहीं लौं बल भोग ठठौना ॥
ये वन जात चरावन गैयाँ * हँसी करत ब्रज लोग लुगैयाँ ॥
दंपति आपसमें इहि भाँती * करत विचार बीति गइ राती ॥
तारागण सब गगन छिपाने * गयो तिमिर अरुण नियराने ॥
उठि यशुमति लागी गृहकाजा * भूलिगयो निशि शोच समाजा ॥
प्रात न्हान यमुना तिय जाइ * नदहि तुरतहि दियो उठाइ ॥
मथन हारि ग्वालिनि सब जागीं * जिन तिन दही बिलोवन लागीं ॥

दो०–हरिप्यारी सुरभीनको, जम्यो सुदधि बिलगाय ॥
सो हरि हित माखन लिये, मथनि यशोदा माय ॥

सो०–सदमाखन निज पानि, मथन सुरत मथनी धर्‌यो ॥
यह भागिनि नँदरानि, माखन प्यारे लाल हित ॥

---

१ पीयूष २ उगार ३ आकाश ४ पान ५ हाथ

लगी जगावन हरिको जाई * उठहु तात माता बलि जाई ॥
प्रगट्यो तैरणि किरण महि छाई * खोलि देहु मुख कमल कन्हाई ॥
सखा द्वार सब तुमहिं बुलावैं * तुम कारण सब धाये आवैं ॥
उठि तिनको मिलिकै सुख दीजै * होत अवार कलेऊ कीजै ॥
तब हरि उठिकै दरशन दीनो * माता निरख मुदितै मन कीनो ॥
दाऊ जू कहि श्याम पुकाऱ्यो * नीलांबरगहि मुखतें टाऱ्यो ॥
मनु घनतें शशि भयो नियारो * प्रगट्यो सुन्दर मुख उजियारो ॥
हँसत उठे सुन्दर दोउ वीरा * गौर श्याम अति सुभग शरीरा ॥
शयन भवनतें बाहर आये * लखि दोउजननि परमसुख पाये ॥
दँतवनलै दोउअन कर दीनी * चौकी बैठि मुखारी कीनी ॥
मातन निज निज कर मुख धोयो * नयननकी आरस सब खोयो ॥
अँचरनसों मुख कमल अँगोछे * उर लगाय सब अंगन पोछे ॥

दो०–करहु कलेऊ लाल दोउ, तब कहुँ बाहर जाउ ॥
मथ्यौ तुरत मीठो मधुर, माखन रोटी खाउ ॥

सो०–दई दुहुनको मात, रोटी अरु माखन मधुर ॥
हरपि परस्पर खात, माता अंतर हेतु लखि ॥

अथ कालीदमनलीला ॥

ऋषि नारद हरि भक्त सयाने * प्रभुके मनकी रुचि पहिचाने ॥
गावत गुण हरि परम हुलासा * गये तुरत मथुरा नृप पासा ॥
देखि कंस आदर अति कीनो * करि दंडवत वरासन दीनो ॥
नारद कह्यो कुशल नृपराई * कछुक शोचवश परत लखाई ॥
तुम प्रताप मुनि कुशल सदाई * एक शोच मोहिं बड़ो गुमाईं ॥

१ सूर्य २ प्रसन्न ३ मेघसे

ये दोउ मनमें नंदकुमारा * जानि परत मोहिं कोउ अवतारा ॥
महत जिन्हें बलराम कन्हाई * तिनकी गति मति जानि न पाई ॥
तृणावर्त्तसे दैत्य पठाये * सो उन पल इक मांहिं नशाये ॥
बकी पठाय दई पहिलेहीं * ऐसनको बल सब लैलेहीं ॥
उनते भयो नहीं कछु काजा * यह सुनिसमुझि होत मोहिं लाजा ॥
अब मुनि तुम कछु कहहु विचारा * जिहि विधि मारहुँ नंदकुमारा ॥
मुनि हरिके गुण नीके जाने * सुनि नृप वचन मनहिं मुसकाने ॥

दो०–तब बोले मुनि नृपतिसों, सत्य कही तुम तात ॥
ये दोऊ अवतार हैं, इन गति जानि न जात ॥

दो०–हैं ये तुम्हरे काल, प्रगट भये ब्रज आयकै ॥
नंदगोपके बाल, तुम इनको राखो मतिहि ॥

एक बात मेरे मन आवै * कहहु कंस तुमको जो भावै ॥
काली अहि रह्यो यमुना आई * तहां कमल फूले बिपुलाई ॥
फूल तहांते मांगि पठावहु * दूत पठै नंदहि डरपावहु ॥
यह सुनि जाके लोग डरे हैं * यहै बात बेऊ सुनि पैहैं ॥
जैहैं अवसि फूलके काजा * तहाँ घात करिहै अहिराजा ॥
यह सुनि कंस बहुत सुख पायो * भली मंत्र मुनि मोहिं बतायो ॥
धनि धनि कहि पुनि २ शिरनायउ * हरषि चले मुनि हरि गुण गावन ॥
तबहिं कंस इक दूत बुलायो * ब्रजहिं नंदपै पत्र पठायो ॥
दीनो ताको कंस लिखाई * कहियो यहै नंदको जाई ॥
कोटि कमल कालीदह केरे * पहुँचावहु लै प्रातहि सबेरे ॥

---

१ मान लिये २ राजा ३ लिखा ४ बहुतसे

कंसराज अति काज मँगाये * वनिहै तुमको तुरत पठाये ॥
चल्यो दूत आतुर ब्रज धाई * आनि लई सब कुँवर कन्हाई॥
दो०–आप रहे ता दिन घरहिं, वनहि पठाये ग्वाल ॥
ब्रजवासी जनके सुखद, ब्रजजीवन नँदलाल ॥
सो०–दूतहि आवत जान, आप गये बहराय हरि ॥
सुन्दर श्याम सुजान, खेलत ग्वालन संग मिलि ॥
आये नन्द यमुन जल न्हाये * पैठत सदन छींक भइ बाँये ॥
महर मलिन मन अशकुन जान्यो* आज कहा उर शोचै समान्यो॥
तबहीं चल्यो दूत जब आयो * नंद महर घरहीमें पायो॥
बोललिये पाँती कर राखी * नृपकी कही मुखागर भाखी ॥
कालीदहके फूल मँगाये * ता कारण अति डाट पठाये ॥
जो नहिं मोको फूल पठावहु * ता कोउ ब्रजमें रहन न पावहु ॥
गोप नन्द उपनन्दजितेका * डारौं मार न राखौं एका ॥
जो नहि काल्हि कमल मैं पाऊँ * तौ दोउ सुत तेरे बाँधि मँगाऊँ॥
यह सुनि नन्द भये मुरझाई * और गोप सब लिये बुलाई ॥
तिन सबको सब बात सुनाई * परी आय यह अति कठिनाई ॥
कोटि कमल कालीदहमाहीं * कहौ कौन धौं काढ़न जाहीं ॥
कह्यो फूल जो काल्हि न पाऊँ * तो सुत तेरे बाँधि मँगाऊँ ॥
दो०–मेरे सुत दोउ नृपति उर, खटकत हैं दिनरात ॥
आज कही यह बातसो, बल मोहन पर घात ॥
सो०–चढ़िहै ब्रजपर धाय, काल्हि कंस अति कोप कर ॥
बन्यो मरण अब आय, को राखै कित जाइये ॥

---

१ शोच. २ चिट्ठी. ३ सबन. ४ छाती.

मुहिं अपने जियको डर नाहीं * शोच श्याम बलको उरमाहीं[2] ॥
अब उबार देखियत नहि कोई * बल मोहनहि राखि को गोइ[3] ॥
वरु मोहि राखै बाधि नृपाला * रहैं सदन[4] बल मोहन लाला ॥
नन्द वचन सुनि सब ब्रजवासी * भये दुखित मन परम[5] उदासी ॥
काहू पै कछु बात न आई * अति भय त्रसित[6] गये मुरझाई ॥
चकित महा ब्रजवासी ठाढे * मानहुँ चित्र चित्र लिखि काढे ॥
नन्दघरन ब्रजनारि विचारैं * अति व्याकुल नयनन जल ढारैं ॥
ब्रजहि बसत सब जन्मसिरान्यो * इहि विधि कस न कबहुँ रिसान्यो
कालीदहके फूल मँगाये * कहा कौन विधि जातसो पाये ॥
अतिहि शोचवश सब नर नारी * भये कम भय बहुत दुखारी ॥
कोउ कह शरण चलो सब नाहीं * शरण गये कहिये कछु नाहीं ॥
कोउ कह देहु जितो धन चाहै * ऐसे सब मिलि बुद्धि उपाहैं ॥

दो०–यहे शोच सब मिलि पगे, नहीं कहूँ निरवार ॥
ब्रज भीतर नँद भवनमे, घर घर यही विचार ॥

सो०–अन्तर्यामी जानि, खेलत ते आये घरहिं ॥
देखतही नँदरानि, द्रुग भर लिये लगाय उर ॥

चितवन माता कुँवर कन्हाइ * बूझत कत रोवत दुख पाई ॥
बूझहु जाय तात सों बाता * मैं बलि जाउँ बदनजलजाता ॥
तुमहीं काज कम अकुलाई * बाहर मत कहुँ जाहु कन्हाई ॥
जाय तातको शोच मिटावो * अपने मधुरे वचन सुनावो ॥
आयो श्याम नदपै धायो * जान्यो मात पिता दुख पायो ॥

१ दाऊजीका २ हृदयमें ३ छिपाकर ४ घर ५ बहुत ६ दुखी
७ लिखीन ८ हृदयके भीतरकी जाननेवाले ९ नेत्र १० कमलसमान मुख

बूझत नदहि कुवर कन्हैया * तात दुखित यत तुम अरु मैया
मोसों बात कहो किन सोई * कहा शोचवश हो सब कोई ॥
नदलाल कैनिया बैठारे * कहा कहाँ तुमसों मैं प्यारे ॥
जबते जन्म भयो सुत तेरो * करत कंस तुमसों अरुझेरो ॥
केतीवेरवर टरीं तुम्हारी * कुलदेवन कीही रखवारी ॥
प्रथमहा अधमै पूतना आइ * शकट तृणा पुनि आयो धाइ ॥
वत्सवका अघ पुनि दुख दीन्हों * सबते तोटि राखि विधिलीन्हों ॥

दो०–कालीदहके फूल अब, पठये भूप मँगाय ॥
सबते यह गाढ़ी परी, को करि लेय सहाय ॥

सो०–जो नहि आवैं फूल, लिख्यो कंस मोहिं डाटिकै ॥
करो ब्रजहि निर्मूल, बाधि मँगाऊ तव सुतन ॥

बाबा तुम काहे दुख पावै * कहत कौन धौं करे सहाई ॥
सो देवता मन्दिरके माहीं * रहत हमारे संग सदाहीं ॥
कीन्हों जिन सब ठौर बड़ाई * करिलेहै सोइ देव सहाई ॥
सोई कमहि फूल पठैहै * ब्रजवासिनको शोच मिटैहै ॥
यम केशी गहि सोई मारे * असुर मारि भूभार उतारै ॥
सब मिलि सोई देव मनावो * अपने मनते शोच मिटावो ॥
सुनत महर हरि मुखरी वानी * भये सुखी धीरज उर आनी ॥
इष्टदेवको शीश नवायो * जहा तहा तुम श्याम बचायो ॥
शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी * अबहू करहु सहाय हमारी ॥
नाते कम नास मिटि जाई * रहैं सुखी बलराम कन्हाई ॥

१ गोदी २ नीच ३ पापी ४ जन्मदिन ५ बालते ६ पृथिवीका बोझ ७ कुलदेवता

मात पितहि हरि इहि ढगलाई * आप चले खेलन हरषाई ॥
सखन मध्य गये कुवर कन्हाई * कह्यो खेलिये गेंद मँगाई ॥

दो०—श्रीदामा यह सुनतही, गयो धाम निज धाय ॥
अपनी गेंदले आयके, दीन्हीं हरिको आय ॥

सो०—चलो खेलिये धाय, बाहर घोषै निकासिकै ॥
जहँ कोउ आय न जाय, गेंद खेल बनिहै तहाँ ॥

सखन संग लै बाहर जाई * रच्यो गेंदको खेल कन्हाई ॥
इक मारत इक भाजत जाहीं * रोकलेत इक बीचहि माहीं ॥
आपस माहि परस्पर मारैं * नाना रँग करिकै किलकारैं ॥
भाजत मारत दूजो जाहीं * मारत धाय बहुरि सो ताहीं ॥
श्याम सखनको खेलत माहीं * यमुना तट तन लीन्हे जाहीं ॥
आपहु जात चमलक ख्यालन * सखा संग लीन्हें सब ग्वालन ॥
को जानहिं यह हरिके ख्याला * यमुना निकट गये सब ग्वाला ॥
श्याम सखाको गेंद चलाई * अंग मोर सो गयो बचाई ॥
परी गेंद यमुना जलमाहीं * ह्वै गयो खेल भंग तिहि ठाहीं ॥
पकरी धाय फेंट श्रीदामा * मेरी गेंद देहु तुम श्यामा ॥
जान बूझ तुम गेंद गिराई * बनिहै दीन्हें गेंद मँगाई ॥
और सखा मोको मति जानो * मोसों मतिहि ढिठाई ठानो ॥

दो०—सखा हँसत सब तारिदे, भली करी तुम कान्ह ॥
दीन्हीं गेंद बहाय जल, देहु श्रीदामहिं आन्ह ॥

सो०—सकल लोक शिरताज, पार न पावैं ब्रह्म शिव ॥
ताहि गेंदके काज, फेंट पकरि झगरत सखा ॥

१ धाम २ घर ३ ब्रज

छाँडि देहु मेरि फेंट सुदामा * रारि बढावत थोरेहि कामा ॥
बदले गेंद लेहु तुम मोसों * फेंट न गहौं कहौं मैं तोसों ॥
छोटो वडो न जानत काहू * करत बराबर पकरत बाहू ॥
हम काहेको तुमहिं बराबर * तुम उपने अब बडे नंदघर ॥
ऐसे हम अब गये बिलाइ * तुमहु बराबर नाहिं कन्हाई ॥
सुनहु श्याम हम तुम इक जोटा * कहा भयो तुम नंदके ढोटा ॥
गेंद दियेही बनै मँगाइ * मोसों चलिहै नाहिं ढिठाई ॥
मुँह सँभारि बोलत नहिं मोसों * करिहौं कहा धुताई तोसों ॥
पुनि पुनि करत बराबर धाई * तैं नहिं जानत मोरि धुताई ॥
प्रथम पूतना शकटा मार्‍यो * कागासुर अरु तृणा पछार्‍यो ॥
वत्स बकासुर बनके माहीं * मार्‍यो सो कछु जानत नाहीं ॥
अघ मार्‍यो पुनि देखत तोहीं * ऐसो धूतन जानत मोहीं ॥

दो०–तुम मारे सो साँच सब, कतही लाल डराहु ॥
कंस कमल अब देहु तन, हमहिं मारियो जाहु ॥

सो०–कालिहहि परिहै जानि, पकरि मँगैहै कंस जब ॥
देत फूल किन आनि, बहुत अचकरी करि रहे ॥

साँच कहौं मैं सुनु श्रीदामा * आयो यहाँ फूलके कामा ॥
कितक बापुरो कंस बतायो * जाके भय तुम मोहिं डरायो ॥
केरीं पकरि गहि ताहि पछारौं * देखहुगे तुम देखत मारौं ॥
कोटि कमल तिहि आज पठाऊँ * सजके तावो नाँस नशाऊँ ॥
कालीदह जल पियत मरे सब * गहि ल्याऊं सोई काली अब ॥
लीन्ही रिस करि फेंट छुड़ाइ * चढे कदम पर धाय कन्हाइ ॥

---

१ झगड़ा २ बाँह ३ लोप ४ बेटा ५ धूर्तता ६ बाल ७ गय

दो०–चली रसोई करन हों, छींक भई मुहिं आज ॥
आगे है माँजारि पुनि, गई दूसरे भाज ॥

सो०–तयते मोजिय शोच, हरियों खेलत हैं कहां ॥
समुझ कंस कृत पोच, मेरे मनमें त्रास अति ॥

नन्द कहत पैठत घरमाहीं * मोहि शकुन नीके मे नाहीं ॥
आज कहा यह समुझि न जाई * हैं धौं कित बलराम कन्हाई ॥
महरि महर मन त्रास जनाई * खोजत हरिहि चले अकुलाई ॥
सखा सकल हरि अंतर धाये * रोवत ब्रजहि पुकारत आये ॥
महरि महर सों आय जनाई * यमुना बूडे कुँवर कन्हाई ॥
सुनि दम्पति बूझत अकुलाई * कैसे कहां कहो समुझाई ॥
खेलत कदम चढे हरि धाई * कूदि परे कालीदह जाई ॥
सुनतहि परी धरणिमहँ मैया * कीनो सपनो सत्य कन्हैया ॥
रोवत नन्द यमुन तट आये * बालक सब नंदहि संग धाये ॥
ब्रज घर जहां तहां यह बाता * ब्रजवासी धाये बिलखाता ॥
कहां पऱ्यो गिरि कुँवर कन्हाई * दई बालकन ठौर बताई ॥
त्राहि त्राहि करि नद पुकारे * गिरे धरणि नहि अंग संभारे ॥

दो०–लोटत अतिध्याकुल धरणि, परन चलत जल धाय ॥
कहत श्याम तुम दियो दुख, मोको बैर्स चुहाय ॥

सो०–लोग उठे सब रोय, दीन वचन सुनि नंदके ॥
कहत विकल सब कोय, हरि तुम ब्रजसूनो कियो ॥

नन्दहि गिरन सदहि गँहि राख्यो * ताक्षणको दुख जात न भाख्यो ॥

१ भय. २ बीच. ३ नद-यशोदा. ४ गेते पीटते ५ पृथ्वी. ६ उमर. ७ पकडकर.

नीचे सखा हंसन सब लागे * श्रीदामाके डर हरि भागे ॥
रोय चले श्रीदामा घरको * जाय कहत मैं महरि महरको ॥
टेरत कहि कहि सखा कन्हाई * लेहु गेंद मैं ल्यावत जाई ॥
यह कहि नटवर मदन गोपाला * कूदि परे जलमें नँदलाला ॥
हाय हाय करि सखा पुकारे * भये श्यामबिन बहुत दुखारे ॥
रोवत चले ब्रजहिं सब धाई * श्रीदामाको दोष लगाई ॥

दो०–कोमल तनु अति साँवरो, साजे नटवर साज ॥
जलमें पैठि गये तहां, जहँ सोवत अहिराज ॥

सो०–यहि अंतर हरिमाय, भूखे ह्वै हैं जानि हरि ॥
खेलत ते अब आय, मोसों भोजन मांगिहै ॥

यशुमति चली रसोई कारन * तबहीं छींक उठी इक ग्वालन ॥
ठिठकिरही उर शोचत ठाढ़ी * भली नहीं कछु चिंता बाढ़ी ॥
आइ अँजिर[2] निकसी पछिताई * चली बहुच सो दोष मिटाई ॥
माँजीरि[3] तब पंथ कटाई * बहुरो यशुमति बाहर आई ॥
व्याकुल भई निकरि गई द्वारे * कहँ धौ खेलत मेरे बारे ॥
बायें काग दाहिने खर[4] रर्रै * सुनि आई अति व्याकुल फिर घर ॥
क्षण बाहर क्षण आगनमाहीं * टेरत हरिहि शांत मन नाहीं ॥
तबही नंद चले घर आरत * देख्यो श्वानै[5] श्रवंण[6] फट कारत॥
दहिने काहू रोय सुनायो * माथेपर ह्वै काग उडायो ॥
सन्मुख गररी करत लराई * हरे नन्द अशकुन बहुपाई ॥
आये घर मन मलिन विशेखी * व्याकुल मलिन बदन तिय देखी॥
बूझत यशुदहि नन्द डराई * काहे तव मुख गयो झुराई ॥

१ बीच. २ आंगन ३ बिल्ली. ४ गधा. ५ कुत्ता. ६ कान.

दो०-चली रसोई करन हों, छीक भई मुहिं आज ॥
आगे ह्वै माँजारि पुनि, गई दूसरे भाज ॥

सो०-तबते मोजिय सोच, हरिधौं खेलत हैं कहा ॥
समुझ कस कृत पोच, मेरे मनमें त्रास अति ॥

नन्द कहत पैठत घरमाहीं * मोहिं शकुन नीके मे नाहीं ॥
आज कहा यह समुझि न जाइ * है धौं कित बलराम कन्हाइ ॥
महरि महर मन त्रास जनाइ * खोजत हरिहि चले अकुलाइ ॥
सखा सकल इहि औसर धाये * रोवत ब्रजहि पुकारत आये ॥
महरि महर सों आय जनाइ * यमुना बूडे कुवर कन्हाइ ॥
सुनि दम्पति बूझन अकुलाइ * कैसे कहा कहाँ समुझाइ ॥
खेलत कदम चढ़े हरि धाइ * कूदि परे कालीदह जाइ ॥
सुनतहि परा धरणिमहँ मैया * कीनो सपनो सत्य कन्हैया ॥
रोवत नन्द यमुन तट आये * बालक सब नंदहि सग धाये ॥
ब्रज घर जहा तहा यह बाता * ब्रजवासी धाये बिल्खाता ॥
जहां पऱ्यो गिरि कुँवर कन्हाइ * दह बालकन ठौर बताइ ॥
त्राहि त्राहि करि नंद पुकारे * गिरे धरणि नहिं अंग सभारे ॥

दो०-लोटत अतिव्याकुल धरणि, परन चलत जल धाय ॥
कहत श्याम तुम दियो दुख, मोको बैस बुढ़ाय ॥

सो०-लोग उठे सब रोय, दीन बचन सुनि नंदके ॥
कहत विकल सब कोय, हरि तुम ब्रजसूनो कियो ॥

नन्दहि गिरन सबहि गहि राख्यो * ताक्षणको दुख जान न भाख्यो ॥

---

१ भय २ बीच ३ नंद-यशोदा ४ रोने पीटते ५ पृथ्वी
६ उमर ७ पत्क्षर

कहत गोप नदहि समुझाइ * बन्यो मरण सबहीको आइ ॥
हरि बिन को जीवै ब्रजमाहीं * कहौ कान्ह किहि जीवन नाहीं ॥
मोह मगन अति यशुमति मैया * टेरत मेरे लाल कन्हैया ॥
आज कहा तुम बेर लगाई * माखन धर्यो खाउ किन आई ॥
अति कोमल तुम्हरे मुख योगू * जेंवहु लाल लेहुँ मैं रोगू ॥
धौरी दूध धर्यो औटाई * तुम निज कर दुहि गये कन्हाई ॥
सदमाखन अतिहित मैं राख्यो * आज नही तुमने कछु चाख्यो ॥
प्रातहिते मैं दियो जगाई * दँतवन करि जु गये दोउ भाई ॥
मैं चितवन तव पथ कन्हाई * देखत आज अवार लगाई ॥
बैठो आय संग दोउ भैया * तुम जेंवहु मैं लेहुँ बलैया ॥
शोकसिंधु बूडत नँदरानी * तनुकी सुधि बुधि सबै भुलानी ॥

दो०-ब्रजयुवती सुनि महरिके, बचन प्रेम आधीर ॥
अकुलानी रोवत सबै, बढ़ी कठिन उर पीर ॥

सो०-बरजत यशुदहिं ग्वाल, यह कहि कहि हरि हैं भले ॥
सुतै वियोग विकराल, जात नहीं कहि मातको ॥

चौंकपरी तनुकी सुधि आई * रोवत देखे लोग लुगाई ॥
तब जानी दह गिरे कन्हाइ * पुत्र पुत्र कहिकै उठि धाई ॥
ब्रजवनिता सब सगहि लागी * श्याम बियोग बिथा सब पागीं ॥
कान्ह कान्ह कहि सँकल पुकारैं * तोरत लैट उरसों कर मारैं ॥
अति व्याकुल यमुनातट जाइ * गिरी धरणि यशुमति अकुलाई ॥
मुरझि परी तनुदशा भुलाई * प्राण रह्यो हरि सुरति समाई ॥
ब्रजवासी सब उठे पुकारी * जल भीतर कह करत मुरारी ॥

१ टाला २ पुत्र ३ विछोह ४ सन ५ बाल ६ याद

संकटमें तुम करत सहाई * अब क्यों नाहिं बचावत आई ॥
मात पिता अतिही दुख पावैं * रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं ॥
आय गये हलधर तेहि काला * देखी जननी विकल बिहाला ॥
नाक मूंदि जल सींचि जगाई * जैननी कहि कहि टेर लगाई ॥
बार बार जब हलधर टेन्यो * भयो चेत कछु बलनन हेन्यो ॥

दो०—कहत उठी बलरामसों, बनहिं तज्यो लघु भ्रात ॥
कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं, तुमसों क्यों रहिजात ॥

सो०—मगन शोच सर मांझ, कहत लै आवहु कान्ह कोउ ॥
भूखे हैगइ साँझ, आज कान्ह कछु खायो नहीं ॥

कबहुँ कहत बन गयो कन्हाई * कबहुँ बतावन घर समुहाई ॥
कान्ह कान्ह कहि टेर लगावैं * किन खेलत कहि लाल बुलावैं ॥
अतिही मोहविकल नँदरानी * करत बोध हलधर मृदुबानी ॥
कत रोवत तू यशुमति मैया * नीके हैं धर्य धीर कन्हैया ॥
श्यामहिं नेक कहूँ डर नाहीं * तू कत डरपत है मनमाहीं ॥
तेरी सौं मैं कहत पुकारे * वह काहूके मरै न मारे ॥
जनि काली भय होहु दुखारी * तू अपने मन देखु बिचारी ॥
पहिले बकी कपट करि आई * तब दिन दशके हुते कन्हाई ॥
शकटा तृणावर्त्त पुनि आयो * तू देखत हरि तिन्हैं नशायो ॥
बरस बका अघ बनमें मारे * विषजलते सब सखा उबारे ॥
अब वे कालीनाथ लैऐहैं * कमल पठाय कंसको दैहैं ॥
मोहिं भरोसो कान्हर केरो * मानों सत्य कह्यो सुनु मेरो ॥

१ माता. २ सौगंद. ३ मारा.

दो०-मोहिं दुहाई नन्दकी, अवहीं आवत श्याम ॥
नागनाथ लै आवहीं, तौ कहियो वलराम ॥
सो०-सुनि हलधरके वैनै, अति उदार हरिके चरित्त ॥
भयो कछुक उर चैन, जो कछु करहिं सु सोह सव ॥
वाह पकरि वलको वैठाई * लैवलाय उर रही लगाई ॥
अति कोमल तनु धरे कन्हाई * पहुँचे कालीके ढिग जाई ॥
हरिको देखि उरगकी नौरी * रही चारमुख चिह निहारी ॥
कहत कौन तू इत कित आयो * अति कोमल तनु काको जायो ॥
वारहि वार कहति अकुलाई * वेगि भाज इतते कितजाई ॥
देखै नाग जागकै जवहीं * हैहै भस्म क्षणकमें तवहीं ॥
सुनत नाग नारीकी वाणी * वोले हँसि हरि सारँगपाणी ॥
पठयो मोहिं कंस नृपराई * तू याको अव देहु जगाई ॥
कंस कहा तू इनहि वतैहै * एक फूकमें तू जरिजैहै ॥
अजहूं भाजि कह्यो करि मेरो * लगत छोह देखत तनु तेरो ॥
मरहु कस निज तोहिं पठायो * तूकत इहाँ मरणको आयो ॥
बालक जानि दया अति मेरे * दुख पैहैं पितु माता तेरे ॥
दो०-अरी वावरी सर्पसों, कहा डरावत मोहिं ॥
जैसो मैं बालक प्रकट, अवहिं दिखावहुँ तोहिं ॥
सो०-तू किन देत जगाय, देखौं मैं याके वलहि ॥
थापै कमल लदाय, लैजैहौं इहि नाथ व्रज ॥
सुनत वचन अहिनारि रिसानी * छोटे वदँन कहत वडि वानी ॥

१ वचन २ छाती ३ सर्पकी ४ स्त्री. ५ श्रीकृष्ण ६ मोह ७ मुख.

सर्गपतिसों सरवरे जिन ठानी * ताहि कहत नाथन अज्ञानी ॥
देखतही हैहै जर छारा * येतिक तू बपुरो सुकुमारा ॥
बपुरो मोहिं कहत अहिनारी * बोलत नाहिन बात सँभारी ॥
अबहीं तोहिं बपुरि करि डारों * एकहि लात खसम तुव मारों ॥
सोवत काहू मारिय नाहीं * चलि आइ है बात सदाहीं ॥
ताते तू पति देहि जगाई * देखों मैं याकी मनभाई ॥
जो पै तोहिं मरनबुधि आई * तो तूही किन लेत जगाई ॥
तब हरि हरषि ताहि दै गारी * दाबी चरण पूछ अहिवारी ॥
ममरी नेक धरेंणि सो लाई * काली उरग उठ्यो अकुलाई ॥
आयो जानि गरुड भय बाढ्यो * देख्यो बालक आगे ठाढ्यो ॥
तबहि क्रोध करि गर्व बढ़ायो * झटकि पूछ अनि रिसकरि धायो॥

दो०–दाँव घात लाग्यो करन, सहँसों फन फटकार ॥
वारमार फुंकार कर, डारत त्रिपकी झार ॥

सो०–जरत यमुनको नीरं, जात फेन उतरात विष ॥
परसत नाहिं शरीर, अरिमँदमोचन श्यामके ॥

कियो युद्ध बहु उरग अघाई * मुरे नहीं नेकहु यदुराई ॥
कहत परस्पर अहिकी नारी * देखहु यह बालक अति भारी ॥
विषज्वाला जल जरत यमुनको * याके तनु परसत नहिं तनको ॥
यह कछु मंत्र यंत्र धौं जानै * अतिकोमल विष नेक न मानै ॥
सहसौंफनन करत अहिघाता * अबलों बच्यो पुण्य पितु माता॥
तब अहिराज श्याम तन हेरी * कहत पूछँ दाबी इन मेरी ॥

१ गरुड २ बराबरी ३ विचारा ४ पृथ्वी ५ हजार ६ जल
७ शत्रुका गर्व दूर करनेवाले ८ सर्प.

अतिहि क्रोधकरि आतुर धाई * हरिके अंग गयो लपटाई ॥
नखते शिखलौं अहि लपटाई * कहत करी इन बहुत ढिठाई ॥
कौतुकनिधि हरि सब गुणखानी * दियो दावइहि अहिको जानी ॥
तिहि अवसर सुर मुनि गन्धर्वा * अति व्याकुल आये ब्रज सर्वा ॥
उरगनारि मन मन पछिताहीं * हरिको रूप समुझि मनमाहीं ॥
कहँ गर्वकरि अति यह आयो * कालविवश पग इतहि चलायो ॥

दो०-काली हरिसों लिपटके, गर्व कियो मन माँह ॥
कहत मोहिं जानत नहीं, मैं सर्पनको नाहँ ॥

सो०-भंजन गर्व गोपाल, गर्व भरे सुनि अहिवचन ॥
कीन्हो वैपुप विशाल, विकल भयो अहिराजतन ॥

जबहि श्यामतन अति विस्तारो * टूटन लग्यो अग सब सारो ॥
शरण शरण तब उरग पुकारो * मैं नहिं जान्यो रूप तिहारो ॥
जीवदान प्रभु मोको दीजै * अपनी शरण राखि मोहि लीजै ॥
यह वाणी सुनतहि भगवाना * सकुचि गये हरि कृपानिधाना ॥
यहै वचन गैजराजसुनायो * गरुड छाड़ि ताके हित आयो ॥
यहै वचन सुनि द्रुपदसुताको * वैसन बढाय दियो पुनि वाको ॥
यहै वचन सुनि लाक्षागृहते * लीने राखि पाण्डवन जरते ॥
यह वाणी सहिजात न श्यामहि * दीनबन्धु करुणाके धामहिं ॥
लीनो अगसँकोच कृपाल * देख्यो विकल शिथिल जब व्यौंला
पगसों चापि नाक्षधरि फोरी * लीनो नाथ हाथगहि डोरी ॥
कूदिचढे हरि ताके शीशा * मनमन करत विचार अहीशा ॥

१ जल्दी २ रानी ३ शरीर ४ हाथीयोंका राजा. ५ द्रौपदी ६ वस्त्र. ७ सर्प ८ शेषनाग

कालियामर्दन.

मैं यह सुन्यो हतो विधिपाही * कृष्णअवतार होहि ब्रजमाहीं ॥
दो०–ते गोकुलमें अवतरे, मैं जान्यो निरधार ॥
ये अविनाशी ब्रह्म है, ब्रज कृष्णा अवतार ॥
सो०–किये बहुत फन घात, बार बार पछितात मन ॥
अस्तुति करत लजात, रह्यो दीन ह्वै सकुचि अति ॥
देख्यो व्याल निहारु कृपाला * दियो दरश निज दीनदयाला ॥
देखि दरश मन हर्ष बढाई * बोल्यो दीन वचन अहिराई ॥
मैं अपराध कियो बिन जाना * क्षमी नाथ तुम क्षमानिधाना ॥
तामस योनि कीट विष जानो * कौनभांति तुमको पहिचानो ॥
अब कीन्हो प्रभु मोहि सनाथा * दीनो दरश जगतके नाथा ॥
अशरण शरण नाथ तव बाना * कहत सन्त सब वेद पुराना ॥
ते अपराध क्षमा सब कीजै * अब प्रभु शरणराखि मोहिलीजै॥
आज धन्य यह मेरो माथा * जापर चरण दिये मम नाथा ॥
अब ये चरण परसि प्रभु तेरे * मिटे दोष दुख अँघ सब मेरे ॥
जो पदकमल पुनीत तुम्हारे * निशिदिन रहत रमा उरधारे ॥
शिव विरञ्चि सनकादिक ध्यावैं * जे पद योगी ध्यान लगावैं ॥
जे पदपद्म सलिल सुरसरिता * तीन लोककी पावन करिता ॥
दो०–जिन पदपंकज परसते, गति पाई ऋषिनारि ॥
सुर नर मुनि वन्दित तिन्हें, सन्तत प्राण अधारि ॥
सो०–फिरत चरावत गाय, श्रीवृन्दावन जे चरण ॥
भक्तनके सुखदाय, ब्रजवासी जन दुखहरण ॥
जे पदपंकज परम सुहाये * प्रभु मैं आज सुलभ करि पाये ॥

१ ब्रह्मा २ क्रीडा, ३ पाप ४ लक्ष्मी, ५ गंगा, ६ हमेशा. ७ सहज.

गरुड़ त्रासते इत भजिआयो * भल्ला कियो मोहिं गरुड़ सतायो ॥
जाते दरश भयो प्रभु तेरो * अघ भय ताप मिट्यो सब मेरो ॥
आज भयो मैं नाथ सनाथा * गह्यो नाथ मम प्रभु निज हाथा ॥
सुनत दीन कालीकी बानी * दीनबंधु अतिशय सुख मानी ॥
फनप्रति चरणसरोज छुवाये * ताके भव भैताप नशाये ॥
भव भवनाथ भक्तहितकारी * यह अपने मनमाहिं विचारी ॥
कालीसों अस वचन दिजये * कमल भारे पाये लै जैये ॥
है है भवके लोग दुखारी * करौ नाथ अब तिनहिं सुखारी ॥
कमल कंसको देउ पठाई * काल्हि चढ़ै गो ब्रजपर आई ॥
लीन्हे अहिपर कमल लदाई * चले ब्रजहि भगजन सुखदाई ॥
लियो नाथ गहि अहि उचकाई * फनपर ठाढ़े कुंवर कन्हाई ॥

दो०—उरगनारि कर जोरि कै, प्रभुके सन्मुख आय ॥
करत विनय अति दीनह्वै, पतिहित हरिहि सुनाय ॥

सो०—इत यशुमति उरमाहिं, उठी लहर अति प्रेमकी ॥
कान्हर आयो नाहिं, कहत रोय बलरामसों ॥

कहत राम सुनु यशुमतिमैया * अबही आवत कुंवर कन्हैया ॥
नेक धीर धर मति अकुलाई * यह सुनिकै बलैनी बलिजाई ॥
पुनि यह कहत याद नाहिन अब * झूठहिं मोहिं प्रबोधै करत सब ॥
भई विनासुत व्याकुल मैया * कहत कहाँ मेरो बाल कन्हैया ॥
गिरि धरणी व्याकुल मुरझाई * रोयउठे सब लोग लुगाई ॥
व्रजवासी सब भये बिहाला * कहत कहा मोहन नँदलाला ॥
तुम बिन यह गति भई हमारी * आवत नहीं धाय बनवारी ॥
प्रातहिते जल्मांहा समाने * तुमहिं बिना दुखयाम बिहाने ॥

१ दुख २ वाम्रा ३ कालीनागकी स्त्री ४ बलरामजी ५ ज्ञान ६ चारपहर

अबको वस जाय ब्रजमाहीं * धृग धृग जीवन तुमहिं बिनाहीं ॥
अति व्याकुल रोवत नँदराई * बिकल मनहु फणि मणी गँवाई ॥
यशुमति धाय चलत जलमाहीं * राखति ब्रजयुवती गहि बाहीं ॥
हलधर सबहिनको समझावैं * बिना श्याम कोउ धीर न पावैं ॥

दो०–कहत यशोदा नन्दसों, धृग धृग बारहिं बार ॥
और किते दिन जियहुगे, मरत नहीं मोहिं मार ॥

सो०–कर देखहु मन ज्ञान, ऐसे दुखमें मरण सुख ॥
नन्द भये विन प्रान, मूर्च्छि परे सुनि तियवचन ॥

तबहि धाय बल पिता जगायो * बारबार कहि कहि समुझायो ॥
वृथा मरत काहे सब कोई * कान्हैर मारनहार न कोई ॥
हलधर कहत सुनहु ब्रजवासी * वे अन्तर्यामी अविनाशी ॥
सब गुणसागर आनन्दराशी * रमासहित जलहीके वासी ॥
मेरो कह्यो सत्य करि मानो * आवत श्याम धीर उर आनो ॥
यमुनाके भीतर निहिकाला * उठ्यो सलिल झक झोर विशाला ॥
बोलि उठे आतुर बलरामा * वे देखो आवत घनश्यामा ॥
सुनत वचन लखिके उठि धाये * यमुनानीर तीर सब आये ॥
कोउ जलमें कोउ बाहर ठाढे * दरशातुर विरहानल बाढे ॥
प्रगट भये जलते तेहि काला * ब्रजजन जीवन नँदके लाला ॥
कमल भार काली पर लीन्हे * नटवर भेष मनोहर कीन्हे ॥
भये सुखी सब ब्रजके वासी * लखि हरिवदन परम सुखरासी ॥

छं०–हरिवदन लखिके राशि सुखकी मुदित ब्रजवासी भये ॥
मनहुँ बूडत नाव पाई परम उर आनँद छये ॥

---

१ श्रीकृष्ण २ दाऊजी ३ जलदीगे. ४ प्रगट

मात पितु लगि जो भयो सुख तात सो कापै कह्यो ॥
पुलकतन मन हरपि गदगद प्रेमजल लोचन बह्यो ॥
धन्नि हरितन लसत इकटक मिलनको आतुर हियो ॥
श्याम निरतत अहिफननपर सौर चन्दनतनु कियो ॥
श्रवण कुण्डल लाल लोचन चारु मुकुट विराजहीं ॥
मनहुँ मरकत गिरिशिखर मणि मोर तापर राजहीं ॥
पीतपट कटिकाछनी उर माल मणिभूपण सजे ॥
नृत्य ताण्डव करत पग ध्वनि व्योमेंवि दुन्दुभि बजे ॥
भइ जयध्वनि गँगन वर्पहिं सुमनं सुर आनँद भरे ॥
गन्धर्व गुणगण गगन गावत तान तालन अनुसरे ॥
उरगनारी श्याम सन्मुख करत अस्तुति आवहीं ॥
नाथ अब अपराध क्षमि कर कर कृपा पति पावहीं ॥
राखे चरण निज शाश याके अति बडाइ इन लइ ॥
ऐसा बडाइ औरको प्रभु नाहिं तुम कबहूँ दइ ॥
शेष इक ब्रह्माण्ड भरि गिर राखि मन गर्वित कियो ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड तवतन अधिक इन यह भारलियो ॥
सुर असुर नर नाग खग मृग कीट जन सब रौंवरे ॥
क्षमिय अब अपराध अहिके सुभग सुन्दर साँवरे ॥

दो०-सुनि अहिनारिनके वचन, करुणामय यदुराय ॥
उतरि पर अहिशीशतें, यमुनाके तट आय ॥

---

१ पन्नमरकत मणि २ आकाश ३ आकाश ४ फूल ५ प्यार

सो०–तटपर कमल धराय, कालीको आयसु दियो ॥
उरगद्वीप अब जाय, करहु बास निर्भय[1] सदा ॥

तब काली कह सुनहु कृपाला * तब वाँहन डर डरत विशाला ॥
धनि ऋषि शाप दियो है ताहीं * ताते आय सकत ह्यां नाहीं ॥
तब मैं भागि बच्यो इत आई * नातर लेत मोहिं सो खाई ॥
चरण चिह्नलखि तव फण मेरे * परिहै गरुड़ आय पग तेरे ॥
तू अब मति खगपतिहि[2] डराई * अपने द्वीप करहु सुख जाई ॥
याते वडो कौन सुख नाथा * अभयदान पद परस्यो माथा ॥
जे पदकमल भजन परतापा * जन प्रह्लाद मिटे सैंताया[3] ॥
ते पदचिह्न शीशपर धारी * नम्र जमको भयो सुखारी ॥
उरगिनसहित नाइ पद माथा * गयो उरगद्वीपहि अहिनाथा ॥
जैजै ध्वनि नभ सुरन बखानी * धन्य धन्य जनके सुखदानी ॥
शरण राखि काली अहि लीन्हों * जलते काढ़ि कृपा करि दीन्हों ॥
फनपर चरण चिह्न प्रगटाई * कठिन गरुड़की त्रास[4] मिटाई ॥

दो०–धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि, मुदित[5] सुमन वर्षाय ॥
गये देव निज निज सदन[6], हृदय परम सुख पाय ॥

सो०–द्वीप पठायो व्याल, सुरगण सुर लोकहि पठे ॥
आयो निकसि गोपाल, ब्रजवासी जन सुखकरन ॥

धाय मिले सगरे ब्रजवासी * विरह[7] ताप तनुरी सब नाशी ॥
माता दौरि चण्ठलपदानी * पुलकरोमतन गद्गदवानी ॥
नयन नीर अति प्रेम अधीरा * उरलगाय मेटत उर पीरा ॥
कहि कहि मेरो बाल कन्हैया * दुहूँ करन सों लेत बलैया ॥

---

१ भयरहित २ गरुड ३ दुख ४ भय ५ प्रसन्न ६ घर ७ वियोग

धाय नन्द उरसों लै लाये * गये प्राण मानहु फिरि आये ॥
गद्गद बैन नयन जल ढारो * कहत लाल गिरि गयो तुम्हारो ॥
बार बार उरसों लपटावत * लागत उरकी ताप नशावत ॥
प्रेमातुर देखी जब माता * मिले रोहिणीसों सुखदाता ॥
निरखि बदन यह यशुमति मैया * मैं बरजौं निज तुमहिं कन्हैया ॥
यमुनातीर न्हान मति जाहू * तुम बरजो मानत नहिं काहू ॥
मैं निशि स्वप्नमाहिं डरान्यो * सोइ यहू आय प्रकटान्यो ॥
जय जयकारे फूल मगाये * ब्रजवासी सब अतिहि डराये ॥

दो०—मैं गेंदहि खेलत यहां, आयो यमुनातीर ॥
मोहि डारि काहू दियो, कालीदहके नीरे ॥

सो०—देख्यो उरग विशाल, जाय तहाँ मैं डरो अति ॥
तब पूँछ्यो मोहिं ब्याल, किन पठयो तोको इहाँ ॥

तब ऐसे मैं ताहि बतायो * कमलकाज मोहिं कंस पठायो ॥
यह सुनतहिं अहि उठ्यो डराई * मोको फनपर लियो चढ़ाई ॥
कमल लियो निज पीठ लगाई * आपुहि आय गयो पहुँचाई ॥
ऐसे जननी बोधे कृपाला * सुनत वचन सब व्रजकी बाला ॥
है है हरिको उरसों लावैं * कठिन विरहकी शूल मिटावैं ॥
श्याम बिना बहुतै दुख पायो * सो हरि तिनको ताप नशायो ॥
खड़े सखा सब आरत बाढ़े * प्रेमातुर मिलवेको ठाढ़े ॥
गये दौरि निज धाम कन्हाई * मिले धाय सब कण्ठ लगाई ॥
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया * जो तुम कह्यो कियो सोइ भैया ॥
तुम हौ सब व्रजके सुखदानी * हम मारिहौ तुम हम जानी ॥

---

१ नष्ट करतहैं २ जल ३ समझाकर ४ पीड़ा

कहा भयो जो तुमही वैरे * है तुम्हरे गुण सबते न्यारे ॥
भलो यदपि सिहनको छोटो * कौन काज गजलम्बो मोटो ॥

दो०–तुम हम पर रिस करि गये, सो अब देहु भुलाय ॥
यह सुनतहि हरि हँसि उठे, मिले बहुरि हर्षाय ॥

सो०–जब हलधर अरु श्याम, मिले निहँसि दोउ मनहिं मन
निरखि मगन नरवाम, भेद न कोऊ आनहीं ॥

सब कोउ कहत धन्य बलरामा * तुम जो कही करी सोइ श्यामा ॥
तब हरि कह्यो नन्दसों जाई * मेरे मनहि बात यह आई ॥
आन बसैं सब यमुनातीरा * अति रमणीक सुगन्ध समीरा ॥
यहा कीजिये भोग विलासा * होत प्रात सब चलहि अवासा ॥
कमल पठाय कसको दीजे * सुनहु तात अब विलँब न कीजे ॥
गोप जाय आवैं पहुचाई * काल्हि चढे नतु ब्रजपर धाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुख पायो * सब ब्रजवासिनके मन भायो ॥
तुरत ग्वाल बहु घरन पठाये * षट्रस भोजन बहुत मँगाये ॥
यमुनातीर गोप समुदाई * भोजन कियो बहुत सुख पाई ॥
नन्दराय तब शकट मँगाये * कोटि कमल तिनपर लदवाये ॥
बहुत भार दधि घृतके कीन्हे * ते अतिरन बाँधे धर लीन्हे ॥
अपनी सरजे गोप सुहाये * तिनहिं संग करि नृपहि पठाये ॥

दो०–बहुत विनय करि कसको, दीन्हो पत्र लिखाय ॥
कहियो मेरी ओरते, नृपसों ऐसी जाय ॥

सो०–गयो कमलके काज, कालीदह मेरो सुँवन ॥
तुव प्रतापते राज, आप गयो पहुँचाय अहि ॥

१ छोटे २ सुद ३ स्त्री ४ पवन ५ घर ६ छकड़ा ७ पुत्र ८ सर्प

कोटि कमल नृप मांगि पठाये * तीनिकोटि तहँते हैं पाये ॥
सो राखे जल माँझ सजाई * आयसु होय तो देहुँ पठाई ॥
तब गोपनसों कुँमर कन्हाई * ऐसे बोलि उठे मुसुकाई ॥
नृपसों लीजो नाम हमारो * यह कारज हम कियो तुम्हारो ॥
कमल शकट दधि धनके भारा * चले गोपले नृपके द्वारा ॥
राजद्वार शकटन पहुँचाई * जाय पौरियन खबरि जनाई ॥
तुरत पौरिया भीतर धाई * समाचार सब नृपहि सुनाई ॥
सुनत बात यह मनहिं डरान्यो * आप निकसि आयो अतुरान्यो ॥
देखी शकट भीर अति भारी * भयो चकित सुधिबुद्धि बिसारी ॥
कमल देखि भय भयो बिशाला * लगे ताहि मनो व्यौल कराला ॥
नन्द विनय तब गोपन भाषी * दीनो पत्र भेट सब राषी ॥
गोपन बहुरि कह्यो नृपराई * नन्दसुवन यह कह्यो कन्हाई ॥

दो०–हम कालीदह जाय यह, कियो राजको काम ॥
नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम ॥

सो०–सुनत श्याम सन्देश, देखि कमल अति भयविकल ॥
भीतर गयो नरेश, मन बाढ़ी चिन्ता विपुल ॥

मनहीं मन यह करत विचारा * यामें मेरो नाहिं उबारा ॥
दैत्य गये ते सबहि नशाये * काली ते ऐसे बचि आये ॥
ताहीपर कमलन लै आये * सहस शकट भरि मोहिं पठाये ॥
कबहुँ कहत गोपनको मारों * इनको ह्वाते तुरत निकारों ॥
फेर कछू मनमें भय पावै * यतन विचार न कछु बनि आवै ॥
पुनि सँभारि धीरज उन कीन्हो * गोपन बोलि भीतरहि लीन्हो ॥

१ छकड़ा. २ सर्प. ३ छुटकारा.

हृदय दुखित ऊपर सुखमानी * परिहाये दीने मनमानी ॥
सरोपाव नन्दहुको दीन्हो * कहियो काज बडो तुम कीन्हो ॥
तेरे सुत बलराम कन्हाई * एक दिवस देखिहौं बुलाई ॥
यह सुनि अति पुरुषारथ कीन्हो * कालीदहके फूलन लीन्हो ॥
यह कहि विदा किये सब ग्वाला * भयो कंस उर शोच विशाला ॥
मनही मन सोचत हरिके गुन * रह्यो काठ ज्यों भीतरही घुन ॥

दो०–तब दावानल बोलिके, कह्यो मरमं सब ताहि ॥
देखौं मैं तेरे बलहि, तू अब ब्रजको जाहि ॥

सो०–जाय कीजियो छारं, ब्रज सब ब्रजवासिनसहित ॥
बचहिं न नन्दकुमार, ऐसो यत्न विचारि उर ॥

दावानल सुनि नृपकी बानी * चल्यो रिसाय गर्व उर आनी ॥
करौं भस्म इक पलमहँ जाई * सहित गोप नँदसुवन कन्हाई ॥
नृपको काज आज करि आऊँ * जो कहुँ एक ठौर सब पाऊँ ॥
इहाँ गोप कमलन पहुँचाई * आये यमुनतीर हर्पाई ॥
नन्द तुरत सब निकट बुलाये * सुनत सकल ब्रजजन जुरिआये॥
गोपन कही नन्दसों आई * लिये कमल नृप अति सुख पाई ॥
दियो हर्ष तुमको पहिरायो * मुदित नन्द लै शीश चढ़ायो ॥
अपने सब पहिराव दिखाये * लखि सब ब्रजवासिन सुख पाये॥
हरिको नाम सुन्यो जब राजा * हरषि कह्यो कीनो उन काजा ॥
इक दिन बल मोहन दोउ भाई * देखहुँगो मैं इहाँ बुलाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुख पायो * हरषि भूप मो सुतन बुलायो ॥
करी कृपा अति नृप हरिपाहीं * सब नर नारि हरषि मनमाहीं ॥

१ भेद २ राख ३ प्रसन्न

दो०-कहत श्याम बलरामसों, हँसि हँसिकै यह बात ॥
नृप हम तुम देखन लिये, क्यों बुलावन तातै ॥

सो०-मज्जन परम हुलास, इक सुख हरि अँहिते बचे ॥
मिल्यो कमलको ग्रास, दुतिय कमल पठये नृपहिं ॥

अथ दावानलवर्णनलीला ॥

यहिविधि ब्रजजन अति सुखपायो * खान पान करि दिवस बितायो ॥
सोये सब मिलि यमुनातीरा * राखि हृदय सुन्दर बलवीरा ॥
तहा असुर दावानल आयो * चाहतहै सब ब्रजहि जरायो ॥
देखे सब ब्रजजन इकठाहीं * कियो हर्ष अपने मनमाहीं ॥
प्रगटी दावानल चहु ओरा * अतिहि प्रचण्ड पवन झकझोरा ॥
दशहूँ दिशिते घेरत आवै * तृण तरु खग मृग जीव जरावै ॥
जागि परे सब ब्रज नर नारी * रहे चहूँ दिशि लगी दवारी ॥
भये चकित सब अति मनमाहीं * काहू दिशि मग दीखत नाहीं ॥
चहत चलन भजि नहीं निकासू * लेत सबै भरि शोकउसासू ॥
आयगइ दव अतिहि नियरन्हीं * चले कहत सब यमुनातटहीं ॥
अब न दखियत कहूँ उबारा * बढी अनल पहुँची नभ झारा ॥
ब्रजके लोग अतिहि अकुलाने * जरे सकल मनमाँझ डराने ॥

छं०-अति विकल सब दरे ब्रजजन देखि अनलैं भयावनो ॥
भई धर्र नभज्वाल पूरण धूम धुंध डरावनो ॥
लपट झपटत जरत तरवर गिरत महि भहरायकै ॥
उठत शब्द अघात चहुँ दिशि बढ़त झरझहरायकै ॥

---

१ बिना २ सापसे ३ भारी ४ वनकी आग ५ रास्ता
६ आकाश ७ आग ८ धरती

फटत फल फूटत पटकदल जरत बरत लता घनी ॥
काँस चटकत बाँस पटकत अँगार उचटत नभतनी ॥
हरिण मोर बराह वनपशु विकल पन्थ न पावहीं ॥
जरत जहँ तहँ जीव खग मृग विपुल जित तित धावहीं ॥
दो०–दावानल अति क्रोध करि, लियो दशहुँ दिशि घेर ॥
उठी अनलज्वाला प्रबल, मानहुँ अचल सुमेर ॥
सो०–धूम धुन्ध विकराल, भयो अँधेरो गगन सब ॥
बिच बिच चमकत ज्वाल, तड़ितमाल जनु सघनघन॥
भये दीरि व्रजलोग दुखारे * तब सब हरिकी शरण पुकारे ॥
कहत श्याम तुम करो सहाई * जरत सकल व्रज लेहु बचाई ॥
तृणा शकट बक अघ तुम मारे * कंस त्रासते तुमहि उबारे ॥
जहँ जहँ परी गाढ हम आई * तहाँ तहाँ तुम करी सहाई ॥
अब हरि यत्न कछू सो कीजै * हमहि बचाय अशिसों लीजै ॥
व्याकुल गोप नन्द मनमाहीं * करत विचार बनत कछु नाहीं ॥
यशुमति सबदिन कहत पुकारे * दई पऱ्योहै ख्याल हमारे ॥
नाना रूप असुर बहु आये * कोउ खग कोउ पशुरूप बनाये ॥
कोऊ पवनरूप है आयो * भयो तहा कोउ पुण्य सहायो ॥
आज उरगसों बच्यो कन्हाई * बड़े भाग्य नृप त्रास नशाई ॥
अब यह बाढी अग्नि अपारा * होत सकल व्रजको संहारा ॥
किमि बचिहैं यह बालक दोऊ * मोहिं लखि परत उपाय न कोऊ॥
दो०–सुनि जननीके वचन प्रभु, लखि सब व्रज बेहाल ॥
कह्यो सबन धीरज धरो, मति डरपौ लखि ज्वाल ॥

१ मार्ग. २ सांपसे ३ नाश.

सो०—कौतुकनिधि गोपाल, को जानै तिनके गुणनि ॥
दुख सुख जिनके ख्याल, जनके हितकारक सदा ॥

सब हरि कह्यो डरो मति कोई * मिलहु दव मधुरि सब सोई ॥
तिन सहाय कीनी अकुलाई * सोई करै सहाय सदाई ॥
हरि हँसि सबकी आँखि मुँदाई * करिगये अग्निपान सुखदाई ॥
छिनइक चहुँ दिशि दीन्ह्यो नाद * रह्यो न अग्निलेश कहुँ राई ॥
गोपिन देहु दृग सब हरि बोले * सुनतहि तुरत सबन दृग खोले ॥
देखि चरित सब ब्रज नर नारी * कहत धन्य धनि तुम बनवारी ॥
धरणि अकाश बराबर ज्वाला * लपट झपट अतिही विकराला ॥
नहिं बरस्यो नहिं सींच्यो काहू * गयो बिलाय कहाँ धौं दाहू[3] ॥
कैसे यह सब अग्नि बुझानी * हम यह कछू न काहू जानी ॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हाई * यह करनी यह कहि न सुहाई ॥
तृणनि आग प्रथम बहु जागी * फिरि तिहि बुझत विलम्ब न लागी ॥
सुनत श्यामकी कोमल बानी * भये सुखी सब श्रमैं नशानी ॥

दो०—जीव जन्तु खग मृग जिते, भये सुखी ततकाल ॥
द्रुम[5] बेली तृण हरित सब, प्रफुलित बन सुख माल ॥

सो०—श्याम सहायक जाहि, ताहि कहाँ डर कौनको ॥
यह न बड़ाई ताहि, पाँच तत्त्व उनके किये ॥

कहत परस्पर ब्रजकी नारी * है अति बड़े वीर बनवारी ॥
देखत कोमल श्याम सलोना * यह सखि जानतहै कछु टोना ॥
नाथ्यो नाग पतालहि जाई * लायो तापर कमल लदाई ॥
माँगे कमल कंस नृपराई * कोटि कमल तिहि दिये पठाई ॥

---

१ नेत्र २ पृथ्वी ३ जलन ४ भय ५ वृक्ष

दावानल नभ धरणि बराबर * घेर लिये ब्रजके नारी नर ॥
नयन मुँदाय कहा धौं कीन्हों * रह्यो नहीं कछु ताको चीन्हों ॥
ये उत्पात मिटे उनहींपै * और न होय सकै किनहींपै ॥
यह कोउ सखी बडो अवतारा * है यहही कर्ता संसारा ॥
लखि हरि चरित यशोदा मैया * चकित निरखि मुख लेति बलैया॥
लखि सुतचरित मुदित नँदराई * करत गोपगण सकल बडाई ॥
कहत देव मुनि अति अनुरागा * है ब्रजवासिनके बडभागा ॥
जिनके अंग श्याम सुखशीला * करत रहत नित नवरस लीला ॥

दो०–एक दिवस निशि यमुनतट, बस सब गोपी ग्वाल ॥
होत प्रात निज निज सँदन, आये सहित गोपाल ॥

सो०–हरि जनके सुखकार, विलसत विविध विलास ब्रज॥
सन्तन प्राण अधार, ब्रजवासी जन जाहिं बलि ॥

हरि ब्रजजनके दुख बिसरावन * करत चरित सुरमुनि मनभावन॥
सुरत सकल ब्रजलोग भुलाये * कौन कंस कब कमल मँगाये ॥
कब हरि यमुनाजलहि समाये * कालीनाग नाथि कब लाये ॥
कब दावानल जारन आयो * एक दिवस निशि कहाँ बितायो॥
नहिं जानत कछु नंद यशोदा * करत श्याम सोइ बाल विनोदा॥
माखन माँगत कुवर कन्हाई * बार बार जननीसों जाई ॥
आतुर दधिहि मथत नँदरानी * सद माखन हरिको रुचि जानी॥
कहत तनक तुम रहत ललारे * तुम्हें देउँ नवनीत पियारे ॥
मैं बलि भूख लगी तुम भारी * बात बनावत सुतहि दुलारी ॥
बूझत बात बाहुकी कान्हहिं * कहत श्यामसों सुनत न कानहिं॥

१ आकाश. २ जगत्. ३ मेम ४ घर. ५ मक्खन. ६ प्यारी

झुठदि देत हुँकारी जननी * भूल गई सब हरिकी करनी ॥
तब लौ मथि दधि माखन कीन्हो * तुरतहि लै सुतके कर दीन्हो ॥
दो०–लैले अधरैन परसि करि, माखन रोटी खात ॥
कहत प्रशंसा मधुर कहि, सुनत प्रफुल्लित मात ॥
सो०–जो प्रभु अलख अपार, दुर्लभ शिवसनकादिकहूँ ॥
धन्य नन्दकी नार, ताको सुत कर मानई ॥

अथ प्रलम्बासुरवधलीला ॥

नित नव लीला करत कन्हाई * तात मात मजनन सुखदाई ॥
मुदित सकल ब्रजके नर नारी * निशिदिन सुख हरिचंद निहारी ॥
इक दिन श्याम राम दोउ भाई * खेलत सखन संग वन जाई ॥
नाना विधि सब करत कलोलैं * भाँति भाँतिकी बाणी बोलैं ॥
कबहूँ मोर हंसकी नाईं * बोलत हँसत श्याम सुखदाई ॥
कबहूँ मधुरे स्वर सब गावैं * मध्य श्यामघन वेणु बजावैं ॥
कबहूँ चढ़त तरुन पर जाई * कूदि परत गहि डार नवाई ॥
नाना विधिके खेलत खेलैं * बाल विनोद मोदरस केलैं ॥
तहां प्रलम्ब असुर इक आयो * कंस ताहि दै पान पठायो ॥
सो छलरूप गोपवपु धारी * मिल्यो आय सब सखनमँझारी ॥
ताको ग्वाल न काहू जान्यो * यहतो असुर श्याम पहिचान्यो ॥
बलदाऊको दियो जनाई * ताहि हतनको रच्यो उपाई ॥
दो०–सखा बुलाये निकट सब, तिनहिं कह्यो नँदलाल ॥
फल बुझाय अब खेलिये, भये मुदित सुनि ग्वाल ॥

---

१ हाथ. २ ओठ ३ युवा.

सो०-द्वै बालक करि राय, सखा लिये तब बाँटि सब ॥
आधे इक दिशि आय, आधे एक दिशा भये ॥

निज निज जोट सखन जुरि लीन्हो * हलधर जोट दनुजसँग कीन्हो ॥
आपसमें यह होड़ लगाई * जो हारै सो पीठि चढ़ाई ॥
भाडीर वनलौं लै जाही * फेर इहाँ पहुँचावै ताही ॥
फलको नाम बुझावन लागे * बूझदियो बल सबते आगे ॥
चले सखा चढ़ि चढ़ि तिन जोरी * चढ़े दनुज बल पीठ[1] मरोरी ॥
भाण्डीर वनलौं पहुच नाइ * फिरे सखा सब ठाँव छुवाइ ॥
असुर चल्यो लै बलको आगे * प्रवल्यो दैनुज[3] शरीर अभागे ॥
तब बलदेव कोप करि भारी * मुष्टि एक ताके शिर मारी ॥
निकसि गयो शिर गिर्यो अधीरा[4] * उतरि परे तब श्रीबलवीरा ॥
भयो पलकमें सो बिन प्राना * देखत सुर मुनि चढ़े विमाना ॥
भइ गगनते जय जय बानी * फूलनकी वर्षा वर्षानी ॥
चतुनिधि प्रस्तुति बलहि सुनाई * मुदित सकल सुर मुनि समुदाई ॥

दो०-ग्वाल बाल चकित सबै, दौरि गये बलपास ॥
मृतक असुर तनु देखिके, तब मन कियो हुलास ॥

सो०-धन्य धन्य बलराम, धन्य तुम्हारे मात पितु ॥
बड़ो कियो यह काम, कपटरूप मार्यो असुर ॥

यह शठ गोपभेष बन आयो * हम काहू इहिं जान न पायो ॥
जो यह शठ नहिं जात निपातो * तो काहू हरिकहिलै जातो ॥
हौ तुम बड़े वीर दोउ भाई * नहँ तह हमको होत सहाई ॥

१ दाऊजी २ गरदन ३ दैत्य ४ फट गया

वनके दुष्ट सकल तुम मारे * ही तुम हम सबके रखवारे ॥
ताहि कहो काको डर भैया * जासु मीत बलराम कन्हैया ॥
देत ग्वाल सब बलहि बडाई * धन्य धन्य मजजन सुखदाई ॥
दुष्ट मारि बल मोहन लाला * आये सैदन सहित सब ग्वाला ॥
ग्वालन कही आय सब बाता * सुनत चकित मजजन पितुमाता ॥
करत सकल बलराम बड़ाई * जननी मुदित लिये उरलाई ॥
बल मोहन दोउ बीर निहारी * दोऊ जननि जात बलिहारी ॥
भूखे जान बनहिंते आयो * दोउ भइयन भोजन करवायो ॥
जो सुख लहत नन्दकी रानी * सो शारद नहिं सकै बखानी ॥

दो०–सुनसनेहयशुमति मगन, निशि दिन जात नजान ॥
करत चरित सन्तनसुखद, भक्तवछल भगवान ॥

सो०–नित नव परम हुलास, ब्रजबासी हरि सँग लहत ॥
बिलसत विविध विलास, बाट घाट गृहबनसघन ॥

अथ पनिघटलीला ॥

पनिघट[1] यमुनाके तटमाहीं * ठाडे श्याम कदमकी छाहीं ॥
सखा वृन्द चहुँ ओर विराजैं * कोटि काम छवि निरखत लाजैं ॥
शीश मुकुट[2] लटक सुहाई * सुरँग खौर केसर छविछाई ॥
कुंडल झलक अलक घुँघरारी * कंठ कनककठी द्युतिकारी ॥
चटकीली लटकी बनमाला * परसति चरणसरोज बिशाला ॥
मुक्तमाल मणिमाल सुहाई * उँर विशाल पै अति छविछाई ॥
अरुण अधर दशननद्युति नीकी * सुर मुसकान मोहनीजीकी ॥

१ घर. २ घूंघर. ३ सोना. ४ छाती. ५ लाल. ६ होट. ७ दांत.

चटकीली पट पीत विराजै * कटितटि क्षुद्र घंटिका राजै ॥
भुज विशाल भूषणयुत सोहै * कर मुद्रिका मुदित मन मोहै ॥
तनु घनश्याम रसीले नैना * हँसि हँसि कहत सखनसों बैना॥
कनक लकुटिसों पग लपटान्यो * भूषणसहित न जात बखान्यो॥
गहि द्रुम डार तिरीछे ठाढे * अंग अंग अनुपम छवि बाढे ॥

दो०-कबहुँ बजावत अधर धरि, करि मुरलीध्वनि घोर ॥
निकट बुलावत वन मृगन, कबहुँ नचावत मोर ॥

सो०-रहे गगन घन छाय, सुखदछांह शीतल किये ॥
वर्षाऋतुको पाय, निरखत सुत नँदरायको ॥

हरित भूमि चहुँ ओर सुहाई * मनहुँ काम मँस न्द बिछाई ॥
बहत समीर धीर सुखदाई * शीतल अधिक सुगंध सुहाई ॥
बहत यमुन बोहुलतै पूरी * परत भँवर जहँ तहँ छबिरूरी ॥
उठत श्याम जल शुभगतरंगा * छबितरंग जिमि हरिके अंगा ॥
या छबिसों पनिघट हरि ठाढे * संग गोप बालकदित बाढे ॥
यमुना जल तिय भरन न जाहीं * ग्वाल भीर देखत सकुचाहीं ॥
हरिके गुण मनमें सब जानैं * रोकत टोकत शंक न मानैं ॥
ताते जाय सकत कोउ नाहीं * दरशलालसा अति मनमाहीं ॥
सबके अन्तर्यामि कन्हाई * युवतिनके मनकी गति पाई ॥
तब इक बुद्धि रची नँदलाला * रसिक शिरोमणि मदनगोपाला॥
सखन एक तरुतरं बैठाई * पनिघटते सब भीर मिटाई ॥
आप रहे द्रुम ओट छपाई * हेरत युवतिनमग चितलाई ॥

१ करधनी २ नेत्र ३ बहुत ४ नीचे ५ वृक्ष

दो०–इहि अन्तर आवत लखी, युवती इक घनश्याम ॥
आप रहे द्रुम ओट हरि, यमुनातट गई बाम ॥

सो०–नागरि जलहिं हिलोर, भरि गागरि शिर धर चली ॥
पाछेते चितचोर, घटलै दियो लुटाय महि ॥

गहा चतुर ग्वालिनि भुज हरिकी * पाई कनक लकुटिया करकी ॥
सबसों तुम करिरहे ढिठाई * तसेइ मोसों लगत कन्हाई ॥
देन लगे तब हरि हँसि गागरि * लेत नहीं ग्वालिनि अति नागरि ॥
कहत कि रानो घर नहिं लैहौं * जल भर देहु लकुटि तब देहौं ॥
कहा जो तुम नन्द सुवन कन्हाई * हम हू बड़े बापकी जाई ॥
एक गांव बस बास हमारो * मैं नहिं सहिहौं कह्यो तुम्हारो ॥
एक कही तो दश मैं कहिहौं * मैं कछु तुमसों डरपि न रहौं ॥
यह सुनि हँसि दीन्हें नदलाला * लियो चोरि चित मदनगोपाला ॥
कहन लकुटिया दरी मेरा * मैं भरि देहौं गागरि तेरी ॥
ऐसन रूप सुनत मृदुवानी * ग्वालिनि तनुकी दशा भुलानी ॥
लागी हृदय मैंदनकी साटी * मन पर गयो प्रेमकी घाटी ॥
करतेलकुटि गिरत नहि जान्यो * विवश भई चित चैन हिरान्यो ॥

दो०–तब घट भरि हरि भावते, दीन्हो शीश उठाय ॥
नेकहुँ सुधि ता तनु नहीं, चली मनहिं समुहाय ॥

सो०–लियो दगन म धाम, सुन्दर नट नागर सुखद ॥
नित देखे लित श्याम, पथै ताहि दीसै नहीं ॥

उते अपर ग्वालिनि इक आई * कहत कहा तू रही भुलाई ॥
सूझे पथ चलनहिं नाहीं * कहा शोच तेरे मनमाहीं ॥

---

१ बीच २ छी ३ भरती ४ कामदेव ५ रास्ता ६ दूसरी

अबहीं हेमति भरन जल आई * कहा चली इत आप गँवाई ॥
ताको देखि कहत सुनु आली * मोपै श्याम मोहनी घाली ॥
मैं जल भरन अकेली आई * मेरी गागरि कृष्ण ढुराई ॥
तब मैं कनक लकुटि गहि लीन्हों * उन मोतन लखिके हसिदीन्हों॥
वहै हँसनि मोहि परी ठगौरी * तबही ते मैं हैगइ बौरी ॥
कहा कहौं तोसों अब आली * मेरे चित्त वह चितवनशाली ॥
बस्यो श्याम मेरे दृगमाहीं * और कछु मोहिं दीसत नाहीं ॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी * आप विलोकनको अतुरानी ॥
ताहि बाँहगहि घर पहुँचाई * आप गई जलको अतुराई ॥
देख्यो जाय श्याम तहँ नाहीं * इत उत लखि शोचति मनमाहीं॥

दो०–हरि देखत तरु ओटह्वै, ग्वालिनि मन दुख पाय ॥

चली नीर भरि गागरी, बार बार पछिताय ॥

सो०–मनके जाननहार, देखि ग्वालिनी विकल अति ॥

प्रकटे नन्दकुमार, आय अचानक निकटही ॥

गहिलीन्हीं अबैर भरि ग्वारी * ताके तनुकी तपनि निवारी ॥
तातन चितै कह्यो तू कोरी * तोहिं कबहु देख्यौं नहिं गोरी ॥
मन हरि लीन्हों रूप दिखाई * बहुरि भये तरु ओट कन्हाई ॥
मिलि हरिसों सुख पायो ग्वाली * छकी प्रेमरस लखि बनमाली ॥
नहिं जानत मैं को कित आई * भई मगन मन तनु बिसराई ॥
घरको पथ भूलिगइ नागरि * इत उत फिरत शीशलिये गागरि॥
और सखी इक उनते आई * देखि दशा तिन निकट बुलाई ॥
कहा फिरै भूली मगमाहीं * बूझत सखी सुनत कछु नाहीं ॥

---

१ ठगी २ जल. ३ गोद. ४ जागी.

गेंकपड़ा सपने ज्यों जागी * तामों वचन कहन तब लागी ॥
श्याम बदन पर लिख्यो दुठौना * तिन मोको कछु कीनो टोना ॥
मैं भरि गागरि सीस चढ़ाइ * औचक मोहि अंक भरिलाइ ॥
मोसों कयो कौन तू गोरी * देखीनाहिं कबहुं ब्रजखोरी ॥
दो०-ऐसे कहि चितयो विहँसि, मैं लखि रही भुलाय ॥
तबहिं भयो अंतर कछू, मेरो चित्त चुराय ॥
सो०-कही सहीसो बात, ग्वालिनि लाज निसारिके ॥
निरखि नन्दको तात, भई जलदकी बूंद निमि ॥
सो सखि सावधान करिताको * चली आप आतुर यमुनाको ॥
देखी श्याम युवति ढिंगआइ * ठाढ़े तरुकी ओट कन्हाइ ॥
तासु अंग छबि रहे निहारी * गोरे बदन चूनरी कारी ॥
छूटी अलक बदन छबिछाइ * मनहु नेग्न अहि अवलिसुहाइ ॥
हाथन चूरी चारु बिराजै * कनक मुंदरियन अति छबिछाजै ॥
सहज सिंगार ईंडोर उठावै * अंग अंग सुठि सुन्दर सोहैं ॥
ग्वालिनि हरिको देख्यो नाहीं * जाने कहूं गये बनमाहीं ॥
जल भरि चली मनहिं पछिताइ * गागरि नागरि सीस उठाई ॥
औचक श्याम गहि लट आई * यह कहि कहाचली अतुराई ॥
चिबुक परस उरमां करलायो * ग्वालिनि मनहिं हर्ष अति पायो ॥
उपर कहत वचन माहन * छाँडिदेहु मेरा लट मोहन ॥
उर परमत कछु सकुच न मानत * और ग्वालिसी मोको जानत ॥
दो०-छाँड़ि देहु लट देखिहै, ब्रज युवती कोउ आय ॥
हाहा मैं पांयन परति, तुमको नन्द दुहाय ॥

१ मेघ २ मुख ३ कमल ४ रे ५ पंक्ति ६ छाती ७ ठोड़ी

अवही हँमति भरन जल आई * कहा चली इत आप गँवाई ॥
ताको देखि कहत सुनु आली * मोपै श्याम मोहनी घाली ॥
मैं जल भरन अकेली आई * मेरी गागरि कृष्ण लुढाई ॥
तव मैं कनक लकुटि गहि लीन्हों * उन मोतन लखिकै हँसिदीन्हों॥
वहै हँसनि मोहि परी ठगौरी * तवहीं ते मैं हैगइ बौरी ॥
कहा कहौं तोसों अब आली * मेरे चित्त वह चितवनशाली ॥
वस्यो श्याम मेरे दृगमाहीं * और कछू मोहि दीसत नाहीं ॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी * आप बिलोकनको अतुरानी ॥
ताहि बाँहगहि घर पहुँचाई * आप गई जलको अतुराई ॥
देख्यो जाय श्याम तहँ नाहीं * इत उत लखि शोचति मनमाहीं॥

दो०–हरि देखत तरु ओटह्वै, ग्वालिनि मन दुख पाय ॥
चली नीर भरि गागरी, बार बार पछिताय ॥

सो०–मनके जाननहार, देखि ग्वालिनी विकल अति ॥
प्रकटे नन्दकुमार, आय अचानक निकटही ॥

गहिलीन्हीं अंचल[1] भरि ग्वारी * ताके तनुकी तँपनि निवारी ॥
तातन चितै कह्यो तू कोरी * तोहिं कबहु देख्यों नहि गोरी ॥
मन हरि लीन्हों रूप दिखाई * बहुरि भये तरु ओट कन्हाई ॥
मिलि हरिसों सुख पायो ग्वाली * छकी प्रेमरस लखि वनमाली ॥
नहिं जानत मैं को कित आई * भई मगन मन तनु बिसराई ॥
घरको पथ भूलिगइ नागरि * इत उत फिरत शीशलिये गागरि॥
और सखी इक उतते आई * देखि दशा तिन निकट बुलाई ॥
कहा फिरै भूली मगमाहीं * बूझत सखी सुनत कछु नाहीं ॥

१ सन्नी २ जल. ३ गोद ४ गरमी

चौंकपड़ी सपने ज्यों जागी * तासों वचन कहन तबलागी ॥
श्याम वदन एक मिल्यो ढुगौना * तिन मोको कछु कीनो टोना ॥
मैं भरि गागरि शीसचढ़ाइ * औचक मांहि अंक भरिलाइ ॥
मोसों कह्यो कौन तू गोरी * देखीनाहिं कबहु ब्रजखोरी ॥
दो०-ऐसे कहि चितयो निहँसि, मै लखि रही भुलाय ॥
तबहिं भयो अंतर कहू, मेरो चित्त चुराय ॥
सो०-कही सखीसों बात, ग्वालिनि लाज विसारिकै ॥
निरखि नन्दको तात, भई जैलदकी बूंद निमि ॥
मा सखि सावधान करिताको * चली आप आतुर यमुनाको ॥
देखी श्याम युवति ढिगआइ * ठाढ़े तरुकी ओट कन्हाइ ॥
तासु अंग छबि रहे निहारी * गोरे बदन चूनरी कारी ॥
छूटी अलक वदनै छविछाई * मनहु कैलन अलि अवैलिसुहाइ ॥
हाथन चूरी चारु बिराजै * कनक मुदरियन अति छविछाजै ॥
सहज शृँगार उरोज उठाहैं * अंग अंग सुठि सुन्दर सोहैं ॥
ग्वालिनि हरिको देख्यो नाहीं * जाने कहू गये बनमाहीं ॥
जल भरि चली मनहिं पछिताई * गागरि नागरि शीस उठाई ॥
औचक श्याम गहि लट आई * यह कहि कहाचली अतुराई ॥
चिबुँक परस उरसों करलायो * ग्वालिनि मनहिं हर्ष अति पायो ॥
ऊपर कहत वक्रकर मोहन * छांड़िदेहु मेरी लट मोहन ॥
उर परसत कछु सकुच न मानत * और ग्वालिसी मोको जानत ॥
दो०-छाँड़ि देहु लट देखिहै, ब्रज युवती कोउ आय ॥
हाहा मैं पायन परति, तुमको नन्द दुहाय ॥

---

१ सत्र २ मुग्ध ३ कमल ४ भौंरे ५ पंक्ति ६ छाती ७ टोनी

यमुना भरन देत नहिं पानी * बहुत अचगरी अब तुम ठानी ॥
कहो तो यशुदहि जाय सुनावें * फेरि तुम्हैं ऊखल बधवावें ॥

दो०-यह सुनि हरि रिस करि उठे, इँडुरी लई छुड़ाय ॥
कहो जाय सब मातसों, लीजो मोहिं बँधाय ॥

सो०-मोहिं कहत ठग चोर, आप भई साहुलि सबै ॥
डारी गागरि फोर, कहत जाहु चुगली करन ॥

तब युवती सब हरि ढिग आई * कहत इँडुरी देहु कन्हाई ॥
नहिं तो तुमको गहि लै जै है * यशुमति पास न नेक टरै हैं ॥
बात घाट तुम करत ढिठाई * काहु न नेक डरात कन्हाई ॥
इँडुरि लै फोरी सब गागरि * आज मिटावैं तुम्हरी लँगरि ॥
तब हरि चढे कदमपर जाई * इडुरी दीन्ही जलहि बहाई ॥
बदनै सकोरत भौंह मरोरत * मुरि मुसकनि सबके चितचोरत ॥
कहत कहो मैयासों जाई * सब मिलि लीजो मोहिं बुलाई ॥
तुम सब जुरि मोहिं मारन धाई * तब मैं इँडुरी जलहि बहाई ॥
ऐसो करि तुम मोको पायो * मानहु मोको मोल मँगायो ॥
यह सुनि युवति कहत मुसकाई * कहति यशोमतिसों हम जाई ॥
वे दिन बिसर गये मनमोहन * बाँधे मात ऊखली गोहन ॥
ढाई रहो तो बदहिं कन्हाई * जाउ कहूँ तो नन्द दुहाई ॥

दो०-कान्हहिं सौंह दिवायकै, लै उरहन सब बाम ॥
ऊपर रिस अंतर सुखी, चलीं नंदके धाम ॥

सो०-मथति महरि निज धाम, दधि माखन हरिके लिये ॥
तिहि अंतर ब्रज बाम, आवत देखी भीर अति ॥

---

१ लगराई २ धनवाली ३ मुख. ४ श्री ५ गोपियां. ६ जसोदा ७ भीड.

मैं जानति हरि इनहिं सिखाई * ताते सब उरहन लै आई ॥
कहत युवति सब रिस भरि आई * ऐसो ढीठ कियो सुन माई ॥
भरन देत नहिं यमुनापानी * रोकत आय करत कुलकानी ॥
काहूकी गागरि ढरकावै * ईंडुरी लै जलमाहिं बहावै ॥
काहूको घट डारत फोरी * गारी देत सहैं नित खोरी ॥
महरि कहत तुमसों सकुचाहीं * हरिके गुण तुम जानति नाहीं ॥
अब नाहीं मजवास हमारो * करत अचकरी सुवन तुम्हारो ॥
नेक नहीं सकुचत मनमाहीं * महरि सुतहिं तुम बरजत नाहीं ॥
यशुमति सबहि न कहत निहोरी * कहा करौं सो तुमहि कहोरी ॥
जो हरिको मैं ह्यां गहि पाऊँ * तो तुम सबको अबहि दिखाऊँ ॥
तुमहू जानतिहौ गुण हरिके * करजलसों बाँधे मैं धरिके ॥
मारन लगी साटि लै जबहीं * बर्ज्यो मोहिं तुमहिं तब सबहीं ॥

दो०–अब घर आवहिं जबहिं हरि, तबहिं करौं सोइ हाल ॥
लरिकाईते अचकरो, मैं जानत गोपाल ॥

सो०–अब जो पकरन जाउँ, ताहि गहन पाऊँ कहाँ ॥
सुनतहि मेरो नाउँ, को जाने भजि जाय कित ॥

यह अपराध क्षमो सब हमको * यहै कहतहौं मैं अब तुमको ॥
इहि विधि युवतिन बोध कराई * महरि भवनको घरन पठाई ॥
इतते घरन चली सब ग्वाली * उतते घर आवत वनमाली ॥
हैगइ भेंट बीच मग आई * तुरत नयन हरि गये लजाई ॥
मात बुलावत जाहु कन्हाई * बहुत बड़ाई करि हम आईं ॥
निरखि वदन हँसि कह्यो कन्हाई * मैं समुझाय लेऊँगो माई ॥

१ कमूर. २ स्त्रियोंको. ३ मुख.

सकुचतही आये घर मोहन * द्वारहिते लागे हरि जोहन ॥
देखि जननि धरकारज लागी * गोपिन उरहनके रिस पागी ॥
भीतर रोहिणि पाक बनावै * कहि कहि तिनसों बात सुनावै ॥
हरुवैं हरुवैं तव हरि जाई * सुनत आप पाछे चित लाई ॥
यहै कहति यशुमति रिसि आई * गयो कहाधौं भाजि कन्हाई ॥
पनिघट रोंकत धूम मचावत * यमुना जल कोउ भरन न पावत॥

दो०–गारि देत वेढिन बहुत, वै आवत ह्या धाय ॥
हाहामें सबको करति, क्योंहू खोट छुटाय ॥

सो०–इँडुरी देत बहाय, सबकि गागरि फोरिकै ॥
कित धौं १ग्यो पराय, यह कहि कहि धिरवत सुतहिं ॥

जाति पातिसों वह लँगराई * मारेहु मानत नाहि कन्हाई ॥
सब पाछेते हरि उठि बोले * मधुर वचन कोमल अति भोले ॥
तू मोहांको मारन जानै * उनके गुणन नाहि पहिचानै ॥
कहति जुवै मानत तू सोई * तिनके चरित न जानत कोई ॥
कदमतीरते मोहिं बुलावैं * बाते गढ़ि गढि आप बनावैं ॥
मग्कत गिरै शीशते गगरी * नाम लगावत मेरे सिगरी ॥
फिरि चितई देखे हरि पाछे * सुन्दर श्याम पीतपट काछे ॥
कह तू कहा रह्यो मो पाहीं * मैं कह तोको जानत नाहीं ॥
हरि मुख देखतही नँदनारी * तुरतहिं भूलिगई रिस भारी ॥
यहतकि उरहन सब लै आवैं * झूठहि खोर काहको लावैं ॥
मैं जानत गुण उन सबहीके * बातन जोरि बनावत नीके ॥
वे सब योबनकी मदमाती * फिरत सदा हरिसों अठिलाती॥

१ धीरे

दो०–कहा श्याम मेरो तनक, ये सब योवन जोर ॥
अब उरहन जो आवहीं, तौ पटऊँ मुख मोर ॥
सो०–तू क्ति उन ढिगनात, मैं बरजत मानत नहीं ॥
लावत झूठी बात, ये सब ढीठ गुवालिनी ॥
यह कहि चूम सुनहिं उर लायो * मनमोहन मन हर्ष बढ़ायो ॥
ब्रज घर घर यह बात जनाइ * पनिघट रोकन कुँवर कन्हाइ ॥
श्याम बरण नटवर वपु काछे * मुरली मधुर बजावन आछे ॥
बरत अन्तर्गी जो मन भावै * यमुना नल कोउ भरन न पावै ॥
बैठन आप यदमनी डारी * सबन बुलावत दै दै गारी ॥
काहूकी गागरि गहि फोरै * काहूकी इंडुरी गहि बोरै ॥
काहूको अरम गहि लावै * काहूको घरै भूमि लुभावै ॥
नयन सैनदै चितहि चुरावत * काहूसों मन अपनो लावत ॥
ब्रजयुवती सुनि सुनि उठि धावै * बिनहरि दरशन छिन कल पावै ॥
कोउ बरजै कोउ कहै कोटि विधि * सबके ध्यान श्याम सुन्दरनिधि ॥
मन क्रम वचन तिन्हैं रति हरिसों * नातो नेह न मानत घरसों ॥
निशिदिन जागत सोवत माहीं * नन्द नन्दन क्षण बिसरत नाहीं ॥
दो०–यह लीला सब करत हरि, ब्रजयुवतिनके हेत ॥
कृष्ण भजे जो भाव निहि, तेहि तैसो फल देत ॥
सो०–चिन्तामणि जेहि नाम, चिंतित फलदायक जनन ॥
सबहींको सब यामें, जैसोको तैसो सदा ॥
सुनि यह श्रीवृषभानुदुलारी * पनिघट ठाढे कुंजबिहारी ॥
देखनको चित अति अतुराई * कह्यो सखिनसों कुँवरि बुलाई ॥

१ ढिगाई २ गोदीमें कर ३ गगरो ४ गोपियां

चलहु यमुनतट ल्यावहि पानी * सुनत बात यह सब हरषानी ॥
इक इक कलश सबन गहिलीनों * तुरत गमन यमुनातट कीनों ॥
देखें तहां कुंवर नंदलाला * सुंदरश्यामल नयन विशाला ॥
प्यारी मन अति हर्ष बढ़ायो * प्यारिहि देखि श्याम सुख पायो॥
रहे राशि हरि दीठि[1] लगाई * भर्यो नीर प्यारी मुसकाई ॥
चली घरहि यमुना जल भरिकै * सखिन मध्य गागरि शिर धरिकै॥
मंद मंदगति चलति सुहाई * मोहन मनहि मोहनी लाई ॥
चले श्याम संगहि उठि लागे * विवश भये प्यारी रस पागे ॥
सखियन बीच नागरी सोहै * गागरि शिरपै हरिमन मोहै ॥
डुलत ग्रीवै लटकत नकवेसर * बदन बिन्दु आड[2] दिये केसर ॥

दो०–लोचन लोल विशाल अति, मुरिमुरि चितवत जाय ॥
भृकुटी धनुष कटाक्ष शर, हरि दृग मृगन लगाय ॥

सो०–अँग अँग छवि समुदाय, मानहुँ सेना कामकी ॥
अंचल ध्वज फहराय, टटकि चलत हरि मन हरत ॥

रीझें श्याम निरखि छवि प्यारी * सगहि चले लागि बनवारी ॥
कबहुँक आगे जात कन्हाई * कबहुँ रहत पीछे नियराई ॥
नाना भांतिन भाव बतावैं * प्यारिहि निज अभिरें[3] प जनावैं ॥
कर्मक लकुटले बढ़के माहीं * आगे पथ सँवारत जाहीं ॥
देखत जहां प्रिया परछाहीं * तहाँ मिलावत निजतनु छाहीं ॥
छवि निरखत तनु वारि नवावैं * पीतांबरले शीश फिरावैं ॥
कबहुँ श्याम पाछे रहि जाहीं * निरखत कुंवरी छवि ललचाहीं ॥
गागरि ताकि काँकरी मारैं * उचटि उचटि तिय अंगन पारैं ॥

१ नजर २ नाद ३ वेंदी ४ चाह ५ गुर्वर्य

ओट पीतपट शीश नवाई * इहि मिस निकसतढिंग ह्वै आई॥
प्यारी अपने जिय अनुमाने * मेरे हित हरि भावनठाने॥
सखियन मध्य नागरी जाई * नहिं पावत लग लगन कन्हाई॥
कियो चरित सब रसिक बिहारी * सखिन सहित मोही सुकुमारी॥
दो०-मिसकरि निकसे निकटह्वै, निरखि वदन मुसकाय ॥
मन हरिलीनो सबनको, दियो काम उपजाय ॥
सो०-भई विवश सुकुमार, अंग उमँग आँगी दरैकि ॥
मोहे नन्दकुमार, सुधि बुधि बिसरी देहकी ॥
सखिन संग पहुँची घर आई * अटकिरह्यो मन हरि सँग जाई॥
पुनि पुनि उर यह करत विचारा * कैसे मिलहिं श्याम सुकुमारा॥
गागरि निज निज गृह पहुँचाई * बहुरि सखी प्यारी ढिंग आई॥
बार बार सब कहत निहोरी * चलिये यमुना जलहि बहोरी॥
तिनको उत्तर देत न प्यारी * चित उरझो चितवन परवारी॥
ठगसी रही मनहि मन सोचै * प्रेम विवश दृग वारि विमोचै॥
देखि दशा बूझत सब ग्वारी * कहा भयो तोकोरी प्यारी॥
शोचति कहा कहे किन सोरी * काहू लयो चोर कछु चोरी॥
उत्तर हमें देत क्यों नाहीं * कहा ठगीसी है मनमाहीं॥
गहि गहि भुजा कहति सब गोरी * चलहि न यमुना आवहि खोरी॥
तब सखियन वृषभानुदुलारी * लीन्हीं सबन निकट बैठारी॥
जलजैनयन जल भरि अनुरागी * हरिके चरित कहन सब लागी॥
दो०-कहाँ सखी कैसे चलैं, वा यमुनाकी ओर ॥
गैल न छाँड़त साँवरो, रसिया नन्दकिशोर ॥

१ कोमल अंगवाली. २ मुख. ३ फटगई. ४ कमलसमान नेत्रोंमें.

सो०–धरै न कोऊ नांव, इह शंकनिडरपत हियो ॥
एक भाँतिको गाँव, यह चंचल माने नहीं ॥

मोको देखत जहाँ कन्हाई * मेरे संग लगत उठि धाई ॥
इत उत नयन चुराय निहारे * मोको मगमें आनि जुहारे ॥
आगे चलत लकुट कर लाई * मेरो पंथ सँवारत जाई ॥
सो बहु मोहि निहोरो लाई * फिर चितवै मो तन मुसकाई ॥
जब मैं यमुनाको जल भरिकै * चलति गागरी शिरपर धरिकै ॥
तब घटमें वह काँकरि मारै * उचटि लगत तब अंग निहारै ॥
मेरे उर अंचर फहराई * सो वह देखि देखि ललचाई ॥
कबहूँ पीताम्बर शिर फेरै * बार बार करि मोतन हेरै ॥
कबहूँ आपनि छबि दरशावै * मेरे चितको आनि चुरावै ॥
जब देखौ तब मो तनु हेरै * नेक नहीं दृगै इत उत फेरै ॥
जहाँ जाति मेरी परछाईं * तहाँ मिलाय रहत निज छाईं ॥
जबलग लागन पावत नाहीं * तब वाको जिय अति यकुलाहीं ॥

दो०–मोतनु छूवै हरि चले, ताहि भरतहे अंक ॥
हौं सकुचत बोलौं नहीं, लोकलाजकी शंक ॥

सो०–व्रज घर घर यह शोर, को जानै कहियत कहा ॥
चितवत यह चितचोर, विवश होत सखि प्राण तब ॥

कहिये कहा सखी जिय जैसी * भइ गति सांप छँछूंदर कैसी ॥
घरते निकसत बन नहि आवै * लोकलाज कुलकानि मिटावै ॥
जो घर रहो रह्यो नहिं जाई * तनु घरमें मन जहां कन्हाई ॥

१ स्तनं. २ शरीर. ३ नेत्र. ४ साप छछूंदरको खाय तो कोढी होय और उगले तो अंधा होय.

कितो करों आवत इत नाहीं * बँध्यो पीत पट आँचरमाहीं ॥
अब तो मेरे मन यह रोपी * कीरहौं प्रीति श्याम सँग गोपी॥
अंजके लोग हँसौ किन कोई * कुलमर्याद जाहु किन सोई ॥
कहा काम सो कहहु सयानी * जामें होय जीयकी हानी ॥
सोनो कहा कान जिहि टूटे * अंजन कहा आँखि जिहि फूटे ॥
कहा काँच संग्रहते होई * जो अमोल मणि करतें खोई ॥
निप सुमेरु कहु कौने काजा * छुद्र बूंद इक ओषधि राजा ॥
कुलकी कानि काँच कहिवाई * चिन्तामणिकी खानि पन्हाई ॥
कहा लेहुं यह तजौं सयानी * सिखवहु मोहिं सखी जिय जानी॥

दो०—मोको अब सूझै नहीं, बिनु वह मृदु मुसुकान ॥
कापै न्यारो होतरी, चूनो हरदी सान ॥

सो०—मेटि लोककी कानि, पतिव्रत राख्यौं श्यामसों ॥
यहै धनी अब आनि, भलो बुरो कोऊ कहौ ॥

सुनत गोपिका राधावानी * हरि अनुराग भिदे मन मानी ॥
गद्गद कंठ पुलक तनु आये * लोचन जलज प्रेम तनु छाये ॥
भई प्रेमवश गोपकुमारी * लोक सकुँच कुलकानि बिसारी॥
बारहिं बार कहत ब्रजनारी * धन्य धन्य वृषभानुदुलारी ॥
हम सब तोसों सत्य बखाने * तैं हरि भली भांति पहिचाने ॥
यह मोहन सबको मन मोहै * तिय लखि विवश न होय सु कोहै ॥
अंग अंग प्रति अति छवि छाजै * समता काम कोटि द्युति लाजै ॥
सुमन श्याम दोउ पाणि पकरिकै * करत वेणुधुनि अधरनि धरिकै ॥
तब यह दशा सबनकी होई * जड़ चेतन मोहत सब कोई ॥

१ ठनीहै. २ हाथसे. ३ समुद्र. ४ लजाकर. ५ हाथ. ६ होठोंपर.

वन मृग निकट धाय सब आवैं * खग है मौन न अंग डुलावैं ॥
तृण गहि दंत धेनु रहि जाहीं * थनते क्षीर पियत बछ नाहीं ॥
यमुना बहिवेते रहि जाइ * जलचर प्रकटत बाहर आई ॥

दो०-जड चेतन चेतन चडहि, सुनत होत कल बैन ॥
कै विष कै मद कै अमी, किधौं भग्यो रस मैन ॥

सो०-गृहवन कछु न सुहाय, सुनत श्रवण वह मधुर धुनि ॥
गृहकारज विसराय, चकित थकित रहियत सबै ॥

बाट घाट जहँ मिलत कन्हाई * मोहत सुन्दर रूप दिखाई ॥
नई नइ छवि क्षण क्षण माहीं * झलकावत सब अगनमाहीं ॥
एसी को जु देखि नहिं मोहै * नन्दसुवनसम सुन्दर को है ॥
वह सखि सबहीके मन भावै * सब कोउ वाहि देखि सुख पावै॥
लोकलाज कुल कौने कामहि * जो पावै सुन्दर वर श्यामहि ॥
पै यह मोहि अगम अति लागै * यह सुख मिलै नहीं बिन भागै ॥
इनको गर्ग कह्यो नँदपाहीं * विना सुकृत ये प्रापत नाहीं ॥
तुमहू इनको तप करि पायो * ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो ॥
कहँ सखि इतनो भाग हमारो * जो वर पावहिं नन्ददुलारो ॥
ताते मो मनमें यह आवै * कीजै जो सबके मन भावै ॥
तप कीजै हरिके हितलागी * पूनि गौरिपतिसों वर मागी ॥
नन्दसुवन सुन्दर वर पावैं * और सकल कामना नशावैं ॥

दो०-व्रत तप संयम नेमसने, प्रभु प्रकटत पाषाण ॥
ताते अब तप कीजिये, और उपाय न आन ॥

---

१ दूध २ पति ३ पत्थरमें

सो०–कीजै यह दृढ नेम, प्रात जाय यमुना नदी ॥
पूजहिं सब करि प्रेम, तौ पावहिं पतिकरि हरिहि ॥
तपकरि योगी जन हरि ध्यावैं * मनवांछित फल तपकरि पावैं ॥
सकल कामनाके शिव दाता * कहत वेद विधि पंडित ज्ञाता ॥
हमको मनवांछित सखि एहा * नंदसुवन पदकमल सनेहा ॥
सुनत सप्रेम सखीकी बानी * श्रीवृषभानुसुता हर्षानी ॥
यहै मंत्र सबके मन मान्यो * धन्य धन्य कहि ताहि बखान्यो ॥
कहत सबै कीजै सखि सोई * जानिधि नंदनँदन हितहोई ॥
वृथा जन्म जग जान न दीजै * यशुमति सुतसों हितकरिलीजै ॥
यहै मंत्र सबहिन दृढ कीन्हों * नँदनंदनसों पतिव्रत लीन्हों ॥
धन्य धन्य व्रज गोपकुमारी * जिनके हित पति कृष्णमुरारी ॥
मन वच क्रम हरिसों मन मानी * लोकलाज तिनकी सम जानी ॥
इकक्षण श्याम न उरते टरहीं * नेम धर्म मन हरिहित करहीं ॥
जिनको यश शारद श्रुति गावैं * प्रजदासी जन कहा बतावैं ॥
दो०–जाग्रत स्वम सुषुप्तिहू, ब्रजयुवतिन मनमाहिं ॥
सदा एक तुरिया रहत, और अवस्था नाहिं ॥
सो०–ऐसो कौन प्रवीन, चहै प्रेम ब्रज तियनको ॥
हरि छवि जल मन मीन, बिछुरि सकत नहिं एकपल ॥

अथ चीरहरणलीला ॥

भवन रवन सबहिन बिसरायो * व्रज युवतिन हरिसों मन लायो ॥
यहै वासना सब उर नामी * होय गुपाल हमारो स्वामी ॥
कामवासना करि उर धायो * हरिके हेत तपहि मन लायो ॥

१ यश. २ सरस्वती. ३ वेद ४ गहरी. ५ नींद.

षटदशसहस गोपकी कन्या * करन लगी तप हरिहित धन्या ॥
रहत क्रियायुत तपको साधे * छाड दई सब भोग उपाधे ॥
प्रातकाल यमुनाजल न्हाहीं * प्रहरप्रयन्त रहैं जलमाहीं ॥
जपहि उमापति हर वृषकेतू * सुन्दर श्याम कृष्णपति हेतू ॥
शीतभीत मनमें नहि ल्यावैं * नयन मूदिके ध्यान लगावैं ॥
बार बार यह कहैं मनाई * हम बर पावहिं कुँवर कन्हाइ ॥
जलते बहुरि निकसि सब आई * पूजहिं गोपेश्वर शिव जाइ ॥
चन्दन बिल्वपत्र जल धारा * अक्षत सुमन सुगध अपारा ॥
प्रीतिसहित सब शिवहि चढावैं * धूप दीपकरि अस्तुति गावैं ॥

वृषभ वाहन त्रिपुर अरि, मृगराज चरम्बालाम्बरे ॥
शूलपाणि त्रिशूल मूल, निर्मूलकर शिवशंकरे ॥
सुर असुर नग नाग तव पद, वन्दि मनवाञ्छित लहैं ॥
पूजते पदकमल प्रभु हम, कृष्णपति चाहतिहैं ॥

दो०–तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जनमनपीर ॥
परम दान दीजै हमें, सुन्दर वर बलवीर ॥

सो०–यह वरदान न आन, शिव तुमको चाहत अहैं ॥
कृष्ण कमल पद ध्यान, रहे हमारे उर सदा ॥

यहि विधि मन नित नेम निबाहैं * शिवको पूजि कृष्ण पति चाहैं ॥
नित प्रति प्रात यमुन जल न्हावैं * प्रीत रातिमों मन नहिं मोरैं ॥
सवितासों बहु भाँति निहोरैं * गोद पसारि युगल कर जोरैं ॥
हे तमराशि दिनमणि जगस्वामी * जगत चक्षु सब अन्तर्यामी ॥
भगत मनोरथ पूरण कारी * हमपर होहु दयालु मुरारी ॥
काम हमारे तनुहिं नरावै * नन्दसुवन वर हमको भावै ॥
होय हमारो पति नँदलाला * करहु कृपा सो दीनदयाला ॥
ऐसे हरिहित गोपकुमारी * करैं नेम व्रत तप तनुधारी ॥
गेह देहकी सुरति बिसारी * कृशतनु भई परम सुकुमारी ॥
वर दिवस यों कहत विहान्यो * प्रभु अन्तर्यामी सब जान्यो ॥
मोहत शिव पूजत मननारी * और कामना सकल निवारी ॥
सकल भावके हरि हैं ज्ञाता * सकल देवद्वारा फल दाता ॥

दो०–देखि नेम यह प्रेममय, गोपिनको गोपाल ॥
भये प्रसन्न कृपालु चित, जनहित दीनदयाल ॥

---

१ सूर्य २ दोनों ३ भीतरकी जाननेवाले.

सो०–मो कारण जलन्हात, भये जलहिंमें प्रकट हरि ॥
सुन्दर श्यामलगात, नवकिशोर वर वपु धरे ॥

न्हात जहा युवती सब आछे * मीजत पीठि सबनके पाछे ॥
चकित सबन पाछे हरिहेरो * देख्यो कान्ह कुँवर नँदकेरो ॥
मनमें हर्षित भइ सब नारी * व्रतफल प्रकटे कुजविहारी ॥
नवल किशोर ध्यान मन लायो * सोई प्रगट रूप दरशायो ॥
दृष्टि परतही सकल लजानी * लागीं अग दुरावन पानी ॥
एक एकको भेद न जानै * हरिको सब अपने ढिंग मानै ॥
कहत लाज लागत नहि तुमको * विना बसन देखतहौ हमको ॥
हँसि निकसे तब कुँवर कन्हाई * चीर हारलै चले पराई ॥
हाक देत सब शौंपथ दिखावैं * फिरहु बसन भूपण हम पावैं ॥
डारि बसन भूपण तब दीन्हे * गोपिन तुरत दौरिकै लीन्हे ॥
चीर फटे भूपण सब टूटे * लेत न बनै तहा नहिं छूटे ॥
एक एककी लाज लजाहा * बसन अभूपण पहरत जाहीं ॥

दो०–लगे श्याम ढीठी करन, यह कहि कहि पछितात ॥
अन्तरगति आनन्द अति, झुठहि खीझत जात ॥

सो०–लोगन कहत सुनाय, कान्ह करत लँगराइ अति ॥
यशुमतिके ढिंगजाय, कहत चलो कहिये सबै ॥

चलीं यशोमतिपै सब ग्वारी * प्रेमविवश तनुदशा निमारी ॥
पुलक अग अँगिया दरकानी * टूटे हार लिये निज पाणी ॥
चीर चीर नख घात बनाई * यह मिसकरि उर इनलै आई ॥
देखो महरि श्यामके ये गुन * ऐसे हाल किये सबके उन ॥

१ छुपाने २ हाथ ३ सौगद ४ वस्त्र ५ मोतर ६ हाथ

चोली चीर हार दिखराये * टेर करत इनको भजि आये ॥
और बात इक सुनहु न माई * ढीठ भयो अति कुँवर कन्हाई ॥
बिना वसन हम न्हाति जहां सब * मीजत पीठ जाय पाछे तब ॥
और कहत हमसों सकुचावे * उर उघारिके तुमहि दिखावे ॥
महरि विचारत कहत कहा सब * भयो श्याम यहि लायक धा कब॥
सुनि युवतिनके मुख यह बानी * बोली विहँसि नन्दकी रानी ॥
बात कहो सो जो निबहैरी * बिनामीन नहिं चित्र लहैरी ॥
तुमको कहत लाज नहिं आवति * चोरी रही छिनारो लावति ॥

दो०–तुम चाहति हो गगनते, गहन तोरयाँ बाम ॥
सो कैसे करि पाइहौ, तुम लायक नहिं श्याम ॥
सो०–मैं बूझी सब बात, तुमसों हौं कहिहौं कहा ॥
वृथा फिरत अठिलात, मर्द करो सुनिहै जगत ॥

यहि अन्तर हरि आय गये घर * शीश मुकुट लीन्हे मुरली कर ॥
अति कोमल तनु भूषण सोहै * बाल भेद देखत मन मोहै ॥
जननी बोलि बांहगहि लीनी * कहत सबनिसों रसरिसभीनी ॥
देखहुरी तुम सब इत आवो * इनहींको अपराध लगावो ॥
देखहु समुझि लाज नहिं आवत * इनहीके नये उरन दिखावत ॥
मेरो कान्ह अबहिं सुत बारो * तुम कोउ औरहि जाय निहारो॥
देखत हरिहि युँवति भई भोरी * कहत महरि कछु तुमहिं न खोरी
देत उरहनो तुमको आई * नीकी पहिरावन हम पाई ॥
आपसमें सब कहत सुनाई * देखहुरी यह भाव कन्हाई ॥

१ आकाशसे. २ तारे. ३ हे गोपी. ४ पुत्र. ५ छातियां. ६ स्त्रियां.

यमुना तीर मिले जब आई * कहा गई तबकी तरुणाई ॥
इनके गुण ऐसे को जानै * और भरत औरेही ठानै ॥
घर आवतही भये कन्हाई * ऐसे मनके चोर कन्हाई ॥

दो०–देखि चरित नँदलालके, भई बाल मति भोर ॥
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं, कहत औरकी और ॥

सो०–सकुचीं बहुरि सँभारि, विवश देखि अपनी दशा ॥
चलीं घरन ब्रजनारि, हरि मुखकमलु निहारिकैं ॥

गई घरन मन गोपकुमारी * चित हरि लीनो मदन मुरारी ॥
नेक न मन लागत घरमाहीं * धाम कामकी सुधि कछु नाहीं ॥
मात पिताको डर नहिं मानो * गारि देत कोउ सुनत न कानो ॥
प्रात होतहीं गोपकुमारी * गईं यमुनतट सब सुकुमारी ॥
देखत जहां जाय नँदनन्दन * मोर मुकुट शोभित तनु चंदन ॥
मकराकृत कुण्डल उर माला * पीत बसन दृग कमल विशाला ॥
दरश देखि अँखिया तृपतानी * भई सुखी उँरतपन[२] बुझानी ॥
कहत परस्पर मिलि सब ग्वाली[१] * यमुना निकट गये बनमाली ॥
कौन भाँति करि आज अन्हैबो * बनत नाहि अब यमुना ऐबो ॥
कैसे करि हम बसन उतारें * कान्ह हमारी ओर निहारें ॥
मींजत पीठ आँनकहि आई * बसन अभूषण लै भजिजाई ॥
कहौ फेरि कैसे तब पावैं * अब नहिं कान्ह घाट पै आवैं ॥

दो०–कहत सकुचकी बात सब, ऊपर मन आनन्द ॥
अन्तरगतिके वृत्तेको, जानत सब नँदनन्द ॥

१ जवानी २ हिरदेकी आग ३ हाल

सो०—जानी जाननराय, लाजान्तर युवती करत ॥
सो अब देऊँ मिटाय, अन्तर भलो न प्रेममें ॥

और बात यक श्याम विचारी * ये जल भीतर न्हात उघारी ॥
जो तिय जलमें नाँगी न्हाई * ताको दोष होत अधिकाई ॥
ताको दोष नाश तब पावै * नाँगी परपने सन्मुख आवै ॥
सो इनको यह दूषण टारौं * और लाज अन्तर निरवारौं ॥
करौं आज इनको विधि सोई * इनको हित मम कौतुक होई ॥
जो कछु चूक दासते होई * आप सुधारि लेत हरि सोई ॥
अन्तर प्रभुको नेक न भावै * मिलै निरन्तर तब हरि पावै ॥
अन्तर रहित भक्ति हरिप्यारी * कहत वेद सब सन्त पुकारी ॥
तब हरि मन यह कियो विचारा * इनके वसन हरौ इन बारा ॥
प्रभु सबकी सब दृष्टि बचाई * कदमवृक्ष चढि रहे लुकाई ॥
जब गोपिन हरि लख्यो नाहीं * चकित विलोकैं इत उत माहीं ।
जाने सदनें गये नँदलाला * न्हान चलीं तब सब ब्रजबाला ॥

दो०—धरे उतारि उतारि सब, तटपर भूषण चीर ॥
नग्न होय अस्नान हित, पैठीं यमुनानीर ॥

सो०—ग्रीवाऊँ जलमाहिं, पैठि करति अस्नान सब ॥
मुख छवि कही न जाहिं, कनक कमल फूले मनहुँ ॥

बार बार बूड़त जलमाहीं * प्रेमसहित मन मुदित नहाहीं ॥
शिवसों विनती करत निहोरी * कबहु रति कहैं करजोरी ॥
यह कामना करि सब ध्यावैं * नँदनन्दनको पति करि पावैं ॥
कामातुर सब गोपकुमारी * धरैं ध्यान उर कुंजविहारी ॥

---

१ ऐब २ गैल ३ कपड़े ४ छिपकर ५ घर ६ सुवर्ण

मूदहि नयन दरश चितलावैं * शब्द विचार श्रवण सुख पावैं ॥
भुज जोरत अंकम हितलागी * मगन प्रेमरस तिय बड़भागी ॥
प्रभु अन्तर्यामी सब जानैं * देखैं कदम चढे सुख मानैं ॥
कहत धन्यधनि ब्रजकी बाला * मेरे हित तप करत विशाला ॥
प्रीति रीति सबकी पहिचानी * क्षण क्षणकी सेवा हरिमानी ॥
चाहू भाव मोहि कोउ ध्यावै * मोहि विरदराखे बनिआवै ॥
कियो बहुत श्रम ममहित कारण * अब इनको दुख करौं निवारण ॥
उपजी कृपा समुझि जनपीरा * उतरे तरुते श्रीबलबीरा ॥

दो०-प्रेम मगन युवती सबै, रही ध्यान मन लाय ॥
हरि सब भूषण बसन लै, चढे कदमपर जाय ॥

सो०-भूषण वसन अपार, सोरह सहस वधूनके ॥
हरे एकही बार, लै राखे तरु नीपै पर ॥

कन्यो नीपतरु अति विस्तारा * फूले सुमन सुगंध अपारा ॥
ढैले बसन डार अटकाये * जहाँ तहाँ भूषण लटकाये ॥
नीलाम्बर पट्टाम्बर सारी * श्वेत पीत चूनरि अरुणारी ॥
जहाँ तहाँ शाखन प्रतिसोहैं * देखत छवि वसन्त मनमोहैं ॥
सो तरुशाखा परम सुहाई * बैठे छविसों रासि कन्हाई ॥
युवती सुहृनि तरण धरिमानो * धन्यो सुकृति पूरण फल जानो ॥
देखत कदम चढे नँदलाला * बसन बिना जलमें सब बाला ॥
ध्यान करतते जब सब जागीं * तब जलबाहर निकसन लागीं ॥
जलते निकसि आय तट देख्यो * भूषण बसन तहा नहिं पेख्यो ॥
इत उत चितै चकित भई भारी * सकुचिगईं फिर जल सुकुमारी ॥

---

१ बाम २ गोद ३ कष्ट ४ कदंब ५ लता

नाभिप्रयन्त नीरमें ठाढी * भुजलगाय उर चिन्ता बाढी ॥
कंपत शीतमें अति अकुलानी * बार बार कहि कहि पछितानी ॥

दो०-ऐसो को भूषण वसन, सबके एकहि बार ॥
तटते लये चुरायके, लगी न नेक अबार ॥

सो०-हम जानत यह बात, अम्बर हरि हर लेगये ॥
और कौनको गात, जो मनमें डीठो करै ॥

दीन होय तब युवति पुकारीं * हो कहुँ श्याम जाहिं बलिहारी ॥
दरश दिखाय विनय सुनि लीजै * अम्बर देहु कृपा अब कीजै ॥
थर थर काँपत अँग सुकुमारी * देखि श्याम नहि सके सँभारी ॥
बोलि उठे तब मदनगोपाला * कहा कहत मोसों ब्रजबाला ॥
कबहो जलमें मरत नहाई * लेहु वसन भूषण इत आइ ॥
तुम पै भूषण सुरति बिसारी * तब मैं लै कीन्हों रखवारी ॥
अब अपने पट भूषण लीजै * रखवारी कछु हमको दीजै ॥
जब ऐसे हरि बोल सुनायो * तब सबके मन धीरज आयो ॥
सुनि हरिवचन सकल हरषानी * लखे कदमऊपर सुखदानी ॥
कहत सुनो सखि हरिकी बातें * वसन चुराय करे ये घातें ॥
हम सब जलके बीच उघारा * मागत हैं हमसो रखवारा ॥
तब हँसि बोलीं ब्रजकी बाला * सुनहु श्याम सुन्दर नँदलाला ॥

दो०-तन मन धन अर्पों तुम्हें, है सु तुम्हारे पास ॥
अब अम्बर दीजे हमें, जानि आपनी दास ॥

सो०-तब हँसि कह्यो कन्हाय, जो तन मन मोको दियो ॥
लहु वसन ह्याँ आय, तौ मानो मेरो कह्यो ॥

---

१ कपड़ २ वस्त्र

सुनहु श्याम घन बात हमारी * नग्न कौन विधि आवैं नारी ॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई * विना बसन क्यों देह दिखाई ॥
यह मति आप कहा धौं पाई * आज सुनी यह बात नवाई ॥
पुरुष जात यह कहत न जानहु * हाहा ऐसो मन जनि आनहु ॥
कहत श्याम जो नग्न न ऐहौ * तौ तुम पट भूषण नहिं पैहौ ॥
जो तनमन दीन्हो तुम मोही * तौ राखत कित लज्जा द्रोही[3] ॥
यह अन्तर मोसों जनि राखौ * मानि लेहु तुम मेरे भाखौ ॥
शीत सहत अत नवल किशोरी * जान देहु जलहीमें बोरी ॥
जलते निकसि वेग इत आवो * हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो ॥
ज्यों जलमें रविते कर जोरो * त्यों है सन्मुख नोहि निहोरो ॥
यह सुनि हँसी सकल ब्रजनारी * ऐसी बात न कहौ मुरारी ॥
हाहा लागहिं पाय तिहारे * पाप होत है जाड़न मारे ॥

दो०-छांडि देहु यह टेक हरि, वरु भूषण तुम लेहु ॥
शीत मरत हम नीरमें, बसन हमारे देहु ॥

सो०-भूषण होत अपार, जो तिय देखहि पुरुष ॥
ताते नन्दकुमार, नारी नग्न न देखिये ॥

तुमको छोह होत नहिं राई * बडे निठुर हौ कुँवर कन्हाई ॥
ऐसो करौ जो तुमको सोहै * आज तुम्हारी पटतर को है ॥
आजहिते हम दासि तिहारी * कैसे अंग दिखावहिं नारी ॥
अंग दिखाये भूषण पैहौ * नातर जलमें बैठी रैहौ ॥
मेरे कहे निकसि सब आवो * धोरेमें मो भलो मनावो ॥
कत अंतर राखत हौ हमसों * बार बार मैं भाषत तुमसों ॥

१ नग्नी. २ लबान ३ वैरिन. ४ पानीमें. ५ बराबर.

गोपीवस्त्रहरण.

लेहु आय अपने पटभूषण * यह लागै हमको सब दूषण ॥
मोहित तुम कीन्हो तप भारा * अब कत लज्जा करत हमारो ॥
मैं अन्तर्यामी सब जानी * करिहौं तुम्हरे मनकी मानी ॥
अरु पूरण तप भयो तुम्हारो * अन्तर इतो दूरि करि डारो ॥
सुनि यह मोहनके मुख बानी * सब युवती मनमें हर्षानी ॥
तब सबहिन यह बात विचारी * अबतो टेक परे बनवारी ॥

दो०–कहत परस्पर मिलि सबै, हरि हठ छाँड़त नाहिं ॥
बसन बिना कैसे बनै, कौन भाँति घरजाहिं ॥

सो०–चलौ लीजिये चीर, इनहींको हठ राखिकै ॥
मनमोहन बलवीर, जो कछु कहैं सो कीजिये ॥

यह बिचार जल बाहर आई * बैठि गई तट अतिहि लजाई ॥
बार बार हरि निकट बुलावैं * त्यों त्यों अधिक लाजको पावैं ॥
कहत श्याम अम्बैर अब दीजै * हाहा इतनो हठ नहिं कीजै ॥
बहत समीरै शीत अति भारो * मानैंगी उपकार तुम्हारो ॥
हम दासी तुम नाथ हमारे * हम सबकी पति हाथ तुम्हारे ॥
कहत श्याम यह तजौ सयानी * छाँड़हु लाज करहु मम बानी ॥
अपने बसन लेहु ह्यां आई * दैहौं तुमको नन्द दुहाई ॥
आवहु सकल लाजको त्यागे * करहु शृंगार आय मो आगे ॥
तब सबहिन यह मनमें जानी * करिहैं श्याम आपनी ठानी ॥
कर कुचै अंग ढाकि भई ठाढ़ी * वदन नवाय लाज अति बाढ़ी ॥
गई वदनमनर हरिके पासा * कहति देहु अब हमको वासा ॥
हरि बोले यों बसन न पावो * हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो ॥

---

१ पेच २ आपसमें ३ कपड़े ४ हवा ५ चूची ६ मुख

दो०-जो कहिहौ कहिहैं सबै, हँसि बोलीं ब्रज बाम ॥
लहैं दाँव हमहूं कबहुँ, सुनो श्याम अभिराम ॥

सो०-उभय कमल कर जोरि, सलज सहास निहारि हरि ॥
मांगत सकल निहोरि, कहत देहु अब बसन प्रभु ॥

लखि युवतिनकी प्रीति कन्हाई * रीझे भक्तनके सुखदाई ॥
धन्य धन्य बोले गोपाला * निश्चय प्रीति करी तुम बाला ॥
देखि निरन्तर गोपकुमारी * दीन्हे बसन अभूषण डारी ॥
अति आतुर सब पहिरन लागीं * प्रेम प्रीतिके रस मति पागीं ॥
तब हँसि बोले कुंजविहारी * मैं धनि तुम मेरी सब प्यारी ॥
अन्तर शोच दूरि करि डारो * मेरो कह्यो सत्य उर धारो ॥
शरदै रात तुम आश पुरैहौं * अंकैम भरि सबको उर लैहौं ॥
अब तप करि तुम मन जनुगारो * मैं तुमतें क्षण होन न न्यारो ॥
करसों परश सबन सुख दीन्हो * विरह ताप तनुको हरि लीन्हो ॥
विदा करी हँसि नँदके लाला * निज निज सदन गईं ब्रजबाला ॥
गोपिन उर अति हर्ष बढ़ायो * मन मन कहति कृष्ण वर पायो ॥
ब्रजवासी जनके सुखदाई * आये अपने सदन कन्हाई ॥

दो०-इहि विधि ब्रज सुन्दरिनको, हित करि सुंदर श्याम ॥
ब्रजविलास विलसत विविधै, सकल लोक अभिराम ॥

सो०-सुंदर घन सुखरास, सब विधि करि सबके सुखद ॥
नित नव करत विलास, मुदित सकल ब्रज लोग लखि ॥

अथ वृन्दावनवर्णनलीला ॥

हरि लखि मात पिता सुख पावैं * बालभाव बहु लाड़ लडावैं ॥

---

१ स्त्रियों. २ शरदकी. ३ गोद. ४ अनेक प्रकारके.

नवल किशोर सुभगतनु श्यामा * निरखत मुदित सकल ब्रजबामा॥
ग्वाल बाल सब समैकरि[1] जानैं * सखा प्राण प्रीतम करि मानैं ॥
नित उठि गाय चरावन जाहीं * क्रीड़ा करैं विविध ब्रजमाहीं ॥
इकदिन सोवत सदनै[2] कृपाला * आये द्वार बुलावन ग्वाला ॥
चलहु श्याम बन धेनु चरावन * यह सुनि जननी लगी जगावन॥
उठहु तात मैया बलि जाई * टेरत ग्वाल बाल बल भाई ॥
वदन दिखाय सबन सुख देऊ * दँतवन[3] करि कछु करहु कलेऊ ॥
भई बेर बनको नँदलाला * अब मति सोवहु मदनगोपाला॥
देखनको छबि अति अतुराई * सखा द्वार सब टेर लगाई ॥
सोवतते हरि जागत नाहीं * सुनत बात आलस मनमाहीं ॥
कबहूं बसन ढापि मुख सोवैं * कबहुँ इधारि जननि तनु जोवैं ॥
खोलत नयन पल्क झुकि आवैं * सो छबि निरखि मातु सुख पावैं॥

दो०–उठो लाल जननी कह्यो, तब चितये हँसि मन्द ॥
प्रगटहि पुनि फेर मुख, तबहिं उठे ब्रजचन्द ॥
सो०–सबके टेरत ग्वाल, बलदाऊ यह कहि उठे ॥
बनको भई अबार, गइं गाय आगे निकसि ॥

यह सुनि तुरतहि उठे कन्हाई * यशुमति जल झारी भरिलाई ॥
दुहु भैयन धरवाय मुखौरी[3] * पोंछे मुख जननी निज सारी ॥
करहु कलेऊ अब कछु प्यारे * एक थार दोउ सुत बैठारे ॥
दधि माखन रोटी अरु मेवा * करत मात दोउ भ्रात कलेवा ॥
करत निकट बैठे मनमोदा * दृगँ[4] सुख लूटत महरि यशोदा ॥
मात प्रेमते अति तृपताई * अँचवैन[5] कर जु उठे दोउ भाई॥

१ बराबर २ घर ३ दांतन कुल्ला ४ दृष्टि ५ आचमन

टारे टेर उठ्यो इक ग्वाला * मन यह बगि चलहु नँदलाला ॥
बल मोहन आवहु दोउ भैया * आगे निकसि गई हैं गैया ॥
ग्वाल बचन सुनि अति अतुराई * कछु अचयो कछु नहिं दोउभाई॥
मुरली मुकुट लकुट कर लीन्हो * तिरसि दौरि बनहीं मन दीन्हो॥
केतिक दूरि गई चलि गैया * ग्वालहि बूझत जात कन्हैया ॥
कहुं बन पहुँची हैं जाई * कछु मग मिलिहैं कुँवर कन्हाई॥

दो०-बन पहुँचत सुरभी लई, चले मोहन दोउ धाय ॥
कहत सखनसों जात कित, हमहू पहुँचे आय ॥

सो०-तुम आये अतुराय, जेंवत पर लखिके हमें ॥
तुम सँग रहत बलाय, अब हम दूरि चरायहैं ॥

यह सुनि सखा धाय सब आये * हरिको अंकम भरि उर लाये ॥
तुमही सबनिके सुखदाई * हमको तजि गति नाहु कन्हाई॥
आज तुमहुं बन नहु चरावन * शीतल सुखद सघन अति पावन॥
सुनत कह्यो अति हरष कन्हाई * नीकी कही बात यह भाई ॥
अपनी अपनी गाय बुलावो * एक ठौर करि सबन चरावो ॥
यह सुनि ग्वाल सुरभि गण घेरत * लै लै नाम गाय सब टेरत ॥
धौरी धूमरि रौती कबरी * पियरी गोरी गैनी मजरी ॥
गैरी पुलही रोची गोरी * धूरी हमरी मुँडी भौरी ॥
लीली कपिली सुरवर नेती * लाली नियही रनी सेती ॥
ऐसे सुरनी टेरि बुलाई * सब मिलि चले कुमुद बनधाई॥
तब बल कह्यो दूरि मति जाहू * नन्द रिसैहैं अरु यशुमाहू ॥
बलको कह्यो मानि सुखदाई * बोलि लिये सब सखा कन्हाई ॥

१ दाऊनी २ कमोदनी ३ लाय

दो०-कहत सखन समुझाय हरि, कौन कुमुद बन जाय ॥
बुरो मानि हैं नन्द सुनि, और यशोदा माय ॥

सो०-लावहु गाय फिराय, चलिये वृन्दावन सुखद ॥
सुरभी चरत अघाय, वशीवट यमुना निकट ॥

यह कहि श्याम चले अगुवाई * फेरि गाय ग्वाल सब धाँई ॥
वृन्दावनहिं चले मनमोहन १ हर्षित सखावृन्द तब गोहन ॥
करत कुलाहल आनँद भारी * पहुँचे वृन्दावन बनवारी ॥
सुरभीगण चहुँदिशि बगराई * कहत सखा सब हर्ष बढ़ाई ॥
जादिन अब हति श्याम सिधाये * ता दिनते या बन अब आये ॥
देखत बन सब भये सुखारी * बहत मनोहर त्रिविधि बयारी ॥
विटपनकी शोभा चित दीन्हे * देखत श्याम सखन सँग लीन्हे ॥
नव किसलयदल सुमन सुहाये * मनहुँ वसन्त शृंगार बनाये ॥
मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी * फलके भार रहीं नवडारी ॥
मनहुँ देखि श्यामहि सुख पाई * देत भेंट तरु शीश नवाई ॥
सुमनन भँवर गुंजत छवि पावैं * अस्तुति मनहुँ मधुर सुर गावैं ॥
एक पाव ठाढे सब आगे * जहँ तहँ थकित मनहुँ अनुरागे ॥

दो०-बेलि विविध लपटीं ललित, फूलि रहीं बहुरंग ॥
शोभितसहित शृंगारजिमि, नारि पतिनके संग ॥

सो०-हालि उठत सब पात, मन्द पवन लागत कबहुँ ॥
आनँद उर न समात, बार बार पुलकत मनहुँ ॥

कुंज पुंज मंजुल सुखदाई * शीतल सुमन सुगंध सुहाई ॥

१ गाय २ दौड़कर ३ गायनके झुंड ४ तीनतरहकी हवा शीतल मंद सुगंध ५ कमलपत्र ६ पुष्प

हरि विश्रामहेतु वन जानो * रचो विचित्र सदन बहु मानो ॥
बोलत हैं कल सर्ग बहुरङ्गा * कीरैं कपोतै कोकिल भृङ्गा ॥
मनहुँ मोरि सब आनँद गावैं * जहँ तहँ बैरही नृत्य दिखावैं ॥
तरुदल सरक पवन गति साजे * मधुर सुरन बाजन ज्यों बाजे ॥
क्रीडत मेंकट शुभगति लीने * करत कला ज्यों नट परवीने ॥
मृगगण चितवन आनँद बाढे * मनहुँ तमाशागीर सब ठाढे ॥
पाय श्याम धनहित वनराई * करीं मनहुँ आनंद बधाई ॥
वनशोभा कछु वरणि न जाई * ऋतु वसंत जह रहत सदाई ॥
जहां स्वभाव काल गुण नाहीं * बैरभाव नहिं खँग मृगमाहीं ॥
सदा एकरस परम प्रकाशी * परमसुखद आनंदकी राशी ॥
चिन्तामणि सब भूमि सुहावन * कोमल निमल सुभग अति पावन

दो०-शोभा वृन्दा विपिनैंकी, वरणि सकै अस कौन ॥
शेष महेश गणेश विधि, पार न पावन तौन ॥

सो०-महिमा अमित अपार, श्रीवृन्दावन धामकी ॥
जहँ नित्त रहत विहार, परब्रह्म भगवान हरि ॥

देखि श्याम वन भये सुखारी * बैठे तरुतर विपिन विहारी ॥
वृन्दावनकी करन बड़ाई * बलदाऊसों कहत कन्हाई ॥
मैं यह वट देखत सुख पावत * वृन्दावन मोको अति भावत ॥
कामधेनु सुरतरु बिसरावत * रैंमा सहित वैकुंठ भुलावत ॥
यह यमुनातट यह वन पावत * ये सुरभी अति सुखद सुहावत ॥
यहसुख त्रिभुवनकिनहुं न पावत * ताते मैं तनु धरि इत आवत ॥

१ पक्षी. २ तोता. ३ कबूतर ४ मोर. ५ बंदर ६ पक्षी. ७ वनकी. ८ ब्रह्मा. ९ वृक्षकेनीचे. १० लक्ष्मी.

दाऊजू तुम सचकर मानौं * यह वृन्दावन जड़मति जानौं ॥
चितवनमें आनँदकी रासा * प्रेम भक्तिको यहां निवासा ॥
परमधाम मम परम सुहावन * पावनहूते पावैन[1] पावन ॥
जे तरु वृन्दावनके माहीं * कल्पवृक्ष तिनकी सरि नाहीं ॥
कल्पवृक्षके तरु जब जाई * तब मागे वांछित फल पाई ॥
वृन्दावन तरु चितत जोई * प्रेम भक्ति मम पावत सोई ॥

दो०–जाके बशमें रहत हौं, अपनी प्रभुता त्याग ॥
प्रेम भक्तिसो लहत नर, वृन्दावन अनुराग ॥

सो०–श्रीमुख वरण्यो श्याम, श्रीवृन्दावनको मेंहत[2] ॥
सुख पायो बलराम, सुनव कान्हके वचन वर ॥

सखा वृन्द मुनि श्रीमुखवानी * प्रेम मगन तनु दशा भुलानी ॥
चितवत हरिमुख पलकविसारी * जिमि चकोरगण शशिहि निहारी॥
कहत चकित सब अतिसुख पावत * निज लीला हरि प्रगट जनावत ॥
पुनि पुनि पुलक कहत शिरनाई * सुनहु श्यामधन कुंवर कन्हाई ॥
बार बार तुमको कर जोरैं * हमहिं कान्ह तुम तजहु न भोरैं॥
जहां जहां तुम धनु धरि आवो * तहां तहां जनि चरण छुडावो ॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हैया * ब्रजते तुम्है न टारौं भैया ॥
तुम मेरे मनको अति भावत * तुमसे मैं बहुतै सुख पावत ॥
या ब्रजसम त्रिभुवन कहुँ नाहीं * तुम्हरे ढिंग मैं रहत सदाहीं ॥
मैं तुम हेतु[3] देह यह धारी * तुमतें ब्रजलीला विस्तारी[4] ॥
है यह ब्रज मोको अति प्यारो * तातें कबहूँ होत न न्यारो ॥
ऐसे हरि ग्वालनके माहीं * गुप्त बात कहि कहि समुझाहीं ॥

१ पवित्र २ माहात्म्य ३ कारण ४ फैलाई

दो०–मधुर वचन सुनि श्यामके, सखावृन्द सुखपाय ॥
प्रेम पुलकितनु मुदित मन, रहे सब गहि पाय ॥

सो०–धनि धनि धनि तुम श्याम, धनि व्रज धनि वृन्दाविपिन
तुम्हरे गुण अभिराम, हम सब अंत न जानहीं ॥

सुनहु श्याम घन नददुलारे * तुम प्रभु हम सब दास तुम्हारे॥
दुलभ यह हरि सग तुम्हारो * कबधौं फेरि गोप तनु धारो ॥
नानानिये बहुरि मननाथा * कब तुम फिरिहौ सुर मुनि साथा
कब तुम छाक छीनिकै खैहौ * कबधौं फिरि एसे सुख दैहौ ॥
बलि बलि जइये श्याम तुम्हारी * अब इक विनती सुनहु हमारी ॥
सुन्दर मुरली नेक बनावो * अधरसुधारस श्रवणन प्यावो ॥
तुम्हैं नन्दकी सौंह दिवावैं * मुरली धुनि सुनि हम सुख पावैं ।
तुम्हरे मुख यह बाजत नीकी * हम सबकी जीवन है जीकी ॥
सुनत सखनकी कोमल बानी * प्रम सुधारसमों लपगनी ॥
गुण गम्भीर गोपाल कृपाला * भक्त वदय प्रभु दीनदयाला ॥
भये प्रसन्न भक्त सुखदाई * चितये कमलनयन समुहाई ।
करते लकुट निकट धरि दीनो * पाछे मुरलीको गहि लीनो ॥

दो०–पकरि दुहू कर अधर धर, मधुर मुरलि धुनिगान ॥
मोहि लियो चर अचर नभ, जल थल श्यामसुजान ॥

सो०–भई थकित गति पौन, यमुना जल लोन्ही शंयन ॥
ह्वै गये खग मृग मौन रहे जहा तहँ चित्रसे ॥

---

१ सुन्दर २ मूल ३ होठाका अमृतरस ४ कान ५ आकाश
६ सौना ७ चुप

उपजावत गावत गति सुदर * राग रागिनी ताल विविध वर ॥
सखा वृन्द सुनि तनमन वारैं * निरखत मुखछवि पलक विसारैं॥
चलत नयन भृकुटी पुट नासा * करपछत्र मुरली सुरश्वासा ॥
मानहुँ निरतक भाव बतावैं * शुभगति नायक सैन सिखावैं ॥
कुंचित अलक वदन छवि देई * मनहुँ कमल रस अलिगैण लेई ॥
कुंडल झलक कपोलनमाहीं * मनहु सुधारस मकर अमाहीं ॥
दशनदमक मोतिन लर ग्रीवा * मनहु सकल शोभाकी सीवा ॥
तिलक विचित्र भालछबि छाजै * मनहु महा छवि दशन विराजै॥
चमकत मोर चंद्रिका चारू * मनहु सकल शृंगार शृंगारू ॥
श्याम गात उर गजमणि माला * सँग शोभित बनमाल विशाला
मैरकत गिरि मनो सुरसरिधारा * बैठी पगति कीरैं किनारा ॥
कटितट पीत तडित दुति हारी * पदपकज नूपुर रुचिकारी ॥

दो०–ग्रीवा लटकनमुरलि पर, शोभित छविसमुदाय ॥
प्रेममगन निरखत मुदित, गोपबाल सुख पाय ॥

सो०–सुन्दर श्याम सुजान, देत परमसुख सखनको ॥
वारत तन मन प्रान, धन्य धन्य कहि ग्वाल सब ॥

रीझत ग्वाल रिझावत श्यामा * लेत मुरलिमें सबको नामा ॥
हँसत ग्वाल सब दै कर ताला * लेत हमारो नाम गोपाला ॥
कहत श्याम अब तुमहुँ बजावो * ऐसे हमको गाय सुनावो ॥
हँसि मुरली तिनके कर दीन्हो * अधरन धर अमृत रस लीन्हो॥
लैलै निज कर सकल बजावत * हरिके स्वरको रूप न पावत ॥
आस पास सोहत सब बालक * मैंधि प्रभु प्रीति रीतिके पालक ॥

१ भारोंका झुंड २ गरदन ३ पन्ना ४ तोता ५ विजली ६ बीचमें

हँसि हँसि सबके चित्त चुरावैं * सब मिलि प्रेमानद वढावैं ॥
जैसे श्री मुरलीधर गायो * काहू पै सो रूप न आयो ॥
हँसि हँसि कहत परस्पर भाई * हरिकी सम को सकै बजाई ॥
चतुरानन पंचानन ध्यावैं * सहसानन नव नित गुण गावैं ॥
सुर नर मुनि कोउ पार न पावै * सो ग्वालन सँग वेणु बजावैं ॥
व्रजवासी जनको प्रतिपाला * भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला ॥

दो०–कारण करण अनंत गुण, निगम[1] नेति जिहि गाव ॥
सो ग्वालन सँग गावहीं, देखहु भक्ति प्रभाव ॥

सो०–वृन्दावनकी रेनु, ब्रह्मादिक वांछित सदा ॥
जहां श्याम सुखदेनु, ग्वालन सँग चारत सुरभि ॥

अथ द्विजपत्नीयाचनलीलावर्णन ।

विहरत वृन्दावन वनवारी * विविध भांति लीला अनुसारी ॥
कबहूं सखन संग मिलि गावैं * कबहूं मुरली मधुर बजावैं ॥
कबहूं गैयन घेरत धाई * कबहू यमुनाके तट जाई ॥
करत कुलाहल आनँद भारी * देत दिवावत रसकी गारी ॥
ऐसे लीला करत अपारा * भये क्षुधारत[2] गोपकुमारा ॥
कहत भये तब हरिसों जाई * हमको क्षुधा लगी अधिकाई ॥
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी * अपने मन यह बात विचारी ॥
सुनि सुनि मेरे गुणगण गाना * करत रहत द्विजतिय मन ध्याना ॥
तिनको दरशन आज दिखाऊँ * तिनके मनकी ताप नशाऊँ ॥
तव हरि ग्वालन कह्यो बुझाई * यज्ञ करत ह्यां द्विजसमुदाई ॥
तिनके निकट जाउ तुम भाई * प्रथम प्रणाम कीजियो जाई ॥

१ वेद. २ भूखे

कहियो हमको कृष्ण पठायो * तुमपै भोजन मागन आयो ॥

दो०-यह सुनि ग्वाल गये तहा, जहा विप्रसमुदाय ॥
यज्ञ करत अहंमित लिये, विद्याको बल पाय ॥

सो०-ग्वालन करी प्रणाम, कह्यो तिन्हैं कर जोरिकै ॥
हमैं पठाये श्याम, मांग्यो है भोजन कछू ॥

बनमें राम कृष्ण दोउ भैया * आये इतहि चरावन गैया ॥
वे कछु आज भयेहैं भूखे * यह सुनि विप्र ह्वैगये रूखे ॥
कह्यो यज्ञहित करी रसोई * अहिरन पहिले देय न कोई ॥
यह सुनि ग्वाल सकल फिरि आये * हरिसों तिनके वचन सुनाये ॥
सुनि हलधरतन चितै कन्हाई * बोले वचन मन्द मुसुकाई ॥
ये द्विज धर्म कर्म लपटाने * विना भक्ति मोको नहिं जाने ॥
तब ग्वालनसों कह्यो मुरारी * जाउ जहा इनकी सब नारी ॥
उनको है दृढ भक्ति हमारी * वे मानैंगी कह्यो तुम्हारी ॥
उनसों भोजन मागहु जाई * कहियो भूखे भये कन्हाई ॥
तब द्विन नारिन ढिंग ये आये * हाथ जोरि तिनके शिर नाये ॥
कह्यो राम अरु कुँवर कन्हैया * बनमें भूखे है दोउ भैया ॥
माग्योहै कछु भोजन तुमसों * आशा देहु सो कहिये उनसों ॥

दो०-ग्वालनके सुनि वचन सब, हर्षि उठीं द्विजवाम ॥
कहत हमारो भाग्य धनि, भोजन माँग्यो श्याम ॥

सो०-करत रहीं नित ध्यान, सुनि सुनि जिनके गुण श्रवण॥
सफल जन्म निज जान, तिनको भोजन लै चलीं ॥

षटरसके व्यंजन विधि नाना * कोमल भाँति अमित पकवाना ॥

१ घमड २ धीरे ३ ब्राह्मणी ४ कान ५ अमगिनती

खीर खाँड सिखरन दधि न्यारो * माखन लियो श्यामको प्यारो ॥
कहँलग वरणों कहौं प्रकारा * प्रेम सहित लीन्हे भरि थारा ॥
बहुते ग्वालनके कर दीने * बहुते अपने शिर धरि लीने ॥
नयनन दरश लालमा बाढी * उपजी चाह हृदय अति गाढी॥
चलीं पतिनकी कानि निसारी * देखनको प्रभु गोपविहारी ॥
ग्वालनसों पूछत यह बाता * कितहैं हरि जनके सुखदाता ॥
जिनके पुरुष हते घरमाहीं * तिनको जान देत सो नाहीं ॥
कहत जात तुम कित अतुराई * लोकलाज तनु दशा भुलाई ॥
तिनसों कहत भई ते नारी * हमको श्रीगोपाल हकारी ॥
भोजन माँग्यो है हम पाहीं * तिनहिं देन ग्वालन सँग जाहीं॥
तिनको दरश देखि सुख पैहैं * बहुरि तिहारे घर हम ऐहैं ॥

दो०–यह सुनि पति अति क्रोध करि, तिनहिं दिखायो त्रास॥
कहत भई तुम बावरी, बैठति नाहिं अँवास ॥

सो०–जिनके उर नँदलाल, बसे लकुट मुरली लिये ॥
तिनहिं न भय यम काल, कौन भांति रोके रुकहिं॥

हरिपै हमैं जान पिय देहू * कहा रोकि अपयश शिर लेहू ॥
देखन देहु नंदके लालहि * त्रिभुवन पति प्रभु मदन गोपालहि॥
इतनी बात मानि पिय लीजै * हा हा हमैं दान यह दीजै ॥
वे हैं यज्ञपुरुष भगवाना * अन्तर्यामी कृपानिधाना ॥
करत यज्ञविधि तिन्हैं बिसारी * कहा सरैगी बात तिहारी ॥
कहँ लगि कहौं बात समुझाई * जात दरशकी अँवधि बिहाई ॥
जो तुम स्वामी जानत नाहीं * तो हम मत्य कहैं तुम पाहीं ॥

१ भय २ घर ३ हद

मनतो मिल्यो जाय नँदलालहि * वरिहौ कहा रोकिकै खालहि ॥
लेहु सँभारि देह यह सारी * जासौं पिय तुम कहत हमारी ॥
को राखै इतने जंजालहि * मिलिहैं प्राण यशोदा लालहि ॥
जो निश्चय नहि श्याम सनेहा * तौ यह कौन काजकी देहा ॥
सब सखियनके आगे जाई * देखेंगी छबि कुँवर कन्हाई ॥

दो०-ऐसे देह अरु गेह तजि, पतिकी कानि निवारि ॥
पहुँची सबते प्रथमही, जो रोकी व्रजनारी ॥

सो०-कठिन प्रेमको पंथ, तहां नेमकी गमें नहीं ॥
कहत सकल सदग्रंथ, जहां नेम तहँ प्रेम नहिं ॥

ऐसे भोजन लै द्विज बाला * पहुँची वन जहँ मोहन लाला ॥
नटवर भेष चित्र तनु कीने * ठाढे सखा सग भुज दीने ॥
मोर मुकुट बैजैन्ती माला * करमुरली दृग नयन बिशाला ॥
कुण्डल अलक तिलक झलकाहीं * कोटियामछबि पैंतर नाहीं ॥
मुख मृदुहँसिनि लसनि पटपीरो * निरखत नयन ताप भयो सीरो॥
भोजन लै हरि आगे राखे * अपने भाग्य धन्य करि भाखे ॥
तिन्है देखि हरि मन सुख मान्यो * वचनन करि तिनको सन्मान्यो॥
तिनसों बहुरो कह्यो कन्हाई * गृहपति तजि तुम कित इत आई॥
कहियत विप्र वेद अधिकारी * हौ तिनकी तुम पतिव्रतनारी ॥
वे सब यज्ञ करत वनमाहीं * तुमबिन यज्ञ होय हैं नाहीं ॥
यह तुम कछू भलो नहि कीन्हो * पतिको कह्यो मानि नहि लीन्हो॥
पति आयसु तिय पालै जोई * चारि पदारथ पावै सोई ॥

१ चमकेंगे २ जाना ३ घुटनोंतक लटकतीहुई माला. ४ बराबर
५ ब्राह्मण

दो०–पति देवता सुतीय कहँ, वेदवचन परमान ॥
जाहु वेगि तुम पतिन पहँ, ताते यह जियजान ॥
सो०–सुनि हरिवचन प्रमान, कर्म धर्म मानो सुखद ॥
द्विजतिय परम सुजान, बोलीं सब कर जोरिकै ॥

सुनहु श्यामघन अन्तर्यामी * तुमही सकल जगतके स्वामी ॥
यज्ञपुरुष तुमही सुखधामा * तुमही सबके पूरण कामा ॥
विविध यज्ञ करि तुमको ध्यावै * तुमते चारि[1] पदारथ पावैं ॥
सकल धर्म ते शरण तुम्हारा * है सब जीवनको सुखकारा ॥
यह हम सुनी पतिन मुख बानी * कहत वेद इतिहास बखानी ॥
ताते शरण तुम्हारा आई * यह दूषण नहिं हमैं गुसाईं ॥
सब मायावश सकल भुलाने * ताते पतिन न तुम पहिचाने ॥
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजै * हमको शरण आपनी दीजै ॥
चौरि पदारथहूते मारो * ह प्रभुदरशन शरण तुम्हारो ॥
ताते नहीं निरादर कीजै * अपने चरण शरण रख लीजै ॥
सुनि प्रभु द्विजपतिनीकी बानी * भये प्रसन्न भक्त सुखखानी ॥
धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो * द्वितनरि तिनको भोजन राख्यो ॥
दो०–दै अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्हैं कह्यो घर जाहु ॥
ह्वै हैं तुम्हरे दरशते, शुद्ध तुम्हारे नाहुँ[2] ॥
सो०–हरि आयसु धरि माथ, पाय भक्ति वरदान वर ॥
राखि हृदय ब्रजनाथ, चलीं हर्षि द्विजतिय सदनै[3] ॥
नँदनन्दनकी करत बड़ाई * द्विजपत्नी सब घरको आई ॥

१ धर्म अर्थ काम मोक्ष २ पति ३ घर

मनतो मिल्यो जाय नँदलालहि * वरिहो कहा रोकिकै खालहि ॥
लेहु सँभारि देह यह सारी * जासों पिय तुम कहत हमारी ॥
को राखै इतने जजालहि * मिलिहै प्राण यशोदा लालहि ॥
जो निश्चय नहिं श्याम सनेहा * तौ यह कौन काजकी देहा ॥
सब सखियनके आगे जाई * देखोंगी छबि कुँवर कन्हाई ॥

दो०–ऐसे देह अरु गेह तजि, पतिकी कानि निवारि ॥
पहुँची सबते प्रथमही, जो रोकी ब्रजनारी ॥

सो०–कठिन प्रेमको पंथ, तहा नेमकी गमे नहीं ॥
कहत सकल सद्ग्रथ, जहां नेम तहँ प्रेम नहिं ॥

ऐसे भोजन लै द्विज बाला * पहुँची वन जहँ मोहन लाला ॥
नटवर भेष चिन तनु कीने * ठाढे सखा सँग भुज दीने ॥
मोर मुकुट वैजन्ती माला * करमुरली दृग नयन बिशाला ॥
कुण्डल अलक तिलक झलकाहीं * कोटिकामछबि पँटतर नाहीं ॥
मुख मृदुहँसिनि लसनि पटपीरो * निरखत नयन ताप भयो सीरो ॥
भोजन लै हरि आगे राखे * अपने भाग्य धन्य करि भाखे ॥
तिन्है देखि हरि मन सुख मान्यो * वचनन करि तिनको सन्मान्यो ॥
तिनसों बहुरो कह्यो कन्हाई * गृहपति तजि तुम कित इत आई ॥
कहियत विप्र वेद अधिकारी * हौ तिनकी तुम पतिव्रतनारी ॥
वे सब यज्ञ करत वनमाहीं * तुमविन यज्ञ होय है नाहीं ॥
यह तुम कछू भलो नहिं कीन्हो * पतिको कह्यो मानि नहि लीन्हो ॥
पति आयसु तिय पालै जोई * चारि पदारथ पावै सोई ॥

१ चमकेसो २ जाना ३ पुष्पोंतक लटकतीहुई माला ४ बराबर ५ ब्राह्मण

दो०–पति देवता सुतीय कहँ, वेदवचन परमान ॥
जाहु वेगि तुम पतिन पहँ, ताते यह जियजान ॥
सो०–सुनि हरिवचन प्रमान, कर्म धर्म मानो सुखद ॥
द्विजतिय परम सुजान, बोलीं सब कर जोरिकै ॥

सुनहु श्यामघन अन्तर्यामी * तुमही सकल जगतके स्वामी ॥
यज्ञपुरुष तुमही सुखधामा * तुमही सबके पूरण कामा ॥
विविध यज्ञ करि तुमको ध्यावें * तुमते चारि पदारथ[1] पावें ॥
सकल धर्म ते शरण तुम्हारी * है सब जीवनको सुखकारी ॥
यह हम सुनी पतिन मुख वानी * कहत वेद इतिहास बखानी ॥
ताते शरण तुम्हारी आई * यह दूषण नहि हमें गुसाई ॥
सब मायावश सकल भुलाने * ताते पतिन न तुम पहिचाने ॥
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजै * हमको शरण आपनी दीजै ॥
चारि पदारथहूते भारो * है प्रभुदरशन शरण तुम्हारो ॥
ताते नहीं निरादर कीजै * अपने चरण शरण रख लीजै ॥
सुनि प्रभु द्विजपत्नीकी वानी * भये प्रसन्न भक्त सुखदानी ॥
धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो * हितकरि तिनको भोजन राख्यो ॥

दो०–दै अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्हें कह्यो घर जाहु ॥
है हैं तुम्हरे दरशते, शुद्ध तुम्हारे नाहु[2] ॥
सो०–हरि आयसु धरि माथ, पाय भक्ति वरदान वर ॥
राखि हृदय व्रजनाथ, चलीं हर्षि द्विजतिय सदनै[3] ॥

नँदनन्दनकी करत बड़ाई * द्विजपत्नी सब घरको आई ॥

---

१ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष. २ पति. ३ घर.

देखत तिन्हें विप्र समुदाई * भये पुनीत विमल मति पाई ॥
धन्य धन्य कहि तियन बखानी * आप कहत हम अति अज्ञानी ॥
जिनके हेतु यज्ञ हम कीन्हो * तिन माँग्यो भोजन नहि दीन्हो ॥
हम विद्या अभिमान भुलाने * अविगतिकी गति कैसे जाने ॥
परब्रह्म प्रभु जनसुखदाई * भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई ॥
तिनको हम पहिचान्यो नाहीं * बारबार यह कहि पछिताहीं ॥
हैं ये तिय अतिशय बड़भागी * कृष्णचरण पंकज अनुरागी ॥
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको * देख्यो जाय प्रगट इन तिनको ॥
ऐसे बहु विधि तियनें सराही * आदर करि लीन्ही घरमाही ॥
प्रेम प्रीति करि जो हरि ध्यावै * सो नर नारि अभयपद पावै ॥
नरनारी कछु नाहि विचारा * प्रभुको केवल प्रेम पियारा ॥

दो०-भाव तियनको धारि उर, तहँ हरि कृपानिकेत ॥
सखनसहित भोजन करत, रुचिसों प्रीतिसमेत ॥

सो०-ब्रह्मलोक लौं शोर, ग्वालनके सँग खात हरि ॥
छीनि छीनिकै कौर, करत परस्पर हासरस ॥

अति हित भोजन तहँ हरि कीन्हो * सखावृन्दको अति सुख दीनो ॥
बनमें फिरत चरावत गैयां * बैठे आय कदमकी छैयां ॥
भये सखा सिगरे इकठाही * गैयां बगर रही बनमाही ॥
दुपहर घाम जान मनमाही * लागे चलन सघन बनछाही ॥
बैठे ग्वालवाल चहुँ ओरियां * आगे धरी दूधकी घरियां ॥
मध्य श्याम सुन्दर नँदनन्दा * उँडुगणमें[३] जिमि पूरणचन्दा ॥
मोर मुकुट कटि काछनी काछे * कोटि कामकी छबिको आछे ॥

१ जिसकी गति नहीं जानी जाय. २ स्त्रियोंको. ३ तारोंके झुंडमें.

कबहूं मुरली मधुर बजावैं * कबहूँ सखन मिलि सारंग गावैं॥
कोऊ सखा नृत्यको करहीं * कोऊ टटकारी उचरहीं ॥
करत केलि ऐसे बनमाहीं * देखि देखि सुरवृन्दे सिहाहीं ॥
कोऊ ताल बनावत नीके * उपजावत कोउ आनँद जीके ॥
कहत धन्य ये मनकी बाला * विहरत जिन सँग कृष्ण कृपाला॥

दो०–धन्य विटपें धनि भूमि यह, धनि वृन्दावन चन्द ॥
धनि व्रज कहि वर्षें सुमन, रीझ रीझ सुरवृन्द ॥
सो०–मन मन देव सिहाहिं, वन विहार हरिको निरखि ॥
श्रीवृन्दावनमाहिं, हम न भये द्रुम लता तृण ॥

श्रीदामा तव कह्यो बुझाई * खेलहिमें सब रहे भुलाई ॥
गैया कितहिं चरति को जाने * यह सुनिकै सब खेल भुलाने ॥
जित जित हेरनेंको उठि धाये * गैया जाय घेरि लै आये ॥
जे सुरभी आई नहिं आनी * चरत सघन बनमाझ सयानी॥
तिनको तरु चढ़ि कान्ह बुलाई * मुरली टेर सुनत उठि धाई ॥
ऐसी गैया श्याम सधाई * मुरली सुनि सब हरिपै आई ॥
जब जब गैयन श्याम बुलावैं * हूहू करि सब हरिपै आवैं ॥
तिनपर कर फेरत मनमोहन * पीताबरसों झारत छोहन ॥
करत प्यार तिनपर वनमाली * हस्तकमलकी सब प्रतिपाली ॥
हरिको निरखि गाय सुख पावैं * तिनके भाग्य कहत नहिं आवै ॥
जब हरि गैयन करसों परसैं * लखि लखि कामधेनु मन तरसैं॥
कहत कहा जो कामद दीनो * हमको विपिन न जन्म न दीनो॥

---

१ देवताओंका समूह २ वृक्ष ३ बुलानेको ४ हाथसे

दो०–धनि धनि ब्रजकी धेनु ये, चारत त्रिभुवननाथ ॥
झारत पोंछत दुहत नित, हितकरि अपने हाथ ॥
सो०–मनहीं मन पछिताहिं, कामधेनु ब्रज धेनु लखि ॥
हम न भई ब्रजमाहिं, हरिपदपकज परसती ॥

ऐसी लीला करत अनेका * वनमें ललितै एकते एका ॥
वृन्दावन सब दिवस बितायो * सध्यासमय निकट जब आयो ॥
तब हरि कह्यो चलो अब गेहू * गैया सब आगे करि लेहू ॥
पहुँची साँझ आय नियराई * वनमें करहु अवेर न माई ॥
यह सुनि गाय सबन अगुवाई * भली बात यह कही कन्हाई ॥
वनते निकरि चले सब ग्वाला * ब्रज आवत नन्दर गोपाला ॥
सुरभी वृन्द गोपबालक सग * अति आनद गावत नाना रँग॥
अधर अनूप मुरली सुर कौरी * ऊंच सुरन बजावत गौरी ॥
सुन्दर श्रवण सुनत ब्रज धाई * गृहकारज तिय तजि सब आई॥
कहत परस्पर मोहन आवत * देखि देखि छवि अति सुख पावत
पूरण कला उदित शशि जैसे * कुमुदिनि सर फूली तिय तैसे ॥
नयन चकोर रहे टकलाई * दिवस विरहकी ताप नशाई ॥

दो०–प्रेममगन आनद अति, कहत सकल ब्रजवाम ॥
देखहु सखि यशुमतिसुवन, शोभित अति अभिराम ॥
सो०–श्यामल तनु पट पीत, जलेज माल बरही मुकुट ॥
लई मनों इन जीत, घैनदामिनि बग धनुप छवि ॥

भ्रकुटि बिकट दृग चचलताई * अति छवि देति वरणि नहिं आई।

१ सुन्दर २ कमल ३ मोरपख ४ मेघबिजली

धनुष देखि बिच खञ्जन जानों * उडन करत हरि उत्तर न मानो॥
प्रफुलित नयन शरद अम्बुजसे * मनोकुण्डलि रविकरके परसे ॥
गोपद रज पराग छवि छाई * तामधि अली बैठ्यो जनु आइ ॥
एक कहत देखहु वह शोभा * अति सुख देत लसत मन लोभा ॥
कमलवदन मुरली रस लेई * कुटिल अलक ऐसे छवि देइ ॥
मानो अलिगण साजी सैना * सहि न सकत चाहत निज एना॥
अधर सुधा लगि अति दुखपाई * मुरलीसों मनो करत लडाइ ॥
शोभित नासा परम सोहाई * तामें सरिस उपमा यह पाई ॥
मनहुँ अनर्ग सहायक आयो * तिलप्रसून शर ताहि चलायो ॥
सुनि यह युक्ति सकल हर्षाई * निरखत हरिमुखछवि सुखपाइ ॥
कृपादृष्टि हरि सकल निहारा * आये व्रजजन मन सुखकारी ॥

दो०–कहत मुदित मन युवतिजन, धनि धनि सखि वे मोर॥
जिनके पाखनको मुकुट, कीन्हो नन्दकिशोर ॥

सो०–धनि धनि सखि वे वास, जाको मुरली अधर धरि॥
हरि पूरत निज सास, को पुनीत ताके सदश ॥

निज निज सदन गये सब ग्वाला * आये घर हलधर गोपाला ॥
देखि दुहू मातन सुख पायो * हरषि दुहुनको कण्ठ लगायो ॥
चाहे आन अबार लगाई * यह कहि बार बार बलि जाइ ॥
रोहिणिसों कह यशुमति मैया * भूखे व्हैहैं दोऊ भैया ॥
मैं दोउनको देत न्हवाई * तुम भोजनको करहु चनाइ ॥
निकट ल्यै मुरली कर लीन्ही * हरि करते लकुटी धरि दीन्ही ॥
नीलाम्बर पीताम्बर लीन्हो * मुकुट उतारि श्याम तब दीन्हो॥

---

१ कमलने २ भौंरा ३ नाक ४ कामदेव ५ तिलके फूलसमान हलका

प्राण समान यशोमति जानी * धरयो सँमारि सदन नँदरानी ॥
छोरति अँग भूषण महतारी * मुक्तमाल बनमाल उतारी ॥
कटि किंकिणि अँगद भुज छोरै * निरखि गात्र आनँदन औरै ॥
पट लै दोउनके अँग झारे * उरलगाय लीन्हे अति प्यारे ॥
तुम दोउ मेरे गाय चरैया * और न कोऊ टहल करैया ॥

दो०–लीन्हे तुमहिं बिसाहि मैं, तब अति रहे नन्हाय ॥
सुनि हँसि हरि बलसों कहत, कहत झूठही माय ॥
सो०–यह तो समुझि न जाय, सांच झूठकी बात कछु ॥
यशुमति लेत बुलाय, मैं चोरी हँसि हँसि कहत ॥

सुमनौसुत अंगन परसाई * तपत तरणिको जल लै आई ॥
परम प्रीति दोउ सुत अन्हवाये * सरस बैसन तनु पोंछि सुहाये ॥
षटरस भोजन जाय जिमाये * यशुमतिके सुख जायँ न गाये ॥
शीतल जल कपूर रस रचयो * लैझारी दुहुँ भैयन अँचयो ॥
भोर भयो सुत धोय उठे जब * पीरे पान दये जननी तब ॥
बीराखात मुदित दोउ भाई * ब्रजवासिन झूठनि सब पाई ॥
यशुमतिके सुख कौन गनावै * शारदहू कहि पार न पावै ॥
धन्य नन्द धनि यशुमति माता * महिमा नहिं कहिसकै विधाता ॥
ब्रह्म सनातन हैं प्रभु जोई * जिनके पुत्र कहावत सोई ॥
जो प्रभु सकल विश्वके स्वामी * तीनलोक पति अन्तर्यामी ॥
विश्वम्भर निजनाम कहावैं * ताहि यशोमति माय खवावैं ॥
रात सुवावै प्रांत जगावै * बालक ज्यों पुचकाय लडावैं ॥

१ बाजू २ शरीर. ३ सुगंधित पुष्पोंका तेल ४ कपडे

दो०-रहत मगन गुण श्यामके, निशिदिन आठौ याम ॥
महरि महरके प्राणधन, मोहन सुन्दर श्याम ॥
सो०-हरि क्षण बिसरत नाहिं, ब्रजके नरनारी जिनहिं ॥
मगन प्रेम मनमाहिं, निशिदिन जात न जानहीं ॥

अथ गोवर्द्धनलीला ॥

कृष्णप्रेम ब्रज लोग समाने * देव पितर सब लोक भुलाने ॥
कार्तिक शुदि परिवा जब होई * इन्द्रहि पूजत ब्रज सब कोई ॥
ताकी सुधि बुधि सबन भुलाई * सबके मनमें ध्यान कन्हाइ ॥
सो तिथि अति समीप जब आई * तब यशुमतिके उर सुधि आई॥
कहत नन्दसों नन्दकि रानी * सुरपतिपूजा तुमहिं भुलानी ॥
जाकी कृपा बसत ब्रजमाहीं * एकहु वस्तु कमी कछु नाहीं ॥
जाकी कृपा दूध दधि गाइ * सहस मथानी मथत सदाइ ॥
जाकी कृपा पुत्र हम पाये * जासु कृपा सब विघ्न नशाये ॥
भई सकल ब्रजमाझ बडाई * कुशल रहीं बलराम कन्हाइ ॥
सुरपतिहैं कुलदेव हमारे * गोप गाय ब्रजके रखवारे ॥
तिनकी तुम सब सुरति भुलाइ * रहे दिवस पाचक अब आई ॥
कहो सकल गोपनके राई * इन्द्रयज्ञकी करो चँडाई ॥
दो०-भली दिवाई मोहिं सुधि, कहत महरिसों नन्द ॥
भूलि गये हम देवको, काज मोहवश मन्द ॥
सो०-हाथ जोरि नन्दराय, विनय करत सुरराय सों ॥
तुमको गयो भुलाय, क्षमा कीजियो मोहिं प्रभु ॥

---

१ महर २ पास ३ इन्द्र ४ तयारी

तबहिं नन्द उपनन्द बुलाये * श्रीवृषभानु सहित सब आये ॥
सबको देखि नन्द सुख पायो * महरि महर कहि शीश नवायो ॥
अति आदर सबहींको कीन्हों * सादर सबको बैठक दीन्हों ॥
मनही मन सब शोध कराहीं * कस कछू माग्यो तौ नाहीं ॥
राज अश उनको जो होई * बिन माँगे हम दीन्हो सोई ॥
बूझत नन्दहि सब सकुचाये * कौन काज हम सबन बुलाये ॥
तबहिं नन्द सबको समझायो * मैं तुमको यहि काज बुलायो ॥
सुरपति पूजाके दिन आये * सो तुम सबदिन मिलि बिसराये ॥
मैंहूं राज काज लपटानो * निशिदिन लोभहिमाँझ भुलानो ॥
इन्द्रयज्ञकी सुरति भुलानी * अति समीप दिन पहुँचो आनी ॥
तातें अब सब करो चढाई * इन्द्रयज्ञ कीजे सुखदाई ॥
इन्द्रदिको हम सदा मनावैं * तिनहींतें ब्रजजन सुख पावैं ॥

दो०–यह सुनि मन हर्षे सबै, देवकाज जिय जान ॥
हम सब भूले सुरपतिहिं, मन लागे पछितान ॥

सो०–भली करी नँदराय, तुम हमको दीन्ही सुरति ॥
सुरपतिको शिर नाय, क्षमा करावत पाप सब ॥

बिदाहोय सब गोप सिधाये * घर घर बाजन लगे बधाये ॥
पूजाकी विधि[२] करत सबै मिलि * जिहि जिहि भाँति सदा आई चलि
अमित[३] भाति पकवान मिठाई * होत घरनि घर बरणि न जाई ॥
नन्द महर घर बजत बधाई * गावत मगल अति हर्षाई ॥
नेवेज करत यशोदा आतुर * आठौ सिद्धि घरहिं अति चातुर ॥
मैंदाके अनेक पकवाना * बेसनके बहु करत विधाना ॥

१ इंद्र २ याद. ३ रीति ४ अनेक प्रकारसे ५ जेवनार.

घृत मिष्टान्न सबै परिपूरण * मिश्राकरत पाकको चूरण ॥
विविध भाति पक्वान मिठाई * कहु लगि नाम कहौं सब गाई ॥
और नारि मनकी सग लागी * घृतपक करत सबै अनुरागी ॥
जहा तहा बहु चर्ची बनाई * यशुमति सबन सराहत जाई ॥
जो सामा मागति है जोई * रोहिणि ताहि देतिहै सोई ॥
महरि करति रुचि और निहारे * धरत जोरि विधि न्यारे न्यारे ॥

दो०–सैंति सैंति अति नेमसों, धरति अछूते जात ॥
श्याम कछू परसैं नहीं, यह मनमाहिं डरात ॥

सो०–शक करत मनमाहिं, सुरपति पूजा जानि जिय ॥
यशुमति जानति नाहिं, सब देवनके देव हरि ॥

खेलत ते सतन सुखदाई * भीतर आये कुवर कन्हाई ॥
जननी कहति इहाँ जनि आवै * लरिकनको यह देव डरावै ॥
रहे ठिठुकि आगनहि डराई * मनहीं मन हसि कहत कन्हाई ।
मैयारा मोहिं देव दिखैहै * इतनो भोजन यह सब खैहै ॥
यह सुनि खीझि कहतिहै मैया * ऐसी बात न कहौ कन्हैया ॥
जोरि जोरि कर देव मनावै * बालकका अपराध क्षमावै ॥
बाहर चले श्याम अनखाई * युवति कहैं हरि गये रिसाई ॥
जान देहु हरि अबहिं अयाने * देवकाज बालक कहँ जाने ॥
छुइहै कहूँ श्याम यह भोजन * उनकी पूजा जानै को जन ॥
और नहीं हम काहू जानैं * कै सुरपति कै गोधन मानै ॥
यह कहि कहि इन्द्रहि शिर नावैं * राम श्यामकी कुशल मनावैं ॥
और देव नहिं तुमहि सरीशा * कहु नहिं कृपा करी सुरईशा ॥

१ छुए २ गुस्से होकर ३ समान

दो०–ऐसे सुरपति यज्ञहित, यशुमति करति विधान ॥
द्वारे बैठे नन्द जहँ, गये तहां को कान्ह ॥

सो०–झुरे मन्द ढिंग आय, ब्रजके जे उपनन्द सब ॥
बैठे अति सुख पाय, करत बात विधि यज्ञकी ॥

दीपमालिका रचि रचि साजत * पुहुपै माल मण्डली विराजत ॥
ढोल निशान बाजने बाजैं * मुदित ग्वालगण जित तित रा जैं ॥
गैयन चित्र विचित्र बनावैं * अगन आभूषण पहिरावैं ॥
सात वर्षके कुँवर कन्हाई * खेलत मन आनद बढाई ॥
द्वारन युवती चित्र बनावैं * मगल गान मुदितमन गावैं ॥
सथिया रचि पुनि थापहिं हाथा * पूजा देखि हँसे ब्रजनाथा ॥
मो आगे सुरपतिकी पूजा * मोते और देव को दूजा ॥
ब्रजवासी मोको नहिं जानैं * मो अच्छत सुरपतिको मानैं ॥
अब यह मेटौं यज्ञ विहाने * लीन्हो भाग बहुतदिन याने ॥
ब्रजवासिनपै आप पुजाऊँ * गिरि गोवर्द्धन नाम धराऊँ ॥
यह विचार मनमें ठहराई * गये नन्द ढिंग कुँवर कन्हाई ॥
हर्षि नन्द कनियाँ पौढाये * वदन चूमि उरसों लपटाये ॥

दो०–तब हरि बोले नन्दसो, मधुर मन्द मुसकाय ॥
करत पुजाई कौनकी, बाबा मोहि बताय ॥

सो०–कौन देव सो आहि, काहेको पूजत तिन्हैं ॥
मैं नहिं जानत ताहि, कहौ मोहिं समुझाय सब ॥

नन्द कह्यो तब सुनहु कन्हाई * इन्द्र सकल देवनको राई ॥
तिनको पूजत गोप सदाई * कुलमें यही रीति चलि आई ॥

---

१ पुष्प २ मघवा ३ इन्द्रकी ४ सवेरे ५ गोद

ताते तिन्हें पूजियत ताता * जाते कुशल रहौ दोउ भ्राता ॥
या पूजातें सुरपति हरषै * है प्रसन्न तब जल वे बरषै ॥
तृण अनाज उपजत है जाते * गाय गोप सुख पावन ताते ॥
याते सदा यज्ञ यह कीजै * जो गोधन धन कबहुँ न छीजै॥
तब हरि कह्यो सुनो नँद ताता * ऐसे तुम जु कही यह बाता ॥
जहाँ इन्द्र पूजत नहि प्राणी * तहाँ कहा बर्षत नहिं पानी ॥
जब हरि ऐसे वचन सुनायो * तब नन्दहिं उत्तर नहिं आयो ॥
सुनि हरिवचन रहे सकुचाई * मनहिं कहत चतुरङ्ग कन्हाई ॥
है बालक अबहीं अति नान्हा * देवकार्य कहँ जानै कान्हा ॥
तब चुचकार कह्यो नँदराई * सदनै जाउ तुम कुँवर कन्हाई॥

दो०—ऐसे में जिन जाहु कहुँ, भीड़ बड़ी है तात ॥
को जानै किहि भावको, कित धौं आवत जात ॥

सो०—सोय रहौ गोपाल, मेरे पलँगा जाय तुम ॥
मैंहूं आवत लाल, पाछेते तुम्हरे निकट ॥

तब हरि मन इक बुद्धि उपाई * बैठे ओर महरि ढिंगनाई ॥
तिनको हरि यों कहि समुझायो * आज मोहिं सपनो इक आयो ॥
पुरुष पुनीत एक अतिचारू[1] * चार भुजा तनु शुभग शृँगारू ॥
तिन मोसों यों कह्यो बुझाई * इन्द्रहि पूजे कहा बड़ाई ॥
मैं तुमको इक देव बताऊँ * गिरि गोवर्द्धन प्रगट दिखाऊँ ॥
यह पूजा तुम इनहिं चढ़ावो * जाते मुह मागे फल पावो ॥
तुम आगे भोजन वह लैहै * प्रगट आपनों रूप दिखैहै ॥
चार पदारथके ये दाता * अन धन गोधन केतिक बाता॥

१ घर २ पवित्र ३ सुन्दर

ऐसे देव छाड़ि घरमाहीं * तुम पूजत सुरपतिहिं वृथाहीं ॥
कोटि इन्द्र क्षणमें वे मारें * क्षणहीमें पुनि कोटि सवाँरें ॥
गोवर्द्धनसम देव न दूजा * करहु जाय उनहींकी पूजा ॥
ताते मों मनमें यह आई * पूजहु गोवर्द्धन सब जाई ॥

दो०–चकित गोप सब वचन सुनि, कहत अकथ यह बात ॥
सुने न अबलौं देव कहुँ, प्रगट होयके खात ॥

सो०–सुनी बात यह नन्द, शोचत सब उपनन्द मिलि ॥
कहा कहत नँदनन्द, समझ परत नहिं स्वप्न यह ॥

सुनि यह बात सबन ब्रजपाई * देख्यो ऐसा स्वप्न कन्हाई ॥
सुरपतिपूजा देत मिटाई * गोवर्द्धनकी करत बड़ाई ॥
कोऊ कहत काहु कहें साची * कोऊ कहें बात यह काची ॥
बालक जाने कहा पुनाई * कोऊ कहत करें को भाई ॥
कोऊ इन्द्रहि कहत सकाने * हमतो कछु यह बात नजाने ॥
हलधर[2] कहत सुनो ब्रजवासी * यो महिमा जानत अविनाशी ॥
इनको बालक भरि मति जानो * जो हरि कह्यो सत्य करि मानो ॥
नन्द निकट जो गोप सयाने * हरिको बल प्रताप सब जाने ॥
कहत नन्दसो ते सुख पाई * कीजै सोइ जो कहत कन्हाई ॥
कहत नन्द तब सबन सुनाई * मेरेहू मनमें यह आई ॥
हरिको स्वप्न झूँठ नहिं होई * है प्रतीति मेरे मन सोई ॥
कालीको स्वप्नो हरि देखो * भयो प्रातही तासु विशेषो ॥

दो०–ताते सोई कीजिये, कान्ह कहैं जोइ बात ॥
सब ब्रजवासी पूजियें, गोवर्द्धन चलि प्रात ॥

---

१ डरे २ दाऊजी

सो०–यहै मन्त्र ठहराय, बूझत हरिसों हर्षि सब ॥
कहौ कान्ह समझाय, कौन भाँति गिरि पूजिये ॥

हर्षि याह तब सबन बुलायो * इन्द्रयज्ञ हित तुम जु बनायो ॥
बहु व्यंजन पकवान मिठाई * सो सब शकटन लेहु भराई ॥
नाचत गावत सहित हुलासा * चलहु सकल गोवर्द्धन पासा ॥
तहां जाय गिरिवरहि मनाई * पूजहु बहु विधि मंगल गाई ॥
माँगि मागि तुमसों गिरि लैहै * मुहमागे तुमको फल दैहै ॥
मेरो कह्यो सत्य तुम जानो * मेरो स्वप्न झूठ मति मानो ॥
यह परचो तुम आखिन देखो * तबहि मोहि साचो करि लेखो ॥
जो चाहो ब्रजकी ठकुराई * तौ पूजो गोवर्द्धन राई ॥
कान्हर जो कछु आज्ञा दीन्ही * सबहिन बात मानि सो लीन्ही ॥
कहहिं परस्पर सब सुखपाई * चलहु गोवर्द्धन करत बधाई ॥
ब्रज घरघर सब होत कुलाहल * फिरत गोप आनन्द उमाहल ॥
मिलत परस्पर अंकम[3] दैदै * शकटन साजत भोजन लैलै ॥

दो०–बहु व्यंजन पकवान बहु, बहुत मिठाई पाक ॥
रस गोरस मेवा विविध, अमित भांतिके शाक ॥

सो०–षटरसके सब भोग, कछु शँकटन[4] कछु काँवरिन ॥
गृह गृहते ब्रजलोग, ले ले गिरिपूजन चले ॥

नन्द महरके घरकी सामा * यह लगि वरणि बताऊँ नामा ॥
सहस शँकट पकवान मिठाई * रस गोरस बहु भार भराई ॥
नन्द सदनते लै बहु ग्वाला * चले अग्र उर हर्ष बिशाला ॥
पटभूषण सब गोपन साजे * भांति अनेक बाजने बाजे ॥

---

१ सलाह २ आपसमें ३ गलेलगाकर ४ छकड़ोंपर ५ छकड़ा

नन्द महर अरु महरि जितेका * और गोप बहु भीर अनेका ॥
बलदाऊ अरु कुँवर कन्हैया * सुभग शृंगार किये दोउ भैया ॥
सखा वृन्द सुन्दर सब लीन्हे * कोटि काम छबि लज्जित कीन्हे॥
शोभित नन्द महरके साथा * चले सकल पूजन गिरिनाथा ॥
यशुमति अरु रोहिणि महतारी * नन्दगाँवकी अरु जे नारी ॥
भूषण वसन सवारि सवाँरी * चली हर्षि उर आनँद भारी ॥
पुरवृषभानु आदि भजे भामा * चली सकल गोपनकी बामा ॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी * ललितादिक सब गोप कुमारी ॥

दो०-नौसत साज शृंगार अति, पट भूषण बहु रंग ॥
यूथ यूथ जुरिकै चलीं, कीरति जूके संग ॥

सो०-सबके मन यह काम, देखनको हरि रूप दृग ॥
परम मुदित सब वाम, सबके मनमोहन बसे ॥

चन्द्र वदनसी सब मृगनयनी * सकल सुघर सब कोकिलबयनी॥
नवयौवनमें सबहिं प्रवीनी * सबको मनमोहन आधीना ॥
चलीं सकल गोवर्द्धन धाहीं * भई भीर अति मारगमाहीं ॥
शकट वृन्द अरु गोपसमूहा * जात चले युवतिनके यूहा ॥
कौतुक करत गोपगण राजैं * ताल मृदंग अनेकन बाजैं ॥
कोउ गावत कोउ नाचत जाहीं * कोउ ठाढे मग पावत नाहीं ॥
कोउ शकटन साजि सँवारे * कोउ पवन एक पुकारे ॥
गावत मंगल गोपकुमारी * निरखि श्याम छबि होत सुखारी ॥
होत कुलाहल अति मनमाहीं * कोऊ बात सुनत कछु नाहीं ॥
कौतुक श्याम देखि हर्षाहीं * अति उत्साह सबन मनमाहीं ॥

१ समूह २ वराङ्गना ३ गोपियां ४ चतुर ५ समूह

सदन सग खेलत हरि जाहीं * सबकी सुरति श्यामके माहीं ॥
ब्रजवासिनकी भीर सुहाइ * उपमा मोपै वरणि न जाई ॥
छं०–उपमा न मोपै जात वरणी, भीर अति सुन्दर भई ॥
बढ्यो आनन्दसिंधुको सुख, विविध तनुधर सोहई ॥
छवि उजागर नगरकैधौं, सुकृत पुंज सुहावने ॥
तिनमध्य सबके श्याम नायक, सकल लायक पावने॥
दो०–नन्दमहर उपनन्द सब, श्याम राम दोउ भाय ॥
पहुँचे गोवर्द्धन निकट, निरखि शिखर सुख पाय ॥
सो०–उतरे सहित समाज, चहूँ ओर ब्रजलोग सब ॥
मधि शोभित गिरिराज, कोटिकामशोभा सरस ॥
चहुँ दिशि फेरकोश चौरासी * उतरे घेर सकल ब्रजवासी ॥
ब्रजवासिनकी भीर अपारा * लगे चहू दिशि चारु बजारा ॥
वस्तु अनेक वरणि नहिं जाइ * बिन मोलहि सब सौंज बिकाइ ॥
ठौर ठौर ब्रजयुवती गावैं * जहँ तहँ नटवा नाच दिखावैं ॥
बहु विदूषक हास हँसावैं * छप माँझ अति हर्ष बढावैं ॥
नर नारी मन परम हुलासा * अतिआनन्द उमँगि चहु पासा॥
पूजन पूजन विधि नदराइ * अधिकारी तहँ कुवर कन्हाइ ॥
कह्यो कृष्ण तब विप्र बुलाई * प्रथम यज्ञ आनन्द कराइ ॥
पूछि वेद विधि तिनसों लीजै * वाही विधि गिरिपूजा कीजै ॥
तबहि विप्र नँदराय बुलाये * आदर सहित गोप लै आये ॥
हरिको कह्यो मानि तिन लीन्हों * प्रथमारम्भ यज्ञको कीन्हों ॥
परम रुचिर वेदिकौ बनाइ * सामवेद ध्वनि द्विजवर गाइ ॥

१ समूह २ समस्वरा ३ चौकी ४ ब्राह्मण

दो०—देखनको धाये सबै, ब्रजके नर अरु बाम ॥
भयो देवता गिरि बड़ो, ताहि पुजावैं श्याम ॥

सो०—बड़े महर उपनन्द, नन्द आदि ठाढ़े सबै ॥
कहत जो कछु नँदनंद, करत सकल सोई तहाँ ॥

पचामृत बहु कलश भरायो * डारि शिखरते गिरि अन्हवायो॥
बहुरो लै गंगाजल ढायो * चंदन वन्दन तिलक सँवार्‍यो॥
भूषण वसन विचित्र चढाये * सुमन सुगंध माल पहिराये॥
धूप दीप करि आरति साजी * घंटा शंख झालरें बाजीं॥
करत वेदधुनि विप्र सुहाई * चकृत नैभ लखि सुर समुदाई॥
सुरपति पूजा कृष्ण मिटाई * थाप्यो गिरि मन तिलक चढाई॥
देखि इन्द्र मन गर्व बढायो * ब्रजवासिनके मन कह आयो॥
पूजत गिरिहि मोहि बिसराई * गिरि समेत मन देऊँ बहाई॥
पावहि मम अपमान सजाई * देखौं तब को करत सहाई॥
अब देखौं मैं इनकी करनी * उपजी है इनको बुद्धि मरनी॥
गिरिको पूजत प्रेम बढाई * खमेको मुख लेत मनाई॥
कितकवार पुनि इनको मारत * ऐसे सुरपति मनहिं विचारत॥

दो०—कह्यो कृष्ण तब नन्दसों, भोजन लेहु मँगाय ॥
गिरि आगे सब राखिकै, अरु यह विनय सुनाय ॥

सो०—यह सुनिकै नँदराय, लावहु ग्वालनसों कह्यो ॥
लीन्ही तहा मँगाय, सामग्री सब भोगकी ॥

नाना भाँति जात पकवाना * विविध मिठाई अमित समाना॥
षटरस व्यंजन बहु तरकारी * दहीं दूध सिखरन रुचिकारी॥

१ रंगरंग २ आकाश ३ बेइज्जत

मधु मेवा फल फूल अनेका * सुंदर स्वाद एकते एका ॥
खीर आदि बहु भाँति रसोई * कहँ लगि वरणिसकै सबकोई ॥
मूँग भात, अरु बरा पकोरी * बहुतक दधि बोरी अरु कोरी ॥
कियो अन्नको कूट सुहावन * जैसो गिरि गोवर्द्धन पावन ॥
परसि परसि गिरि आगे राखत * जैसी निधिसों मोहन भाषत ॥
गिरि पूजत जिहि भाँति कन्हाई * तैसे सब ब्रजलोग लुगाई ॥
गिरि गोवर्द्धनके चहुँ पासा * कीन्हो बहु विधि सहित हुलासा॥
ठौरहि ठौर वेदिका राजै * अन्नकूट चहुँ ओर विराजै ॥
तिलमधि गोवर्द्धन गिरि पावन * परम अनूप स्वरूप सुहावन ॥
चंदन केसरि रोरी हाथा * शोभित अति चहुं दिशि गिरिमाथा

दो०–गिरिगोवर्द्धन रायकी, छवि नहिं परत लखाय ॥
ब्रजवासी जनके हिये, ध्यान परम सुखदाय ॥

सो०–महिमा अमित अपार, श्रीगोवर्द्धन अचलकी ॥
जेहि पूजत करतार, शारद विधि नहिं कहि सकै ॥

प्रातहिते परसत भोजन सब * भयो दरकि युगयाम तरणि तब॥
कह्यो श्यामसों तब नँदराई * जेवहि गिरिसों कहौ कन्हाई ॥
तव हरि कह्यो सबन समुझाई * भोग समर्पहु घंट बजाई ॥
मनमें कछू खटक जिन राखो * दीन वचन मुखते कहि भाषो ॥
नयन मूदिकै ध्यान लगावो * प्रेम सहित करजोरि मनावो ॥
हरि गोपन पूजा सिखरावैं * अपनी पूजा आप करावैं ॥
जिनपर कृपा करत नँदनंदन * तिनसों आप करावत वंदन ॥
सवन मानि हरि कह्यो जो लीन्हो * बहु विधि गिरि आराधन कीन्हो॥
तब प्रगटे गोवर्द्धन नाथा * यज्ञपुरुष प्रभु श्रुतिके माथा ॥

१ आनंद. २ चौकी. ३ पर्वत. ४ मरम्मनी ५ दोपहर. ६ सूर्य. ७ वेदके.

सहसभुजा तनु श्याम तमाला * मोर मुकुट बैजती माला ॥
नख शिख भूषण परम सुहाये * अंग अंग छबि झलकन छाये ॥
भये देखि ब्रजलोग सनाथा * दियो दरश गोवर्द्धन. नाथा ॥

दो०–जय जय जय कहि देव मुनि, वर्षत सुमन अकास ॥
ब्रजवासी जय जय करत, भये अनन्द हुलास ॥

सो०–सहसौ भुजा पसारि, लागे भोजन करन गिरि ॥
देखत ब्रज नर नारि, अति अद्भुत हरिके चरित ॥

कहत मुदित सब लोग लुगाई * कान्हहिं की शोभा गिरिराई ॥
जैसे कान्ह श्यामतनु सोहै * तैसोई गिरिवर मन मोहै ॥
तैसेइ कुण्डल तैसेइ माला * तैसेइ चचल नयन विशाला ॥
तैसोइ मुकुट पीतपट तैसो * नख शिख रूप कामको जैसो ॥
द्वैभुज हरिके परम सुहाई * गिरिकी भुजा सहस अधिकाई ॥
देखि दर्श गिरिवरके रूरे * नन्द यशोदा आनँद पूरे ॥
कहतकि वडे देव हम पाये * देखहु परकट दरश दिखाये ॥
ऐसो देव सुन्यो नहिं देख्यो * जीवन जन्म सफल करिलेख्यो ॥
ललिता राधहि कहत बुझाई[1] * मैं यह बात समुझिहै माई ॥
यह लीला सब श्याम बनावैं * आपहि जेंवत आप जिमावैं ॥
मैं जानी हरिकी चतुराई * इद्रहि मेटि आप बलि खाई ॥
हैं इनके गुण अगम अगाधा * मेरी बात मान तू राधा ॥

दो०–इतहि नन्दको कर गेहे[2], गोपनसों बतरात ॥
उत आपहि धारे सहस भुज, रुचिसों भोजन खात ॥

१ समझा कर २ पकड़े

सो०–श्रीराधा सुखपाय, मुदित विलोकत श्याम छवि ॥
भक्तनके सुखदाय, नित नव करत विनोद व्रज ॥

इत गोपन सँग हर्षित राहीं * उन सबहिनको भोजन खाहीं ॥
ग्वालिन एक विलोकन हारी * रहिवृषभानु सदन रखवारी ॥
तासु नाम बदरीलागायो * तिन घरहीते भोग लगायो ॥
प्रेम सहित बहु विनय सुनाई * सबके अन्तर्यामि कन्हाई ॥
ऐसे प्रीति क्षुधित बनवारी * लई तासु बलि भुजा पसारी ॥
भोजन करत परमरुचि मानी * गुणसागर लीला यह ठानी ॥
कहत नन्दसों कुँवर कन्हाई * मै जो बात कही सो आई ॥
अब तुम गिरि गोवर्द्धन जाने * मेरे वचन सत्य करि माने ॥
तुम देखत भोजन सब खायो * परगट तुमको दर्श देखायो ॥
तुम्हरी भक्ति भाव पहिचानी * गिरि तुम्हरी पूजा सब मानी ॥
तुम अब माग्यों चाहौ जोई * मागिलेहु इनपै सब सोई ॥
नन्द कहत धनि धन्य कन्हाई * यह पूजा तुम हमहि बताई ॥

दो०–प्रीति रीतिके भावसों, भोजन सबके खाय ॥
ह्वै प्रसन्न अति नन्दसों, तब बोले गिरिराय ॥

सो०–लेहु नन्द वरदान अब, जो तुम हमसों चहौ ॥
मैं लीन्हो सुख मान, बहुत करी तुम भक्ति मम ॥

भली करी तुम मेरी पूजा * सेवक तुमते और न दूजा ॥
तेरे सुत बल मोहन भाई * इनको कुशल अनन्द सदाई ॥
मैहीं इनको स्वप्न दिखायो * मैही सुरपतियश मिटायो ॥
अब जो सुरपति तुमहि रिसाई * जल वर्षे व्रज ऊपर आई ॥
तौ तुम अपने जिय मति डरियो * कान्ह कहै सोई तुम करियो ॥

१ घर २ भूखे ३ इन्द्र

अब तुम मम प्रसाद ले खाहू * अपने अपने घर सब जाहू ॥
ब्रजमें बसो निशंक सदाहीं * और कछू माँगौ हम पाहीं ॥
यह सुनि चकित सकल ब्रजनारी * भोजन कियो प्रथम गिरिधारी ॥
अब बोलत मुख वचन प्रमाना * ऐसे पैरछत देव न आना ॥
नन्द कह्यो कह माँगो स्वामी * देखि दरश भयो पूरणकामी ॥
सकल सिद्धि सुख तुम्हरो दीन्हो * कृपासिन्धु मैं तुम्हरो कीन्हो ॥
मोहविवश प्रभु तुमहि बिसारे * भूलि फिर्यो देवनके द्वारे ॥

छं०-फिर्यों भूल्यो देवद्वारन नाथ तुमहिं बिसारके ॥
पूजा तुम्हारी कहा जानैं हम अहीर गँवारके ॥
आपही करि कृपा दीन्ह्यो स्वप्न श्यामहिं आयके ॥
दई बालकको बड़ाई नाथ यह अपनायकै ॥
अब हमैं डर कौनको प्रभु शरण तुम्हरी पायकै ॥
इन्द्र कह करिहै हमारो नाथ ब्रजपर आयकै ॥
तुमहिं कर्त्ताहो सबनके तुमहिं सबके ईश हौ ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड तुम्हरे रोमप्रति जगदीश हौ ॥
श्याम हलधर दास तेरे कुशल ये दोऊ रहैं ॥
करि कृपा यह देहु प्रभु हम और कछु नाहीं चहैं ॥
सुतन लै दोउ डारि गिरि पद आप नँदचरणन परे ॥
बिहँसि गिरि लखि प्रीतिपंकज पाणि दुहुँ माथे धरे ॥

दो०-नन्द गोप उपनन्द सब, श्रीवृषभानु समेत ॥
बार बार गिरिराजके, चरण परत अति हेत ॥

१ देखटके २ मलख ३ मालिक ४ हाथ

सो०-करि सबको सनमान, दै प्रसाद निज पाणिसों ॥
सबन कह्यो घरजान, है प्रसन्न गिरिराज तब ॥

चलहु घरन तब कह्यो कन्हाई * भये प्रसन्न देव गिरिराई ॥
भली भाँति पूजा तुम कीन्ही * गिरिवर राज मान सब लीन्हीं ॥
दोउ करजोरि भये मत ठाढे * भक्ति भाव सबके मन बाढे ॥
हरि करि परिकरमा सब गिरिको * परशत चरण चलत मनधरको ॥
देखि चकित गण गँधरव सुर मुनि * कहत धन्य ब्रजवासी गुण गुनि ॥
धन्य नन्दको सुकृत पुरातन * धन्य धन्य पर्वत गोवर्द्धन ॥
करत प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि * बर्षि सुमन करि करि जैजै धुनि॥
निज निज लोकन देव सिधाये * ब्रजवासी सब मनको भाये ॥
मुदित सकल मन लोग लुगाई * गोवर्द्धनकी करत बड़ाई ॥
कहत धन्य यशुमतिको जायो * बडो देवता कान्ह पुनायो ॥
अब इनते ब्रजमें सुख पैहैं * गोप गाय सब सुखसों रैहैं ॥
बर्ष बर्ष प्रति इन्द्र पुजायो * कबहू प्रगट दरश नहिं पायो ॥

दो०-प्रगट देत हैं दर्श गिरि, सबके आगे खात ॥
परमहर्ष नर नारि सब, सबके मुख यह बात ॥

सो०-खेलत नित नव ख्याल, भक्तपाल नँदलाल ब्रज ॥
दुष्टनके उरशाले, सुरनरमुनि मोहत निरखि ॥

इन्द्र देखि गोवर्द्धनपूजा * कियो क्रोध मोमम को दूजा ॥
ब्रजवासिन मोको बिसरायो * मेरो बलि लै गिरिहि चढ़ायो ॥
नेक नहीं शंका उर आनी * कछू कानि मेरी नहि मानी ॥
तेतिस कोटि सुरनको नायक * मेघवर्त्त सब मेरे पायक ॥

१ शरीक २ पुष्प ३ काटा

किये अहीरन मम अपमाना * कीधौं इन अपने मन जाना ॥
जानि बूझि इन मोहिं भुलायो * गिरिहि थापि शिर तिलक चढ़ायो
काहू उन्हें दियो बहकाई * मरणकाल ऐसी मति आई ॥
तुरत उन्हें अब देहुँ सजाई * देखौं धौं को करत सहाई ॥
पर्वत पहिले खोदि बहाऊँ * ब्रजजन मारि पताल पठाऊँ ॥
फूलि फूलि भोजन जिन कीन्हों * नेक न राखौं ताको चीन्हों ॥
सकल गोप यह नयनन देखें * बड़े देवताको फल लेखें ॥
ता पाछे ब्रज देउँ बहाई * भुँवपर[1] खोज रहै नहिं राई ॥

दो०–ऐसे सुरपति क्रोधकरि, मनमें गर्व बढ़ाय ॥
प्रलयकालके मेघ सब, लीने तुरत बुलाय ॥

सो०–तिनहिं कह्यो सुरराय, ब्रजपर वर्षौ जाय तुम ॥
पर्वत प्रथम मिटाय, पुनि बोरहु ब्रजलोक सब ॥

मोसों अहिरन करी ढिठाई * मेरी बलि पर्वतहि खवाई ॥
ताकारण मैं तुम्हहिं बुलाये * सैनसमेत आहु सब धाये ॥
गिरि समेत सब देहु बहाई * भूतल खोज रहै नहिं राई ॥
सुरपति वचन सुनत धनतमके * कापर क्रोध करत प्रभु मनके ॥
कैतिक गिरि ब्रज हमरे आगे * तुम प्रभु क्रोध करत केहि लागे॥
क्षणहीमें ब्रज खोदि बहावें * डूगरको धर नाम मिटावें ॥
होत प्रलय प्रभु हमरे पानी * रहत अक्षय वट तनक निशानी॥
आप क्षमा कीजे सुरराई * हम करिहैं उनकी पहुनाई ॥
यह सुन सुनासीर[2] सुख पायो * हर्षि पान दै तिनहिं पठायो ॥
चले मेघ सब शीश नवाई * आये ब्रजके ऊपर धाई ॥
क्षणहीमें रवि गैंगन[3] छिपाने * देखतही देखत अधिकाने ॥

१ पृथ्वीपर २ इन्द्र ३ आकाश

कीन्हों शब्द गरज घन भारा * अतिही घटा भयावनकारी ॥

छं०–अतिही भयानक घटाकारी कज्जलहु पटतर नहीं ॥
घेरि लीन्हों ब्रज चहूँदिशि पवन प्रलय झकोरहीं ॥
गरजतगगन घन घोर तडपत तड़ितै बारहिं बारहीं ॥
होत शब्द अघात ब्रज नर नारि चकित निहारहीं ॥
गये वन जे गाय लै ते धाय फिर ब्रज आवहीं ॥
अन्धधुन्ध अपार खोजत धाम पन्थ न पावहीं ॥
सैंतत जहां तहँ वस्तु सब नर नारि मन शोचत महा ॥
वैर सुरपतिसों कियो अब होन धौं चाहत कहा ॥

दो०–उमडि घुमडि घहराय घन, परन लगे जल जोर ॥
टेरत सुतको मात पितु, ब्रज गलबल चहुँ ओर ॥

सो०–ब्रजजन सकल विहाल, विल्लाने नित तित फिरत ॥
श्याम करत यह ख्याल, देखि देखि मनमें हँसत ॥

अति व्याकुल जहँ तहँ नरनारी * कहत देत पवतको गारा ॥
आये पूजि गोवर्द्धन नाई * सुरपति निजकुल देव मिटाई ॥
दीन्हो गिरिवर यह फलभारी * लेहु सबै अब गोदपसारी ॥
चढ्यो प्रचारि कोप सुरराई * देत पलकमें ब्रजहिं बहाई ॥
जोपै बड़े देव गिरिराजू * तौ किन आय बचावत आजू ॥
नन्दसुवन यह पूजा ठानी * ताते इन्द्र चढ्यो रिसै मानी ॥
कहति यशोमतिसों ब्रजवाला * कहा वाम यह कियो गोपाला ॥
सुरपति हैं कुलदेव हमारे * ब्रजते मेटि दिये ते न्यारे ॥

१ निकलो २ विकल ३ पुत्र ४ गुस्सा

चढ्यो आय ब्रज ऊपर सोई * अब सहाय काहे न गिरि होई ॥
धन गरजत तरजत अति भारी * देखि देखि डरपत नरनारी ॥
सकल विकल भय मन पछिताहीं * लरिकन दुरवैत गोदन माहीं ॥
भये शोच बश सब ब्रजलोगा * कहत बन्यो अब मरण सँयोगा॥

दो०–देखि देखि ब्रजकी दशा, नन्दमहरि पछिताति ॥
कियो निरादर इन्द्रको, मनमें बहुत डराति ॥

सो०–श्याम राम दोउ भाय, लिये निकट शोचत महरि ॥
जुरे गोप तहँ आय, मनहीं मन मुसुकात हरि ॥

कहत कृष्णसों सब ब्रजवासी * सुनहु श्याम सुन्दर सुखराशी ॥
तुमतो सुरपति यज्ञ मिटायो * ब्रजवासिनपै गिरिहि पुजायो ॥
तुम्हरे कहे अहो ब्रज मण्डन * सुरपति मान कियो हम खण्डन॥
ताहीते सुरराज रिसाई * दिये प्रलयके मेघ पठाई ॥
वर्षत ते मैंघवाके पायक * विषम बूद लागत जनु सायक ॥
भीजत गाय गोप गोसुत सब * धरिकै मार्हि बूड़तहै ब्रज अब ॥
राखि लेहु अब ब्रजके नायक * तुमहीं यह दुख मेटन लायक ॥
दावानलते राखे जैसे * अब जलते राखौ प्रभु तैसे ॥
वैकी निनाशन शकट सहारन * तृणावर्त बत्सासुर मारन ॥
अधमदन बक बदन विदारन * तुमहीं ब्रज जनके दुख टारन ॥
दीजै अभय वेगि नँदलाला * वर्षत मेघ महा विकराला ॥
राखि लेहु बूड़त ब्रज खेरो * अब चितवत हरि सब मुख तेरो॥

दो०–जब जब गाढ़परी हमैं, तब तुम कियो उबार ॥
इहि अवसर अब राखिये, मोहन नन्दकुमार ॥

१ छिपाती है २ इन्द्रके ३ बाण ४ बछड़े ५ पूतना

सो०–ब्रजजनके सुखदान, देखि विकल ब्रजलोग सब ॥
हँसि बोले तब कान्ह, धरहु धीर उर डरहुमति ॥

चलहु सकल मिलि गिरिके पाहीं * उनको ध्यान धरहु मनमाहीं ॥
करि लेहैं ब्रजराज सहाई * रहिहैं सुरपति मन पछिताई ॥
यह कहि हरि गोवर्द्धन आयो * अभय बाहदै सबन बुलायो ॥
गाय वत्स ब्रज लोग लुगाई * गये सकल हरिके सँगधाई ॥
सबहीके देखत गहि धरते * उचकि लियो गिरिवर हरि करते॥
छिंगुली छोर बाम कर राख्यो * तब हरि ब्रजवासिनते भाष्यो॥
करी सहाय देव गिरिराया * आवहु तुम सब इनकी छाया ॥
गाय गोप गोसुत नरनारी * भये सकल क्षणमाहिं सुखारी ॥
चकित देखि सब लोग लुगाई * कहत धन्य तुम कुवर कन्हाई ॥
प्रेम उमँग उर आनद भरिके * परसत चरण धाय सब हरिके ॥
कोइ कहत देखहु गिरिराइ * कीन्ही केहि विधि तुरत सहाइ॥
भक्तन हित हरि गिरिहि उठायो * तब ते गिरिधर नाम कहायो ॥

छं०–परेउ तबते नाम गिरिधर, वामकर गिरिवर धर्‍यो ॥
देखि व्याकुल सकल ब्रजको, शोच इक क्षणमें हर्‍यो॥
करत जय जय गोप गोपी, सकल मन आनँद भरे ॥
श्याम सबके मध्य ठाढे, कैरजनख गिरिवर धरे ॥
परी अखंण्डित धार मूशल, सलिलकी वर्षा करे ॥
अन्ध धुन्ध अकाश चहुँ दिशि, सबन झक झोरत खरे॥
वज्र नीर गँभीर पुनि पुनि, गर्ज पर्वत पर गिरे ॥
करत अति उत्पात ब्रजपर, मेघ परलयको करे ॥

---

१ छाती २ हाथकी छुटली उगली ३ अगुरीके नखपर ४ बराबर

गोवर्द्धनलीला
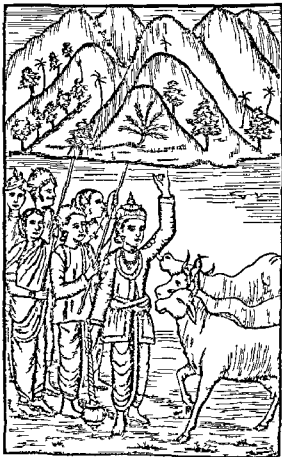
दो०–बार बार चपले चमकि, झकझोरत चहुँ ओर ॥
अरर अरर आकाशते, जल डारत घन घोर ॥
सो०–हरि जनके सुखदाय, गिरि कीन्हो विस्तार अति ॥
सब ब्रज लियो बचाय, बूंद न आवत भूमिपर ॥

कहत गोप सब मनहिं डराइ * गिरिवरनीके धरहु कन्हाइ ॥
महाप्रलय पवत यह भारी * अतिकोमल भुज तनक तुम्हारी॥
नरते गिरिवर धरिको धारै * एसे बल बिन कौन सँभारै ॥
देखि नन्द व्याकुल मनमाहीं * महाभार गिरि कोमल बाहीं ॥
दाबत भुजा यशोमति मैया * बार बार मुख लेति बलैया ॥
देखि भार मन अति दुख पावै * पुनि पुनि गोवर्द्धनहिं मनावै ॥
नाथ आपनो भार सँभारी * करियो कान्हरकी रखवारी ॥
पयँ पकवान मिठाई मेवा * बहुरि पूजिहों तुमको देवा ॥
मात पितहि हरि देखि दुखारी * तब इक बुद्धि करी गिरिधारी ॥
कह्यो नन्दसों निकट बुलाइ * तुमहू सब मिलि करहु सहाइ ॥
लै लै लकुट रासि गिरि लेहू * मति राखहु उरमें सन्देहू ॥
गोवर्द्धन गिरि भयो सहाइ * आप कह्यो मोहि लेहु उठाई ॥

दो०–यह सुनि जहँतहँ गोप सब, रहे लकुटि गिरि लाय॥
कहत श्याम तब नन्दसों, भले लियो उचकाय ॥
सो०–ठाढे ढिंग बलराम, देखि देखि लीला हँसत ॥
कौतुकनिधि सुरधाम, करत चरित सतनसुखद ॥

सात दिवस बीते यहि भाँती * बर्षत जल जैलधर दिनराती ॥
कोपि कोपि डारत जलधारा * मिटी न मनकी नेकुरगारा ॥

१ बिजली २ दूध ३ लकडी ४ मेघ

जरत जलद जल बीचहि अवेर * वैमइ गिरि वैसेइ मज सुंदर ॥
धैर जल पवन अनल नभ जाको * सुरपति कहा करिसकै ताको ॥
भये जलद जलते सब रीते * रह्यो एक गुण द्वैगुण बीते ॥
वहत बात आपसमें बादर * पठयो इन्द्र हमैं दै आदर ॥
धरो देह् ब्रज जाय वहाइ * कहिहैं कहा जाय अब भाई ॥
महा प्रलय जल वर्षे आनी * ब्रजमें बूंद न पहुंच्यो पानी ॥
भये मेघ मनमें सब कादर * अब करिहै सुरराज निरादर ॥
अति भय तनुकी दशा भुलाने * गये इन्द्रपै सबै खिसाने ॥
कहत मेघ सुरपतिके पाहीं * सुनहु देव हम कहत डराहीं ॥
कै मारो कै शरण उबारो * ब्रज पै जोर न चलत हमारो ॥

दो०–सात दिवस परल्य सलिल, हम वर्षे ब्रज जाय ॥
ब्रजबासी भाये नहीं, निदऱ्यो हमैं बनाय ॥

सो०–निघट गयो सब बारि, एक बूंद पहुँचो न घर ॥
यह अचरज अति भारि, कहत लगत लज्जा हमैं ॥

यह सुनि चकित भयो सुरराई * पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई ॥
कहा भयो परल्यको पानी * यह कछु ब्रजकी बात न जानी ॥
सुरपति मन यह करत विचारा * पर्वतमें कोउ है अवतारा ॥
तब सुरेश सब देव बुलाये * आज्ञा सुनत तुरत सब आये ॥
देवन आय सबन शिर नायो * कौन काज सुरराज बुलायो ॥
तबहीं देवनसों सुरराई * ब्रजवासिनकी बात सुनाई ॥
बीते वय दनहैं पूजा * गो थव देव कियो उनदूजा ॥
मोहिं मेटि पर्वतको थाप्यो * ताते मैं अतिरिस करि काप्यो ॥
दिये प्रलयके मेघ पठाइ * आवहु ब्रज गिरि सहित बहाई ॥

१ आकाश २ पृथ्वी ३ वरपोष

ते वर्षे परलय जल जाइ * ब्रजमें नीर न पहुँच्यो राइ ॥
आये मेघ हार सब रोइ * कारण कहा कहो सो मोइ ॥
देवन कह्यो सुनो सुरईशा * प्रगट्यो ब्रजहिं ब्रह्म जगदीशा ॥

दो०–तुम जानत प्रभु भूमि जब, दुखित पुकारी जाय ॥
कह्यो लेन अवतार तब, सो विहरत ब्रज आय ॥

सो०–कहे इन्द्र पछिताय, मैं भूल्यो जान्यों नहीं ॥
कीन्ही बहुत ढिठाय, भय कर मन व्याकुलभयो ॥

मैं सुरपति निर्दाई कीन्हो * तिन आगे चाहों बलि लीन्हो ॥
रवि आगे खँद्योत उजेरी * तैसी बुद्धि भइ है मेरी ॥
कीही बहुत मैं अधिकाई * कहा करौं अब मन पछिताइ ॥
सुरन कही सुनिये सुरराइ * ब्रजहि चलौ नहिं आन उपाइ ।
वे हैं प्रभु दयालु करुणाकर * क्षमा करेंगे श्रीसुदर वर ॥
सुनि विचार कीन्हो सुरराजा * यद्यपि वदन दिखावत लाजा ॥
तदपि वे स्वामी मैं दासा * करिहैं कृपा अविशी मोहिं आशा॥
अब नहिं बनत रहे मुख गोई * शरण गये जो होय सो होई ॥
यह विचार मनमें ठहराई * चल्यो शरण सुर सग लिवाई ॥
कामधेनु करि अग्र सुहाइ * शोचत चल्यो ब्रजहि समुदाइ ॥
अति सकोच सुरपति मन माहीं * आगे धरत परत पग नाहीं ॥
जगत पितासों करी ढिठाई * कहिहौं कहा वदन दिखराई ॥

दो०–शरण शरण कहि चरण परि, परिहौं जाय उताल॥
शरणागत पालन विरद, तनिहैं नाहिं गोपाल ॥

सो०–दीन वचन सुनि कान, करिहैं कृपा कृपालु प्रभु ॥
यहै करत अनुमान, सुरनायक आयो ब्रजहि ॥

---
१ जुगनू वा पटबीजना २ मुख, ३ छिपाये ४ व्याकुल ५ यश

देखि सुरनकी भीर अहीरा * अति डरपे उर भये अधीरा ॥
दौरि कृष्णसों जाय सुनायो * सुरपति आप सैन सजि आयो ॥
कहत श्याम हँसि मतिहि टरावो * गिरिवरतजि कितहूँ मति जावो ॥
ब्रज बाहर सेना मघराखी * वाहनते उतर्यो सहसाखी ॥
सकुचत चल्यो कृष्णके पासा * कछुक दुखितमन कछुक उदासा॥
धाय पर्यो चरणन पर जाई * कृपासिंधु राखो शरणाई ॥
बिसर्यो तुमहिं तुम्हारी माया * अब तुम बिन नहिं और सहाया॥
शरण शरण पुनि पुनि कहि बानी * धोये चरण नयनके पानी ॥
राखि राखि त्रिभुवनके राई * मोते चूक पड़ी अधिकाई ॥
मैं अपराध कियो अनजानी * क्षमा करो प्रभु जन सुखदानी॥
जो बालक पितुसों बिरु झाई * लेत पिता तेहि गोद उठाई ॥
ऐसेहि मोहिं करो जन त्राता * जैसे सुतहित पित अरु माता ॥

दो०-ब्याकुल देखि सुरेश अति, दीनबधु यदुराय ॥
अभय कियो कर माथ धरि, भुजगहि लियो उठाय ॥

सो०-लीन्हो हृदय लगाय, देखि दीनता इन्द्रकी ॥
शिर नहिं सकत उठाय, बार बार परसत चरण ॥

कहत इन्द्रसों कुँवर कन्हाई * तुम कत सकुचत हो सुरराई ॥
हम तुमसों कीन्ही अधिकाई * तुम्हरी पूजा हम सब खाई ॥
भली करी मघ बर्षे पानी * हम कछु तुमसोंरिस नहिं मानी॥
यह दीन्ही मेरी ठकुराई * तुम नहिं जानत करी ढिठाई ॥
कहा भयो जो मेघ पठाये * मैं सब ब्रजके लोग बचाये ॥
तुम कुछ उरमें शोच न आनो * मैं तुमसों कछु बुरो न मानो ॥
भली करी मघ देखन आये * तुम मेरे मनमें अति भाये ॥

१ इन्द्र २ गोपाल ३ हाथ

अपने मनकी शोच मिटाई * देवन सहित करौ सुख जाई ॥
सुनि हरि वचन देवगण हर्षे * जय जय करि कुसुमाजलि वर्षे ॥
पुलकि अग मुख गदगद बानी * कहत धन्य प्रभुजन सुखदानी ॥
अशरण शरण तुम्हारो बानो * यह लीला सब तुमही जानो ॥
धन्य धन्य सब ब्रजकेवासी * जिनके प्रेमविवश अविनाशी ॥

दो०–प्रभुहिं देखि अनुकूल मन, धीर कियो सुरराय ॥
मिटी त्रास डरते तऊ, बार बार पछताय ॥

सो०–कहत बारहीं बार, तुम गति अगम अगाधं प्रभु ॥
मैं भूल्यो संसार, जान्यों ब्रज अवतार नहिं ॥

प्रभु आगे चाहौं मैं पूजा * मोते मन्द औरको दूजा ॥
अहो नाथ तुम प्रभु मैं दासा * रवि आगे खद्योत प्रकाशा ॥
मेरो गर्व कितक यह बाता * कोटिन इन्द्र तुम्हारे गाता ॥
मैं अपराध कियो यह भारी * प्रभु राख्यो निज ओर निहारी ॥
दीनबन्धु तुम जन हितकारी * विरदबखानत वेद पुकारी ॥
कृपा करी प्रभु दरशन पाये * भयो सुखी तनु ताप नशाये ॥
येदिन वृथा गये विनकाजा * तुमको नहिं जान्यो ब्रजराजा ॥
धन्य धन्य प्रभु गिरिवर धारी * भनन विपति भक्त हितकारी ॥
दैत्य दलन प्रभु भार उतारन * सन्त धेनु द्विज हित तनु धारन ॥
अब प्रभु मोहि कृपा यह करिये * गिरिवर धर गिरि धरंपर धरिये ॥
सुनि विनती हरि भये सुखारी * तब गिरि करते धन्यो उतारी ॥
सुरन सहित सुरराज अनन्दे * कामधेनु लै प्रभुपद वन्दे ॥

छं०–करत अस्तुति जोरि सुर कर, धेनु आगे राखिकै ॥
बंदि प्रभुपद पुलकि पुनि पुनि, नाम गोविंद राखिकै ॥

---

१ फूलोंकी अजली २डर ३यहां कोई न जानते ४ गहरा ५जुगनू ६धरती

जै जै कृपालु मुकुन्द माधव, कृष्ण अगणित गतिहरे ॥
गोपपति रोजीवलोचन, करज नख गिरिवर धरे ॥
वासुदेव ब्रजेन्द्र यदुपति, कंस अरिसुर रजने ॥
हरणि भव भय भार महि, अहिराज विषमद गजने ॥
बकी तिरणावर्त बत्सासुर, बका अघनाशन ॥
अतिहि दुष्ट अरिष्ट धेनुक, असुरवशविनाशन ॥
चोरि माखन खात ब्रज घर, भनि तरु जन दुखहरे ॥
योगिजन जप तप न पावत, धन्य ब्रज जन वश करे ॥
धन्य गोकुल धन्य यमुना, धन्य ब्रज वृन्दावने ॥
धन्य गोपी गोप यशुदा, नंद गिरि गोवर्द्धने ॥
फिरत चारत धेनु निज पद, पन्नफणि अहि प्रति धरे ॥
शकट भंजन भक्तरजनें, रास निर्तत गुणभरे ॥
अनेक सुरसरि शिवसनकधन,श्रीनहीं छाडत घरी ॥
परसतें पद भयो पावन, जयति जै जै जै हरी ॥
दो०—करिप्रस्तुति मन हर्षि अति, प‌र्यो शक्र प्रभुपाय ॥
है प्रसन्न सुरधेनु युत, विदा कियो यदुराय ॥
सो०—पुनि पुनि प्रभुपद वन्द, सुर लोकहि सुरपति गयो ॥
ब्रजजन परमानन्द, चकित विलोकत श्यामतन ॥
कहत गोप सब आपसमाहीं * इन सम और जगत कोउ नाहीं ॥
सात वर्षको बालक जोई * ताहि इतो बल कैसे होइ ॥

१ कमलसमान नेत्रवाले २ प्रसन्न करनेवाले ३ पिता ४ गंगा

हैये पारब्रह्म भगवाना * करत चरित्र देह धरि नाना ॥
दैत्य किते छल करि करि आये * ते सब इन कौतुकहि नशाये ॥
इन्द्र मेटि गिरिवरहि पुजायो * तामें निजस्वरूप प्रगटायो ॥
इन्द्र प्रलय घन दियो पठाइ * सात दिवस मन बरषे आइ ॥
अति विस्तार बडो अति भारा * लीन्हो गिरिवर कर पर धारा ॥
एक बूंद मनमें नहिं आइ * लीन्हो सब ब्रज लोक बचाइ ॥
हारि मानि सुरपति भय पाइ * आन परयो चरणन शिरनाई ॥
कामधेनु देवनको ल्यायो * तोहि अभय करि फेरि पठायो ॥
अचरज बात जात नहिं बरणी * मानुषसो यह होय न करणी ॥
परे गोप हरि चरणन आई * कहत धन्य तुम कुंवर कन्हाई ॥

दो०–हम तुमको जानें नहीं, हौं तुम त्रिभुवनराय ॥
ब्रजबासिन सुख देनको, ब्रजमें प्रगटे आय ॥

सो०–तुम करन्हेत सहाय, परत जहां सकट विकट ॥
लीन्हो हमें बचाय, विपते जलते अनल्ते ॥

करत विचार युवति सब ठाढी * प्रेम उमग मन आनँद बाढी ॥
कैसे गिरिवर लियो उठाइ * अतिकोमल तनुश्याम कन्हाइ ॥
लेत धरत जान्यो नहिं काहू * धन्य धन्य हरिको यह बाहू ॥
सातदिवस परलय जलढारयो * इन्द्रपरतचरण जब हारयो ॥
करत सखा धनि धन्य गुपाला * कैसे गिरि कर धन्यो विशाला ॥
यह करतूति करत तुम कैसे * हम सँग सदा रहत हौ जैसे ॥
गाय चरावत हो मिलि हमसों * केतिक बलहै बूझत तुमसों ॥
धाय चरणगहि यशुमति मैया * मुख चुंबति अरु लेति बलैया ॥
अतिसनेह नयन भर पानी * तनु पुलकित मुख गद्गद बानी ॥

कैसे कर जु धऱ्यो गिरि ताता * अतिकोमल भुज तुम दिनसाता॥
बिहँसि मातसों कहत कन्हैया * तेरीसों सुनु यशुमति मैया ॥
मैं न उठावतरी श्रमपायो * नेक छुयो उठि आपुहि आयो॥

दो०-अब गिरिको पूजो बहुरि, सबसों कह्यो कन्हाय ॥
बूडतते राख्यो उनहिं, कीन्ही बहुत सहाय ॥

सो०-यह सुनि हर्ष बढाय, बहुरो गिरि पूज्यो सबन ॥
अति हर्षित नँदराय, दिये दान विप्रन विपुल ॥

अक्षत रोरी पान मिठाई * पुष्पहार दधि दूध सुहाई॥
यशुमति रोहिणि अरु ब्रजनारी * सजि सजि लाई कर्चन थारी ॥
हरिको तिलक कियो दोउ माता * पुलकि प्रेम परिपूरण गाता ॥
बहुतक द्रव्य निछावर कीन्हों * भुज गहिलाय कण्ठमों लीन्हों॥
ब्रजतिय हरिको तिलक बनावें * फूल माल गरमें पहिरावें ॥
इहि मिस अग परसि सुख पावें * निरखि बदनछवि विधिहि मनावें
होहिं हमारे पति गिरिधारी * मनमोहन सुदर बनवारी॥
यह कामना सकल उरधारी * हरि छवि निरखति गोपकुमारी॥
कह्यो नदसो तव गिरिधारी * सुनहु तात अब बात हमारी ॥
गोवर्द्धनको करो प्रणामा * चलिये अब सब निज निज धामा
यह सुनि सबन गिरिहि शिरनाई * चले ब्रजहि मन हर्ष बढाई ॥
आये सदनें सकल ब्रजवासी * सहित श्याम सुदर सुखरासी ॥

दो०-घर घर ब्रज आनन्द सब, गावत मंगलचार ॥
आये सुरपति जीति हरि, गिरिधर नन्दकुमार ॥

सो०-ब्रज मंगल ब्रज मोद, ब्रज आभूषण गिरिधरन ॥
नितनव करत विनोद, ब्रजवासी ब्रजदास हित ॥

---

१ मदनन २ बहुतसे ३ चाँवल ४ सोनेकी ५ घर.

अथ नन्दएकादशीवरुणलीला ॥

इन्द्रहिं जीति श्याम घर आये * ब्रज घरघर आनंद बधाये ॥
तादिन दशमी भई सुहाई * कार्त्तिक शुक्ल एकादशी आई ॥
भक्ति मुक्तिदायक अतिपावन * पाप शाप संताप नशावन ॥
नन्द एकादशी, ब्रत प्रतिपालें * वेद विदित सब धर्म सँभालें ॥
प्रथमहिं दशमी संयम कीन्हो * बहुरि एकादशिका ब्रत लीन्हो ॥
निराहार निरजल दृढनेमा * नारायण पदपंकज प्रेमा ॥
और काज कछु मनहि नलायो * भजनकरत सब दिवस बितायो॥
निशि[1] जागरण करण विधिठानी * प्रभु मंदिर लीप्यो निजपानी ॥
पाटम्बर वरदिव्य बिछाये * विविध पुनीत सुगन्ध सिंचाये ॥
बाँधी वन्दनवार सुहाई * सुमन सुगन्ध माल लटकाई ॥
चोक चारु बहुरंगन पूर्यो * सिंहासन तहँ राख्यो रूर्यो ॥
शालिग्राम तहाँ पधराये * भूषण बसन विचित्र बनाये ॥

दो०–धूप दीप नैवेद्य करि, प्रभुपर पुष्प चढाय ॥
करी आरती प्रेमसों, घेटा शंख बजाय ॥

सो०–प्रभु पद नायो माथ, करि परदक्षिण दंडवत ॥
तुम त्रिभुवनके नाथ, जोरि हाथ[3] स्तुति करी ॥

आदर सहित करी नँद पूजा * प्रेम भक्ति उर भाव न दूजा ॥
करत कीरतन भजन सप्रीती * तीनि याम[4] यामिनि[5] जब बीती ॥
तबहिं महरि नँदराय बुलाई * कह्यो यशोमतिसों समुझाई ॥
एकदंड[6] द्वादशी सकारे * पारनकी विधि करो सवारे ॥
यह कहि नन्द यशोमति पाहीं * लै झारी[1] धोती करमाहीं ॥

१ जलन. २ रात. ३ हाथ. ४ पहर. ५ रात्रि. ६ घडी.

गये न्हान यमुनाके तीरा * सग नाहिं कोउ तहाँ अहीरा ॥
झारी भरि यमुनाजल लीन्हो * बाहर जाय देह कृत कीन्हो ॥
लैमाटी कर चरण पखारी * अति उत्तम सों करी मुखारी ॥
अचमन लै बैठे नन्द पानी * वरुण दूत जल बाजत जानी ॥
नन्दहि लै गे पकरि पताला * वरुण पास पहुँचे ततकाला ॥
जान्यो वरुण कृष्णके ताता * भयो हर्ष मन गुणि यह बाता ॥
अन्तर्यामी प्रभु घनश्यामा * नन्दलेन एहैं मम धामा ॥

दो०-भयो वरुण अति हर्षमन, पुनि पुनि पुलकित गात ॥
नन्दहि ल्याये भृत्य मम, भली भई यह बात ॥

सो०-सो प्रभु कृपानिधान, ऐहैं धनि धनि भाग्य मम ॥
जाहि धरत मुनि ध्यान, निगमं नेति जिहि गावहीं ॥

हर्ष सहित नन्दहि अगुवाई * भीतर महलन गये लिवाई ॥
सादर विनय वचन बहु भाखे * धीरज दै नीके नँदराखे ॥
रानी सबन नन्दको देख्यो * जन्म सफल अपनो करि लेख्यो ॥
कहतिं धनि धनि भाग्य हमारे * नन्द हमारे सदन पधारे ॥
जिनके सुत त्रैलोक्य गुसाई * सुर नर मुनि सबहीके साँई ॥
चितवत पथ वरुण मन लाये * करुणामय अब आवत धाये ॥
यशुमति शोच करत मन माहीं * भई बेर आये नँदनाहीं ॥
खबरलेन सब ग्वाल पठाये * यमुनातट नहिं नन्दहि पाये ॥
झारी धोती तट पर देखी * भये शोच सब ग्वाल विशेषी ॥
इत उत खोज ग्वाल फिरि आये * कहत महरि सों नन्द न पाये ॥
झारी धोती तट पर पाई * सुनत महरि मुरझ गयो झुराई ॥
निशा अकेले आज सिधाये * काहू जलचर धौं धरि खाये ॥

१ दातन २ हाथ ३ पिता ४ नौकर ५ वेद ६ वरुण ७ मछली

दो०–अति व्याकुल यशुमति भई, उठी रोय अकुलाय ॥
सुनि धाये ब्रजलोग सब, नन्दहि खोजत जाय ॥

सो०–यमुना तट बन गाव, नन्द नन्द टेरत सबै ॥
ढूंढि फिरे सब ठाँव, भये विकल ब्रजलोग सब ॥

सोवतते हरि हलधर आये * रोवत मात देखि दुख पाये ॥
बूझत जननीसों दोउ भैया * कत रोवति है यशुमति मैया ॥
निलेरि यशोमति वचन सुनाये * यमुनातट कहुँ नन्द हिराये ॥
यह सुनि हरि बोले सुनु माता * अबहीं आवतहैं नँद ताता ॥
मोसों कहि गये अबहीं आवन * मति रोवै मैं जात बुलावन ॥
प्रभु सवज्ञ सकलके स्वामी * जल थल व्यापक अतर्यामी ॥
जाने नन्द वरणके धामा * वरुण प्रीति पुनि लखि घनश्यामा॥
वरुणलोक हरि तुरत सिधाये * सुनत वरुण आतुर उठिधाये ॥
देखत दरश परश सुख पायो * चरण सरोज आय शिरनायो ॥
कहत आज धनि भाग्य हमारे * त्रिभुवनपति मम धाम पधारे॥
पाटम्बर पाँवडे बिछाये * महलन वदनवार बँधाये ॥
रत्नजटित सिंहासन धान्यो * तापर सादर प्रभु बैठान्यो ॥

छं०–बैठाय सादर प्रभुहिं धोवत, कमलपद निज करगहे ॥
जे पद सरोज मनोजअरि[3] उर, सर सदा प्रफुलित रहे॥
जे पदपदम पद्माल्[4]या उर, रहत निज भूपण किये ॥
धायते पदजलज[5] जलपति, प्रेम परिपूरण हिये ॥

दो०–विविध भाँति प्रभु पूजिके, वरुण कह्यो गहि पाय ॥
कृपासिंधु अति कृपा करि, दरश दियो मुहिं आय ॥

---

१ दुखी होकर २ घर ३ कामदेवके शत्रु शिवजी ४ लक्ष्मी ५ चरणकमल

सो०–मैं कीन्हों अपराध, सो प्रभु उर नहिं आनिये ॥
क्षमा समुद्र अगाध, क्षमा करहु निज जानि जन ॥

जलरक्षक जे दूत कृपाला * ते लै आये नन्द पताला ॥
यह कारज मैं उनको कीन्हों * तिन दूतन प्रभु नन्द न चीन्हों ॥
यदपि कियो उन पातक भारी * हैं वे सकल दंड अधिकारी ॥
तदपि दूत वे मो मन भाये * जिनतें प्रभुके दरशन पाये ॥
देखि नाथ शुभ दरश तुम्हारा * मैं मान्यों उनको उपकारा ॥
अब प्रभु हम सब शरण तुम्हारी * राखि लेहु श्रीगिरिवरधारी ॥
पाँयन परीं आय सब रानी * बडभागिन आपनको जानी ॥
रानिन सहित वरुण अनुरागे * अस्तुति करत जोरि कर आगे ॥
धन्य नन्द धनि धन्य यशोदा * धनिधनि तुमहिं खिलावत गोदा ॥
धनि ब्रज गोकुलके नरनारी * पूरण ब्रह्म जहाँ अवतारी ॥
गुणातीत अविगति अविनाशी * ब्रज विहार विलसत सुखराशी ॥
शेष[1] सहस मुख वरणि न जाई * सहज रूपको करत बडाई ॥

दो०–करि अस्तुति रानिन सहित, पुनि पुनि धरि पदशीश ॥
लै प्रभुको नँदराय ढिग, तबहीं गयो जलीश[2] ॥

सो०–हरपि उठे नँदराय, देखि श्यामको शशि वदन ॥
लखि प्रभुकी प्रभुताय, रहे मुदित चकित चितय ॥

करत मनहिं मन नन्द विचारा * यह कोउ आहि बडो अवतारा ॥
भयो नन्द मन हर्ष अपारा * ब्रह्म करत मो सदन[3] विहारा ॥
तबहिं कृपा करि जन सुखदाई * वरणहिं दै जलराज बडाई ॥
जाय नन्दको कर गहि लीन्हो * चलहु तात ब्रजकहि हँसिदीन्हो ॥

[1] शेषनाग [2] वरुण [3] घर

कर्यो प्रणाम वरुण सुख पाये * नन्द सहित हरि ब्रज गृह आये ॥
नन्द आय ब्रजको सब दरस्यो * जब यह चरित सबनसों लेख्यो ॥
देखि नन्दको ब्रज नरनारी * गयो दुख सब भये सुखारी ॥
पूछत नन्दहि गोप सयाने * कितहि गये तुम हम नहिं जाने ॥
हारे खोज सकल ब्रजवासी * भये बहुत तुम बिना उदासी ॥
नन्द महर तब सबसों भाष्यो * काल्हि एकादशिव्रत मैं राख्यो
आन द्वादशी थोडी जानी * रैनि अछत गयो यमुना पानी ॥
पहिलें गयो यमुन जलमाहीं * लै गयो वरुण दूत गहि बाहीं ॥

दो०—वरण लोकतें जायकै, ल्याये मोहि गोपाल ॥
ये प्रगटे ब्रज आय कोउ, उत्तम पुरुष विशाल[2] ॥

सो०—महिमा कही न जात, कोटि भाँति बरणी वरुण ॥
साँच कहत मैं बात, इनको नर मति मानियो ॥

भयो अधीन बहुत जलराई * पर्यो चरण कमलनपर आई ॥
रानिन सहित धोय पद पूजे * जानि जगतपति भाव न दूजे ॥
ब्रज नर नारि सुनत यह गाथा * कहत भये सब सकल सनाथा ॥
यशुमति सुनत चकित यह बानी * कहत कथा यह अकथ कहानी ॥
प्रभुकी मायामें अरुझानी * कहति नन्दसों यशुदारानी ॥
मो बरजत निशि[3] न्हान सिधाये * कुशल परी पुण्यनते आये ॥
हरिको चूमिलियो उरलाई * लाये नन्दहि खोज कन्हाई ॥
विप्रन बोलि दियो बहुदाना * घर घर बाटी मिठाइ पाना ॥
गावत मंगल नारि सुहाई * बाजी नन्द अँवास[4] बधाई ॥
नन्द कहत यशुमति सुन बौरी * तू अब कितहि करत मन भोरी ॥

---

१ बेरोष २ बड़े ३ रात ४ घर.

जाको त्रिभुवन पतिसों ताता * ताहि सदा मङ्गल दिन राता ॥
कही गर्गमुनि वाणी जोई * प्रगटत जात बात सब सोई ॥

दो०–इनते समरथ और नहिं, ये हैं सबके नाथ ॥
ब्रजवासी आनन्द सब, सुनि सुनि हरि गुण गाथ ॥

सो०–धनि धनि ब्रज नर नार, कहत हमारे भाग्य सब ॥
हम सँग करत विहार, श्रीवैकुण्ठनिवास हरि ॥

अथ वैकुंठदर्शनलीला ॥

कहत परस्पर सब ब्रजवासी * हरि हैं श्रीवैकुण्ठ निवासी ॥
सो वैकुण्ठ अहै धौं कैसो * जन्म मरण भय जहाँ न ऐसो ॥
जाको वेद पुराण बखाने * हरिजहँ बसत सदा सुख माने ॥
जो हरि हमहिं दिखावैं सोई * तौ बडभाग्य होइ सब कोई ॥
यह मनसा सबके मन आई * जानि लई भक्तन सुखदाई ॥
तबहिं कृपाकरि सब ब्रज लोका * पहुँचाये वैकुण्ठ विशोका ॥
धर्म धाम जो वेदन गायो * दिव्य दृष्टिदै सबन दिखायो ॥
देखत भूलि रहे सब ग्वाला * पुर वैकुण्ठ अनूप विशाला ॥
भूमि वज्रमणि द्युति छबि छाई * परम प्रकाश बरणि नहिं जाई ॥
वापी कूप तडाग अमीके * विविध नगन बाँधे तटनीके ॥
रत्नकी सोपान सुहाई * जहाँ देव मुनि रहत लुभाई ॥
फूले कमल विपुल बहुरङ्गा * करत शब्द खँग गुंजत भृङ्गा ॥

दो०–कल्पवृक्षके बाग बन, सुमन सुगंध अपार ॥
खग मृग सब तेजोमयी, दिव्य स्वरूप उदार ॥

---

१ कथा. २ जिसके समान कोई नहो ३ हीरा. ४ तालाव
५ अमृतके ६ सीढी ७ पक्षी

सो०–मंदिर बरणि न जाहिं, चिंतामणिमय खचित सब ॥
तैसे ताहि लखाहिं, जैसी जाकी भावना ॥

सकल चतुर्भुज तहँके वासी * शुद्धसतोगुण सब सुखरासी ॥
राम सहित तहँ प्रभु सुख शीरा * शोभित नव जल्दाम शरीरा ॥
भूषण वसन दिव्य परकाशी * सुन्दर सकल सबल अविनाशी ॥
वदन प्रकाश हास सुखकारी * कोटि चंद्र कीजै बलिहारी ॥
मणिन जटित शिर मुकुट विराजै * भूषण वसन अनूपम राजै ॥
दिव्य पारषद चँवर दुलावैं * नारद तुम्बर गुणगण गावैं ॥
चकित विलोकित सब मन ग्वाला * जान्यो प्रभु प्रभाव तिहँ काला ॥
चारि भुजा तहँ प्रभुहि निहारी * शख चक्र गद अंबुज धारी ॥
द्विभुज बाल हवो रूप न देख्यो * मुरली लकुट पाणि नहिं पेख्यो ॥
नाहिं मुकुट शिर मोर पखौवा * कटि काछिनी न गुन हरौवा ॥
नहीं भेष नटवर गोपाला * भये विरहवश तब सब ग्वाला ॥
ब्रजवासी सो रूप उपासी * तासरूप विन भये उदासी ॥

दो०–अकुलाने दृग सबनके, देखनको तिहि काल ॥
मोर पख धर गुंज धर, मुरलीधर गोपाल ॥

सो०–ब्रजवासिनके ध्यान, नटवर भेष गोपालको ॥
अमित रूप भगवान, तदपि उपासन रूप यह ॥

विरह विवश हरि ब्रजजन जाने * तबहीं तुरत सकल ब्रज आने ॥
बान्ह देखि सब भये सुखारी * रहे चकित शशिवदन निहारी ॥
कहत सबै मन अचरज पाये * कहाँ गये हम कैसे आये ॥
दख्यो स्वप्न ल्वै इकबारा * किधौं साँच यह करत विचारा ॥

१ सुख २ चमर ३ निश्चयी हद न हो

यह चरित्र सब मोहन करहीं * पुर वैकुंठ दिखायो हमहीं ॥
धन्य धन्य हम सब ब्रजवासी * ब्रह्म हमारे सग निवासी ॥
हरिके चरण परस सब धाई * करत गोप सब सुरतन बड़ाई ॥
हँसि हँसि सबसों कहत कन्हाई * रहे कहाँ तुम सकल भुलाई ॥
आज कहाँ ऐसो तुम देख्यो * सोकिन मोसों कहत विशेष्यो ॥
हम वह देखत नन्ददुलारे * तुमहीं सकल दिखावन हारे ॥
भूतल नागैं पताल निहारो * सकल जगत तुम्हरो विस्तारो ॥
यह सुनि श्याम मद मुसकाई * दिये सकल पुनि मोह भुलाई ॥

दो०-करत चरित्र विचित्र प्रभु, ब्रजवासिनके माहिं ॥
लखिलखि शिव ब्रह्मादि सुर, मुनि जनमनहि सिहाहिं ॥

सो०-अति आनँद ब्रज लोग, हरिके नित नव चरितलखि ॥
सबको सब सुख योग, ब्रजवासी प्रभु नन्दसुत ॥

सदा श्याम भक्तन सुखदाई * भक्तन हित अवतार सदाई ॥
सकर्मैं जन जहा पुकारैं * तहा प्रगट तिनको निस्तारैं ॥
सुखभीनर जिन सुमिरन कीन्हों * तिनको तहाँ दरश हरि दीन्हों ॥
सुख दुखमें जो हरिको ध्यावैं * तिनको नेक न हरि बिसरावैं ॥
देव दैनुज खग मृग नरनारी * भक्त विवश सबसे गिरिधारी ॥
चित दै भजै भाव जो जैसे * ताको होत प्रकट हरि वैसे ॥
महावीर आदिके स्वामी * प्रभु हैं निरलोभी निष्कामी ॥
वेद पुराण साखि सब बोलैं * भाववश्य सबके सग डोलैं ॥
कामभाव मन गोपी ध्यावैं * मन वच कर्म हरिसों मन लावैं ॥
इक क्षण हरिको नाहि बिसारैं * भौने काज चित हरिसों धारैं ॥

१ अधिक २ नागलोक ३ नया ४ देख ५ घरनी

गोरस लै निकसैं मग माहीं * जहाँ श्याम तेहि मारग जाहीं ॥
तिनके मनकी प्रीति विचारी * रीझे गोपीजन मन हारी ॥

दो०–नवसत साज शृंगार तनु, गोरस लै ब्रजनारि ॥
यँचन इहि मग आवहीं, मोसों प्रीति विचारि ॥

सो०–अब इन सग विहार, करौं दान दधि लायकै ॥
यह मन कियो विचार, हरि ब्रज मोहन लाडिले ॥

अथ दानलीला ॥

दधिको दान रचौं इकलीला * भक्तनको सुखदायक शीला ॥
दधिदानी निजनाम धराऊँ * ब्रजयुवतिन मन सुख उपजाऊँ ॥
श्याम सखन तब लियो बुलाई * सबनों कहि यह बात सुनाई ॥
ब्रज युवती नित गोरस ल्यावैं * या मारग है बेचन आवैं ॥
तिन्हैं सिखाय दान दधि लीजै * गोरस खाय जान तब दीजै ॥
यह सुनि सखा उठे हर्षाई * भली बात तुम श्याम सिखाई ॥
सबदिन मन अति हर्ष बढ़ायो * यहत श्याम दधिदान लगायो ॥
तबहि जाय घेन्यो वन घाटा * आवत नित ग्वालिनि यहिबाटा ॥
कह्यो श्याम सबसों समुझाई * रहो तरुनकी ओट लुकाई ॥
जबहीं ग्वालिनि दधिलै आवैं * घेर लेहु कोउ जान न पावैं ॥
यह सुनि सखा घेर कै वाट[1] * बैठे ठाट ठगनको ठाटा ॥
उततें की बनि ग्वालि नवेली * बेंचन दधिहि[2] चली अलबेली ॥

दो०–हँसत परस्पर आपसे, चली जाहिं जिय मोर ॥
पाय घाटमें सखन,सब, घेरिलई[3] चहुँ ओर ॥

1 रास्ता. 2 दही 3 रस्ता

सो०–देखि अचानक भीर, चकित रहीं चहुँ दिशि चितै ॥
सहमी कछुक शरीर, कितते आये ग्वाल सब ॥

शकित है ग्वालिनि भईं ठाढी * मनहुँ चित्रकीसी लिखि काढी ॥
हाथ पाव अँग भये अड़ोले * कछू वेदन ते वचन न बोले ॥
तहँ हँसि ग्वालिनि दियो जनाई * मति डरपो जिय कान्ह दुराई ॥
इहाँ चोर ठग कोऊ नाहीं * अभय कान्हको राज्य सदाहीं ॥
आवत जात न भय कुछ कीजे * दधिको दानलगै सो दीजै ॥
नाम कान्हको जब सुनि पायो * तब युवतिनमन धीरन आयो ॥
बोलीं विहँसि तवहिं ब्रजवाला * कहाँ तुम्हारे प्रभु नँदलाला ॥
चोरी करि नहि पेट अघायो * अब वनमें दधि दान लगायो ॥
तब अति बालक हते कन्हाई * सही जु कछु कीन्ही लरिकाई ॥
होउ जो कछु वा धोखे माहीं * परिहै समुझि अबहिं क्षणमाहीं ॥
प्रगट भये तब कुँवर कन्हाई * देखि सबन बोले मुसकाई ॥
रहि युवती तुम पोच सदाई * करि आई हौ बहुत ढिठाई ॥

दो०–तबलौं हम लरिकाहुते, सही बात अनजान ॥
सो धोखो अब मेटिकै, छाँड़िदेहु अभिमान ॥

सो०–हम माँगत दधि दान, तुम उलटी पलटी कहत ॥
करत नन्दकी आन, दिये पाइहौ जान सब ॥

तब बोली ग्वालिनि मुसकाई * अब तुम डर हम तनी ढिठाई ॥
नन्दहुते कछु तुम्है कन्हाई * भयो जानिये तब अधिकाई ॥
वालिहि चोरि चोरि दधि खाते * घर घर देखतही भजि जाते ॥
रातिहि भयो स्वप्न कछु आई * प्रातहि भइ आज ठकुराइ ॥

१ मुख २ सौगद

भली कही नहिं ग्वालिनि बानी * तुम यह बात कछू नहिं जानी ॥
पिता चरित धन धाम जुहोइ * पुत्र बाज आवनहै सोई ॥
तुमसी प्रजा बसाई गावहिं * तौ हम ठाकुर क्यों न कहावहिं ॥
कह्यो तबहिं ग्वालिनि इंहराई * बात सँभारे कहत कन्हाई ॥
ऐसो को वहिगयो हमारे * जो परजाहै बसहिं तुम्हारे ॥
कंस नृपतिके सब कहवावैं * कहा भयो जु बसत इक गावैं ॥
जो तुम याते हो गरुवाने * तौ अब तजि हैं गाव निदाने ॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो बनमाली * कहा बात यह कहत गुवाली ॥

दो०-गाँव हमारो छाँडिके, बसिहो का पुरमाहिं ॥
ऐसो को तिहुँ लोकमें, जो मेरे वश नाहिं ॥

सो०-का गनतीमें कंस, जाके हम कहवावहीं ॥
देहु दानको अंश, रारि करत ये काजहीं ॥

बड़ी बात छोटे मुखमाहीं * आप सँभारि कहत हो नाहीं ॥
तीनि लोक अरु कस भुवाला * भयो तिहारे वश क्यहि काला ॥
यह तुम बात कही तिनमाहीं * जो कोउ तुमको जानत नाहीं ॥
हम इन बात न भय नहिं मानैं * जैसे हो तुम तैसे जानैं ॥
हमसों लीजै दान सवाइ * पहिले थैली लेहु मँगाइ ॥
पीताम्बर बोढन पटि जैहै * तब पाछे पछितावो ऐहै ॥
ऐसे कहि ग्वालिनि मुसुकानी * तब बोले हरि दधिके दानी ॥
तू ग्वालिनि हमको कहँ जानै * हमनहिं झूँठी बात बखानै ॥
झूँठी हो तुमहीं सब ग्वारन * सेंतर होति हो बिनही कारन ॥
अजहूँ मानि कह्यो किन लेहू * लेग्यो करो दान मम देहू ॥

१ घर २ नमस्कार ३ सबरे ४ राजा ५ टेढी

नन्द मौंह यों जान न देहा * बहुरो छोरि दही सब लेहा ॥
काहेको अटिलात कन्हाई * छाडि देहु मोहन लरिकाई ॥

दो०–पहिली परिपाटी चलै, नइ चला क्यों आज ॥
जानि पाइहैं कस जो, तौ पुनि होय अकाज ॥

सो०–हँसी घरी द्वैचारि[1], बीतन लाग्यो यामयुग ॥
बनमें रोंकी नारि, बाढ़ि जाइहै बात पुनि ॥

कहा वस कहि मोहि सुनावो * अबहा धायो नाय बुलावो ॥
लरिका कहि कहि मोहि बखानत * मेरी लरिकाई नहि जानत ॥
मारि पूतना खग पठाई * तृणावर्त्त मैंहि दियो गिराइ ॥
वसा बका अघासुर मान्यो * गिरि गोवर्द्धन करपर धान्यो ॥
ऐसी है मेरा लरिकाइ * जानि बूझि तुम देत भूलाइ ॥
तमहीं हसी करति हौ ग्वारी * देव दवावति हौ हठि गारी ॥
बात जानक भाषत नाहा * आपहि बैठी हौ बनमाहीं ॥
चोरी सदा बेंचि दधि नाहू * बिनादान क्यो होत निबाहू ॥
अबतो आन पकरि म पाई * सब दिवमनको लेहु चुकाई ॥
मवै भली तुम करी कन्हाइ * बधे असुर मो सुनी बड़ाइ ॥
गिरि धान्यो बरलाय हमारी * जानी हम सब बात तुम्हारी ॥
माग लेहु अबहू दधि खाहू * होत दान सुनि हमको दाहू ॥

दो०–हमें कहत हौ चोरटी, आप भयो जो साहु ॥
बड़े भये चोरी करत, अब लूटत हौ राह ॥

सो०–लेहु दही बलि जाउ, हमको होत अबार अब ॥
लिये दानको नाउँ, एक बूँद नहि पाइहौ ॥

---

[1] दो प्रहर [2] पृथ्वी

यशुमतिसों सब जाय सुनायो * कहा महरि सुतको सिखरायो ॥
अतिही कान्ह भये अब ईतर * रोकत युवतिनको बन भीतर ॥
दही दूध सब दियो लुटाई * माँगत यौवनदान कन्हाइ ॥
चोली फारि हार सब तोरे * गहि गहि आँचर पट झकझोरे ॥
ऐसो को कुल भयो महरिके * यौवन दान लियो जिन अरिके ॥
नित उत्पात जात सहिनाहिन * कहँ लगि पीयर बन दै दाहिन ॥
कैसे गोरस बेंचन जैये * हरिपै मारग चलन न पैये ॥

दो०–सुनत ग्वालिनीके वचन, बोली यशुमति मात ॥
मैं जानी तुम सबनके, उरअन्तरकी बात ॥

सो०–आप फिरत इतरात, कहत श्याम ईतर भयो ॥
उरन लाय नख घात, उरहनको दौरी फिरत ॥

दशहि बरषको कहाँ कन्हाइ * कहँ सब तुम मैंाती तरुणाई ॥
दोष लगावत श्यामहिं आनी * कैसे धौं कहि आवत बानी ॥
हरिपर फिरत सबै महरानी * यौवन मदमाती इठलानी ॥
तुमको लाज लगतिहि नाहीं * जाहु सबै बैठो घरमाहीं ॥
अहो महरि ऐसो नहि कीजै * बिन बूझे गारी नहिं दीजै ॥
सुत ऐसो मग चलन न देहीं * माँगत दान लूटि दधिलेहीं ॥
तुमहूँ खीझैं करत सुनओरी * ऐसे ब्रजमें बसिहैं कोरी ॥
तजि हैं आजहिं गाँव तिहारो * बहुरि न सुनिहौं नाम हमारो ॥
ऐसे कहा कहत इतराइ * बसत नहीं छिन अनतहि जाइ ॥
मेरो कहा कहू घटि जैहै * झूँठी बात नहीं कोउ सैहै ॥
यौवन दिन द्वै सबदिन थोरी * तुम बाँधति आकाशहि डोरी ॥
मोसों कहति आप तुम जैसी * को पतियाय बात सुनि वैसी ॥

---

१ भीतरका २ छातीपर ३ मतवाली ४ झीखना

दो०-बोलत नहीं सँभारि तुम, सब मिलि भई गँवारि ॥
ऐसी कैसे हरि करें, वृथा बढ़ावति रारि ॥
सो०-महरि मनहिं रिसियाय, हम झूँठी मांपै नहीं ॥
जो तुम नहिं पतियाय, बूझि न देखो आनसों ॥
तुमें सुतके करन नहिं आयो * हठकरि टेव आपनी मानो ॥
दश गायन करि बहा बड़ाई * अहिर नाति सब एकहि माइ ॥
महा ढीठ हरि मानत नाहीं * वनमें डगरत गहि गहि बाहीं ॥
सखा भीर सँग लीन्हे टोलें * बन कुञ्जमें करत कलोलें ॥
नेकु सकुच शंका नहिं आनै * सोइ करत जो कछु मन मानै ॥
यह सुनि कहत नन्दकी नारी * कहत गैल्की बात हहारी ॥
और चली कह इहाँ नातकी * मुहिरिसजुनि अनमिलत बातकी॥
कहाँ बसत तुम कहा कहाइ * कब हरि बाइ गही बन जाइ ॥
कहत बात नहिं नेक लजाहू * सुनिहैं कहाँ तिहारे नाँहू ॥
मेरो बारो अबहिं अति बौरो * तुम नहिं अपनी ओर निहारो
ऐसी बात कहतिहो आइ * झूठो दोष सह्यो नहिं जाई ॥
नेकु नहीं डर करत इँसेको * मनो भयो हरि वय बीसको ॥
दो०-धन्य धन्य तुम कहति हौ, मोको आवति लाज ॥
माखन माँगत रोय हरि, दोष देति बिन काज ॥
सुनहु महरि तुम बात, हरि सीखे टोना कछू ॥
बनहि तरुण ह्वै जात, बालक ह्वै आवत घरहि ॥
एक दिवस किन देखौ जाइ * बनमें तरुकी ओट छिपाइ ॥
द्व हरि दशके बीश बरषके * देखहु अपने नयन निरखिके ॥

१ डर २ पति ३ छोटा ४ मालिक

जाहु चली म सब देख्यो है * एक एक दिन करि लेरयो है ॥
दश अरु बीश बनावन आई * ढीठ लगावति है घरमाई ॥
जरहि बरहि ये आख तुम्हारी * नो हरिको नहि सकत निहारी ॥
आप करत ढिंग चरचा नाइ * मोको साखि दिखावन आई ॥
अहो महरि कहिये का तुमसो * कहे मिलग मानतहौ हमसों ॥
सुतकी कानि मानि तुम लीनी * गारी कोटिक हमको दीनी ॥
हमें कहा मोहन प्रिय नाहा * जीवहु युग युग हरि ब्रजमाहा ॥
कहा करैं नव बहुत खिझावै * तब हम तुमहि यहनको आवै ॥
भलो बोधै हमको तुम कीनो * उलटहि दोष हमारो दीनो ॥
सुतको हटकत नेक न माइ * हमही सो रिस करति सदाइ ॥

दो०—कहा करा तुम आय सब, कहत अटपटी बात ॥
मोको यह भावै नहीं, तरुणिनें यहे सुहात ॥

सो०—मन आपन गुणिलेहु, तुम तरुणी हरि तरुण नहिं ॥
समुझि उरहनो देहु, ऐसी मोसों मति कहौ ॥

महरि वचन सुन ग्वालिन सगरीं * निरउत्तर है धरयो डँगरी ॥
यह यशुमति गोपिनको झगरो * कृष्ण प्रेम रस सागर मिगरो ॥
कहत सुनत भक्तन सुखदाइ * ब्रजवासी जनजीवन गाइ ॥
ब्रज घरघर सबहिन सुनिपाई * मोहन दधिको दान लगाई ॥
सब गोपिन मिलि रुचि उपजाई * चैये दधिलै जहाँ कन्हाई ॥
यह अभिलाष सबन मन बाढ्यो * राख्यो गुप्त न बाहिर काढ्यो ॥
श्याम सखनको लियो बुलाई * कह्यो सबनसों यों समुझाइ ॥
काहि उठहु सब ग्वाल सवेरे * चलिकै वृंदावन मग घेरे ॥

१ ज्ञान २ स्त्रियोंको ३ गई ४ इच्छा

प्रातहि यमुनाके तट जाई * तर चढ़ि चढ़ि सब रही लुकाई ॥
ब्रजयुवती मिलि आपसमाहीं * नित प्रति दधि बेंचनको जाहीं ॥
राधा चन्द्रावलिको यूथा * ललितादिक नागरी बरूथा ॥
गोरस लै जबहीं सब आवैं * घेरि सबन तब दान चुकावैं ॥

दो०–सुनि मन हर्षे ग्वाल सब, भली कही हरि बात ॥
साँझ भई चलिये सदन, काल्हि उठहिंगे प्रात ॥

सो०–निज घर घर सब आय, मात पिताको सुख दियो ॥
सोये सुखसों जाय, रुचिसों भोजन खायकै ॥

प्रात उठे सब गोपकुमारा * जहँतहँ बोले खुले किवारा ॥
सुनी श्याम ग्वालनकी बानी * जागनहू सोवन पटतानी ॥
नन्दद्वार बैठे सब आई * आवहु उठि घनश्याम कन्हाई ॥
ग्वाल टेर सुनि यशुदा माता * दिये जगाय श्याम सुखदाता ॥
मात वचन सुनि अति अतुराई * उठे सेजते कुँवर कन्हाई ॥
लै पट पीत मुकुट शिरधारी * मुरली करलै चले मुरारी ॥
सखन सहित यमुनातट आये * कहत सखनसों अति सुख पाये ॥
भली करी उठि प्रातहि आये * मैं जानत सब तुम न बुलाये ॥
आवतहैं ह्वै सब ब्रज भामिनि * घर घरते दधि लै गजगामिनि ॥
हँसे सखा सब तारि बजाई * मनमें अतिआनन्द बढ़ाई ॥
कहत सबनसों हँसि नँदलाला * जाय द्रुमन सब चढ़ौ गुवाला ॥
मुँदमूँदि सब रहौ छिपाने * जिहि विधि युवति न कोऊ जाने ॥

दो०–जबहीं जान्यो युवति सब, आई बनहि मझाय ॥
कूदिपरो तब द्रुमनते, दै दै नन्द दुहाय ॥

---

१ छुप. २ झुंड. ३ जल्दी ४ स्त्री. ५ गजके समान चलनेवाली ६ वृक्ष.

सो०-शंखशब्द घहराय, कीजै मुरली शृंग धुनि ॥
उरन जाहिं अकुलाय, जैसे युवतीगण सबै ॥

घेर सबन इहि विधि डरपाई * बहुरि तिन्हैं कहियो समुझाई ॥
नितहिं हमारे मारग आई * दधि माखन बेंचत हो जाई ॥
हरिको दान मागि नित जावो * आज दिये बिन जान न पावो ॥
ऐसे श्याम सखन समुझावत * अपने मनकी प्रीति बढावत ॥
व्रजवनितन लखिकै सुख पाऊँ * तुमसों नाहिन कछू दुराऊँ ॥
यहि मारग बेंचन दधि आवैं * अन्तर गति मोसों हित लावैं ॥
आवत हैहैं बन सब बाला * करत बात ऐसे नँदलाला ॥
प्रात उठीं सब गोपकिशोरी * ?चित्र विचित्र बसन तनु डोरी ॥
अग अंग आभूषण साजे * कैश सँवारि चारुदृगं आँजै ॥
अँगिया अग अनूप सँवारी * चित्र विचित्र बसन तनु धारी ॥
वेंदी भाल भाग मोतिनकी * अग अगछवि नग ज्योतिनकी ॥
दर्शन दमक अधरन अरुणाई * चिवुकनील कनकी छबिछाई ॥

दो०-गोरें तनु मुख छबि सदन, नव यौवन व्रज नारि ॥
लै लै दधि निकसीं सबै, सुखमा बढ़ी अपारि ॥

सो०-व्रजके खेडे जाय, भईं ग्वालि इकठौर सब ॥
निज निज यूथ बनाय, दधिमटुकी शिरपर धरे ॥

बेंचन दही चली व्रजनारी * षट्दश सहस गोप सुकुमारी ॥
सबके मन मग मिलहिं कन्हाई * कहत न एकहि एक जनाई ॥
करत जाहिं गुणगान विहारी * पगनूपुरकी धुनि अति भारी ॥
हरि जानी युवती आवत जब * कह्योसखन द्रुमजाय चढ़ोअब ॥

---

१ सुन्दर २ माथा ३ दान ४ होठ ५ नीलम † सबकी सुरति श्यामकी ओरी ॥

सुनत श्यामके मुरली बैना * धाय चढ़ी द्रुम बालक सैना ॥
पर सहस्र सखा सुखदाई * जहां तहां द्रुम रहे लुकाई ॥
कछुक ग्वाल सँग राखि कन्हाई * निकसि गये आपुन अगुवाई ॥
ठाढ़े भये घेरि बनघाटी * लैलै करन सुमनकी सांटी ॥
इहि अन्तर आई ब्रजनारी * देखत मन लाग्यो कछु भारी ॥
पाछेहीते रहइ हँकारी * कहत तिन्हैं अबहीं तुमहारी ॥
एकअंग जुरिभई तरुणि सब * इत उत चकित चली चितवन सब
आगे दृष्टिपरे नँदनन्दन * मुकुटपीतपटु चर्चित चन्दन ॥

दो०-लिये सखा सँग मग गहे, ठाढ़े यमुना तीर ॥
ठिठुकि रहीं युवती सबै, लखि ग्वालनकी भीर ॥

सो०-भयो हर्ष उरमाहिं, कहत वचन सुख भय सहित ॥
आगे कैसे जाहिं, मगमें ठाढो साँवरो ॥

कोऊ कहत चलत क्यों नाहीं * कोऊ कहत परहि फिरि पाहीं ॥
कोउ कहत बावरे बहाई * इनहूँ सों कहँ आदि पराई ॥
कोऊ बोलि उठी ब्रजबाला * लूटि लई हमें काल्हि गुपाला ॥
अतिहि ढीठ भयोहै कान्हा * माँगतहै गोरसको दाना ॥
सुनि ऐसो मोहनको ख्याला * घरको फिरीं सकल ब्रजबाला ॥
तब हरि ग्वालन सैन बताई * कूदहु निकसनते झहराई ॥
जात फिरीं युवती ब्रजगावहिं * घेरिलेहु कोउ जान न पावहिं ॥
तब ग्वालन बनमें चहुँघाई * झार झराय तरु डार हलाई ॥
शंख मृदंग मुरलि करतारी * कीने शब्द सबन यक बारी ॥
चकित द्रुमन चितई सब बाला * डारन डारन देखे ग्वाला ॥

---

१ पुष्पोंकी २ छड़ी ३ मनमें

वृदि वृदि तरु तैरुते धार * घेरिलई तैरुणी सब जाई ॥
कहा नितहि दधि वेचन जाहू * आज पकरि पायो सब काहू ॥

दो०–दान लगत ह्याँ श्यामको, सो सब लेहि चुकाय ॥
अब तौ देहैं जान तब, तुमको नन्द दुहाय ॥

सो०–दधि लै जात प्रभात, आवति हौ निशि बेंचिकै ॥
दान मारि नित जात, भली करत यह बात नहिं ॥

ठाढे यमुनातीर कन्हाइ * जाहु चली नि‍त दान चुकाई ॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो इक ग्वाली * नई बात इक सुनहु रि आली ॥
मागत दधिको दान मुरारी * सिरै पठाये है महतारी ॥
सो ये सखा लेन सब आये * यमुना तटते श्याम पठाये ॥
काहेको सब मिलि इतराहू * सूधे अपने मारग जाहू ॥
दधि माखन कछु चाहत कोऊ * सूधे मागिलेत किन सोऊ ॥
सूधी बात कहौ मुख होई * बाँधत कहा अकाश खरोई ॥
दान बजार हाटमें पावो * यह नित कान्हैं जाय सुनावो ॥
बोले सखा सुनहुरी ग्वारी * हमजानी अब बात तुम्हारी ॥
गाव बसेकर यह दुख होई * नाह सँकात चीहे सो कोई ॥
मारग अपनो दान उगाहू * कहत माँगि किन हम पै खाहू ॥
हाट बाट सब हमहिं उगैहैं * अपनो दान तुमहुपै चैहैं ॥

दो०–लेखो करि सब कान्हको, दीने दान जगात ॥
चली जाहु सुखसो डगर, फेर कहै कोउ बात ॥

सो०–तुमको कसो दान, कौन कान्ह माँगत कहा ॥
परिहै अबहीं जान, रोकत हौ बनमे तियन ॥

---

१ वृक्षमे २ जवान स्त्रिया अर्थात् गोपिया ३ सवेरा ४ डरताहै ५कर

आये तबहीं तिहि कन्हाई * संग सखनकी भीर सुहाई ॥
बोलि उठी इक नागरि नागरी * कहा श्याम तुम करत अँचगरी[1] ॥
नारिन को रोकनहो बनमें * जैहै बात दूरिलों छिनमें ॥
कबतें दान धरि तुम आये * कहा छापि लिखि तुमहिं पठाये ॥
कौनी चाल चलो नंदलाला * चरत बाप तुम्हरो जिहिं ग्वाला ॥
वृथा न रारि करहु बनमाहीं * छाड़ि देहु दधि बेचन जाहीं ॥
कहत कान्ह दधि दान न देही * बिना दान दीन्हे नहिं जैहो ॥
लैहौं छीनि दूध दधि माखन * देखत ही रहिहो सब आँखन ॥
मान पिताकों उलघन बानी * नहिं जानत मोको दधिदानी ॥
चाव तिनहि नित बैन चुराई * सब दिवसनको लेहु भराई ॥
माँगन छाप कहा दिखराऊ * वाको तुमको नाम बताऊँ ॥
ऐसो को मोको नहिं जानत * एक नहीं मोको तुम मानत ॥

दो०—नीके हम जानत तुम्हे, गोद खिलाये कान्ह ॥
ये दिन अब बिसराय सब, भये जगाती[2] आन ॥

सो०—करहु नहीं लगि बात, जो निबहै सुख पाइये ॥
ऐसो क्यों सहिजात, नितहि हमें दधि बेचनो ॥

अजहूँ माँगि लेहु दधि देई * खाहु सखनमें हम सुख पैई ॥
दान वचन तुम हमहिं सुनायो * यहै हमें सुनि नहिं भायो ॥
होन अबार जान अब दीजै * नईरीति मोहन नहिं कीजै ॥
गोरसलैन[3] प्रात सब कोई * बहुरि धन्यो रहिहै ऐसोई ॥
दान दिये बिन जान न पैहो * जब देहो तबही सब जैहो ॥
तुमसों बहुत लेना है हमको * सो नहिं अबहि सुनावत तुमको ॥
नितहि हमारे मारग आवत * मोको कबहू नाहिं जनावत ॥

---

१ ढिठाई २ कर लेनेवाले ३ सभी जातिहै

दिन दिन को लेखो भरिलैहौं * अबतौ तुम्हैं जान तब दैहौं ॥
ऐसी हठ कह करत मुरारी * बनमें रोकत नारि पैरारी ॥
आये दान परिहरि तुम कापै * चलहु न हम सब चलिहैं तापै ॥
तुम अपने घरहीके राना * सबको राजा कंस विराजा ॥
जो कहु सुनत नेकुसी पैहै * बहुरि सँभारि अबहिं परिजैहै ॥

दो०–हम गुहरावैं जाय कहँ, बसत तुम्हारे गाँव ॥
ऐसी विधि जो कहत हौ, को रहिहै यदि ठाँव ॥

सो०–करत फिरत उत्पात, लिये सखा सँग सैंतके ॥
नाहिन नेक डरात, कठिन कंसको राज्य है ॥

यह सुनि कान्ह उठे रिसि याई * लीन्हो कछु दधि दूध छिनाई ॥
बसन छोर तरुसों उरझाये * कछु दधिभाजन भूमि लुढाये ॥
कहत जाय कंसहि गुहरावो * आजहि मोहिं हुजूर बुलावो ॥
मारौं एक पलकमें वाही * मोको कहा बतावत ताही ॥
अब तौ मोसों बैर बढायो * लैहौं दान आपनो भायो ॥
मेरे हठ क्यों निबहत पैहौ * देखो अब धौं कैसे जैहौ ॥
तुम देखत रहिहौ हम जैहैं * गोरस बेंचि बहुरि घर ऐहैं ॥
बोले ज्वाब न तुमको देहैं * नेकहु तुमसे नाहिं डरैहैं ॥
सुनि गृहते जन ऐहैं जबहीं * नहिं सँभारि सकिहौ हरि तबहीं ॥
एक बूंद गोरस नहि पैहौ * देखत ऐसेही रहिजैहौ ॥
धरिकै यशुमतिपै लैजैहैं * तहाँ श्याम पुनि वचन न ऐहैं ॥
मानो कह्यो हमारो अबहूं * हम पै दान न पैहौ कबहूं ॥

दो०–गृहजन कहा बतावहू, कंसहि लेहु बुलाय ॥
देखतही तुम सबनके, पूजा करौं बनाय ॥

---

१ पराई २ पुकारैं ३ दही ४ फिर

सो०–ऐंठो धौं केहि भाँति, अब देखहुँगो मैं तुम्हें ॥
बात कहत अँनखानि, सूधे देती दान नहिं ॥

जो मानत नहिं कंसहि राजा * तौ अब भये तुमहिं ब्रजराजा ॥
तौ सिंहासन बैठन नाहीं * गाय चरावत कत बनमाहीं ॥
मोरपखनको मुकुट उतारो * नृप किरीट माथेपर धारो ॥
पहिरत कहा गुंजके हारा * नृप भूषन किन करत सिंगारा ॥
छत्र चमर सिर ऊपर राजै * तजहु मुरलि अब नौबत बाजै ॥
हमहूँ यह लखिके सुख लीजे * संगहि संग काज कछु कीजे ॥
लागत कहा दहीके काजा * लखि हमको उपजतहै लाजा ॥
ओछी बुद्धि तुम्हारी दीनी * तुम्हरे चित्त रजधानी लीनी ॥
मेरो दासन दास कहावै * सपनेहूं यह ताहि न भावै ॥
कंस मारि सिर छत्र धराऊँ * कहा तुच्छ यह साध पुराऊँ ॥
ब्रजमें मेरो राज सदाई * और कहाँ काकी ठकुराई ॥
तुम कछु राज बड़ो करि मानो * मेरी प्रभुताको नहिं जानो ॥

दो०–हमहूँ जानतहैं तुमहिं, लरिकाई ते कान्ह ॥
काहेको अपने वदन, कीजत बहुत बखान ॥

सो०–फिरत चरावत गाय, कांधे कामरि कर लकुट[4] ॥
देखीहै ठकुराय, कत बढ़ि बढ़ि बातें करत ॥

यह कमरी कमरी तुम जानो * जितनी बुधि तितनी अनुमानो ॥
यापर वारौं चीर पटम्बर * तीन लोककी यह आडम्बर ॥
ब्रह्मा भूल्यो जाहि निहारी * सो कमरी कत निंदत प्यारी ॥
कमरीने बल असुर सँहारी * कमरीते संतन उद्धारी ॥

१ ऐंठनी है. २ मुकुट. ३ सिरमिटी ४ लकडी.

या कामरीते सब सुख भोगा * जाति पाँति यह मम सब योगा॥
सुनत हसीं सब ब्रजकी बाला * यह तुम साच कही गोपाला ॥
धनि धनि यह कामरा तुम्हारा * सब विधि तुम्हें निबाहनहारा ॥
यहै ओढ़िकै गाय चरावो * यहै सेजकरि भूमि बिछावो ॥
याहीतें वर्षाऋतु टारो * शिशिर शीत याते निवारो ॥
याते ग्रीषम घाम बचावो * यहै उठगनी शीश बनावो ॥
यहै जाति यह गृह यह टाटी * यहै सिखावत सब परिपाटी ॥
हमसों कहन चहतही तुमसों * कही सो तुम अपने मुख हमसों॥

दो०–कहीजात अपनी प्रगटि, नीके हमैं हँसाय ॥

तापर मागत दान दधि, युवतिन रोक कन्हाय ॥

सो०–कामरि ओढ़नि हारी, तुम्हैं न छाजत पीत पट ॥

कारे तनु पर चारि, कारी कामरि सोहई ॥

मोसों बात सुनो ब्रजतिय सब * सत्य कहत उपमा न जगत सब।
बालक अरु तिय मुख नहिं दीने * इनमें बहुत हेतु नहि कीने ॥
मूढ चतुर नेकहि चुचकारे * जो मनकरे सोइ करि डारे ॥
सोइ गुण प्रगटत तुम नाहू * बतक कहत में तुम अठिलाहू ॥
जानहु कहा हमैं तुम ग्वारी * सदा छाँछकी बेचनहारी ॥
सुनहु कान्ह हम तुमको जानें * नन्दमहरके सुत पहिचानें ॥
धेनु दुहत पुनि तुमको देखे * गाय चरावतह बन पेखे ॥
चोरी करी वहो पुनि जाने * खिरिका खोलत फिरत बिराने॥
ये ढँग छाँडि भये अब दानी * यहै बात अब सबहिन जानी ॥
और सुनहु यशुमति नन बाँधे * ऊखलसों दोऊ भुजसाधे ॥

१ सरदी २ गरमी ३ रीति ४ देखे

तब सहाय करि हमहिं बचाये * करके बधन जाय छुड़ाये ॥
जानत यहै रहत मन माहीं * हम ते दूर बसत कछु नाहीं ॥

दो०–कहत कहा तुम बावरी, हँसी लगत सुनि बात ॥
कब जनमत देख्यो हमैं, कौन मात को तात ॥

सो०–कबै चराई गाय, कब चोरी पकर्‍यो हमैं ॥
कब बाँधे हम माय, दुही गाय किन कौनकी ॥

तुम जानहु सुधि यशुमति जाये * यशुमति नन्द कहाते आये ॥
मैं पूरण अविगति अविनाशी * बाध तब मायाकी फांसी ॥
यह सुनि हँसी सकल ब्रजबाला * ऐसेउ गुण जानत गोपाला ॥
ऐसे निरख्यो तुम सब काहू * जैसे निदरत मात पिताहू ॥
तुमको यशुमति उदर न जाये * तो तुम कहो कहाँते आये ॥
घर घर माखन चोर्‍यो नारी * बाध मान न ऊखल माहीं ॥
दावा करि हम नाहिं छुड़ाये * ग्वालन संग बच्छ चराये ॥
नहीं गाय तुम दुही हमारी * ऐसब बात झूठ तुम्हारी ॥
भक्तहेतु न मन नगमाहीं * बस धमके मैं बहानाहा ॥
योग यज्ञ मनमें नहिं ल्याऊं * दीन गोहारि[1] सुनत उठि धाऊँ ॥
गांधर्वीन रही सब बामा * और नहां कछु मोरो धामा ॥
मात पिता आदिके माहीं * व्यापक ही समान सब ठाहीं ॥

दो०–कहाँ कहाँकी बात कहि, डरपावतहौ नारि ॥
स्वर्ग पतालहि एक करि, बाँधत बारहिंबारि ॥

सो०–इहां सुनावत काहि, जो लायक सो आपको ॥
कौन प्रकृति यह आहि, बनमें रोकत हौ तियन ॥

---

१ पुकार २ प्रेमके आधीन ३ डर

केतक दधिको दान कन्हाई * जिहि कारण युवती अरुझाई ॥
दधि माखन सबही तुम लेहू * रीती जान हमैं घरदेहू ॥
जो तुम याहीमें सुख पावो * काहेको बहुवात बनावो ॥
दधि माखन यह वरों तिहारो * सकल वणिजको दान निवारो॥
जो जो वँणिज नितहिं तुम लावो * लेखो करि सब मोहिं चुकावो ॥
अब ऐसे कैसे घर जैहौ * जवलग लेखो मुहिं न बुझैहौ ॥
करत वणिज तुम नये बनाये * नित उठि जात जगात बचाये ॥
सुनि वाणी हरि नागर नटकी * दैदै सैन युवति सब सटकी ॥
मनहीं मन अति हर्ष बढ़ाई * बोलीं हरिसों सब मुसकाई ॥
ऐसे कहौ वणिजको अटके * अबलों श्याम कहाँ तुम भटके ॥
हमहूँ कहिं मन माँझ लजाई * कह माँगत दधि दान कन्हाई ॥
वणिजहेतु रोकी अब जानी * तवहीं क्यों न कही यह बानी ॥

दो०–हँसि बोली राधा कुँवरि, कहा वणिज हम पास ॥
कहौ श्यामसो नाम धरि, देहिं दान हम तास ॥

सो०–भूले कहा कन्हाय, वणिज कहा युवती करत ॥
कासों लियो चुकाय, सो हमको बतलाइये ॥

यहौ तुमहिं बूझत कह हमहीं * लै लै नाम बतावो तुमहीं ॥
तुम जानत मैं हूँ कछु जानौं * तुमते माल सुनाहिं छिपानौं ॥
डारि देहु जापर जो लागै * फिर न कछू तुमसों कोउ मागै ॥
इतनेहीं को लरत वृथाहीं * देखौ समुझि सबै मनमाहीं ॥
कहत परस्पर ग्वालि सयानी * समुझतहौ कछु इनकी बानी ॥
इनहीं सों बूझौ सब कोऊ * कहा बतावत सुनिये सोऊ ॥

१ वेचनकी चीज

हरिकी गूढ़ मधुर रस बातें * सुनि सुनि सुख पावत मन जाते॥
कोउ याहूको भेद न जानै * लोक लाज डर सब कोउ मानै॥
मन मन हर्ष भई सब सुंदर * जानै हरि सब रसिक पुरंदर॥
तब बोलीं हँसिकै ब्रजबाला * कहत नाहिं क्यों तुमहिं गुपाला॥
कहा माल देख्यो हम पाहीं * जिहि कारण रोंकी बनमाहीं॥
बैल लदाये देख्यो हमको * कही हमैं बूझतिहैं तुमको॥

दो०–लौंग जायफल लायची, गिरी छुहारो दाख ॥
कह लादे हम जात हैं, सो कहिये किन भाख ॥

सो०–दीजे वणिज बताय, ताकी देहिं जँगात हम ॥
तुमको नन्ददुहाय, जो अब वेग कहो नहीं ॥

कौन वनिज कहि मोहिं बतावो * लोन मिरच कहि कहि बहँकावो॥
तुमनी माल गेंयद लदायो * महिषे वृषभ कहि मोहिं सुनायो॥
बड़े मोलकी वस्तु जो होई * कैसे दुरैत दुराये सोई॥
मो आगे तुम कहाँ छिपावो * देहो दान जान तब पावो॥
भये चतुर हरि तुम अब जानी * दधिको दान मेटि यह ठानी॥
देती दही कछुक हम छोहन * खाते लै ग्वालन सँग मोहन॥
इन बातन अब खोयो सोऊ * यह कहि युवति हँसीं सब कोऊ॥
श्याम कही मैं जानत तुमको * यूंपे दान न देहो हमको॥
दधि माखन तो लैहौं छोरी * उठिकै भुजगहि गहि झकझोरी॥
तब पीताम्बर झटक्यो प्यारी * कहत भये तुम ढीठ मुरारी॥
हरि रिसकरि अँकम गहि लीन्ही * इहि मिसि भेंट प्रेमकी कीन्ही॥
टूटि गई प्यारी उरमाला * तब घेरे युवतिन नँदलाला॥

१ भीतरी २ इन्द्र ३ घर. ४ हाथी ५ भैंस ६ छिपानेसे ७ गोदी ८बहाना

दो०-गहि गहि अंकम लेत सब, झगरत रसहि बढ़ाय ॥
हँसत सखा सब तारिदै, पकरे गये कन्हाय ॥
सो०-हाँक दई नँदलाल, तबहि सखन ललकारके ॥
धाय परे सब ग्वाल, लीन्हे श्याम छुडाय तब ॥

रिसकरि बोले ग्वाल सयाने * भई ढीठ हरिको नहिं जाने ॥
हम भई ढीठ भलो तुम कीन्हो * देहौं ज्वाब दइ को चीन्हो ॥
बन भीतर रोकी सब बाला * देखौ हमैं कियो जजाला ॥
बात कहनको एहू आवत * बड़े सुधर्मा आप कहावत ॥
ऐसी साख सखा की भरि सब * आवहुगे नृपजीत सबै तब ॥
जानी बात तुम्हारी सबकी * तजहु ख्याल लरिकाई तबकी ॥
जो युवतिनको हाथ लगैहौ * कियो आपनो तौ तुम पैहौ ॥
जो यह बात घरन सुनि पैहैं * मात पिता हमको कह कैहैं ॥
तोर्यो [1] मुक्ताहार कन्हाई * घरहिं कहा कहिहैं हम जाइ ॥
आपन भई सबै तुम भोरी * हरिको दोष लगावत गोरी ॥
जब तुम झपटी पीत पिछोरी * तब उन मोतिनकी लरतोरी ॥
माँगत दान श्याम कबसेती * तुम अठिलात ज्वाब नहिं देती ॥

दो०-लेहिं छोरि सबते अबहिं, देखतही रहिजाहु ॥
झक झोरा झोरी करत, नँदनन्दनहिं डराहु ॥
सो०-को त्रिभुवनके माहिं, मोहनकी सर [2] दूसरो ॥
तुम सब जानत नाहिं, नँदनन्दन ब्रजराजसुत ॥

कहा बड़ाई इनकी सरसै * इनको जानति नीकेकर मे ॥
नृपति [3] नास वसुदेव निकारे * नन्द यशोमतिने प्रतिपारे ॥

१ राजा २ समान ३ अच्छीनहरसे ४ भय

आयेहु शुभ घरके माहीं * काहू वदन साहिके नाहीं ॥
पहिले जब तुम गुनाहखोरा * तब हम झटकी पीन पिछोरी ॥
दाबे पीठ कही तुमरो हम * श्यामहि शिरपन हार भर तुम ॥
इतने पर मानत नहिं हारी * तबते हमें देतहो गारी ॥
बहुत सही हम बान तुम्हारी * वणिजै करत अरु झगरत ग्वारी ॥
अब ऊपर मन मोहन दानी * अबलौं तुम यह बात न जानी ॥
बोलि उठे तब कुँवर कन्हाई * अब नहिं छोटों नन्द दुहाई ॥
अब तौ दान आपनो लैहौं * तबहीं जान सबनको दैहौं ॥
कौन दान यह कहत कन्हाई * माँगत कहा जान नहिं जाई ॥
गिरि गिरि धरि धरि नन्द दुहाई * डरपावनहो हमको आई ॥

दो०—डरपावहु तुम जाय तिन्ह, जो कोउ तुम्हें डराहिं ॥
यहँ डरपावत कौनको, तुमते घटि हम नाहिं ॥

सो०—जहँ यशुमति पाहिं, तोन्यो हार भली करी ॥
यहाँ बनत पै नाहिं, इतनो धन कहुँ पाइहौ ॥

सब हार मोहिं कहा बतावो * सब अंग भूषण काहि दुरावो ॥
मोती माँग जराऊ टीको * करणफूल बेसर नगनीको ॥
कंठ सिरी दुलरी तिलरीगर * तापर और हार जो चौसर ॥
सुभग हमेल तिनोदा बाजू * कंकण पहुँचिन मुदरिन साजू ॥
कटि किंकिणि[2] नूपुर[3] पग देखौ * जेहरि बिछिया ये सब लेखौ ॥
शोभा सार और अंगमाहीं * सबको नाम लेन क्यों नाहीं ॥
याहूमें कछु बाँट तुम्हारो * अचरज आय सुनोरी भारो ॥
भूषण देख न सकत हमारो * याही लिये भयो घटवारो ॥
आपनहूँ कछु दह गढ़ाई * महरि यशोमतिके नँदराई ॥

१ व्यापार २ तागड़ी ३ पायजेब

आई पहिरि जितो हम याहीं * यावे दूनोंहै घरमाहीं ॥
देखि परत कछु बहुत लुभाने * बनधौं सुनो लखि ललचाने ॥
बाँटि कहा तो लों सब मेरो * जौलौं तुम नहि दान निबेरो ॥

दो०–आभूषणको कहकहत, बहुत वस्तु तुमपास ॥
मानौं मैं जानत नहीं, सो किन कहत प्रकास ॥

सो०–लेहौं सबको दान, समुझि लेहिंगे बाँटि पुनि ॥
पैहौं तबहीं जान, मैं तुमसो साँची कहत ॥

भये श्याम ऐते रस नागर * युवतिनमें अब होत उजागर ॥
कालिहहि गाय चरावन जाते * छाक माँगि ग्वालन सँग खाते ॥
काँधे कामरि लकुटी हाथा * बनमें फिरत बछरुवन साथा ॥
आज पीतपट[1] कटि कसि आये * लैकर लकुटी बडे कहाये ॥
भये कछू अब नौवल[2] सुजाना * माँगत युवतिनसों वह दाना ॥
देहौ दान कि झगरतिहौ तुम * बहुत तुम्हारी बात सुनी हम ॥
प्रथम दान जन जाल निवरिये * तापाछे तुम हमहिं निदरिये[3] ॥
कहत कहा निदरेसेहौ तुम * सहजहि बात कहतितुमसों हम ॥
आदिहिते तुमको पहिचानें * दान कहा सो हम नहि जानें ॥
ग्वालिनि चलीं सबैरिस कारि करि* दधि मटुकी माथेपर धरि धरि ॥
तब हरि गहि अंचरें[4] झरकारी * जाति कहाँ हौरी बनिजारी ॥
इतनो बणिज लिये तुम जाहू * बिना दान क्यों होत निवाहू ॥

दो०–नाम तुम्हारे वणिजके, सब मै देहुँ बताय ॥
देहु दान तब मोहिं तुम, देखहु सब ठहराय ॥

१ पीताबर २ नये ३ निरादर करना ४ कपडा.

सो०–सब क्यो छोड्यो जात, एक होय तो छोडिये ॥
तुम विचारि यह बात, देखहु अपने चित्तमें ॥

एती वस्तु लिये तुम जावो * दान देति मेरो सिनरावो ॥
मैचगयद[1] तुरंगम[2] तुमसों * कैसे दुरत दुराये हमसों ॥
हस मोर कहँरि[3] मृग वारे * कनक कलश मन्दरससों भारे ॥
चमर सुगध कपोते[4] कीरे[5] वर * कोकिल विद्रुम[6] वँत्र[7] धनुप शर ॥
एती धन खग मृग तुम पाहीं * कैसे निबहत दान निनाहीं ॥
सुनि यह चकित कहति भजबाला * कहा बनावत तुम नँदलाला ॥
तिनको नाम लेत हम पाहीं * नो हम सने देख्यो नाहीं ॥
कहँ तुरगम गज हम पाये * कब हम कर्चन[8] कलश गढाये ॥
मान सरोवर हस रहाहीं * चमर धनुप शॅर[9] कहा कहाहीं ॥
ये सब हम पै कहा बतावो * जहाँ होय तह दान चुकावो ॥
इतनो सबै तुम्हारे पाहीं * करि बिचार देखौ मनमाहीं ॥
अपने सब अँग अग निहारो * यौवनरूप औरहै न्यारो ॥

दो०–करहु निवेड़ो वेग सब, काहे करत अबेर ॥
कहो तुम्हें कछु हम कहैं, घरको जाहु सबेर ॥

सो०–दीजे दान चुकाय, अब जान्यो अपनो वणिज ॥
कहौं फेरि समुझाय, जो कछु धोखो होय चित ॥

चमर चिँकुर[10] भ्रूधनुप सँभारे * शरकटाक्ष मृग दृँगे[11]कजरारे ॥
कठ कपोत कोकिला वानी * रदैं[12]कीरा शुकनाक वखानी ॥
अँधर[13] सधर विद्रुमैंसो[14] जानो * है मयूर घूघटपट मानो ॥

१ मतवाला हाथी २ घोड़ा ३ सिंह ४ कबूतर ५ तोता ६ मूगा ७हीरा ८ सोना ९तीर १०बाल ११आँख १२दृष्टि १३दात १४ होठ १५मूगा

कंचन कलश उरोज निहारो * यौवन मदसों भरो विचारो ॥
कटि केहरिके रूप सुहाइ * हस गयंद चाल छबिछाइ ॥
सौरभ अंग सुगंध सुहायो * यौवन रूप न जात बतायो ॥
इतनो है सब वणिज तिहारो * होय अशमो देहु हमारो ॥
खरी किये निबहौगी कैसे * लेहौं दान देहुगी जैसे ॥
यह सुनि हँसि बोलीं ब्रजनारी * अब समुझीं हरि बात तुम्हारी ॥
माँगत ऐसो दान कन्हाइ * जानि परी प्रगटी तरुणाइ ॥
याही लालच अक भरतहौ * पुनि पुनि गहिआँचर झगरतहौ ॥
अपनी ओर देखितो लीजै * तापाछे बरियाइ कीजै ॥

दो०–याही लालच फिरत हौ, सखा लिये बन संग ॥
घेरतहो युवतीनको, प्रगट्यो अंग अनंग ॥

सो०–बैठ रहौ घर जाय, यह मति चितमें मत धरौ ॥
घटि मर्यादा जाय, ऐसी बातनसों लला ॥

यह सुनि बिहँसि कह्यो बनमाली * कत हमपर रिस करत गुवाली ॥
सुने हम इक बात बखानी * तुमकत शोर करत अनखानी ॥
कबहुँ धटावति हौ मर्यादा * कबहूँ जोइ सोइ करत विवादा ॥
प्रातहिं ते झगरत बिन काजे * दान निबेर जात नहिं साजे ॥
हरि यों कहते भये सयाने * उलटहिं तुम हम पर सतराने ॥
वेदी बहू बडे घरकी है * कत बिलब बनमें करती है ॥
बूझिय तुमसों हम जु बखाने * सो तुम कह आगे सतराने ॥
कहिये मोहन बात विचारी * कहवावत सर्वज्ञ विहारी ॥
परगट ऐसो दान सुनावत * हमरो ब्रज उपहास करावत ॥

१ स्तन २ कमर ३ सुगंध ४ कामदेव ५ तुम्हें हुई
६ सब जाननेवाले ७ हमी

परै बात महराने जाइ * तुमहिं लाज कै हमहि कन्हाई ॥
मनमें जो ये बात सुनैगे * जाति पातिके लोग हँसेंगे ॥
जान देहु अब हमहि गोपाला * कहियो प्रात फेरि नँदलाला ॥

दो०–बोलि उठ्यो इक सखा तव, सुनहु ग्वालिनी बात ॥
प्रीति करत नँदलालसो, कत बावरी लजात ॥

सो०–हरि सँग करहु विहार, नवल श्याम नवला तुमहुँ ॥
हँसनदेहु ससार, भलो मनावो कान्हको ॥

सुनि बोलीं ब्रजयुवति रिसाइ * कहवावत यह बात कन्हाई ॥
आपुन यौवनदान बनावत * तापर जोइसोइ सखन सिखावत
वनमें सबन घेरि बैठाइ * करत श्याम तुम अति लगराई ॥
भूलिगये वे दिवस कन्हाइ * घरघर माखन खात चुराइ ॥
खीझतही ढूँगनीर चुचाते * उरडारत वरको भजिजाते ॥
बाँधे ऊखल जबहि यशोदा * हमहि छुडाय लिये तब गोदा ॥
अब भये बडे बडी चतुराइ * ताते यौवन दान सुनाइ ॥
लरिवाइ की बात बखाने * कैसी भई कहा हम जाने ॥
कब धौं खायो माखन चोरी * मैया धौं बाध्यो कब डोरी ॥
नेकहु ताकी सुधि नहिं जाने * मौन अमान न तब हम माने ॥
भले बुरेको ज्ञान न होई * अपनो पर कछु समझ न कोई ॥
खेलत खात हर्ष हिय माहीं * बालपनेके दिवस सिहाहीं ॥

दो०–अपनी सूरति करत नहिं, न्हात यमुनके तीर ॥
कदम चढाये सबनके, जन मे भूँषण चीर ॥

---

१ डीग्ना २ आंसू ३ घमड ४ गहने

सो०–जलमें रहीं छिपाय, विना वसन नाँगी सबै ॥
पुनि पुनि हहा कराय, दिये वैसन मैं सवन तब ॥

विना बसन बाहर सब आई * हाथ जोरि मोहिं विनय सुनाई॥
कैसी भाँति भई तव सवकी * सो सुधि भूलि गई अब तवकी ॥
मोको कहति चोरि दधि खायो * ऊखलसों हम जाय छड़ायो ॥
भेद वचन जब कहे विहारी * सुनिकै हँसि सकुचीं ब्रजनारी ॥
कहत भये अति निलज कन्हाई * ऐसी कहत न सकुचत राई ॥
जादु चले लोगनके आगे * झूठी बात बनावन लगे ॥
करत हँसी तुम सबन सुनाई * निजनिज गृह सब कहिहैं जाई॥
झूठी बात कहा हम जानें * हम तो साँची सदा बखाने ॥
जैसी भाँति भजै मोहिं कोई * मानत मैं ताको तैसोई ॥
जो झूठो मोको तुम जानो * तो कत मेरे हित तप ठानो ॥
जो तुम अपने मनमें ठानी * मैं अन्तर्यामी सब जानी ॥
अब क्यों इतौ निठुर मन कीनो * काहे दान जात नहिं दीनो ॥

दो०–दान सुने रिस होतिहे, यह नहिं हमैं सुहाय ॥
भली बुरी अरु जो कहो, सो सहिलेहिं कन्हाय ॥

सो०–छाँड़ि देहु सब जाहिं, सुनिये मोहन लाल अब ॥
भई बेर वनमाहिं, मात पिता खिझिहैं हमैं ॥

काहेको तुम करत अबारी * दधि बेचहु धर जाहु सवारी ॥
मैं कह करों तुम्हैं यह भावत * लेखो करि नहिं दान चुकावत॥
शुद्धभाव समुझि सब कोई * लेखो करिदेहो मोहिजोई ॥
तब सोइ तुमसों मैं ले लेहौं * तबहीं तुम्हैं जान पुनि देहौं ॥

१ कपडे २ हिरदेकी जाननेवाले

काहेको हमसों हरि लागत * जानि न परत कहा तुम मांगत ॥
बातन कछू जनावत नाहीं * लेखो कहा करत हम पाहीं ॥
निपटहिं परे हमारे ख्याला * इन बातन कह पावत लाला ॥
अब तुम निपट करी बहुताई * सुनि हँसिहैं ब्रजलोग लुगाई ॥
मारग जनि रोकहु हम जाहीं * घरते लीजो दान उगाहीं ॥
अबलौ यह कीयो तुम लेखो * हम तुमरो विचार सब देखो ॥
मोको ऐसी बुद्धि सिखावत * कर ककण दर्पणहि दिखावत ॥
तुम्हरी बुद्धि दान हम लेहैं * काहेन तुम्हें जान हम देहैं ॥

दो०–आप भईहौ चतुर सब, मोको करति गँवार ॥
उगहत फिरिहैं दान हम, ठाढे ह्वै हैं द्वार ॥

सो०–तुम्हें देहुँ घर जान, फेरि कहो पाऊँ कहाँ ॥
जो नहिं पैहौं दान, नृपहि ज्वाब कह देउँगो ॥

भली भई नृप मान्यो तुमहूँ * चलिहैं कंसहिपै अब हमहूँ ॥
तबते लेन कहत है दानहिं * नन्द महरकी करिहै आनहिं ॥
हमहूँ अबलौं ऐसी जानी * भये श्याम घरहीते दानी ॥
अब जान्यो तुम कंस पठाये * नृपते दान पहिरि तुम आये ॥
सुनि हरि ये गोपिनके बैयना * हँसे कछू तिरछे करि नयना ॥
सो छवि निरखि कहत सब नारी * कहा हँसे मुख मोरि मुरारी ॥
सोई कहो मनहिं जो आई * तुमको यशुमति महरि दुहाई ॥
और सौंह तुमको गोधनकी * साँची बात कहो तुम मनकी ॥
हँसे कहा हमसों कछु रीझे * कैधौं कछु मनहीमन खीझे ॥
यह सुनि अधिक हँसे गोपाला * कहत सुदामासों नँदलाला ॥

१ शीशा २ राजा. ३ वचन. ४ श्रीकृष्ण

यह अचरज इनको तुम हेरो * कहत कहा तुम हँसि मुख फेरो ॥
एसी बातन सौंह दिवावत * ताते अधिक हँसी मोहि आवत ॥

दो०–तब श्रीदामा तियनसों, बोलि उठ्यो मुसकाय ॥
हँसत श्याम तुम समझके, बूझत सौंह दिवाय ॥

सो०–हम न दिवावें आन, हँसहु तुमहु निज संग मिलि ॥
यहै आन सी बान, थोरेमें खिसियात तुम ॥

सहज हँसत नाहिन सकुचैये * नाहिन लोगन सौंह दिवैये ॥
वे हैं दानी प्रभु सबहीके * देहु दान माँगत कबहीके ॥
हम जानत वे कुँवर कन्हाई * प्रभु तुम्हरे मुख अब सुनिपाई ॥
होति नहीं प्रभुता इहि भाँती * दही महीके भये जगाती ॥
वे ठाकुर तुम्हरी सेवकाई * जाने प्रभु अरु सब प्रभुताई ॥
दधि खाये अरु भूषण तोरे * छाँडि देहु अब दई निहोरे ॥
जो कछु बचो सोउ अब लीजे * वेगहि जान हमैं घर दीजे ॥
तब हँसि बोले श्याम सुजाना * तुम घर जाहु देइकै दाना ॥
आयो हौं पठयो मैं जाको * देउँ कहा लैकै पुनि ताको ॥
अबहीं पठवै मोहिं बुलाई * तब ताके सन्मुख को जाई ॥
तुम सुख करौ जाय घरमाहीं * नृपकी गारि मारको खाहीं ॥
जब नृपवर मोको अटकावै * तब पुनि तुमबिन कौन छुडावै ॥

दो०–लेत नाम मुख नृपतिको, जा मुख निदर्यो जाहि ॥
आपुन तो नृप नृपनके, अब कह समुझे ताहि ॥

सो०–लियो कसको नावँ, ऐसी तुम्हैं न बूझिये ॥
भले श्याम बलि जावँ, जिहि निदिये तिहि वंदिये ॥

१ करलेनवाले २ बड़प्पन

जब हम कस दुहाइ दानी * तब तो नृपपर अति रिस कीनी ॥
अबै कहा नृपकी सुधि आइ * जो तुम एसे टरे कहाई ॥
कहा कह्यो कछु जान न पायो * कब हम कसहि शाश नवायो ॥
कब हम नाम कसको लीनो * कस भौंस कबहीं हम कीनो ॥
निपट भइ तुम ग्वारि गवाँरी * बसत हमारे गाँवमँझारी ॥
कितक कस जाको हम जानैं * कहा त्रास ताको उर आनैं ॥
तुम्हरे मनैं बात यह आवत * कस नृपतिके हम कहवावत ॥
तो तुम कहौ कौन नृप जाके * आपुन कहवावत हौ ताके ॥
ताको नाम हमहु सुनि पावैं * हमहूँ पुनि ताके कहवावैं ॥
या ससार लोक त्रयमाहीं * दूनो क्स नृपतिते नाहीं ॥
सो नृप बसत कहा सोउ जानैं * तौ हम सब ताहीको मानैं ॥
यह सुनि हम अब अति डर पायो * कै धौं झूठहि हमहि टरायो ॥

दो०—जा नृपके हमहैं अरी, को नहिं जानत ताहि ॥
जड चेतन नर नारि सब, तिहूँ भुवन वश जाहि ॥

सो०—बसत सुमनपुर माहि, कहँ लगि तिन्हे प्रशंसिये ॥
सब मानतहैं जाहि, तिन पठयो मुहिं पानदै ॥

सुनत गूढ मोहनकी बानी * बोलीं मनसुन्दरा सयानी ॥
जाति तुम्हारे नृपकी पाइ * अब लों राखी कहूँ छिपाइ ॥
जैसे तुम तैसे वोऊ हैं * एक रूप गुणके दोऊ हैं ॥
यह अनुमान कियो मनमें हम * एकै दिन जन्मे दोऊ तुम ॥
जैसी प्रजा तैसइ राजा * बन्यो भलो अब संग समाजा ॥
चोरा ठगी निर्पुण गुण दोऊ * या पंतर को और न कोऊ ॥

१ डर २ विकुल ३ पुष्पपुर ४ तारीफ करिये ५ चतुर ६ समान

बोलत नाहिंन बात सँभारी * ठगति फिरति ठगती तुम सारी ॥
मई ढीठ नहि नेकु विचारी * आवत मुख सोई कहि डारी ॥
अपने गुण औरन पर डारी * जाति जनावत दैदै गारी ॥
हम भई ठगिनी अरु बटपारा * तुम भये कान्ह सुधर्मा भारी ॥
अपने नृपको यहै सुनावो * ऐसिय चुगुली जाय लगावो ॥
राजा बडे जान यह पाई * ल्यावहु हमपर धौंस चढाई ॥

दो०–तुम तो ठग आछे बने, बनमें रोकी नारि ॥
हमें कहौ काको ठग्यौ, को हम डाऱ्यो मारि ॥

सो०–तुमहीं जानत श्याम, यंत्र मंत्र टोना ठगी ॥
ठगत फिरत सब गाम, आपन ढँग औरन कहत ॥

मौन गहौ बात सब पाइ * यहै जानि हम पर चढ़ आई ॥
जो चाहो सोई कहि डारो * हम नहिं मानहि बिलग तिहारो॥
तुम मोहींको दोष लगायो * मैं तो नृपको पठयो आयो ॥
यौवनरूप लिये तुम इतहीं * आवत हौ इहि मारग नितहीं ॥
लोचन दूतन जाय सुनायो * तब नृप रिस करि मोहिं बुलायो॥
शैशव[1] महलनते नृप राई * बैठ्यो सिंहासन तरुणाई ॥
तुरतहिं मोहिं दान पहिरायो * दैबीरा तुम पास पठायो ॥
तिनको नाम अनंग[2] भुवाला * उनको दान देहु ब्रजबाला[3] ॥
तिनकी आनि कहत हौं कीने * पैहौ जान दानके दीने ॥
सुनि यह मोहनकी मुख बानी * प्रेम सिंधु युवतीं मगनानी॥
काम नृपतिकी फिरी दुहाई * अटक्यो यौवन रूपहि आई ॥
को हम कहाँ रहति कहँ आइ * यह सुधि बुधि तनुदशा भुलाई

१ बालकपन २ कामदेव ३ गोपिया

दो०-ग्रसित भईं डर मदनके, नयन मूंदि धरि ध्यान ॥
कहत कान्ह अब शरण हम, लीजे सरबसदान ॥

सो०-ऐसे कहि मनमांहि, देहदशा भूलीं सबै ॥
लेहु श्याम बलि जाहिं, यह धन तुम हित संचियो ॥

यौवन रूप नाहिं तुम लायक * सकुचत तुम्हें देति ब्रजनायक॥
नवल किशोर रूप गुण आगर * अहो श्याम सुन्दर वर नागर॥
यह यौवन धन तुम ढिग ऐसे * जलधि[1] निकट जलकणिका जैसे॥
ध्यानमग्न इहि विधि ब्रजनारी * मनहीं मन विनवत बनवारी॥
अन्तर्यामी हरि सब जानैं * मनहीकी करणी सब मानैं॥
मनहीं सवन मिले सुखदाई * तनुकी सुरति[2] सवन तब आई॥
खुलि गये नैन ध्यानते तबहीं * देखे मोहन सन्मुख सबहीं॥
तब जान्यो हम बनमें ठाढी * सकुचि गईं अति अचरज बाढी॥
कहति परस्पर आपसमाहीं * कहां हुती हम जानत नाहीं॥
श्यामबिना यह चरित करैको * ऐसी विधि करि मनहिं हरैको॥
रहीं चकितसी सब ब्रजनारी * बोलि उठे तब कुंजविहारी॥
कहा ठगीसी हौ ब्रजबाला * पर्यो कहा उर शोच विशाला॥

दो०-कर्यो दान लेखो कछु, रहीं जहां तहँ शोच ॥
प्रगट सुनावो सो मुहीं, दूरि करौ संकोच ॥

सो०-बहुरि न रोके कोय, या बनमें कोऊ तुम्हैं ॥
निशि बासर भय खोय, सुखसों आवहु जाव नित ॥

हमैं और रोकै सो को है * रोकन हार सुवन नँदको है॥
टोना[3] बारत शीश हमारे * आप रहत ठाढेहै न्यारे॥

१ समुद्र. २ याद. ३ रक्षा

जाके काम नृपतिको जोरा * ठगत फिरत युवतिन बरजोरा ॥
सुनहु श्याम बूझिय नहिं ऐसी * तुमको बानि परी यह कैसी ॥
वैसेहू अब कृपा करो हरि * जाहिं सबै अपने अपने घरि ॥
दान मान घरको सब जाहू * बहुरि न मैं रोकोंगो काहू ॥
मैं हूँ जानत हौं कछु लेखो * तुमहूँ आप समुझि मन देखो ॥
पिछिलो देहु निवेर आन सब * आगे पुनि दीजो जाना जब ॥
अब मैं भली बहुतहीं तुमको * नो मानी ग्वालिन तुम हमको ॥
को जानै हरि चरित तुम्हारे * अहो रसिकवर नन्ददुलारे ॥
हमरो सर्वस मन अपनायो * अजहूँ दान नहीं तुम पायो ॥
लेखो करि लीजो मन भायो * साहु बच्छू दधि हम सुख पायो ॥

दो०-सद माखन लाये तुम्हैं, सखन सहित मिलि खाहु ॥
सुख पावैं हम देखिकै, लीजै दान उगाहु ॥
अब दधिदानी नाउँ, तुम्हरो प्रकट बखानिहैं ॥
खाहु दही बलि जाउँ, ल्याईं हम तुम्हरे लिये ॥

तब हरि हँसि सब सखन बुलाई * बैठे रचि मण्डली सुहाई ॥
दोना बहु पैलाशके लाये * शोभित सबके करन सुहाये ॥
सुन्दर हरि सुन्दर सब ग्वाला * सुन्दर दधि परसति ब्रजबाला ॥
भक्त भावके हाथ बिकाने * ग्वालन संग खात रुचि माने ॥
निज निज मटुकिनतें सब ग्वारा * देति भरति उर आनँद भारी ॥
श्याम पनूखिनसों मुख नावैं * निरखि निरखि ग्वालिन सुख पावैं
धन्य धन्य आपुनको जान्यो * सफल जन्म सबदिन करि मान्यो
कहत धन्य यह दधि अरु माखन * खात कान्ह जाको अभिलाषन ॥

१ कृष्ण २ दाव ३ हाथ

जो हम सौंध करतहीं मनमें * सो सुख पायो हरिसग वनमें ॥
अति आनद मगन सब ग्वारों * नन्द नन्दनपर तनमनवारीं ॥
प्यारीमों माखन हरि मागत * दगों तुम्हरो कैसो लागत ॥
औरनकी मटुकीको खायो * तुम्हरे दधिको स्वाद न पायो ॥

दो०–श्रीवृषभानुकुमारि तब, दधि ल्याईं मुसकाय ॥
अपने कर अधरन परस, दीनो विहँसि खवाय ॥

सो०–प्यारीको दधि खाय, अत्यचित मोहन विहँसि ॥
मधुरे कह्यो सुनाय, मीठो है यह सबनतें ॥

गोपिनके हित माखन खाहा * प्रमविवश नहि नेक अघाहा ॥
दधिय गोरस भरी कैमोरा * परसत सब होत नहिं थोरी ॥
ग्वालन सहित श्याम दधि खाहीं * परम हर्ष सबके मनमाहीं ॥
हँसत परस्पर सखा सयाने * मीठो कहि कहि स्वाद बखाने ॥
हरि हँसि सबके चितके चुरावैं * परमानद सबन उपजावैं ॥
विल्मत ब्रज विलास बनवारा * दधिदानी प्रभु कुंजविहारी ॥
सुरगण लियन सहित नैभमाहीं * निरखि निरखि मनमाहि सिहाहीं ॥
धनि धनि व्रजकी युवति सभागी * खात ब्रह्म जिनके दधि माँगी ॥
नारायण शिव ध्यान लगावै * शेष सहससुख जाको गावैं ॥
मन बुधि वचन अगोचर जोई * जाको पार न पावै कोई ॥
नारदादि जाके गुण गावैं * निगम नेति कहि अंत न पावैं ॥
*गुणातीत अविकारी अविनाशी * सो प्रभु मनमें प्रकट विलासी ॥*

छं०–प्रकट सो प्रभु मनमें बिलासी, जाहिमुनिजनध्यावहीं॥
योग जप तप नेम सयम, करि समाधि लगावहीं ॥

---

१ कृष्ण २ मटुकी ३ आकाश ४ जहां इंद्रियां न पहुंचसके

रूप रेख न वरण जाके, आदि अंत न पाइये ॥
भक्तवश सो ब्रह्म पूरण गोप वल्लभ गाइये ॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड जाके, रोम प्रति श्रुति गावहीं ॥
कीट ब्रह्म प्रयत जल थल, आप सब उपजावहीं ॥
आप कर्त्ता आप हर्त्ता, आपही पालन करैं ॥
खात सो प्रभु दान दधिले, गोपिकनके मन हरैं ॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी, धन्य वन पावन मही ॥
धन्य मोहन दान मांगत, दूध दधि माखन मही ॥
धन्य ब्रज यक पलककोसुख,और यह त्रिभुवन नहीं॥
कहत सुर मुनि हरपि पुनि,पुनि सुमैन सुदर वर्षहीं ॥
कान्ह गोपी ग्वाल द्वे नहिं, एकही बहु तनु धरे ॥
भक्त जनहित विरद जाको, अमित लीला विस्तरे ॥
ब्रजविलासहुलास हरिको, नित्य निगमागम कहे ॥
दास ब्रजवासी सदा यह, गाय आनँद पद लहे ॥

दो०–दान चरित गोपालको, अति विचित्र रसखान ॥
वेद भेद पावें नहीं, कवि किमि करै वखान ॥

सो०–गावत सुनत सुजान, दधिदानी लीला रुचिर ॥
प्रेम भक्तिको दान, ब्रजवासी जन पावहीं ॥

ब्रजललना यों हरिहि सुनावै * दूध दहीं माखन अरु लावैं ॥
मटकिनते लैले हम देहैं * खाइ श्याम तुम हम सुख लेहैं॥

१ पृथ्वी २ मठा ३ फूल

गोरस बहुत हमारे घर घर * लीजै दान पाछिलो भर भर ॥
यह गोरस जो तुमने पायो * सो सो दान आनवो आयो ॥
लेहु सबै अपनो करि लेखो * फिर न पायही मागे सेखो ॥
श्याम कही अब भई हमारी * मनहिं भई पैरतीत तुम्हारी ॥
प्रीति भई हमसों तुमसों अब * लेहैं मागि चाहिहैं जब तब ॥
निधरक अब बेंचहु दधि जाई * घाट बाट कछु डर नहिं राई ॥
ग्वालिन भइ श्याम वशमाहीं * घरको जात बनतहैं नाहीं ॥
चकित रहा सब ब्रजकी नारी * कहत एकसों एक विचारी ॥
सुनहु सखी मोहन कह कीनो * दान लियो कै मन हरिलीनो ॥
यह तो हम नहिं बदी सयानी * बूझो धौं इनसों यह बानी ॥

दो०-बूझनको उमँगी सबै, मोहनसों यह बात ॥
निकट जात रहि जात पुनि, सकुच मगन ह्वैजात ॥

सो०-मनही मन चकुचात, कहिये कैसे श्यामसों ॥
कहत बनत नहिं बात, प्रेमविवस तरुणी सबै ॥

सुनौ बात मोहन इक हमसों * ढीठो बहुत कियो हम तुमसों ॥
क्षमा करो सो चूक हमारी * अहो श्याम हम दासि तुम्हारी॥
हँसि हँसि कही कडुव हम बानी * तुम्ह रिझावत हित मन मानी ॥
कछू हमारे उरसों नाहीं * अति आनद तुमसों मनमाहीं॥
दधिको दान और नो जान्यो * सबै तुम्हारो कर हम मान्यो ॥
कहौ श्याम तुम यह कह कीन्हो * दान लियोकै मन हरि लीन्हो ॥
हम तुमसों कछु भेद न राख्यो * दीनों सबै तुम्हारो भाख्यो ॥
यह करनी तुमहीं अब जानौ * भली बुरी जो कछु करि मानौ ॥

१ दही दूध आदि २ भरोसा

जो जासों अंतर नहि राखै * सो तासों क्यों अंतर भाखै ॥
नँदनन्दन तुम अन्तरजानी * वेद उपनिषद साखि बखानी ॥
सुनहु बात युवती सब मेरी * तुमहित करि राख्यो मुहि घेरी ॥
तुमते दूर होत मैं नाहीं * रहत तुम्हारे निकट सदाहीं ॥

दो०–तुम कारण वैकुण्ठ तजि, प्रकटतहौं ब्रज आय ॥
वृन्दावन तुम्हरो मिलन, यह न बिसाऱ्यो जाय ॥

सो०–एक प्राण द्वैदेह, अंतर कहू न जानिहो ॥
यह न नयो अब नेह, कत भूतल ब्रज वास वसि ॥

अब घर जाहु दान मैं पायो * जानत यह लेखो निवटायो ॥
हँसि हँसि जो भावत बनवारी * कहत भई तब ब्रजकी नारी ॥
घर तन मनहि विना कित जाई * करत कहा मोहन चतुराई ॥
सब तन पर मनहीहै राना * जो कछु करै होय सो काना ॥
सो तो मन राख्यो तुम गोई * घरको जान कौन विधि[3] होई ॥
इन्द्रियगण मनके आधीना * चलत नहीं पग मन विहीना ॥
जो तुम प्रीति करी मनमोहन * तो दुविधा क्यों लाइ गोहन ॥
यह तो तुम जानी ब्रजनाथा * घर हम जाहिं देहु मन साथा ॥
मन भीतरमें बास बनायो * तुमहींले मोहि तहा छिपायो ॥
कहत कहा यह दोषै तुम्हारो * अजहू तजौ होहु मैं न्यारो ॥
लेहु आपनो मन घर जाहू * लोकलाज डर जो पछताहू ॥
तौ अब हमैं छाँडि किन देहू * हम मरिहैं अंतर निज गेहू ॥

दो०–जाते घटती होय निज, तजि दीजै सो बात ॥
दीनो मनमें वास तब, अब मनको पछितात ॥

---

१ भेद २ स्त्री ३ प्रकार ४ रहित ५ कसूर

सो०–जब मन दान्यो मोहिं, तबही लीनो मोहि तुम ॥
जो लेहो मन खाहि, तौ मेंहू जैहों अनत ॥

सुनहु श्याम एसी नहिं कहिये * सदा हमारे मनमें रहिये ॥
तुमहि बिना धृक मन अरु धृक घर * तुमबिन धृक कुलकान लाज डर
धृक तुम प्रेम बिना पितुमाता * तुमबिहीन धृक सुत पितु भ्राता॥
धृक जीवन तुमबिन ससारा * धृक सुख तुमबिन नन्दकुमारा॥
धृक रसना[1] तुम गुण नहि गावे * धृक श्रुत[2] तुम्हरा कथा न भावै॥
धृक लोचनैं[3] जिन तुम न विहारे * धृक विचार जो तुम न विचारे॥
धृक जीवन तुमबिन ससारा * धृक सुख तुमबिन नन्दकुमारा॥
धृक दिन रात तुम्हैं बिन जाई * धृक श्वासा तुमबिना बिहाई ॥
सो सब धृक जामें तुम नाहीं * तन धन मन तुमबिना वृथाहीं॥
ऐसे कहि तलुदशा बिसारी * भई सनेहमगन सब ग्वारी॥
कबहूँ घर तन जान बिचारै * कबहूँ हरिकी ओर[4] निहारैं ॥
दधिभाजन[5] लै शिरपर धारैं * कबहू धरणी[6] फेर उतारैं ॥
रातीं मटुकिनमें कछु नाहीं * कबहुँ विचार रहत मनमाहीं ॥

दो०–बिहँसि कह्यो तब साँवरे, जाहु घरन भजनारि ॥
सकुचत पिछिले दानको, मैं लेहौं निरवारि ॥

सो०–ऐसे वचन सुनाय, सखन सहित हरि बन गये ॥
लैगये चित्त चुराय, युवतिन दान मनायकै ॥

इति श्रीमनविलासे मजवासीदासकृते पूर्वार्द्ध समाप्तम् ॥

---

१ जीभ २ कान ३ नेत्र ४ तरफ ५ पात्र ६ पृथ्वी

पूर्वार्धं समाप्तम्‌

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ उत्तरार्द्धम् ।

गोपिनके प्रेमकी उन्मत्तअवस्थालीला ॥

रीती मटुकी शिरपर धारी * चली सबै उठि गोपकुमारी ॥
एक एकको सुधि कछु नाहीं * जानति नहीं कहाँ हम जाहीं ॥
जड़ चेतन कछु नहिं पहिचानै * बन गृह कछुक विचार न मानै ॥
लोक वेद मर्यादा दोऊ * आप सहित भूलीं सब कोऊ ॥
बेंचत दधि बनहीमें डोलैं * लेहु दही कबहू कहि बोलैं ॥
कहत द्रुमन बोलत क्यों नाहीं * लेहौ दधिके हम फिरि जाहीं ॥
तरु तरुसों पूछत यहि भाँती * बनमें फिरत प्रेम रस माती ॥
मिलत परस्पर विवश निहारी * कहति फिरत क्यों बनमें नारी ॥
तिन्हें कहति अपनी सुधि नाहीं * सो कछु नहिं समुझत मनमाहीं ॥
दधिभाजन रीते शिर धारैं * मरी प्रेम तनुदशा बिसारैं ॥
कबहूँ यमुनाके तट जाहीं * फिरति कबहुँ कुंजनके माहीं ॥
कबहू वशीवटतट आवैं * ठाढ़ी है तहँ हरिहि बुलावैं ॥

दो०–लीजै गोरसदान हरि, कहँ धौं रहे छिपाय ॥
डरन तुम्हारे जात नहिं, तुम दधि लेत छिनाय ॥

सो०–लेहु आपनो दान, पुनि रिस करि उठि धायहौ ॥
हम न देहौ जान, बनमें हम ठाढ़ी सबै ॥

---

१ रीति २ वृक्ष ३ मरी हुई

बैठ गई मटुकी धरि सबहीं * जानति घरसे आई अबहीं ॥
सखा संग लीने हरि एहै * दधि माखनको दान चुकैहै ॥
दधिहि दुरावत अचर तरिकै * दीठैं गइ मटुकिनमें परिकै ॥
रीती मटुकी सबन निहारी * गईं भमरि उरमें सब नारी ॥
जहाँ तहाँ कह उठी गुवाली * गोरस ढरकायो कहुँ आली ॥
कोउ कोउ कहत या हँ ढरकायो * कोउ कहे सखनसंग हरि खायो ॥
भइ सुरति कछु तब तनुमाहीं * गईं घरहि हम तबते नाहीं ॥
सकुच भई कछु गुरुजन टरते * प्रातहिते हम आई घरते ॥
रही कहाँ तबते बनमाहा * यहतो सुरत हमैं कछु नाहा ॥
जब हरि सखनसंग दधि खाई * गये बहुरि बन कुवर कन्हाई ॥
तबलौंकी तो सुधि हम पाहीं * भइ कहा पुनि जानति नाहीं ॥
जानपरी हमको तो योंरा * टारि गये शिर श्याम ठगोरी ॥

दो०–श्याम बिना यह को करै, लायो दधिको दान ॥
तनु सुधि भुली तबहिंते, वाकी मृदु मुसकान ॥

सो०–मन हरिलीन्हों श्याम, ताबिन निवहै कौन विधि ॥
ऐसे कहि सब बाम, घरको चलन विचारहीं ॥

मन हरिमें तनु घरहि चलावैं * ज्यों गैन मत्त चलन छवि पावैं ॥
श्यामरूप रसमदसों मार्यो * कुलमरयाद महावत टार्यो ॥
स्नेहबंधनसों तोर्यो * मुरै न लाज कुजयो मोर्यो ॥
गुरुजन अंकुश नो सुधि आवै * तब तनु घरको पाव चलावै ॥
एसे गई सदन ब्रजबाला * तहँ मावत क्षण बिन नँदलाला ॥
बूझत गुरुजन जब कछु जिनसों * औरे बात बनावति तिनसों ॥

१ छुपानाहै २ नजर ३ स्त्रियां ४ मदमाता हाथी ५ घर

गारी देत सुनत नहिं कोऊ * श्रवण शब्द हरि पूरे दोऊ ॥
मात पिता बहु त्रासें दिखावैं * नेकनही सो उरमें ल्यावैं ॥
वार वार जननी समुझावति * काहेको तुम हमहि हँसावति ॥
जहाँ तहाँ काहे तुम जाओ * नहिं अपनो कुलवान लजाओ ॥
दधि बेचौ घर सूधे आवो * काहे इतनो विलम लगावो ॥
बूझे ज्वाब देति तुम नाही * बसी कहा तुम्हरे मनमाही ॥

दो०–ऐसे सिखवत मात पितु, सो न करति कछु कान ॥
लागतहै तिनके वचन, उरमें बाणसमान ॥

सो०–तिन्हैं कहत मनमाहिं, धक धक इनकी बुद्धिको ॥
जिन्हैं श्याम प्रिय नाहिं, तिन्हैं बनैं त्यागे भले ॥

जिनको हरिकी प्रीति न भावै * तिनको सुरजनि विधि दिखरावै
ऐसे विनय करति विधि पाही * गुरुजनको निंदति मनमाही ॥
नेक नहीं घरसों मन लागत * बिसरैत श्याम न सोवत जागत ॥
नयन श्याम दरशन रस अटके * श्रवण वचन रसते नहि मटके ॥
रसनौ श्याम बिना नहिं बोल * मन चंचल संगहि सँग डोले ॥
नासौ अंग सुगंध लुभानी * सुरत श्यामके रूप समानी ॥
चरण चलत चाहत दिशि तेही * जिहि दिशि सुंदर श्याम सनेही ॥
लोकलाज कुल कानि मिटाइ * रँगी श्यामके रंग सुहाइ ॥
प्रात चली दधि लै ब्रजमाहीं * इंद्रियगण मन बुधि वशनाहीं ॥
तनु लै निकसी बेचन गोरस * रसनासों अंच्यो हरिको यस ॥
दधिको नाम भूलि गईं बाला * कहत लेहु कोऊ गोपाला ॥
भीजरह्यो मनमोहनको रस * व्याप गई उरमाहि दशोदिस ॥

---

१ त्रास २ टर ३ भूलती हैं ४ जीभ ५ नाक

दो०–फँसी सबै खगै वृन्दज्यों, हरि छबि लटकनजाल ॥
तरफरात तामें परी, निकसि सकति नहिं बाल ॥
सो०–बोलत मुख न सँभार, पान किये जिमि वारुणी ॥
बिथुरी अलैक लिलार, पग डगमग जित तित परै ॥

दधि वेचत ब्रज बीथिनैं डोलैं * अलबल वचन, वदनते बोलैं ॥
गोरस लेन बुलावत जोई * तिनकी बात सुनत नहिं कोई ॥
क्षण कछु चेत करत मनमाहीं * गोरस लेत आज कोउ नाहीं ॥
बोल उठत पुनि लेहु गोपालहिं * अटकि रह्यो मनवाहरि ख्यालहिं ॥
लेहु लेहु कोऊ बनमाली * गलिन गलिन यों बोलति ग्वाली ॥
कोउ कह श्याम कृष्ण बनवारी * कोउ कह लाल गोवर्द्धनधारी ॥
कोउ कह उठति दान हरि लायो * कबहूं भई कि तुमहिं चलायो ॥
देह गेहकी सुरति विसारी * फिरति शीश मटुकी दधि धारी ॥
जाहि देहकी सुधि कछु होई * दधिको नाम लेत सब सोई ॥
इहि विधि वेचतही सब डोलैं * आप बिकानी बिनहीं मोलैं ॥
श्याम बिना कछु और न भावै * कोऊ कितनो कहि समुझावै ॥
हरि दरशन विन मति भइ मोरी * अंतैर लगी सुरतकी डोरी ॥

दो०–पकरयो पूरण नेह उर, जित देखैं तित श्याम ॥
समुझाइं समुझत नहीं, सिख दै थाक्यो ग्राम ॥
सो०–ज्यो दीपक घरमाहिं, बाहर नहिं देख्यो परै ॥
गुप्त होत सो नाहिं, जब तृण छू दावैं भयो ॥

इहि विधि मगन सकल ब्रजनारी * कृष्ण प्रेम रस मद मतवारी ॥

१ पक्षी. २ शराब. ३ बाल, ल्हूरियां ४ माया. ५ गलियों. ६ भीतर. ७ बनकी अग्नि.

सकल प्रेमकी मूरति पूरी * कोऊ तिनमें नाहिं अधूरी ॥
एक दशा सबहीकी जानो * कहँलगि सबको प्रेम बखानो ॥
तिनमें श्रीवृषभानुदुलारी * सकल शिरोमणि हरिकी प्यारी ॥
नेक नहीं हरिते सो न्यारी * तिनकी कथा कहत निस्तारी ॥
दधिभाजन माथेपर धारै * लेहु श्याम कहि वचन उचारै ॥
बूझति तिन्हें और ब्रजनारी * बेचत कहा फिरत तू ग्वारी ॥
मातहिते लीन्हें दधि डोलै * मुखते नाम कान्हको बोलै ॥
कहा करत यह हमें बतावो * कछु हमको निजबात सुनावो ॥
उफनत तक्र चुवत अगमाहीं * ताकी सुरति तोहिं कछु नाहीं ॥
इतते उत उतते इत जाई * बुधि मर्यादा सबै मिटाई ॥
मैं जानी यह बात बनाई * तेरो मन हरि लियो कन्हाई ॥

दो०-तिन्हैं कहत मुहिं नन्दघर, कहाँ सुदेहु बताय ॥
जहाँ बसत वह साँवरो, मोहन कुँवर कन्हाय ॥

सो०-हैधौं याही गाँव, कैधौं कहुँ अन्तर बसत ॥
कान्हर जाको नाँव, मैं खोजत याको फिरौं ॥

बहुत दूर ते हौं मैं आई * मोहिं देहु नद सदनै बताई ॥
नन्दहिके द्वारेपर ठाढ़ी * बूझत अति संभ्रमता बाढ़ी ॥
लोकलाज कुलकी सब नासी * मन बँध गयो प्रेमकी फाँसी ॥
तब यक सखी परम हितकारी * हरिकी प्यारीकी अति प्यारी ॥
प्याराको निज ढिग बैठाई * शिक्षा वचन कहत समुझाई ॥
अहो राधिका कुँवरि सयानी * क्यों ऐसी अब भई अयानी ॥
ऐसे प्रकट प्रेम नहिं कीजै * देखि विचारि धीर उर दीजै ॥
हँसिहैं लखि सब ब्रजनरनारी * एकहि बार लाज तैं टारी ॥

१ पात्र २ मठा ३ घर ४ छदेट ५ छोड दीनी

ऐसे कहा फिरत वितानी * मात पिता गुरुननहिं भुलानी ॥
जो मैं कृष्ण प्रेम धन पैये * राखि गुप्त नहिं प्रकट जनैये ॥
ऐसी तोहिं वूझिये नाही * समुझ देख अपने मनमाही ॥
अनहूँ चेत बात सुन मेरा * कहत कुँवरि तेरे हितकेरी ॥

दो०–कृष्ण प्रेम धन पायके, प्रगट न कीजै बोल ॥
राखिय उर मों गोयके, ज्यों मणि राखत व्याल ॥

सो०–तू अति नागरि नारि, पायो नागर नेह जो ॥
तौ कत देति उघारि, कहिहैं तोहिं गँवारि सब ॥

मैं जो कहति सुनितके नाही * देहे ज्वाब कछू मो पाहीं ॥
कहिहै वचन कि मौनहिं रैहै * घर अपने जैहै किन जैहैं ॥
लोगन मुख सुनिहै पितु माता * मनमें प्रकटी है यह बाता ॥
मानेगी मम वचनकि नाहीं * कै फिरिहै ऐसेहि ब्रजमाहीं ॥
जो यह प्रीति श्यामसों जोरी * आज किये है है कह थोरी ॥
ध्यान श्यामको धरि उरमाहा * लाज छाडि कत भ्रमत वृथाहीं ॥
मुख तौ खोल सुनहुँ तुव बानी * कैसी कहति परै कछु जानी ॥
कहा कहत मोसों तुम आली * मन मेरो लीनो वनमाली ॥
तबते मोको कछु न सुहाइ * जित देखौं तित कुँवर कन्हाइ ॥
अबलौं नहि जानत मैं कोही * कहा कहत है अवनै मोही ॥
कहा गेहको पितु अरु माता * कह दुर्जनको गुरुजन भ्राता ॥
कहा लाज कह कान वडाई * तू कह कहत कहाते आइ ॥

दो०–वार वार तू कहत कह, मैं नहिं समुझत बात ॥

---

१ हे हृदय छी २ छिपाकर ३ सांप

मेरे मनमें घर कियो, वा यशुमतिके तातें ॥
सो०-रहत न मेरी आन, अपनी सों मैं करथकी ॥
तूलो बड़ी सुजान, कहा देत सखि दोष मोहिं ॥
मेरे हाथ नहीं मन मेरो * सुनै कौन सखि सिखवन तेरो ॥
इन्द्रियगण मनकी अनुगामी * सब इन्द्रिनको मन यह स्वामी ॥
सो मन हरिलीनो मननाथा * इन्द्रिय गईं सबै मन साथा ॥
अब मेरे वशमें कोउ नाहीं * रही जाय सब हरिके पाहीं ॥
नयन दरशके लोभ लुभाने * श्रवणै शब्दके माहि समाने ॥
अब ये फिरत न मेरे फेरे * कहा होत सिखये सखि तेरे ॥
मेरे हाथ हाथमें नाहीं * कौन करै घूँघुट परछाहीं ॥
अबतौ प्रकट भइ जग जानी * वा मोहनके हाथ बिकानी ॥
मन मान्यो मोहनसों मेरो * जग उपहाँस करै बहु तेरो ॥
मेरे मन अब बसो कन्हाई * मैं लघुँता के होडु बड़ाई ॥
मैं अपनो मन हरिसों जोन्यो * नाच कछ्यो तब घूँघुट छोन्यो ॥
अब तो मेरे मन यह मानी * मिलौं श्यामसों ज्यों पैयपानी ॥
दो०-मेरो मन हरि सँग बसो, लोकलाज कुलत्याग ॥
और ताहि सूझे नहीं, भो जहाजको काग ॥
सो०-ऐसे सखिहि सुनाय, मौन गही पुनि नागरी ॥
देहदशा बिसराय, मगन भई रस श्यामके ॥
जाय पन्यो मन वाही ख्यालहिं * बोल उठी कोउ लेहु गोपालहिं ॥
कहत सखीसों तू वो आली * कहँ वह दधिदानी बनमाली ॥
नन्दमदन सखि मोहि बताओ * नन्दनँदन प्रिय वेगि मिलाओ ॥

१ प्यारेने २ कान ३ हसा ४ छोगापन ५ दूध

विरहविवश अति व्याकुल बाला * मन हरि लीनो नंदके लाला ॥
दधिमटुकी लीने शिर डोलै * द्वारे आय नन्दके बोलै ॥
इत उत जाय तहीं फिरि आवै * लेहु कान्ह दधि टेरि सुनावै ॥
भ्रम भ्रम विवश भई सब ग्वाली * चलीं बनहिं खोजन बनमाली ॥
वशीवट यमुनातट धाई * कहत दान दधि लेहु कन्हाई ॥
फिरत विकल वन वन दधि लीन्हे * तन मन हरिको अर्पण कीन्हे ॥
दीन्हो दिनकर प्रेम प्रकाशा * लोकलाज डर तमकर नाशा ॥
तनुकी दशा वरणि नहिं जाइ * रोम रोममें रहे कन्हाइ ॥
प्रेम अधिक ब्रजगोपकुमारी * गावत वेद पुराण पुकारी ॥

दो०–कृष्ण राधिकाके चरित, अति पवित्र सुखखान ॥
कहत सुनत भवभयहरण, रसिक जननके प्राण ॥

सो०–रसिकशिरोमणि राय, गोपीजन मनके हरण ॥
कहो सु अब सुख दाय, रसलीला जो ब्रज करी ॥

देखि दशा राधाकी ग्वाली * शिक्षा करति हती जो आली ॥
चकित रही मनमाझ विचारी * या शिर श्याम ठगौरी डारी ॥
गइ सखी सो हरि पै धाइ * कहइ सुनहु प्रभु कुँवर कन्हाई ॥
ढूँढति फिरति तुम्हैं इकनारी * अति सुन्दरी नवल सुकुमारी ॥
पहिरे नीलाम्बर अति सोहै * मुखद्युति चन्द्र निरखि मन मोहै ॥
प्रातहिंते लीने दधि डोलै * लेहु गोपाल वदनत बोलै ॥
भ्रमत भ्रमत अति विकल भई है * वंशीवटकी ओर गईहै ॥
मन वच कर्म जान मै पाई * तुममें वाको प्राण कन्हाइ ॥
ताहि मिलो कबहूँ सुखदाइ * कहत सखी करिकै चतुराई ॥
तुम बिन विरह विकल अति बाला * मिलहु वेगि ताको नँदलाला ॥

१ सूर्य २ अन्धकारका ३ संसार

सुनत श्याम मन हर्ष बढ़ायो * साँची प्रीति जानि सुख पायो ॥
हरि हँसि विदा सखीको कीन्हों * आप दरश प्यारीको दीन्हों ॥
दो०-परमहर्ष दोऊ मिले, राधा नन्दकुमार ॥
कुंज सदन मोहति मनो, तनु धरि छवि शृंगार ॥
सो०-श्यामा अरु घनश्याम, कोटि कामरतिद्युतिहरण ॥
ब्रजवासी उर धाम, युगुल किशोर बसो सदा ॥
सोहत कुंज कुटी सुखरासी * पिय घनश्यामवाम चपलासी ॥
विरह तापतनु दूर निवारी * बोली मोहनसों तव प्यारी ॥
कहा कहौं तुमसों सुन्दरघन * कहत लजात वानै मनहीं मन ॥
होत चवाव सकल ब्रजमाहीं * सुनत श्रवण सहि जात सुनाहीं ॥
जा दिन तुम गैया दुहि दीनी * हाहा करि दुहनी मैं लीनी ॥
सहजगही बहियाँ तुम मेरी * मैं हँसि तनक बदनै तन हेरी ॥
तादिनते गृह मारग जित जित * करत चवाव सकल ब्रजजननित ॥
यहै कहै ब्रजमें सब कोऊ * राधा कृष्ण एक है दोऊ ॥
यह सुनि घर गुरुजन दुख पावैं * कटुक वचन कहि त्रास दिखावैं ॥
निकसत द्वार जबहि तुम आई * रहत सबै तब घेरि लुगाई ॥
निंदत तुमको मोहिं सुनाइ * सो मोपै हरि सह्यो न जाई ॥
कहत मनहिं सबको तजि दीजै * इनबिमुखनको सग न कीजै ॥
दो०-धक धकते नर नारि हरि, जिन्हैं न तुमपदप्रेम ॥
हित हरि तुम जाने नहीं, कहा निबाहे नेम ॥
सो०-मैं लीन्हों दृढ नेम, सुनहु श्याम सुन्दर सुखद ॥
तुम पदपकज प्रेम, यहै पतिव्रत पारिहौं ॥

१चमक २बिजलीसी ३स्त्री, गोपी ४कान ५मुख ६कड़वा ७चरणकमल

हरि तुम बिन यह कासों कहिये * मज बस काके बोलन सहिये ॥
तातें विनय करति तुम पाहीं * वायेंडे तुम आवहु नाहीं ॥
जो आवो तो मुहिं न जनावो * मुरलीधुनि मोको न सुनावो ॥
मुरलीधुनि सुनि सुनहु कन्हाई * बिन देखे मुहिं रह्यौ न जाई ॥
प्रेमाकुल सुनि प्रियकी बानी * बोले विहँसि श्याम सुखदानी ॥
साँच कहत मजके नरनारी * तुमते बहु मोते नहि न्यारी ॥
कहन देहु गुरुजन कह जाने * वे अपने सब सुरत भुलाने ॥
प्रकृति पुरुष एकै हम दोऊ * तुम मोते कछु भिन्न न कोऊ ॥
उभय देह लीला हित ठानी * घटहे भेद नहीं कछु पानी ॥
जल थल जहाँ तहाँ तनु धारों * तुम तज कहूँ रहत नहिं न्यारों ॥
देह धरेको यहै विचारा * मानिय कुल कुटुम्ब व्योहारा ॥
लोकलाज गृह छाँडि न दीजै * मात पिता गुरुजन डर कीजै ॥

दो०-प्रीति पुरातन राखि उर, जाहु प्रिया अब धाम ॥
प्रगट न कीजै बात यह, कहत विहँसिके श्याम ॥

सो०-सुन श्यामके बैन, हर्ष भई मन नागरी ॥
भयो हिये अति चैन, प्रीति पुरातन जानि जिय ॥

अति आनँद भई मन प्यारी * तब जान्यो हरि पति में नारी ॥
भूलि गइ काहे पछितानी * यह महिमा हरिकी जिय जानी ॥
युग युग प्रभुलीला विस्तारी * जान लई वृषभानुदुलारी ॥
हरि मुख अर्पै चिते मुसकानी * रही परम आनँद उर मानी ॥
कहत सुनहु प्रिय अन्तर्यामी * तुम कर्त्ता हो जगके स्वामी ॥
मात पिता गुरुजन हित भाइ * कहा नाथ यह नइ सगाइ ॥
जो कर्त्ता औरै सुनि पाऊ * तौहौं प्रभु तिनको पतियाऊँ ॥

१ बड़े लोग २ घर ३ थोड़ा

अरु परतीत जगतकी नानौ * तौ परमित छूटत टर मानौ ॥
जो जाको सो तेहिको जानै * वैसे औरनको मन मानै ॥
अब नहि तजौं कमल पद पासा * मन मधुकर कीनो जब वासा ॥
यह सुनि हरि प्यारी उरलाई * बहुविधि करि प्रबोधि समुझाइ ॥
तनु धरि लोक वेदविधि कीज * प्रीति रीति उनमें धरि लीजै ॥

दो०–कहत श्याम अब जाहु घर तुमको भई अबार ॥
प्रीति पुरातन गोप उर, करिये जग व्यवहार ॥

सो०–परम प्रम उरलाय, घर पठइ हरि भावती ॥
चली सग सुख पाय, फिर फिर चितवत श्यामतन ॥

चली सग सुख लूट किशोरा * लसत अग मरगैनी पैंठोरा ॥
गैंनगति जाति भवन सुखपाई * रहे रागि छवि निरखि कन्हाइ ।
प्यारा मन आनद बढाये * सुख भर चली लटसी पाये ॥
मनहिं कहत अति उमँग उछाहू * यह धन प्रगट करौं नहिं काहू ॥
सखियनहूँ नहिं भेद जनाऊं * कृष्ण प्रेमधन गुप्त दुराऊँ ॥
श्याम कह्यो सोई उर धरिहौं * प्रीति पुरातन प्रगट न करिहौं ॥
एसे मनहिं विचारति जाहीं * तहँ इकसखी मिली मगमाहीं ।
अग अग छवि लखि मुसकानी * कहति विहसि प्यारीसों वानी ॥
कह फूलीसा आवति राधा * आन रूप कछु अग अगाधा ॥
वदन सिकोरति मोरति भौह * वहात कछू मनहा मन मोहैं ॥
देखियत कछू अगरस भीने * सुलभ मनारथ हरिसँग कीने ॥
हमसों सो सब बात उघारो * दुरैत न गथ दुरावन हारो ॥

दो०–फिरतहती व्याकुल अबहिं, निरख दरशन लाग ॥
कहाँ मिले नँदनन्द सो, धनि धनि तेरो भाग ॥

१ भौंरा २ ज्ञान ३ रगीन ४ साग ५ हाथीकी चाल ६ छुपती ह

सो०–नहिं पावतहैं जाहि, योगीजन जप तप किये ॥
यदा करि पायो ताहि, तैं कैसे कहु नागरी ॥

कहा कहति सरि भई बावरी * करन कछू चाहत चवावरी ॥
तू हँसि कहत सुने जो कोऊ * सो तो साचि मानिहै सोऊ ॥
चकित होति सुनि अचरज तेरो * है चवाव पुनि घर बहु मेरो ॥
ऐसे होय कहति तू जैसे * गुरुनैनमें निवहों पुनि कैसे ॥
कहा भेद कछु तोसों मोसों * मैं दुराव करिहों सखि तोसों ॥
कौनंद नन्द कहति तू जिनको * मैं कबहू देख्यो नहिं तिनको ॥
के गोरे के बरण साँवरे * रहत ब्रजहिं वै अनत गाँवरे ॥
मैंतो नहिं जानति वे जैसे * तू बहु बात मिलावति वैसे ॥
जाहि चली जानी मैं तोको * कहा भुरावतिहै तू मोको ॥
अबहीं फिरति हती बौराई * आजहि पढिलीनी चतुराई ॥
याही ब्रज हम तुम अरु कोऊ * दूर नहीं जोहैं बहु कोऊ ॥
परिहौ कबहू फंद हमारे * करिहैं तबहिं जुहारे तुम्हारे ॥

दो०–निपुन भई उनके मिले, वह सुधि गई भुलाय ॥
आवतिहै बन कुंजते, बातैं कहति बनाय ॥

सो०–रीझे श्याम सुजान, कहे देति अँगकी पुलक ॥
मोसो करत सयान, सगिबगि रही सनेह जल ॥

हँसत कहत कैधौं सत बानी * तेरीसों मैं बहु अनजानी ॥
कह्यो कहा मुहि बहुरि सुनावै * सोहैं सौंहै मेरी जु दुरावै ॥
कबहूँ कछू भाव यह पायो * तैं देख्यो कै किनहु सुनायो ॥
ऐसी कहत और नो कोऊ * सुनती मोपै उतर न सोऊ ॥
बूझत मोहि लगावत ताही * सपनेहूँ देख्यो नहिं आही ॥

१ बड़े लोगोंमें २ प्रणाम ३ होशियार ४ भीनी हुई

ऐसी मोहिं कही जिनकोई * झूठी बातनि पर दुख होई ॥
उघराये पैहै कछु मोसों * बहुरि नहीं बोलोंगी तोसों ॥
तोते और काहि हित पैहौ * जाते हितकी बात जनैहौ ॥
यह परतीत न तोको होई * मैं राखति तोते कछु गोई ॥
चतुर सखी मनमें जब जानी * मोतें तौ कछु नाहिं छिपानी ॥
त्रास भई याके मनमाहीं * ताते बात कहति यह नाहीं ॥
तव यह कही हँसत मैं तोसों * जिन मनमें दुख माने मोसों ॥

दो०–मानी मेरी बात अब, कहँ तू कहँ वे श्याम ॥
हमहूँ उन्हें जाने नहीं, बसत कौन घों गाम ॥

सो०–हम आगेको आइ, भई सयानी लाड़िली ॥
हँसत कह्यो घर जाइ, तैंनहिं हरि कबहूं लखे ॥

सकुच सहित वृषभानुदुलारी * गई सदन गुरुजन डर मारी ॥
जननी कहत कहाँ हति प्यारी * डोलति फिरति अजहुँ है बारी ॥
घर तुहिं तनक देखियत नाहीं * दधिलै जात फिरत बनमाहीं ॥
श्याम संग बैठति है जाई * आज तोहिं धिरवैत हो माई ॥
काहेको उपहास करावति * दधिहि बेच मुखे किन आवति ॥
वृथा करति मैया रिस मोसों * को अब बात कहैरी तोसों ॥
ऐसी को बहिगई विधाता * श्याम संग फिरिहैं सुनु माता ॥
कौने बात कही यह तोसों * ताको नाम लेहि किन मोसों ॥
धन्य आज धनि धनि तू माई * ऐसी बात कहति सुधि लाई ॥
तू पर घर क्षण क्षण कित जाई * मैं बरजति नहिं नेकु डराई ॥
श्यामा श्याम सकल ब्रजमाहीं * है रहे लाज लगति तुहि नाहीं ॥

१ छिपी. २ डर. ३ देखें. ४ धमकानाथा. ५ हँसी.

बड़े महरिकी सुता कहावति * काहेको पितु मात. लजावति ॥

दो०–खेलनको मै जाउँ नहिं, कहा कहति री मात ॥
मोपै जात सही नहिं, यहै अनोखी बात ॥

सो०–घर घर खेलन जात, गोपनकी सब लरकिनी ॥
तू मोहीं रिसयात, तिनके मात पिता नहीं ॥

मनहीं मन समझति महतारी * अवही तो मेरी है बारी ॥
कहा भयो तनु बाढ़ भई है * लड़काई अबही न गई है ॥
झूठहिं बात उड़ी यह सारी * श्यामा श्याम कहत नर नारी ॥
खेलत देखि कहत सब कोऊ * अजहीं तो बालक हैं दोऊ ॥
सुनत सुतामुख रिसकी बानी * मनही मन कीरति मुसक्यानी ॥
तब गहि उर लाई चुचकारी * परबोधति उरसों रिसटारी ॥
खेलहु संग लरिकिनिन माहीं * खेलनको मै बरजत नाहीं ॥
श्याम संग सुनि होत दुखारी * झूठहिं लोग लगावत गारी ॥
जाते कुलको दूषण होई * सुनि प्यारी कीजै नहिं सोई ॥
अब राधा तू भई सयानी * मेरी सीख लेहि जिय मानी ॥
जननीके मुखकी सुनि बानी * श्रीवृषभानुसुता मुसकानी ॥
मन मन विनय करत हरि पाहीं * सुनहु श्याम तुम सब घटमाहीं ॥

दो०–मात पिता मानत मनहिं, लोकलाज कुलकान ॥
नहिं जानत तुमको सुखद, जगत ईश भगवान ॥

सो०–लेत तुम्हारो नाम, सकुचति हौं इनके निकट ॥
यह समुझत पछताव, तुम विमुखनमे क्यो रहौं ॥

तुम मोहिं कह्यो कानि कुल राख्यो * क्यों विष खाय सुँधा जिन चाख्यो

१ छोरी २ समझातीहै ३ माताके ४ अमृत

जिन्हैं नाथ तुम पद दृढ प्रमा * वैसे तिनसों निवहत नेमा ॥
अहो श्याम मैं मन क्रम बानी * नाथ तिहारे हाथ बिकानी ॥
ऐसे कृष्ण हृदयमें आनी * बोली जननीसों हँसि बानी ॥
तू अब कहति कहा मोकोरी * अकथ बात है माँ कछु तोरी ॥
अब हरि संग न खेलों जाई * जा कारण तू मोहिं सुगाई ॥
आवनदे बाबा घर माहीं * यह सब बात कहों उन पाहीं ॥
देति गारि मोहिं श्याम लगाई * ऐसे लायक भये कन्हाई ॥
रोकी मोको कान्हि गलीमें * सखिन संगमें जाति चली मैं ॥
लागे कहन बँसुरिया मेरी * तू लै गई चुराय सो देरी ॥
छटि आठ मोसों है जिनसों * मोहिं लगावतिहै तू तिनसों ॥
सुन सुन कर राधाकी बानी * मुख निरखत जननी मुसकानी ॥

दो०–कहति मनहिं मन अबहिंलौं, नहीं गई लरिकाय ॥
बारेहीके ढँग सबै, अपनी टेक चलाय ॥

सो०–अब जैहै मचलाय, कापै जाय मनाय पुनि ॥
हारि मानि रहि माय, बालक बुधि जिय जानिकै ॥

बोलि लई हँसिकै दुलराई * पुनि पुनि कहि मेरी रिसहाई ॥
कंठ लगाय लई अति हितसों * रही चकित शोभा लखि चितसों
चतुर शिरोमणि हरिकी प्यारी * परम चतुर वृषभानुदुलारी ॥
बातनहीं माता बहराई * नीके राखि लई चतुराई ॥
कृष्ण प्रेम धन पाय छिपायो * संगहूँ सखी तिन न जनायो ॥
जैसे कृपण महा धन पावै * धरत दुराय न प्रगट जनावै ॥
सखी मिली जो मारगमाहीं * कह्यो जायतिन सखियन पाहीं॥
सुनहु सखी राधाकी बातैं * कैसी आज करी उन घातैं ॥

१ प्यारहिया २ सूम ३ छिपाकर.

वृन्दावनते अबही आइ * रूप सहित मैं लखि मँग पाई ॥
औरै भाव अंग छविछाइ * श्यामहि मिली भई मन भाइ ॥
मोको देखतही हँसि दीनो * मैंहू हर्ष मनहिं मन कीनो ॥
जब मैं कही मिले हरि तोसों * तब रिस करि फेऱ्यो मुख मोसों॥

दो०–मोसों तब लागी कहन, को हरि काको नाव ॥
कै गोरे कै साँवरे, बसत कौनसे गाँव ॥

सो०–मैं तो जानत नाहिं, लेत नाम तू कौनको ॥
लखे न सपनेहुँ माहिं, साँच कहति कै हँसति मुहिं ॥

ऐसे कहि टेढी करि भौंहैं * चितइ नेकु न मोतन सोहैं ॥
वह निधरक मैं सकुच गईरी * और कहौं तो करत खईरी ॥
तब मैं यह कहि घर पठईरी * मैं झूँठी तू साँच भईरी ॥
दोऊ एक भये अब आई * हमहूँसों यह बात दुराई ॥
घर धौं जाय कहा अब कैहै * कैसी धौं तह बुधि उपजैहै ॥
सुनिकै बात सखी मुसुकानी * प्यारिहि देखनको अतुरानी ॥
कहत सबै जबहा मम जैहैं * तबहीं जाय प्रगट करिदैहैं ॥
कहा रहै यह बात छिपानी * दूध दूध पानी सो पानी ॥
आँखिन देखतही लखि जैहै * कैसे हमसों बात छिपैहै ॥
अपनो भेद नहीं वह कैहै * सुनिहौ कैसे गाए बजैहै ॥
लखहु चरित्र नाल तुम वाको * राधा कुँवरि नाम है जाको ॥
मैं बूझ्यो करि बहु चतुराई * नेकहु थाह न वाकी पाई ॥

दो०–बडे गुरूकी बुद्धि पढ़ि, कहूँ नहीं पतियात ॥
एकौ बात न मानिहै, सौ सौ सौहैं खात ॥

---

१ रासेतें २ छिपाई

सो०–रहिहैं सब पछिताय, सुनत वचन वाके वदन ॥
अब जैहे रिसियाय, बातन वैर बढ़ाइहौ ॥

कहा बैर हमसों वह करिहै * बातन कैसे हमहिं निदरिहै ॥
औरनसों जो करती टारी * तो हमहूँ जानती सयारी ॥
वाकी जाति भले हम पाई * हमहीसों यह बात चुराई ॥
परिहै जब मेरे फँद आई * दूरि करौं वाकी लँगराई ॥
जो नहि हमसन भेद कहैगी * तो पुनि कैसेकै निवहैगी ॥
हमसों बैर किये कह पैहै * बहुरि लिये मटकी शिर ऐहै ॥
चलौ सवै देखें घर ताको * है निधरक कैधौं डर वाको ॥
बूझे बात कहा धौं कैहे * हमसों मिलिहै कै टैरिजैहै ॥
रिस करि है कैधौं हँसि बोले * बात छिपावै कैधौं खोले ॥
सहज स्वभाव किधौं गरवानी * यह कहि चलीं अँली सब स्यानी
गईं निकट राधाके जबहीं * जान गई नागरि मन तबहीं ॥
ये सब मोपर रिस करि आईं * तब इक मनमें बुद्धि उपाई ॥

दो०–काहूको कीनो नहीं, आदर करि चतुराइ ॥
मौन गही बोलत नहीं, बैठि गई निठुराइ ॥

सो०–लखि सब सखी सुजान, बैठि गईं ढिंग आपई ॥
औरै बात बखान, आपसमें लागीं करन ॥

राधा चतुर चतुर सब आली * चतुर चतुरकी भेंट निराली ॥
उन तौ गही मौन निठुराई * इन लखि लई तासु चतुराई ॥
मुहां चहीं आपसमें कीन्हीं * याकी बात सवै हम चीन्हीं ॥
कहा भेद हमसों यह भापै * उलटे हमही पर रिस राखै ॥

१ मुख. २ ढिठाई. ३ छिपकायगी. ४ सखी. ५ सखियां.

बूझहु याहि खुंनट करि कोई * कहा आन इन मौन ल्योइ ॥
हमसों कहा ओट इन लीन्ही * साट सई हम ही वर दीन्ही ॥
एक सखी तब विहसि सुनायो * कहौ मौन मत किन सिखरायो॥
धनि वह गुरू मन्त्र जिन दीन्हों * कान लगतही ऐसो कीन्हों ॥
काल्हि और परभातहिं औरै * अवहिं भई कछु और कि औरै ॥
सुनि यह बात सबै हम धाई * चकित भई देखन तोहिं आई ॥
कहा मौनको फल अब कहिये * सुनें कछू तो हम हूँ गहिये ॥
इक सँग सबै भई तरुणाई * मन्त्र लियो तब हम न बुलाई ॥

दो०-अब तुमहींको हम करें, गुरू देहु उपदेश ॥
हमहूँ राख मौनें व्रत, करें तुम्हें आदेश ॥

सो०-हमको कियो अजान, चतुर भई तू लाडिली ॥
कह सीख्यो यह ज्ञान, एसी विधि लागी करन ॥

रहत एक सग हम तुम प्यारी * आजहि चटक भई तू न्यारी ॥
कहा भयो तोहि किनहि सिखाई * नई रीति यह कहा चलाई ॥
हम तो तेरे हितकी फरिहै * और कहै तासों सब लरिहै ॥
सुनत कुवरि सखियनकी बानी * बोली करत सबै यह जानी ॥
गुणागारि नागरा सयानी * बोली सहित निठुराई बानी ॥
तुम प्रीतम के बैरिनि मेरी * बूझति तुम्हैं कहो सखि हेरी ॥
बाको कहति जुगैल मिलीरी * नहीं कही उन मोहिं मलीरी ॥
कह्यो मोहिं तुम स्याम मिलेरा * मैं चकरही सोंह मोहिं तेरा ॥
मेरे अगछबि और बताई * तब मैं भइ बहुत दुखदाई ॥
जिनको मैं सपने नहिं जानो * फिरि फिरि तिनकी बात बखानो ॥
मेरो कछु दुराव है तुममों * तुमहीं कयौं सखी सब हमसों ॥

१ छोड़कर २ चुप ३ पायदकी ४ युगके घर ५ होशयार ६ छिपाव

कहाँ रहति मैं कहाँ कन्हाई * घर घर करत चवाव लुगाई ॥
दो०-और कहे तो मोहिं कछु, नहिं व्यापहि मनमाहिं ॥
तुमहीं कहौ जो बात यह, तौ दुख होय कि नाहिं ॥
सो०-तुमपर रिस मो गात, ताते आदर नहिं कियो ॥
सुन प्यारीकी बात, रहीं सबै मुखतन चितै ॥
बोली एक सखी तिनमाहीं * हम तौ तोहिं कह्यो कछु नाहीं॥
ताही पर होती रिस आई * जिन यह तोसों बात चलाई ॥
प्रथमहिं हमैं प्रकट यह करती * हमहूँ ताहीसों नव[1] लरती ॥
क्यों सखि प्यारिय दोष लगावै * झूठी बातन बैर बढावै ॥
तेरे श्याम कहाँ इन देखे * काहेको सपने हूँ पेखे ॥
भेदहिं भेद कहत सब बातैं * दैदै सैन करत सब घातैं ॥
प्यारी सबके मनकी जानै * सबसों रूखे वचन बखानै ॥
कौन कौन को मुख सखि गहिये * जाको जो भावै सो कहिये ॥
मनते गढ़ि गढ़ि बात बनावै * झूँठीको साँची ठहरावै ॥
बिना भीतही चित्रित केरो * बातन गढ़ि आकाशहि फेरो ॥
नेक होय तौ सबहीं सहिये * झूठी सबै सुनत उर दहिये ॥
आवत बोल न सुनि सुनि बातें * रहियत मौनें सबनते तातें ॥
दो०-वृथा झेर[2] मोसों करत, कहि कहि झूठी बात ॥
भलो नहीं उपहासै यह, मैं सकुचत दिन रात ॥
सो०-मिलै सखी जो श्याम, और कहा याते भली ॥
सुनियतहै अभिराम[3], नन्द महरको सुवन[4] अति ॥

१ नुप. २ हंसी. ३ सुंदर. ४ पुत्र.

कैसेहैं वे कुंवर कन्हाई * जिनको नाम लेत यह माई ॥
नयनन भरि मैं देखे नाहीं * सुनियत सदा रहत मनमाहीं ॥
कहति लजाति बात इक तुमको * इक दिन मोहिं दिखावहु उनको॥
देखहूँ धौं कैसेहैं तिनको * तुम सब मोहिं कहति हौ जिनको
सुनि वृषभानुसुताकी बानी * हँसी सबै गोपिका सयानी ॥
सुनु प्यारी तै सीख हमारी * कहन देहि कटि वरै कहारी ॥
तोको झूठ न है कहु पैहै * आपन को बे पाप कमैहैं ॥
यह काहू पै जात छपायो * नेक सुगन्ध न दुरत दुरायो ॥
तैं काहेको कान्हहि देख्यो * खरक दुहावनहूँ नहिं पेख्यो ॥
सुनहु सखी राधाकी बानी * कहत कछु यह अकथ कहानी ॥
रहति सदा ब्रज गावमझारी * इन नहिं देखेरी गिरिधारी ॥
जो हम सुनी रही सो नाहीं * ऐसेहि बातुं बही ब्रजमाहीं ॥

दो०–सुनु प्यारी अब तोहिं हम, दिखेरैहैं नँदनन्द ॥
तब वदिहैं यह राखिहौ, देखि उन्हैं छलछन्द ॥

सो०–जब ऐहैं इत श्याम, तब हम तोहिं बतायहैं ॥
ताहि देखिहैं बाम, है उनहूँ अभिलाष अति ॥

तब तू चीन्ह लीजियो उनको * कहति नहीं देखे मैं जिनको ॥
हैं कैसे कारे कै गोरे * सुन्दर चतुर किधौं अति भोरे ॥
तोहिं देखि ओऊ मुख पैहैं * तेरे हित बाँसुरी बजैहैं ॥
नाना भाव करैंगे जबहीं * हम सब तोहिं कहैंगी तबहीं ॥
तुमहीं चतुर राधिका जैसे * नेक श्याम चतुरहैं वैसे ॥
हँसति कहति सब गोपकिशोरी * चिरजीवहु यह सुन्दर जोरी ॥
कबहूँ तौ फँद परिहौ आई * तबहीं देहिं निन्दाय कन्हाई ॥

१ हवा २ इच्छा

सुनत व्यंग सखियनकी बानी * मन मन विहँसन कुँवरि सयानी॥
चतुराई नीके गहि राखी * सखियनसों हँसि ऐसे भाखी ॥
जो तुम जियमें औरै जानी * मेरी बात प्रतीत न मानी ॥
जो अब मोहिं श्याम सँग पावो * तब कीजो अपनो मन भावो ॥
कान्ह पीतपट बेसरै मेरी * लीजो छोरि तबहिं गहिएरी ॥

दो०–यह सुनिकै सब हँसि उठीं, प्यारी वदन निहारि ॥
आईंही अति गर्व करि, चलीं सखी घर हारि ॥

सो०–कहति परस्पर जात, निडर भई अति राधिका ॥
कबहूँ तौ हम घात, परिहैं दोऊ आयकै ॥

बीसहु दिन जो चोर चोरैहै * साहहु पकरि कहू दिन पैहै ॥
बोली एक सखी तब तिनसों * भेद लियो चाहति तुम उनसों ॥
दूर धरो मनतें यह भाई * बैठि रहो अपने घर जाई ॥
अति बड़ बोल गई कह कीन्हों * कैसी निठुर भई कछु चीन्हों ॥
वह नहिं फन्द तुम्हारे आवै * छन्द बन्द वाके को पावै ॥
वह सबदिनमें बड़ी सयानी * मेरी बात लेहु तुम मानी ॥
बोली अपर सखी सुन मोसों * लीक खैंचि भाषत मैं तोसों ॥
फेर फार देखो हम घरिहैं * ऐसे कैसे हमहिं निदरिहैं ॥
अवतो भेद कियोहै प्यारी * हमहूँ को यह रिस है भारी ॥
तबलगि मनमें धीर न लैहैं * जबलग चोरी पकरि न पैहैं ॥
निशि वासर अब हम सब कोऊ * श्यामा श्याम देखिहैं दोऊ ॥
ताही दिन तिनसों हम लरिहैं * जा दिन नीके पकरि निदरिहैं ॥

दो०–सब ब्रज गोपिनके बसी, बात यहै मन आन ॥
हरि-राधा दोऊ मिलैं, निशि वासर यह ध्यान ॥

१ टेढी. २ यकीन. ३ नाकका गहना. ४ दूसरी.

सो०–सबहिन मुख यह बात, और कछू चरचा नही ॥
नन्दमहरको तात, सुता महर वृषभानुकी ॥

यहै चवाव करति सब गोपी * हमसों बात राधिका लोपी ॥
लरिकाइते हम सब जाने * की ही प्रीति श्यामसों याने ॥
तब सतभाव न हती झुठाई * अब हरिसग सिखी चतुराई ॥
आन मौन धरि कियो दुराऊ * सदा होत किहिभाँति बचाऊ ॥
दिन द्वैचार और अब टारो * रहौ स्वभाव शोर जनि पारो ॥
करन देहु इनको लँगराई * आपुहि बात प्रगट ह्वै जाई ॥
तब इक सखी कही यों बानी * कहा कहत तुम बात अयानी ॥
तुमजु कहति यह जानति नाहीं * है हम सब वाके नखमाहीं ॥
सात बरसते प्रीति लगाई * तुमतो आज जानि है पाई ॥
वाकी चतुराई किन जानी * मीन कबहिंधौ पीवत पानी ॥
हरिके ढँग सीखी सब वोऊ * है बारह बानी वै दोऊ ॥
देखहु कालिह केहु पतियानी * फिरि आई हम सब खिसियानी॥

दो०–ऐसे सब ब्रजसुन्दरी, मिलिकै करति चवाव ॥
राधा हरि उरमे बसे, और न बात सुहाव ॥

सो०–यह रस जान अनूप, ब्रजवासी प्रभु प्रेमको ॥
करिकै कृष्ण स्वरूप, होय रहीं ब्रजकी तरुणी ॥

श्रीराधा प्रातहिं तहँ आई * जहाँ जुरी सब सखिन अथाई ॥
आवतलखि सब रहीं चुपाई * देखत वदन गई सकुचाई ॥
करति हुती उनहींकी बातें * सकुच गई तरुणी सब तातें ॥
अति आदर करिकै बैठारी * कही कहाँ तू आई प्यारी ॥

१ बटी २ ढिटाई ३ ब्रजकी स्त्रियां ४ देखतेही

कहा हमारी सुधि तैं लीन्ही * बड़ी कृपा कछु हमपर कीन्ही ॥
मैं कह आज अनोखे आई * तुम जु करति आदर अधिकाई ॥
पहुनी करि करिये पहुनाई * मैंतो आवति जाति सदाई ॥
कैसी कहत बात तू प्यारी * बैठनको नहिं कहै कहारी ॥
तू आई करि कृपा हमारे * हमहूँ कहा मौन व्रत धारे ॥
तब हँसि बोली कुँवरि सयानी * करी तैंके मोसों तुम जानी ॥
तादिनको बदलो यह कीनो * मोसों दाँव आपनो लीनो ॥
यह सुनि हँसीं सकल व्रजनारी * कहन लगीं सब सुन्दरि प्यारी ॥

दो०–दाँव घात जानति तुमहिं, हमतौ शुद्ध स्वभाव ॥
तोहिं मान आई सदा, तैसे मानति भाव ॥

सो०–तुम राखी मन लाय, तादिन बात भई जु वह ॥
हम डारी बिसराय, मानलई तेरी कही ॥

चोर सबै चोरी करि जानै * ज्ञानी सब मन ज्ञानहिं मानै ॥
सुनि यह कुँवरि मनहि मुसकानी * कह्यो सखी यह साँच बखानी ॥
जैसी जाके मनमें होई * बात कहति मुख तैसी सोई ॥
मैं तो साँच कही तुम पाहीं * वैसे धौं हरि जानत नाहीं ॥
हरषि मलिन तब उरमों लाई * कहत कहा तू रिस भरि आई ॥
हँसति कहति तोसों हम प्यारी * तू मति मानै बिलग कहारी ॥
तुमही उलटी पुलटी भाषी * तुमहीं रिसैं करि उरमें राखीं ॥
तुमही हरिको नाम बखानी * तब मैं सुन्यो कछु तुम मानौ ॥
जब हरि सग मोहिं कहुँ लहियो * तब मन भावे सो कछु कहियो ॥
अब कैसेहुँ अलान चलौगी * कै मोसों कछु फेरि लरौगी ॥

१ वादविवाद २ गुस्सा.

वहै बात गठ बन्धन कीन्ही * नहिं भूलिहौ जानि मैं लीन्ही ॥
गहि गहि सबकी भुजा उठाई * चलहु न्हान कवकी मैं आई ॥
दो०-यहि विधि हास हुलास करि, सखिन संग सुकुमारी ॥
चली न्हान यमुना नदी, श्रीवृषभानुकुमारी ॥
सो०-सकल रूपकी रास, नव नागरि मृगलोचनी ॥
भरीं अनन्द हुलास, कृष्णप्रेममें एक मति ॥

अथ स्नानलीला ॥

चलीं यमुन सब नवलकिशोरी * कनेक वरण तनु कोमल गोरी ॥
करत परस्पर सब सुकुमारी * हास विलास कुतूहल भारी ॥
गईं यमुनतट गोपकुमारी * संग सोहति वृषभानुदुलारी ॥
देखि श्याम जलदहरि सुहाई * पैठीं सलिल न्हान अतुराई ॥
श्यामा सहित न्हात सब नारी * विहरत जलविहार सुखकारी ॥
कण्ठप्रमाण नीरमें ठाढ़ी * छिरकत जल अति आनँद बाढ़ी ॥
करति विविधविधि हास बिलासा * एक एक गहि करति हुलासा ॥
लैलै करसों नीर उछारें * निरखि परस्पर मुखपर डारें ॥
मानौ शशि सेना सजि आये * उरत जलज जल अस्त्र बनाये ॥
सुनि तहँ श्याम युवतिमनरंजन * आये कोटि काम द्युतिभंजन ॥
निरखत तट ठाढ़े छवि भारी * यमुनाजल विहरत ब्रजनारी ॥
कबहुँ मधुर कल वेणु बजावैं * नान्हे सुरनमाहिं कछु गावैं ॥
दो०-काछे नटवर भेषवर, चित्रित चन्दन अंग ॥
ठाढे उमँगि कदम्बतें, कीने अंग त्रिभंग ॥

१ वांह. २ समूह, ढेर. ३ सुवर्ण. ४ घुसीं. ५ पानीमें. ६ कमल. ७ चमक.

सो०–तव घन सुन्दर श्याम, प्रजतियमन चातकसुखद ॥
नख शिख अति अभिराम, ध्यान काम पूरण सकल ॥

पदनख इन्दु प्रभा प्रतिहारी * चरणकमल शीतल सुखकारी ॥
जानु जंघ अति सुभग सुहाई * करभ रम्भलखि रहत सदाई ॥
कटि पट पीत काछनी काछे * केसर कमलन पटतर आछे ॥
क्षुद्रावली कनकछवि छाई * नाभिगँभीर वरणि नहिं जाई ॥
मनहु मराल[५] बालकी धेनी[६] * सर समीप सोहति सुखदेनी ॥
बड़े बड़े मोतिनकी माला * बिच रोमावलि झलकि विशाला
मनहुँ गंग बिच यमुना आई * चली धार मिलि तीन सुहाई ॥
बाहुदण्ड दोउ तट कमनीया * चन्दन अंग रेत रमनीया ॥
बनमाला तरु तीर सुहाये * फूलि रहे पचरंग छवि छाये ॥
कम्बु[११] कण्ठ त्रय रेख सुहाई * तीनि भुवन शोभा जनु छाई ॥
चिबुक चारु गाढ़ो मन मोहै * मुख छवि सिन्धु भँवर जनु सोहै ॥
अधर दशन द्युति वरणि न जाई * तड़ितै विम्बै कहँ वह छवि छाई ॥

दो०–शुक नासा खंजन नयन, भ्रकुटि कामकोदंड ॥
मणिकुंडल रविछविहरत, सोहत शीश शिखंडै[१४] ॥

सो०–उपमा गईं लजाय, निरखि श्याम को रूपवर ॥
जहँ तहँ रहीं छिपाय, पटतरको पहुँची नहीं ॥

उपमा हरितन देखि लजानी * दुरी भूमि कोउ वन कोउ पानी ॥
कोटि मदन अपनो बलहारे * मुकुट रुचिर[१५] मग्न निहारे ॥

---

१ परीक्षा २ चन्द्रमाकी चमक ३ केला ४ तागड़ी ५ हंस ६ पांति ७ शंख ८ ठोढ़ी ९ होठ १० दांत ११ बिजली १२ बिंबफल १३ तोता १४ मोरपंख १५ भौंह

कुंडल निरखि भ्रमत रवि रहहीं * तपन हृदय क्षण धीर न गहहीं॥
अलक नासिका कर पद नयनन * अलि शुक कमल मीन खंजनगन
लखि सकुचाय रहत वनमाहीं * कहत हमैं कवि कहत वृथाहीं॥
दशन दमक दामिनी लजानी * क्षण प्रगटत क्षण रहत छिपानी॥
समुझत सधर अधर अरुणाई * विद्रुम बंधू बिम्ब लजाई॥
गगनैं रह्यो शशि वदन निहारी * घटत बढत नित शोचत भारी॥
चारुकंठ लखि अति सकुचानो * रहत शंख जलमाँझ छिपानो॥
बाहु देखि अहि विवर समाने * केहरि कटि लखि वनहिं पराने॥
गज गति गुलफ निरखि सरमाई * ऊंची आंख न सकत उठाई॥
निज इच्छा छबि हरि वपु धारी * दीनी पटतर मेटि मुरारी॥

दो०-अनुपम छवि कवि क्यों कहै, बिन उपमा आधार॥
ब्रजतिय मोहन मनहरण, सुन्दर नन्दकुमार॥

सो०-अधर मनोहर वेम, मन्द मन्द बाजत मधुर॥
उपजावत मन मैन, ब्रजसुन्दरि नव नागरिन॥

जलविहार करि गोपकिशोरी * निकरि चलीं तटको सब गोरी॥
जानु जंघ अललौं सब आई * चुवत नीर अचरन छवि छाई॥
परे दृष्टि मोहन तटमाहीं * ठाढ़े कदम विटपकी छाहीं॥
प्यारी निरखत रूप लुभानी * पंगु भई मति गति बहरानी॥
इतहि लाज सखियनकी आई * दरशन हानि न उत सहिजाई॥
मनहिं ज्ञान करि यह अनुमानी * लेहैं आज सखी सब जानी॥
जानि गई यह अली सयानी * जानि बूझि सब भई अयानी॥

१ नैरि. २ मछलिया. ३ बिजली. ४ मूगा. ५ गुलदुपहरिया. ६ देर. ७ आकाश. ८ सर्प. ९ सिंह.

बहुरी न्हान लगीं सब पानी * रहीं इतै करि आना कानी ॥
प्यारा कबहुँ श्याम तनु हेरैं * कबहू दृष्टि सखिनते फेरैं ॥
जानी सबै न्हात जलमाहा * मेरी दिशि चितवत कोउ नाहीं॥
तब मनमें यह बात विचारी * देखिलेहु अब छबि गिरिधारी ॥
यह दरसन कबधौं फिरि होइ * ललकि लगीं अँखियाँ हठि दोई॥

दो०–निरखति श्यामा श्याम छवि, पार निमेषन मोर ॥
नैन बदन शोभित मनो, द्वैशशि चारु चकोर ॥
सो०–करत मुदित दोउ पान, रूप माधुरी अमिय[1] रस ॥
तृप्त न क्यों हू मान, विवश भये मन दुहुँनके ॥

यद्यपि सकुच सखिनकी गाढी * तदपि रुकी न चितवन बाढी ॥
उमँगि गई सरितौ[2]की नाहीं * सन्मुख श्याम सिंधुके माहीं ॥
भरी सलिलै[3] अनुराग अथाहा * भवर मनोरथ लहर उछाहा ॥
कुलमयाद करार ढहाये * लोक सकुच तरु तीर बहाये ॥
धीरजनाव गही नहि जाई * रहे थकित पल पथिक डराई ॥
इकटक घोर अँखडित[4] धारा * मिली श्याम छबि सिंधु अपारा॥
कहति सखी सब आप समाहीं * नयन सैन दैदै मुसकाहीं ॥
देखहुरी प्यारी उत अटकी * ना जानिये कौन अँग लटकी ॥
वारिद इमहि कैसे निदरी है * मेरे चित्त अब खुग्त परीहै ॥
बात कहत मेलै मुख तुलसी * देखहु अब देखत किमि हुलसी ॥
सुन्दरि पियके रूप लुभानी * वे बातें अब सबहि भुलानी ॥
इकटक रही नैक नहिं मटकी * को जानै काहूके घटकी ॥

---

१ अमृत २ नदी ३ पानी ४ जिसके टूटइ न होनक

दो०-भई भाव भोरे कछु, देखतही सुखदाय ॥
चित्र पूतरीसी रही, देहदशा बिसराय ॥
सो०-उत वे रहे लुभाय, नागर नवलकिशोर वर ॥
प्यारी मुख दगलाय, नैन नहीं भटकत कहूँ ॥
औरैं भाव भई सखि प्यारी * बढ्यो प्रेम अकुर तेरु भारी ॥
गई तासु जर सप्तपताला * पहुँच्यो अतर शिखर विशाला ॥
वचनपत्र अवलोकन शाखा * सब जग छाँह छई अभिलाषा[३] ॥
गुणविधि सुमन सुगंधि निकाई * लगीजाइ आनद सुहाई ॥
पूरण आसन वनि भरभारा * फल लाग्यो वर नन्दकुमारा ॥
रहे रीझ तन मन धन वारैं * भँरस परस दोउ खूब निहारैं ॥
तब इक सखी कह्यो मुसकाई * प्यारी देखे कुँवर कन्हाई ॥
वेई हैं सुन्दर सुखदाई * जिनकी ब्रजमें होत बडाई ॥
हमैं कहतही मोहिं दिखावहु * देखिलेहु अब मन सुख पावहु ॥
बहुत लौलसाही मन तेरे * ताहीतें हरि आये नेरे ॥
पूजी आश दरश अब पाये * हमहीं इनको बोलि पठाये ॥
राखौ चीन्हि इन्हैं भवनीके * ये मनभावन हैं सबहीके ॥
दो०-भले शकुन आई इहाँ, भयो तुम्हारो काज ॥
अब कछु हमको देहुगी, मिले तुम्हें ब्रजराज ॥
सो०-भयो नागरिहि शोच, सुनि सुनि सखियनके वचन ॥
कहत करी मैं पोच, इन जानी अब बात सब ॥
मैं हरितन लखि रूप लुभानी * सोये देखि सबै मुसकानी ॥

१ वृक्ष २ आस पास ३ इच्छा

काल्हि कही इनसों मैं वैसे * देखी आज मोहिं इन ऐसे ॥
इन आगे मो बात नशानी * अब ये करत मोहि विनपानी ॥
मोहीं पर मेरी चतुराई * परी उलटि उँरअति सकुचाई ॥
कहत सखिनसों ज्वाब न आयो * तब मनमें हरि पियको ध्यायो ॥
अहो श्यामसुन्दर सुखदानी * मैं प्रभु तुम्हरे हाथ विकानी ॥
अब सहाय सुंदर तुम कीजै * मेरी बात नाथ रखलीजै ॥
ऐसो उत्तर देहु जनाई * जाते मेरी पैंति रहिजाई ॥
ऐसो हरिको सुमिरि सयानी * तबइकबात मनहिं मन ठानी ॥
उरमें भयो बुद्धि परकासा * तब कीन्हों मनमाहिं हुलासा ॥
सखिन कह्यो अब घर चल प्यारी * भई यमुनतट बहुत अबारी ॥
कबरी न्हान इहाँ हम आई * ऐसे कहि कहि सब पछिताई ॥

दो०–कियो दरश तुम श्यामको, घर चलिहौ कै नाहिं ॥
कीन्हि रहौ मिलियो बहुरि,यह कहि सब मुसकाहिं॥

सो०–तब सखियनके साथ, चली सदनको नागरी ॥
उरमे धरि ब्रजनाथ, प्रेममगन बोली नहीं ॥

हँसि बूझति इक गोपकुमारी * कहो श्याम कैसेहैं प्यारी ॥
मायेरी तेरे मनमाहीं * हैं सुन्दर कछु कैधौं नाहीं ॥
कै हमसो फिरि बात दुरैहो * कै अब मनकी साँच जनैहो ॥
हम बरणो जैसे तुहि पाहीं * बहु तैसे हरिहैं कै नाहीं ॥
कहति मनहि वृषभानुदुलारी * मेरे ख्याल परीं सब ग्वारी ॥
बातन बातन करति उघारो * ये चाहति अबहीं निरवारो ॥
मोहूँतें ये चतुर कहावै * मोको बातनमाँझ भुलावै ॥

१ हाथ २ हानी ३ इस्तन ४ प्रेम ५ घर ६ छिपावोगी

ऐसे इनसों बचन बखानो * इनको चातुरता गहि मानो ॥
मेरे शिर समरथ कन्हाई * वह करिहैं मोसों चतुराई ॥
प्यारी पियके गर्व गहेली * अङ्ग अङ्ग सुखपुज भरेली ॥
मन्द मन्द गति हस सुहाई * पगद्वै चलत ठठहि रहिजाई ॥
मगन श्यामरस मुख नहिं बोलै * धरैणी चरण नखन करि छोलै ॥

दो०–चितवत सूधे नेकनहिं, काहू तन अनखाय ॥
रही गर्व पिय श्यामके, गरबीली गरवाय ॥

सो०–सखिन कह्यो मुसकाय, क्यो प्यारी बोलत नहीं ॥
कै हमसो अनखाय, लियो मौनव्रत आज पुनि ॥

कै कछु बात कही नहिं जाई * कै तेरो मन हऱ्यो कन्हाई ॥
कबहुँ जान पहिचान न तेरी * देखतही दृग तिनहिं ढरेरी ॥
साँची बात कहो अब प्यारी * शोच पऱ्यो मन तोहिं कहारी ॥
कहा रहीही हरिहि निहारी * इकटक नैन निमेषै विसारी ॥
सुनि सुनि सब सखियनकी बानी * बोली हरि भावती सयानी ॥
कहा कहति तुम बात अलेखे * मोसों कहति श्याम तुम देखे ॥
मैं देखे कैधौं नहिं देखे * तुमतौ बार हजारकपेखे ॥
तुमहीं हरिको रूप बतावो * मो आगे सब कहि समुझावो ॥
कैसे वरण भेष है कैसे * अङ्ग अङ्ग बरणौ तुम तैसे ॥
तब इक सखी कह्यो मुसकाई * हमतौ ऐसे लखे कन्हाई ॥
छद वद कछु हमहि न आवै * साँची बात सबनको भावै ॥
देखे हम नदनन्दन जैसे * बरणि बतावहुँ तुमको तैसे ॥

दो०–श्याम सुभगतनु पीतपट, चँटकीलो द्युतिकारि ॥

१ जमीन २ पलक ३ चटकदार

शोभित घनै पर दामिनी, मन चपलई बिसारि ॥
सो०-मंद मंद मुसकात, गर्जत मुरली मधुर ध्वनि ॥
चितवत अरु मुसकात, बर्षत परमानंद जल ॥

विविध सुमैन दल उरमें माला * इंद्रधनुष मनु उदित विशाला ॥
मुक्तावली बीच मन मोहै * बाल मरौल पांति जनु सोहै ॥
अंग अंग छबि रूप सुहाई * कदम तरे ठाढे सुखदाई ॥
देखत मोहन वदन विभागा * उपजत है अँखियन अनुरागा ॥
लोचन नलिनै नये छबि छानै * तामधि पुतरा श्याम विराजै ॥
मनहु युगल अँलि भाग निवारे * पियत मुदित मकरंद सुखारे ॥
तामहँ चितवनमें जु सुहाई * गूढ भाव सूचित सुखदाई ॥
अधरबिम्ब जनु दाडिमदाना * शुँक नासिका देखि ललचाना ॥
भृकुटी धनुष तिलक शिरधारी * मानहुँ मदन करत रखवारी ॥
मोर चन्द्र शिर सुमन सुहाये * कामशरन मनु पक्ष लगाये ॥
गडत आनि युवतिन मनमाहीं * निकसन बहुरि निकासे नाहीं ॥
वारिनवदन मनोहर बानी * बोलन मनहुँ सुधारस सानी ॥

दो०-कुण्डल झलक कपोलछवि, श्रम सीकरके दाग ॥
मानहुँ मनसिजमकर मिलि, क्रीडत सुधातडाग ॥
सो०-भरे रूप रस राग, ऐसे शोभाके उँदधि ॥
बिन अँखियनको भाग, अवलोकत हरिको वदन ॥

अंग अंग सब छबिके जाला * हम देखे इहिभांति गोपाला ॥

१ बादल २ बिजली ३ फूल ४ हंस. ५ कमल ६ उसमें ७ भौंरे ८ होट ९ अनार १० तोता ११ समुद्र

कछु छल छिद्र नहीं हम जानैं * जो देखे सो साँच वखानैं ॥
साँचहि झूठ करै जो कोई * तो वह झूठ आपही होई ॥
हम इतननिमें नहीं दुराऊ * कहत यथारथ सब सतभाऊ ॥
यामें जो कोउ झूंठी मानैं * ताकी बात विधाता जानैं ॥
हम तौ श्याम निहारे ऐसे * तोहिं लगैं प्यारी कहु कैसे ॥
तुम देखे मैं साच न मानौं * अपनीसी गति सबकी जानौं ॥
जिनको वार पार कछु नाहीं * द्वै अँखियन देखे किमि जाहीं ॥
जो तुम सब अँग अग निहारे * धनि धनि तो ये नैन तिहारे ॥
मैं तौ लखि इक अग भुलानी * भरि आयो दोउ आँखिन पानी ॥
कुडल झलक, कपोलन छाहीं * रहीं चकित उतनेके माहीं ॥
रूँधे नीर नैन टकलाई * पहिचाने नहिं नेक कन्हाई ॥

दो०-मैं तबते अपने मनहिं, यहे रही पछिताय ॥
देखनको छबि श्यामको, चहियत नयन निकाय ॥

सो०-अतिछबि अँखियाँदोय, उमँगि चलत तापर सलिल॥
कैसे दरशन होय, सखी श्यामके रूपको ॥

द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे * तुम देखे हरि मैं नहिं हेरे ॥
तुम प्रति अग विलोकन कीन्हों * मैंनीके एकौ नहिं चीन्हों ॥
काहूको षटरस नहिं भावै * कोउ भोजनको दुख पावै ॥
अपने अपने भाग्यनिकाई * जो बोवै सोइ लुनै बनाई ॥
जैसे रक तनक धन पाये * होत निहाल आपने भाये ॥
मोहिं तुम्हैं अतर है भारो * धनि तुम सब हरि अग निहारो ॥
तुम हरिकी संगिनी ब्रजवाला * ताते दरश देत नँदलाला ॥

१ ब्रह्मा २ गाल ३ इ एक अग

सुनहु सखी राधा चतुराई * आपहि निंदति हमहिं बड़ाई ॥
आपुन भई रंक[1] हरि धनको * हमें कहति धनवंत सवनको ॥
हम हरिकी संगति सब ग्वारी * आपुहि निर्मल होत नियारी ॥
धनि धनि धनि लाडिली पियारी * धृक धृक धृक धृक बुद्धि हमारी ॥
तू पूरण हम निपट अधूरी * हमहि असत सत तू पूरी ॥

दो०–धनि धनि तेरे मात पित, धन्य भक्ति धनि हेत ॥
तैं पहिंचान्यो श्यामको, हम सब ग्वारि अचेत ॥

सो०–धनि यौवन धनि रूप, धनि धनि भाग सुहागतव ॥
तू मोहन अनुरूप, चिरजीवहु जोड़ी अचल ॥

जैसे तैं हरि रूप बखान्यो * है तैसोई यह हम जान्यो ॥
देखनको हरि रूप उजेरी * आँखि चाहिये जैसी तेरी ॥
तैं जु कहत लोचन भरि आये * सो हरि तेरे नयन समाये ॥
अति पुनीत अस्थल शुभ जानी * करी श्याम अपनी रजधानी ॥
कियो बास हरि तुव दृगमाहा[2] * और बात दूजी कछु नाहीं ॥
ऐसे श्याम संग ब्रजवाला * कहति परस्पर गुण गोपाला ॥
तहाँ अचानक हरि पुनि आये * कटि कछनी नटभेष बनाये ॥
मुरली अरुण[3] अधर[4] पर राजै * कल ध्वनि मन्द मनोहर बाजै ॥
आप गये तिरछे मगमाहीं * भावाधीन सकल रहि नाहीं ॥
तरुतमाल तनु तरुण कन्हाई * ठाढे भये आय सुखदाई ॥
थकित भई सब ब्रजकी बाला * लगीं विलोकन नँदको लाला ॥

दो०–रत्नजटित पग पाँवरी[5], नूपुर मन्द रसाल ॥

१ दरिद्र २ आपसमें ३ लाल ४ होठ ५ खड़ाऊँ

चरणकमलदल निकट मनु, बैठे बाल मराल ॥

सो०-उदित चरणनख चद, जनु मणिन्योमें प्रकाश करि ॥
सुर नर शिवमुनि वृन्द, विरहताप ब्रजतियहरण ॥

जानु काम शल छविन सँवारे * युवतिन करि मन बुद्धि विचारे ॥
युगल जघ छवि परम पुनीता * रमाखभै मनहुँ विपरीता ॥
ठाढे धरणि एक पग लाये * कचन दण्ड एक लपटाये ॥
तनु त्रिभगकी लटक सुहाई * अटकि रही युवतिन मन भाई ॥
मनयुवती हरिमद मन लाये * निरखति मुनि दुर्लभ सचुपाये ॥
कुलिशांकुश ध्वज चिह्न निकाई * इवटक रही चितै चितलाई ॥
अरुण तरुण पङ्कजदल चारू * मानहु सुखमा करत विहारू ॥
कटि केहरिकी कटिहि लजावै * सूक्षम सुभग कहति नहिं आवै ॥
तापर कनँकमेखला सोहै * मणिन जटित सुंदर मन मोहै ॥
मनहुँ बालकन सहित मराला * बैठे पँगति जोरि रमाला ॥
किधौं मदनके सदन सुहाइ * बाँधी बदनवारि बनाइ ॥
ब्रजतिय निरखि निरखि सुख लेहीं * नैनन पलक परत नहिं देहीं ॥

दो०-शोभित नाभि गँभीर अति, मानहुँ मदन तडाग ॥
रोमावलि तटपर लसत, रस शृँगारको बाग ॥

सो०-ब्रजतिय रहीं निहारि, शोभा नाभि गँभीरकी ॥
मन नहिं सकति निवारि, पन्योजाय गहरे रासवि ॥

उदर उदार वरणि नहि जाई * रोमावलि तापर छवि छाई ॥

१ हस २ आकाश ३ कैलाश पृथ ४ वज्र ५ लाल ६ पाली ७ सोनेकी कधनी ८ तालाब ९ ठुडीके नीचेका भाग

रही अटकि छबि तासु निहारी * परखन बनत न निरखत नारी ॥
कोऊ कहति कामकी सरेनी * कोऊ कहति योग नहिं बरनी ॥
कहति एक अलि बालक पाँती * जुरि बैठे सब एकहि भाँती ॥
कोउ कह नीरद नील सुहाई * सूक्षम धूम वार छवि छाई ॥
एक कहति यह रविकी जाई * मरकत गिरिते उर प्रगटाई ॥
उदर भूमि शोभित सोइ धारा * नालि नाभि हृद अगम अपारा ॥
दुहुँ दिशि फेन स्वालिमुत माला * उपजत सुखमय लहर विशाला ॥
शोभा वरणि सकति ब्रजनारी * रहीं निचारि निचार विचारी ॥
उर मुक्तनकी माल विराजे * तामधि कौस्तुभ मणि छवि छाजै ॥
निर्मल नभ मानहु उडुराजी * शशिहि घेरि बैठी छवि साजी ॥
भृगुपद देखि श्याम उरमाहा * मनहुँ मेघ भीतर शशि छाहीं ॥

दो०–पीत हरित सित अरुणरँग, चटकोली वनमाल ॥
प्रफुलित है छविकी बँवरि, मानहु चढी तमाल ॥

सो०–छवि वरणो नहिं जाय, कठुं कठ मणि कठको ॥
ब्रजतिय रहीं लुभाय, हरि उरवर शोभा निरखि ॥

वृषभकंध भुजदण्ड सुहाई * निंदत अहिगनशुंडि निकाई ॥
कर पल्लवन मुद्रिका सोहै * बाहु विभूषण लखि मन मोहै ॥
जनु शृंगार विटपरी डारी * फूल रही उपजत छवि भारी ॥
हरि मुख निरखत गोपकुमारी * पुनिपुनि प्रणम करति बलिहारी ॥
कहति परस्पर अति मन लोभा * देखहु सखी मदनकी शोभा ॥
चिबुक चारु अधरनि अरुणाई * पान रेख तापर छवि छाई ॥

१ सरन २ बादल ३ जमुना ४ मोती ५ तारागणोंकी पाँती ६ चन्द्र ७ बैठ ८ साँप ९ सूंड १० टोढी ११ होठोंकी

मद हँसन द्युति दर्शन निकाई * उपमा कापै जात बताइ ॥
अनुपम छवि चित लेत चुराये * नगमोहनी हमारे भाये ॥
गोल कपोल अमोल नवीने * मानहुँ मुकुर नील मणि कीने ॥
बाजत मुरली करकी फेरन * चचल नयन चपलकी हेरन ॥
मणिन जटित कुडलकी डोलन * प्रतिबिम्बत सब मुकुर कपोलन ॥
सो छवि कापै जात बखानी * लखि मजतिय बिनमोल बिकानी।
दो०–सुभग नासिका चपल दृग, कुटिल भ्रकुटीकी रेख॥
जनु युग खजन बीच शुकैं, उडि न सकत धनदेख ॥
सो०–घुघुरारे कैंच श्याम, वारिजमुख ढिंग भ्रमर जनु॥
शीश मुकुट अभिराम, कोटि काम शोभाहरन ॥
रूप सुधानिधि वदन बिराजै * दुहुँ कर अधर मुरलिको बाजै ॥
मानहुँ युगल कमल पद माहीं * लेत भराय सुधा शशि पाहीं ॥
हरिमुख निरखत नयन भुलाने * इकटक रहे तृप्ति नहिं माने ॥
गोपकुमारि लखति नँदनन्दन * श्यामसुभग तनु चित्रितचन्दन॥
कनकवरण पट पीत विराजै * देखि सखी उपमा यह रीजै ॥
निर्मल गगन शरद घनमाला * तापर अस्थित दामिनिजाला ॥
अंग अंग छविपुज सुहाये * निरखति युवतीजन मन लाये ॥
कोऊ भाल तिलक छवि अटकी * मुकुट लटक छविपर कोउ लटकी॥
कोऊ अलक नसति चितलाई * कोउ लखि भृकुटि सुरतिबिसराई
कोऊ लोचन छबिलखि ललचानी* चितवनमें कोऊ उरझानी ॥
कोऊ कुडल झलक लुभानी * कोउ कपोलँद्युतिनिरखि बिकानी॥
कोउ नासा कोउ अधर निकाई * कोउ रदै चमकनि माँझ भुलाइ ॥

१ दांत २ मोपा ३ तोता ४ बाल ५ भ्रमरी घिर्या
६ कानें ७ गाल ८ दांत

दो०–कोउ बोलति कोउ मृदु हँसति, कोउ मुरलिध्वनिलीन
कोउ मुरलीपर ग्रीव कोउ, लटकनपर आधीन ॥

सो०–चारु चिबुक दर ग्रीव, कोऊ गडितामें रहीं ॥
हरिमुख शोभा सीव, थकीं निरखि जहँ सो तहां ॥

कोउ सुंदर उर बाहु विशाला * निरखि थकीं कोउ भूषण बाला॥
कोउ कटि कोउ पट पीत निहारी * जघ गुल्फपर कोउ बलिहारी ॥
युगल कमल पदनखकी शोभा * मनवासी जन मनकी लोभा ॥
हरि प्रति अंग निरखि मननारी * देहगेहकी सुरति बिसारी ॥
अति आनन्दमगन मन भूली * शशिमुख लखि जनु कुमुदिनि फूली
किधौं चकोर रहे टकलाई * पियत सुधा छवि शीतलताई ॥
कैंधौं कुंडल छविहि निहारी * विकसत कमल मदन बरनारी ॥
कै चकईगण मन सुखमानी * निरखि रहीं अति रति हर्षानी ॥
कैधौं नव घनतन छवि देखी * भये चातकी मुदित बिशेखी ॥
किधौं मृगी मुरली ध्वनि मोही * श्याम रखति युवती हुमें सोही॥
हरि छवि अरुझानिमें अरुझानी * सुरझन सकति युवतीबितत्तानी॥
रूपराशि सुखराशि कन्हाई * प्रेमराशि जनके सुखदाई ॥

दो०–छविसागर सुखकी अवधि, गुणमंदिर रसखान ॥
मोहि लियो मन तियनको, रसिक नरेश सुजान ॥

सो०–मुरली मधुर बजाय, प्यारी प्यारी नाम कहि ॥
अनुपम छवि दरशाय, गये सदन आनन्दघन ॥

रहीं ठगीसी गोपकुमारी * मन हरि लेगये नवल बिहारी ॥

१ स्वेतकमल २ खिलते हैं ३ पेच

पुनि पुनि कहति भई सुख मानी * धनि धनि राधा कुँवरि सयानी॥
बडभागिनि तोमो नहि प्यारी * तेरेही वशरी गिरिधारी ॥
धनि धनि श्याम धन्य तू श्यामा * धनि जोरी धनि प्रीति ललामा ॥
एक प्राण द्वै देह तुम्हारे * तुमविन रहि न सकत हरि न्यारे
तोको देखि बहुत सुख पावै * मुरलीमें तेरे गुण गावै ॥
तेरी प्रीति साँच हरि जाने * तातें तेरे हाथ विकाने ॥
मन वच क्रम निर्मल तू प्यारी * दुराचारनी हम सब नारी ॥
जैसे पूरण घट नहिं डोलै * होय अधपिलो सो ढवढोलै ॥
परमसुजान नारा तैं धीरा * रारयो परखि हृदय हरि हीरा॥
धनी न अपने धनहिं बतावै * धरतछिपाय न प्रकट जतावै ॥
धन्य सुहाग भाग्य तुव प्यारी * कृष्ण सदा पति तू है नारी ॥

दो०–सुनि सुनि वाणी सखिनकी, प्यारी जिय अनुरागि ॥
पुलकि रोम गद्गद हियो, समुझि आपनो भाग ॥

सो०–वचन कह्यो नहिंजाय, प्रीति प्रकट चाहत कियो ॥
हरि उर रहे समाय, बाहर करत प्रकाश नहिं ॥

सुनहु सखी तुम वरति बड़ाई * सुनि सुनि मेरो मन सकुचाई ॥
मोहिं कहति श्यामहितैं जान्यो * हरिको भलै परखि पहिचान्यो ॥
तवते यहीं सोच मनमाहीं * कैसे हरि पहिचाने जाहीं ॥
नयन दोय छवि अमित अगाधा * तापर पलक करतिहैं बाधा ॥
क्षणहीमें भरि आवत पानी * श्याम स्वरूप धरै किमि जानी॥
रोम रोम अँग लखिये कोई * पलक परत औरै छवि होई ॥
क्षण क्षणमें शोभा पलटावै * यहो सखी उर कैसे आवै ॥

१ सुन्दर २ जोरी ३ बहुत भरणा मनुष्य ४ प्रेम ५ छातीमें

देखनको दृग अति अकुलाहीं * प्रगट लखन पहिचान न जाहीं॥
यह सखि कहा परति कछु जानी * विरह सयोग लाभ कै हानी॥
कै दुख सुख कै समरस होई * मुहिं समुझाय कहौ सखि सोई॥
घृतते होम अग्नि रुचि जैसे * मिटति नहीं नयननगति तैसे॥
उत छविखानि नई छबिवाने * इत लोभी दृग तृप्त न माने॥
दो०-बिन पहिंचाने कौन विधि, करों श्यामसों प्रीति॥
नहिं वह रूप न भाय वह, क्षण क्षण औरै रीति॥
सो०-यह जानी मैं बात, है आनँदकी खानि हरि॥
पहिंचाने नहिं जात, कहा करौं द्वैलोचननि॥
बने क्रूर विधना यह आली * समझ परी देखत वनमाली॥
कर पद उदर ग्रीवै कटिकीनी *मुख रद श्रुति नासा शुभ दीनी॥
भाल शिखर नख केश बनाये * अधर जीव अरु वचन सुहाये॥
रचि पचि रुचिर अंग सब कीने * रोम रोम प्रति नयनन दीने॥
जो भ्रम दोनो जन्म हमारो * देखन को मनमोहन प्यारो॥
तौ कत नयन दिये शठ दोइ * विधिते निठुर और नहिं कोई॥
जो विधना को वशकर पाऊँ * तो अब पद्धति और चलाऊं॥
रोम रोम प्रति नैन बनावै * इकटक रहैं पलक नहिं लावैं॥
तौ कछु बनै कह्यौ सखि तेरो * होय मनोरथ पूरण मेरो॥
हरि स्वरूप लखि जानि न जाई * वह छवि द्वै लोचन न समाई॥
मैं पचिहारि रही बहुतेरो * एकहु अंग न नीके हेरो॥
जो देखौं तौ प्रीति करोरी * देखनहीकी साधन गोरी॥
दो०-दुरत दुराये कौन विधि, सखि तुमसों यह बात॥

१ आंख २ दोनेश्वाली ३ पेट ४ कठ ५ दांत ६ कान ७ राला

देखे विन नँदनन्दके, धीरज धरत न गात ॥
सो०–उड्यो फिरत दिनरात, इन नयननके संग लगे ॥
क्षण नहिं मग ठहरात, आकरुई जिमि वात वश ॥
सुनुरी सखी दशा यह मेरी * जबते हरिमूरति मैं हेरी ॥
संगहि फिरौं दरश नहिं पाऊँ * मनहीं मन पुनि पुनि पछिताऊँ॥
जब मैं अपने जिय यह आनौं * निकट जाय हरिछवि पहिचानौं
तब प्रतिबिंब मेरोई आई * होत तहाँ मोको दुखदाई ॥
मेरे मन हरिमूरति भावै * सन्मुख दृष्टि तहाँ यह आवै ॥
मेरिय देह होत मुहिं वैरी * कितौ दुरावति दुरत न हेरी ॥
मैं अंतर तजि लरात कन्हाई * यह अति अंतर देत बढाई ॥
सखी दोष नहिं काहू केरो * करत श्याम यह सब झकझेरो॥
नीके दरशन कबहूं देहीं * नइ नइ छवि करि मन हरि लेहीं
चपलाहूते चपल घनेरी * दैशन चमक चौंधत है मेरी ॥
कबहूं अंगन मुकुरै बनावैं * कबहूँ कोटि अनंग लजावैं ॥
कैसे सब छवि देखि जुपइये * कौन भाँति यह साध पुरइये॥
दो०–मगन दरशरस लाडिली, पुनि पुनि पुलकित गात ॥
तृप्त न मानति देखि छवि, कहत लखे नहिं जात ॥
सो०–लीनो सखियन जान, हरि रँग राती लाडिली ॥
सुन्दर श्याम सुजान, रोम रोम याके रमे ॥
कहति धन्य प्यारी बडभागी * नीके तू हरिसँग अनुरागी ॥
तूहै नवल नवल हरि ओऊ * रूप अगाध सिन्धु तुम दोऊ ॥
हम जानी यह वात अगाधा * तू हरिकी अर्द्धांगिनि राधा ॥

१ परछाही. २ बिजली. ३ दांत. ४ शीशा. ५ काम.

मिले तोहिं करिकृपा कन्हाई * दिये सकल दुख दूरि मिटाई ॥
कहु प्यारी हमसों अबसाँची * कहे बने यह बात न काँची ॥
छाँड़िदेहु अबि यह चतुराई * कहाँ मिले कहु तोहिं कन्हाई ॥
खरक मिले के कुंजनमाहीं * कै दधिबेचन जात जहाँहीं ॥
कै जब उरगै डसनते बांची * कहु कैसे तू हरि रँगराची ॥
सुनि सखियनकी बात सयानी * बोलि परम नागरी बानी ॥
कबरी श्याम मिले नहिं जानौं * सुनहु सखी मैं साँच बखानौ ॥
गृह बन कुंज सुरति नहिं मोहीं * दधि बेचन कै खरक बिमोहीं ॥
आजकै काल्हि कहां कह आली * कियो वास उरमें बनमाली ॥

दो०-नयननते छिन टरत नहिं, नीके लखे न जात ॥
कहा कहौं तुमसों सखी, यह अचरजकी बात ॥

सो०-मिले मोहिं जब श्याम, सुनो सखी तुमसों कहौं ॥
करिकै उरमें धाम, तबते मन मेरो हऱ्यो ॥

मैं यमुना जल भरन सिधाई * औचक हरि तहँ परे लखाई ॥
मोतन चितै रहे मुसकाई * कहा कहौं सखि नैन निकाई ॥
जीत आपने बल जनु कीनी * शरद सरोजनकी छबिहीनी ॥
जीते सकल रूप गुण जानी * नीलकोकैनद अरु सत पाती ॥
पैनिशि मुँद्रित दिवस प्रकासे * क्षण प्रति होत मलिन द्युतिनासे
वे आनन्द कंद सुखमूले * रहत दिवस निशि छबिसों फूले
निरखि नयनमें दशा भुलाई * उन मुसकान मोहनी लाई ॥
शिथिल अंग भये जैसे पानी * तबहीं ते उन हाथ बिकानी ॥
सूझे मारग गई भुलाई * ज्यों त्यों करि पहुंची घरआई ॥

१ सर्प. २ कमलोंकी. ३ कमल. ४ बंदहोकर.

तादिनते अँखियां चे मेरी * सुख दुख भूलिभई हरिचेरी ॥
बसीं जाय वा चितवनमाहीं * अब वह छवि छण विसरत नाहीं
कै इन नैननि आय समानी * यह चितवन कछु जात न जानी
दो०–नहिं जानत हरि कह कियो, मन्दमधुर मुसकाय ॥
मन समुझत रीझत नयन, मुख कछु कह्यो न जाय ॥
सो०–तबते कछु न सुहाय, कासों कहिये बात यह ॥
भमल पर्‌यो दृग आय, अवलोकन हरि विधुवदन ॥
निकसे सखी एकदिन आई * द्वार हमारे कुँवर कन्हाइ ॥
मैं ठाढीही अँजिर अकेली * देखिरही छवि यह अलवेली ॥
चचल नयन चर्ते चितचोरै * सुभग भृकुटि बिबबक भरोरै ॥
कोटि मदन तनुद्युति सँगवाहीं * फेरत कमल कमलकरमाहीं ॥
मोहितलागि भये तहँ ठाढे * कियो भाव कछु आनँद बाढे ॥
ले कर कमल भावसों लायो * पीताम्बर निजशीश फिरायो ॥
मैं गुरुजन डर शंका आनी * बोलि न सकी कछू मुख बानी ॥
प्रेमसहित तेरे हरि आये * वैसहि उनको फेरि पठाये ॥
तू तौ चतुर हुती अति नारी * सेवा कछू करी नहि प्यारी ॥
गुप्त भाव तोसों हरि कीनों * वातनमुँह नहीं क्यों लीनो ॥
काहे कमल भावसों छायो * काहे पीताम्बरहिं फिरायो ॥
तैं कछु उत्तर तिन्हैं जनायो * घर आये केहि विधि बिसरायो ॥
दो०–कहाकरौं गुरजन सखी, भये मोहिं दुखदाय ॥
सकुचिरही तिनको सकुच, मुख कछु वचन बनाय ॥
सो०–इतनो कियो सयान, मैं लव बैठी कर परशि ॥

१ आँगन २ हाथ

उरलाई हित मान, सन्मुख करि करि आरसी ॥

अन्तर्यामी चतुर कन्हाई * जानि लई मेरी चतुराई ॥
आपन हँसि उत पाग सँवारी * रहे कमल हिरदयपर धारी ॥
रहे चितै अतिहित चितलाई * मोंते सखी न कछु बनि आई ॥
कहा करौं कछु दोष न मेरो * नयो नेह उत गुरजन घेरो ॥
रही देखि मन आनँद धरिकै * दियो कमल उर आसन करिकै॥
आंचर करि निछावरि कीनों * अर्घ्य मैलिल आखिनसों दीनो॥
उमँगि कलशकुच प्रगट भयेरी * टूटि टूटि कुच बंद गयेरी॥
अब मन होत लाज अति भारी * सखी समुझि करणी बहसारी॥
ऐसी मेरी मति अज्ञानी * प्रभुसों सगर्व करि मैं मानी॥
अति सुख मान गये सुखदाई * तबते मो मन कछु न सुहाई ॥
कहति सखी राधा सुनि मेरी * सेवा मान लई हरि तेरी॥
अब काहे पछितात अनेरा * तोहित श्याम नात करिफेरी॥

दो०–नीके कीन्हे भाव सब, तू अति नागरि वाम ॥
उन लीन्हे सब जानिकै, चतुर शिरोमणि श्याम ॥

सो०–भावहिको सन्मान, गुरु जनके सधि चाहिये ॥
गये श्याम हित मान, अब प्यारी चाहति कहा ॥

तेरे वशहि भये दधिदानी * हम यह बात भले करिजानी॥
तैं बेंदी उन पाग सँवारी * उनको तुम उन तुमहिं उँहारी॥
मिली आरसीमें तुम उनको * उन उरधरी कमल मिस तुमको
जाने कहा भेद यह कोऊ * एक प्राण है तनु तुम दोऊ ॥
सुनहु सखी मोहन सुखराशी * अँखियाँ रहति दरशकी प्यासी॥

१ पानी २ घटकी बराबर कूची ३ बडे लोगोंमें ४ प्रमाणकी

निकसत जब सुन्दर इत आई * कमल नयन करबेणु सुहाई ॥
ना जानिये सखी तिहि काला * सब तनु श्रवणै विलोचन जाला
सुरत शब्द प्रति रोमनमाहीं * नख शिख ज्यों चखै देख्यो चाही
इतने पर समुझत नहिं बैना * चितै रहत ज्यों चित्रित मैना ॥
सुनहु सखी यह साँच कि सपनो * कै दुख सुख कै सम्भ्रम अपनो ॥
कहा करौं गुरुजन डर मानो * मन मेरो उन हाथ बिकानो ॥
जबते द्वार दरश मोहि दीनो * तबतें मन अपनो करिलीनो ॥

दो०–भाग्य दशा आये सदन, मेरे श्याम सुजान ॥
मैं सेवा नहिं करिसकी, गुरुजनको डर मान ॥

सो०–यहै चूक जिय जान, मोहन मन हरि लैगये ॥
अब लागी पछितान, फेरि कौन विधि पाइये ॥

जबते प्रीति श्यामसों कीनी * तबते नींद दृगैन तजि दीनी ॥
फिरत सदा चित चक्र चढ्योसो * रहतहिये अति शोच बढ्योसो॥
मिलहिं कवन विधि कुवर कन्हाई * यहै विचार विचारत जाई ॥
यह दुख सखी कौनसों कहिये * पशु वेदन ज्यों आपहि सहिये॥
सुन प्यारी तू हरि रँगराची * बात कहै तोसों हम साची ॥
तोते चतुर और नहि कोऊ * तुम अरु श्याम एक भये दोऊ॥
बाकी नहीं कछू अब बाँची * कहौं बात मैं रेखा खाँची ॥
ऐसी भई आप तू भोरी * उनको मनतैं नाहि लियोरी ॥
तैं उनको मन प्रथम चुरायो * तब उन तेरोहू अपनायो ॥
अब काहेको करत सयानी * नन्दनदन वर तूं पटरानी ॥
तोसी और कौन बड़भागी * तेरे संग श्याम अनुरागी ॥
विलसौ श्याम संग सुख मानी * अब कत वृथा रहत बौरानी ॥

---

१ कान २ आँख ३ दृष्टि ४ नेत्रोंने ५ पागल

दो०-श्याम करी मोहिं बावरी, मन करि लियो अधीन ॥
वंशी[1] ज्यों वाकी पलक, अटके मोदग मीन[2] ॥

सो०-अब मोहिं कछु न सुहाय, मन मेरो मेरो नहीं ॥
लियो श्याम अपनाय, रूप ठगोरी डारि दिर ॥

वार वार मैं तोहिं सुनाई * तेरे मन यह वात न भाई ॥
अपनीसी बुधि जानत मेरी * मैं पाई इतनी कहँ एरी ॥
देखतही हरि रूप लुभानी * मोते सुधि बुधि सबहि हिरानी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी * गद्गद वचन श्याम रस पागी ॥
पुनि पुनि कहति यहै मुख वानी * मन हरि लियो छैल दधि दानी ॥
तब इक सखी सखीसों बोली * तू कत होति जानके भोरी ॥
यह पुनि पुनि मनको निदरानी * गुप्त वात तिन प्रगट बखानी ॥
तुम जानत श्यामा है छोटी * है यह ज्ञान बुद्धिकी मोटी ॥
रहत सदा हरिके सँगमाहीं * हमसों कहत करति सो नाहीं ॥
किये रहति हमसों हठ ओटी * वात कहत मुख चोटी पोटी ॥
भये श्याम याहीके वश अब * देखि छकें वेंदी छोटी छव ॥
भली बनी सुन्दर अब जोटी[3] * वे खोटे उनते यह खोटी ॥

दो०-कहति सखी यह कहा तू, निपट गँवारी बात ॥
को प्यारीसम दूसरी, जाके वश बलै[4]भ्रात ॥

सो०-रूप शील गुणधाम, यह सबमें ब्रज आगेरी ॥
दृढ मत लीन्हो श्याम, धन्य न याते और कोउ ॥

प्रीति गुप्त[6] ही की है नीकी * कहो बात सखि अपने जीकी ॥

---

१ लोहका कांटा जिस्से मच्छी पकडतेहैं. २ मछली. ३ जोडी.
४ बलदेवजी. ५ मान. ६ छिपीहुई.

में रीझी यापर अति भारी * क्यों रोटी जो कृष्णपियारी ॥
जो हरि कोटि मदन मन मोहैं * सो मोहन याको मुख जोहैं ॥
जैसे श्याम नारि यह वैसी * भेद करै सो सखी अनैसी ॥
नागरि नवल नवलके नागर * सुन्दर यह जोरी छबिसागर ॥
सुनहु सखी ऐसे पै राजें * एक प्राण द्वै तनु भ्राजें ॥
एकहु पलक कबहुँ नहिं न्यारे * सोवत जागत जान हमारे ॥
पूरब नेह नयो यह नाहीं * देखहु सखी समुझि मनमाहीं ॥
मेरो कह्यो मानि यह लीजै * इनसों भाव प्रीति करि कीजै ॥
इनकी प्रीति प्रीतिकेमाहीं * बिना प्रीति ये जान न जाहीं ॥
जबलग इनसों प्रीति न मानै * तबलग इनकी प्रीति न जानै ॥
इनकी प्रीति लख्यो जो चाहौ * तौ करि इनसों प्रीति निबाहौ ॥

दो०–सखी वचन सुनि सखिनके, भयो हिये अति चैन ॥
धन्य धन्य ताको सबै, कहति सप्रेम सुबैन ॥

सो०–धनि धनि तेरो ज्ञान, तैं इनको जानेउ भले ॥
हम सब निपट अजान, बात कहत औरै कछू ॥

हम इनको ऐसे नहिं जाने * ये ब्रज आय गुप्त प्रगटाने ॥
श्यामा श्याम एक हैं परी * तैं इतने उपहास सहेरी ॥
वे दोउ एक दूसरी तूरी * तेरिहु प्रीति श्यामसों पूरी ॥
इनसों तेरी प्रीति पुरानी * तबते प्रीति पुरातन जानी ॥
धन्य श्याम धनिधनि तुव श्यामा * हम सब वृथा भईं बिन बामा ॥
श्याम राधिका सहज सनेही * सहज एक दोऊ हैं देही ॥
सहज रूप गुण पूरण कामी * सुन्दर सहज सहज बनधामी ॥

१ शरीर २ हसी ३ पुरानी

देखि दुहुँनकी प्रीति विशाला * भई विवश सब ब्रजकी बाला ॥
श्यामा श्याम रंग रस पागीं * सोवत ते मानहु सब जागीं ॥
उपजी प्रीति दुहुँनकी साँची * दूरि गई दुविधामति काची ॥
भईं सुनैल रस वश सब गोपी * लाज शंक मयादा लोपी ॥
सबके नैन रूप रस अटके * श्रीश्यामावर नागर नटके ॥

छं०–नवल नागर श्याम श्यामा, प्रेम मन सबके फँसे ॥
नयन नासा श्रवण रसना, अंग प्रति दोऊ बसे ॥
उठत बैठत चलत सोवत, जात निशिबासर घरी ॥
नहीं निसरत ध्यान कबहू, सकल ब्रजकी सुन्दरी ॥

दो०–गईं सकल निज निज सदन, युगल प्रेम रस लीन ॥
बिछुरत नहिं एकौ घरी, जैसे जल अरु मीन ॥

सो०–रहे श्याम उर छाय, बिन देखे दृग फल नहीं ॥
गृहकारज न सुहाय, गुरजन त्रासैं न सुरति कछु ॥

वे कछु कहैं करैं कछुऔरैं * सासुननँद तब मारन दौरैं ॥
कहै यहै पितु मात सिखायो * ऐसोई ढँग तुम्हें बतायो ॥
कहा तुम्हारे मन यह आई * अपनी सुधि बुधि कहां गवाई ॥
तुम कुलवधू लाज नहि आवै * कहँ लगि कोउ तुम्हैं समुझावै ॥
कबकी यमुना न्हान गइ हौ * ऐसी अब तुम निडर भइ हौ ॥
तुम राधाको संग करति हौ * हरिके पाछे वही फिरति हौ ॥
बड़ महरकी सुता कहावै * यह सब बात उन्है बनिआवै ॥

१ सोलहवर्षकी स्त्री २ दोनों ३ कान ४ जीभ ५ रातदिन
६ महरी ७ डर

उनको सब उपहासें उठावत * ब्रज घर घर मति यही कहावत ॥
ऐसे तुमहू नाम धरे हो * ब्रज लोगनमें हमें हँसैहो ॥
हम अहीर ब्रजपुरके वासी * ऐसे चलो होय नहि हाँसी ॥
लोकलाज कुलकानिहिं करिये * फूँकि फूँकि धरणी पग धरिये ॥
एसे कहि गुरुजन समुझावे * लाज काज मर्याद सिखावे ॥

दो०–सुनि युवती गुरुजनवचन, विहसि रहीं धरि मौन ॥
हरि राधा उपहासकी, महिमा जाने कौन ॥

सो०–कहत तैसिये बात, जैसी मति जाके हिये ॥
सुख उँलूकहि रात, रविको तेज न मानही ॥

विषको कीट विषहि रुचि मानै * कहा सुधीरस स्वादहि जानै ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन * नन्दनँदन सुरश्रुति शिवकोमन॥
तिनकी महिमा कह ये जानैं * जिनके गुण मुनि गग बखानैं ॥
धनि धनि राधा कुँवरि सयानी * श्यामहि मिली कर्म मन बानी ॥
श्याम कामके पूरण हारैं * पूरण करि तिनको उर धारैं ॥
धन्य धन्य श्यामा बनवारी * यह रस लीला ब्रज विस्तारी ॥
एसे गोपीगण करि ध्याना * करत श्याम श्याम गुणगाना ॥
श्याम रूप श्यामा अनुरागी * रोम रोम ताही रँग पागी ॥
गइ सदनै मन लागत नाहीं * मनमोहन बिन क्षण युग जाहीं ॥
मनहीं मन गुरु जन पर खीजै * इन बिमुखनको संग न कीजै ॥
कौन भाँति करि इनसों छूटौं * क्यो वह दरश सरस सुख लूटौं ॥
बार बार जिय अति अकुलाई * कैसेहुँ हरिबिन रह्यो न जाई ॥

---

१ हसी २ धरती ३ उल्लू पक्षी ४ घर

दो०-एक गुरुजन कुलकानि एक, एक लज्जा एक धाम ॥
एक जीवन बहु दिननको, बिनु सुन्दर घनश्याम ॥
सो०-पलक कलपसम जाय, व्रजवासी प्रभुदरशबिन ॥
सदन न नेक सुहाय, मन हरि लीन्हो सांवरे ॥

अथ वाटके मिलनेकी लीला ॥

श्रीवृषभानुकुँवरि वर गोरी * कृष्ण प्रेम उनमत्त[1] किशोरी ॥
तनु बिह्वल[2] मन हरिके पासा * दुरतै[3] न हृदय प्रेम परकाशा ॥
चली यमुनजल आप अकेली * रूपराशि गुणराशि नवेली ॥
दृगन श्याम दरशनकी आसा * मनहीं मन यह करति हुलासा ॥
चितको चोर अवहिं जो पाऊँ * तौं उरको सताप नशाऊँ ॥
राखौं बाँधि हृदयसों लाई * भुजकी दृढ करि दाँम[4] बनाई ॥
जैसे लियो चोरि मन मेरो * तैसे लेउँ छोरि उनकेरो ॥
छाँडौं नाहिं करै जो कोरी[5] * ऐसे आन विचारति गोरी ॥
इततें प्यारी यमुनहिं जाई * उततें आवत धरहिं कन्हाई ॥
नील जलज तनु शोभित आछे * नटवर भेष काछनी[6] काछे ॥
दूरिहितें देखतहीं जान्यो * जीवन प्राण तुरत पहिचान्यो ॥
रही मनोहर मदन निहारी * कोटि मदन जापर बलिहारी ॥
दो०-मन आँनद हुलस्यो हियो, रोम पुलक दृग बाँरि ॥
बोली गद्गद वचन सुख, तनु विह्वल सँभारि ॥
सो०-चित चोरे कहँ जात, मैं ढूंढति तवते तुमहिं ॥
कहँ सीखी यह बात, अहो नन्दके छाड़िले ॥
जानत जैसे माखन चोरी * तब वह बात हती कछु औरी ॥

१ पागल २ बेहोश ३ छिपतहै ४ रस्सी ५ कपट ६ कछ

बालक हते कान्ह तव तुमहूँ * भोरी सहज हुती मन हमहूँ ॥
मुख पहिंचान मान सुख लेती * यशुमति कान जान तब देती ॥
वसी वास सब ब्रज इक ठौरी * गोरसकाज कान नहिं तोरी ॥
अब भये कुशल किशोर कन्हाई * भई सजग हम सब तरुणाई ॥
माखनते अब चितकी चौरी * लागे श्याम करन बरजोरी ॥
नख शिख अँग चितचोर तुम्हारो * लीन्हों मन धन छीनि हमारो ॥
सो अब जात कहाँ तुम लीन्हे * भुजापकरि ठाढे हरि कीन्हे ॥
तुमको नीके करि हम चीन्हे * बनिहै अब मेरो मन दीन्हे ॥
ब्रजमें ढीठ भये तुम डोलत * मोसों सूधे वचन न बोलत ॥
अब तौ मोहिं बूझि घर जैहो * विना दिये मन जात न पैहो ॥
प्यारी यों झगरति पिय पाहीं * देह गेहकी सुधि कछु नाहीं ॥

दो०–बीच करी कुल लाज सब, सन्मुख आई धाय ॥
बखसि नागरी चूक यह, मोहिं कह्यो समझाय ॥

सो०–चित लै गयो चोराय, चूक परी हरिते बड़ी ॥
छाँड़िदेहु डरपाय, बड़े महरिकी कुवँरि तुव ॥

कुलकी लाज अकाज कियोरी * कहाकरौं अति जरत हियोरी ॥
तबयों कहति पीयसों प्यारी * सुनहु प्राणपति गिरिवरधारी ॥
देखे विना तुमहि दुख पाऊँ * सो यह तुम विन काहि सुनाऊँ ॥
गुर्से रहन मोको तुम भाख्यो * सो आयसु मैं शिर धरि राख्यो ॥
नहिं सुहात तुम बिन दिन राती * प्राणनाथ तुमहित सब भाँती ॥
तुमते विमुख जननके माहा * रह्यो जात मोपै प्रभु नाहीं ॥
मात पिता अति त्रास दिखावैं * निंदत मोहिं नेक नहिं भावैं ॥

१ जवाबी २ घरकी ३ मास्कर ४ छिपाहुआ ५ आशीर्वाद
६ नाशकरनेवाले

भवन मोहि माटीमा लागे * इक क्षण शोच नाहि उर लागे ॥
यहँलगि अपनी विपति बताऊँ * तुम बिन मुखकों अंत न ठाऊँ ॥
सुदर श्याम कमलदल लोचन * करहु कुमगति को दुखमोचन ॥
अब यह विनय श्याम सुनिलीजै * चरणनते न्यारी नहि कीज ॥
कुलकी कानि कहालगि मानो * यह मन मोहन तुमहि लुभानो ॥

छं०–मन लुभानो तुमहिं मोहन, और तेहि भावै नहीं ॥
विन लखे गिरिधरण सुदर, कहूँ सुख पावै नहीं ॥
लोक डर कुल्लाज गुरुजन, कानि कहलौं कीनिये ॥
सिंह शरण कृपालु जबुक, त्रास क्यों सहिजीजिये

दो०–निरखि श्याम प्यारी वदन, सुनिके वचन सिहाय ॥
प्रेम अधीन विलोकि अति, हर्षि लई उरलाय ॥

सो०–शीतल पकज पान, परश ह-यो तनु विरह दुख ॥
प्रेमविवश भगवान, बोले प्यारीसों हरषि ॥

कत दुख पावतिहौ तुम प्यारी * यह लीला तुमहित विस्तारी ॥
वसत सदा मैं तुम मनमाहीं * तुम मम उरते बाहर नाहीं ॥
श्रीवृन्दावन घन सुखकारा * ह विहार थल तुम्हरो प्यारी ॥
शीतल सघन कुञ्ज छवि धामा * हम तुम सग मिलैं तहँ भामा ॥
दीनी सैन मोहि कहँ आई * तव तुम पै ऐहीं मैं धाई ॥
अब गृह जाउ आइहैं कोऊ * यों सकेत बद्यो हित दोऊ ॥
मन यमुना मग विच दोउ ठाढ़े * प्रेमसकोच अतिहि मन बाढ़े ॥
बिछुरत बनत न रहत तहाहीं * चितवत सखिन चपल चहुँघाहीं ।
तवहि युवति मनते कछु आइ * कछु यमुनाते मनमें नाई ॥

१ सियार २ तारीफकरै ३ इशारा

दुहुदिशि तरुणिन आवत जानी * मनहीं मन राधिका लजानी ॥
चले तुरत हँसि कुँवर कन्हाई * मिले हांकदै ग्वालन जाई ॥
रहे कहां तबते सब ग्वाला * एसे टेरि कह्यो नन्दलाला ॥

दो०-गये भाव करि श्याम यह, लियो नागरी जान ॥
कहिहौं यहै सखीनसों, कीन्हो यह अनुमान ॥

सो०-देखि सखी मोहिं संग, अबहिं आय सब बूझिहैं ॥
जानति इनको रंग, मन मन शोचति लाडिली ॥

सो०–अब हम लेहिं छिनाय, बेसरि देहौ के नहीं ॥
कि करिहौ चतुराय, और कछू हमसों अबहूँ ॥

तब हँसि कह्यो नागरी प्यारी * तुम सब भई अजान कहाँरी ॥
मैं मूरख तुम चतुर बड़ेरी * ऐसेहि बेसरि लैहौ मेरी ॥
यही कहन मोको तुम आई * इतउतते मिलि उठि तुम धाई ॥
बेसरि एक लेहुगी कोको * पीताम्बर दिखरावहु मोको ॥
पीताम्बर अरु बेसरि लीजै * प्रगट जाय तब ब्रजमें कीजै ॥
तारी एक बजति कर दोऊ * इतनो ज्ञान करो सब कोऊ ॥
सुनु राधा तोसों हम हारी * धन्य धन्य तेरी महतारी ॥
तेरे चरित कहा कोउ जानै * बश कीन्हो घनश्याम सुजानै ॥
अबहीं टारि पठायो तिनकों * हम देखे तेरे ढिग उनको ॥
तापर निदरतिहै तू हमसों * कहत न बनत हमैं कछु तुमसों ॥
अँग अँग विरचि कपट चतुराई * निज कर विधना तोहिं बनाई ॥
इतनी बुद्धि श्यामके नाहीं * जितनी है प्यारी तोमाहीं ॥

दो०–श्याम भले अरु तुम भली, राज करहु घर जाय ॥
बेसरि छोरति हैं सखी, बिन काजै उठि धाय ॥

सो०–जान्यो तुम्हरो ज्ञान, दौरि परीं मोपर सबै ॥
जो तुम हती सुजान, गहती बाँह दुहूनकी ॥

कछु प्यारी साँची अब हमसों * कछु तो श्याम कहतहैं तुमसों ॥
हाहा बात कहो सो प्यारी * भेद करो तो सौंह हमारी ॥
तुव ढिगते मोहन हम हेरतं * गये उतै ग्वालनको टेरत ॥
तू क्यों ठठुकिरही मगमाहीं * कहा कह्यो मोहन तुव पाहीं ॥

१ श्रीकृष्ण २ बुलाताहै

सहज होय हमसों यह भाषो * उरमैं कछु रोषै मति राखो ॥
मैं यमुनातट जात रहीरी * भजते आवत तुम्है लखीरी ॥
परसन लगी तुमहिं मगमाहीं * तिरछे आय गये हरि पाहीं ॥
मैं तुमहीं तन रही निहारी * उन पूछो म्वहि ग्वाल कहारी ॥
मैं सुनि सन्मुख दीठि[2] न खोली * हाँ नाहीं कछु मुख नहिं बोली ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई * तुम मेरी बेसरिको धाई ॥
सुनि यह बात युवति सकुचानी * कछु तो परति साचसी जानी ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई * यह तो हमहूँ श्रवणै सुनि पाई ॥

दो०–तब हँसिकै सखियन कह्यो, सुनु लाडिली सुजान ॥
हम मानी तेरी कही, तू मति रिस जिय आन ॥

सो०–लीन्ही कण्ठ लगाय, अति निर्मल तू लाडिली ॥
झूठहि करत चवाय, ब्रज घर घर तेरो सबै ॥

अब चलिये यमुनाके धामा * संग चलै हमहूँ सब श्यामा ॥
चूक परी हमसों यह तेरी * नाम लियो बेसरिको फेरी ॥
अहो सखी तुम निपट अनेसी * जानतिहो मोहिं आपहि जैसी ॥
झूठहि धाई दोष लगावन * अब लागी मोको दुलरावन ॥
क्षणक बुद्धि तुम्हरी धौं कैसी * हौ तुम बड़ी पेटकी जैसी ॥
यह सुनि हँसन चलीं ब्रजनारी * गईं यमुनते गृहको प्यारी ॥
ऐसे सखियनसो बहरायो * कृष्ण सनेह न प्रगट जनायो ॥
नागरि श्यामा श्याम सनेही * चतुर श्याम श्यामाके देही ॥
श्यामा श्याम बसत तनुमाहीं * बसत श्याम श्यामा मनमाहीं ॥
नन्द सँकेत गये घर दोऊ * मात पिता कछु जान न कोऊ ॥

१ मुखसों २ दृष्टि ३ कान ४ प्यार. ५ कृष्णराधिका.

कैसेहूँ करि दिवस वितायो * निशि निघट रस विरह सतायो ॥
अति आतुर दोऊ मनमाहीं * क्यौंहू नींद परति है नाहीं ॥

दो०–विरह नदी निशि तम सलिल, पैरतथके निहारि ॥
बूड्यो मणि तमचरै कह्यो, मिल्यो पार मिनसौरि ॥

सो०–सुनि तमचरकी टेर, अति आनद दुहून मन ॥
अतिही उठे सवेर, लगीं चटपटी मिलनकी ॥

॥ अथ संकेतके मिलनेकी लीला ॥

श्याम उठतलखि जननी जागी * हरि मुखकमल निरखि अनुरागी ॥
बूझति मात जाउँ बलि प्यारे * आज कहा तुम उठे सवारे ॥
उत्तम जल भरि दीनी झारी * अतिआतुर हरि करी मुखारी ॥
विवस श्याम प्यारी रस छाके * मगन ध्यान वृषभानुसुताके ॥
उत वृषभानुसुता सुकुमारी * उठी प्रात वह भाव विचारी ॥
ग्रीवाँसों मोती लर तोरी * आँचर बाँधि मातसों चोरी ॥
यहै ध्यान अपने उर धान्यो * कुंज धाम घन जान विचान्यो ॥
आँगन गई भवन फिर आई * गई भवनते फिरि अगनाई ॥
जात बनै न रह्यो नहिं जाई * इत उत फिरत भवन बितताई ॥
मनहिं कहत कब मिलहु कन्हाई * कालिगये बनधाम बुलाई ॥
मात कह्यो क्यौं उठी सवारी * जाति कहा प्रातहि तू प्यारी ॥
आज कहा इत उत तू डोलै * मुखते कछु वचन नहिं बोलै ॥

दो०–अति नागरि मोती लरी, राखी प्रथम दुराय ॥
ताहीमिसि करिके सकुच, बोलति नहीं डराय ॥

---

१ व्याकुल २ पानी ३ मुर्गा ४ सवेरा ५ माता यशोदा
६ दातन ७ गर्दन ८ चतुर ९ छिपाकर

सो०-पुनि पुनि चितई मात, लखी ग्रीवै भूषण विना ॥
तब जानी यह बात, खोई कहुँ मोती लरी ॥

जननी भई तबहि रिसहाइ * कठलरी तैं कहां गँवाई ॥
मोतिनको गजरा छबिछायो * बडे मोलको परम सुहायो ॥
तेरे लिये महरै बनवायो * मैं तोको हित करि पहिरायो ॥
कौने लियो कहातै गेन्यो * कालहि तेरे तौ गर हेन्यो ॥
बूझे तोहि नवाब न आवै * कह शोचति किन वेग बतावै ॥
सुनि राधिका मातकी बानी * मन विहँसत ऊपर भय मानी ॥
बोलति नहीं हृदय हरषाई * कहति भली बुधि मोको आई ॥
अबहीं मोको खीज पठैहै * यामिसि भेंट श्याम पैहैहै ॥
कहत मातसों तब भय मानी * मोहिं नहीं सुधि कहां हिरानी ॥
काल्हिसखिन सग यमुना हाई * तहा कहूंधौं तिनहिं चुराई ॥
कैधौं गिरी वतहुँ जलमाहीं * यहतौ मैं कछु जानति नाहीं ॥
कालिहिते शोचति पछिताई * तेरे डरते कह्यो न जाई ॥

दो०-नेकु नींद नहिं निशि परी, तेरी सो सुनि मात ॥
याही डरते आज हौं, उठी बडी परभात ॥

सो०-सुनत सुताके बैन, हिरि चकित मुख लखिरही ॥
कृष्ण प्रिया गुणैऐन, कोऊ पार न पावई ॥

तब जननी करि क्रोध कहीरी * मैं बरजति तोहिं हार रहीरी ॥
फिरति नदी बन डगरनमाहीं * काहूकी शका ताहि नाहीं ॥
बहुत तात तोहिं लाडलडाई * नोखी सुता महरकी जाई ॥
बरजति मैं जु करति तू सोइ * भली करी मोतिन लर खोई ॥
एक एक नग परम सुहायो * लाख टकादै मैं जु मँगायो ॥

१ कठ २ नन्दराय ३ गुणोंके घर

जाके हाथ परो सो दैहै * घरबैठे निधि पाय गवैहै ॥
भरि भरि नयन लेति है माता * मुखते कछु न आवती बाता ॥
रीतो गरो निहारेति जबहीं * हियो उमँगि आवत है तबहीं ॥
कहा करो जो खोइ गईरी * तू कित खीजत विकल भईरी ॥
लैहों और मँगाय बवासों * देति नहीं क्यों और हिवासों ॥
करिहै कहा सेति जो राखे * तादिन तेहि कितकभौ माखे ॥
रोवति कहा औरहै नाहीं * दैनिकासि पहिरो गरमाहीं ॥

दो०-सुन राधा तेरो नहीं, अब पतियारो मोहिं ॥
चौकी हार हमेल कछु, नहिं पहिराऊँ तोहिं ॥

सो०-छावटकाकी हानि, करी आज तैं लाड़िली ॥
अब नहिं दैहौं आनि, जबलौं वह लावै नहीं ॥

अवतौ घर बैठन जब पैहौ * जलज सरोज खोजलै ऐहौ ॥
जाधौं देखि कहूँजो पावै * तबहीं तोहिं भलाई भावै ॥
यमुना गई सग सबकोही * बूझति नहीं जाय किन ओही ॥
कौन कौनको तोहि बताऊँ * कहँलग सबके नाम गनाऊँ ॥
चद्रावलि ललतादिक नारी * हतीं सकल मज गोपकुमारी ॥
देखहु जाय यमुनतट हेरी * जहाँ राखि मैं न्हाति रहीरी ॥
युवती एक रही टकलाई * पूछि देखहौ वाको नाई ॥
जैहै कहाँ जलज लरि मेरी * तिनही लइ भली सुँधि परी ॥
आज अबेर लगेगी मोहीं * ढूँढोंगी मज घर घर ओहीं ॥
ऐसे करि माता मति मोरी * हरषि चली वृषभानुकिशोरी ॥
निधरक चली सदनते प्यारी * मन भटक्यो जह कुजबिहारी ॥
मनहीं मन यों शोचति जाइ * कैसे हरिसों देहु जनाई ॥

१ देखतीहै २ खबर ३ तरफ ४ राधिका ५ घर

दो०–बार बार नँदनन्द इत, आतुर जोहत राह ॥
प्यारी मुखशशि उदकी, नैन चकोरन चाह ॥

सो०–भरे विरह रसमाहिं, क्षणमें घर द्वारे क्षणक ॥
फिर फिर आवहिं जाहिं, लगी चटपटी प्रेमकी ॥

जननी करति रसोइ[1] आतुर * लखिलखि जात श्यामघनचातुर
कहा अबेर करति तू मैया * भूख लगी मोहिं कहत कन्हैया ॥
यशुमति कह्यो तात बलिजाई * अब विलम्ब नहिं बैठहु आई ॥
सखा संग सब लेहु बुलाई * बोलि लेहु अरु हलधर भाई ॥
सादर कह्यो श्याम बल भैयो * दाऊजी[2] जेवनको अइयो ॥
मोको अबहिं नहीं रुचि मैया * सखन संग तुम खाहु कन्हैया ॥
संग सखन लै तब मनमोहन * जेवनको बैठे सब गोहन[3] ॥
षटरस व्यञ्जन सरस सँवारे * परसि धरे रोहिणि पनवारे[4] ॥
श्याम सखनको आयसु दीनो * आपुनिहूँ कर कौरहि लीनो ॥
तबहीं कोकिलके सम बानी * बोलि उठी राधा सुखदानी ॥
नन्दमहरि पिछवारेहिं आई * झूठहि ललताको गुहराई ॥
वृन्दावन मग जाति अकेली * आवहु वेगि तुमहुँ सँग हेली[5] ॥

दो०–बिन जेये मोहन उठे, करते कौर गिराय ॥
जेंवतही छाँडे सखा, चले मनहिं अनुराय ॥

सो०–देखि चकित दोउ मात, चौंक रहे सिगरे सखा ॥
कहति कहा चले जात, अति आतुर गोपाल तुम ॥

अबही ग्वाल गयो कह मोही * वनमें गाय नियानी होई ॥
मैं जेवन बैठो बिसराई * सो सुधि मोहिं अबहिं है आई ॥

१ रसोई २ दाऊजी ३ साथ ४ पत्तल ५ सखी

तुम जेवडु[1] मैं देखहुँ जाई * करी श्याम तिनसों चतुराई ॥
लैहौं मेरी गाय वियानी * यह कहि चले हर्ष उर आनी ॥
हँसत सखा सब मन मन माहीं * नहीं गाय बछरा ह्वाँ नाहीं ॥
हे प्यारी रानी ह्वाँ राधा * हम जानी यह बात अगाधा[2] ॥
जननी नहीं कछू यह आनी * बार बार कहिके पछतानी ॥
भूखे श्याम गये उठि धाई * राज करौ यह गाय वियाई ॥
दई सैन दे वन श्रीश्यामा * पहुँचे जाय तहाँ घनश्यामा ॥
देखत हर्ष भये मन दोऊ * फूले अंग समात न कोऊ ॥
मिले धाय गहि अंकम माला * कनकबेलि जनु लगी तमाला ॥
मिलि बैठे दोउ कुंज सुहाई * कोटि काम रति छबिहि रुचाई ॥

दो०-नवल कुंज नवनागरी, नव नागर नँदनन्द ॥
प्रेमसिंधु मर्याद तजि, मिले उमँगि आनन्द ॥

सो०-विलसत मदन विलास, कोटि मदनगणके मथन ॥
युगल रूपकी रास, नित्य विलास विलासनिधि ॥

नागर श्याम नागरी श्यामा * शोभित कुंजकुटी छबिधामा ॥
चितवत दुर दुर नैन लनोहैं * सो छबि वरणसकै कवि कोहैं ॥
रीझे श्याम नागरी छबिपर * नागरि निरखत श्याम सुभगवर ॥
देहदशाकी सुरति बिसारैं * अरस परस दोउ रूप निहारैं ॥
शोभित बदनै महाछवि छाये * सिथिल अंग श्रमबिंदु[6] सुहाये ॥
इन्द्रिय बर राजीव कमल जनु * फूलि रहे मकरन्द[*] भरे मनु ॥
बैठे कुंजद्वार सुखदाई * कोमल किसलय सेज सुहाई ॥
लटकति चहुँदिशि कुसुमित वेली * फूलि रही तरुडार नवेली ॥

१ हाल्की २ गहरी ३ हद ४ सुखके समुद्र ५ मुख. ६ पसीने
* पुष्परस

हरित भूमि छवि बरणि नजाई * बहत समीरै सुखद पुरवाई ॥
आये उमहि मेघ सुखकारी * परत बूंद शीतल श्रमहारी ॥
भीनत सुरँग चूनरी सारी * मन सकुचत लखि रसिकबिहारी
बूँद बरावत मोहन पातन * हँसि हँसि करत प्रेमकी बातन ॥
दो०–भीजे रस रँग प्रेम सुख, जल भीजे दोउ गात ॥
भीजे अम्बर कुंजगृह, श्यामा श्याम सुहात ॥
सो०–यह अचरजकी गाथ, को मानै को कहिसकै ॥
गोपसुताके साथ, रमत ब्रह्म द्रुम कुंजतर ॥
इहिबिधि करि विलास बनमाहीं * कह्यो श्याम श्यामाके पाहीं ॥
अब गृह जाहु साँझ नियराई * मात पिता करिहैं दुचिताई ॥
यह रसरीति 'गुप्तकी नीकी * तुम प्यारी अति मेरे जीकी ॥
करतें कौर डारि मैं आयो * तुमरो बोल सुनत उठि धायो ॥
मेरे प्राण बसत तुम पाहीं * इक छण तुमको बिसरत नाहीं॥
सुनि सुनि बातें पियकी प्यारी * करति मनहिं मन आनँद भारी॥
अति सनेह बोली सकुचाई * सुनहु प्राण प्रीतम सुखदाई ॥
कहा करौं पग जात न घरको * मन अटक्यो नहिं मानत डरको॥
दृग तुमको देखत सुख पावैं * गृह गुरुजन मोहिं नेकु न भावै ॥
बरजहु अपनी चितवन तुम हरि * और मद मुसकान मनोहरि ॥
तुमरी नेकु सहन यह बानी * सहियत हैं हम सर्व सहानी ॥
वशीकरन है इनके माहीं * बिवस भयो मन मानत नाहीं ॥
दो०–ऐसी विधि परगट करत, दंपति निज अनुराग ॥
भये परम आनन्द रस, वदन आपने भाग ॥

१ हवा २ हाथसे ३ आंख ४ छीपुहर.

सो०-श्याम लई उरलाय, प्रिया बोधि पठई घरहि ॥
चले आप सुख पाय, सुन्दर घन सुखके सदन ॥

करति जननि अवसेर विशाला * पहुँचे सदन श्याम तिहिकाला ॥
लीने धाय लाय उर मैया * कहति लालकी लेहुँ बलैया ॥
परवे कौर हारि उठि भागे * सुनत गाय ग्यानी अनुरागे ॥
लोही गाय आपनी ग्यानी * ताते प्रीति अधिक उर आनी ॥
वहि तो नाहिन मेरी गैया * वृन्दावन भरम्यों सुन मैया ॥
गोवर्द्धन यमुनातट सारो * वृन्दावन ढूँढत सब हारो ॥
कोऊ सखा सग तहँ नाहीं * फिर्यो अकेलो बनके माहीं ॥
युवती एक मिली धौं कोही * सो पहुँचाय गई घर मोही ॥
सुनि यशुदा मन अति अकुलानी * धोये पद लै तातो पानी ॥
तुरत श्यामको भोजन दीनो * निरखि मुखारविंद सुख लीनो ॥
लीलासागर कुँवर कन्हाई * सदा सदा भक्तन सुखदाई ॥
ब्रजवासी प्रभु सब गुणआगर * नँदनन्दन सुन्दर सुखसागर ॥

दो०-अति श्रीकीरति नँदनी, रूपराशि गुणखान ॥
चली श्याम सुखदै भवन, नागरि नवल सुजान ॥

सो०-लई खोलके हाथ, आँचरते मोती लरी ॥
सखी मिली इक साथ, बूझत कह तू लाडिली ॥

तासों ब्योरौ कहि समुझायो * गई इती यह काज बतायो ॥
कह्यो सखी तब सुनरी प्यारी * ऐसी निधरक भई कहारी ॥
ब्रज घर घर तू फिरति अकेली * सग नहीं कोउ सखी सहेली ॥
मोको सग बोलि नहि लीनी * ऐसी तै करनी यह कीनी ॥

१ घर. २ समूह ३ हिसाब.

मातहि गई अबहि तू आई * बीतो दिवस निशा नियराई ॥
पायो हार किधौं पुनि नाहीं * देखहु मोहिं साद मनमाहीं ॥
चतुर सखी मनमें यह जानी * मिलवतिहै यह झूठी बानी ॥
यह तौ गई श्यामके पासा * आवतीहै करि भोग विलासा ॥
कहु प्यारी किन हार चुरायो * कैसे जाय वहाँतें पायो ॥
ब्रजयुवतिन सबहिन मैं जानौं * कहौ तौ सबके नाम बखानौं ॥
ताको नाम लेहि किन लीन्हों * प्यारी तेरे गुण मैं चीन्हों ॥
चोर तुम्हारो कुँवर कन्हाई * तिनसों जाय विलँस तू आई ॥

दो०–रसवश कीन्हे श्यामतैं, कहा बनावति बात ॥
कहे देत रस रँग भरे, अरु सोहैं सब गात ॥

सो०–कह बहकावति मोहिं, कहाँ हार कहँ ग्वालिनी ॥
तबते जानति तोहिं, जबतें तैं हरि सँग कियो ॥

इन बातनि कछु पावति हैरी * तोहिं यहै नित भावति हैरी ॥
देखत मोहिं अकेली जबहीं * नई बात उपजावति तबहीं ॥
बिनही देखे झूँठ लगावै * नाहक मोसों बैर बढावै ॥
सौंह दिये बूझति मैं तोहीं * जोर कहतिकै देख्यो मोहीं ॥
जब जानी प्यारी खिसैआनी * तब वह चतुर सखी मुसकानी ॥
तब हँसि कह्यो जाहु घर प्यारी * तू जीती मैं तोसों हारी ॥
चली भवन वृषभानुदुलारी * अति अवसेरै कहत महतारी ॥
गई प्रात राधा नहिं आई * दिवस गयो निशियाम विहाई ॥
हार काज मैं त्रास दिखाई * ताते रूसरही कहुँ जाई ॥
हैहै धौं काके घरमाहीं * कहां जाउँ मैं ढूँढन ताहीं ॥

१ भोगकरके २ विकल ३ फिकरसे ४ एक पहर रात्रि ५ डर

जाइ हार यह कहि पठिताई * सुता सनेह अधिक अकुलाइ ॥
सुनि है बात मेहर कहुँ जबहीं * मोपर अति रिसकरि है तबहीं ॥

दो०–सोचति जननी विकल अति, मन न लहति विश्राम ॥
उर डराति ताही समय, गई कुँवरि निज धाम ॥

सो०–देखति ही उठि धाय, हरषि लई उर लायके ॥
सुता माय उरलाय, शोच मिट्यो धीरज भयो ॥

लैरी मात हार मैं पायो * जाकारण मोहिं त्रास दिखायो ॥
मनही मन कीरति सकुचाइ * पौंच कगी मैं याहि रिसाई ॥
अति पुनीतै राधिका प्रवीनी * कृष्ण मिलनहित यह मति कीनी ॥
अगम अगोचर है प्रभु जोइ * मन वनितनवेश कीने सोइ ॥
जो प्रभु शिव सनकादिक ध्यावै * मन गोपिनसग सो सुख पावै ॥
हरिकी कृपा अगोचर सारी * निगमनहूँ वे अगम न भारी ॥
प्रीतिविवस सबते गिरिधारी * राजा रक पुरुष कहँ नारी ॥
देवकि उदर प्रीति वश आये * प्रीतिहिते यशुमति पय प्याये ॥
प्रीतिविवस वन धेनु चराई * प्रीतिविवस नदकुँवर कहाई ॥
प्रीतिहिके वश दही चुरायो * प्रीतिविवस ऊखल बँधवायो ॥
प्रीतिविवस गोवर्धनधारी * प्रीतिविवस नटवर वनवारी ॥
प्रीतिविवस गोपिन सँग कामी * प्रीतिविवस वृन्दावनधामी ॥

दो०–श्याम सदा वश प्रीतिके, तीन भुवन विख्यात ॥
विना प्रीति नहिं पाइये, नन्दमहरको तात ॥

---

१ नदवाला २ पवित्र ३ चतुर ४ जाननयोग्य नहीं ५ स्त्रियोंमें ६ पेट ७ मशहूर

सो०–प्रीति करहु चित लाय, ब्रजबासी प्रभुपदकमल ॥
कहत सुनत श्रुति गाय, प्रभु रीझतहैं प्रीतिको ॥

॥ अथ प्यारीके घर मिलनेकी लीला ॥

भये श्याम नागरि वश ऐसे * फिरति छांह संगहि सँग जैसे ॥
वदनकमलरस रूप लुभाने * रहत मिली मुख जो मडराने ॥
वचन नादरस मृग जो गीधे * नैन कटाक्ष बक शॅर बीधे ॥
कबहुँ श्याम यमुनातट जाहीं * विन प्यारी देखे अकुलाहीं ॥
कबहुँ कदम चढि मग अवलोकैं * कबहुँ जाय वन कुंजविलोकैं ॥
गृह वन लगत कहूँ मन नाहीं * मिलन प्रकार चहत चितमाहीं ॥
तब वृषभानु पुरातॅन आवैं * मुरली मधुर बजावै गावैं ॥
प्यारी प्रगट श्याम गति देखी * मनहीं मनहि सिहात विशेखी ॥
अति अनुरॉग भरे दोउ नागर * गुणसागर रस रूप उजागर ॥
अरस परस दोउ चाहत ऐसे * शशि चकोर अॅबुॅज अॅलि जैसे ॥
चली यमुन वृषभानुदुलारी * शोभित संग नवल ब्रजनारी ॥
देखे नन्दसुवन तेहि खोरी * व्याकुल प्रेम बिकल मति भोरी॥

दो०–सखिन संग लखि नागरी, मन डरपी सकुचाय ॥
श्याम परे फंद कामके, कौन कहै समुझाय ॥

सो०–सखियनके संकोचॅ, बोल सकत नहिं मुख वचन ॥
हृदय भयो अति शोच, देखि विरह व्याकुल हरिहि ॥

इतहि सखिनसों बात बनावै * उतहि श्यामको भाव जनावै ॥
मुख मुसकाय सकुच पुनि लीने * सहज अलक निरवारन कीने ॥

१ कान. २ चतुर अर्थात् राधिका. ३ तीर. ४ पुराना. ५ तारीफ करतीहै. ६ प्रेम. ७ कमल. ८ भौरे. ९ लाज.

एक सखी यमुनासों आवति * ताहि भेंटि यों वचन सुनावति ॥
मेरे सदन आइयो आली * हर्षभये यह सुनि वनमाली ॥
प्यारी गुप्त भाव जो कीनो * श्याम सुजान जानसो लीनो ॥
हर्षि गये तब निज गृह मोहन * प्यारा चली सखिनके गोहन ॥
चतुरसखिन मनमें लखि लीनो * भावँ कछू हरिसों इन कीनो ॥
हरुवे आपुसमें बतरानी * हरितनलखि कछु यह मुसकानी॥
पुनि मुसकाय कमल मुख फेन्यो * सदँन बुलाय सखीको टेन्यो ॥
गये श्याम उत हर्ष बढाई * ये अति चतुर करी चतुराई ॥
और भाव कैसो मन कोऊ * आजँ रैन मिलिहैं ये दोऊ ॥
ले यमुनाते जल अतुराई * सखिन सग प्यारी घर आई ॥

दो०–भाव दियो निशि आयहैं, मेरे मोहन आज ॥
अति हर्षित अंगन सजित, भूपण वसन समाज ॥

सो०–सहज रूपकी खान, अंग शृंगारत लाडिली ॥
को करिसकै बखान, त्रिभुवनपति हरिवल्लभा ॥

अंगसिंगार कियो हरिप्यारी * वेणी रचि निज पाणि सँवारी ॥
मोतिन सग जराऊँ टीको * कियो बिंदु बधनको नीको ॥
लोचनँ अजन रेख बनाई * श्रवगनँ तरवनकी छबि छाइ ॥
नासाँनथ अतिही छबि छाजै * नागवेल रँग अधरँन राजै ॥
शुभग अंग सब नौसत साजै * सुरँग सुगध वसन शुभ भ्राजै ॥
मनमोहनको पथ निहारै * कबहुँकि उत्कंठा जिय धारै ॥
भयो वालशशि अस्तनिहारी * कहति आज ऐहैं गिरिधारी ॥

१ समूह २ प्रेम ३ घर ४ रातको ५ आंख ६ कान ७ नाकमें ८ होठोंमें ९ लालसा

आवन पैहै कैधौं नाहीं * मैं आवत हैहैं मगमाहीं ॥
कैधौं तात मात भय करिहैं * के आवत मेरे घर डरिहैं ॥
आवैंगे कैधौं हरि नाहीं * यों शोचति प्यारी मनमाहीं ॥
कबहूँ रचि रचि सेज सँवारे * हरि ऐहैं मन हर्ष विचारे ॥
सुमन सुगध सेज पर धारै * पुनि पुनि कर अभिलाष निहारै

दो०–आवैं कबहुँ अचानकहुँ, जो मो गृह घनश्याम ॥
डारति अति अनुराग भरि, सुभग पांवडे धाम ॥

सो०–प्रगटे कृपानिधान, यों अभिलाषा करतहीं ॥
को कहिसकै बखान, भयो जुसुख छवि दुहुँनगन ॥

वह छवि कापै जाति वखानी * वह रस झिझक मद मुसकानी ॥
वह मृदु मधुर मद मुसकानी * वह सयोग प्रेम सकुचानी ॥
वह शोभा वह चितवन बाँकी * वह रस प्रेम सुभग दुहुँ थाँकी ॥
वह सुख श्रीराधा माधवको * जो कहिसकै आहि जग कविको ॥
जाकी महिमा वेद न जाने * कबि ताको केहि भाँति बखाने ॥
श्यामा श्याम सेजपर सोहैं * अरस परस दोऊ मन मोहैं ॥
गुणआगर छबिसागर दोऊ * कोटि कामरतिसम नहिं सोऊ ॥
मत्त प्रेमरस विवस विहारैं * युगल[1] परस्पर अंग सँवारैं ॥
लटपटि पाग सँवारति प्यारी * अलक सुधारत श्रीगिरिधारी ॥
रसविलास दोऊ अनुरागे * आलिंगन चुंबन रस पागे ॥
हास विलास विविध रसरीती * इह सुखरैनि यामै[3] त्रय वीती ॥
अतिरसमत्त युगल अलसाने * पुनि पौढे दोऊ लपटाने ॥

दो०–निशि निघटी नमता मिटी, उडुगणज्योति[4] मलीन ॥
गये कुसुम कुम्हिलायके, भई दीपछवि छीन ॥

---

1 हेलमेल 2 दोनों 3 पहर 4 तारागण

सो०–विकसे सरस सरोज, भयो पवन शीतल सुरभि ॥
धरी उतारि मनोज, पनच आपने धनुषते ॥

सरस वचन बोली तब प्यारी * जागहु प्राणनाथ वनवारी ॥
भयो प्रातको समय कन्हाई * प्राचीदिशि[1] पीरी पर आई ॥
चढ़न मलिन चिरहचुहचानी * अलि[2] छूटे कुमुदिन सकुचानी ॥
बोले तमचरें[3] जहँ तहँ बानी * मिले कोक कोकी सुखमानी ॥
उठहु प्राणपति सदन सिधारौ * है ब्रज घर घर वैर हमारौ ॥
लगीं रहति परखति ब्रजनारी * जागहिं जिन गुरजनभय भारी॥
सुनत उठे मोहन मुसकाई * चले सदन अपने अतुराई ॥
गृहतें निकसत सखियन जानी * देखि दरश तनुदशा भुलानी ॥
प्रगट दरशदै गये कन्हाई * यह उनकी मनसाध पुराई ॥
शीश मुकुट मोतिनकी माला * पीन वसन कटि नैन विशाला ॥
श्याम बरन तनु सुन्दरताइ * अंग अंग छबि वरणि न जाई ॥
देखि रूप मन रह्यो लुभाई * निकस गये गृह कुवँर कन्हाई ॥

दो०–बार बार जिय लाडिली, यह सोचति पछितात ॥
गये श्याम आलस भरे, नेकु न सोये रात ॥

सो०–देखे जिन सखि कोय, श्याम गये मो सदनते ॥
मैं राखौं है गोयँ, अबलगि यह रस सखिनसों ॥

देखौं आय पवँरिहि प्यारी * जहाँ तहाँ ठाढीं ब्रजनारी ॥
सकुच गई चिंता उपजाई * बार बार मन मन पछिताई ॥
हरिसों प्रीति गुप्तही मेरी * सो इन आज प्रगट करि हेरी ॥
निसरे श्याम हमारे घरसों * इन जान्यों हैहैं अटरिसों ॥
नितही नित बूझति ये आई * मैं निदन्यो इनको सतराई ॥

१ पूरबदिशा. २ भौंरे ३ मुर्गा ४ दिवाकर.

अवतौ श्याम प्रगट इन देख्यो * करिहै मोसों बहुत परेख्यो ॥
यह तौ दाँव भलो इन पायो * अब कैसे करि जाय छिपायो ॥
अवहीं बूझहिंगीं सब आई * कह करिहौं उनसों चतुराई ॥
प्रगट करों तो होय अनीती * राखन गुप्त कह्यो हरि प्रीती ॥
शोच पन्यो कछु बात न आवै * बार बार मन प्रभुहि मनावै ॥
प्राणनाथ हरि होउ सहाई * जातैं मेरी पति रहिजाई ॥
जैसे बोधैं सखिनको होई * दीजै नाथ बुद्धि अब सोई ॥

दो०–ऐसे शोचति लाडिली, कबहू प्रभुहि मनाय ॥
कबहू प्रभुको सुख समुझि, प्रेम मग्न हैजाय ॥

सो०–भयो बोध उर आय, सुमिरतही मनभावनो ॥
कहिहौं सखिन बुझाय, मन मन हरषी नागरी ॥

परम कुशल राधे हरि प्यारी * रच्यो सखिनको बोध विचारी ॥
अति आनँद पुलकितनु भायो * शोच मोह उरते बिसरायो ॥
जो छबि सुन्दर कुँवर कन्हाई * गये प्रात सखियन दरशाई ॥
उनसों सोई रूप बखान्यों * यह बिचार प्यारी उर आन्यों ॥
प्यारी पियके गैर्व गहेली * अग अग छबि पुर्जे भरेली ॥
बैठी सदन विराजउ रूरी * श्याम सनेह सुधारस पूरी ॥
कहति परस्पर सखि पैरहासा * कहति चलौ राधाके पासा ॥
ह्वैहै निधरक घरमें बैसी * देखहिं चलो बदनछबि कैसी ॥
कैसे अग अभूषण कैसे * कछु बदले कैधौंहैं वैसे ॥
आज रेनि हरिसों रति मानी * कहिहै कहा सुनै चलि बानी ॥
राधा गृह गवनी ब्रजनारी * गईं जहाँ वृषभानुदुलारी ॥
देखि नागरी मुख नहिं बोली * जान्यों आई करत ठठोली ॥

१ ज्ञान २ हृदयसे ३ घमंड ४ देर ५ हसी

दो०—सहज रही बोली नहीं, कछू बदनसों बैन ॥
निकट बुलायो सखिनको, नयननहीकी सैन ॥
सो०—इतलीनों इन जान, परमचतुर आली सबै ॥
यह कछु रच्यो सयान, देख हमैं बोली नहीं ॥
अपनो भेद कछू नहिं देहै * कहा बोध रचिकै धो कैहै ॥
अपनि जाँघ बल चीर चुरावै * कसेहुँ प्रकट न काहु जनावै ॥
निधरत भई श्याम सँग पाई * भूलहु मति याकी लरिकाई ॥
निरखी भृकुटी ओर निहारी * कहै कहा धौं बात सँवारी ॥
राखति गर्व तुमहुँ सब कोऊ * देखहु बोल नहीं किन कोऊ ॥
कह्यो बिहँसि तब इक ब्रजनारी * सुनौ अहो वृषभानुकुमारी ॥
आज कहा मुख मूद रहीहै * कापर रिस करि मौन गहीहै ॥
हमसों कहति नहीं सो परी * हम तौ सग सखी हैं तेरी ॥
कै देवनको ध्यान धरोरी * कैं सुभाव कछु यहै पर्योरी ॥
जब आवति हम तेरे प्यारी * तब तब यही धरन तैं धारी ॥
तुम दुराव कित राखति हमसों * हमहूँ कछु राखतिहैं तुमसों ॥
ऐसो सोच कहा मनमाहीं * जो जवाब तोहिं आवत नाहीं ॥
दो०—कछु दिन ते तेरी प्रकृति, अरी परी यह कौन ॥
निठुर भई हमसों रहति, जब तब साधे मौन ॥
सो०—अपने मनकी बात, कछु हमसों भाषति नहीं ॥
ऐसे कहि मुसकात, प्यारीसों सब नागरी ॥
मनही मन जानति सब प्यारी * मोसों हँसी करति ब्रजनारी ॥
परमप्रवीन सकल गुनखानी * बोली मधुर मनोहर बानी ॥

१ मुख २ सखी ३ चुप. ४ स्वभाव. ५ बोलती ६ परमचतुर.

सुनहु सखी वूझत यह हमसों * कहा बुझाय कहौं मैं तुमसों ॥
आज प्रात इक चरित नयोरी * जात इतै कछु दृगन लख्योरी ॥
नीके नेकु न देखन पाई * तबहींते मन रह्यो लुभाई ॥
कै घैनश्याम कि श्याम कन्हाई * यहै शोच उर रह्यो समाई ॥
बकैपक्ती कै है गन मोती * पीत दुकूल कि दामिनि जोती ॥
इन्द्र धँरासन कै बनमाला * शीश मुकुट कैधौं अरि ब्याला ॥
मन्द मधुर जलधरकी गाजन * कैधौं पग नूपुरध्वनि बाजन ॥
देखे आज श्याम जबहीतें * पर्यो यहै धोखो तबहीतें ॥
कहा कहौं हरिकी चपलाई * ऐसो रूप गयो दरशाई ॥
भरी श्यामरस कुँवरि सयानी * कहति सखिनसों निधरक बानी

दो०–सखी कहति सब आपुसें, सुनहु न याकी बात ॥
प्रगट करन आईं जु हम, आपुहि प्रगटति जात ॥

सो०–हम देखे जिय श्याम, तैसीही इनहू लखे ॥
दोष देति विन काम, यह सूधी हमहीं कुटिल ॥

इतनहि रह्यो और जिन माखौ * जो चाहौं अपनी पति राखौ ॥
इतसों तुम चाहति हो जीतौ * मनते गव करो यह रीतौ ॥
यह हरिकी प्यारी पटरानी * को याकी बुधि सकै बखानी ॥
हम याकी दासीसरि नाहीं * देखहु सखी समुझ मनमाहीं ॥
हम देखत कछु और सुभाऊ * यह देखति हरिको सतभाऊ ॥
याकी प्रस्तुति कहा बखाने * इनहीं भले श्याम पहिचाने ॥
तब हँसिबह्यो सखिन सुनि प्यारी * तैं जो लखे सु हैं बनवारी ॥
प्रातहिं ते जो आज निहारे * गये कान्ह वे मेघनकारे ॥
मोर मुकुट शिरमोर न होई * कटि पट पीत न दामिन सोई ॥

१ श्रीकृष्ण २ बगलोंकी पंक्ति ३ वज्र ४ बिजुली ५ धुनुष ६ मद

मुक्तमाल बनमाल सुवेसू * नहिं बकपाति न धनुष सुरेसू॥
पगनूपुरध्वनि गर्जन नाहीं * मत राखौ धोखो मनमाहीं ॥
देखे तैं प्रातहिं गिरिधारी * काहेको शोचति मन प्यारी ॥

दो०–धनि धनि ब्रजकी नागरी, हरि छबि लखति अनूप ॥
मोहिं होत धोखो तबही, जब देखति बहुरूप ॥

सो०–तुम देखति हरि गात, कैसे दृग ठहराय सब ॥
मोपै कह्यो नजात, करिहारीकै तौ यतन ॥

तुम दरशन पावति री कैसे * मोहू श्याम दिखावहु तैसे ॥
वे तौ अतिछैछि चपल कन्हाई * तुम कैसे देखति ठहराई ॥
कैसो रूप हृदयमें राख्यो * मोसों सखी साँच सब भाख्यो॥
मैं देखत पावति हरिनीके * रहति सदा अभिलाषा जीके ॥
धनि धनि तू वृषभानुदुलारी * धनि तुम पिता धन्य महतारी॥
धनि सो दिवस रैनि सो बारा * जब तैं लीनो री अवतारा ॥
धनि तेरे वश कुंजविहारी * धनि तैं वश कीने गिरधारी ॥
भाव भक्ति मति रति धन सोऊ * एक सुभाव धन्य तुम दोऊ ॥
तोहिं श्याम हम कहा दिखावैं * तू हरीको हरि तोको भावै ॥
एक जीव द्वैदेह तुम्हारी * वे तो मैं तू उनमें प्यारी॥
उनकी पटतरैको तू दीजै * तेरी पटतर उनको लीजै ॥
सुधा सुधागुण क्यों बिलगाई * गूँगेको गुर कह्यो न जाई ॥

दो०–तू उनके उँरमें बसी, वे तेरे उरमाहिं ॥
अरस परस ज्यों देखिये, दर्पण दर्पण छाहिं ॥

सो०–कहौ कौनपै जाहिं, तुम दोउ निर्मल गातँ अति ॥
वे तेरे रँगमाहिं, तू उनके रगमें रगी ॥

१ उपमारहित २ चमक ३ बराबर ४ छाती ५ शीशा ६ शरीर

नीलाम्बर श्यामा छवि तेरे * तुम छवि पीतवसन उनकेरे ॥
घन भीतर दामिनी विराजै * दामिनि घनके चहुँ दिशि राजै॥
तुम अनूप दोऊ सम जोरी * नन्दनँदन वृषभानुकिशोरी ॥
सुनि सुनि सखियनके मुखवानी * बोली राधा कुँवरि सयानी ॥
सुनि ललता साची कहि मोसों * मैं बूझति सकुचतहौं तोसों ॥
मोसों मानत नेह कहाई * मेरीसों कहि मोहिं सुनाई ॥
तुमतौ रहत श्यामसँग नितही * मिलति जाय उनसों जित तितही
उनके मनकी सब तुम जानौ * हाहा मोसों साँच बखानौ ॥
सुनि राधा इतरात कहारी * तोते और कौन है प्यारी ॥
तेरे वश नँदनन्दन ऐसे * रहत पवन पखावश जैसे ॥
ज्यों चकोर शशिके वशमाहीं * है शरीरके वश परछाहीं ॥
नादविवस मृग देखिय जैसे * मनमोहन तेरे वश तैसे ॥

दो०–मिला खिरकतू श्यामको, दई धेनु दुहि तोहि ॥
तेरे वश हरि तबहिंते, कहा भुरावति मोहि ॥

सो०–वरणौं कहा सनेह, नेकहु तुम न्यारे नहीं ॥
हौ तुम एकहि देह, वे दक्षिण तुम वाम अँग ॥

॥ अथ गर्वव्याजविरहलीला ॥

सुनि प्यारी ललता मुख वानी * मैं ऐसी जियमें यह आनी ॥
और नहीं कोऊ मो सरवी * हौं राधा आधा अँग हरिकी ॥
अपनेही वश पियको करिहौं * अनत जात देखहुँ तौ लरिहौं॥
ऐसे गर्व कियो जिय प्यारी * घर घर गईं सकल ब्रजनारी ॥
इह अन्तर आये गिरिधारी * गर्व विभंजन जन सुखकारी ॥

१ बिजली २ चन्द्रमा ३ गाय ४ घमंड ५ नाश करनेवाले

हरि अन्तर्यामी अविनासी * जानी प्यारी गर्व उदासी ॥
उझकि झाँकि प्यारी तन हेर्यो * प्यारी देखतही मुख फेर्यो ॥
कह्यो कान्ह तुम मानत नाहीं * उझकत फिरत घरन ब्रजमाहीं॥
मिसही मिस युवतिनको हेरो * नेक नहीं छाँड़त घन घेरो ॥
कोउ जैसे तैसे अपने घर * तुम आवत मानत नाहीं डर ॥
ऐसे प्रेम गर्व करि प्यारी * प्राणनाथ तन नाहिं निहारी ॥
जान्यो द्वारे लगे कन्हाई * बैठि रही अभिमानैं जनाई ॥

दो०–हृदय श्याम सुख धाममें, राख्यो गर्व बसाय ॥
ठौर तहाँ पायो नहीं, रेह श्याम सकुचाय ॥

सो०–जहाँ रहत अभिमान, तहाँ बास मेरो नहीं ॥
सो राधा डरजान, आप लगे पछितान हरि ॥

तुरतहि गमन तहाँते कीनों * नहीं दरश प्यारीको दीनों ॥
चकित भइ प्यारी मनमाहीं * यहाँ श्याम आये क्यों नाहीं ॥
आपन आप द्वार पुन देख्यो * तहाँ नाहिं नदलालहिं पेख्यो॥
झाँकतही फिर गये कन्हाई * मनहीं मन श्यामा पछिताई ॥
मोते चूकपरी अति भारी * ताते मोहन मोहिं बिसारी ॥
एक तौ बैठि रही गँवानी * दूजे मैं हरिसों अहरानी ॥
मेरी बुद्धि जानि कै हीनी * मोसों श्याम निठुरता कीनी ॥
वे बहुनायक कुंजविहारी * मोसों उनके कोटिक नारी ॥
कासे कहौं हरिहि को लावै * को अब मोको हरिहि मिलावै॥
भई विरह व्याकुल अकुलाई * बदनसरोज गयो कुम्हलाई ॥
तब आपुनको निठुर कहावै * सुमिरि प्रीति उर भरि भरिआवै॥

---

१ भीतरकी जाननवाले २ छिपा ३ घमडम आई है ४ भूलगये
५ घमड ६ मुखकमल

नेकु नहीं धीरज उर धारै * नैन सरोजनसों जल ढारै ॥
दो०-भई बिकल अति नागरी, विरह विथाकी पीर ॥
खान पान भावै नहीं, सुधि बुधि तजी शरीर ॥
सो०-घर बाहर न सुहाय, सुख सब दुखदायक भये ॥
रह्यो शोच उरछाय, ब्रजबासी प्रभु मिलनको ॥
राधासदनसखी पुनि आई * देखि दशा मन अति भरमाई॥
अति व्याकुल तनु वदन मलीना * नीरै बिहीन मीनै जिमि दीना॥
कर गहि गहि बूझति ब्रजनारी * कहा भयो तो कहँरी प्यारी ॥
ऐसे बिवस भई तू जाहे * हमै सुनाय कहत नहि काहे॥
अति प्रसन्न देख्यो तोहिं तबहीं * क्यों मुरझाय गईरी अबहीं ॥
बहुरि लखेधौं कतहु कन्हाई * उनहू तोहिं ठगौरी लाई ॥
श्याम नाम सुनि श्रवर्णन जागी * जान्यो हरि आये अनुरागी ॥
आतुर सखी कठ लपटानी * चूक परी मोते कहिं बानी ॥
अब अपराध क्षमो रिसत्यागी * करुणा करि मोहिं करहु सभागी
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी * रही शोचि राधिकहि निहारी ॥
शीतल जलसों मुख पखरायो * पोछि आँचरण वचन सुनायो॥
आज भई कैसी गति तेरी * परम चतुर ब्रजमें तू हैरी ॥
दो०-भयो अलिनके वचनसुनि, कछु चेतन उर आय ॥
तब जानी एतो सखी, गई हृदय सकुचाय ॥
सो०-क्यों तुम वदन मलीन, काहे तू ऐसी भई ॥
कहु प्यारी परवीन, बार बार बूझति सखी ॥

१ घर २ जल ३ मछली ४ कानोंसे ५ धुलाया ६ सखियोंके

बोली सब सखियनसों प्यारी * तुमसों कहो दुराव यहारी ॥
मैं तो हरिके हाथ बिकानी * उन मोहि तजी कुटिल मति जानी
अपनी कथा श्यामकी करनी * प्रकट कहौं तुमसों सब बरनी॥
बैठीही मै सदन अकेली * झाँके आय द्वार हरि हेली ॥
मैं मनमें कछु गर्व बढायो * आदर करि नहिं भवन बुलायो
उन मेरे मनकी सब जानी * अन्तर्यामी सारँगपानी ॥
कमलनैन वे गर्व प्रहारी * जाति रहे सखि मोहिं बिसारी॥
तबते विरहविकल अति कीनो * अहंकार यह फल मोहिं दीनो॥
चित न रहै कितनो समझाऊ * अब कैसे करि दरशन पाऊ ॥
भयो भवन वन मो कहँ आली * नहीं सुहात बिना बनमाली ॥
सुनहु सखी लागति मैं पाऊ * अब हरि मिलै सो करहु उपाऊ।
बिन मनमोहन कुँवर कन्हाई * भये सुखद सब मो दुखदाई ॥

दो०-गिरिकन्यापति तिलककर, दाहत अनल समान ॥
शिवसुत वाहन भखनको, भयो हलाहलपान ॥

सो०-जलधिसुतासुत हार, भयो इन्द्र आयुध सखी ॥
मलयज मनहुँ अगार, शाखामृग रिपु बसनवर ॥

सखी दशा मेरी यह हेरी * भयो काम अब मोको वैरी ॥
वारिज भव सुत प्रियकी चाली * अब नहि हरिसों करिहौं आली॥
ऋतु विचारि जो मानहिं करिये * सोउ जरि जाहु न उरमें भरिये॥
अब सुभाव रहिहौ हरि साथा * मोहिंमिलावहु सखि मजनाथा॥
सुनि राधे करनी यह तेरी * हमसों भेद कियो तैं घेरी ॥

१ छिपाव. २ घर. ३ कृष्ण ४ महादेव ५ अग्नि ६ मोती ७ अस्त्र ८ चन्दन ९ बदर

उनके गुण जैसे नहिं जाने * अबहीं ते ऐसे ढँग ठाने ॥
एकहि बार मिली तू धाई * नहिं राखी मर्याद बड़ाई ॥
तैहीं उनको मूढ चढायो * तब नहिं हमको भेद जनायो ॥
भवन बिपिन सँग डोलन लागी * वे बहु तरुणि रवण अनुरागी ॥
निज कर अपनी महत गँवायो * परवश परि कौने सुख पायो ॥
मेरो कह्यो अजहुं मनमाहीं * हित करि मानेगी धौं नाहीं ॥
धीरज धार कत मरत वृथाही * तूहू मान करति क्यों नाहीं ॥

दो०—बात आपनी आपने, कर हैं देखु विचार ॥
भई कहा ऐसी विवस, पूरी एकहिवार ॥

सो०—पुरुष भँवरजियजान, भोगी बहुत प्रसूने को ॥
बिना किये बहु मान, कौने पिय निज वश किये ॥

कहति सखी तुम तो यह बाता * कप होत सुनि मेरे गाता ॥
मैंतौ मान श्यामसों कीनो * ताते इतनो दुख मोहिं दीनो ॥
अबतौं भूलि मान नहिं करिहौं * श्याम मिलहिं तौ पाँयन परिहौं ॥
विनती करि करि उनहिं सुनाऊँ * यह अपनो अपराध क्षमाऊँ ॥
चूपपरी मोते मैं जानों * उनको यह अपराध न मानों ।
वे आवतिहैं मेरे नीके * मैंहीं गव धरयो सखि जीके ॥
मेरे गर्वते कहा सरयोरी * मिथ्यो हृदय सुख दु ख भयोरी ॥
जाते हानि आपनी होई * कहो सखी कीजे क्यों सोई ॥
मानबिना नहिं प्रीति रहैरी * प्रगट देखि मोहिं कहा कहैरी ॥
धाय मिलेकी गति वेरासी * भइ अधीन फिरति चेरासी ॥
अपनो भेद उन्हैं तै दीनो * तव दुराव हमहूँसों कीनो ॥
भयबिन प्रीति होति नहिं प्यारी * सच मानहिं सखि सीख हमारी ॥

---

१ पुष्प २ घमड ३ घमड.

दो०–पुनि पुनि सिखवति तुम सखी, मान करनको मोहिं ॥
मन तौ मेरे हाथ नहिं, मान कौन विधि होहिं ॥

सो०–उमगभरत दिनरात, श्यामगुण अभिलापकरि ॥
मन नहिं मानत बात, मानसजौं कैसे सखी ॥

मन मोसों अब बाम भयोरी * कहा करौं हरि सग गयोरी ॥
अब अपनो हित उनहिं न जानौं * मुदित मूढ अपमान न मानौ॥
इन्द्रिय सब स्वारथ रस पागी * गईं संग मनहीके लागी ॥
घर फूटे क्यों रह्यो परैरी * मनहिं विना को मान करैरी ॥
अब कोउ मेरे सग नाहीं * रही अकेली मैं तनमाहीं ॥
तापर भयो काम अब वैरी * विरह अग्नि तनु जारत हैरी ॥
इतने पर तुम मान करावति * कहौ कौन सखि यह यहनावति
मैं तौ चूक आपनी मानी * मोहिं मिलावहु श्यामहिं आनी॥
अवतौ क्योंहू मान न करिहौं * ऐसी बात कहैं तिहि लरिहौं ॥
आली मोहिं नँदनन्दन भावै * सोइ हितू जो आनि मिलावै ॥
अब जो मिलहिं श्याम बड़भागी * फिरति रहौं संगहिसँग लागी॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी * दारुण विरह बिथा उर लागी॥

दो०–देखि दशा सहि नहिं सकी, अली उठी अकुलाय ॥
हम राधाकी प्रिय सखी, रचिये वेगि उपाय ॥

सो०–कहैं श्यामसों जाय, ऐसी चूक परी कहा ॥
दीजै याहि मिलाय, झुरि झुरि अति पीरी परी ॥

सखि न कह्यो तव सुनरी प्यारी * मतिहिं होय व्याकुल सुकुमारी॥
अबहिं जाय हम श्यामहि लावैं * नेकु धीर धरु तोहिं मिलावैं ॥

१ टेढा २ शरीर ३ सुरझाकर

पंटमों पोंछि बन्नें बैठाई * तरक बात बहु भाषि सुनाई ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारै * बार बार मुख काह उचारै ॥
सावधान करि सखी सयानी * दौरा गई यहै अनुरानी ॥
लखि हरिमुख ललता मुसकानी * हरि लखि हसे दुहूँ मन जानी॥
तब हरि ललतासों मुसकाई * बूझत चितवत नैन चुराई ॥
अति आतुर आई कत धाई * काहे बदन गयो मुरझाई ॥
बोली ललता तब मुसिकाई * सुनहु चतुर नँदनन्द कन्हाई ॥
आज एक अचरज लखि पायो * परम विचित्र न जात बतायो ॥
अतिही अद्भुत रचना जाकी * वर्णत बनत भाँति नहिं ताकी ॥
रीझरही मैं ताहि निहारी * रीझीगे लखि कुजविहारी ॥

दो०—मैं आई तुमसों कहन, चलहु दिखाऊँ नैन ॥
देखि परम सुख पायहौ, जो मानौ मो वैन ॥

सो०—एक अनूपम बाग, स्वर्णवण नहिं जाय कहि ॥
उपजत लखि अनुरागे, अतिविचित्र बानक बन्यो ॥

युगल कमल अति अमल विराजै * तापर राजहंस छबि छाजै ॥
द्वै कन्ली[1] तरु तापर सोहैं * बिन दल फल उलटे मन मोहैं ॥
तापर मृगपति[2] करत बिहारू * मृगपति पर सरवर[3] इकचारू ॥
द्वै गिरिवर[4] सरवर पर राजै * तिनपर एक कपोत[5] विराजै ॥
निकट सनाल कमल[6] द्वै फूले * शोभितते अधिदिसको झूले ॥
फूल्यो पुनि कपोत परमीको * एक सरोज[7] भावतो जीको ॥
तापर एक अमीफल लाग्यो * कीर एक तापर अनुराग्यो ॥
तहाँ एक कोयल द्वै खजन * तिनपर धनुप सुभग मनरजन ।
धनुपर नाग द्वै नागिनी कारी * मणिधरि एक नागिनी भारी ॥

१ कपडले २ मुख ३ मम ४ सिंह ५ पहाड़ ६ कबूतर ७ कमल

ऐसो अनुपम बाग सुहायो * घन्त नेहजल कछु कुम्हलायो॥
चलि घनश्याम सींचसो दीजै * शोभा देखि सफल दृग कीजै॥
करि विचार देखो मनमाहीं * बनी ललित सब अगनिमाहीं॥

दो०-सुनहु कान्ह सुन्दर नवल, छैल छबीले श्याम ॥
तुम्हें मिलनको नवल वह, अति व्याकुल है बाम ॥

सो०-कहा भयो जो मान, कियो प्रेमके वादते ॥
अति सुन्दरी सुजान, प्यारी जीवन जीयकी ॥

बरणौं श्रीवृषभानुदुलारी * चित दे सुनौ लाल गिरिधारी॥
कहो प्रथम वेनी रुचिराई * ललित पीठ पीछे छबि छाई॥
अहिनी मनहुँ कुटिल गति लागी * शशिमुख सुधा चुरावन लागी॥
रेखा अरुण सिंदूर सुहाई * शोभित शीश न जाति बताई॥
मानहु किरण लाल रविकेरी * तिमिरसमूह बिदारि उजेरी॥
शोभित कुटिल भ्रुकुटि अतिनीकी * मन हरिलेति भावती जीकी॥
जगत जीत करि निजबद्धचारी * मनहुँ मदन धनु धरे उतारी॥
केसर आड ललाट सुहाई * मनहु रूपकी बाड़ बँधाई॥
चपल नैन बिच नाक सुहाई * शोभित अधेरनकी अरुणाई॥
मनो युगल खजन शुँक शोभा * देखि एक बिंबाफल लोभा॥
दर्शन कपोल चिबुके दरग्रीवाँ * बरणि नजाति महाछबिसीवा॥
सुभग अग सब भूषण सोहै * कोटिकाम तियनिरखत मोहै॥

दो०-अति कोमल सुकुमार तनु, सकल सुखनकी सींर ॥
तुम बिन मोहनलाल पिय, व्याकुल अधिक शरीर ॥

---

१ स्त्री अर्थात् राधिका २ होठोंकी ३ तोता ४ दांत ५ ठोढी ६ शंखसी गरदन.

सो०–भरि भरि लोचन नीर, श्याम श्याम मुख कहि उठति ॥
चलहु हरहु यह पीर, मैं आई लखि धायके ॥

प्यारी विकल सुनत सुखदाई * सहि नहिं सके उठे अकुलाई ॥
चले विहँसि ललताके साथा * प्रेमहिके वश श्रीव्रजनाथा ॥
प्रेमविवस प्यारी पहँ आये * देखि दशा मन अति पछताये ॥
परी विकल तनुदशा बिसारी * प्यारी मुख देखत गिरिधारी ॥
नीलांबर निज करते टारी * लीनों सन्मुख बदन सुधारी ॥
जलदपटल मानहु बिलगाई * दियो चंद निकलंक दिखाई ॥
भयो चेत परसत पिय पौनी * सन्मुख दृष्टि परत सकुचानी ॥
लई उमँगि भर अंक कन्हाई * विकल देखि अँखियाँ भरिआई ॥
युगैल परस्पर लखि सकुचाये * इतनेहि विरह दोउ मुरझाये ॥
कंचन [3]बेलि तमाल सुहायो * मनहु प्रेमवश सुधासिचायो ॥
हरपि दुहूंदिश मुसकन फूले * परमानन्द फलन करि झूले ॥
मुरछन विरह तुरत बिसराई * लखि यह मिलन सखी हरषाई ॥

दो०–वह चितवन वह हँसि मिलन, वह शोभा सुख भार ॥
भई विवस ललता निरखि, इकटक रही निहार ॥

सो०–रहे परस्पर देख, अति आतुर दोऊ छविहि ॥
परन नदेत निमेष, तृप्त न क्योंहूं मानहीं ॥

ललता कहत सखिनसों बानी * देखहु सखि राधा मतुरानी ॥
कैसे अग अंग छबि देई * मिले श्याम मन धीर न लेई ॥
तृषावंत जिम अचवत नीरा * सोक तौ धारत पुनि धीरा ॥
यह आतुर छबिलै उर धारै * नेक न टूँगे इत उतको टारै ॥

१ आकाशरूपी वस्त्रको २ हाथ ३ दोनों ४ वेल ५ देखना. ६ आखको

ज्यों चकोर चदहि टक लावै * याकी सर मोऊ नहिं पावै ॥
होम अग्नि घृतगति है जैसी * याकी दशा देखिये तैसी ॥
यद्यपि श्याम श्यामा सँग प्यारी * छवि निरखत अति आनँद भारी
हाव भाव करि पियमन मोहै * विविध विलास वदनै छवि सोहै
विरह विकल मति तदपि भ्रमावै * मिलेहु प्रतीति न उरमें आवै ॥
तृषा मध्य जिमि सलिलैहि देखी * उपजति अधिकै प्यास विशेखी।
चितवत चकित रहत चितमाही * सपनकि सत्य ईश यह आही ॥
बुधि वितर्क बहुभाति बनावै * देखहु अन देखे ठहरावै ॥

दो०–कबहुँ कहति हौं कौन हौं, को हरि करत विचार ॥
यह सुख भावत कौनको, सकुचित रहत निहार ॥

सो०–निपट अटपटी बात, समुझि परत नहिं प्रेमकी ॥
उरझि सुरझि उरझात, उरझनहीं में सुरझ अति ॥

उत हरि रूप इतै दृग प्यारी * लखि सखि मनहुँ करत है रारी॥
अति अहँकार भरे भट दोऊ * नेकहु हारि न मानत कोऊ ॥
इति भ्रुकुटि करि वाम सुहाई * सेना सजि सजि दृगन चलाई॥
उत अति भूषण जाल अपारा * अग अग रचि व्यूँह सँवारा ॥
इतहि कटाक्ष बाण अति चोखे * बारहि बार हनत रण रोखे ॥
उतनहिं वदन विया अतिसूरे * पुलकि अंग मानहु सरि पूरे ॥
इत अनुराग उतहि छवि छाइ * क्षण क्षण अधिक २ अधिकाइ॥
छवि तरग सरिता अधिकानी * लोचन जलनिधि तृस नसानी॥
उत उदार छवि अग श्यामके * इत लोभी अति नेम वैमके ॥
ललता सग सखिनको लीने * दपति सुख देखत दृग दीने ॥

१ मुख २ पानीको ३ घमड ४ सेनाकी रचना ५ राधिकाके

लखि यह मिलन सखी अनुरागी * कहतिकि धनि २ दोउ बड़भागी
धन्य नवल नवला यह जोरी * धनि २ प्रीति नहीं रुचि थोरी ॥
दो०–धन्य मिलन धनि यह लखन, धनि२धनि अनुराग ॥
धनि सुख लहत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग ॥
सो०–धनि२धुनि२भाषि, हरषि चलीं सिगरी अली ॥
युगल रूप उर राखि, एकहि थल राखे युगल ॥

॥ अथ परस्परअभिलाषलीला ॥

शोभित श्याम राधिका जोरी * मरस परस निरखत तृणतोरी॥
हरि रीझे प्यारी छबि देखी * भये विवस उर हर्ष विशेषी ॥
कबहुँ पीत पट डारत वारी * कबहुँ मुरलि वारत गिरधारी ॥
कबहुँ माल मुक्तनकी वारैं * कबहूँ तनमन वारि निहारैं ॥
कबहुँ सिहात देख मनमाहीं * राधासम शोभा कहुँ नाहीं ॥
इनको पलक ओट नहिं कीजै * रूप सुधा नैननिपुट पीजै ॥
कबहुँ निरखि सुख हरि सकुचाहीं * कोटि काम जिनके बशमाहीं ॥
चपल नैन दीरघ अनियारे * हाव भाव नाना गतिभारे ॥
कोटि कुँरग कमल बलिहारी * खजन मीन डारिये वारी ॥
लोचन नहिं ठहरात श्यामके * काहू अँग सुख रँग बामके ॥
भये श्याम प्यारी वश ऐसे * फिरति गुड़ी डोरी वश जैसे ॥
इकटक नैन अग छबि सोहै * मये विवस लखि रूप विमोहै॥
दो०–उठे उठत हैं तुरतही, बैठे बैठत पास ॥
चले चलत सग बामके, ज्यों तनु छाँह धिलास ॥

१ आपसमें २ सखी ३ तारीफ करती हैं ४ हिरन ५ राधिकाके

सो०–रही सुरति कछु नाहिं, देहदशा भूली सबै ॥
अभिलाषा मनमाहिं, प्यारीहीके रूपकी ॥

मगन श्याम श्यामा रसमाहीं * निजस्वरूपकी सुधि कछु नाहीं॥
राधारूप देखि सुख पावै * पुनि पुनि मन अभिलाष बढ़ावै
माँगलेति भूषण प्रिय पाहीं * अपने अंग सँवारत जाहीं ॥
सजि तरवन कुण्डलहि उतारै * बेसैर लै नासा पर धारै ॥
बेनी गूंथ माँग पुनि करहीं * शीश फूल अपने शिर धरहीं ॥
बेंदी भाल सँवारत तैसी * शोभित है प्यारीकी जैसी ॥
प्यारी दृगतें अंजन लेहीं * अति हित करि अपने दृग देहीं॥
भूषण वसन सजत सब वैसे * प्यारी अंग विराजत जैसे ॥
प्यारीको पियकी छबि भावै * हाहा करि यों वचन सुनावै॥
कुण्डल मुकुट पीतपट पाऊँ * मैं पिय तुमरो रूप बनाऊँ ॥
हँसतहि हँसत माँग सब लीनो * पियको भेष नागरी कीनो ॥
गोरे कान्ह साँवरी राधा * निरखि परस्पर पूरत साधा ॥

दो०–कबहुं मुरलिलै नागरी, अधर धरति मुसकाय ॥
मंद मंद पूरति सुरन, रिझवति पियहि बजाय ॥

सो०–कबहुं बजावत श्याम, अरस परस अधरन धरत ॥
पूरत हैं मन काम, सकल काम पूरण युगल ॥

हरिको अपने रूप निहारी * आपहि हरि स्वरूप लखि प्यारी॥
यह अभिलाषा उर तब धारी * कहति सुनो पिय गिरिवरधारी॥
तुम बैठो माननि ह्वै ह्वैके * तुमहिं मनाऊँ मैं पद छ्वैके॥
मोको यह अभिलाष विशेषी * सुख पैहौं नैननि यह देखी ॥

१ नाकका गहना. २ नाक. ३ इच्छा.

सुनत श्याम मन मन मुसकाई * मुरि बैठे करि मानबड़ाई ॥
तब प्यारी मन अति अनुरागी * हरिसों मान छुडावन लागी ॥
कहति मान तजि प्राणपियारी * मोते चूक परी कह भारी ॥
कहतिहिमें तुम रिस कर मानी * कहा प्रकृति तुव परी सयानी ॥
वृथा हठीली मान न कीजै * अब करि कृपा मोहिं सुख दीजै ॥
बार बार कर गहि गहि माखे * शीश नवाय चरणपर राखे ॥
आनन आनन जोरि निहारे * पुनि पुनि वचन अधीन उचारे ॥
क्यों इतनो हठ करत नवेली * बोलत क्यों नहिं गर्व गहेली ॥

दो०–श्याम कियो हठ जानिके, यह विचार ठहराय ॥
प्यारीके उर रसविरह नेकु देहुँ उपजाय ॥

सो०–बैठिरहे निठुराय, नहिं बोलत मानत नहीं ॥
पुनि पुनि परसति पाय, हाहा करि करि लाडिली ॥

नहीं हँसति नहिं मुखतन जोवे * बार बार नख भूमि करोवे ॥
लखि यह चरित हँसति मन प्यारी * चकित रहत हँसि वदन निहारी ॥
कहति सुनहु पिय अब हस बोलो * तजहु मान यह घूघट खोलो ॥
मोहन अब यह खेल मिटावो * कोटि चन्द्र छवि वदन दिखावो ॥
नागरि हँसति हृदय सुख भारी * सूवे नहिं चितवत गिरिधारी ॥
लखि प्रियरूप पीयको प्यारी * वदन विलोकति चकृत भारी ॥
अपनो रूप पुरुषको देखी * भई मगन रस विरह विशेखी ॥
मैं नारी वे पुरुष विहारी * किधौं पुरुष मैं ही वे नारी ॥
बढी विरह संभ्रमता भारी * भई विकल तनुदशा बिसारी ॥
निरखत श्याम विरहकी शोभा * बोलत नाहि अधिक मनलोभा ॥
कबहुँ कहत यह ख्यालन त्यागत * मान करत नीके नहिं लागत ॥

१ मुख २ कुरेद ३ मुख ४ घबराहट

कबहुँ अंक भरि उरसों लावति * कबहूँ फिर पर पाँय मनावति ॥
दो०–कबहूँ पाछे ह्वै रहति, कबहूँ आगे जाय ॥
कबहुँ उठति बैठति कबहुँ, कबहुँ कलेति बलाय ॥
सो०–कबहुँ कहति हैं पीय, कबहूँ प्यारी कहं कहति ॥
धीरज धरत नहीय, भई समीपहि विरहवश ॥
भई विरहव्याकुल जब बाला * हर्षि हँसे तब पिय नँदलाला ॥
लई तुरत प्यारी उरलाई * कहति स्यालहीमें अकुलाई ॥
तुमहीं मान करत मोहि भाख्यो * भई विवस कब धीरज राख्यो॥
मैं तो तुमको भाव बतायो * तुम काहे मनमें डर पायो ॥
देखि विरह व्याकुल मुरझाई * बार बार हरि अंकम लाई ॥
अमिय[1] वचन कहि शीतल कीनी * विरह ताप उरते हरिलीनी ॥
तव नागरि मन लखि सुख पायो * मिट्यो विरह मन हर्ष बढ़ायो॥
कहति भलो पियमान दिखायो * मेरे मन अभिलाष पुरायो ॥
प्रियके रूप श्याम छवि देखी * पुनि२पुलकितमुदितै विशेखी ॥
दंपैति[3] हर्ष मनहि मन कीनो * तब नव कुंज चलन चित दीनो
प्यारी मुकुर[4] पाणि लै देख्यो * नटवर रूप आपनो पेख्यो ॥
हँसतहि हँसत मेटि सब डार्यो * सहज रूप अपनो पुनि धार्यो॥
दो०–चले हर्षि बन कुंजको, युगल नारिके रूप ॥
इक गोरी इक साँवरी, शोभा परम अनूप ॥
सो०–अंग अंग छवि जाल, अति विचित्र भूषण बसन ॥
श्रीराधा नँदलाल, शोभा अवधि विलासनिधि ॥
जात चले ब्रज वीथिनै[6] दाऊ * लखि नहिसकत नारिनर कोऊ॥

१ अमृत. २ प्रसन्न. ३ स्त्रीपुरुष. ४ शीशा. ५ उपमारहित. ६ गलियां.

नन्दनन्दन निय छबितनु काछे * शोभित हैं राधा सँग आछे ॥
बार बार पिय रूप निहारी * मनहीं मन रीझतिहै प्यारी ॥
कहति सखी देखे निन इनको * बूझेते कहिहौं कह तिनको ॥
तिहू भुवन शोभा सुखकी निधि * करिहौ तिनको गोप कवनविधि
पग नूपुर निछियाँ छबि छाजैं * गजगति चलत परस्पर बाजैं ॥
श्याम गौर सुंदर सुख जोरी * मर्कत मणिकंचन छबि थोरी ॥
भुज भुज कंठ परस्पर राजै * या छबिकी उपमा नहि छाजै ॥
जात युगल वनको सुखपाई * उतते चंद्रावलि सखि आई ॥
दूरहिते लखि रही निहारी * इकटक नैन निमेष निवारी ॥
पुनि पुनि मन विचार कर जोहै * एक राधिका दूसरि कोहै ॥
ब्रजयुवतिन इक इक कर जानै * यहधौं कौन नहीं पहिचानै ॥

दो०–और गाँवते यह कहूँ, आई है ब्रजमाहिं ॥
अतिहि सलोनी साँवरी, अबलौं देखी नाहिं ॥

सो०–राधे मन सकुचाय, चंद्रावलि आवति निरखि ॥
रही श्याम मुख चाहि, ब्रजहीको फेरति हरिहि ॥

कहति जाहु पिय फिर मुख नाहीं * करते कर छूटत है नाहीं ॥
उत आवति है सखि सखिहि लजानी * इतहि श्यामके नेह भुलानी ॥
दुख सुख हर्ष न हरि रस माती * उत चंद्रावलि इन रँगराती ॥
कहति निकट देखहुधौं जाइ * बूझौं यहि वर्हते आई ॥
देख श्याम मुख छबि मुसकानी * करी चतुरई इन पहिचानी ॥
इनते निधरक और न कोऊ * ऐसी बुद्धि रची इन दोऊ ॥
ये दोऊ अति चतुर सयाने * निज करि इन्हैं विधाता जाने ॥
और कहा इनको कोउ जानैं * मोसों नहीं परत पहिचानै ॥

१ दोनो २ देखकर ३ ब्रह्मा

सकुच छाँडि अब इनहिं जनाऊँ * जान बूझ काहे निदराऊँ ॥
जो इनको मैं ठोकत नाहीं * जैहैं जीत मनहि मनमाहीं ॥
यह चतुरइ चले छवि दोऊ * प्रकट करों इनके गुण सोऊ ॥
ऐसे बहुरि इहै नहि पाऊँ * आन प्रगट कहि आन रचाऊँ॥

दो०–कहु राधे यह कौनहे, सग साँवरी नारि ॥
कबहुँ इन्हें देख्यो नहीं, अति सुन्दरि सुकुमारि ॥

सो०–को हैं इनको नाथ, कौन गोपकी ये सुता ॥
भलो बन्योहै साथ, जैसी यह तैसी तुमहुँ ॥

मथुराते यह आवहि आइ * है इनते कछु प्रीति सगाई ॥
एक दिन ललताके सँग माहीं * दधि बेचन हम गइ तहाहीं ॥
उनहीके सँग भइ चिन्हारी * तबहीकी पहिचान हमारी ॥
वही सनेह आनिकै आई * ऐसी शील सभाव सुहाइ ॥
मैं गृहते इत आवन लागी * येऊ सँग आय अनुरागी ॥
सुनि राधा यह सहज सुहाइ * शील सनेह रूप अधिकाइ ॥
इनको मजमें क्यों न बुलायो * अपने निकटहि आन बसायो॥
कै वृषभानु पुराके गोकुल * राखहु इनहि बुलाय सहित कुल
तुमहौ नवल नवलहैं येऊ * दोऊ मिलि श्यामहि सुख देऊ॥
ऐसी है यह नारि सुहाई * और नारि मनलेति चुराइ ॥
हमहूँसो अब इनहि मिलावो * नीके इनकै वदन दिखावो ॥
हमहि देखि सकुचत कत प्यारी * हमसों घूघट करत कहारी ॥

दो०–ऐसे कहि चद्रावली, गह्यो श्याम कर जाय ॥
यह कहुँ अबलों नहि सुनी, तिय सों तिय सकुचाय ॥

१ बनी २ पाय ३ हाथ

सो०-आयहि वदनं उभारि, घूघट पट हातौ कियौ ॥
मुखछवि रही निहारि, माने करि लोचनं सफल ॥

वारहि बार कहति मुसकाई * चितवत क्यों नहिं वदन उठाई
मथुरामें है वास तुम्हारो * कहा नाम मुख वचन उचारो ॥
कियो राधिका यह उपकारो * दुर्लभ दर्शन भयो तिहारो ॥
कछु इक मैं पहिंचानत तुमको * काहेको सकुचतिहौ हमको ॥
कवहुँ चिवुकं गहि वदन उठावै * कवहुँ कपोलें परम सुख पावै ॥
कवहु चुटकि कहति मुख फेरौ * नैन उठाय नेकु इत हेरौ ॥
नैन नैनसों हरि नहिँ जोरै * रहे लजाय भावसो भोरै ॥
चद्रावली देखि मुसकानी * हँसि बोली राधासौं वानी ॥
ऐसी सखी मिली ये तुमको * तौ काहे न बिसारौ हमको ॥
जबसों इनसे प्रीति लगाई * बहुत भई तुमको चतुराई ॥
अबलौं इनको कहां दुरायो * हमसों कबहू नाहिं जनायो ॥
त्रिभुवनकी सुखमा सब गुणनिधि * एकहि इन्हैं बनाईहै विधि ॥

दो०-तुमहुँ कुशल येहू कुशल, क्यों न प्रीति दृढ होय ॥
जानेहौं चले जाहु वन, आप स्वारथी दोय ॥

सो०-दंपति कियो विचार, सुनि चद्रावलिके वचन ॥
यासों नाहिं उबार, हर्षि मिले उरलाय तब ॥

चले कुंजगृह हरषि विशाला * उभेय वाम विच मदनगुपाला ॥
वाम भाग प्यारीको लीने * दक्षिण भुजा सखीपर दीने ॥
दिवि दामिनि विच नवघन मानौ * रतिसमेत लखि मदन लजानौ ॥
कैधौं वचन लता सुहाई * ललित तमाल विटप लपटाई ॥

१ मुख २ आंखें ३ ठोडी ४ गाल ५ भूलो ६ मनलवी ७ दोपुरुष दोनों ८ आकाश. १० बिजली ११ कामदेव

गये कुंजवन घन छविछाई * सुमन पुंज अलि गुंज सुहाई ॥
वर्ण वर्ण कुसुमित तरु नाना * करती कोकिल मंगल गाना ॥
वहत समीरं त्रिविध सुखदाई * पावन मगल भूमि सुहाई ॥
लखि छबि पुंज कुंज अनुरागे * सहचरि सहित युगल बड भागे॥
नव दल कुसुमतुल्य कमनीया * बैठे नवल रमण रमणीया ॥
करत बिलास विविध मन माने * कोटि कोटि रति काम लजाने॥
शोभित गौर श्याम शुभ जोरी * निरखत छबिह सखी तृण तोरी॥
सने रसिक दोऊ रसकाई * बसे निशा वन कुंज सुहाई ॥

दो०–तैसोइ विपिन सुहावनो, तैसिय पवन सुगन्ध ॥
तैसिय निर्मल चांदनी, तैसोइ सुख संबन्ध ॥

सो०–तैसोइ कुंज निवास, तैसोई यमुनापुलिन ॥
सकल सुखनकी रास, तैसेइ रँग भीने युगल ॥

बनहिं धाम सुख रैनि विहाई * उठे प्रात दोउ छबि अधिकाई॥
बैठे युगल रंग रस भीने * आलसयुत अंगन भुज दीने ॥
अरस परस दोउ छबिह निहारैं * रीझ परस्पर तन मन वारैं ॥
अरुण नैन नख रेख सुहाई * बिन गुण माल हृदय छबि छाई॥
लट पटि पाग रस मसी भौंहैं * कुंडल झलक कपोलन सोहैं ॥
प्रिया बदन छबि श्याम निहारत * उरझीलट मुक्तन निरवारत ॥
आलस नैन सुरति रस पागे * नन्दनँदन पियसँग निशि जागे॥
टूटे हार मरगजी सारी * नख शिख सुन्दर पिय अरु प्यारी
चले कुंज ते युगल विहारी * मजवासी लखि लखि बलिहारी
सुन्दर श्याम सुन्दरी श्यामा * जीते सुन्दर रतिपति कामा ॥
सुन्दर अवलोकनि मृदु बोलनि * सुन्दर चालि डगमगी डोलनि॥
सब विधि सुन्दर सुखनिधि दोऊ * सुन्दर उपमाको नहिं कोऊ ॥

१ फूलेहुये. २ हवा. ३ कामदेव.

दो०–अति विचित्र नँदलालकी, लीला ललित रसाल ॥
जो सुख दुर्लभ शिव सनक, सो बिलसत ब्रजबाल ॥
सो०–गये युगल ब्रज धाम सखी, सहितनिदि रस बिलसि॥
बसत प्रिया उर श्याम, श्याम हृदय प्यारी सदा ॥

अथ शृंगारभूषणवर्णनलीला ॥

बैठी भवन शृंगार किशोरी * बहुरो अंग शृंगारत गोरी ॥
मानहु सवन देति पहिराये * रति रणजीति पियासों आये ॥
कटि तटि किंकिणि बसन नवीने * बाजूबंद भुजनको दीने ॥
कर कंकण उर हार सुहाये * तरवनि चारु श्रवणै पहिराये ॥
नकबेसर अंजन दृग दीनों * वेंदा ललित भालपर कीनों ॥
रची माँग सम भाग सुहाई * तामधि रेख सिंदूर बनाई ॥
प्रभुसों विमुख जानिकैं आदर * बांधति कुच मनो किये निरादर
दियो विहँसि अधरनँको बीरा * सन्मुख रहे प्रहार सधीरा ॥
शोभित सदन शृंगार सुहाई * श्रीवृषभानुकुँवरि छवि छाई ॥
नख शिख कुसुमनिशिरसैंकी सैना * किये वाम्ह बश पंकजनैना ॥
सीसफूल शिर अति छवि छाजै * मनहुँ भाग मणि प्रगट विराजै ॥
झुमी जराव फूल अरणाई * हरति प्रान रविकी छवि ताई ॥
दो०–चंद्रवदन मृगशिशुनयन, भ्रुकुटी कुटिलकलंक ॥
अलक झलक छविदेति जनु, शोभित रजनी शंक ॥
सो०–कुन्दकली समदाँत, तिलप्रसून नासा शुभग ॥
जीय बँन्धुकी भाँत, अधरं अनूपम चिबुक तिल ॥

---

१ कान. २ नथ. ३ टीका ४ कामदेवकी ५ भौंह ६ पुष्प ७ बन्धुपहरिया ८ होठ. ९ ठोडी.

लसि कलकंठ कपोत लजाहीं * पीकलीक झलकति जेहिमाहीं ॥
बाहु मृणाल लाल छबि छाये * कोमल पाणिसरोज सुहाये ॥
कुचयुग चक्रवाक जनु नीके * लसत रोमावलि तर तर नीके ॥
त्रिवली तरल तरंग सुहाई * अति गति नाभि मनोहरताई ॥
कृशकटिकिंकिणि युत छबि छाई * पृथु नितंबै शोभा अधिकाई ॥
रंभभग युग जंघ निकाई * पग नूपुर झनकार सुहाई ॥
चाल विलोकि काम गज लाजैं * मधुर मधुर ध्वनि पायन बाजैं ॥
बरणे को पदपंकज शोभा * हरि मन भ्रमर रहत जहँ लोभा ॥
निगम नेति नित गावत जाको * राधा वश कीनोही ताको ॥
ज्यों चकोर चंदाको आतुर * त्यों नागरि वश गिरिधर चातुर ॥
देखे बिन क्षण रह्यो न जाई * सदा प्रेमवश त्रिभुवनराई ॥
उझकि झरोखा झाके आई * करति शृंगार प्रिया मन भाई ॥

दो०-अंग अंग भूषण वसन, रुचि रुचि सकल शृँगारि ॥
ले दर्पण देखति छबिहि, श्रीवृषभानुदुलारि ॥

सो०-दीठ झरोखा लाय, रहे श्याम इकटक निरखि ॥
उर आनद बढाय, देखत प्यारीकी छबिहि ॥

इककर दर्पण इककर अँचरा * पुनि पुनि दृगन सवाँरत कजरा ॥
कबहुँ शीशके फूल सँवारैं * कबहूं कुटिल अलक निरवारैं ॥
कबहूँ आड़ रचति केसरिकी * कबहूं छबि देखति वेसरिकी ॥
कबहूँ रचति सुमनसों वेणी * कबहुँ माँग मुक्तनकी श्रेणी ॥
कबहूं रिस करि भौंह सिकोरैं * कबहूँ नैन नैनसों जोरैं ॥
इकटक दर्पण ओर निहारैं * नेकु वदन इत उत नहिं टारैं ॥
निरखि आपनी छबि सुकुमारी * रही विवस प्रतिबिंब निहारी ॥
अति आनद भई मति भोरी * बिसरी सुरति देहकी गोरी ॥

१ ठूडी २ तागनी ३ मोटी जाघ ४ केलेकाखम. ५ आन. ६ परछाई

कहति मनहि मन अति सकुचाई * यह सुंदरी कहाँते आई ॥
करते मुकुर दूरि नहि टारै * कछू रोष करि हृदय विचारै ॥
कहूँ श्याम देखे जो याहीं * तुरत होय याके वशमाहीं ॥
जो मोहन यासों अनुरागे * कहा चले मेरी या आगे ॥
दो०–यह आई किहि लोकते, अति सुंदर वरनारि ॥
ब्रजमें तौ ऐसी नहीं, कोऊ गोपकुमारि ॥
सो०–कोऊ ल्यायो याहि, कैधौं आई आपही ॥
सो वैरी मम आहि, जो लाई याको ब्रजहि ॥
सुनी कहूँ इन हरिकी शोभा * आई है ताहीके लोभा ॥
जैसे सुन्दर कुँवर कन्हाई * तैसी सुन्दरि यह ब्रज आई ॥
मनहीं मन पुनि पुनि पछितावै * पूँछति प्रतिबिंबहि सकुचाई ॥
तूहै कौन कहाते आई * यहाँ कौन तोको लै आई ॥
नाम कहाहै सुन्दरि तेरो * तुम जहँ रहत कौनसो खेरो ॥
कहीं न मुख ते बचन सुनाई * मति सकुचौ कहि सौंह दिवाई ॥
हम तुम दिननि एकहि गोरी * तू कछु रूप अधिक नहिं थोरी ॥
इहां अकेली तू क्यों आई * काहू संग और नहिं लाई ॥
सुन्यो नहीं अन्याय इहांको * ऐसे कहि डरपावति ताको ॥
करत कान्ह ब्रजमें बरजोरी * लेति तियनके भूषण छोरी ॥
जो अपनी पति चहत सयानी * तौ घर जाहु मानि मन बानी ॥
लेहु बसनते अंग छिपाई * देखै नहिं कहुँ श्याम कन्हाई ॥
दो०–तेरे हितकी कहतिहौं, मान यहै मतिमान ॥
आइहै ब्रज आजही, तू उनको कह जान ॥

१ शीशा. २ परछाई. ३ गहने. ४ कपड़ेसे.

सो०-ऐसो ढीठ न आन, त्रिभुवनमें कोऊ कहूँ ॥
जैसो ब्रजमें कान्ह, मन भायो सबसों करत ॥

नैक नहीं काहू डरमाने * मथुरापति जेहि रहति सकाने॥
उनके गुणनीके मैं जानों * तोसों अपनी दशा बखानों ॥
हम मथुरा दधि वेचन जाहीं * घेरि लई उन मगके माहीं ॥
गोरस लियो छोरि वरि ऑई * हार तोरि दीने बगराई ॥
हम अनेक तू एक किशोरी * ताते जाहु वेगि गृह गोरी ॥
सुनि सुनि श्याम प्रियाकी बानी * मनही मन विहँसत सुखमानी॥
प्यारी चकित रूप निज देखी * श्याम चकित सुन वचन विशेखी
जान दूसरी तिय प्रिय पाहीं * जात निकट मोहन सकुचाहीं॥
पुनि पुनि दृग ठहराय निहारै * बोलत नहि उर हर्ष विचारै ॥
देखत मुँकुर प्रिया करमाहीं * अंकैम लेवे को ललचाहीं ॥
प्यारीके रसवश गिरिधारी * लेति दृगन भर भर छवि भारी॥
सुनि सुनि वचन हृदय सुख पावै * पुलकि अंग आनंद बढावै ॥

छं०-वचन सुन आनंद अति मन, निरखि छबि सुख पावहीं
धनि धन्य राधा रूप धनि, हरि नैन इकटकलावहीं ॥
धन्य वह प्रतिबिंब धनि छवि, धन्य मुकुर निहारहीं ॥
धन्य भ्रम धनि प्रेम पूरण, धन्य तन मन वारहीं ॥
धन्य मुख जेहिलागि राधा, कान्ह ब्रज तनु धारहीं ॥
रमा सहित विलास नित, वैकुंठ वास विसारहीं ॥
मिलन विछुरन सुख विरह रस, क्षणहिं प्रति उपजावहीं
ब्रज विलास हुलास हरिको, नित नयो श्रुति गावहीं॥

---

१ हालत. २ जोरावरी. ३ शीशा. ४ गोदीमें. ५ परछाई. ६ वेद.

दो०–नवल प्रीति नित नवल सुख, नित नवरूप रसाल ॥
नित नवरस विलसत नवल, श्रीराधा नन्दलाल ॥

सो०–कहत रसीली बात, ज्यों ज्यों तिय प्रतिबिंबसों ॥
त्यों त्यों सुनि हरषात, ब्रजवासी प्रभु रस भरे ॥

प्यारी निज प्रतिबिंब निहारे * भइ विवस नहि सुरति सँवारे ॥
बारबार पूछति नापाहीं * क्यों सुन्दरि तू बोलति नाहीं ॥
हँसे हँसति हेरति है हेरे * फेरति भौंह भौंहके फेरे ॥
करति परस्पर हमसों हाँसी * अपनो नाम न कहत प्रकासी ॥
परमचतुर तुमको मैं जानी * हमसों तुम कछु करत सयानी ॥
अतिही सुन्दर रूप तिहारो * देखि होत मन मुदित हमारो ॥
शोभित बेसरि नाक सुहाई * अति अनूप अधरन अरुणाई ॥
दर्शन दमक दामिनिहिं लजावति * चिबुक नीलकण अति छवि पावति
काहे ऐसे मुरकी बानी * हम सुनावति नाहि सयानी ॥
कहो वचन काकी हौ घरनी * काकी सुता सहज मनहरनी ॥
कै रिस कै रस वै इत हेरति * मेरे सन्मुख लोचन जोरति ॥
कछु रिस कछु घरको मनमाहीं * धीर धरत नागरि तिय नाहीं ॥

दो०–यह तो बोलतिहै नहीं, अलि गरबीली बाम ॥
देखत ही यहि रीझिहैं, छैल छबीले श्याम ॥

सो०–भई सौति यह आय, अब हरि याके वश भये ॥
यो वियोग उपजाय, उपजायो उर विरह दुख ॥

रही दीठ दर्पणहि लगाई * टरी नहीं छबिकी अधिकाई ॥
उरमें भयो विरह दुख भारी * देखि दशा रीझे गिरिधारी ॥
कबहूँ चलत तिय डिगहि बन्हाइ * कबहु रहत लखि छबिहि भुलाइ ।

१ नथ २ कपमारहित ३ होठ ४ दांत ५ चिबुकी ६ ठोढ़ी ७ घरवारी

आचैकि पाछे ते सुखदाई * मूंदे नयन कमल कर आई ॥
चौंकि चकित भइ मनमें लारी * जाने आये छैल बिहारी ॥
करतिरही मनमें में जाको * मिले आय सुंदर हरि ताको ॥
तब कछु सुरति भई मनमाहीं * वह तो है मेरी परछाहीं ॥
सकुच दुराव करति पिय पाहीं * मनहीं मन दोऊ मुसकाहीं ॥
जान बूझके पिय घनश्यामहि * लेति विपुल सखियनके नामहि
श्याम प्रिया लोचन करि लायो * अति हित वेनी कर परसायो ॥
शोभा कहा कहै कवि कोऊ * मेचक मणि सुमेरु अँग दोऊ ॥
तातिच मनहुँ पन्नगी आई * रही कैनक गिरिसों लपटाई ॥

दो०–वेष्टित भुज मूंदे करन, दीरघ खंजन नैन ॥
जनु मख लीनो धाय अहि, नहिं समात फणिऐन॥

सो०–करति सखिनसों रोष, मन हर्षत खीझत वदन ॥
भरी चतुरई कोष, लूटति मनकामन फलन ॥

अति आनंद भरे दोउ राजैं * उपमा कहत कवीश्वर लाजैं ॥
मर्कतमणि कुंदन सँग जोरी * किधौं लिये घन तड़ित अकेली॥
कै शोभा सुख तनु धरि सोहै * ब्रजवासीभक्तन मन मोहै ॥
कोमल कर तिय नैन कन्हाई * रहे मूँदि छवि वरणि न जाई ॥
अति विशाल चपल अनियारे * नहि समात प्रिय पाणि पसारे॥
छिन खोलत छिन ढकत बिहारी * मुख रिस मन मुसकात पियारी॥
ज्यों मणिधेर मणि प्रगट कन्हाई * फिरिफिरि फण तर धरत छिपाई
श्याम उँगरियन अंतरमाहीं * चचल नैन दुरे दरशाहीं ॥
मर्कतमणि पिंजरा में मानों * तरफरात विव खंजन जानों ॥
करकपोल ढिग तरल तरोना * शोभा सहज सुभाय करोना ॥

१ छुपाव. २ सावनो. ३ सुवर्णपहाड़ ४ नीलमणि. ५ सर्प.

मनोयुग कमल मिलन शशि आये * विवर विषग सहायक लाये ॥
कुँवरि नागरी नागर नायक * उपमा काहि कहाँ को लायक ॥
दो०—अपने कर प्रिय कर पकरि, लीने नैन छुड़ाय ॥
रवि शशि चार सरोज जनु, द्वैचकोर मिलिभाय ॥
सो०—कीन्हे सन्मुख आन, पाणि पकरिके लाड़िली ॥
भले भलेजू कान्ह, मैं सखियन धोखे रही ॥
भले आय औचक बिन जाने * मूँदि रहे दृग अतिहि पराने ॥
कैसे दौरि पैठि गृह आये * नेकहु आवत जान न पाये ॥
तुमहौ तिय मन हरन कन्हाई * तुम्हरी गति कछु जानि न जाई ॥
तब हरि हर्षि प्रिया उर लाई * मुकुर कथा सब भाषि सुनाई ॥
सुनि नागरि हरि तन मुसकानी * चितैनयन कछु मनहिं लजानी ॥
मैं तौ अपने मन्दिरमाहीं * सहज लखन दर्पणमें छाहीं ॥
तुम्हरी महिमा पियको जाने * इक सुंदर अरु परम सयाने ॥
हँसत चले तब कुँवर कन्हाई * रसिक पुरंदर जन सुखदाई ॥
हर्षित गये सदन नँदलाला * इत नागरि उर हर्ष विशाला ॥
जब प्रतिबिंब सुरत जिय आवे * समझ सहष्ट सकुँच तब पावे ॥
तिहि अतर सँग सखिन लिवाई * चंद्रावलि राधाढिग आई ॥
लखि प्यारी अति आदर दीनो * तुरत सवनको बैठक दीनो ॥
दो०—सादर सन्मानी सबै, दिये हर्षि कर पान ॥
पिय सँग सुख चाहत करन, रहति सकुच पुनि मान ॥
सो०—गद्गद सुर मुख बैन, बार बार भाषति हरषि ॥
झलक प्रेम जलनैन, पुलकि गात पूरे सबै ॥

---

१ प्रभाव. २ हृद ३ घर. ४ लाज ५ शरीर.

कहति सखी सुन राधा गोरी * आज कहा अति हर्ष किशोरी ॥
हम तेरे नितही प्रति आवें * इतनो आदर क्वहूँ न पावें ॥
पायो आज पन्यो कछु तेरी * कैधौं मिले श्याम कहुँ हेरी ॥
उमग्यो प्रेम हर्ष उरमाहीं * हमैं सुनावति है क्यों नाहीं ॥
सुनि सखियनके वचन सयानी * बोली पिया हर्षिके बानी ॥
आये आज सखी हरि मेरे * कहे जात नहि गुण उनकेरे ॥
जैसी भाँति मिले हरि हमसों * सोहित कहौं सुनहु सखि तुमसों
मैं अपने सब अग शृगारति * लिये मुकुर[1] मैं वैदन[2] निहारति
पाछे आनि भये हरि ठाढे * चतुर शिरोमणि छविसों बाढे॥
भाव एक भोरे मैं साजा * ताहि कहत सखि आवत लाजा
लखि अपनो प्रतिबिंब भुलानी * जानि और तिय मनहिं डरानी॥
पाछे ते यह जान कन्हाई * मूँदे नैन औचकहि आई ॥

दो०–तबहीं चौंकि चकृत भई, मैं समझी निज भोर ॥
लगी देन उरहन तुम्हें, भई फिरतिहौ चोर ॥

सो०–सुनि राधा मुख बात, हिय हर्षी सब गोपिका ॥
पुलकि प्रफुल्लित गात, कहत धन्य तू लाड़िली ॥

श्याम सग सुख लूटति हेरी * अब उनसों नहिं छूटति हेरी ॥
श्याम भये तेरे अनुरागी[3] * भली भई तू हरि रसपागी ॥
अब हरि तोते अति रँति[4] माने * तेरो अन्तर हित पहिचाने ॥
आवत जात रहत घर तेरे * क्षण नहि रहत तोहिं बिनहेरे॥
चतुर रूप गुण तुम दोउ नीके * परम भावते हौ सबहीके ॥
आज लाल मेरे गृह आये * बडे भाग्य मैं हितकरि पाये ॥
देख दरश नैनन सुख पायो * करौ आज आनन्द बधायो ॥

१ हाथमें दर्पण लिये २ मुख ३ प्रेमी ४ प्रीति

यह उपकार तुम्हारो आली * मोहिं मनाय दिये बनमाली ॥
तुरत लाय हरि मोहि मिलायो * मैं अपने अपराध क्षमायो ॥
नन्दनँदन पिय नैन समाये * भावत नहीं नेक बिसराये ॥
सुनि यह राधाकी रसबानी * देति असीष सखी हरषानी ॥
नन्दनँदन वृषभानुकिशोरी * चिरजीवहु सुन्दर यह जोरी ॥

दो०—प्रेम भरे छबिसों भरे, भरे अनन्द हुलास ॥
युगल माधुरी रस भरे, ब्रजमें करत विलास ॥

सो०—करत अनेक विहार, रूप रसिक गुणनिधि युगल ॥
राधानन्द कुमार, ब्रजवासी जन सुख करत ॥

अथ नयनअनुरागलीला ॥

हरि अनुराग भरीं ब्रजनारी * लोक सकुच कुल मौन बिसारी॥
सासु ननँद गारी दै हारी * सुनत नहीं कोउ कहत बगारी॥
सुत पति नेह जगत यह छोंन्यो * मन तरणिर्ने तिनका सम तोन्यो
वेद लोक मर्यादा डारी * ज्यों अहिकें चुरि फिरत निहारी
ज्यों जलधार परे तृणमाहीं * जैसे नदी समुद्रहि जाहीं ॥
जैसे सुभट खेत चढि धावै * जैसे सती बहुरि नहिं आवै॥
जैसे भजे नन्दनन्दनको * नेकहु टर पुनि नहिं गुरु जनसों॥
बैमर प्रेमनिवस गिरिधारी * ज्यों गज पवँज सबहिं निहारी॥
ब्रजबनिता मन नहिं बिसरावैं * क्षण प्रति तिन्हें देखि सुख पावैं॥
आये पुनि तेहि ओर बिहारी * सखिन सहित बैठी जहँ प्यारी ॥
भीर देखि सकुचे मनमाहीं * तातें निकट गये हरि नाहीं ॥
ताही मग निकसे सुखदाई * सुन्दर नटवर रूप दिखाई ॥

---

१ बगूए २ दोनों ३ भय ४ प्रिय ५ कमल

दो०-शीश मुकुट कुण्डल श्रवण, उर चटकीली माल ॥
पीत वसन कटि काछिनी, तनुद्युति श्याम तमाल ॥
सो०-चलत कटक्नी चाल, चकै विलोकनि मृदु हँसनि ॥
अंग अंग छवि जाल, रसिक नवल नागरि छकल॥
औचक देखि श्याम ब्रजनारी * भई चकित तनुदशा बिसारी॥
जात चले मन खोरी अकेले * कोटि कामकी छवि परहेले॥
पगद्रै[1] चलत बहुरि फिरिहेरैं * कमल सनाल कमल कर फेरैं॥
मृगमदै[2] तिलक अलकै[3] घुघरारी * तन बन धात चित्र रुचि कारी॥
मृदु मुसकाय मरोरत भौंहैं * नैन सैन दैदै मन मोहै॥
निरखत ब्रजयुवती बिथकानी * दुख सुख व्याकुल मन अकुलानी
गये कल्पतरु छाँह् कन्हाई * रूप ठगौरी तियन लगाइ॥
लागीं कहन परस्पैर[4] बानी * लोचन मन अनुराग[5] कहानी॥
सुनहु सखी यह नन्ददुलारो * हठि कर यह मन लेत हमारो॥
क्षण क्षण प्रति छवि और बनावै * शोभा कछु कहत नहिं आवै॥
मनतो इनहीं हाथ बिकानौ * हम सखि यह कछु भेद न जानौ
नैननिसाद करी नैननिसो * कियो मोल सैननि बैननिसो॥
दो०-बेचि दियो मन आपुही, मृदु मुसकन धन पाय ॥
परी रही हौं बीचही, नयना बड़ी बलाय ॥
सो०-भये श्यामको जाय, अब रुचि मानी मनहिं मन॥
मैं पचिहारि बुलाय, फेरि नहीं इतको फिरे ॥
अब मनहित हरिहीसों कीनो * भेद हमारो सब वहि दीनो॥
मनतो गयो नैन हैं मेरे * तिनहू बोलि किये हरिचेरे॥

1 टेढ़ी 2 कस्तूरी 3 बाल 4 आपसमें 5 प्रेम

अब यह रहत वहाँ सब जाई * सोई करतजु कहत कन्हाई ॥
जितहि चलतवे नितही जाहीं * हरिके सन्मुख रहत सदाहीं ॥
भये वे जाय गुलाम श्यामके * रहे न काहू और कामके ॥
ताको कछु अपमान न जाने * फूले रहत अधिक सुख माने ॥
जग उपहास सुनत बहु तेरो * लाज शक दीनो सब डेरो ॥
आरज पथ मर्याद बड़ाई * लोकवेद कुलकान गँवाई ॥
मैं समुझाय रही बहुतेरो * नेकहु कह्यो सुनत नहिं मेरो ॥
ललित त्रिभंगी छबिपर अटके * मोसों तोरि सगाई सटके ॥
हरि अब छोड़त तिनको नाहीं * बैठे रहत आप तिनमाहीं ॥
राखे बाँधि अलक की डोरी * भाज जाहिं मति कबहुँक दौरी ॥

दो०–अब ये लोचन श्यामके, सखी हमारे नाहिं ॥
बसे श्याम रस रूपये, श्याम बसे इनमाहिं ॥

सो०–कहा करैं सखी श्याम, नैननहीको दोष यह ॥
हठ करि भये गुलाम, तनक मन्द मुसकान पर ॥

बोली अपर एक ब्रजनारी * सखिलोचन लोभी अति भारी ॥
जबहिं लखत कमनीय कन्हाई * तबहिं संग लागत उठि धाई ॥
मेरो हटक्यो नेकु न मानैं * लखत जाय वह छबि ललचानैं ॥
ज्यों रँग छुटत फद बधिकते * भागचलत उड़ि वेग अधिकते ॥
पाछो फेरि न फिरत डराई * जाय सघन बन माँझ समाई ॥
त्यों दृगमोते छूटि पराने * हरि छबि विन घनजाय समाने ॥
अब वे इतको नाहिं निहारैं * वह छबि निरखि हरषि उर धारैं ॥
यदपि सुधा छवि पियत अघाई * तदपि तृप्ति नहिं मानतराई ॥
भई सखी नैनन गति ऐसी * भरे भवँन तरकैरकी जैसी ॥

१ हँसी. २ दूसरी. ३ पक्षी. ४ बहेलिया ५ गहरा. ६ अघाय. ७ पर. ८ थोरकी.

देखि श्याम छवि तन अधिकाई * अति लालची रहे ललचाई ॥
लेत न बने तनो नहि जाई * चकित भये निज सुधि बिसराई ॥
रहे बिचारहि माझ भुलाने * नहिं कछु लियो न त्याग पराने ॥

दो०–नैन चोर हरि सुख सदन, छबि धन भांति अनेक ॥
तजत बनत नहिं एकहू, लेत बनत नहिं एक ॥

सो०–सखि ये नैना चोर, हरि मुख छबि चोरन गये ॥
बाँधे अलकनिडोर, हरिकी चितवन पाहरू ॥

भली भई हरि इनहिं बँधायो * निदरि गये तैसो फल पायो ॥
ये नहिं मानत कह्यो हमारो * सखि इनहीं सब काज बिगारो ॥
कहति और यक गोपकुमारी * सखि ये नैनकिधौं बटपारी ॥
कपट नेह हमसों करि भारी * करी हमैं गुरुजनते न्यारी ॥
श्याम दरश लाडू कर दीनो * हमैं आपने बश करलीनो ॥
प्रेम ठगौरी शिरपर छाइ * फिरत सगही सग लगाई ॥
बिरह फाँस गरडारि हमारे * करी बिकैल नहिं अग सँभारे ॥
दु १ लज्जा संपदा हमारी * सो इन लूटि लइ सखि सारी ॥
कहँरति परी मोह बन माहीं * लगन गाँठ दृग छूटत नाहीं ॥
क्योंहू नेह जीव नहिं जाई * सुमिरि नैन गुण मन पछिताई ॥
कासों कहैं सखी यह बाता * भये नैन हमको दुखदाता ॥
हमको बिरह दुसह दुख देहीं * आप सदा दरशन सुख लेहीं ॥

दो०–इहविधि निदरति दृगनको, भरी प्रेम ब्रजनारि ॥
होत मग्न सुख बिरह रस, नयननि श्याम निहारि ॥

---

१ पहरुआ २ ठग ३ बेहोश

सो०–यही भजन यह ध्यान, इयाम रूप रस गुण कथा ॥
नहिं जानति कछु आन, निशिदिन ब्रजकी सुंदरी ॥

कोऊ कहति नैन खग मेरे * फँसे अलक फंदा हरि केरे ॥
छबि कण चारा लखि ललचाने * फद गये चितवन लपटाने ॥
हरि छबि अर्टकिपरे दृग आई * अतिहि बिलाप भये बिवसाई ॥
रहत दीन सन्मुख टकलाये * दुख सुख समुझ सबै बिसराये ॥
कहवावत हैं बड़े सयाने * वह छबि लेन गये अतुराने ॥
सोतो कछु हाथ नहिं आयो * आपन यों इन जाय बँधायो ॥
ऐसो को त्रिभुवन जो जाई * आवै सखी समुद्र अथाई ॥
हार जीत ये नैन न जानें * मान अपमान कछू नहिं मानें ॥
परे रहत शोभाके द्वारे * नेकहु लाज नहीं उर धारे ॥
जाकी बान परी सखि जैसी * धरी टेक उरमें तिन तैसी ॥
इन अँखियन यह टेक परीरी * लुब्धे तज्यों कमलन भ्रमैरीरी ॥
जो शुक नलनीके वश आई * जिमि कपि मुठी छोडि नहिं जाई ॥

दो०–लोभै वश जिमि मीनें मृग, आप बँधावत आय ॥
रूप लालची नैन तिन, इयाम वश जाय ॥

सो०–सकै न काहू सिंधु, लोकलाज कुलकानगिर ॥
इयाम सलोने सिंधु, मिले त्रिबेनी है नयन ॥

लगी नैन अब हरि सँग लागे * मन क्रम बच उनसे अनुरागे ॥
सन्मुख रहत सदा सुख पाये * भूल गये मग दहने बाये ॥
ज्यों मणि देखि उरग सुख पावै * ज्यों चकोर चंदहिं लटकावै ॥
मुदित रक जैसे धन पाई * तैसी इनकी गति अब माई ॥
अब ये नैन फिरत नहिं फेरे * किये सखी हम यतन घनेरे ॥

१ अटक गये. २ लोभी. ३ भौंरी. ४ मछरी

देखे सुभग श्याम इन जबते * निठुर भये हमसों ये तबते ॥
जब मैं घूँघट पटहि धरेरी * तब ये शिशुकी अरन अरेरी ॥
हरि अग संग लागि उठि धाये * मनहु उनहि प्रतिपाल कराये ॥
मृदु मुसक्न रस पाय मिठाई * क्षणहीमें मति गति बिसराई ॥
अति हठ परे न नेक बिसारें * निमिष रुदन बल धीर न धारें ॥
लाज लकुट उरमें डर पाये * वेसखि एवहु डर न डराये ॥
फिरेन मैं बहु भाति बुलाये * गये तनक हरिके पुसलाये ॥

दो०–अब हम तरफत उन विना, मरत यही अफसोस ॥
प्रथ खोटो सरि आपनो, कहा पारखेंहि दोस ॥

सो०–प्रमविवस प्रियवृन्द, ऐसे दोषति दृगनको ॥
तबहिं छैल ब्रजचन्द, टेर सुनाई बाँसुरी ॥

अथ मुरलीलीला ॥

कृष्ण प्रेमरस पूरण तातें * करत हुती नयननकी बातें ॥
परी श्रवण इहि अतर जाई * हरिकी मुरली टेर सुनाई ॥
भइ चकृत सुनि सब ब्रजगोरी * परा आय जनु शीश ठगोरी ॥
भूलि गईं सुधि अखियन केरी * ह्वैगइ मानौं चित्र च्खिरी ॥
दुख सुख मनको वरणि न जाई * इकटक रही पलक बिसराई ॥
देहदशा सब तुरत भुलानी * स्वेद चल्यो बहि मानहु पानी ॥
भई विवस मतिकी गति भूली * प्रेमहि डोरी गोपिका झूली ॥
कबहू सुधि कबहू सुधि नाहीं * कबहू मुरलीनाद सुनाहीं ॥
कछुक सभारि धीर उरधारी * कहति परस्पर गोपकुमारी ॥
अखियनते मुरली हरिप्यारा * मै बैरिन यह सौत हमारी ॥
ब्रजमें धौं कितते यह आइ * भइ कठिन हमको दुखदाई ॥

१ परखियेको २ आपसमें

आवतही एसे ढँग जाके * भये श्याम तुरतहि वश ताके ॥
दो०-जा रसको हम तप कियो, षटऋतु सब ब्रजवाम ॥
सो रस मुरली लेति अब, सहजहि वश करि श्याम॥
सो०-गावत मीठी तान, मुरली सँग अधरन धरे ॥
अब याके वश कान्ह, और न चितवत करी यही ॥
ऐसी त्रिभुवन कौन सयानी * जो न मोहि सुनि याकी बानी ॥
यहतौ भली नहीं ब्रज आई * नई सौति हरिके मनभाई ॥
अब याके वश गिरिवरधारी * नेक अधरतें धरत न न्यारी ॥
याहीके अब रगरँगेरी * मधुर वचन सुनि रीझतयेरी ॥
कर[1]पैल्लवन माहीं बैठाई * रहत ग्रीवे[4] तापर लटकाई ॥
बारहि बार अँधर[2]रस प्यावे * तासों अति अनुराग जनावे ॥
देखहुरी याकी अधिकाई * पियत सुधारस हमहिं दिखाई ॥
परी रहत बनमें धौं कैसी * भई ढीठ आवतहीं ऐसी ॥
दिनही दिन अधिकात जातरी * सखी नहीं यह भलीबातरी ॥
आवतही हमरो धन लीनो * चाहत और कहा धौं कीनो ॥
मैं जो कहत सुनौरी गोरी * सजगरही सब नवल किशोरी ॥
मुरली दूरिकराये बनिहै * कछु दिननमें हमैं नगिनिहै ॥
दो०-फिरिहैं याके सँग लगी, लोकलाज गृह त्याग ॥
जब जब जहँ यह बाजिहै, मोहनके मुँह लाग ॥
सो०-धरिहैं नानारंग, यह जानति टोना कछू ॥
या मुरलीके संग, देखहु हरि कैसे भये ॥

१ चतुर थी २ होंठसे ३ अँगुली ४ ठोडी ५ होठोंका रस

मुरलीधर.
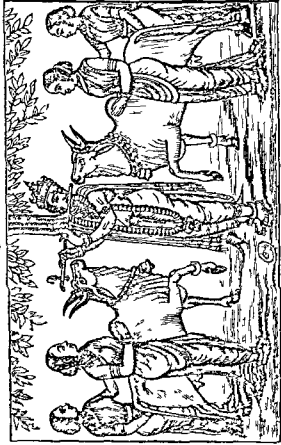
यह सुनि कहत एक ब्रजनारी * सखी बात यह कहति बहारी ॥
अब यह दूरि होति है कैसे * जाके वश नँदनन्दन ऐसे ॥
एक पाँय ठाढे ता आगे * रहत त्रिभंग अंग अनुरागे ॥
अधर सेजपर शयन कराई * करपल्लवन पलोटत पाई ॥
कबहुँक मिल गावतहैं तासों * होति विवस पुहुमी सब जासों ॥
मुरली अति मोहनको भावै * ताके गुणन सखी को पावै ॥
जानत रागरागिनी जेते * हरि सँग मिलि गावतिहैं तेते ॥
नाना विधिकी गतिन बनावै * तान तरंग अमित उपजावै ॥
जैसेही रीझत मनमोहन * तैसिय भाँति रिझावत मोहन ॥
रहति सदा सुखहीमोंलागी * अधर पियूँष स्वाद रसपागी ॥
मधुर मधुर कल वचन सुनाये * पुनि पुनि हरिके मनहिं चुराये ॥
एसो यो अब हरिके करते * दूर करे याको निज बरते ॥

दो०–अब मुरली छूटे नहीं, याके वश भये श्याम ॥
प्रगट कियो सब जगतमें, मुरलीधर निजनाम ॥

सो०–हरिको करि वशमाहिं, मुरली लूटै अधररस ॥
उर डर मानति नाहिं, हम सबते योरति निठुर ॥

निठुर वचन अब हमहिं सुनावै * हरिको मन हमतें उचटावै ॥
आरजपथ कुल मान छुडावै * हम सबदिनको निलज करावै ॥
ऐसो ढँग मुरलीके आली * हमते निठुर किये वनमाली ॥
यह तौ निठुर काठकी जाई * प्रगट किये अपने गुण आई ॥
अपनोहीं स्वारथ यह जानै * यपन राग हरिके संग गानै ॥
मुरली निठुर किये बनवारी * मुरली ते हरि हमहिं बिसारी ॥
बनकी व्याधि कहाँ यह आई * ऐसे कहि कहि तिय पछताई ॥

१ दासीहै २ अमृत ३ कठोर

कहा भयो मोहन मुखलागी * अपनी प्रकृति नहीं इन त्यागी ॥
एक सखी बूझत भइ ऐसे * मुरली प्रगट भई यह कैसे ॥
कहाँ रहत काकीहै जाई * कौन जात कैसे इत आई ॥
मात पिताहैं याके कैसे * जैसी यह तेऊहैं ऐसे ॥
बोली अरु इक तिया सयानी * अबलों तुम यह बात न जानी ॥

दो०–सखि तुम अबलों नहिं सुन्यों, मुरलीको कुलधर्म ॥
सुनो सुनाऊँ मैं तुम्हैं, याकि जात अरु कर्म ॥

सो०–तुमसों कहौं बखान, मैं जानति याके गुणन ॥
सुनि सुख पैहौ कान, या मुरलीकी कुलकथा ॥

वनमें रहति बाँस कुल जाई * यह तौ याकी जात सुहाई ॥
जैलधर पिता धैरणिहै माता * तिनके गुणन करौं विख्याता ॥
वनहूते तिनको घर न्यारो * निपटहि जहाँ उजाड़ अपारो ॥
गुणन प्रकते एक उजागरि * मात पिता अरु मुरली नागरि ॥
पर अकाज विश्वास न जानै * येहै इनके कुलहि बखानैं ॥
ना जानिये कौन फल आली * कृपा करी याथर बनमाली ॥
सुनहु सखी याके कुलधर्मा * प्रथम कहौं मेघनके कर्मा ॥
वे वर्षत जल सब जगमाहीं * गिरि बन सर सरिता सब ठाईं॥
चातक सदा रहत करि आसा * एक बूँदको मरत पियासा ॥
धरणी सबहीको उपजावै * आपन सदा कुमारि कहावै ॥
उपजत पुनि विनशत जाहीमें * सो कछु छोह नहीं ताहीमें ॥
ताकुल सुता मुरलिका जानौं * अब आगे गुण प्रगट बखानौं ॥

दो०–तनुहीते प्रगटत अनल, ऐसी याकी क्षार ॥
प्रगट भई जा वंशमें, करति जारि तिहिं ठौर ॥

१ सभाव. २ पैदाकीहै. ३ मेघ. ४ धरती. ५ बेटी ६ अग्नि. ७ राख.

सो०–ऐसे गुणकी आहि, यह मुरली सखि बासकी ॥
आई निज कुल दाहि, और कौन याते निठुर ॥

यादी जाति श्याम नहि जानी * विन जाने कीनी पटरानी ॥
कहिये चली श्यामसों जाई * सुनत तजैंगे कुँवर ढिठाई ॥
सखी कहा यह बात बखानो * श्यामहि कहा भलो तुम जानो ॥
निज कुल जारत निलम न लाई * हैहै तासों कौन भलाई ॥
जाको हम पट् ऋतु तप कीनो * सो फल तुरत मुरलि यह दीनो ॥
जे सन्मुख ते विमुख कहावैं * विमुख तुरत उत्तम फल पावैं ॥
घरके वन वनके घर कीहे * कपटी परम श्यामको चीन्हे ॥
एक अंगकी प्रीति हमारी * वे कपटी बहु तरुण विहारी ॥
ज्यों चकोर चन्दा हित मानै * चन्द्र नहीं नेकहु उर आनै ॥
जलके तीर मीन तनु त्यागै * जलको तनक दया नहिं लागै ॥
ज्यों पँतग उड़ जोति जरैरी * जोति नहीं कछु कृपा करैरी ॥
चातक एक मेघको जानैं * वह कछु ताकी प्रीति न मानैं ॥

दो०–इन सबहिनते हरि निठुर, तेसियमिली सहाय ॥
अब मुरली अरु श्यामकी, जोरी बनी बनाय ॥

सो०–ये अहीर बहु बैन, काहे न प्रीति बढावहीं ॥
दुहुँअनको मन ऐन, जैसे घे तैसी वहू ॥

मुरलीने हरिको पहिचान्यो * हरिको मन मुरलीसों मान्यो ॥
निठुर निठुर मिल बात बनावैं * याहीके बल धेनु चरावैं ॥
याहीको लकुटी कर धारी * याहीकी वशी अति प्यारी ॥
हमसों वैर सदा हरि कीनों * दधि ले मारग जान न दीनों ॥
पुनि भेदहि मन हन्यो हमारो * कीनो कुल कुटुवते न्यारो ॥

१ नगाधर २ सूप ३ छगी

बहुरी बोलि अखियनको लीनी * तापर सौति मुरलिया कीनी ॥
सुनि सजनी बिन कान जरोरी * कर्म करे सो कोउ न करोरी ॥
यह महिमा करता सब करई * कीने विधि धौ का पर परई ॥
हम तपकर इतनो पचिहारी * सो वर कुलते भई नियारी ॥
बनकी घास इतो सुख पावे * श्याम अधर शिर छत्र धरावे ॥
भये नृपति हरि मुरली रानी * और नारि हरिको न सुहानी ॥
बनते लाय सुहागनि कीन्ही * जाति पाँति कुल कछु न चीन्ही ॥

दो०–तप तीरथ जो पूरवहि, कठिन किये हरि हेत ॥
अब मुरली ता कष्टको, बैठि अधर फल लेत ॥

सो०–मेटत पिछलो दाग, जो तप करि तायो तनहिं ॥
धनि धनि मुरली भाग, अब गरजति अधरन चढी॥

मुरली कौन सुकृत फल पायो * सब वल्कै हरि परसि गँवायो ॥
तँनु कठोर मन जँड रस हीनी * अंतर सूनो सार विहीनी ॥
लँघुता अग न कछु गरवाई * बाँस वंश कछु नाहिं निकाई ॥
छिद्र विशाल विपुल तनु छाये * हरिहि परशि सब भये सुहाये ॥
निधिते प्रवल भई यह मुरली * हरिमुखकमल वरासन जुरली ॥
चार वेद विधि श्रुति मति भाखे * नीति सहित जड चेतन राखे ॥
आठ बदन मुरली कहिं नादा * उलटि दई हरिकी मर्यादा ॥
जडन चेत चेतन जड कीने * थिर चर चर चर थिर कर दीने॥
एकबार श्रीपति सिखरायो * तबते ज्ञान विधाता पायो ॥
याको तो नँदसुवन कन्हाई * लगे रहत हैं पान सदाई ॥
याते को अरु अवल प्रवीना * कियो सकल जग निज आधीना ॥
कहिये काहि और को ऐसी * भई श्याम सँग मुरली जैसी ॥

---

१ शुद्धी २ पुण्य ३ घमण्ड ४ शरीर ५ छोटापन ६ पेट

दो०–अति सुर नर मुनि सूर शदि, खग मृग सलिल समीर॥
या मुरलीके वश सबै, ध्वनि सुनि धरत न धीर॥

सो०–रही विश्वभर जीति, मोहन मुख लगि बाँसुरी॥
मेरि सकल श्रुति नीति, रीति चलावति आपनी॥

सखि मुरलीको दोष न देहों * करि विचार अपने मन लेहों॥
हरि हित इन श्रम कीनो जोई * सो श्रम और कौन पै होई॥
जो अकुलीन तऊ बड़भागी * कियो कठिन व्रत हरि हितलागी॥
जब अति दृढ याको हरि जान्यो * तब बन भीतरते गृह आन्यो॥
जब याकी करतूत सुनोगी * तब धनि धनि करि याहि गनोगी॥
जन्मत होते करमनि गाढ़ी * बनमें रही एक पग ठाढ़ी॥
शीत उष्ण वर्षा सह लीनी * नेकहु मनमा मलिन न कीनी॥
चमकी नहीं नेक जब काटी * पत्र मूल शाखा जब छाँटी॥
राखी टार धाममें आनी * शोच शोच सबदेह सुखानी॥
मुख्यो न मन तन अंगद गाये * विधे बेहैं अँग अग करवाये॥
ताय सुलास परसि हरि लीनी * तब मुरली पटरानी कीनी॥
मुरली सही इती कठिनाइ * तब पाइ ऐसी ठकुराइ॥

दो०–मुरली तप फल भोगवै, वृथा करत तुम आर॥
निज गुण रिझये श्याम उन, गुणियन गुणी पियार॥

सो०–तुम ते यह नहिं होय, जो करनी मुरली करी॥
ताकी सम नहिं कोय, अति श्रम करि हरि वश करे॥

परम पुनीत प्रीत जब जानी * तब मुरली हरिके मन मानी॥
देखहुरी याकी अधिकाई * यह लगि याकी करहिं बड़ाई॥

१ हवा २ गरम ३ टेढ़

जबहीं श्याम अधरको परसै * तब अति हर्षि नाद रस बरसै ॥
तान तरंग रग उपजावै * अति आनंद सब जगत जनावै ॥
जियत श्याम अधरामृत पाई * छूटत मौन रहत मुरझाई ॥
क्यों नहिं श्याम करैं हित ताको * अधरामृत जीवन है जाको ॥
मुरली जो हरिहित तप कीनो * परम चतुर पूरण तप लीनो ॥
तबलगि हरिको नहि पतियानी * सहे कष्ट बोली नहिं बानी ॥
जबलग जीवन करि नहि पायो * अधरामृत रस मनको भायो ॥
जब हरिसों वांछित फल पायो * तब सबपर अधिकार जनायो ॥
यासम और चतुर को आली * जिन वश किये श्याम बनमाली ॥
क्यों नहि त्रिभुवनको मन मोहै * जाके वश पति त्रिभुवनको है ॥

दो०–मुरलीकी सैर मत्त करौ, कह्यो हमारो मान ॥
धनि धनि ताहि बखानिहै, सुनताको यश कान ॥

सो०–अधरामृत करि पान, अमर भई अब मुरलिका ॥
तिहुँ पुर होत बखान, शारदादि यश गावहीं ॥

हमहूं सब मिलके तप कीनो * ताको फल हमको हरि दीनो ॥
लीने भूषण बसन चुराई * युवतिन लाज छुड़ाय बुलाई ॥
तब अँम्बर दे धन्य बखानो * हम भोरी इतनोइ सुख मानो ॥
अपनो अपनो भाग्य सखीरी * मुरलीसों विन काज खिजौरी ॥
अब मुरलीसों हेतें करौरी * नहि जीतोगी मतहि लरोरी ॥
मुरली हमते तप अधिकाई * मुरलीके वश कुँवरकन्हाई ॥
तनक आश दरशनकी हैरी * सोउ पुनि २ करते जैहैरी ॥
है बहुतेरी रवण कन्हाई * यह मिली इक तिनमें आई ॥
मुरलीको जिन डाह करौरी * तुम नहिं अपने प्रेम टरौरी ॥

१ होठ. २ होठोंका अमृत. ३ बराबरी. ४ आकाश. ५ मीति.

प्रेमहिते हरि मान रहेंगे * वे सुजान सब जानि रहेंगे ॥
सब तजि भज्यो जन्मते ताही * तज्यो जात कैसे अब वाही ॥
मुरलीसों बहु काज हमारो * जीवहु मोहन नन्द दुलारो ॥

दो०-हम हित कीनों श्यामसों, मेटि लोक कुल कान ॥
ताहीसो हित चाहिये, जासों है पहचान ॥

सो०-हमको है यह आश, वेहैं अंतर्यामि हरि ॥
करिहैं नाहिं निराश, उर अंतरकी जानिकै ॥

कहा भयो मुरली हरि राखी * अपने करसों ताहि सुलाखी ॥
गुणके काज क्षणक दुख पाई * है अधरामृत तुरत जिवाई ॥
हमते अधिक कियो उन नाहीं * करि विचार देखहु मनमाहीं ॥
वर्ष पांच सातक्के जबते * कियो सनेह श्यामसो तबतें ॥
पुनि षट् ऋतु तपसों मन लायो * अवली विरहानल तनु तायो ॥
कैसे ये सब फलन फलेंगे * क्यों नहिं हमसों श्याम मिलेंगे ॥
तब यों कह्यो एक ब्रजनारी * मुरली श्याम अधरपर धारी ॥
जो अवगुण होतो यामाहीं * तो याको हरि छुवते नाहीं ॥
सुनो सखी यहहै इह लायक * अतिही भली श्रवणसुखदायक ॥
तुमको कहति वृथा कोइ सोई * जैसी यह ऐसी नहिं कोई ॥
जो यह भली बुरी गुण मेरी * तौं याको धरि श्याम मिलेरी ॥
काहिन प्रीति करें हरि ऐसी * है यह तिहूँ भुवनमें जैसी ॥

दो०-एक युवति अरु गुणभरी, बोलति मधुरे बैन ॥
श्रवण सुधा प्यावत तहूं, क्यों हरि अधर धरै न ॥

सो०-हरि बरजो मति कोय, देहु बजावन बाँसुरी ॥
विरह विरससे होय, रस भीने रस होत है ॥

१ विरहकी अग्नि २ कान, ३ जवान सी

आप भले तौ जगत भलोई * नातर सखी भलो नहिं कोई ॥
मुरली लगी श्यामाके मुरारी * तोहूहै हमसों सन्मुखरी ॥
सुनहु कान दे कहति कहारी * श्रीराधा श्रीराधा प्यारी ॥
तुम जानति हरि हमहिं बिसारी * तुम हरिसों नहिं नेक नियारी ॥
जब जब मुरली श्याम बजावै * तब तब नाम तुम्हारोइ गावै ॥
मुरली भई सौति जो आई * तो हरि तेरिहि टहल कराई ॥
तू अर्द्धंगिन वह है दासी * मेरे मन यह बात प्रवासी ॥
मुरली तुम्हरो नाम बतावें * बाके मुख हरि तुमहिं बुलावें ॥
तुम प्यारा हरि हरि तुम प्यारे * मुरली यह यश कहत पुकारे ॥
हर्षी सकल सुनत यह बानी * हम मुरली ऐसी नहिं जानी ॥
वृथा वैर यासों हम मायो * याको शील अबै हम जान्यो ॥
मुरलीसों ऐसे सुख पाइ * करति सकल ब्रजनारि बड़ाइ ॥

दो०–धनि धनि वदी बाँसकी, धनि याके मृदु बोल ॥
धनि ल्याये गुण यैचिकै, वमते श्याम अमोलँ ॥

सो०–धनि धनि याको वश, धनि मुरली हरि मुरलरी॥
सखिन सहित परशस, श्रीमुख श्रीराधा कह्यो ॥

मुरली श्रीमुरलीधर केरी * महिमा कापै जात निबेरी ॥
जाको यश गुण गँधरव गावैं * वेद भेद जाको नहिं पावैं ॥
सुनत नाद त्रिभुवन मन मोहै * देव दनुज नर खग मृग जोहै ॥
वाणी ललित श्रवण सुखदाई * बाजति हरिमुख लाग सुहाई ॥
ब्रह्मादिक मनमोह कराव * शिव सनकादि समाधि भुलावै ॥
माया योग कृष्णकी जोई * शोभित अधर मुरलिका सोइ ॥
हरिकी श्वास नासुकी बानी * ताके गुण को सकै बखानी ॥

१ मागकर २ जिसकी कीमत न होसके ३ शब्द

जब मुरली नंदनन्द बजावै * ब्रजललना सुनिकै सुख पावै ॥
चकृत होत तनुदशा भुलावै * प्रेम विवस सुधि बुधि विसरावै ॥
चकी थकी जहँ तहँ रह जाहीं * मानहुँ लिखी चित्रकी आहीं ॥
कबहू दुख कबहू सुख मानैं * कबहू निंदहि कबहूँ बखानै ॥
ऐसी दशा होत घट घटकी * बाजति मुरली जब नटवरकी ॥

छं०–जबहिं मुरली श्यामकरगहि, अधर राखि बजावहीं ॥
तरल तानतरंग अगणित, अमित उपजावहीं ॥
रहत सुनि ध्वनि मगन जल थल, जीवजहँसोतहँसहीं ॥
कहत ब्रह्मानंद जासों, पाय संग पूजत नहीं ॥
सब सयान समान ज्ञान, गुमानतबहींले अहैं ॥
लोक वेद मर्याद पतिव्रत, चार फल जबलौं चहैं ॥
तबहिंलौ मन चपल बुधिबल, सकल रुचि धन धर्मकी ॥
सुनि खमेहु नाहिं जबलों, श्रवण मुरली श्यामकी ॥

दो०–धनि धनि ते नरनारि जग, धनि धनि तिनके भाग ॥
ब्रजवासी प्रभु बाँसुरी, जिनके मनमें लाग ॥

सो०–राखत हैं यह आश, जन ब्रजवासी दासहूँ ॥
करहु हिये मम वास, मुरलीधर मुरली धरे ॥

अथ रासलीला ॥

बंदौं युगल चरण सुखदायक * श्रीरस राम नायक नायक ॥
नंदनंदन वृषभानुनन्दनी * सुर नर मुनि ब्रह्मादि वन्दनी ॥
रासरसिक रस रासविलासी * नित्य धाम वृन्दावनवासी ॥
रूपराशि आनन्दनिधाना * मंगलप्रद सुन्दर भगवाना ॥

१ स्त्रियां २ होठ ३ वेदर ४ रीति ५ दोनो अर्थात् कृष्णराधिका

बहुरि रासप्रतिपद शिर नाऊं * रामचरित मंगल अब गाऊं ॥
वेदव्यास जो रास बखानो * सो गन्धर्व व्याह विधि जानो ॥
मनगोपिन हरिहित तप कीनों * श्याम होय पति यह व्रत कीनों॥
नन्दनंदन तिनको वर दीनो * चीरहरणलीला तब कीनो ॥
करिहैं तुम्हरे मनकी भाई * शरदरैनि शुभ लग्न धराई ॥
सो नव शरद सुखद ऋतु आई * राका रजनी परम सुहाई ॥
सत्तमनोरथ पूरण कारी * गावति विरिंद विदित श्रुति चारी॥
गये श्याम वृन्दावनमाहीं * जह वसंतऋतु रहत सदाहीं ॥

दो०–श्रीवृन्दावन धामकी, शोभा परम पुनीत ॥
वर्ण सकै कवि कौन विधि, मन बुधि वचन अतीत॥

सो०–सब चैतन्य स्वरूप, भूमि लता द्रुम गुल्म तृण ॥
धारि रह्यो जड़ रूप, सुन्दर श्याम विहार हित ॥

जाकी महिमा शिव मुनि गावैं * ब्रह्मादिक रज छुवन न पावैं ॥
जाकी महिमा श्रीमुखवानी * सकर्षणै प्रति श्याम बखानी ॥
चिंतामणिमय भूमि सुहाई * कोमल विमल रम्य सुखदाई ॥
सकल सुमंगलकी जननीसी * कृष्णचरणपंकज रमणीसी ॥
फिरत श्याम नहँ नांगे पायन * चरणचिह्नअंकित सब ठायन ॥
पावनहूकी पावनकारी * ब्रजवासी प्रभुकी अति प्यारी ॥
वर्ण वर्ण वर विटप सुहाये * परम अनूपम जाहि बनाये ॥
सदा सुमन फल सयुत सोहैं * अमित सुगंध स्वाद मन मोहैं ॥
नवपल्लव दल परम सुहाये * जगमगात जग जोति छनाये ॥
विपुल कांति शोभित बहु रंगा * अति विचित्र छवि उठति तरंगा ॥
परमप्रकाश दशहु दिशि माहीं * कोटि सूर शशि पटतर नाहीं ॥

१ पुनम २ यश ३ वन्दवनी ४ वृक्ष ५ फूल ६ बराबर

पत्र पत्र प्रतिबिंबै श्यामको * मोहति लखि मन कोटि कामको॥

दो०–ठौर ठौर शोभित परम, तैसिय लता वितानि ॥
वृन्दावन तरु वेलि सब, नख शिख छबिकी खानि॥

सो०–और सकल सुखधाम, वैकुंठादिक श्यामके ॥
यह विहार विश्राम, ताते अति सुंदर सुखद ॥

विपुल कुंज मंजुल छवि छाई * जिहैं सँवारत काम सदाई॥
बहत समीर धीर सुखदाई * शीतल परम सुगंध सुहाई॥
चित्र विचित्र विहंग मृग नाना * बोलत डोलत विविध विधाना॥
गुंजत भृंगै लुब्ध मँकरंदा * अति छवि पुंज मंजु वन वृंदा॥
तैसिय यमुना परम सुहाई * पुलिन पुनीत बरणि नहिं जाई॥
देति महाछवि झलकनरेती * मानहुँ परम कांतिकी खेती॥
फूले वनज विपुल बहु रंगा * गुंजन करत मधुमाते भृंगा॥
श्रीवृन्दावन छवि समुदाई * सम्यकै बरणि कौन पै जाई॥
ताकी पटतर को नहिं आना * वन अनूप अद्वैत बखाना॥
एसी कछू परतहै हेरी * है अस्थूलवपुष प्रभुकेरी॥
गोपीजन इंद्रियगण तामें * है चैतन्य आप हरि नामें॥
नित्य धाम ताही ते गायो * यह पटतर मेरे मन भायो॥

दो०–सुखनिधि रसनिधि रूपनिधि, वृन्दाविपिन उदार॥
शारद नारद शेष शिव, वरणत विधि श्रुति चार॥

सो०–सुखद न कोऊ आन, वृन्दावनसम दूसरो॥
सकल विश्व सुखदान, सुख पावत मोहन जहाँ॥

तहँ निँसिदिन रास सुहायो * मणिमय शुभग श्रुतिनमें गायो॥

---

१ छाया २ पक्षी ३ भौंरे ४ फूलोंका रस ५ अच्छी तरह ६ मोटा शरीर ७ एक दिनसमान

तापर अद्भुत कमल निराजे * षोडश पत्र चक्र सम राजे ॥
योजन पंच तासु परमाना * रासस्थान सुदेव बखाना ॥
मध्य कर्णिका अति रमणीया * बैठे तहाँ कान्ह कमनीया ॥
शोभा अमित नेति श्रुति बानी * ताते गिरा कहति सकुचानी ॥
कोमल श्यामल अंग सुहाये * निरखि कोटि शत काम लजाये ॥
नटवर वेष साज सब साजे * अंग अंग भूषणछवि छाजे ॥
सखी शिखंड मनोहर माथे * बीच बीच मुक्तामणि गाथे ॥
जलजमाल वनमाल सुहाई * कुंडल अलक झलक छवि छाई ॥
कटि पट पीत काछिनी काछे * ललित शृँगार सुभग तनु आछे ॥
मणिन जटित नूँपुर[1] पग नीके * चरणकमल भावत जन नीके ॥
रवि शशि आदिक द्युतिधर जेते * नख उपमापूजत नहिं तेते ॥

दो०–अति अद्भुत लावण्यनिधि, श्रीवृन्दावनचन्द ॥
निगम नेति किमि बरणिये, रसिक नवल नँदनन्द ॥

सो०–जेहि गावत श्रुति चार, ब्रह्म पूर्णानन्द हरि ॥
सो पूरण अवतार, वृन्दावन रस रासपति ॥

देखि श्याम वन धाम कन्हाई * तैसिय शारदरैनि छविछाई ॥
प्रफुल्लित कुमुदिनि वन चहुँपासा * ललित मालती करत सुवासा ॥
जैसोइ यमुना पुलिन सुहायो * तैसोइ पूरण शशि छवि छायो ॥
तैसिय जग मग ज्योति द्रुमनकी * तैसिय ललित सुगंध सुमनकी ॥
लखि वन सुख समुदाय कन्हाई * हर्षि रास रुचि मन उपजाई ॥
तब कर लई सकल गुण जुरली * ललित योगमायासी मुरली ॥
नाद ब्रह्मकी उत्पति जासों * निगम अगम उपजैं पुनि तासों ॥
विश्वविमोहन मन करासी * हरिमुखकमल लसति कमलासी ॥

---

१ पाजेब २ सुंदरता ३ चन्द्रमा ४ वृक्षोंकी ५ फूलोंकी

राग रग रम रास बिलासी * सकल गुणनिमें आनँदरासी ॥
श्याम अधर धर ताहि बजाई * त्रिभुवन मनमोहन् ध्वनि छाई ॥
धरणि पताल जीव सब मोहे * नभ सुरगण सुर सुनत विमोहे ॥
चकित चद मृग मारग भूले * बरषत अमृत कनक अनुकूले ॥

दो०–शिव विरचि सनकादि मुनि, तजि तजि ब्रह्मसमाधि ॥
भये नाद मुरली मगन, चकित श्रवण रहे साधि ॥

सो०–रहे सबै मन भूल, सिध चारण गधर्व सुर ॥
तनुसुधि रहीं न मूल, सुनि मुरली नँदनन्दकी ॥

थकित पवनगति गवन भुलानी * रह्यो प्रवाह नदिन थकि पानी ॥
झरना झरहिं पषाण कठोरा * नाचि उठे चहुँदिशि बन मोरा ॥
थकित विलोकत मृग सब ठाढे * खग रहे मौन मनहु लिखि काढे ॥
रही धेनु तृण गहि मुखमाहीं * थकित वत्स पैय पीवत नाहीं ॥
सरकि सकत नहि अहि ध्वनिमोहे * उकठे विटप रहत सब सोहे ॥
तरु बेली सब चचल पाता * नव अकुर दल प्रफुल्लितगाता ॥
सुनि ध्वनि शेषनाग अकुलाने * नाग सरल सोवतते जाने ॥
जड चेतन गति भइ विपरीता * हरिमुख मुरली सुनत पुनीता ॥
जो नर नारि तिहूँ पुरमाहीं * भये नादवश तनुसुधि नाहीं ॥
सुनि ध्वनि चकित भई अति भारी * जे ब्रजसुन्दरि गोपकुमारी ॥
यदपि मुरलिध्वनि त्रिभुवन परशी * तदपि यथाविधि तिनहीं दरशी ॥
यारमरी तेइ अधिकारी * नन्दनदनप्रियनी अति प्यारी ॥

दो०–सुनतहि बौरीसी भईं, बिसरी सबी सयान ॥
एगी ठगौरीसी मनहुँ, मुरलीकी ध्वनि कान ॥

१ पक्षी २ दूध

सो०–रह्यो न उरमें धीर, बाजीं बाजी कहि उठीं ॥
आकुल विकल शरीर, सुनि मुरली मजकी तरुणि ॥
पद्दश सहस गोपिका गोरी * मुरली सुनत भई सब भोरी ॥
कोउ धरणी कोउ गगन निहारैं * कोउ मनहीं मन बुद्धि विचारैं ॥
घर घर तरुणि सबै बितनानी * आरज पँथ गृहकाज भुलानी ॥
लै लै तिनके नाम बजावैं * मुरलीमें हरि सवन बुलावैं ॥
रहि न सकीं ध्वनि सुनि अकुलाई * जो जैसे तैसेइ उठि धाई ॥
लोक लाज गुरु जन डर डार्‍यो * चलीं सकल गृहकाज बिसार्‍यो ॥
काहू दूध उफनतै छांडे * काहू दधिहि जमावत माँडे ॥
काहू करति रसोई त्यागी * कोऊ पतिहि जिमावत भागी ॥
बालक गोद सँभारन लीनो * दूध पियावतही तजि दीनो ॥
कोउ शृंगार करति उठि धाई * उलटे भूषण वसन बनाई ॥
बाजूबंद पगनसों बांधे * लै मंजीरै उरनमें साँधे ॥
किंकिणि डारि लई गरमाहीं * हार लपेटत करसों जाहीं ॥
दो०–शीशफूल कर्णन धरे, कर्णफूल धरे माल ॥
चलीं सकल मुरली सुनत, भ्रमतें मजकी बाल ॥
सो०–अंजन करि दग एक, एक रह्यो अंजन विना ॥
रह्यो न कछू विवेक, भई विवस मुरली सुनत ॥
मुरलीसों हरि टेर बुलाई * उपजी प्रीति सकल उठि धाई ॥
मुरलीध्वनि मारग गहि लीनो * और कछू उर शोच न कीनो ॥
प्रेमसरूप सकल मजनारी * पंच भूत अवगुणते न्यारी ॥
रोकि रहे सुत पति पितु माता * ते किमि रुकहिं अगम यह बाता ॥

१ स्त्रियाँ. २ आकाश. ३ पाजेब. ४ तागड़ी ५ ज्ञान.

चलीं ध्यान धरि हरि उरमाहीं * गृह बन कुन रुकी कहुँ नाहीं ॥
जो प्रारब्ध कर्मवश कोई * राखी रोकि पतिन गृह सोई ॥
भयो विरह दुख तिनको ऐसो * कोटिन जन्म कर्म फल जैसो ॥
पुनि धरि ध्यान हरिहि उर लायो * कोटि स्वर्गफल मानहुँ पायो ॥
यों करि भोग त्याग तनु बाला * दिव्य देह धरि मिलीं गुपाला ॥
इहि विधि बन सब चलीं किशोरी * लोक वेद मर्यादा तोरी ॥
आतुर निकसि चलीं सब ऐसे * जरत भवन तजियत है जैसे ॥
एक एककी सुधि कछु नाहीं * झुंडन चलीं श्याम पहँ जाहीं ॥

दो०–गृह गुरुजन तजि राज तजि, ब्रजसुन्दरी निकाय ॥
मुरलीध्वनि रस रँगरलीं, मिलीं श्याम घन जाय ॥

विरह विकल चिंता अति बाढ़ी * रहा चित्र पुत्तरीसी ठाढ़ी ॥
कपट खेल यह गिरिधर ठान्यो * प्रेमविवस युवतिन नहिं जान्यो ॥
मनही मन विहँसत नँदलाला * भईं विरहव्याकुल ब्रजबाला ॥
सहि नहिं सकीं दुसह यह पीरा * बोलीं गद्गद गिरा अधीरा ॥
सुनहु श्याम सुंदर वर नायक * यह जिन कहो नाहिं तुमलायक ॥
कोमल सुभग कमल मुख ताते * कैसे कहत कटुक यह बाते ॥
लैलै नाम बुलायो सबको * धर्म सिखावतहौ अब हमको ॥
छाँडिदेहु पिय यह चतुराई * करहु हेत जोहि भाँति बुलाई ॥
धर्म धर्म श्रुति नाहिं बखाने * जो कोउ कर्म धर्म विधि जाने ॥
हम तो लोकवेदविधि त्यागी * चरणकमल तुम्हरे अनुरागी ॥
सकल धर्ममय चरण तिहारे * बसत सदा सो हृदय हमारे ॥
कहवावत हो अन्तर्यामी * काहे यह समझत नहिं स्वामी ॥

दो०–अब यह तुमको उचित नहिं, सुनहु श्याम सुखरास॥
मन हमरो अपनाइके, हमको करत निरास ॥

सो०–पाप पुण्य कह नाथ, यह तो हम जाने नहीं ॥
बिकी तुम्हारे हाथ, अधरामृतके लोभलगि ॥

अरु यह मृदु मुसकान तुम्हारी * सकल धर्मकी मोहनहारी ॥
ऐसी को तिय ब्रजके माहीं * जाको मन इन मोह्यो नाहीं ॥
जैसिय मुरली मिली सहाई * जिनि विधिकी मर्याद मिटाई ॥
अब तो मृदु मुसकन मन मोहै * पाप पुण्य जानति नहिं कोहै ॥
हम तो पति हम तुमको जानैं * धृक जो और दूसरो मानैं ॥
कोटि करो अब भवन न जाहीं * तुम तजि हमहिं और प्रिय नाहीं ॥

१ वाणी २ प्रेमी ३ घर

रासक्रीडा.

गये यमुनतट श्याम तब, क्रीडत कोटि अनंग ॥

सो०–सोहति अतिकमनीय, कोमल उज्वल रेत तहँ ॥
करी परम रमणीय, यमुनाजी निज पाणि रचि ॥

बहत समीर त्रिविध सुखदाई * कुसुम धूरि धुँधरि छवि छाई ॥
उड़त सुगंध लपट चहुँओरा * गुंजत भँवर चारु चितचोरा ॥
बैठ तहां श्याम सुखसागर * कोटि काम मन मथन उजागर ॥
करत विलास हास रसलीला * कोटि अनंग रंग सुखशीला ॥
परिरंभन चुंबन कुच परसत * हिय हुलास आनंदरस बरसत ॥
काम भाव गोपिन हरिधायो * कियो सबनके मनको भायो ॥
अस अद्भुत रस प्रेम बढ़ायो * बहुरि रासरस रँग उपजायो ॥
सुनि पियवचन सकल अनुरागी * भूषण वसन सँवारन लागी ॥
लखि उलट भूषण सकुचानी * निरखि परस्पर तिय मुसकानी ॥
नवसत साज भईं सब ठाढ़ीं * परम प्रेम आनंद रस बाढ़ीं ॥
वर्शीवट छवि धाम अनूपा * कोटि कल्पतरुसम सुखरूपा ॥
तहां रच्यो रस रास कन्हाई * भइ कपूरमय भूमि सुहाई ॥

छं०–भइ भूमि कपूरमय रज, बरषि जल कुमकुम सिंची ॥
परम कोमल शुभग शीतल, ज्योति मणि कंचन खिंची ॥
हर्षि तहँ घनश्याम सुंदर, रासमंडल विधि रची ॥
घर्णिकापैजाय सो छवि, निरखि शारदगति लची ॥
एक एकहि युवतिके बिच, मधुर मूरति श्यामकी ॥

१ कामदेव २ बहुत सुंदर ३ हवा ४ शीतल मंद सुगंध ५ चिपटाना ६ सरस्वती

तिन मध्य जोरी रासनायक, राधिकाघनश्यामकी ॥
एक रूप अनेक वपुधारि, सबनिके विच राजहीं ॥
करी यह लीला प्रगट प्रभु, मरम कोउ न जानहीं ॥
भई मंडल जोरि ठाढी, जात नहिं मुखछबि भनी ॥
सहस बत्तिस उदित मानो, मध्य घन दामिनि बनी ॥
दो०–तेहि अवसर ललनाँ सहित, आये सुर मुनि सर्व ॥
देवनटी किन्नरवधू, तुंबरादि गधर्व ॥
सो०–देखत चढे विमान, हर्षि हर्षि वर्षत सुमन ॥
करत मुदितमन गान, धन्य धन्य ब्रजयुवति कह॥

सुरगण सब बाजत्र बजावैं * निरखत मनसुदरि छबि पावैं ॥
नूपुर कंकण किंकिणि बाजैं * मन्द मधुर मुरली सुर गाजैं ॥
ताल मृदंग वीन मुँहचगा * सुरमडल सारंग उपगा ॥
तत्र अनेक विविध गति साजैं * मिले एक सुरसों सब बाजैं ॥
निर्तते पियसँग चचल बाला * जनु मीडत घन दामिनि जाला ॥
बिच बिच श्याम बीच ब्रजगोरी * मरकत मणि कंचनकी जोरी ॥
शुभग तमाल तरुण नँदलाला * कनकलता सम सब ब्रजबाला ॥
करसों कर जोरें छबि छाजें * कोटि काम छबि निरखत लाजें ॥
वृन्दावन उर मनहुँ विशाला * रमन रास मडलकी माला ॥
हरि ब्रजनारि परस्पर सोहैं * कोटि काम रतिको मन मोहैं ॥
मटक चलन गति नागर नटकी * लटकन मुकुट लटक घुंघटकी ॥
जनु वन घन दामिनी बरूथा * निरखत नागर मोहनके यूथा ॥

१ भेद २ धी ३ मानती ४ बिजली

छं०—नचत मानौ मोरयूथन, मुकुट लटकन यों फबै ॥
चलत गतिले नागरिनें सँग, श्याम नट नागर जबै ॥
धरणि पगपटकनि झटकिकर, भौंह मटकनि कहिपरे ॥
ग्रीवँ चालन हलन कुंडल, करजु फेरन मन हरे ॥
मणि कंठ मुक्तामाल उर, बनमाल चरणनलौंबनी ॥
वदनपंकज अलक श्रमकण, झलकछवि सकैको भनी ॥
पटपीत फरकन काछनी, कटि लालकिंकिणिसोहई ॥
मॅलय चित्रित बाहु भूपण, श्याम तन मन मोहई ॥
लखि रहत नँदलाल तियछवि, विविधविध वेणी गुही ॥
सुभग पाटी माँग मुक्ता, शीशफूलनि छवि रही ॥
जटित माल जराव वेंदी, उदित द्युति भुववंककी ॥
ललित वेसरि नाक अंजन, नैन श्रुतिताटंककी ॥
अधर दशन कपोलें चिबुकेन, कंठ भूषण अतिघने ॥
करत रास विलास अद्भुत, हरत मनमोहन मने ॥

दो०—कबहुँ ललितगति ले चलत, नवल सुघर नँदनन्द ॥
निरखि हर्ष वैसेइ चलत, नवल नागरीवृन्द ॥

सो०—कबहुँ विचक्षण वाम, लटकिलेति नूतन गतिहिं ॥
रीझ रसिक घनश्याम, तापर तन मन वारहीं ॥

---

१ गोपियोंके. २ धरती. ३ कंठ ४ पसीने. ५ कमर. ६ चंदन. ७ कुंडल. ८ होठ. ९ दांत. १० गाल. ११ ठोडी.

निरतत अरस अरस पियप्यारी * बोलत बलिहारी बलिहारी ॥
कोउ कलध्वनिपियके गुण गावै * कोउ अभिनय करि भाव बतावै॥
कोउ संगीतकला गुणधारी * कोउ उघटत चटक्त करतारी ॥
निर्तत ताल भेद गति लीना * सुघर एकते एक प्रवीना ॥
जात रसिक पिय विक विन मोलैं * जब थेइ तायेइ तायेइ बोलैं ॥
तान तरंग रंग उपजावैं * लेत उपज अति रस बरषावैं ॥
कबहुँक उघटत छैल कन्हाई * फिरत लँट्ध जिमि बाल सुहाई ॥
गिरत मणिनके भूषण तनते * झरत फूल जनु रूप लतनते ॥
स्टकि लटकि निर्तत अलवेली * ग्रीव ग्रीव मजुल भुजमेली ॥
कोउ पियके सँग मिक करि गावै * कोउ मुरलीवो छीन बजावै ॥
याहू श्याम लेत भुज भरिके * लजै कमलमुख चुंबनकरिके ॥
रमत रास पियसग छबीली * परम प्रेम रसरंग रँगीली ॥
छं०-रस रँगरँगीली प्रेमके वश, रासरस पिय सँग भरें ॥
निरखि देव प्रसूनै बरषहिं, हर्षि उर आनँद भरे ॥
धन्य ब्रज धनि बाल ब्रजकी, धन्य वन पुनि पुनि कहैं ॥
करत रास विलास पूरण, ब्रह्म अहँ परगट अहैं ॥
शंभु अज सनकादि नारद, मुदित गुणगण गावहीं ॥
निरखि छबि निदि श्याम श्यामा, ब्रह्मसुख विसराहीं ॥
देवनारि विसारी पति गति, परस्पर कह शोचहीं ॥
ब्रजवधू विधि इमनकीनी, निरखि सुरप मन लोभहीं ॥
कह भयो जो उरबसी, अरु अमरपदमी जो लही ॥

१ शोभी २ फूल ३ ब्रह्मा

करत सुख जो श्यामसँग, ब्रजनारि सो त्रिभुवन नहीं ॥
बार बार मनाय विधना, कहति यह बर दीजिये ॥
होय दासी ब्रजवधुनकी, कृष्ण पदरति कीजिये ॥

दो०–धनि धनि कहि बरषहिं सुमन, मुदित सकल सुरनारि ।
धनि मोहन धनि राधिका, धनि ब्रजगोपकुमारि ॥

सो०–धनि धनि रासविलास, धनि सुंदरता धन्य सुख ।
धनि वृन्दावनवास, सुरललना तियकी कहत ॥

रमत रासरस गोपकुमारी * नन्दनँदन पियकी सब प्यारी ॥
करति गान कोकिला लजावैं * हाव भाव करि पियहि रिझावैं ॥
राग रागिनी समय सुहाये * सहज वचन जिनके मन भाये ॥
गति सुगंध निर्तत सब गोरी * सहज रूपनिधि नवलकिशोरी ॥
पगियह पटकि भुजन लटकावैं * फदा करन अनूप बनावैं ॥
निरखिलैत उपजत छविहारी * रीझरहत लखि छवि गिरिधारी ॥
वेनी छुटी लटैं बगरौंहीं * अलकैं वेसरसों उरझाहीं ॥
श्रमजलबिंदु वदन द्युतिकारी * मनहुं सुधाकण चंदमझारी ॥
अति बढ़ाहोत निरखि मनमोहन * फिरत सबनके गोहनगोहन ॥
नारि नारि प्रति रूप प्रकासे * एकहि रूप सबनको भासे ॥
अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो * कियो सबनके मनको भायो ॥
निर्तत अग थकित भइ नागरि * रूप प्रेमगुण परम उजागरि ॥

छं०–भइं निर्तत थकित तरुणी, रूप गुणन उजागरी ॥
उमगि सब उर लाय लीनी, श्याम लखि नव नागरी ॥
गिरत उरते हार टूटे, निरखि प्रभुहि जनावहीं ॥

---

१ प्रसन्न. २ उपमारहित. ३ छुटीहुई. ४ पसीना. ५ अमृतकी बूंदें. ६ खेल.

लेति खीचर्हि गहि तिन्हैं, मैंहिमोझ्स परन न पावहीं ॥
अति प्रीति श्रम जल पीत पटसों, पोंछिपवन झुलवहीं ॥
उरझि बेसरिसों रही लट, कमल कर सुरझावहीं ॥
देखि विह्वल गात भूषण, शिथिल अंग सँवारहीं ॥
कहि २ वचनमृदु २ परस्पर, निजपाणि श्रमहिं निवारहीं॥

दो०–ऐसी विधि ब्रजसुन्दरिन, देत परमसुख श्याम ॥
ललि पति गति स्वाधीन अति, भईं गर्विता बाम ॥

सो०–परमप्रेमकी खान, रूपशील गुणआगरी ॥
क्यों न करें अभिमान, जिनके वश त्रिभुवनधनी ॥

कहति भई निज निज मनमाहीं * हमसम अरु न युवति जगमाहीं ॥
अब गिरिधर हम वय करिपाये * करत हमारे मनके भाये ॥
अब हमते नहिं है हैं न्यारे * रहिहैं सदा समीप हमारे ॥
जोइ जोइ हम कहिहैं सोइ करिहैं * सदा हमारे सग विचरिहैं ॥
कोउ पिय अंश भुजनको दीनो * कहति वचन यों गर्वहि लीनो ॥
सुनो श्याम मैं अति श्रम पायो * अब तो मोपै जात न गायो ॥
एक कहति मम पाँय पिराहीं * मोपै नृत्य होत अब नाहीं ॥
एक कठ भुजमेलि सयानी * रही सटक बोलत नहिंबानी ॥
ऐसे भाव गर्वके कीन्हे * अतर्यामी हरि सब चीन्हे ॥
गर्व देखि मोहन मुसकाने * मैं बशगति मोको नहिं जाने ॥
करत सदा भक्तनमन भाई * एक गर्व श्यामहि न सुहाई ॥
सो युवतिनके मनमें जानी * दूरि करनहित यह जिय आनी ॥

१ परतों २ हाथ ३ स्त्री.

दो०-प्रेम अभूषण कनकसैम, मनिन गर्वते होय ॥
विरह अग्नि नाये विना, निर्मल होय न सोय ॥

सो०-यह विचार निय ध्यान, ले वृषभानुकुमारी सँग ॥
ह्वैगये अन्तर्द्धान, ब्रजवासी प्रभु सगते ॥

अथ अन्तर्द्धानलीला ॥

प्रेम बढ़ावनहित सुखदाई * अन्तर कर बन दुरे कन्हाई ॥
गोपिन जब हरि देखे नाहीं * चकित भईं तब सब मनमाहीं ॥
कहनि एक दिन कुँवर कन्हाई * उठीं सकल जहँ तहँ अकुलाई ॥
भईं बिकल कछु मैरम न पायो * पाय महाधन मनहुँ गमायो ॥
खोजत जहँ तहँ दृष्टि पसारें * अति आतुर चहुँ ओर निहारें ॥
तब सबहिन मिलिकै यह जानी * लैगइ हरिको कुँवरि सयानी ॥
कछु हर्ष कछु रिस उर धारी * देति भईं हँसि रसकी गारी ॥
इन समान कपटी कोउ नाहीं * करत सदा दुबिधा हम पाहीं ॥
चलहु खोज कुंजनमें लैहैं * जान कहाँ हमते बन पैहैं ॥
ढूँढन चलीं सकल बनमाहीं * चरणचिन्ह खोजत सब जाहीं ॥
देखति जहँ तहँ फिरत अधीरा * कोउ बन घन कोउ यमुनातीरा ॥
कोउ कुंजन कोउ पुजन हेरें * श्याम श्याम करि कोऊ टेरें ॥

दो०-इहि विधि सब खोजत फिरें, विरहातुर ब्रजबाल ॥
भईं विकल पावत नहीं, कछु खोजत नँदलाल ॥

सो०-यदपि कियो हरि ख्याल, नेक दुरे बन कुंजसे ॥
तदपि भईं बेहाल, युवति श्याम देखे विना ॥

पलकौंतर विधिको दिन जिनको * बन अन्तर अतिबढ दुख तिनको ॥

---

१ सोना २ डिपजाना ३ भेद ४ पलकमात्र

सो०–कहाँ गये गोपाल, बार बार बूझति सबै ॥
मुरछि परी तब बाल, मुखते वचन न आवई ॥

देखि दशा सब तिय अकुलानी * बैठारी अकेम गहि पानी ॥
कहु राधा क्यों बोलति नाहीं * काहे मुरछि परी मदिमाहीं ॥
या वनमें कैसे तू आइ * कहाँ गये तजि तोहिं कन्हाई ॥
निरखि बैदन सबहिन दुखकीनो * मनहु अमीनिधि अमृत दीनो ॥
कोऊ लगी सँवारन अलकैं * कोउ अचरते पोंछति पलकैं ॥
नयन नीर कछु सुधि नहिं देही * अतिव्याकुल बिन श्याम सनेही॥
बूझति युवति कहाँ बनवारी * चलिहैं तहा तोहिं लै प्यारी ॥
सुमत नाम पियको अनुरागी * बिरह मोह निद्राते जागी ॥
जान्यो आये कुवर कन्हाई * नयन उघारि मिलनको धाई ॥
जो देखे तौ सब ब्रजबामा * अतिही बिलखि उठी तब श्यामा ॥
कहत मोहि त्यागी नँदनन्दन * तुमहूँ नहां मिले जगबन्दन ॥
मैं अपने जिय गव भुलानी * नहिं उनकी महिमा कछु जानी॥

दो०–बोली पियसो मन्दमति, मैं अभिमान बढ़ाय ॥
लीजै कध चढ़ाय मुहिं, मोपै चल्यो नजाय ॥

सो०–वे प्रभु परमसुजान, बिहँसि कह्यो मोहिं चढनको॥
ह्वैगये अन्तर्द्धान, अपनी चूक कहा कहूँ ॥

गये श्याम धौं किन बनमाहीं * मेरी दृष्टि परे कहुँ नाहीं ॥
कहति विकल नयनन जलढारी * मोको त्याग गये गिरिधारी ॥
मुरछि परी धरणी अकुलाई * श्यामविरहदुख कह्यो नजाई ॥
देखि दशा व्याकुल सब नारी * कहति निठुरई अति बनवारी ॥

१ गोरी २ हाथ ३ मुख ४ अमृत ५ प्रभाव ६ धरती

त्रिया पुरुषसों मानहु करहीं * पुरुष नहीं ऐसी उर धरहीं ॥
देखहु स्याम तजी हम कैसे * नाहिं बूझिये उनको ऐसे ॥
कहति राधिकासों ब्रजनारी * मिलिहैं स्याम धीर धरु प्यारी ॥
चली आप खोजन सब बनमें * बिरह बिकल कछु सुधि नहिं तनमें
टेरत जहं तहँ घोषकुमारी * अहो रासपति कुंजविहारी ॥
कहाँ दुरे पिय हमते भजिकै * गात प्राण तुम बिन तनु तजिकै ॥
क्षमा करो प्रभु चूक हमारी * मिलहु कृपाकरि वेगि मुरारी ॥
तुम बिन हमको सुनहु कन्हाई * क्षण क्षण कल्पसमान बिहाइ ॥

दो०-जरत सकल तुम दरश बिन, बिरह अगितनु धाम ॥
मद मधुर मुसकनिसुधा, वरषि बुझावो स्याम ॥

सो०-सकल विश्व सुखधाम, गावत तुमको जगत सब ॥
तिन्हैं होत कत वाम, जो दासी बिन मोलकी ॥

सदा हमारी रक्षा कीनी * गरैल अँनल जलते रखलीनी ॥
अब कत निठुर होत हो प्यारे * बिरह जरावत गात हमारे ॥
क्यहि फिरत वन चरण उघारे * गाडिहैं कुश कटक अनियारे ॥
तुम पद बसन हमारे हियमें * ते कटक सालतहैं जियमें ॥
अहो नाथ यह कह जिय धारी * सुख देखे दुख देत मुरारी ॥
ऐसे कहति सकल बन डोलैं * अलबल बचन बदनते बोलैं ॥
अति अकुलाय गईं मनमाहीं * जड चेतन कछु समुझत नाहीं ॥
बूझति वन विटपनसों धाई * तुम कहु देखे कुँवर कन्हाई ॥
अहो कदम अहो अब तमाला * हमहिं बताओ बिन नँदलाला ॥
अहो जुही मालती निवारी * लखे कहूँ इत नात विहारी ॥
हे चंपक हे श्रीफल कँदली * हे दाडिम हे जामुन बदरी ॥

१ गोपियां २ स्त्रियां ३ विष ४ अग्नि ५ कांटा ६ चुभते है ७ केली

तुम देखे मनमोहन लाला * श्याम कमलदलनयनविशाला ॥
हे पैलाश हम दासि तुम्हारी * कहो कहा सुखरास बिहारी ॥
दो०–हे अशोक हरि शोक तुम, सत्य करो निज नाम ॥
लेत नहीं यश हे पॅनस, क्यों न कहत कित श्याम ॥

सो०–हे मन्दार उदार, हे पीपर हर पीर मम ॥
कह कित नन्दकुमार, सुन्दर घनतन साँवरो ॥

हे चन्दन तनु जरत जुडावो * नन्दनँदन पिय हमहिं बतावो ॥
हे अवनी चितचोर हमारे * कित राखे नवनीत पियारे ॥
तुमते दूरि कहूँ हरि नाहीं * क्यों न मिलाय देत हम पाहीं ॥
यहि धौं कुंद मुकुंद कहाँहैं * हमको देहु बताय जहाँहै ॥
हे वट नटनागरहिं बताओ * कहू निकट नंदसुवन दिखाओ ॥
कहु धौं मृगी मया करि हमको * पूछति हम हाहाकरि तुमको ॥
देखियत डहडहे नयन तुम्हारे * तुम कहुँ मोहन लालनिहारे ॥
हे दुखदमन परम सुखकारा * कहियत गति सर्वत्र तुम्हारी ॥
जहाँ होइ बलवीर बिहारी * कहति जाय किन बिथा हमारी ॥
हे तुलसी तुमतौं सब जानों * क्यों नहिं हरिसों प्रगट बखानो ॥
तुमतौ सदा श्यामकी प्यारी * कहत नहीं यह दशा हमारी ॥
बोलत नहिं कोउ कहत तरुनको * लेगये श्याम इनहुँके मनको ॥
दो०–इहि विधि वन घन ढूँढ सब, ब्रजतिय विरह उदास ॥
इत उतते फिर आवहीं, कुँवरि राधिकापास ॥
सो०–मनहुँ नीर विन मीनै, अति व्याकुल तरफत परी ॥
श्यामविरह अतिदीन, कनकलतासी नागरी ॥

१ ढाक २ कटहर ३ मछलिया

व्याकुल कहति सकल ब्रजबाला * अजहूँ नहिं आये नन्दलाला ॥
कहा करें अब किनको जैये * श्याम बिना कैसे सुख पैये ॥
तब सब बहुरि यमुनतट आईं * जहाँ रसिक पिय रास रमाई ॥
बैठीं सब राधा ढिग बामा * कहन लगीं हरिके गुणग्रामा ॥
सबके ढिग हरि सोहत कैसे * द्रुम वृन्द करि नटवर जैसे ॥
युवति नहीं कोउ उनको देखें * हरि सबहीकी लीला पेखें ॥
देखि देखि मन अति सुख पावें * परम प्रीति रसरीति बढावें ॥
करत चरित्र विचित्र निहारी * सदा श्याम भक्तनसुखकारी ॥
विरहअग्नि तनु गर्व जरावें * निर्मल प्रेम भक्ति उपजावें ॥
गोपीजन सब हरिकी प्यारी * नैक नहीं कतु हरिते न्यारी ॥
कहति श्याम ब्रज प्रगटे जबते * देत सबनको सब सुख तबते ॥
तिनमें हम सब उनकी दासी * क्यों हम तज हरि भये उदासी ॥

दो०–स्वार्थहुते करनी कठिन, हमते ठानी श्याम ॥
वेणु बजाय बुलाय सब, बधत मृगी ज्यों बाम ॥

सो०–कीजे कौन उपाय, मोहन मुख देखे बिना ॥
मरति मसोसा खाय, यह मन गीधेयो माधुरी ॥

सदा हमारे मनको भावै * तिरछी चितवन चितहिं चुरावै ॥
जब अति बालक हुते मुरारी * बालविनोद किये सुखकारी ॥
खेलतमें बहु असुर सँहारे * विघन अनेकन ब्रजके टारे ॥
अद्भुत चरित मनोहर कीनो * गिरिवर धर ब्रजको रस लीनो ॥
हलधर सखन संग मुरली धरि * गोचारन बन जात जबहि हरि ॥
तब हमको बीतत दिन जैसे * जानतहैं हमरो मन तैसे ॥
कुंडल मुकुट केश घुंवरारे * गोरज रजित दृग अनियारे ॥

१ बहेलियेमे २ पछताना. ३ लगगया. ४ लाल.

पीत बसन बनमाल विशाला * बेणु बजावत मधुर रसाला ॥
सखन मध्य गौअनके पाछे * चदन चित्र शुभगतनु आछे ॥
साँझ समय आवत जब देखें * तब हम जन्म सफल करि लेखें॥
ऐसे कथत सकल ब्रजनारी * हरिगुणरूप कथा विस्तारी ॥
समुझत कहत श्याम गुणरूपा * उपजी उर अति प्रीति अनूपा ॥

दो०-भूलि गई सुधि देहकी, भयो विरह दुख औन ॥
केवल तनुमय ह्वै गई, नहिं जानति हम कौन ॥

सो०-भृंगी कीट समान, मगन ध्यानरस नागरी ॥
बिसरो सकल सयान, भई आपुही कृष्णतनु ॥

लागीं करत चरित सब हरिके * पूरण प्रेम भई गिरिधरके ॥
ये लीला उनहींको सोहै * नेक नहीं जानति हम कोहै ॥
एक भई दधिचोर कन्हाई * एक पकरि गहि भुज लै आई ॥
एक यशोमतिको वपु धरिके * बाँधतिहै ऊखलसों हरिके ॥
इक भइ गाय एक गोपाला * बोलति बैसेइ बचन रसाला ॥
कारी धोरी धूमरि कहिकै * हटकत फिरत लकुटकर गहिकै ॥
कहति एक अबेर गिरिधारी * गाय गोप सब रहौ सुखारी ॥
कहति एक मूदो सब लोचन * मैं करिहौं दावानल मोचन ॥
एक यमल अर्जुन तरु भजे * एक बकासुर वदन बिभजै ॥
एक मस्तको नाग बनाई * तापर निरत करत हरषाई ॥
एक दहीको दान चुकावै * एक त्रिभग ह्वै वेणु बजावै ॥
मगन भई सब या रसमाहीं * तनु अभिमानै रह्यो कछु नाहीं ॥

दो०-अंतर नेकु रह्यो नहीं, भई श्याम ब्रजवाम ॥
तब अंतर नहिं करि सके, भये निरतर श्याम ॥

---

१ आकाश या वस्त्र २ दूर करनेवाले ३ घमड

सो०-प्रगट भये तत्काल, तिनहींमधि नँदलालिले ॥
सुन्दर नयन विशाल, गोपीजनवल्लभ सुखद ॥

प्रेममगन अति आतुरताई * श्रीवृषभानुकुवरि उर लाई ॥
देखि प्रगट दरशन गोपाला * मिलीं धाय आतुर ब्रजवाला ॥
जो धनराशि परी कहुँ पावे * लोभी जन लूटनको धावे ॥
लपटी एक धाय उरमाहीं * एक मिलत ग्रीवा दे बाहीं ॥
कोऊ परी चरणपर आई * कोऊ अंग रही लपटाई ॥
कोऊ गहि उर पकज लावें * तप्त विरहकी ताप नशावें ॥
कोउ लटकी गहि भुजा नवेली * जनु शृगार विटप छवि वेली ॥
कोऊ मुखछवि रही निहारी * कोऊ रही चरण उर धारी ॥
कोऊ दृगभरि कहत भले हरि * एक पीत पट छोर रही धरि ॥
हरिसों मिली लसति यो भामिन * जनु वन घन घेर्यो बहु दामिन ॥
कहुँ अंजन कहुँ कुंकुम रेखा * कहूँ पीककी लीकैं सुवेखा ॥
युवतिनमध्य लसें हरि प्यारे * कृपादृष्टि सब ओर निहारे ॥

दो०-पुनि बैठे हरि हर्षि तहँ, युवतिवृन्द चहुँ पास ॥
सबके सन्मुख राजहीं, सुन्दर छवि धनरास ॥

सो०-बोले बिहँसि गोपाल, हसत कियो यह ख्याल हम॥
कतहि भई बेहाल, तुम प्राणनते मोहिं प्रिय ॥

सब्चीं सुनि प्यारी यह बानी * मन जान्यो नहिं प्रगट बखानी ॥
यहि कहि कोमल वचन कन्हाई * सबको दुख डार्यो बिसराई ॥
अति आनद सबनको दीनो * सफल मनोरथ सबको कीनो ॥
जाके साथ हुती जिय जैसी * पूरन करी श्याम मन तैसी ॥

१ छाती २ कंठ ३ रेखा

भये कान्ह प्रीतम अनुकूले * बढ्यो अनद सकल दुख भूले ॥
तब हरिसों सब नवलकिशोरी * पूछन लगीं बिहँसि कर जोरी ॥
प्रेम प्रीतिकी रीति सुहाई * हमैं कहो समुझाय कन्हाई ॥
इक जो प्रीति परस्पर कहिये * एक एक ही दिशि ते लहिये ॥
एक दुहुनको मानत नाहीं * ताको कहा कहत जगमाहीं ॥
उत्तम प्रीति कहावति जोई * कहहु श्याम हमसों तुम सोई ॥
हम अबला जानति कछु नाहीं * ताते पूछतिहैं तुम पाहीं ॥
सुनि गोपियन वचन रसाला * भये प्रेमवश परम कृपाला ॥

दो०–यदपि जगतगुरु अजितै प्रभु, जानराय ब्रजचद ॥
प्रेमविवस हारे तदपि, अपने मुख नन्दनन्द ॥

सो०–कहत भये तब कान्ह, सुनहु प्राणवल्लभप्रिया ॥
नहिं तुमसम कोउ आन, निपुण प्रेमके पथमे ॥

यद्यपि तुम पूछतिहो जैसे * प्रगट करौं लक्षण सब तैसे ॥
एक जो प्रीति परस्पर होई * स्वारथहेतु करत सब कोई ॥
जैसे पशू पशूको जाने * आपुसमें अतिहितकर माने ॥
सो वह प्रीति कनिष्ठ कहावे * जासों सब ससार बधावे ॥
दूजी प्रीति एक दिशि जोई * करति धर्म अधिकारी सोई ॥
जैसे मात पिता चित धरिके * रक्षत हैं सुतके हित करिके ॥
सो वह मध्यम प्रीति कहावत * उत्तम गति ताते जन पावत ॥
जो यह दोउनको नहिं जाने * गुण दूषण कछु उर नहिं आने ॥
तिन्हें सुनो मै कहत बखानी * कै कृतज्ञ कै पुनि अज्ञानी ॥
उत्तम प्रीति जानिये सोई * अनायास उपजत उर सोइ ॥

१ श्री २ जो जीता न जाय ३ छोटी

दुहुँदिशि इहिविध प्रीति बढ़ावै * नहिं तिमिरौ तामें कछु आवै ॥
अंतर नेक परै नहिं कोइ * प्रीति पुनीत जानिये सोइ ॥
छं०-नहीं अंतर नेकु जामधि, प्रीति उत्तम सो कही ॥
करी मोसों तुम सबन सोइ, मैं ऋणी तुमरो सही ॥
करहुँ जो उपकार तुमप्रति, कोटि कोटिन जग भरी ॥
कबहुँ होहु न उऋण तुमते, हे प्रिया ब्रजसुंदरी ॥
करै एमी कौन जैसी, तुमन जो करती करी ॥
लोकवेदमर्याद ममहित, तोरि तृणसम परिहरी ॥
करहु मनते दूर अब यह, दोष मैं तुमते कियो ॥
प्रिया अंतर परमसुखमें, विरहदुख तुमको दियो ॥
दो०-एसे प्रेमाधीनह्वै कहि कहि वचन रसाल ॥
दूरकरी युवतीनके, मनते गाँस गुपाल ॥
सो०-बाढ्यो परमानंद, व्रजवासिन प्रभुवचन सुनि ॥
परम मुदित तियवृंद, प्यारी प्रिय नन्दनन्दनकी ॥

अथ महामंगलरासलीला ॥

सुनि पियके सुखरी रसवानी * गोपीजन सब मन हरषानी ॥
हसि हसि बहुरि लाल उरलाये * मनते सब संदेह मिटाये ॥
देखि सबनकी प्रीति बड़ाई * बहुरि रासरस रुचि उपजाई ॥
वमोह सुख सबको उपजायो * वही भाव सबके मन भायो ॥
यह जान्यो सबदिन तबहीने * करत रासरस पिय सबहीदे ॥
अन्तधान चरित सब भूली * बसेइ आनंदमें रस फूली ॥

१ रस या आनंद २ बीच ३ कर्जा देनेवाली ४ चिंता

बहुरि रासमंडल निधि नोरा * विच विच श्याम बीच विच गोरी॥
वैसेइमपि नायक हरि राधा * बढ़े परस्पर प्रीति अगाधा॥
वैसेइ मुरली श्याम बजाई * वैसेइ थकित भयो उडुराई॥
वैसेइ सुर बिमान नभ सोहैं * वैसेइ सुर मुनि गँधरव मोहैं॥
वैसेइ खग मृग नव द्रुम वेली * वैसेइ यमुनापुलिन सुहेली॥
वैसेइ पवन त्रिविध सुखदाई * वही रास रस रूप निकाई॥
छं०—करै वेसोइ रास रसपुनि, युवति अति छवि लाजहीं॥
गौर अंग किशोर वेप, सुदेख सुख शशि राजहीं॥
जोरि पंकज पाणि बाहु, मृणाल मर्दन साजहीं॥
मध्य सबके श्याम श्यामा, रूपराशि विराजहीं॥
मुकुट कुंडल बसन भूषण, वरण अंगन राजहीं॥
अंग अंग अनंत रति लखि, कोटि कोटिन लाजहीं॥
चरणनूपुर किंकिणी कटि, वलय नूँपुर बाजहीं॥
बीन ताल मृदंग चंग, उपंग सुर सुख साजहीं॥
दो०—अरस परस निरखत छविहि, भरे प्रेम आनन्द॥
नवल नागरी ब्रजवधू, नव नागर नन्दनन्द॥
सो०—रहे निरखि सुर भूल, सहित सुन्दरी मग्न सुख॥
पुनि पुनि वर्षत फूल, धन्य धन्य ब्रजकहि सुखन॥
सोहति हरिमुख मुरली कैसे * करि दिग्विजय नृपति वर जैसे॥
बैठि पाणि सिंहासन गाजै * अधर छत्र शिर ऊपर राजै॥
चमर चहू दिशि चिकुर सुहाये * वेतपाणि कुंडल छवि छाये॥

१ गहरी २ चन्द्रमा ३ किनारा ४ गहना ५ बाजू ६ विछुये

बलि बलि बरजतहैं सब काहू * कहत निकट कोऊ मति जाहू ॥
दूरहिते सब करत जुहारै * सन्मुख आदर सहित निहारै ॥
मधुकर पिके बदी गुण गावैं * मागध मदन प्रशस्ति सुनावैं ॥
मान महीपति बलमथि मान्यो * युवती यूथ जीत गहि आन्यो ॥
जिनहिं पनच बिनही कोदंडा * गुर शर भेद कियो ब्रह्मंडा ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी * बोल्त हैं सब जय जय बानी ॥
नारि पुरुष जड जगम जेते * किये सकल अपने वश तेते ॥
थक्यो पवन जल अनल सिरानी * निधि कुन मेटि आपनी ठानी ॥
निज निज ठकुरायनकी रेखा * वाचि सकल वश भये निरेखा ॥

दो०-रच्यो राजसूययज्ञ रस, रास विपिनैं शुभ धाम ॥
तहँ अधिकारी साँवरो, मोहन सुन्दर श्याम ॥

सो०-सबहिनको सुख देत, दान मान रस प्रेमको ॥
मद्यो माधुरी हेत, परमानंदित लोक सम ॥

गावत गोपी सँग सब जुरली * बाजत मधुर मधुर सुर मुरली ॥
राग रागिनी प्रगट दिखावैं * ले भव रूप अनूपम गावैं ॥
अति प्रवीन पियको मन मोहैं * नृत्य करति सुन्दर सब सोहैं ॥
नाचत कबहुँ श्याम अरु श्यामा * रीझत निरखि सकल ब्रजवामा ॥
ले गति चलत परस्पर दोऊ * सो छबि बरनि सकै नहि कोऊ ॥
होडा होडी रग बढावैं * तदपलैन शोभा अति पावैं ॥
उरझी कुंडल बेसँर सों लट * पीत बसनबन माल रही सट ॥
उरझे मन मन बैनन बैना * लटरीनी छपि उरझे नैना ॥
नाचन सुगर्न चपल गिरिधारी * प्रेम उरझ उरझे पिय प्यारी ॥

१ भौरे. २ कोकिल. ३ धनुष. ४ धन. ५ नम ६ दोनों

उरसी गोपीजन लखि शोभा * नहिं निरवार सकत मन लोभा ॥
अति रसरंग बढ्यो सुख भारी * धैइ धैइ वदति मुदित ब्रजनारी ॥
मगन सकल रस सिंधु निहारैं * रीझ रीझ तन मन धन वारे ॥
छं०-मगन सब रसरास सुखनिधि, हर्षि तनमन वारहीं ॥
हिय हुलास न जायकहि छवि, राजयुगल निहारहीं ॥
कीनो जु तप जिहि हेतु बारह, मास सो पति पाइयो ॥
तब मंत्र कीनो ब्याहको, सब सखिन मंगल गाइयो ॥
ललित कुंज बितान सुभग, लतानि मंडप द्युतिबनी ॥
बहु रंग बंदनवार चहुँ दिशि, चारु सुमनन छवि घनी ॥
अति विचित्र पवित्र यमुना, पुलिन शुभ वेदी रची ॥
वर्णन सकै छवि कौन विधि, तिहुँलोक शोभाकी सची ॥
दो०-तहँ नँदनन्दन लाडिलो, श्रीवृषभानुकुमारि ॥
दूलह दूलहिन राजहीं, शोभा अमित अपारि ॥
सो०-भरी परम उत्साह, ललितादिक ब्रजसुन्दरी ॥
प्रीति रीतिकी चाह, लागीं करन विवाहविधि ॥
मोर मुकुट रचि मौर बनायो * सो शिर धर गिरिवर धर आयो ॥
तनु घनश्याम पीत पट सोहै * घन दामिनि[२] ताके ढिंग मोहै ॥
बनमाला गरमाहिं बिराजै * निरखत इंद्रधनुषद्युति लाजै ॥
ललित अंग तनु भूषण जाला * कुंडल झलकन नयन विशाला ॥
सकल कला गुण रूप निधाना * त्रिभुवन सुन्दर परम सुजाना ॥
जाके मन्मथ[३] मैन बराती * फूले विटप सुमन[१] बहु भाँती ॥

१ फूल २ बिजली ३ कामदेव

करि कोलाहल पिक शुक बोलै * मञुमोर निर्तत मँग डोलैं ॥
नभ सुरपति दुदुँभी बजावै * नाचत किन्नर गँधरव गावैं ॥
वर्षत सुरगण सुमन सुहाये * भ्रातिय करति सकल मन भाये ॥
कुँवर लाडिली शुभग सँवारी * गोरे अंग चूनरी सारी ॥
नखशिख मणि भूषण छबिछानैं * मुखशोभा लखि उडुपँति लानैं॥
प्रीतिरीति जहँ हित करि गाना * सो शुभ घरी बिधाता बानी ॥

छं०–शुभ घरी सो बानी विधाता, हेतु जिहि दृढ़ व्रत लियो॥
शरदनिशि पून्यो विमल शशि, निरखि अति प्रफुल्लित हियो
अधर मधु मधुपर्क कहिकै पाणिग्रहणँ सुविधि करी ॥
पढ़त नभ विधि वेदवाणी, सुरन जय ध्वनि उचरी ॥
तब अलिनहँसिकै गाँठी जोरी, प्रेमगाँठ हिये परी ॥
सहससोरह संग सखियाँ, फिरति भाँवरि रस भरी ॥
बढ़्यो अति आनद उरमधि, साद सब पूरण भई ॥
मदन मोहनलाल दूलह, राधिका दुलहिनि नई ॥

दो०–निरखि देव बरष सुमन, हरष न हिये समात ॥
वृन्दावन रस रास सुख, लखि सुरवधू सिहात ॥

सो०–हमसों यह सुख दूरि, कहत परस्पर सुरनगण ॥
क्यों उडि लागै धूरि, धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज ॥

सोहति युवतिवृन्द मधि जोरी * नवनागर वर नवल किशोरी ॥
शोभा अमित पार को पावै * निरखत बनै कहत नहिं आवै ॥
दूलह श्याम दुलहनी राधा * रूपसिंधु दोउ परम अगाधा ॥

१ कायल २ नगाड़े ३ चन्द्रमा ४ ब्याह

रागमीति रँगमीने दोऊ * अति आनद उमँगि सब कोऊ ॥
प्रेमरग भीनी ब्रजनारी * निरखि युगल छवि होहि सुखारी॥
भरी प्रीतिरस गारी गावैं * लखि लखि पिय प्यारी सुख पावैं॥
हाव विलास मोद उपजावैं * बार बार दपतिगुण गावैं ॥
विविध भाँति दुदुभि नभ बाजै * निरतकला रभादिक साजै ॥
हस मोर पिक चौतक बोलैं * बनमृग निकट सग सब टोलैं ॥
वारति तिय भूषण हरषाई * बनके दगन देति पहराई ॥
तव इक सखी भई नन्दराई * इक वृषभानुरूप धरि आई ॥
अतिहित मिले महँर दोउ धाई * तव विनती वृषभानु सुनाई ॥
छं०–तब जोरि कर वृषभानु विनयो, सुनहु श्रीनन्दरायजू॥

हम भये सकल सनाथ अब, सब कृपा तुम्हरी पायजू ॥
अतिबड़े पुण्यते मिले तुमसे, सगे सुखके सिंधुजू ॥
शिरमोर गोकुल चंद आनँद, कंद सब जग वदजू ॥
तुम गेह मंजनहेत कन्या, हम न तुम सम योगजू ॥
निज दासकरि सब जानिये, वृषभानु पुरके लोगजू ॥
अष्टसिद्धि नवनिधि संपति, सकल सुखके खानजू ॥
ऐसे विनयकरि नन्दके, चरणन गहे वृषभानुजू ॥
तब नन्द अति आनंद भरि, बोले सहित अनुरागजू ॥
सुनहु श्रीवृषभानुजू, तुम धन्य अति बड़भागजू ॥
तुमसे समुद न सो सुनहु, संबंध मांगिन पाइये ॥
परम निर्मल यश तुम्हारो, लोक लोकन गाइये ॥

१ भीगीहुई. २ दोनों. ३ पपीहा ४ नन्दलाल.

अति नेह कान्हरसों तुम्हारो प्रीति पहली यह भई ॥
दई कन्या करि कृपा, गुण रूप सुख शोभा मई ॥
पूरे मनोरथ सकल अब हम, बड़े सब भाँतिन भये ॥
वृषभानु नन्द अनंद प्रमुदित, परस्पर चरणन नये ॥

दो०–मन मन हरषित नागरी, नागर नवल किशोर ॥
लखिरसरीति सखीनकी, प्रेमप्रमोद न थोर ॥

सो०–विलसत अति आनंद, ब्रजविलास ब्रजनागरी ॥
प्रीति निवस ब्रजचंद, को कहिसकै सुहाग सुख ॥

बरत मनोरथ सब मन भाये * त्रिभुवनपति दूल्ह करि पाये ॥
ब्याहरीति सब करि ब्रजनारी * गावति यशुमतिको रस गारी ॥
तब कंकण छोरन विधि कीनी * रचि पचि गाठि चतुरतिय दीनी ॥
कहत श्यामसों छोरौ कंकन * परमानंद मुदित गोपीजन ॥
बड़ चतुर तौ खोलहु गिरिधर * यह न होय धरिबो गिरिको कर ॥
कै छोरो कै दोउ कर जोरौ * दुलहनिके परि पाँय निहोरौ ॥
बड़ कहावत हौ ब्रजनाथा * काहे कँपन लगे दोउ हाथा ॥
छोरहु वेगि कि सुनहु कन्हाई * पठवहु यशुमति माय बुलाई ॥
दोउ परस्पर कंकण छोरैं * प्रेम उमग उर हर्ष न थोरैं ॥
पचिहारे कंकण नहिं छूटत * निरखि हर्षि ब्रजतिय सुख लूटत ॥
कहत सहाय करो जिन कोऊ * कंकण छोरहि आपहि दोऊ ॥
दुल्हनि दूल्ह कंकण खोलैं * कै वृषभानु बबाको बोलैं ॥

दो०–कमल कमल पर सोह जनो, पाणि लाडिली लाल ॥
लखि कवि कुल साँचे लगत, रोम कटिली नाल ॥

---

१ अति प्रसन्न २ विलास करती है ३ आपसमें ४ देखकर

सो०–दूलह नन्दकुमार, दुलहन श्रीराधा कुँवरि ॥
सन्तन प्राणअधार, अविचल यह जोरी सदा ॥

यह रस रास चरित हरि कीनो * ब्रजयुवतिन वांछित फल दीनो ॥
ब्रजतिय सुख हित कुंजविहारी * करी मास निशि षट उजियारी ॥
साद नहीं युवतिन मन राखी * श्रीभागवत कह्यो शुक भाखी ॥
वेद उपनिषद साख बतावैं * ब्रह्मा शंभु सहस मुख गावैं ॥
नारद शारद ऋषिय अनंता * कहत सुनत गावत सब संता ॥
सोरह सहस गोप सुकुमारी * तिनके संग लाल गिरिधारी ॥
कियो रासरस रहस अगाधा * पूरण करी सबनकी साधा ॥
हाव भाव रस रास विलासा * नैन सैन मुख बचन प्रकासा ॥
भुज भरि मिलन अधर रस चाखन * नृत्य गान रस रुचि संभाखन ॥
क्षण क्षण बढ़ति अधिक रस रीती * इह विधि रैन करत सुख बीती ॥
भयो समय ब्राह्मी[1] शुभ काला * रास रमत भइँ श्रम सब बाला ॥
तब श्रीयमुना गे नँदलाला * सोहत संग सकल ब्रजबाला ॥

छं०–सोहत सकल ब्रजबाल सँग, नँदलाल तब यमुना गये
शारद निशि रस रास करि, पूरण मनोरथ सब भये ॥
जैसे महा मद मत्तगजें[2], वर यूथ करिणिनँसँग[3] लिये ॥
फिरत बन सरसरित क्रीडत, निदरि अतिनिर्मल हिये ॥
जिमि नंदसुत जगवद आनँद, कन्दरसनिधिश्यामये ॥
मेटि वेदमर्याद ब्रजतिय, प्रेम सब आनन्द भये ॥
रमत वृन्दावन यमुनरस, केलि अति सुख मानई ॥
दास ब्रजबासी प्रभू गुण, नाग नर सुर गानई ॥

---

१ ब्राह्ममुहूर्त २ मतवाला हाथी ३ हथनिया

दो०–धनि वृन्दावन धन्य सुख, धन्य श्याम धनि रास ॥
धनि धनि मोहन गोपिका, नित नव करत विलास ॥

सो०–नहिं सुरपुरसमतूल, वृन्दावन सुख एक पल ॥
कहि कहि बरषे फूल, सुरगण मन आनँद भरे ॥

यमुनाजल क्रीड़त नंदलाला * सोलह सहस संग ब्रजबाला ॥
मधि राजत दोऊ वर जोरी * दंपति गौर साँवरी गोरी ॥
कोउ कटिलौं जल सुख साजै * कोउ उर ग्रीवालौं छवि छाजै ॥
ताकी उपमा कवि किमि कहहीं * अति आदर छबि पार न लहहीं ।
छिरकत पाणि परस्पर सोहैं * नन्दनदन पियको मन मोहैं ॥
सलिले शिथिल सोहत नदन दन * सुन्दर भाल कुमकुमा चन्दन ॥
पँचरँग भयो यमुनजल ताते * छवि मय लहरि उठतिहै ताते ॥
रूप छरासी तियगण जामें * करत विहार लिये घनश्यामै ॥
एक एक अंग भरि भरि लेहीं * हास विलास करत छवि देहीं ॥
एकनले अथाह जल डारैं * सुख व्याकुलता रूप निहारैं ॥
इक भाजत इक पाछे धावैं * एक श्याम ढिंग पकरिले आवैं ॥
कंठ लगाय लेत पिय ताही * सो सुख कविसों कह्यो न जाई ॥

दो०–करत केलि यमुनासलिल, ब्रजललनासँग श्याम ॥
मिटि श्रम मिटि आलस गयो, भये सुखी सुखधाम॥

सो०–अलख लखी नहिं जाय, अविगतिकी गति को कहै ॥
योगी सकत न पाय, सो भोगी ब्रजतियनको ॥

जलविहार विहरत सुख पाई * रास रंग मनते नहिं जाई ॥
युवतीमंडल बरि कर जोरें * श्यामा श्याम मध्य करि खोरें ॥

१ पानी २ जिसका भेद न जाना जाय

वही भाव मनमें उपजावें * निरखि निरखि मोहन सुख पावें ॥
विहरति नारि हँसत नँदनन्दन * अकमें भरि भरि लेत अनन्दन ॥
प्यारी श्याम अजली डारे * सो छबि तिय सुख पाय निहारे ॥
मानहु कमल और इन्दियवर * छिरकतहैं मकरंदै परस्पर ॥
जलक्रीडा सुख करत कन्हाई * वर्षत सुमन देव झरि लाई ॥
लीलासागर परम अपारा * कवि किहिविधि कर पावें पारा ॥
करि जल संग केलि ब्रजनारी * आये जलतट निकसि विहारी ॥
भीजे पैट लपटे तनुमाहीं * पट अंतर लट चीरचुचाहीं ॥
ठाढे यमुनातीर कन्हाई * पुलिन पवित्र परम छबि छाई ॥
निरखत निर्मल तनुकी शोभा * अरसपरस विहँसत मन लोभा ॥

दो०–तब इक तरुको विहँसिके, आयसु दीनो श्याम ॥
नाना भूषण बसन बर, तिन वर्षे अभिराम ॥

सो०–निज निज रुचि अनुहार, लै लै ब्रजकी सुन्दरिन ॥
कीनो नवल शृंगार, उर आनँद नहिं जाय कहि ॥

करि शृंगार तनु नवल किशोरी * हरि सन्मुख ठाढी सब गोरी ॥
निरखि श्याम छबि मन ललचाहीं * विदा करत घरको सकुचाहीं ॥
हँसि बोले सब मदनगुपाला * जाहु सदन अब सब ब्रजबाला ॥
अति आदर दैदै सुखदाई * पाणि परस सब सदन पठाई ॥
निशि सुख टरत न काहू मनते * चलीं सदनैं सब वृन्दावनते ॥
अति आनँद रह्यो उर भरिकै * भाँवरिदै आई सँग हरिकै ॥
मनके सफल मनोरथ कीने * नन्दसुवन हित पति करि लीने ॥
गई सदन सब हर्ष बढ़ाये * घर घर लोगन सोवत पाये ॥

१ गोरी २ पुष्परस ३ वस्त्र ४ सुंदर ५ घर ६ पुत्र

जगस्वामी हरि यह मति ठानी * ब्रजयुवतिन सबहिन घर मानी ॥
प्रातकाल सब ब्रजजन जागे * निज निज कारजमें सब लागे ॥
नन्दधाम गये नँदके लाला * काहू नहि जान्यो यह ख्याला ॥
यह रहस्य लीला गिरि नारी * सतजनन मन आनँदकारी ॥

छं०-यह रहस लीला श्यामकी, सब संत सुर मुनि भावनी
ज्ञान ध्यान पुराण श्रुति मति, सार परम सुहावनी ॥
यह मत्र यत्र अनंत व्रत फल, ध्यान दंपतिको रहे ॥
भाव करि नित भावमन, विनु भाव यह सुखही लहे ॥
धन्य श्रीशुकदेव मुनि, भागौत यह रस गाइये ॥
निगम नेति अगाध श्री, गुरुकृपाविन नहिं पाइये ॥
सरुचि कहि जे सुनें सीखें, प्रीति करि जे गावहीं ॥
ऋद्धि सिधि सब कह गनाऊ, भक्ति अनुपम पावहीं ॥
उर बढ़ै रसनेम दृढपद, प्रेम राधा श्यामको ॥
अहहिं अचल निवास वृन्दा, विपिनै घन निज धामको ॥
यहै आशा राखिकै उर, दास ब्रजवासी कही ॥
कृपा कीजै श्याम श्यामा, शरण पदपंकज गही ॥

दो०-चरित ललितै गोपालके, रासविलास अनेक ॥
कापै वरणे जात सब, इतनो कहां विवेक ॥

सो०-निकसीतरे अथाय, ज्यों पिपीलिका सिधुतें ॥
कह्यो यथामति गाय, तिम ब्रजवासी दासहू ॥

---

१ गुप्त २ वन ३ सुन्दर ४ ज्ञान ५ चैंटी

अथ मानचरित्रलीला ॥

नित्य श्याम श्यामा सुखकारी * करत नित्य नवें चरित विहारी ॥
निर्गुन निर्विकार अविनासी * भक्तमनोरथ सदा विलासी ॥
नित वृन्दावन धाम सुहायो * नित्य रासरस वेदन गायो ॥
भक्तन हेतु विविधै तनु धारे * भक्तन हित लीला विस्तारे ॥
सदा भक्तवश कृष्ण कृपाला * दयासिंधु प्रभु दीनदयाला ॥
शारदरैनि रसरास उपायो * युवतिनप्रति निजरूप बनायो ॥
सफल मनोरथ सबको कीनो * पतिहित करि सबको सुख दीनो॥
तब कृपालु उरमें यह आनी * सदा भक्तवांछित फलदानी ॥
गोपिन गर्व रासमें कीनों * सो मैं अन्तर करि हरि लीनों ॥
रही साध इनके मनमाहीं * इमको श्याम मनायो नाहीं ॥
ते भज भक्त परम हित मेरी * करौं साध पूरण इनकेरी ॥
अब इक मानचरित्र उपाऊँ * पाँयन परि परि सबन मनाऊँ ॥

दो०–करि विभेदरसरीतिमें, देहुँ मान उपजाय ॥
इनके मुख मंडित वचन, कहवाऊँ सुखदाय ॥

सो०–सकल गुणनके धाम, परमविचक्षण रसिकमणि ॥
नवरस सागर श्याम, एक प्रेम रसवश सदा ॥

श्रीराधा मनमोहन प्यारी * नव नागरि नवरूप उजारी ॥
रास नृत्य रिझये गोपाला * तारसमगन फिरत नँदलाला ॥
करत भवन शृंगार भयारी * औचक तहाँ गये गिरिधारी ॥
देखि प्रिया पियको हँसि दीनो * हर्षि श्याम अंकम भरि लीनो ॥
रहे थकित छवि अंग निहारी * जान कमल मुख पर बलिहारी ॥
इहि अंतर पियके उरमाहीं * देखी तिय निज तनु परछाहीं ॥

१ गया. २ अनेक प्रकारकी.

अझकि उठी प्यारी भइ न्यारी * अति सनेहभ्रम सुरत बिसारी ॥
और नारि पियके उर जानी * आपुनपिये प्रीति घटि मानी ॥
राखत सदा हियेमें याही * त्याते मोहि दिखावत नाहीं ॥
कियो मान यह भ्रम उपजाई * कहत वचन पियसों अनखाई ॥
अब जानी पिय बात तुम्हारी * ऊपरहीसों प्रीति हमारी ॥
हमसों मुँहकी बात मिलावत * यह प्यारी उरमाहिं बसावत ॥

दो०-धनि धनि याको भाग्यहै, बसति तुम्हारे हीय ॥
याहीसों हित राखिये, अब मनमोहन पीय ॥

सो०-भलीकरी सुख मानि, मोहिं दिखाई आनिके ॥
यह प्यारी सुखदानि, उरते जिन न्यारी करौ ॥

ऐसे कहि मुसकाय किशोरी * कछु रिसकर जिय सौंहसिकोरी॥
चकित श्याम लखि सन्मुख बानी * कहत कहा नागरी सँयानी ॥
साच कहति कैधौं करि हाँसी * मन रिसकरि तिय होत उदासी॥
समझी नहीं कहा तिय भाई * झझके उठी कै अति भ्रम पाई ॥
हँसि भुज गहन लगे मनमोहन * बैठत क्यों नहिं मम प्रिय गोहन
मोहि छियो जिन दूर रहोजू * बसन हिये किन ताहि गहोजू ॥
तुम्हीं चतुर अरु मनै सयानी * हम दासी अरु ये पटरानी ॥
उरमें मनभावती बसाई * हँसो करनको हमें बताई ॥
लखि लखि प्रिया बदन सुखकारी* हँमन मनहिं मन कुञ्जबिहारी ॥
कहति कहा भामिनि भइ भोरी * तोनिन उरको बसत किशोरी ॥
तू मम श्रवर्ण नयन मुख बानी * जीवन प्राण अधार सयानी ॥
वृथा क्रोधकर जियमें आनै * मेरो कह्यो नहीं क्यों मानै ॥

---

१ उरु २ गुस्से होकर ३ चतुर ४ कान.

दो०–सुनो श्याम हिरदे बसत, सो छिपिये न छिपाय ॥
ज्यों शीशीके माहिं जल, परगट परत लखाय ॥

सो०–बातैं कहत बनाय, यह देखत हमसों हँसत ॥
जैहैं कहुँ अनखाय, उरते तब पछितायहै ॥

जो वह कहै करा तुम सोऊ * वह नागरि तुम नागर दोऊ ॥
मतहि सिखावो मोहि कन्हाई * भली करी ल सात दिखाई ॥
जाहु चले अब मैं सुख पायो * ऐसे कहि मन मान बनायो ॥
रिस करि मौन रही गहि प्यारी * देत मनहि मन वाको गारी ॥
शोचत श्याम देखि मनमाहीं * बोल सकत नहिं प्रियहि डराहीं ॥
कहत वृथा जिय मान न कीजै * नहिं अपराध जान जियलीजै ॥
क्यों रिस करति प्रिया मनमाहीं * मेरे उर तेरी परछाहीं ॥
यह सुनि कुँवरि राधिकारानी * बोली रिसकरि पियसों बानी ॥
कहा बनावत बातैं हमसों * जाहु चले बोलों नहि तुमसों ॥
यह कहि ओट गई है प्यारी * भये विरहवश तब गिरिधारी ॥
अति व्याकुल तन मन अकुलाहीं * बार बार शोचत मनमाहीं ॥
गयो सरोज बैदन कुम्हलाइ * तहा एक सखि दूती आई ॥

दो०–सो हरिसो बूझति भई, कहहु न मोहिं सुनाय ॥
आज दशा कैसी लखति, बैठे कहा गँवाय ॥

सो०–क्यों तनु रहे भुलाय, अति व्याकुल देखत तुम्हैं ॥
रह्यो बदन कुम्हलाय, ऐसो शोच कहा पर्यो ॥

बोले श्याम सखी हित जानी * विरह विकल कहिजात न बानी ॥
कियो मान वृषभानुकिशोरी * मैं कछु नहि अपराध कियोरी ॥

१ गुस्स होकर २ मुख

लखि मेरे उर निज परछाहीं * रूसरही करि कोप वृथाहीं ॥
मैं वहिकै बहुभांति मनाई * नहिं प्रतीति राधा उर आई ॥
निज समुझे इतनो हठ कीनो * तबते मोहिं मदन दुख दीनो ॥
ऐसे कहि शोचत बलवीरा * लेत नयन भरि साँस अधीरा ॥
परम चतुर दूतिका सयानी * विरह विकलता पिय जियजानी ॥
कह्यो धीर धरिये बनवारी * चलिये बनको कुजविहारी ॥
मैं प्यारीले तुमहि मिलाऊं * आज वहांलौं तुमसों पाऊं ॥
गई सँदनते ले बन धामहि * तहँ बैठारि धीर धरि श्यामहि ॥
मैं ले आवति राधा प्यारी * कितक बात यह सुनहु विहारी ॥
मेरे आगेरी वह वारी * कहा मान करिहै सुकुमारी ॥

दो०–ऐसे कहि चातुर अली, आतुर लखि घनश्याम ॥
श्रीवृषभानुलली जहां, चँपल चली व्रजधाम ॥

सो०–मन मन रचत सयान, नई बनाऊं बात इक ॥
अबहि छुड़ाऊं मान, मोसों धों कहिहै कहा ॥

हरिसों रूस मान करि वैसी * अबही कहा भई यह ऐसी ॥
धरत बिचार यहै मनमाहीं * गई सखी राधाके पाहीं ॥
कुवरि किशोरा परम सयानी * मुख देखतहि दूतिका जानी ॥
सहजहि बोल ताहि ढिगलीनी * सहजहि कह्यो मया कितकीनी ॥
तुरतहि कहि तब लखी सुनायो * तुमसो बन घनश्याम बुलायो ॥
सुनत कह्यो प्यारी अनखाई * काहेको सुदि श्याम बुलाई ॥
तू आई याहीके लीहै * मैं अब श्याम भले करिचीहैं ॥
कहा कहों तोको री आली * तुहू मली अरु वे बनमाली ॥

१ श्रीकृष्ण २ घरसे ३ सखी ४ जीवत वे

उनकी मेहिमा कहत न आवै * अरु इक नई नारि मनभावै ॥
ताको लै उरमाहिं बसाई * तोहिं उहाते टारि पठाई ॥
आज कहा कछु कलह भयोरी * कधौं कछु तैं मान ठयोरी ॥
तबहिं आन अनमनी वतानी * यह तौ कछु मैं बात न जानी ॥

दो०–मोसों नहिं कछु हरि कह्यो, सहज पठाई लेन ॥
कहँ धौं परी पुकार वहँ, तुम चलि देखहु नैन ॥

सो०–कहत सुनाय सुनाय, लै लै तेरो नाम सब ॥
तैं धों लियो छुड़ाय, कहि काके काके गथहिं ॥

काहेको गथ लियो परायो * अपनो नाम कुनाम धरायो ॥
डारि देहु जाको जो लीनो * तेरे बहुत दईको दीनो ॥
तबहींते उन शोर लगायो * ता कारण हरि तोहि बुलायो ॥
हरि तेरी दिशिले झगरेरी * तू वत उनसो रोपैं करैरी ॥
यह कछु नोखी बात सुनाई * मैं काको धन लियो छिपाई ॥
काहेको हरि झगरत माई * इती मया मोपै कहँ आई ॥
जैसे हैं तैसे हरि जानें * नहिं उनके गुण प्रगट बखानें ॥
बैठि किधौं तू घर जा अपने * मैं उनपैं अब जाउ न सपने ॥
हौं यह तोहि मनावन आई * मान करो तुम और सवाई ॥
परधन लै सबको ब्रज वैठी * कहा करत बात यों ऐंठी ॥
देति जवाव सवनि किन नाई * मोपै कह इतनो सतराँइ ॥
तबते सवसों लरत कन्हाई * जब मैं तोहि बुलावन आई ॥

दो०–बार बार कह कहत री, तू मोको डरपाय ॥
मैं नहिं काहूको लियो, झूठहि दोष लगाय ॥

---

१ प्रभाव २ गुस्सा ३ अनोखी ४ इतराई

सो०-लरत कौनसों श्याम, कौने करी पुकार अब ॥
कहै न तिनको नाम, साँच तवहिं मैं मानिहौं ॥

नव वदिहौं ऐसे कहि हेरी * श्याम निकट बैठे जब वैरी ॥
कहँलगि सबके नाम बताऊँ * एक एक करि तहिं गिनाऊँ ॥
नभ जल धरणि बनहुमें आये * यहँलगि मोते जात सुनाये ॥
जो नहिं तिनकी गयेहि चुराई * तौ तू कत बन चलत डराई ॥
परी बान तोको यह वैसी * भली कहत अैली लगति अनैसी ॥
श्याम बिना क्यों न्याव चुकेरी * तिनहीं सों तू रोप करेरी ॥
काटि करो एकै पुनि हैहौ * वे अरु तुम कछु नियके ह्वैहौ ॥
मानकही चलु श्याम बुलाई * श्रवण लागि हरि मोहिं पठाई ॥
जिनकी यह सब सौंज तुम्हारे * ते जन हरि पहँ जाय पुकारे ॥
इदु कहत मो बदन छिगोयो * अलिकुल अलकनको दुखरोयो ॥
हरिण मीन छवि दृगन दुराई * खञ्जन हू तह देत दुहाई ॥
शुकँरी छवि नासा हरिलीनी * बैननकरी कोकिलाहीनी ॥

दो०-अधरविंब दाडिमदशँन, लूटे कठ कपोत ॥
लई तरणि छवि छीनलै, तरल तरोना जोत ॥

सो०-चक्रवाक कुच दोय, कटि हरि कदली जघलिय ॥
गजै मरालै गति जोय, चरण पाणिपकज हरे ॥

ये सब हरिसों करत लराई * तैं जु करी इनसों अधिकाई ॥
अति अनीत लखि कुँवर कन्हाई * पठइ मोहिं लैन तोहिं आई ॥
प्रतिउत्तर अपनो करु चलिकै * इहा रही कह पैठि मचलिकै ॥

---

१ धरनी २ धनका थैली ३ हे सखी ४ बुरो ५ कान ६ छिपाई ७ तोतकी ८ नाक ९ बिंबाफलजस होठ १० अनारके दानोंकेसे दांत ११ सूर्य १२ हाथी १३ हंस

सुनि पियके गुण तिय हसि दीने * कछु सकुची मन मान जु लीने॥
चतुर सखी नियकी सब जानी * तबहीं हरषि कही यह बानी॥
बानि कहा अब तोहि परीरी * जब तब लखि निज छाँह डरीरी॥
तादिन दर्पण लखि भ्रम कीनो * सो दृग मूंदि मेटि हरि दीनो॥
आज देखि पिय निज उरछाहीं * कियो इतो हठ कुँवरि वृथाहीं॥
यह सुनि समुझ मनहि सकुचाई * सहचरि कंठ बिहँसि लपटाई॥
रसकरि तुरत मान बिसरायो * सुनि वनधाम श्याम सुख पायो॥
हँसिकै कह्यो सखीसों जारी * तू हरिसों कहि आवत प्यारी॥
मैं अँग भूषण वसन सँवारी * आवति वनहिं जहाँ वनवारी॥

दो०-यह सुनि हर्षी दूतिका, गई जहाँ घनश्याम॥
अति ब्याकुल तनुसुधि नहीं, विह्वल कीनों काम॥

सो०-बैठत उठत अधीर, क्योंहू सुख पावत नहीं॥
बढ़ति विरहकी पीर, श्रीराधा राधा रटत॥

राधाविकल विरह गिरिधारी * कहूँ माल कहुँ मुरली डारी॥
कहूँ मुकुट कहु पीत पिछोरी * नहिं कछु सुरति भइ मति भोरी॥
कबहु मूँदि दृग ध्यान लगावैं * कबहूँ प्याराके गुण गावैं॥
कबहूँ लोटत कुंजन माहीं * कबहूँ बैठी द्रुमनकी छाहीं॥
ठाढे टेकि कबहुँ द्रुम डारी * लखत पियापँथ पलक निसारी॥
देखि दशा दूतिका सयानी * कही श्यामसों आतुर बानी॥
काहेको बदरात बिहारी * मैं ल्याई वृषभानुदुलारी॥
विरह विषाद दूरि कर डारो * नेकधीर अपने मन धारो॥
सुनि प्यारीको नाम कन्हाई * मिले दूतिकासों उठि धाई॥
कहा प्रिया कहि अति अकुलाये * नयनसरोज नीर भरि आये॥

१ दुखी २ बेहोश ३ पतिका १ाला ४ जल आँसू

तब हँसि कह्यो दूतिका प्यारी * आवत प्रिया अबहि बनवारी ॥
मंजु प्रतिज्ञा तुमते कीनी * विधना आज राखि सो लीनी ॥

दो०-अब अपने मन हर्षकरि, दूरि करो सन्देहु ॥
आवतिहै वृषभानुजा, भुज भरि अंकम लेहु ॥

सो०-सुख शोभाकी खान, नहीं कुँवरि वृषभानुसी ॥
तुमसम धन्य न आन, बड़भागिन तुम वश भये ॥

रसिकपुरंदर प्रभु सुखदानी * सुनत सिहात दूतिका बानी ॥
पुलकत अंग धीर नहिं धारें * पुनि पुनि प्यारा पथ निहारे ॥
निज करि सुमन सुगंध लगावे * कुंज भवन रुचिसेज बनावे ॥
अति कोमल तनु जान पियारी * सेज कली चुनि करत नियारी ॥
जो द्रुम लता लटकि तनु लागैं * तेऊपर धरि मन अनुरागैं ॥
प्रेम प्रीति रस वश नगस्वामी * करत चरित मानहुँ अति कामी।
देखि श्यामकी आतुरताई * हँसति सखी मन हर्ष बढ़ाई ॥
जान प्रेमवश हरि सुखरासा * गई बहुरि प्याराके पासा ॥
करि शृंगार नवल तनु गोरी * राजत श्रीवृषभानु किशोरी ॥
सहज रूपकी राशि कुमारी * भइ अतिकछवि भूषण भारी ॥
अंग अंग छवि पुंज[1] बिराजे * निरखि मदन[2] तिय कोटिक लाजै ॥
त्रिभुवनकी छवि मनहु बटोरा * विधि[3] कीनी वृषभानु किशोरी ॥

दो०-देखि रूप मन मगन सखि, बोली वचन सँभार ॥
धन्य धन्य राधा कुँवरि, तुव गुण रूप अपार ॥

सो०-तोसमान नहिं तीय, तिहुँपुर सुन्दरि नागरी ॥
बसत सदा पिय जीय, तू मोहन मनभावनी ॥

---

१ समूह २ कामदेव ३ विधाता

चलहु वेगि अब सहित हुलासा * लाग रही पियकी इत आसा ॥
तेरोइ नाम जपत मन लाई * गावत तुव गुण कुवर क हाई ॥
तुम तनु परस पवन जो नाही * उठि आतुर परिरभैत ताही ॥
तेरो रूप आनि उर अ तर * धरत ध्यान दृग मूँदि निरंतर ॥
रँमी श्याम तन मन तू जाते * राधारमण नाम है ताते ॥
सुनि सहचरिके मुखकी बानी * पुन्कि प्रफुल्लित मृदु मुसुकानी ॥
पियको प्रेम समुझि सुख पाई * चली मिलन गजगति हर्षाई ॥
मुखशशि कनकलतासी गोरी * बाल हरण छवि नयन किशोरी ॥
भूषण वसन अनूप सुहाई * अंग अग शोभित छवि छाई ॥
अग सुगध मनोहर ताई * भवर भीर चहुँ ओर सुहाई ॥
हँसि हसि कहत सखीसों बातें * झरत सुमैन जनु रूप लतातें ॥
ऐसे करत प्रकाश पियारी * गई जहा पिय कुनविहारी ॥

दो०–परम प्रेम दोऊ मिले, श्रीराधा नँदनन्द ॥
गुण आगर नागर युगल, छविसागर सुखकन्द ॥

सो०–जो प्रभु परम अपार, बेद भेद जानत नहीं ॥
सो ब्रज करत विहार, वर्णि पार को पावही ॥

कुनन मजु सुफल छवि छाई * भवर गुञ्ज सुखपुञ्ज सुहाई ॥
फूलनसेज रुचिर रचि कीनी * चित्र विचित्र रग रस भीनी ॥
फूले सँग गण करत कलोलै * जह तहँ मधुर मनोहर बोलैं ॥
फूली वृन्दावन तरु डारी * तन मन फूले पिय अरु प्यारी ॥
सहचरिसहित मनोहर जोरा * राजत युगल किशोर किशोरी ॥
हाव भाव करि रस उपजावैं * हासविलास करत सुख पावैं ॥
सखी कह्यो तब कै अब नीके * सकुचि हसी प्यारी सग पीके ॥

१ चिपटाना २ वसी ३ दूताके ४ फूल ५ घर ६ दोनों ७ पथी

नदन कोर निपरी पिय लायो * तबहिं श्याम पीतांबर छोड्यो ॥
यह छवि निरखि सखी बनि आई * अनन्द रही ओरी सुखदाई ॥
धनि राधा धनि कुंवर कन्हाई * धन्य मान रस केलि सुहाई ॥
धन्य कुंजवन धनि महि पावन * धन्य लता द्रुम सुमन सुहावन ॥
धन्य सखी धनि धन्य व्रजवासी * निनसँग विहरत प्रभु सुखरासी ॥

दो०–गये श्याम श्यामा सदन, सखी सहित सुख पाय ॥
मानचरित रस केलि करि, व्रजवासी बलि जाय ॥

सो०–मानचरित्र अनूप, जे सुभाव गावहिं सुनहिं ॥
ते न परें भवकूप, राधा कृष्ण प्रतापते ॥

करत चरित नाना गिरिधारी * सुखसागर भक्तन हितकारी ॥
जाको शिव अँज ध्यान लगावें * सनकादिक मुनि जप कर ध्यावें ॥
जा प्रभुको यश परम विशारद * गावत अहिपैति नारद शारद ॥
अखिल अनीह अकाम अभोगी * योग समाधि न पावत योगी ॥
सो प्रभु सबके अंतर्यामी * युवतिन प्रेम भक्ति वशवामी ॥
बहु नायक है करत विहारा * व्रज पुर घर घर नन्दकुमारा ॥
रस लीला नाना उपजावें * काहु रुठावें काहु मनावें ॥
अरस परस तिय सब यह जाने * हरि हैं सबके धाम सुमाने ॥
अवधि बदन काहूसों जाइ * काहूके घर बसत कन्हाई ॥
सोइ बदत जाके घर आवत * जात प्रात ताके मनभावन ॥
व्रज गोपी जिनको पति जानें * कोउ आदरहिं कोउ अपमाने ॥
खंडित वचन सुनत सुखदाई * यह लीला हरिके मन भाई ॥

दो०–व्रजमें करत विहार हरि, व्रज वनितनके संग ॥
अखिल काम पूरण करण, भरे प्रेम रस रंग ॥

---

१ समारहित २ ब्रह्मा ३ शेषनाग ४ सरस्वती

सो०–कोटि काम कमनीय, सुंदर सुखसागर नवल ॥
रमणीमन रमणीय, ब्रजभूषण ब्रज लाडिलो ॥

मन बीथिनि[1] नँदनन्दन ठाढे * अंग अंग सुन्दर छवि बाढे ॥
ललता आइ गई तिहि पैंडे[2] * मनमोहन रोकी मग बैंडे ॥
देखत छवि ललता ललचानी * बोली विहँसि श्यामसों बानी ॥
कत रोकत मगमें बिन कानैं * जादु चले जितहौ हित सानैं ॥
झूठहि इसी सनेह जनावो * कबहुँ हमारे धाम[3] न आवो ॥
हरि हँसि कह्यो आज निशि[4] ऐहैं * तेरीसों दम अनत न जैहैं ॥
ऐसे कहि मधुरे मुसकाई * छोडि दई मग छैल कन्हाई ॥
ललता गई सदन सुख मानी * ऐहैं श्याम आज यह जानी ॥
साँझहिते हरिपथ निहारै * धाम आपने सेज सँवारै ॥
भूषण बसन नवल तनु साजैं * खननसे दृग अंजन आँजै ॥
सुमन सुगंध अनूपम गाई * रुचि रुचि राखति माल बनाई ॥
कबहूँ ठाढी होति दुवारे * कबहूँ लखति गगनके[5] तारे ॥

दो०–कहति श्याम आये नहीं, होन लगी अधरात ॥
गये आशदे मोहिं पुनि, कहा धरी जिय बात ॥

सो०–वे बहु नायक श्याम, किधौं लुभाने अनत कहुँ ॥
मन मन शोचत बाम, कारण कछु जाये नहीं ॥

कैधौं कछु ख्यालहि चित दीनो * कैधौं मात पिता डर कीनो ॥
कैधौं सोय रहे अलसाने * कै मो घर आवत सकुचाने ॥
ऐसे शोचत रैनि बिहानी * जहँ तहँ बोले तमचुर[6] बानी ॥
तब बैठी अपनो मन मारी * कछु शोच कछु रिस उर धारी ॥

१ गलियां २ रास्ता ३ घर ४ रात ५ आकाश ६ मुर्गे

हरि निदि गये सखी लीलाके * सुन्दर श्याम धाम लीलाके ॥
तहं सुख सोवनि रैनि गमाई * प्रात होत ललता सुधि आई ॥
चले महल ललितामों वहिके * जिय संकोच ललताको गहिके ॥
आये ललतामदन विहारा * चितै रही मुखकी छवि प्यारी ॥
अनन रेख अधर पर राजै * पीक लीक नयनन छवि छाजै ॥
मोहन लखि कपोलैन नीको * लाग्यो अञ्जन बाहू तीको ॥
तुरत मुकुर लै उठी सयानी * दिखरायो मुख सन्मुख आनी ॥
बहनि दशि तिन बदन सुधारो * लाल बहू तव प्रान निधारो ॥

दो०—पीक पलक अंजन अधर, देखि श्याम सकुचाय ॥
रहे निचाहैं नयन करि, वचन कह्यो नहिं जाय ॥

सो०—ज्योंज्यों सकुचत श्याम, त्योंत्यों हठ नागरि करत ॥
देखहु छवि अभिराम, हाहामुख का मेरियत ॥

मकुचन कहा बोलिके साँचे * आये तो मो गृह रँग राचे ॥
रैनि नहीं तो प्रातहि आये * धनि धनि वह जिन स्वाग बनाये ॥
तुम बिन मानहु लिन्ग कन्हाई * मैंतो बरनि अनन्द बधाई ॥
क्यों मोहन दर्पण नहि देख्यो * सूधे मौतन काहे न पेख्यो ॥
ठाढ़े मत बैठन क्यों नाहीं * बहु कछु चूक करी हम पाहीं ॥
रहे मूक है कहा ठगेसे * सोहत हो अल्सात जगेसे ॥
उत्तर मोहिं देन क्यों नाहीं * मैं तबहीतें बचन वृथाहीं ॥
तब चितये दृग कोर कन्हाई * भाव अनिहि आधीन जनाई ॥
ग्वालि प्रवीन जानि सब लीनो * तुरत रोष दरबे तजि दीनो ॥
हँसि करि मोहन कठ लगाये * भले श्याम ऐसेहू आये ॥
अमित अग लागे निदि जाने * अति सनेह मनहीं मन माने ॥

१ गाल २ ग्रीवा ३ शीशा ४ उर ५ नेत्र. ६ चतुर.

अंग सुगंध मर्द अन्हवाये * बसन अभूषण दे बैठाये ॥
दो०–रुचि भोजन दै सेजपर, पौढ़ाये घनश्याम ॥
रस वश करि नव नागरी, किये सफल मनकाम ॥
सो०–सुर मुनि सकत न पाय, प्रभु ब्रजवासी दासको ॥
प्रेम प्रीति वश आय, सो गोपीवल्लभ भये ॥
कहत सौंह करि रसिक बिहारी * तुम प्रिय मोहिं प्राणते प्यारी ॥
सदा बसत तुम मोमनमाहीं * तुम बिन ल्हत अनँत सुख नाहीं॥
ऐसे कहि अति प्रीति जनावें * चतुर वचन कहि चितहि चुरावें॥
यहै भाव युवतिनसों भाखें * सबहिनके मनकी रुचि राखे ॥
कुलमर्याद लोकन्[1] त्यागी * सब गोपी हरिसों अनुरागी ॥
बिन देखे रसभाव बढ़ावें * नयनन देखतही सुख पावें ॥
ब्रह्म सनातन जगसुखकारी * यह लीला ब्रजमें बिस्तारी ॥
ललताको सुखदे सुखसागर * चले सदन अपने नट नागर ॥
उतते मग आवति चद्रावलि * देखि रही सुदरि छबि साँवलि ॥
बने विशाल कमलदल लोचन * चितवन चारु श्याममदमोचन ॥
इत मुसकाय श्याम तेहि हेरी * खोरि साँकरी भइ भट भेरी ॥
बिहँसि कह्यो चद्रावलि प्यारी * कहाँ रहत हरि हमहि बिसारी ॥
दो०–तुम कैसे बिसरत प्रिया, हँसि बोले घनश्याम ॥
आज आय सुख लेहिंगे, रैनि तुम्हारे धाम ॥
सो०–सुनि हरषीं जिय बाम, चली सदन मुसकायके ॥
लखि सुख पायो श्याम, मुदित गये अपने भवन ॥
चद्रावलि मन अधिक उच्छाहू * फूली फिरत कहत नहिं काहू ॥

१ दूसरी जगह २ रीति ३ भूलकर

सुनके करत मनोरथ नाना * बासरै कलपसमान बिहाना ॥
भय अस्त रवि निशि नियरानी * उडुगण ज्योति देखि हरपानी ॥
हरि सुखमाके भवन सिधाये * चंद्रावलिके भवन न आये ॥
सूने पर देखी सो ग्वाली * आतुर गये तहाँ वनमाली ॥
सुखमा लखि हरिको सुख पायो * अतिही आदर करि बैठायो ॥
कोक कला कोविद वर नारी * हाव भाव मोहे गिरिधारी ॥
वसे तहां मोहन सुख पाई * चंद्रावलिकी सुरति भुलाई ॥
इत चंद्रावलि सेज सँवारे * बार बार हरि पथ निहारे ॥
कबहूँ भवन कबहु अँगनाई * कबहूँ रहति द्वार ढकनाई ॥
कबहूँ शोच करत मनमाहीं * आवहिंगे मोहन कै नाहीं ॥
कबहूँ आलस कछु जिय जानी * धोवतिहै नयनन लै पानी ॥

दो०—कबहुँ कहत हरि आयहैं, उरमें हर्ष बढ़ाय ॥
कबहुँ बिरह ब्याकुल जरति, अति व्याकुल अकुलाय ॥

सो०—कबहुँ कहत सुख पाय, बहु रमणीरमणीय पिय ॥
वसे अनत कहुँ जाय, मोसों छूँठि अवधि बदि ॥

एमेहि ऐसे रैनि बिहानी * सुनी श्रवण बैयसरी बानी ॥
भइ वाम दुख बाम उदासी * जाने श्याम कपटकी रासी ॥
कहति वाम कर मनके माहीं * श्याम नाम खोटो सब आहीं ॥
कोकिल श्याम श्याम अलि देखौ * श्याम जलद अहि श्याम बिशेखौ ॥
निरदहानी करनी हरि लीनी * मोसों प्रीति कपटकी कीनी ॥
एमे क्रोध बिरह सब बाला * सुखमा सदन गये नँदलाला ॥
प्रान भये उठि चले तहांते * आलस भरे नयन रँगराते ॥
चंद्रावली सदन चलि आये * ठाढ़े अँजिर रहे सकुचाये ॥

१ दिन २ समय ३ तारे ४ कौवकी ५ मेघ ६ आंगन

मन्दिरते रिसभरी गुवारी * नखते शिखलौ रही निहारी ॥
मन मन कहत कुटिल अति गिरिधर * प्रात होत आये मेरे घर ॥
कियो मान मनमें अति भारी * आँगनमें ठाढे बनवारी ॥
और नारिके चिह्न बिलोकी * रोकति रिसहि रुकत नहि रोकी ॥

दो०–तब बोली करि मान तिय, कहा काम मम धाम ॥
ताहीके घर जाइये, बसे जहाँ निशि श्याम ॥

सो०–प्रात दिखावन मोहिं, आये रंग बनायके ॥
मैं सुख पायो जोहि, भले बनेहौ लाल अब ॥

विन गुण शोभित है उरमाला * बीच रेख मुख चन्द्र रसाला ॥
अधर दीप सुत रेख सुहाई * नागबेलि रँग पलक रँगाई ॥
लटपटी पाग महावर लाये * आलस नयन अरुण जल छाये ॥
बदन भाल मिल्यो कहुँ बन्दन * यह छबि अधिक बनी नँदनन्दन ॥
बलय गाढ़ वर पीठ धरेहौ * जान्यो नागरि अङ्के भरेहौ ॥
इतने पर डाहन मुर्हि आये * सौंह करन को इत उठि धाये ॥
जाउ तहीं जासों मन मान्यो * जैसेहो तैसे मैं जान्यो ॥
विहँसि कह्यो तब लाल विहारी * तुमते और कौन मुर्हि प्यारी ॥
तुमबिन मोहिं कहू कल नाहीं * बसत सदा मन तेरे माहीं ॥
यह चतुराइ कहाँ पढि आई * चीन्हे हो गुणराशि कन्हाई ॥
यह कहि गई भवनमें भामिन * रीझे श्याम देखि छबि कामिन ॥
सन्मुख जाय भये पुनि ठाढे * द्वारकपाट दिये पुनि गाढ़े ॥

दो०–पौढ़ि रही तिय सेजपर, वदन मूंद अनखाय ॥
हरि तन पुनि चितयो नहीं, उरमें प्रेम बढ़ाय ॥

१ घर. २ पानकी बेलि. ३ लाल. ४ गोद. ५ स्त्री.

सो०-प्रमुगनि लखी न जाय, जो चाहै सोई करै ॥
पीढ़ि रहे सँग जाय, पीढ़ी तिय जहँ मानकर ॥

जो देखे तौ संग कन्हाई * चली बहुरि तिय उठि हहराई ॥
खोलि किवार अजिरमें आई * देखे ठाढे तहाँ कन्हाई ॥
विनय करत नयनननी मैनन * चकित भई पेखत तिय नैनन ॥
भीतर भवन गई पुनि प्यारी * तहाँ अक भर लई मुरारी ॥
तब नागरि रिसयवे भुलाई * चेटक करि वरा करी कन्हाई ॥
मान छुड़ाय हुलास बढ़ायो * तियको सुख दीनो सुख पायो ॥
तब निज धाम गये गिरिधारा * चद्रावलि उर आनँद भारी ॥
तहा सखी दश पाचक आई * चद्रावलि बैठी जेहि ठाइ ॥
औरै वदनै और अंग शोभा * निरखि रही दृग दै मन लोभा ॥
वहत पिया वह रूप बढ़ायो * वहै न छूट कहूँ कछु पायो ॥
क्यों अग शिथिल सरगना मारी * यह छवि कही न जाय तुम्हारी॥
हमसों कहा दुरावति प्यारी * हमजाने तोहि मिले बिहारी ॥

दो०-चद्रावलि करि चतुराई, ज्वाब सखिन नहिं देह ॥
रही मूँद मुख मद हँसि, भीजी श्याम सनेह ॥

सो०-रह्यो ध्यान उरछाय, वह लीला विसरै नहीं ॥
मुखसो कह्यो न जाय, गूँगेको गुड़सो भयो ॥

तब बोली वृषति वह भारी * युवती मनमोहन बनमारी ॥
है लीला अद्भुत सब जिनकी * कहा न जात बात सखि तिनकी॥
हाहा यहि चद्रावलि हमसों * हमहू सुने श्याम गुण तुमसों ॥
कैनोहि मिले यमुनके तीरा * कैनोहि मिले सघन वलवीरा ॥

१ आगनमें २ सुख ३ नेत्र ४ रंगीन ५ छुपातीहो

तब चद्रावलि गद्गद बानी * हपसहित हरिकथा बखानी ॥
सुनि हरि चरित ललित सुखकारी * भई प्रेमवश सब ब्रजनारी ॥
चद्रावलि धनि धन्य कहीं तब * कहन लगी हरिके गुणगण सब ॥
नन्दनदन सब लायकहैंरी * सबहिनके सुखदायकहैंरी ॥
बसे रैनि काहूके आई * काहू देत प्रात सुख आई ॥
जाहूको मन आय चुरावें * काहूसों अपनो मन लावें ॥
काहूके जागत सिगरी निशि * काहूको उपजावतहैं रिशि ॥
ब्रजवासी प्रभुके मन भावें * तैसेइ तैसे चरित्र उपावें ॥

दो०—यह लीला आनद भरी, सकल रसनको सार ॥
भक्तनहित हरि करतहैं, गाय तरत ससार ॥

सो०—घर घर करत विहार, ब्रजयुवतिनके सग हरि ॥
गावतिहैं श्रुति चार, ब्रजवासी प्रभुके यशहिं ॥

श्रीराधा वृषभानु दुलारी * नन्द नँदन पियकी अति प्यारी ॥
सहज रहै जपने मनमाहीं * नन्द सुवन निशि अन्त न नाहीं।
नन्द भवनके मेरे गेहा * रहे सदा चित यही सनेहा ॥
श्याम बसे काहू नारीके * आये सदन प्रात प्यारीके ॥
रति रँग चिह्न अग परवाने * सोहत नयन अरुणे अलसाने ॥
प्यारी देखि रही मुख पियको * जान्यो रग लग्यौ कहुँ तियको ॥
तब मन विहँसि कह्यो श्रीराधा * आन बन्यो पियरूप अगाधा ॥
पर उपकार हेतु तनु धान्यो * पुरवन सबकी साध विचान्यो ॥
कहाँ पढी यह नीति बतावो * हमहूँको सो ठाम सुनावो ॥
कहो कहाँ काको सुख दीनों * धनिधनि यह उपकार जु कीनों ॥
धनि यह बात आज म जानी * क्यों नहिं कहियत प्रकट बखानी।

१ क्रोध २ पुत्र ३ लाल

धन्य मोहि यह दरश दिखायो * धनि धनि जामों नेह लगायो ॥

दो०–भली दिखाई आज यह, अद्भुत छवि अभिराम ॥
सूर उदय लोचन कमल, चन्द उदै पर श्याम ॥

सो०–उर कुचकुंकुम दाग, अधर दशन छवि राजई ॥
रँगी महावर पाग, यह शोभा अनुपम बनी ॥

क्यों उठि भोर यहांलो आये * काहेको इतने सरमाये ॥
तुमहूं भले भलीहैं वेऊ * कीनो भलो भले मिलि दोऊ ॥
कीनोहै इतनो हित जिनते * तौ अब कित बिछुरेहो तिनते ॥
जाहु तहीं वे सुनि दुख पैहैं * बहुरौ तुमसों मन न मिलैहैं ॥
तिनहींको सुख दीजै मोहन * जिनसो निशि दिनसे मिलि गोहन
पिय सन्मुख नहिं लखत कन्हाई * बदन नवाय रहे सकुचाई ॥
कबहुँ नयनकी कोर निहारें * कबहूं चरणनख भूमि उखारें ॥
प्रगट प्रमित मनमन मुसकाई * खंडित वचन सुनत हरषाई ॥
पियको सुख प्यारी नहिं जाने * रोष करतहू पिय मनमाने ॥
जोइ आवत सोइ कहत वदनैते * जाहु जाहु पिय कहत सदनैते ॥
तुम जानतजिय हमहिं सयाने * और कमन सब लोग अयाने ॥
रैनि बसत कहुँ भोर हमारे * आवत नाहिं लजात ललारे ॥

दो०–सबहिं श्याम वाणी मृदुल, बोले अति सकुचाय ॥
किन देख्यो कोने कह्यो, झगरहि तुमसों आय ॥

सो०–कहति हँसि यह बात, खोटी ब्रजनारी सबै ॥
तुमते प्रिय को बात, सौंह करौं जो मानिये ॥

---

१ सुन्दर. २ सूर्य. ३ केसर ४ दांत ५ उपमारहित.
६ झगड़े ७ मुसकाये. ८ परखे. ९ हे लाला. १० कोमल.

बिनहीं बोये रहिये जू पिय * बत ऐसे वचनन पहिये हिय ॥
झूठी सब एक तुम साचे * नीके लाज छाडिकै नाचे ॥
साह कहू सुनिबो करि पायो * सो अब इहाँ काम है आयो ॥
ऐसे खिजत पीयसों प्यारी * आई तहाँ और ब्रजनारी ॥
सखियन देखि कुँवरि मुसकाई * उर अंतर है रिस अधिकाई ॥
तिन्हें कह्यो सैनन में प्यारी * देखहु हरिकी छविहि निहारी ॥
मौनहि रहे श्याम सकुचाई * युवति विलोकति छवि अधिकाई ॥
कहति सबै हँसि हँसि ब्रजबाला * कहँ पाई छबि यह नंदलाला ॥
तबहि सखिनसों कह्यो किशोरी * करत इते पर सौंह लठोरी ॥
निशि औरनके चितहि चुरावत * दरशन देन प्रात इत आवत ॥
तुमहीं अगचिन्ह पहिंचानो * सही परै सो बात बखानो ॥
कृपा करै तहँ ही पग धारें * नहीं काज इहँ बेगि सिधारे ॥

दो०-प्यारी उर अतिरोप लखि, अरु सखियनकी भीर ॥
तब वहँते बहरायके, द्वार गये बलवीर ॥

सो०-सोच करत उरमाहिं, भरे विरह आनन्दरस ॥
जाय सकत कहुँ नाहिं, मनमें प्यारी डर डरत ॥

अथ मध्यममानलीला ॥

जबहीं श्याम गये द्वारे तन * कियो मान प्यारी अपने मन ॥
कहति सखिनसों देखो तुम अब * बहुरि दोष देती मोको तब ॥
ऐसे श्याम गुणनके आगर * चोरत चित्त फिरत अति नागर ॥
ऐसे ख्याल मोहिं दिखरावें * जान देहु अब यहँ जिन आवें ॥
इहा काज उनको कछु नाहीं * मैं बैठी अपने घरमाहीं ॥
जाव तुमहूँ अपने सब घरमाँई * योंकहि प्रिया गई उठ धामाँई ॥

१ बड़ा झूठा २ झूठ

नख शिख रोष भरी पिय प्यारी * यौवन रूप गर्व उर भारी ॥
चली सखी बहु दशा निहारी * द्वारे पर देखे बनवारी ॥
कहति सुनौ मोहन पिय हमसों * प्रिया रोष कीनो अति तुमसों ॥
तुम्हरे आवत अति रिसपाई * यह तुम कहा करी चतुराई ॥
सुनत बात यह कुवँर कन्हाई * भये चकित अति गये झुराई ॥
जान्यो मान कियो फिर प्यारी * भये विरहव्याकुल तनु भारी ॥

दो०–तब सखियन हरिसों कह्यो, चतुर कहावत नाम ॥
करत फिरत ऐसे गुणन, अब कत्यात कत श्याम॥

सो०–तुमहिं करायो मान, अटपट रूप दिखायके ॥
अब लागे पछतान, प्रथम विचार कर्यो नहीं ॥

यह सुनि धीरज कियो कन्हाई * तब इक युवती और बुलाई ॥
तासों कहि सब बात बनाई * दूती करि हरि ताहि पठाई ॥
कहत श्याम तोसों यह बानी * वेगि[1] मिटे पिय मान सयानी ॥
दूती गई करनि मन साधा * बैठी तहां जाय जहँ राधा ॥
प्यारी मान ठान दृग बैठी * हृदय रोष भौंहैं करि ऐंठी॥
उरमें सौति शाल अति शाले * नेक नहीं इत उत कहुँ हाले ॥
दूती कछू थाह नहि पावे * बिना भीत कहँ चित्र बनावे ॥
मनहीं मन दूती पछिताई * अति आतुर मोहिं श्याम पठाई ॥
यह इतउत कहु नाहिं निहारे * कहा करों मनमांझ विचारे ॥
तब कहि उठी दूतिका नारी * मान कियो वृषभानुदुलारी ॥
कहा करी मोहन अति कीन्ही * उनकी बात आज मैं चीन्ही ॥
ऐसे म उनको नहि जाने * अब कैसे उनसों मन माने ॥

१ शीघ्र २ कुम्हलाना ३ कसकती ४ खटके

दो०-घर घर डोलत फिरत निशि, बोलत लगत न लाज ॥
आय दिखाये प्रात मुख, नटके रति रँग साज ॥

सो०-मैं आई अब बाज, चित चाहो तितही फिरो ॥
उनको यहाँ नकाज, राज करो ब्रजमें सदा ॥

दूती सुनि प्यारीकी बानी * [1]अतर प्रेम रोपै लपटानी ॥
कह्यो यमुनते मैं गृह आई * सखी एक यह बात सुनाई ॥
तब मैं रहि न सकी घरमाहीं * भली प्रकृति हरिकी यह नाहीं ॥
अब द्वारे ते हरि न टरतहै * पर घर जानकि सौंह करतहै ॥
मन पछितातैं कहत घनश्यामा * भूले हु ऐसो करहुँ न कामा ॥
तू जिनै मान तजे सुन मोसों * यहै कहन आई मैं तोसों ॥
अब समझे अरु हम समझावैं * परघर जानकि बान मिटावैं ॥
अब मोसों यह बात लखाई * जाहिं न परघर कुँवर कन्हाई ॥
जब दूती यों बात बखानी * द्वारेहैं हरि तब यह जानी ॥
उमगि उठ्यो रस सुनि मनमाहीं * बाहर प्रगट कियो सो नाहीं ॥
याहेको हरिद्वार खरेरी * कौने राखे जाय घरेरी ॥
तू रहि मान किनहि रिस पावति * यह हरिसों मैंही कहि आवति ॥

दो०-एई तीयके हीयकी, चतुर दूतिका जान ॥
अति आतुर हरिपै गई, कहति आनकी आन ॥

सो०-कही मनाऊँ लाल, नेकु मरम नहिं पाइये ॥
दीठ न जोरति बाल, सूधे मुख बोलनि नहीं ॥

अपनीगी बहुतै मैं भाखी * सुनि उन मौन हृदय धरराखी ॥
नेक नहीं उत्तर मुख बोलै * अति रिस झपत इत उत डोलै ॥

---

१ बीच २ गुस्सा. ३ सागार ४ मन.

मै जु कही सुनहु कन्हाई * भई बूँद बारूद विनाई ॥
भरि भरि लेत नयन दृगकोरैं * रहा डरत बैठी मुख मोरै ॥
तिरछी करि करि भौंहन तानै * कोटि कोटि अवगुण सुखमानै ॥
ऐसी है यह दीठे[1] तुम्हारी * कहा वैसीठि[2] करे कोउ नारी ॥
सुनहु रसिक वर कुँवर कन्हाई * आपहि लीजे जाय मनाई ॥
याको नाम भयो गढ़वाई * लीने ताहि सुरग लगाई ॥
यह सुनि विरह भरे बनवारी * मुरछि परे धर सुरति बिसारी ॥
सखी उठाय लये अँकवारी * चौंकत विकल होत बलिहारी ॥
नागर बड़े कहावत दोऊ * धीर धरो सुख पावत दोऊ ॥
बातन नेकु तोहि गहि पाऊं * तो तबही मैं तुमहिं मिलाऊँ ॥

दो०–धीरजदे घनश्यामको, दूती गई उताल[3] ॥
जाय कह्यो प्यारी निकट, प्यारे श्याम बेहाल ॥

सो०–मुख नहिं बोलत बयन, अतिव्याकुल तेरे विरह ॥
भरि भरि डारत नयन, कहा कहौं न सँभार कछु ॥

बारहि बार कहति पछितानी * दे सुख जो तू कुँवरि सयानी[4] ॥
तूही प्रिया भावती हरिकी * और नहीं कोऊ तो सरकी ॥
तेरेहि रसवश कुवर कन्हाई * तेरे तनक विरह कुम्हलाई ॥
तेरेहि रूप अधीन खरेरी * तेरेहि चितवनके चेरेरी ॥
तेरेइ रंग वसन तनुधारैं * तेरेइ रंगको तिलक सँवारैं ॥
चन्द्रवदन तेरों लखि गोरा * मोरचन्द्र शिर मुकुट कियोरी ॥
तेरोइ चरित सुने अरु गाने * तू माने भाने नियमाने ॥
अति अनुराग श्यामको तेरो * करि विचार नीके मैं हेरो ॥
जो जाको नै केवरि जानै * सो तासों वैसो हित मानै ॥

---

१ दृष्टि २ दूत ३ शीघ्रतासे ४ चतुर

यहै प्रीतिकी रीति पियारी * चहेतु बोलि लेहुँ गिरिधारी ॥
तू कहँगई कहन वह आई * मै जानति हरि तोहिं पठाई ॥
मानत कौन कही अब तेरी * जानतिहौं हरि चरित वडेरी ॥

दो०-भवचौं को तिनसों मिलै, जिन्हें परी यह वान ॥
उरमें राखत आन कछु, कहत करत कछु आन ॥

सो०-हैं ये कपटनिधान, बहुनायक पूरे गुणन ॥
दिनको करत बखान, जिन वामन ह्वै बलि छल्यो ॥

मान किये अब नाहिं बनेरी * देखु निचार हिये अपनेरी ॥
जाके गुणगण सुर मुनि मोहैं * तो तेरे गुण गणि मणि पोहैं ॥
सनकादिक जेहि ध्यान लगावैं * सो तेरे दरशन सुख पावैं ॥
शिव विधि जाके द्वार खरेरी * सो प्रभु तेरे द्वार परेरी ॥
जाके पद कमला कर लीने * सो प्रभु पद नितत मन दीने ॥
अति आतुर नँदलाल हियेरी * सोइ करति हौं शीश छुरेरी ॥
सुनु प्यारी अति हट नहिं कीजे * सर्वसै वारि श्यामपर दीजे ॥
यह योवन वर्षाको पानी * गर्व न कीजे याहि सयानी ॥
सब सुख हरिके संग कियेरी * कृष्णविमुख कै वाज जियेरी ॥
पूरब पुण्य सुकृत फल तेरो * भामिन मान कह्यो कर मेरो ॥
हरिके रस रँग जो मन भीजै * रूपसुधा जो नयनन पीजै ॥
सौंह चरण तेरेकी कीजे * सफल दरश दिय तो यों जीजे ॥

दो०-वृथा जान नहिं दीजिये, हरिसों करिकै मान ॥
उठति वैसके दिननको, सुन प्रिय यहै सयान ॥

सो०-हिलि मिलि करहिं कलोल, मैं तेरे हितकी कहति॥
लेहिं श्यामको बोल, परे द्वार विलपत दगं ॥

---

१ एष चोष. २ योवन. ३ छी

मोई चतुर सुलक्षण नीकी * सदा भावती जो पियनीकी ॥
यौवन गुण सुंदरि अरु हित पीको * है सुन्दर तेरे शिर टीको ॥
तेरे हित सब मनकी वाला * कियो बुलाय रास नँदलाला ॥
तू ततु श्याम प्राणकी प्यारी * परछाँइ वह सब ब्रजनारी ॥
तोमी और नहीं ब्रजगोपी * तेरेइ रूपघसे तिय ओपी ॥
सुंदर श्याम सकल सुखदायक * कहा भयोरी जो बहुनायक ॥
तो समान वृषभानु ललीरी * शशिहि कहा डर कुमुद कलीको ॥
ऐसे जब दूती समुझाई * तब बोली तिय कछु मुसकाई ॥
वादेहि बकति आय मेरे घर * वेधति हैं एसे वचनन शर ॥
उतकी इत इतकी उत नाई * मिल्वत झूठी बात बनाई ॥
जो चहिहै तो आपुहि ऐहै * सौंह करें और हाहा खैहैं ॥
प्रीति रीति कछु जानत नाहीं * जोइ आवत सोइ कहत वृथाहीं ॥

दो०–जब प्यारी ऐसे कह्यो, सखी लियो तब जान ॥
मानत नाहीं लाडिली, श्याम मिलाऊँ आन ॥

सो०–कह्यो सखी मुसकाय, नहिं मानत मेरी कह्यो ॥
श्याम मनावें आय, मैं जानी तब मानिहै ॥

अरी मानने बहुतें तेरे * लगत माननी कोई हेरे ॥
हाँसी खेल औरको माई * तुलत न तेरे रिसे रखाई ॥
ऐसेही रहि जो लगि जाऊँ * यह सुख हरिको आन दिखाऊँ ॥
पिय मन नूतन चोप बढाऊँ * अतिरस रूप अनूप उपाऊँ ॥
यह कह गइ श्याम पै आली * कहतु आज सुनिये वैनमाली ॥
मानिनि नाहिं मनायो प्यारी * वो जानें जियमें वह धारी ॥
हाहा करि मैं बहु समुझाई * सुनितै अधिक होत रिस हाई ॥

१ चमक २ वृथा ३ गूँथा ४ श्रीकृष्ण

तुम आतुर वैसी गति वाकी * आवति जाति बीचमें थाकी ॥
आपहि चलि लीजिये मनाई * और भांति नहिं बनत बनाई ॥
वहै बयारी जैसिये जबहीं * पीठ आड़िये तैसी तबहीं ॥
मोसी जो पठवहु तुम कोरी * नहि मानत वृषभानुकिशोरी ॥
हौंतो कहति तुम्हारे हितकी * पाइ है कछु वाके चितकी ॥

दो०–चले बनतहै लाल अब, और बनै नहिं कोय ॥
काछ काछिये जौन हरि, नाच नाचिये सोय ॥

सो०–आप काज महकाज, बड़े कहि गये बात यह ॥
तजहु श्याम उर लाज, करिविनती तियसों मिलहु ॥

चलो चले तुम्हरे हठ जैहैं * देखत प्रेम उमँग उर ऐहैं ॥
सखी संग तब नवल बिहारी * गये भवन बैठी जहँ प्यारी ॥
आगे भये सँकुचिकै ठाढ़े * अति आधीन प्रेम रस बाढ़े ॥
नेक नहीं इत उत कहुँ डोलैं * चित्र लिखेसे मुख नहिं बोलैं ॥
यदपि लाल गाढ़े अति जीके * सकल सयानपे भूले नीके ॥
प्यारी देखि पियहि मुसकानी * जिय डरपे मोते यह जानी ॥
अति आनन्द भयो मनमाहीं * चुपही रही कह्यो कछु नाहीं ॥
मन मन कहत न अब उचटाऊँ * आदर कर पियको बैठाऊँ ॥
मोसों श्याम बहुत सकुचाने * अब नहिं जैहैं धामें सिराने ॥
सहचरि कह्यो चतुरी प्यारी * कबके ठाढ़ेहैं गिरिधारी ॥
मान मनायो प्यारी पियको * तू पिय जिय पिय जीवन जीको ॥
प्राणहि तनुहिं रूसिबो कैसो * यह कहुँ भयो सुन्यो नहिं ऐसो ॥

दो०–करि आदर बैठारि पिय, हँसलै कंठ लगाय ॥
घर आये नहिं कीजिये, ऐसी चित सकुचाय ॥

१ उपाय. २ परमावश्यक ३ आगरह ४ चतुरता ५ घर.

सो०-हे तू नागरि बाम, मनमें कह ऐसी धरी ॥
वे ठाढेहैं श्याम, तू मुखते बोलति नहीं ॥

तब हँसि कह्यो भलो पिय वैसो * अवजिन काम करहु कहुँ ऐसो ॥
अवकी चूक नहीं मैं मानी * और दिनाको रहिये जानी ॥
मेरी सौंह करो नो आगे * तत्र सँकोच बोलो डर लागे ॥
कह्यो सौंहकर मोहन तवहीं * और तियन पर जात न कवहीं ॥
नन्दभवन ते अबहीं आये * तुम्हरो रोष देखि सकुचाये ॥
ऐसी अब काहेको बोलो * अवलोंकी करनी नहि खोलो ॥
अवजु काल्हिते अनत सिधारे * तौ तुमहीं जानोगे प्यारे ॥
तव हरि हँसि कर शिरपर राखे * वारहि बार सौंह कर भाखे ॥
सहचरि हँसि कर साखि रहीजू * सखी आज ते बात यहीजू ॥
पान दिये प्यारी तव लालहि * आई सखी सकल तेहि कालहि ॥
सौंह करी सवहिन यह जानी * हँसे श्याम श्यामा मुसकानी ॥
आदर कर सवको बैठायो * निरखि युगल सवहिन सुख पायो

दो०-कह्यो सखिनसों हँसि प्रिया, भरि आनँद उत्साह ॥
तुमहूँ सब मिलके कह्यो, भये श्याम अब साह ॥

सो०-लखिलखि सखी सिहात, यह सुख लाडिलि लालको॥
बसे श्याम तहँ रात, मात चले अपने सदँन ॥

चले धाम निज श्याम सकारे * देखे ठाढे नन्द दुवारे ॥
सकुच फिरे घर जात लजाने * प्रभुराके घर जाय समाने ॥
चकित बाल जब श्याम निहारे * कहत लाल यह ख्याल तुम्हारे ॥

१ गुस्सा. २ घर.

कैधो आवत हैं अब धाये * किधों परे कछु फन्द पराये ॥
वे बहु रमणी रमण विहारी * कैधो मेरा सुरत बिसारा ॥

दो०–कुमुदाके घर हरि रहे, बढ्यो अधिक उर हेत ॥
भीने दोउ प्रेमरस, अरसपरस सुख लेत ॥

सो०–मुदित श्यामसँग याम, क्षण सम बीतत यामतिह ॥
याको युग सम याम, बीतत नभतारे गनत ॥

वैसे वहा याहि इहि रीती * भयो घोर रजनी सब बीती ॥
मनहीं मन युवती पछितानी * मोसों श्याम कुटिलई ठानी ॥
गयो मदन दुख बदन झुराई * रही बैठि सदनहि मुरझाई ॥
आइ तहा सहज इक आली * देखी विरहविकल तनु ग्वाली ॥
लोचन जलज भरे जल ढारे * मन मारे मैहि नखन विदारे ॥
बूझन लगी निकट सो जाई * कहा भयो तोकोरा माई ॥
आनद रहित आन मुख तेरो * देखत होत विकल मन मेरो ॥
सोतौ बात भई है कैसी * मोहि सुनाय कहत किन तैसी ॥
तब बोली मधुरे तिय बानी * अचर पोछ नयनको पानी ॥
कहा कहौं तोसों री आली * कपटी कुटिल कठिन वनमाली ॥
मोसों गये अवधि बदि माई * अनतहि लुब्ध रहे कहु जाई ॥
कियो नहीं मेरे गृह आवन * भये सखी नयना दोउ सावन ॥

दो०–ऐसे गुण हरिको सखी, निपट कपटकी खान ॥
अब उनसो मोसों कहा, बने लिये पहिचान ॥

सो०–तोहिं मिले जो आज, मेरीसो कहियो उन्हें ॥
गहौ कछू जियलाज, वचननके साँचे बडे ॥

---

१ आकाश २ रात १ पृथ्वी

कहाँ हुते गवने कित माहीं * कबहूँ दरशदेति हौ नाहीं ॥
रहत कहाँ हौ सकल लुभाने * आयपरे इत कहीं भुलाने ॥
कहौ कहाही कछू टरेसे * आलस भरे जम्हात खरेसे ॥
बसे कहूँ निशि तिय सँग जागे * नयन अरुण अतिरस रँगपागे ॥
मलैयज उरज छाप उर धारे * द्वैशशि मनहुँ उदित उजियारे ॥
नयन कछू सकुचतसे ऐसे * शशिके उदय सरोरुह जैसे ॥
पुतरी अलि उड़सकै न जानो * उरझ रहे अग गात न मानो ॥
डगमगातसे डग पग डोले * रसमसे गात शृँगार अमोले ॥
अग अंग शोभाके सागर * धनि धनि बसे जहाँ रत्नागर ॥

दो०–बिहँसि चले कहि श्याम तब, तरक करी तुम बात॥
समुझी सब हम आय हैं, आज तुम्हारे रात ॥

सो०–सुनि हरषी जिय नारि, पुलक गात आनन्द उर ॥
ऐहैं आज मुरारि, साँझ परे मेरे सदन ॥

प्रातहिते मन हर्ष बढ़ायो * नव शत साज शृगार बनायो ॥
बार बार दर्पणै[1] मुख देखे * भूषण बसन अंग छब रेखे ॥
पन्नैमुन[2] छवि छ जत वेणी * माँग सुधारत दधि सुत श्रेणी ॥
भुवन तीय सुत रेख सँवारे * धनपति पुरको नाम सुधारे ॥
हीरावलि उर पर लै धारे * श्याम मिलन सुख मनहि बिचारे ॥
रचि रचि सुमनन सेज बनावें * केसर चन्दन अगर मिलावें ॥
यदु नायक नँदसुवन कन्हाई * गये अनत बारो निमराई ॥
बासैर[5] ऐसे बरत बिहानो * एक यौम[6] निशिको नियरानो ॥
बन्यो शोच विरही अकुलानी * श्याम न आये कहँ धो जानी ॥
गये मोंझटीरो कहि आवन * अजहूँ नहि आये मनभावन ॥

१ चन्दन २ कमल. ३ शीशा ४ माणिन. ५ दिन ६ पहर.

कैधो आवत हैं अब धाये * किधों परे कहुँ फंद पराये ॥
वे बहु रमणी रमण बिहारी * कैधो मेरी सुरत बिसारी ॥

दो०–कुमुदाके घर हरि रहे, बढ्यो अधिक उर हेत ॥
भीजे दोउ प्रेमरस, अरसपरस सुख लेत ॥

सो०–मुदित श्यामसँग बाम, क्षण सम बीतत यामतिह ॥
याको युग सम याम, बीतत नैभतारे गनत ॥

वैसे यहा याहि इहि रीती * भयो घोर रजैनी सब बीती ॥
मनहीं मन युवती पछितानी * मोसों श्याम कुटिलइ ठानी ॥
गयो मदन दुख बदन झुराई * रही बैठि सदनहि मुझाई ॥
आई तहा सहज इक आली * देखी निरहबिकल तनु ख्याली ॥
लोचन जलज भरे जल ढारे * मन मारे मैहि नखन बिदारे ॥
बूझन लगी निकट सो जाई * कहा भयो तोकोरी माई ॥
आनँद रहित आप मुख तेरो * देखत होत विकल मन मेरो ॥
सोतो बात भई है कैसी * मोहि सुनाय कहत किन तैसी ॥
तब बोली मधुरे तिय बानी * अचर पोछ नयनको पानी ॥
कहा कही तोसोंरी आली * कपटी कुटिल कठिन वनमाली ॥
मोसों गये अवधि बदि माई * अनतहि लुब्ध रहे कहुँ जाई ॥
कियो नहीं मेरे गृह आवन * भये सखी नयना दोउ सावन ॥

दो०–ऐसे गुण हरिको सखी, निपट कपटकी खान ॥
अब उनसों मोसों कहा, बने लिये पहिचान ॥

सो०–तोहिं मिले जो आज, मेरीसों कहियो उन्हैं ॥
गहो कछू जियलाज, वचननके साँचे बडे ॥

---

१ आकाश २ रात ३ पृथ्वी

उन्हें गई मैं कछू बुलावन * जापहि अजिरै गये करि पावन ॥
मोपै कृपा आप यह कीन्ही * तोसों कहाँ तबही मैं चीन्ही ॥
काल्हि कहूँ जागे तिय गोहन * जात हुते अपने घर मोहन ॥
द्वारे नन्दहि देखि डराने * मेरे गृह आये सकुचाने ॥
डग मग पग दृग नींद भरेरी * बारहिं बार जम्हात खरेरी ॥
जब मैं कही कहाँते आये * तब मोतन सन्मुख मुसकाये ॥
उत्तर नहीं दियो सकुचाई * श्याम करी तब यह चतुराई ॥
कह्यो धाम मेरे निशि आवन * आपहिं श्रीमुख बचन सुहावन ॥
रैनि जागि मैं सेज सँवारी * ताने जरी रिसहिकी मारी ॥
इतनी कहत द्वार हरि आये * ग्वालिनि भीतरते लखि पाये ॥
देखतही रिसमें झहरानी * कही सुनाय श्यामको बानी ॥
धन्य धन्य यह घरी विधाता * आये मेरेजू सुखदाता ॥

दो०–ऐसे कहि चुपव्है रही, मुरि बैठी रिस गात ॥
मधुरे वचननसों कहति, निकट सखीसों बात ॥

सो०–आयेहैं करि गौन, चतुर नारि सँग निशि जगे ॥
इनसों मिलिहैं कौन, फिरत कहा कोऊ बही ॥

कृपा करहि अब इतहि न आवैं * उतही जाँय जहाँ सुख पावैं ॥
सखी लखे सब अंग श्यामके * जागे कहुँ निशि सग बाँमके ॥
कहुँ चंदन कहुँ बन्दन रेखा * कहुँ काजर कहुँ पीक सुवेखा ॥
लखि स्वरूप हरितन मुसकाई * मान कियो यह दियो जनाई ॥
मन मन शोचत कुँवर कन्हाई * परे कठिन तियके फँद आई ॥
मेरो नाम सुनतही ऐंठी * मान कियो मोसों फिर बैठी ॥
तबहीं श्याम करी चतुराई * सैननही सों सखी बुलाई ॥

१ आंगन. २ घर. ३ शरीर. ४ स्त्रीके.

सो कहि चली जाति घरमाई * तू बैठी जो मान दृढाई ॥
अनतहि ठाढे भये कन्हाई * तहाँ सखी सहजहि चलि आई ॥
निरखि बदन दोउन हँसि दीनो * सखी कह्यो तुम यह कह कीनो ॥
तब हँसि कह्यो सखीसों गिरिधर* मैं मनाय लैहौं तू जा घर ॥
यह सुनि बिहँसि गई कहि आली * जाय मनाय लेहु वनमाली ॥

दो०–रसिकनके मणि जानमणि, विद्या मणि गुण पाय ॥
आपनहूं तहँ ते गये, तिनको दरश दिखाय ॥

सो०–रही अकेली धाम, फिरकै चितयो द्वारतन ॥
तहाँ न देखे श्याम, अधिक शोच मनमें भयो ॥

तब जानी फिरि गये कन्हाई * रहीं तिया मनमें पछिताई ॥
भई विरहव्याकुल अति नारी * मिटगयो मान हृदय दुख भारी ॥
कहत कहा मैं यह मति ठानी * आवतही हरिसों झहरानी ॥
भीतरलों आवन नहिं दीनो * कहा क्रोध मोको यह कीनो ॥
ज्यों त्यों बार मेरे घर आये * सो देखतही मैं उचटाये ॥
बार बार ऐसे पछिताई * मनही रही मैंसोसा खाई ॥
श्याम गये निहचै जब जानी * न्हान चली तब यमुना पानी ॥
अति व्याकुल मन कछु न सुहाई* कोऊ सखी न संग बुलाई ॥
पहुँची यमुना तुरत अन्हाई * चली बहुरि घरको अतुराई ॥
भये श्याम मारगमें ठाढे * पांच बर्षके ह्वै छवि वाढे ॥
आगे है नागरीसों बोले * सुन्दर कोमल वचन अमोले ॥
कहाँ जाति न्है री तू नारी * चलु बोलत आपी तू प्यारी ॥

दो०–वनहिं बुलाई श्याम तोहिं, लेन पठायो मोहिं ॥
सुनत वचन चकृत भई, रही बाल मुख जोहिं ॥

१ सखी. २ स्त्री. ३ पछतावा. ४ देखकर.

सो०-श्याम नाम सुनि कान, अति आनँद उरमे भयो ॥
अगम चरित को जान, ब्रजबासी प्रभु कान्हके ॥

करगहि लियो चली हरषाई * गोप कुमार जाग गृहछाई ॥
कहत श्याम बन धाम बुलाई * या बालकको लेन पठाई ॥
पूछौं याहि भेद वनको सब * कहा कह्योहै हरि यासों अब ॥
अति आनन्द भयो मन बालहि * अंतेहपुर लेगई गुपालहि ॥
तहा चरित्र कियो नँदलाला * भये तरुण सुन्दर ततकाला ॥
भुज गहि लई हर्षि उर लाई * चकित भई नागरि सकुचाई ॥
छाँडि देहु मन मुदित कहत तिय * ऐसे चरित करत धन धन पिय ॥
ऐसे हरि भामिनी मनाई * सुख दे गये सँदन सुखदाई ॥
परमहर्ष मन भई गुवारा * रैनि विरह तनुताप निवारी ॥
समुझि समुझि कै पिय गुण मनमें * पुनि पुनि हर्षित पुलकित तनमें ॥
हरि ये चरित करत ब्रज डोलैं * यशुमति ढिग बालक जिमि बोलैं ॥
निजगृह गये सदा नँदलाला * परम विचित्र श्यामके ख्याला ॥

दो०-ब्रजबासी प्रभुकी कथा, अति विचित्र सुखखान ॥
कहत सुनत गावत गुणत, हरषत सत सुजान ॥

सो०-ब्रजनायक घनश्याम, नट नागर गुण आगरे ॥
ब्रजवासी सुखधाम, गोपीपति नन्द लाडिले ॥

अथ गुरुमानलीला ॥

सखिन संग वृषभानुकिशोरी * चली दान प्रातहि उठि गोरी ॥
जाके घर निशि बसे कन्हाई * ताघर ताहि बुलावन आई ॥

१ रनवास २ जवान ३ प्रमत्त ४ घर

ठाढी भई द्वार पर आई * कहे तहाँते कुँवर कन्हाई ॥
औचक मिले न जानत कोऊ * रहे चकित इत उतते दोऊ ॥
फिरी सदनको तुरतहि प्यारी * न्हान जानकी सुरति बिसारी ॥
भई विकल तनु रिस अति बाढी * रह गई सखी निरखि सब ठाढी॥
रह गये ठाढे श्याम ठगेसे * सकुचाने उर शोच पगेसे ॥
जब देखे हरि अति मुरझाये * तब सखियन मुज गहि समुझाये॥
उलटि भई सब हरिकी धाई * दैकै बांह पिया जहँ ल्याई ॥
देखी श्याम आय तहँ राधा * बैठी मान दृढाय अगाधा ॥
रिसहीके रस मगन किशोरी * भई श्याम मति देखत भोरी ॥
ठाढे चकित चित्त अकुलाहीं * मुखते वचन कहे नहि जाहीं ॥

दो०–व्याकुल लखि नँदलालको, सखियन कियो विचार ॥
अब दोउ जैसे मिलैं, करिये सो उपचार ॥

सो०–अति रिस नारि अचेतैं, को सुनि है कासों कहैं ॥
इत ये धरत न चेत, परी रुठावनवानइन ॥

प्यारी निकट गई सब आली * ठाढे पौर रहे बनमाली ॥
कहत मान कीनों तैं प्यारी * न्हान जानते फिरी कहारी ॥
तोहि लखत हैरी गिरिधारी * अतिही डर तनु सुरति बिसारी ॥
मुरछि परे धैरणी अकुलाई * तरुतमाल जनु गयो झुराई ॥
तेरीसों कछु चितयो उनने * नेकहु चैन रह्यो नहि तिनको ॥
तेरे नयन अरी अनियारे * किधौं बान खर सान सँवारे ॥
भौंहकमान तान यों मारे * क्यों कर राखे प्राणपियारे ॥
घायल जिमि मूर्छित गिरिधारी * अमी वचन अब सींचत प्यारी ॥
यदुनायक वे तू नहि जानैं * तिनसों कहा इतो दुख मानैं ॥

१ याद २ उपाय ३ चेष्टा ४ धरती ५ अमृत

बाँह गहो हरिको ढिंग लावैं * अब वे निज अपराध क्षमावैं ॥
गहत बाँह तुमहीं किन जाई * मोसो कहा गहावन आई ॥
कालिहिसोंह मोहिं उन दीनी * आजहि यह करणी पुनि कीनी ॥

दो०-देखि छुकी उनके गुणन, निज नयनन सुख पाय ॥
तिन्हें मिलावति मोहिं अब, बांह गहावति आय ॥

सो०-मिलों न तिनसों भूल, अब जोलों जीवन जिवहुँ ॥
सहों विरहकी शूल, बर ताको ज्वाला जरों ॥

मैं अब अपने मन यह ठानी * उनके पथ न पीऊ पानी ॥
कबहूँ नयन न अंजन लाऊँ * मृगमेद[१] भूलि न अंग चढाऊँ ॥
हस्तवले पट नील न धारौं * नयनन कारे घन न निहारौं ॥
सुनौ न श्रवणन[२] अलि[३] पिकबानी[४] * नीलेतनुपरसौं नहिं पानी[५] ॥
सुनत प्रियाकी बात सुहाई * हर्षत ठाढे पौरि कन्हाई ॥
सखी कहति यों हठ नहिं लीजै * हरिसों ऐसो मान न खीजै ॥
तू है नवल नवल गिरिधारी * यह यौवन हैरी दिन चारी ॥
क्षण क्षण जों करको जलछीजै * सुनरी याको गर्व न कीजै ॥
नन्दनँदन पिय सुख सुखकारी * तूकरि नयन चकोर पियारी ॥
हुतो प्रेम धन यह तौ प्यारी * सो अब कहु तैं कियो कहारी ॥
कहति हुती रूसों नहिं कबहीं * सो अब रूसविहे जब तबहीं ॥
सुनिहैं सुघर नारि जो कोई * करिहैं हँसी प्रेमकी सोई ॥

दो०-मान कियो जो भावते, सो न भाव वो होय ॥
उरते रिसवत प्रेम कित, अंतभावतो सोय ॥

---

१ कस्तूरी २ कान ३ सदीयाभ्रमर ४ कोयलका शब्द ५ हाथ

सो०–लाख कहे किन कोय, पिय सनेह जो गाइहै ॥
चतुर नारि है सोय, लियो प्रेम परचो किनहुँ ॥

तुम वे एक न दोय पियारी * जलते तरँग होति नहिं न्यारी ॥
रस रूसनो ओसैकन जैसो * सदा नरहिनैं चहिये तैसो ॥
तजि अभिमान मिलहिं पिय प्यारी * मान राधिका कही हमारी ॥
चुप न रहत कह करत मनावन * तुम आईहो बात बनावन ॥
बहुत सखी घर आई याते * सुरति दिवावत पिछली बातें ॥
मोसों बात कहतहौ काकी * जाहु घर न अब कछु है बाकी ॥
को उनकी यहँ बात चलावत * हैवे अब तुमहीं को भावत ॥
तुम पुनीत अरु वे अति पावन * आईहो सब मोहिं मनावन ॥
यह कहि रही रोषै भरि भारी * गई सखी जहँ रहे बिहारी ॥
कह्यो जाय हरिसों हरषाई * आज चतुरई कहा गँवाई ॥
बिन निज आँगन चलहि ललारे * कैसे चहत कियो सुख प्यारे ॥
हौ मनमोहन तुम बहु नायक * नागर नवल सकल गुणलायक ॥

दो०–मान तजे नहिं लाडिली, थाकीं सबै मनाय ॥
वेगि यलै कछु कीजिये, रचिये आप उपाय ॥

सो०–रच्यो दूतिका रूप, तब मनमोहन आपही ॥
करतिय स्वाँग अनूप, गये जहाँ प्रिय मानिनी ॥

बैठी निकट सखी मिसआई * कहत श्रवणे ढिग बात सुहाई ॥
बन घनश्याम धाम तू प्यारी * करि बैठी यों मान कहारी ॥
मैं उत गई तोहिं नहिं पाई * हरिकी दशा देखि फिरि आई ॥
अति आरति मन कुजबिहारी * इकले खड़े गहे द्रुम डारी ॥

१ ओसकी बूँदें २ पवित्र ३ गुस्सा ४ उपाय ५ कान ६ वृक्ष

तेरोइ नाम रटत सुखमाहीं * और कछू तिनको सुधि नाहीं ॥
देखत विथा भई सुद्धि गाढी * चल तू होहि नेक ढिग ठाढी ॥
कुंज भवन ठाढे दोउ देखों * तव मैं नयन सफल करि लेखों ॥
अव हरि कहत कृपा मोहिं कीजे * जो बूझिये दंड सो दीजे ॥
अति आतुर प्रीतमको लेरी * हठ तजि हाहा कहि सुनि मेरी ॥
तुव कारण वृषभानुदुलारी * मेरे पाँय परत गिरिधारी ॥
अव मैं पाँय परतिहौं तेरे * करु अपराध क्षमा हरिकेरे ॥
चाहत कियो श्यामको जोइ * उन्हें जानि मोसों करि सोई ॥

दो०–छिन छिन परसत चरणकर, छिन छिन लेत बलाय ॥
कहत प्रिया अब मान तजु, पुनि पुनि हाहा खाय ॥

सो०–लखिलखि सखी सिहात, चरित ललित नँदलालके ॥
मनहीं मन मुसुकात, भरी प्रेम आनन्द रस ॥

तव चितयो प्यारी नयनन भर * आयो उघरि लाल लीलाधर ॥
श्याम चतुरई मोसों माडत * वे गुण तुम अजहूँ नहि छाँडत ॥
इन छदन मैं मानत हौ जू * नीके सव गुण जानतहौ जू ॥
रस वादिन मोको करि पाई * वे बातें सब देहु भुलाई ॥
यह कहि बहुरि भई रिस हाई * रहे श्याम ठाढे सकुचाई ॥
गहे ग्रीवँ पट अति आधीना * जलके निकट दीन जनु मीनाँ ॥
फिरि पीठी दै पीठ श्यामको * हृदय विरह दुख अधिक वामको ॥
कर आरसी अग्र लै धारैं * पर्टे अतर हरि बदन निहारैं ॥
रिसवश धरत नहीं मन धीरा * तलफत हिये विरहकी पीरा ॥
इत नागरि उत नागर ओऊ * भली चतुरई बाढे दोऊ ॥
जिते जिते मुख फेरति प्यारी * तितही ढरि आवत गिरिधारी ॥

१ घमंड. २ कंठ ३ मछलिया ४ बच

जोइ जोइ बात भावतिहि भावै * सोइ सोइ बातें श्याम चलावै ॥

दो०–करिहारे छलछद सब, छुवन न पावन छाँह ॥
हठ छाँडत नहिं लाडिली, हरि शोचत मनमाँह ॥

सो०–देखि इयामको दीन, विरहविवस प्यारी निकट ॥
सखियाँ परमप्रवीन, तब सब समझावन लगीं ॥

लकुरी कमलनयन तो आगे * कबके हहा करत अनुरागे ॥
तेरे भयतें कुँवर कन्हाई * आये तियको रूप बनाई ॥
मधुर मधुर वचनन बनवारी * तोहि मनावति हैं री प्यारी ॥
हाहा करि अरु पाँयन लागे * कियो कहा चाहति हैं आगे ॥
लखि हरि खड़े मिलन मुरझाये * आदर नहि चुकिये घर आये ॥
वेनी वनके भवँर बिहारी * तोसी और वेलि को प्यारी ॥
करि सन्मानै विहँसिकर वैसो * कीनो कहा निठुर मन ऐसो ॥
पावत कहा मानके कीने * कहा गमावत आदर दीने ॥
होत कहा घूँघट पट खोले * कहा नसात तनक मन ओले ॥
ऐसी कहा कीजियत है री * प्रीतम छाँडि राखियत वैरी ॥
निप वश मदनगुपालहि जानी * ऐसी कहा अधिक इतरानी ॥
सिखकी कहत अनसिखी आवै * कहा तोहिं कोई ममुझावै ॥

दो०–जो नहिं मानति इयामसों, मानहि रहिहै हाथ ॥
तब अपने मन जानिहै, जब दहिहै रतिनाथ ॥

सो०–ऐसे कहिहै कौन, मान पिया हम कहतिहैं ॥
त्रिभुवन ठाकुर जौन, सो तेरे वश ह्वै परयो ॥

ऐसो समय बहुरि नहि पैहै * सुनुरी फिरि पाछे पछितैहै ॥

१ पत्ती २ इज्जत ३ कामदेव

यह यौवन है धन स्वप्नको * मान मनायो पिय अपनेको ॥
अब ये दिन रूसनके नाहीं * प्रिया विचार देखु मनमाहीं ॥
पावस ऋतु कीयोरी फेरो * गजत गगन भयो घन घेरो ॥
बोलत दादुर चातक मोरा * चहुँ दिशि फरति पवन झकझोरा॥
बरसत मेघ भूमि हित लागी * नारि सकल प्रीतम अनुरागी ॥
जे बेली ग्रीषमकैत दाहीं * ते द्रुमसौं तरुसौं लपटाहीं ॥
सरिता उमँगि सिंधुको जाहीं * मिलत सरी सर आपसमाहीं ॥
भयो समो यह दिवस चार को * मदनँदन प्रिय सँग विहारको ॥
सुनि सखियनके वचन किशोरी * उमग्यो प्रम रही रिस गोरी ॥
रिस करि बह्यो जाडु उठि ताके * रस कर हाथ बिकाने जाके ॥
मुखसों भलो मनावत मेरो * रहत सदा अनतहि चित घेरो ॥

दो०–साच बखानत जगत सब, विरद तुम्हारो लाल ॥
गहे रहत मनतिवनके, विहँसि कह्यो यों बाल ॥

सो०–भये प्रफुलित श्याम, विरह ताप तनुको गयो ॥
छवि उर्ठी सब बाम, प्यारी मुख विहँसत निरखि ॥

तब बोले हरि दोउ कर जोरी * तेरी सौं वृषभानुकिशोरी ॥
तूही हित चित जीवन मोको * सदा करत आराधन तोको ॥
तू मम तिलक तुही आभूषण * पोषण तेरेइ वचन पियूँषण ॥
तेरोइ गुण मैं निशिदिन गाऊं * अब तज मान हृदय सुख पाऊँ ॥
कर जोरे बिनती करि भाख्यो * कहत शीश चरणनपर राख्यो ॥
यह सुनि कछु प्यारी मुसकानी * तब बोली उठि सखी सयानी ॥
सुनहु श्याम तुम हो रससागर * रूप शील गुण प्रीति उजागर ॥
तुमते प्रिया नेक नहिं न्यारी * एक प्राण द्वै देह तुम्हारी ॥

१ आकाश २ बादल ३ मेढ़क ४ गरमीके दिन ५ अमृत भर

प्यारीमें तुम तुममें प्यारी * जैसे दर्पण छाह निहारी ॥
रसमें परै निरस जहँ आई * होय परति तहँ अति कठिनाई ॥
अबकै हम सब देति मगाई * पैंरसो प्यारी चरण कन्हाई ॥
अब रुठायहो जो गिरिधारी * राम रामतो बहुरि हमारी ॥

दो०-जब परसे प्यारीचरण, परम प्रीति नँदनन्द ॥
छुव्यो मान हर्षी प्रिया, मिट्यो विरह दुखद्वन्द ॥

सो०-उर आनन्द बढ़ाय, प्रेम कसौटी कसि पियहि ॥
अवगुण मन बिसराय, मिली प्रिया उठि श्यामसों॥

हर्षि मिले दोउ प्रीतम प्यारी * भई सखी सब निरखि सुखारी ॥
तब दोउ उबटि सखी अन्हवाये * रुचिर शृँगार शृँगार बनाये ॥
मधुर मिष्टै भोजन मन भाये * दोउन एकहि थार जिमाये ॥
दिये पान अचवन करवाये * सुमन सुगंध माल पहिराये ॥
लै बीरा अपने कर प्यारी * दीनो बदन बिहँसि गिरिधारी ॥
तबहि सफल यौवन हरि जान्यो * परमैद्द्य उरअन्तर मान्यो ॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी * तब सखियन आरती उतारी ॥
अतिआनन्द भरे दोउ राजैं * अरस परस निरखत छवि छाजैं ॥
पाये बश करि कुंजविहारी * बिहँसि कह्यो तब पियसों प्यारी ॥
सुनहु श्याम वर्षाऋतु आई * रचहु हिंडोला शुभ सुखदाई ॥
है मन पिय यह साध हमारे * सब मिल झूलहिं संग तुम्हारे ॥
सुन तियवचन श्याम सुख पायो * ऐसे कहि हरि मान छुड़ायो ॥

छं०-तिय मान हरि ऐसे छुड़ायो, भक्तहित लीला करी ॥
निगमैं नेति अपार गुण, सुखसिंधु नट नागर हरी ॥

१ शीशा २ छुभो ३ दुःखसमूह ४ मीठा ५ बड़ी खुशी ६ वेद

यह मानचरित्र पवित्र हरिको, प्रेमसहित जो गावहीं ॥
करहिं आदर मान तिनको, संतजन सुख पावहीं ॥

दो०–राधा रसिक गोपालको, कौतूहल रस केलि ॥
ब्रजबासी प्रभु जननको, सुखद कामतरुवेलि ॥

सो०–सफल जन्म है तास, जे अनुदिन गावत सुनत ॥
तिनको सदा हुलास, ब्रजवासी प्रभुकी कृपा ॥

अथ हिंडोरावर्णनलीला ॥

भक्तवश्य प्रभु कुंजविहारी * भक्तनहित लीला अवतारी ॥
सदा सदा भक्तन सुखदाई * करत सदा भक्तन मन भाई ॥
प्रेम भक्ति दृढ ब्रजकी बाला * भये वश्य तिनके नँदलाला ॥
जो जो सुख तिनके मन भावें * सो सो ब्रजमें श्याम बनावें ॥
समय समयके सुखद बिहारा * करें तिनय सँग नन्दकुमारा ॥
ग्रीषम गत पावसऋतु[1] आई * परम सुहावन जनसुखदाई ॥
श्रीराधा मनकी रुचि जानी * तब हिंडोललीला मन आनी ॥
यमुनापुलिन गये मनभावन * वृंदावन घन परम सुहावन ॥
सखिन सहित सोहति सँगप्यारी * कोटिक करत मनोजविहारी ॥
अति आनन्द उमँगि चहुँ ओरा * घुमड़ि रहे पावँस[2] घने घोरा ॥
जहाँ तहाँ वँगपाति[3] उड़ाहीं * चपलैं[4] चमक रहीं घनमाहीं ॥
गर्जत मधुर श्रवणसुखदाई * सैसिय[5] बहत समीरँ[6] सुहाई ॥

दो०–नाना रँग खग फूल फल, लगे नगनके चार ॥
गजमुक्तनके झूमका, झालर झवा अपार ॥

१ चौमासेके २ बादल ३ बगुलोंकी पाँति ४ बिजली ५ काल ६ हवा

सो०–शोभित लता वितान, अलि उतग तरु सुमनयुत ॥
रहे पान मिल पान, विविध नगन मानहु जड ॥

कनकवर्णमय भूमि सुहाई * छबिहिंडोर नहिं वाण सिराई ॥
तापर रसिक छवाले दोऊ * उपमा को त्रिभुवन नहिं कोऊ ॥
नन्दनँदन वृषभानुकिशोरी * गौर श्याम सुन्दर छवि जोरी ॥
चढ़े उमँगि आनँद उर भारी * निरखत छवि नभ सुर नरनारी ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे * श्याम सुभग तनु त्रिभुवन मोहे ॥
प्यारी अंग बैंजनी सारी * शोभित चहुँ दिशि चारु किनारी ॥
युगल अंग भूषण छवि छाये * रुचि रुचि सखि शृगार वनाये ॥
उर रत्नके हार विराजैं * सुमनहार अतिशय छवि छाजैं ॥
उत कुंडल इत तरवनकी छवि * रह्यो लजाय निरखि छविको रवि ॥
सखिगण क्षण तृण तोर निहारे * वारत प्राण रीझ रिझवारे ॥
भरि उछाह ऊंचे सुर गावैं * पिय प्यारीको हर्ष झुलावैं ॥
ताल मृदंग बाँसुरी वीना * बाजत सरस मधुर सुरलीना ॥

दो०–यह सुख सुनि ब्रजसुन्दरी, अपर सकल नवबाल ॥
वृन्दाबन झूलति कुँवरि, राधा अरु नँदलाल ॥

सो०–चलीं सकल अनुराय, नवसत साज शृंगार तनु ॥
गृहकारज विसराय, मन मोहनके रस पगी ॥

चुनि करि पहिरि चूनरी सारी * अरुणै चुहचही कोर किनारी ॥
यूथ यूथ मिलि हरिपै आवैं * तिन्हें प्रिया पिय निकट बुलावैं ॥
आदर वचन सप्रेम सुनावैं * सबके मनकी साद पुरावैं ॥
एकन लेत निकट बैठाई * एकैं चढ़त पींग पर धाइ ॥

१ सोना २ लाल ३ झुंड

एक झुलावति अति सचुपाई * गावति एक मलार सुहाई ॥
राग रंग सुख बरणि न जाई * रह्यो छाय घन निधि बन जाई ॥
युवतिवृन्द चहुँ ओर सुहाई * भूषण भीर वर्णि नहिं जाई ॥
वसन सुगंध सने बहुरंगा * भवँर भीर छाँडत नहिं संगा ॥
हरिमुखशशि लखि शुभग अनंगा[1] * उमगि मनो छवि सिंधुतरंगा[2] ॥
देत चाव भरि जब झक्योरा[3] * होति अधिक छवि बढत हिंडोरा ॥
ऊंचो मिलत द्रुमनसों जाई * लेत जहां ते सुमन कन्हाई ॥
ज्यों ज्यों पैंग बढति अति भारी * त्यों त्यों डरति कुवँरि सुकुमारी ॥

दो०–राखु राखु सखियनसहित, सोह दिवावत जात ॥
जब नहिं सकत सँभारि तनु, तब पियसों लपटात ॥

सो०–हँसत परस्पर बाल, तब हिंडोल राखत पकरि ॥
करत चरित्र रसाल, पिय प्यारी अति रस भरे ॥

इक उतरत इक चढत हिंडोरे * इक आतुर चढ़िबेको दोरे ॥
एक कहति मोहि देहु उतारी * एक चढनको विनवति नारी ॥
सबके मनकी रुचि हरि राखें * मधुर वचन सबसों हँसि भाखें ॥
कबहु अकेले झूलत मोहन * गावति युवती सब मिल गोहन ॥
कबहूँ युवतिन देत चढाई * आप झुलावत कुँवर कन्हाई ॥
कबहू मुरली मन्दै बजावें * कबहूँ संग सबनके गावें ॥
विच विच देत कोकिला टेरे * रहें सजल घन झुकि अतिनेरे ॥
परत फुवार मद श्रमहारी * बहत त्रिविध अति सुखद बयारी ॥
चातक पिय पिय रटत पुकारी * राधा नाम रटत बनवारी ॥
ऐसे गोपिनसों मनमोहन * करत केलि कौतूहल गोहन ॥
अति आनन्द सबन उपजावें * निरखि सुमन सुरगण वरषावें ॥

१ कामदेव २ समुद्रकी लहरें ३ धोरधीरे ४ खेल

जय जय जयध्वनि बोलत बानी * धन्य धन्य ब्रज कहत बखानी ॥

छं०—कहत ब्रज धनि अमर अवर, सकल मन आनँद भरे ॥
कहत मन मन इहे चाहत, हमन विधि ब्रज द्रुम करे॥
भक्तहित प्रभु अज सनातन, ब्रह्म तनु धर अवतरे ॥
वर्णि कापे जात सो सुख, करत जो नित ब्रज हरे ॥

दो०—नित लीला आनन्द नित, नित नव मंगल गान ॥
धनि धनि जिनके चित रहत, ब्रजबासी प्रभु ध्यान॥

सो०—हरिके चरित रसाल, जे सप्रेम गावत सुनत ॥
रहत सदा नँदलाल, ब्रजवासी तिनके निकट ॥

अथ फाल्गुनवर्णनलीला ॥

जय जय जय श्रीनित्य बिहारा * नित्यानन्द भक्तहितकारी ॥
ब्रह्मरूप अवतरे मुरारी * नित नव करत बिहार बिहारी ॥
नित्य नवल गिरिधर अभिरामा * नित्य रूप राधा ब्रज वामा ॥
नित्य रास नवकेलि बिहारा * नित्य मानखण्डन व्यवहारा ॥
नित्य कुंजसुख नित्य हिंडोरा * नित्य प्रेमसुख सिंधु हिलोरा ॥
नित्य नवल हितहरि सगनोरी * नित्य नवल छवि मन्मथ चोरी ॥
नित वृन्दावन घन सुखदाई * सदा वसंत रहत जहँ छाई ॥
सघन सुमन नवपल्लव डारी * सदा त्रिविध मारुत सुख कारी ॥
मदा मधुप मधुमाते डोलैं * कोकिल कीर सघन केलि बोलैं ॥
सुनि सुनि नारि हृदय सुख पावैं * मनहीं मन अभिलाष बढावैं ॥
नारि नारि कहि पियसुख पावैं * ऋतु वसन्त आई सगुनावैं ॥

---

१ वृक्ष २ श्रीकृष्ण ३ कामदेव ४ फूल ५ तीन तरहकी पवन शीतल मंद सुगंध ६ भौंरे ७ तोते ८ सुन्दर ९ चाह

फागुचरित अतिसाद हमारे * खेलैं मिलि सब संग तुम्हारे ॥

दो०–ब्रजवनिता हरिसों हरषि, कहति सुनहु ब्रजराज ॥
देखहु वनशोभा निरखि, अतिहि विराजत आज ॥

सो०–खेलतहैं दोउ फाग, मानहु मदन बसन्त मिलि ॥
लखि उपजत अनुराग, यह रस अधिक सुहावनो॥

द्रुमन मध्य टेसूतरु फूले * करत प्रकाश अग्निसम तूले ॥
मानहु निज निज मेरु सुहाई * हर्षि सबन होलिका लगाई ॥
कुंज कुंज कोकिल सुखदानी * बोलति विमल मनोहर वानी ॥
निलज भई जनु मजकी नारी * गावति गृहपति चढ़ी अटारी ॥
नाना खग केकी शुकनारी * जहँ तहँ करत कुलाहल भारी ॥
मनहु परस्पर नर अरु नारी * देत दिवावत हैं सब गारी ॥
प्रफुलित लताविलोकतजितही * अलि मधुमैत्त जात चलि तितही ॥
मानहु गणिका देखि सुखाई * मतवारे लपटतहैं धाई ॥
पुहुप पराग अबीर सुहाई * लिये समीर फिरतहै धाई ॥
संयोगिनरस अनरस विरहन * कर छोड्त मन भायो सवहिन ॥
नवपल्लवदल सुमन सुहाये * वर्ण वर्ण विटपन छबि छाये ॥
जनु ऋतुराज संग छवि बाढ़े * बहुरँग भरे लसत जनु ठाढ़े ॥

दो०–भँवर गुंज निरझर शबद, बजत दुंदुभी चारु ॥
रची मण्डली मदन जनु, जहँ तहँ विविध विहारु॥

सो०–वृन्दाविपिन समाज, कहँ लगि वर्णि बखानिये ॥
कान्ह तुम्हारे राज, क्रीडत सब आनँद भरे ॥

रचहु फागसुख जब नँदलाला * कर जोरे बिनवति सब बाला ॥

१ कामदेव. २ भौंरे. ३ मतवाले. ४ वेश्या. ५ हवा.

सुनि गोपिनके वचन कन्हाई * रची फागलीला सुखदाई ॥
बिहँसि कह्यो तब श्रीगिरिधारी * सजहु समाज जाय तुम प्यारी ॥
हमहूँ मसल सगलै आवैं * फागु रंग बनमाहिं मचावैं ॥
यह सुनि मुदित भईं ब्रजबाला * गये सदनको मदनगोपाला ॥
सखावृन्द सब श्याम बुलाये * सुनत सकल आतुर जनु आये ॥
हँसि हँसि उन्हें श्याम समुझायो * आयो फागुन मास सोहायो ॥
भैया हो सब खेलै होरी * भयो अबीर गुलालन झोरी ॥
यह सुनि ग्वालबाल अनुरागे * होरी साज सजन सब लागे ॥
कंचनकलश अनेक सुहाये * केसर टेसू रंग भराये ॥
अतर अरगजा बिबिध बिधाना * लिय सुगंध भीजन भर नाना ॥
पीत अरुण वैरं वसन बनाये * नेह सुगन्धन अति मन भाये ॥

दो०-अंग अंग भूषण ललित, उर सुमननकी माल ॥
नयन सैन शोभा हरन, बनी मण्डली ग्वाल ॥

सो०-पान भरे मुख लाल, उसकाये बाहैं झँगा ॥
फेंटन भरे गुलाल, पिचकारी कञ्चनवरन ॥

फेटा पीत श्याम शिरसोहै * तुर्रावी झलकन मन मोहै ॥
तापर मोर चंद्र छवि न्यारी * कोटि चंद्र रवि छवि बलिहारी ॥
केसर खौर भाल शुभकारा * बीच तिलकश्री रेख शृंगारा ॥
भौंहैं कुटिल नयन रतनारे * कुण्डल झलक केश घुँघरारे ॥
चारु कपोल मनोहर नाशा * मन्द हँसनि श्रुति दशन प्रकाशा ॥
अधरे अरुण चिबुक छविसीवा * रुचि अति ललित कबुकलँग्रीवा ॥

१ शोभा २ पात्र ३ सुंदर. ४ नाक ५ दांत ६ होठ ७ शङ्खसमान सुंदर कंठ.

झँगा झीन रँग पीत सुहायो * शोभित तनु छबिसों लपटायो ॥
घेरदार संजाफ जरीकी * झमकिरही छबि उमँग भरीकी ॥
तैसिय कमल चरणपर पनहीं * कचन मणिमय मोहत मनहीं ॥
कर चूड़ामणि जटित अँगूठी * लसत अँगुरियन भाँति अनूठी ॥
बाहु बिजोटा[1] जटित रतनको * चन्दन चित्रित श्यामल तनको॥
झलकत झीन झँगाके माहीं * सो छबि कहत बनत मुख नाहीं॥

दो०–कटि पर पट पीरो कसे, कनक किनारे चार ॥
तापर खोंसे मुरलिका, उर मुक्तनके हार ॥

सो०–तापर ललित विशाल, माल गुलाब प्रसूनकी ॥
चितवन हँसन रसाल, बन्यो छैल नँदलाडिलो ॥

बन्यो यूथ सब रंग रँगीलो * मधि नायक नँदनन्द छबीलो ॥
खेलन श्याम चले ब्रजखोरी * उड़त अबीर गुलालन झोरी ॥
बाजत ताल मृदंग सुहाई * डफ मुहचंग बीन सहनाई ॥
और नगारनकी वल जोरी * बीच बीच मुरली मुखोरी ॥
कोउ नाचै कोउ भाव बतावै * होरी गीत मिले सुर गावै ॥
ब्रज बीथिनि बीथिन सब टोलैं * होहो होरी मुखते बोलैं ॥
मिलत गलिनमें जो नरनारी * बचन नहीं दीहें बिन गारी ॥
अबिर गुलाल तासुपर डारैं * भरि भरि पिचकारिन रँग मारैं ॥
बोलत होरी बचन सुहाई * घरि छाँटत सब मनकी भाई ॥
गोरमें केसर माते डोलैं * घरन घरनके फटवा खोलैं ॥
जो कोउ भाजि रहति घर बैठी * बरिआई आनत तिहि पैठी ॥
अटन चढ़ी देखैं ब्रजनारी * छज्जनते छूटहिं पिचकारी॥

१ बाजू २ सुन्दर ३ पूर्णोरी ४ गलियां ५ दही.

दो०—गावत होरी गीत सब, देहिं दिवावहिं गारि ॥
डारत अबिर गुलालकी, झोरी भरि भरि नारि ॥

सो०—इत हरिके सँग ग्वाल, मुदित गुलाल उडावहीं ॥
पिचकारिनने जाल, वर्षत भरि केसर ललित ॥

होत कुलाहल आनँद भारी * रंग अबीरन महल अटारी ॥
व्है गइ ब्रजकी बीथिन बीचा * अबिर गुलाल कुंकुमाकीचा ॥
ऐसे सग लिये सब ग्वाला * करत फागु[1] कौतुक नदलाला ॥
भीज रहे केसरि रँग बागे * नख ते शिख गुलाल ते पागे ॥
आनँद भरे मुदित सब गावत * गुणी जननके बाल नचावत ॥
बरसानेको चले कन्हाई * यह सुधि कुँवरि राधिका पाई ॥
तुरत सखी सब बोलि पठाई * सुनत सकल आतुर उठि धाई ॥
नवसत सकल मनोरथ साजै * बरण बरण वर वसन विराजै ॥
मेंदी भाल विराजत रोरा * मुख तँबोल तनुकी छबि गोरी ॥
होरी खेल सुनत सब चोपी * आई प्रिया निकट सब गोपी ॥
हँसि हँसि सबसों कहति किशोरी * चलौ श्याम सँग खेलैं होरी ॥
पकरि आज मोहनको लीजै * मन भाई तिनसों सब कीजै ॥

दो०—ललितादिक ब्रजनागरी, मिलि सब सजो समाज ॥
तिनमें श्री कीरति कुँवरि, सबहिनकी शिरताज ॥

सो०—परमरूपकी रास, गुणागार नवनागरी ॥
राजति भरी हुलास, मनमोहन मनभावनी ॥

नखशिखलों सब सुन्दर ताई * रही छाय छबि पुंज निकाई ॥
भूषण जाल लाल नगकेरे * शोभित अंगन सुभग घनेरे ॥

१ होली २ मायेमें

मुखछवि वर्णि सकै सो को है * जाहि देखि मोहन मन मोहै ॥
लसति नवल तनु सुंदर सारी * केसरिया कीनी जरतारी ॥
गुलचको लहँगा चटकीलो * घेरघनो अति छबिन छबीलो ॥
कर्कण किंकिणि नूंपुर बाजै * होरी साज सजे सब राजै ॥
रंग गुलाल संग सब लीनो * सोहति युवतियूथ रँग भीनो ॥
मृगमैद केसर मेल मिलाई * मथि मथि लीने कलश भराई ॥
हाथनमें लीने नवलासी * चलीं श्याम घन पै चँपलासी ॥
युवतियूथले संग किशोरी * वही आय आगे ब्रज खोरी ॥
उतते आये मदनगुपाला * सोहत संग भीर नव बाला ॥
देखि परस्पर आनँद बाढ्यो * दुहुँदिशि गोल भयो रुपिठाढ्यो ॥

दो०–भरि भरि पिचकारी हरषि, इतते धाये ग्वाल ॥
नवलासी लै लै करन, सिमिटि चलीं उतबाल ॥

सो०–भो भँटभेरो आन, परी मार बिच रंगकी ॥
करत न कोऊ कान, मन भाई मुखते कहत ॥

भरि भरि मूठि गुलाल चलावैं * होहो होरी वचन सुनावैं ॥
केसरि रँग लै लै पिचकारी * तकि तकि मारत पिय अरु प्यारी ॥
दुहुँ दिशि चलत झराझर जेरी * भइ गुलालकी घटा अँधेरी ॥
आय परत जाके जो बैहैं * सो केसरिके कलश उलैहैं ॥
लगिलगि रहे चीर अंगनसों * पहिचाने नहिं परत रँगनसों ॥
मुखशोभा कछु कहति न जाई * रही गुलाल झलक छबिछाई ॥
कवि उपमा कहि कहा बखाने * शशि सरोज दोऊ सकुचाने ॥
सकुच रहित गारी तब गावैं * दुहुँ दिशि लै लै नाम सुनावैं ॥
बाजत बीन रबाब तँबूरा * ताल पखावज ढोलक तूरा ॥

१ घगना. २ पाजेब. ३ कस्तूरी. ४ बिजुली. ५ मिलाप. ६ कमल. ७ सारंगी.

नवलासी चंपलासी गोरी * मारति ग्वालन कहि कहि होरी ॥
यक भागे यक ढूँढन लागे * एक अबीर डारि मुख भागे ॥
मच्यो खेल रँग रस अति भारी * सखियन बोलि कह्यो तब प्यारी ॥

दो०–छल बल कर कछु भेदसों, मोहन पकरे जाय ॥
आँख आँज मुख माँडि तब, छाँड्यो हहाकराय ॥

सो०–है अति लंगर कान्ह, ऐसे ये नहिं मानिहैं ॥
वसन चुराये आन, लेहिं दाँव सो आपनो ॥

तब यक लिय हलधर वपु काछ्यो * चली ओढ़ि नीलांबर आछ्यो ॥
निकस यूथते व्है कै न्यारी * निकसी जित ठाडे वनवारी ॥
हरि जान्यों आये बलदाऊ * चले अकेले लेन अगाऊ ॥
गये निकट ताके हरि तवहीं * धरे जाय औचक तिन तवहीं ॥
आई धाय और सब नारी * लीने पकरि श्याम अँकवारी ॥
हँसि हँसि कहत सकल ब्रजबाला * ढीठो बहुत दई तुम लाला ॥
सो फल आज तुम्हें सब देहैं * दाँव आपनो नीको लेहैं ॥
ठाढे हँसत दूर सब ग्वाला * कहत गये पकरे नँदलाला ॥
हँसति कुँवरि राधा दुर ठाढी * पियमुख निरखि सकुच उरबाढी ॥
किनहूँ लियो पीत पट छोरी * काजर दियो किनहुँ बरजोरी ॥
काहू बेनी शीश सँवारी * मुख गुलाल लावति कोउ नारी ॥
काहू उर अरगजा लगायो * काहू रँग शीश ढरवायो ॥

दो०–गये छूटि मोहन तबै, गोहन चले पराय ॥
आन मिले निज सखनमें, रहीं नारि पछिताय ॥

---

१ बिनरी. २ हिरदैमें

सो०-करैं मींजति पछितात, कहति परस्पर बाल सब ॥
भली बनीथी घात्त, दाँवलेन पाई नहीं ॥

गये आजु तुम भलि नँदलाला * जैहौ कहाँ कालिह गोपाला ॥
करि राखी जैसी तुम हमसों * सो हम दाँव लेंइगी तुमसो ॥
पीताम्बर अपनो यह लीजै * पठै ग्वाल काहूको दीजै ॥
कै आपही आय लै जाहू * अब हम नहीं पकरि हैं काहू ॥
हँसत सखा सब तारी दैकै * बेनी छोरत हैं कर लैकै ॥
कहत जाहु फिरि कुँवर कन्हाई * पीताम्बर ले आवहु जाई ॥
भाजत हार हियेते टूटे * पीताम्बर गहनेदै छूटे ॥
तबहिं यह्यो हरि नन्ददुहाई * अबहिं पीत पट लेत मँगाई ॥
सखा एक हरि निकट बुलायो * युवति भेष करि ताहि पठायो ॥
गयो समिलि युवतिनके माहीं * हँसत जाय ठाढो पट पाहीं ॥
कहत देहु पैंट धरैं दुराई * अब नहि पावहिं कुँवर कन्हाई ॥
अब यह पट हरिको तब देहैं * दाव आपनो जब हम लेहैं ॥

दो०-ऐसी कहि पटलै लियो, आयो चमकि गुवाल ॥
फेन्यो करसो श्याम लै, चकित भईं सब बालें ॥

सो०-लखि हरिकी चतुराय, भई थकित ब्रजबाल सब ॥
धिरवत कहत सुनाय, भली बनाई आज तुम ॥

गये आज बचिकर चतुराई * अब बदिहैं जो बचहु कन्हाई ॥
अब तो लाग लगीहै हमसों * जबलगि दाँवलेति नहि तुमसों ॥
पकरि नचावहिं तुमहिं बिहारी * तब कहिहौ हमको ब्रजनारी ॥
कहत श्याम अब भये सहाने * इन बातन कछु भय नहि माने ॥

१ हाथ २ आपसमें ३ वस्त्र ४ गोपियाँ

जान लियो हम कपट तुम्हारो * अब तुम कहकर सबन हमारो ॥
अबही ग्वालन देहुँ लगाई * छाडौं अपनी विनय कराई ॥
नेक वान मानतहौ तिनकी * सखी कहावति हौ तुम जिनकी ॥
यह सुनि तब युवती मुसकानी * कहा करत हौ श्याम सयानी ॥
तुम्हैं नन्दकी सौंह कन्हाई * जो नहिं विनय करावहु आई ॥
सखन सहित तब मोहन करपैं * लैलै पिचकारिन रँग बरषैं ॥
उत सब युवती व्है इक ठौरी * लैलै नवलासी सब दौरी ॥
दियो सबनको मारि हटाई * भाजि चले तब कुँवर कन्हाई ॥

दो०-भाजे भाजे कहत सब, तारीदै ब्रजबाल ॥
जो तुम जाये नदके, ठाढे रहौ गुपाल ॥

सो०-फिरे बहुरि घनश्याम, सखावृन्द सब फेरिकै ॥
शिथिल करी ब्रजवाम, झोरिन मारि अबीरकी ॥

ऐसे खेलत रस मिलि होरी * इत मोहन उत कुवरि किशोरी ॥
गोपी ग्वाल सग सब लीने * मोहन सकल रग रस भीने ॥
कबहु परस्पर गावत गारी * कबहु करत रस वाद विहारी ॥
कबहुँ अबीर गुलाल उड़ावैं * कबहू रग सलिल बरषावैं ॥
अरस परस छबि निरखत दोऊ * परमानन्दमगन सब कोऊ ॥
चढे विमानन नभ सुर देखैं * जन्म सफल भवको करि लेखैं ॥
पुनि पुनि हर्षि सुमन वर्षावैं * जय जय करि प्रभुको यश गावैं ॥
ऐसे श्याम रग रस रास्यो * ललिता आय बीच तब भाष्यो ॥
आज श्याम तुम औचक आये * हम वाहू जानन नहिं पाये ॥
बहुत करी तुम आय ढिठाई * भई सात्र अब कुँवरक हाई ॥
कालि प्रात है बार हमारी * देखैंगी मनसाय तुम्हारी ॥

१ श्रीकृष्ण २ भीग ३ आपसम ४ आकाश ५ इच्छा.

ऐहैं नन्द गावलो प्यारी * रहियो सजग लालगिरिधारी ॥

दो०–प्यारी करते पानले, दीने सखी सुजान ॥
प्रात अवधि वदि खेलकी, राख्यो दुहुँ दिशि मान ॥

सो०–घर आये धनश्याम, सखन संग गावत हँसत ॥
गई प्रिया निज धाम, सखिन सहित आनँद भरी ॥

परमानन्द सकल ब्रजनारी * कृष्ण केलि सुखकी अधिकारी ॥
लोकलाजको भय नहिं मानैं * कृष्णविलास सदा उर आनैं ॥
श्रीराधिका कुवरि सुखदाई * प्रात सखी सब बोलि पठाई ॥
कियो विचार सबन मिलि गोरी * नन्द गाँव खेलैं चलि होरी ॥
मिलि मोहनसों यह सुख कीजै * फगुवा नन्दमहरसों लीजै ॥
सामा सकल खेलकी लीनी * रंग गुलालनसों बहु कीनी ॥
मथि मथि विविधि सुगधन लीन्हे * भाँति अनेक अरगजा कीन्हे ॥
भरि भरि भाजन कनक सुहाये * अमित सुगध न जाहि गनाये ॥
ले काँवरिन अनेक अपारा * चले संग सजि सुभग शृँगारा ॥
ग्वालिनि यौवनगर्व गहेली * श्रीराधा सँग चलीं सहेली ॥
कुंकुम उबटि कनक तनु गोरी * रूपराशि सब नवलकिशोरी ॥
एक बयसे सुन्दर सब राजैं * निरखत कोटि मदन तिय लाजैं ॥

दो०–नवसत साज शृँगार तनु, अँग अँग सब ग्वारि ॥
चंद्रावलि ललतादि सब, अमित गोप सुकुमारि ॥

सो०–को कवि बरणै पार, प्यारी सब नँदलालकी ॥
शोभा अमित अपार, उपमाको त्रिभुवन नहीं ॥

सुमन सुगधन गूँथी वेणी * लटकत कनक छनी छवि श्रेणी ॥

१ लायक २ अनकप्रकारके ३ अवस्था

मोतिन माँग बनी अतिनीकी * केसरि आड़ जड़ाऊ टीकी ॥
कुटिल भौंह अलकैं घुँघरारी * मनमोहन मन मोहनहारी ॥
खनन नयन मधुप मृग हारे * अनन रेख सुभग अनियारे ॥
श्रवणन तरवण रविसम ज्योती * नकबेसरि लटके गजमोती ॥
दशन कुंदे बिंबाधर सोहै * चिबुक नीलकण छबि मन मोहै ॥
कठ कपोत मोति उर हारा * जनुयुग गिरि बिच सुरसरि धारा ॥
कुच चकवा मुख शशिभ्रमभूले * बैठे बिछुरि मनहुँ दुहुँकूले ॥
कर कंकण चूरी गजदंती * नखमणि माणिक्मेटत कंती ॥
नाभी हृदय कहा कवि वरणै * कटि मृगराज लेत जनु निरणै ॥
चरणन नूपुर बिछिया बाजै * चालमराल चलत कल राजै ॥
लहँगा कसव पीतरँग सारी * चमक चहूँ दिशि लाल किनारी ॥

दो०–नख शिख सब शोभा भरी, बनी छबीली बाम ॥
तिनमें श्रीराधा कुँवरि, राजत अति अभिराम ॥

सो०–लई सबन गहि हाथ, पीरे सुमननकी छरी ॥
होरी हरिके साथ, नन्द गाँव खेलन चलीं ॥

प्रेम प्रीतिके रसवश पागी * नन्दनँदन पियकी अनुरागी ॥
बाजे सुघर बनावैं गोरी * गावहिं कोकिल कठ निहोरी ॥
करति केलि कौतुक मनमाहा * अबिर गुलाल उडावत जाहा ॥
लीनो घेरे नन्दगृह जाई * बसत तहाँ मनहरन कन्हाई ॥
शोभित रूप लतासी गोरी * गावत फाग नन्दकी पौरी ॥
सुनि सुन्दर घर बाहिर आये * हलधर ग्वाल गुपाल बुलाये ॥
एकन एक भइ सब नारी * होरी खेल मच्यो अति भारी ॥

१ नथ २ दाँत ३ कुंदका फूल. ४ बिंबाफलकसे होंठ ५ ठोडी
६ कबूतर ७ गंगा ८ दाऊजी

मृगमद कुंकुम चंदन घोरे * लैलै पिचकारी करदोरे ॥
गोपी ग्वाल भरे झकझोरी * अबिर गुलालन मारहिं गोरी ॥
उड़त गुलाल घटा घन छाई * मेहि केसरिकी कीच सुहाई ॥
बाजे सरस मधुर सुर बाजें * गान सुनत गण गंध्रव लाजें ॥
पकरत एक एक छुटि भाजें * गारी देत एक तजि लाजें ॥

दो०–हो हो होरी कहत सब, भरे परम आनंद ॥
सखिन संग उत लाडिली, इतै सखा नँदनन्द ॥

सो०–औचक धाई वाम, गहन हेतु नँदनन्द तब ॥
कहि पाये बलराम, निकसि गये हरि भाजिके ॥

अति निशंक सब ब्रजकी गोरी * तामें अवसर पायो होरी ॥
भरि भरि केसरिरंग कँमोरी * लैलै हलधरके शिरढोरी ॥
अबिर उड़ाय अँधेरो कीनो * ललता गहि दृग काजर दीनो ॥
व्यंग्य वचन सब कहत सुनाई * लेहु रोहिणी मात बुलाई ॥
हास विलास विविध कहि गावें * इत उत बल कहुँ जान न पावें ॥
फगुआ मन भावतो मँगाई * हलधर छाँड़े विनय कराई ॥
हँसत सखन मिलि कुँवर कन्हाई * आये दोऊ आँख अँजाई ॥
तब हलधर दुचिते हरि कीने * युवतिन धाय श्याम गहिलीने ॥
सिमटे सखा छुड़ावन धाये * युवतिनसे हरि छुटन न पाये ॥
लैलै नवलासी नव बाला * दिये हठाय मारि सब ग्वाला ॥
श्यामहिं जीत यूथमें लाई * भई सबनके मनकी भाई ॥
रसलम्पट नँदनन्द कन्हाई * दीनो आपुन आनि गहाई ॥

दो०–ले आई प्यारी निकट, हँसति कहति ब्रजबाल ॥
कहिये अब कैसी बनी, बहुत करत हा गाल ॥

१ जमीनपर २ पकड़नेकेलिये. ३ बेखटके ४ हांडी ५ टेढे.

सो०-एक कहति मुसकाय, वसन हरेते आपुही ॥
हमहूँ बसन छुड़ाय, लेहिं दाँव अब आपनो ॥

कान्ह कह्यो करिहो वह मेरो * सोइ पाय भयो अवनेरो ॥
एसे कहति रूप अनुरागीं * मुरली छीनि बजावन लागीं ॥
एकनिलियों पीत पट छोरी * एकरग गागरिलै दौरी ॥
हरिके हाथ गये चन्द्रावलि * कजलले आई संजावलि ॥
ललता लोचन अजन लागी * एक श्रवण[1] लगि कछु कहि भागी ॥
एक चिबुक गहि बदन उठावै * एक गुलाल कपोलन[2] लावै ॥
घेरि रहीं परिरंभी नाइ * करति सबै निज निज मन भाई ॥
काहू वेनी गूथ सँवारी * काहू मोतिन माँग सुधारी ॥
पहिरावति लहँगा कोउ सारी * काहूलै अँगिया उरधारी ॥
निरखि निरखि प्यारी मुसुकाई * राखत आपन कृष्ण बड़ाई ॥
काहू बदन अभूषण लीन्हे * नेकहु श्याम परत नहिं चीन्हे ॥
वधू वधू कहि सबहिन गायो * प्यारी निकट आनि बैठायो ॥

दो०-निरखि बदन प्यारी हँसी, श्याम हँसे सकुचाय ॥
गहि प्यारी निज पाणि[4] तब, दीनो पान खवाय ॥

सो०-सखियाँ करत कलोल, गाँठि जोरि आँजर दई[3] ॥
मनमें रह्यो अडोल, यह जोरी युग युग सदा ॥

लीन्हे मध्य श्याम सब ग्वारैं * मग्न भई अब वपु न सँभारैं ॥
पिय प्यारी मुखरी छवि जोहैं * अरस परस दोऊ मन मोहैं ॥
रगन भरे रँगीले दोऊ * त्रिभुवन छवि पटतर नहिं सोऊ ॥
एक नयनकी सैन मिलावैं * एक युगल[5] छवि लखि सुख पावैं ॥

१ कान २ गाल ३ साई ४ हाथ ५ दोनोंकी

गावति एक महरिको गारी * बजै मँजीरा डफ़ करतारी[1] ॥
भरि भरि मूठ गुलाल उड़ावैं * ग्वालनि कटवहुँ लगन न पावैं ॥
रही गुलाल घटा छबि छाई * फूली मानहुँ साँझ सुहाई ॥
तव ललताको यशुमति माई * घर भीतरसे बोलि पठाई ॥
हँसिकै महरि बहुत सनमानी * विनती करी बहुरि मृदुबानी ॥
आज भई भोजनकी बिरिया * देखहु अब राधाकी उरियाँ[2] ॥
खान पान करि श्रमहि निवारो * बहुरि खेलियो निकैद सबारो ॥
ल्यावहु अब लाडलिहि लिवाई * कीरति नीकी सौंह दिवाई ॥

दो०–तव यशुमति पहँ राधिकहि, ललता चलीलिवाय ॥
सकुच जानि घनश्याम, अति छूटे हाहा खाय ॥

सो०–हँसे ग्वाल मुखहेरि, तनुशोभा देखत खरे ॥
बलको लीनो टेरि, बन्यो आजु अति साँवरो ॥

कहत सखा सब दैदै मोहन * ऐसेहि चलौ नन्दपै मोहन ॥
चले भुजा गहि तहाँ लिवाई * छबि अनूप वह बरणि न जाई ॥
उत सब युवैतिनके चितचोरे * चले लाल इतकै अति भोरे ॥
अति छबि देखि हँसे नदराई * जननी सुनति दौरि तहँ आई ॥
निरखि हरषि लीन्हे उरलाई * अति आनद हृदय न समाई ॥
वार वार करलेत बलैया * किन यह कीनो हाल कन्हैया ॥
ये ऐसी सब ब्रजकी बाला * सकुच हँसे मनहीं नँदलाला ॥
तुरत श्याम सोइ वेष उतार्‌यो * कटि पट पीत मुकुट शिर धार्‌यो ॥
युवतिनसहित कुँवरि श्रीश्यामा * आईं नन्द महरिके धामा ॥
भूषण वसन नवीन बनाये * यशुमतिले सबको पहिराये ॥
अति सनेह वृषभानुदुलारी * अपने हाथ शृंगार सँवारी ॥

1 हाथकी ताली 2 पास 3 गोपियोंके

निरखि रूप प्रमुदित नँदरानी * वारति राइ नोन मिहानी ॥

दो०–विविध भाँति मेवा मधुर, और मिठाई पानि ॥
सादर सबरी गोदमें, भरेहरषि नँदरानि ॥

सो०–रह्यो नन्द गृहछाय, होरीको आनंद अति ॥
कहति यशोमति माय, फगुआ कहोसो दीजिये ॥

ललकि कह्यो और कछु नाहीं * ले हैं वेन्दर फगुआमाहीं ॥
देखे बिन रहि सकहि जु उनको * तौ माँगे देहैं हम तुमको ॥
वाढ़ौ यश महर नँदराई * चिरजीवेहु बलराम कन्हाई ॥
जिनसे यह सुख ब्रजमें लीजत * यह असीश सबही मिलि जावत ॥
अति आनदमगन ब्रजवासी * अष्टसिद्धि नवनिधि सब दासी ॥
गोपी ग्वाल भये अनुकूला * न्हान चले यमुनाके कूला ॥
जहँ वर विटप विविध रँग फूले * गुँजत भ्रमर मत्त रस भूले ॥
शीतल सुखद छाँह छवि छाइ * फूल डोल तहँ रच्यो कन्हाइ ॥
झूलत रंग भरे पिय प्यारी * गावत मिले गोप अरु नारी ॥
ऐसे दूर खेल श्रम कीनो * अति आनन्द सबनको दीनो ॥
तब यमुनाजल श्याम नहाये * मल्लिदेवैन शिर तिलक बनाये ॥
दियो दान तिनको नन्दलाला * बसंत सुर सुमननकी माला ॥

छं०–बरपात माल्यप्रसून सुरगण, निरखि छवि आनँदभरे ॥
श्रीनन्दसुत सुखधाम पूरण, काम सब ब्रज जन करे ॥
लूटि सुखरस फागको सब, मुदित निज निज गृह गये ॥
गोपपाल गोपाल बल, निज धाम आये छवि छये ॥

---

१ श्रीकृष्ण २ बहुत कालतक ३ दूध ४ मक्खन

दो०-कियो जो फागविहार हरि, शारद लहै न पार ॥
ब्रजवासी सो किमि कहैं, लीलासिंधु अपार ॥
सो०-जन मनके सुखधाम, चरित ललित गोपालके ॥
गावत सुनत सुजान, ब्रजवासी जन रति लहत ॥

॥ अथ सुदर्शनशापमोचनलीला ॥

पूरण ब्रह्म कृष्ण भगवाना * मन बिलास जो कीन्हे नाना ॥
शिव विधि शारद नारद शेषा * कहि नहिं सकहि गणेश अशेषा ॥
कीन्हे चरित रहस्य अपारा * ब्रजयुवतिन मिलि रस शृंगारा ॥
साध नहीं काहू मन राखी * करी सकल जो जाने भाषी ॥
ब्रजविलास रस केलि बडाई * भाँति अनेक मुनीजन गाई ॥
ब्रजवासी प्रभु सब गुणनायक * जो कछु करहि सो सबही लायक ॥
सखा सग सबको सुख दीनो * मन भायो गोपिनको कीनो ॥
महरि नन्द पितु मात कहाये * तिनके हेत देह धरि आये ॥
बालकेलि रस सुख करि भारी * दियो परमआनद मुरारी ॥
गिरिधर ब्रजजन सगरे राखे * इन्द्रादिक सुर जय जय भाखे ॥
गाय बच्छ बनमाहिं चराये * कालीनाग नाथि लै आये ॥
करे चरित्र अनेक कृपाला * भक्तनहित प्रभु दीनदयाला ॥
दो०-भक्तनके हित लेतहैं, प्रभु युग युग अवतार ॥
असुर मारि थापत सुरन, हरत भूमि भव भार ॥
सो०-गावत संत अपार, यश पुनीत पावन करन ॥
पूरि रह्यो ससार, करता हरता आप हरि ॥

---

१ सब २ गुन

इक दिन प्रभु भक्तन सुखदाई * नन्दहृदय यह मति उपजाई ॥
चलिये आज सरस्वति तीरा * पूजन शंकर सकल अहीरा ॥
लिये संग बल मोहन दोऊ * गोपी ग्वाल चले सब कोऊ ॥
करत कुलाहल आनँद भारी * पहुचे तहाँ सकल नर नारी ॥
सरित पुनीत कियो सुस्नाना * महिदेवैन दीनो सब दाना ॥
देखि देव थल अति अभिमानी * सादर पूजे शंभुभवानी ॥
पूजा करत साँझ है आई * श्रमित भये सब लोग लुगाई ॥
खान पान करि सहित हुलासा * कियो रैनि तह बनमें वासा ॥
सोये हरि हलधर सुखरासी * तब सोये सब ब्रजके वासी ॥
आधी निशि अनगर यक आयो * नन्द महरके पग लपटायो ॥
उठे पुकारि चौंकि नँदराई * आये ब्रजवासी सब धाई ॥
अनगर देखि डरे सबकोई * लगे छुड़ावन छुटत न सोई ॥

दो०-हारे यत्न अनेक करि, सर्प न छोड़े पाँय ॥
कृष्ण कृष्ण करि नन्द तब, गुहराये अकुलाय ॥

सो०-अति व्याकुल गये ग्वाल, बोले श्याम जगायके ॥
कह्यो महायक व्याल, लपटानो पग नन्दके ॥

सुनत उठे आतुर गोपाला * निकट जाय देख्यो सोइ व्याला ॥
परस्यो ताहि कमलपद पावन * पाप शाप संताप नशावन ॥
छुवत चरण तिन लइ जमुहाई * धर्यो दिव्यतँनु बरणि न जाई ॥
लाग्यो हाथजोरि गुणगावन * जय जय जगतईश जगपावन ॥
सब देवनके देव मुरारी * जय जय जय ब्रजगोपबिहारी ॥
ऋषि अंगिरा शाप मोहिं दीन्हो * सोवत बहुत अनुग्रह कीन्हो ॥

१ नदी २ ब्राह्मण ३ थकने ४ सुखी ५ दाऊजी
६ जलन ७ सुन्दर शरीर ८ कृपा

जाते प्रभुको दर्शन पायो * जन्म जन्मको पाप नशायो ॥
ऐसी विनती प्रभुहि सुनाई * आयसु पाय चल्यो शिरनाई ॥
बहुरि नन्दको शीश नवायो * देखि महर अति अचरज पायो ॥
पूँछयो जाय नन्द तब भेवा * तुमतो दिव्यरूप कोउ देवा ॥
सर्प शरीर धन्यो क्यों आई * सो सब हमसों कहौ बुझाई ॥
नन्दवचन सुनि मन सुख पाई * तब उन अपनी कथा सुनाई ॥

दो०–हौं यश गायक श्यामको, नाम सुदर्शन होय ॥
सुन्दर विद्याधरनमें, मोते और न कोय ॥
सो०–इकदिन ऋषिके धाम, गयो धरे अभिमान मन ॥
कियो न तिन्हैं प्रणाम, रूप द्रव्यके गर्वसे ॥

ऋषि अगिरा बडे विज्ञानी * जानि मोहिंजड अति अभिमानी ॥
दीनो शाप कोप करियेहा * जाय होहु शठ अजगरदेहा ॥
ऐसे कह्यो मोहिं ऋषि जबहीं * अजगर भयो तुरत मैं तबहीं ॥
देखि दुखित हुहिं परम कृपाला * भये बहुरि मुनिराय दयाला ॥
तब करि कृपा कह्यो यह मोहीं * कृष्ण दरश है है जब तोहीं ॥
परसि चरणरज पाप नशैहै * बहुरि आपनो तनु तब पैहै ॥
ते पद आजु परशि सुखदाई * भयो पुनीत रूप निजपाई ॥
जो पदरेज ब्रह्मा नहिं पावै * शिव सनकादि सदा चितलावै ॥
मुनि प्रसादसो रज मैं पाई * कहँलगि मुनिकी करौं बडाई ॥
दीनदयालु जगतहितकारी * सन्त समान कौन उपकारी ॥
ऐसे विद्याधर सुखमानी * नन्दहिं अपनी कथा बखानी ॥
बहुरिकाल चरणन शिरनाई * गयो लोक निज बहु हर्षाई ॥

१ धूल

दो०-नन्दादिक आनन्दसब, महिमा देखि पुनीत ॥
कहत परस्पर कृष्णगुण, गई तहाँ निशि बीत ॥
सो०-आये सब ब्रजधाम, प्रात होत आनन्दसों ॥
सग श्याम बलराम, प्रभु ब्रजबासी दासके ॥

अथ शंखचूड़वधलीला ॥

यकदिन सुन्दर मदनगोपाला * श्रीबलदेव और सँग ग्वाला ॥
दिवस अन्त निशि समय सुहाई * उदित उडुप[1] उडगण[2] छबिछाई ॥
प्रफुलित चारु मालती सोहै * कुमुद सुगध पवन मन मोहै ॥
गुजत भँवर मत्तरस लोभा * चले तहाँ देखन बनशोभा ॥
ग्वालन मिलि गावत दोउ भाई * कबहुँ बजावत बेणुँ[3] कन्हाई ॥
ब्रजवनितागण चहुँदिशि घेरे * चले सुनत वशी की टेरे ॥
जिनके तन मन बसे कन्हाई * मग्न भई छवि लखि अधिकाई ॥
पहुँचीं श्री वृन्दावन जाई * गोपी ग्वाल सग समुदाई ॥
विहरत वन विहार दोउ भाई * गोपी ग्वाल साथ सुखदाई ॥
मद मद गति इत उत डोलै * मृदु मुसुकाय लेत मन मोलै ॥
रूप राशि निधि छबि दोउ बीरा * बैठे जाय यमुनके तीरा ॥
पाछे सखावृन्द सब सोहैं * सन्मुख गोपीजन मन मोहैं ॥
दो०-करत सबै मिलि मुदित मन, भरे प्रेम रस माहिं ॥
भये मगन उनमत्त[4] जिमि, रही देहसुधि नाहिं ॥
सो०-बाजत ताल मृदग, बीन चग मुरली मधुर ॥
छाय रह्यो रस रग, उठत तरंग तानकी ॥
प्रेम मगन सब घोपकुमारी[5] * हरिछबि निरखति सुरति बिसारी ॥

१ चन्द्रमा २ तारागण ३ बांसुरी ४ पागल ५ ग्वालिन

शिथिल वदन कचें शीश सुहाये * विन्हल तनमन श्याम सोहाये ॥
को हम कहाँ नहीं कछु जाने * नयन श्यामके रूप लोभाने ॥
रही श्रवण मुरली ध्वनि जाई * गृह वनकी कछु सुधि नहिं राई ॥
चन्द्रवदन चपलासी गोरी * हरिमुख नाद सुनत भई भोरी ॥
तहाँ यक्ष औचक इक आयो * शखचूड नामी तिहिं गायो ॥
सो वह धनँद अनुर्गे अभिमानी * प्रभु प्रभाव नहिं जान अज्ञानी ॥
देखतही बलराम कन्हाई * सब गोपिन लीनो अगुवाई ॥
घेरलेत जिमि गाय अहीरा * उत्तर दिशि ले चल्यो अमीरा ॥
जब गोपिन हरि देखे नाहीं * भयोचैत तब कछु मनमाहीं ॥
कही जाति हम काके साथा * भईं विकल जिमि परम अनाथा ॥
कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागीं * महादुखित अति भयसों भागीं ॥

दो०-सुनत श्रवण आरत वचन, उठि आतुर दोउ भाय ॥
अति समीप गोपीनके, तुरतहिं पहुँचे जाय ॥

सो०-मैं आयो हौं धाय, मन डरपौ तिनसों कह्यो ॥
अवहीं लेत छुडाय, तुम्हैं मारि या दुष्टको ॥

शखचूड फिरिकै तब देख्यो * काल मृत्यु सम दुहुँवन पेख्यो ॥
भयो त्रसित तब मूढ अभागो * युवतिन छाँडि जीवकै भागो ॥
गोपिन पास राखि बलभाई * ता पाछे पुनि चले कन्हाई ॥
अतिही निकट धाय कै लीनो * मूका एक तासु शिर दीनो ॥
भयो प्राण विन अधम अ याई * प्रभुप्रताप उत्तम गति पाई ॥
हती एक मणि ताके शीशा * सो लै आये हरि जगदीशा ॥
दीनी सो बलको नँदलाला * प्रमुदित भई देखि मनबाला ॥

१ बाल २ बिजली ३ कुबेरके ४ पीछे जानवाला ५ दीन

गोपी ग्वाल सहित दोउ भाई * बहुरि कियो सुख वनमें आई ॥
सो दुख सबको तुरत भुलायो * परमानन्द सबन उपजायो ॥
करत विविध विधि हासविलासा * गृह आये पुनि सहित हुलासा ॥
नव किशोर सुन्दर सुखदाई * ब्रजजीवन बलराम कन्हाई ॥
ग्वालबाल गायनके साथा * क्रीडा करत ललित ब्रजनाथा ॥

दो०-देखि देखि हरिके चरित, परम विचित्र उदारि ॥
निशि दिन सब प्रमुदित रहत, ब्रजबासी नर नारि ॥

सो०-हरण सकल भय भीर, दुष्टदलन जनहितकरन ॥
नँदनन्दन बलबीर, ब्रजवासी प्रभु साँवरो ॥

अथ वृषभासुरवधलीला ॥

नन्दनँदन सतन हितकारी * कमलनयन प्रभु कुंजविहारी ॥
मुरली मुकुट धरे खगराजै * कोटि काम निरखत छबि लाजै ॥
नित नव सुख ब्रजमें उपजावें * सुर नर मुनि त्रिभुवन यश गावें ॥
मुनि मुनि अगम कृष्णगुणगाहा * कस असुर उर दारुण दाहा ॥
जो जिहि भाव ताहि हरि तैसे * हितको हित जैसेको तैसे ॥
हित अनहित यह प्रभुकी लीला * सदा श्याम सुन्दर सुखशीला ॥
रीझ खीझ हरिको जो ध्यावें * परमानन्द अभय पद पावें ॥
रहै कस उर ध्यान सदाहीं * नँदनन्दन पल बिसरत नाहीं ॥
शत्रु भाव शोचन दिनराती * नन्दसुवन मारो किहि भाँती ॥
असुर अरिष्ट नाम बल भारी * एक दिवस नृप लियो हँकारी ॥
तासों कहि सब मर्म बुझायो * बल सराहि ब्रज ताहि पठायो ॥
नँदनन्दन मारनके काजा * चल्यो असुर करि गर्व समाजा ॥

१ बालक २ पुत्र ३ भेद ४ घमड

दो०–नृपको शीश नवायके, कह्यो अरिष्ट सुनाय ॥
कितक काज महराज यह, मैं करि आवत जाय ॥
सो०–तुम असुरनके राज, इतनेको शोचत कहा ॥
पलमें मारों आज, बालक नन्द अहीरके ॥
वृषभ रूप सोइ असुर बनाई * आयो तुरत व्रजहि समुहाई ॥
गिरि[1]समान तनु अति विकराला * महाकठिन दोउ सींग विशाला ॥
पूँछ उठाय हुँकारत आवै * खोदि खुरनसों धूरि[2] उड़ावै ॥
दृग[3] औरक्त[4] फेन मुख डारै * कबहुँ सींगसे भूँमि[5] विदारै ॥
कबहुँ तरुनसों रगरत जाई * इत उत खोजत फिरत कन्हाई ॥
उन्नत ग्रीव चहूँ दिशि धावै * जहाँ तहाँ गैयन विडरावै ॥
बार बार गर्जत अति भारी * सुनत डरे सब व्रज नर नारी ॥
बिडरीं गाय गोप सब भागे * कृष्ण कृष्ण कहि टेरन लागे ॥
कालस्वरूप वृषभ इक आयो * सबन कृष्णसों जाय सुनायो ॥
प्रभु सर्वज्ञ तुरत पहिंचान्यो * वृषभ न होय असुर यह जान्यो ॥
बिहसि कह्यो मोहन सब पाहीं * मत डरपौ चिंता कछु नाहीं ॥
चले असुर सन्मुख मन मोहन * गोप ग्वाल लागे सब गोहन ॥
दो०–आगे है हरि हाँकदै, तासों कह्यो सुनाय ॥
रे शठ का तनु तरुघसत, फिरत बिडारत गाय ॥
सो०–मोहिं न लख्यो इत आय, तो तनु उपजी कंडु जो ॥
अबहीं देहुँ मिटाय, कहत नन्दकी सौंह करि ॥
वृषभासुर सुनि हरिकी बानी * मनमें गर्व कियो यह जानी ॥
याही बालकके वधकाजा * आदरदै पठयो म्वहिं राजा ॥

---

१ पहाड़ २ धूल ३ आंखें ४ लाल ५ धरती.

भले शकुन मैं मनमें आयो * जो यावो तुरतहि लखि पायो ॥
अबहीं याहि पलकमें मारौं * नृपतिपास धरि जाय जुहारौं ॥
ऐसे अपने निय अनुमानी * चल्यो श्याम सन्मुख अभिमानी ॥
टूटि पन्यो हरिऊपर आई * लिये सींग गहि कुँवर कन्हाई ॥
यह आवत हरिकी दिसि धाइ * हरि पाछे लै जात हटाइ ॥
पाछे पेलि श्याम तिहि दीनों * बहुरो वृषभासुर बल कीनो ॥
आवत जाय असुर जब हान्यो * ग्रीवैं मोदि तब धरणि पछान्यो ॥
पन्यो असुर पर्वताकारा * मुखते चली रुधिरकी धारा ॥
असुर मारि उत्तम गति दीनी * जय जय ध्वनि देवन नभ कीनी ॥
भये सुखी सब सुरसमुदाई * बरषि सुमन अस्तुति मुख गाई ॥

दो०–चकित भये लखि परस्पर, कहत सकल ब्रजबाल ॥
हम जान्यो कोउ वृंषभ है, यह तो असुर कराल ॥

सो०–दुष्टदलन गोपाल, मुदित कहत नर नारि सब ॥
भक्तनको रक्षपाल, ब्रजवासी नँदलाडिलो ॥

जब अरिष्ट मान्यो गिरिधारी * भयो कंस सुनि बहुत दुखारी ॥
आये ऋषि नारद तिहि काला * कह्यो कंससों सुन भूपाला ॥
तिन मारे सब असुर तुम्हारे * ते नहिं होहिं नन्दके बारे ॥
मैं नायो निश्चय यह भेऊ * हैं वसुदेव पुत्र वे दोऊ ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाइ * सो वह हती यशोमति जाइ ॥
भयो बछू यह सुनु छल राना * को जानै कर्ताके काना ॥
यह तौ पुत्र भयोहो जबहीं * वही हुती तोसों मैं तबहीं ॥
अपनी सो बहुते तुम कीनो * सो क्यों मिटै जो विधिलिखि दीनो॥

१ कठ २ धरती ३ फूल ४ भेद

दो०-नृपको शीश नवायकै, कह्यो अरिष्ट सुनाय ॥
कितक काज महराज यह, मैं करि आवत जाय ॥
सो०-तुम असुरनके राज, इतनेको शोचत कहा ॥
पलमें मारौं आज, बालक नन्द अहीरके ॥
वृषभ रूप सोइ असुर बनाई * आयो तुरत मनहि समुहाई ॥
गिरि[1]समान तनु अति विकराला * महाकठिन दोउ सींग विशाला ॥
पूँछ उठाय डकारत आवै * खोदि खुरनसों क्षार[2] उड़ावैं ॥
दृग आरक्त[3] फेन मुख डारै * कबहुँ सींगसे भूँमि[4] विदारै ॥
कबहु तरुनसों रगरत जाई * इत उत खोजत फिरत कन्हाई ॥
उन्नत ग्रीव चहूँ दिशि धावै * जहा तहाँ गैयन बिडरावै ॥
बार बार गजत अति भारी * सुनत डरे सब ब्रज नर नारी ॥
बिडरीं गाय गोप सब भागे * कृष्ण कृष्ण कहि टरन लागे ॥
कालस्वरूप वृषभ इक आयो * सबन कृष्णसों जाय सुनायो ॥
प्रभु सबन तुरत पहिचायो * वृषभ न होय असुर यह जान्यो ॥
बिहसि कह्यो मोहन सब पाहीं * मत डरपो चिंता कछु नाहीं ॥
चले असुर सन्मुख मन मोहन * गोप ग्वाल लागे सब गोहन ॥
दो०-आगे ह्वै हरि हाँकदै, तासों कह्यो सुनाय ॥
रे शठ का तनु तरुघसत, फिरत बिडारत गाय ॥
सो०-मोहिं न लख इत आय, तो तनु उपजो कडु जो ॥
अबहीं देहुँ मिटाय, कहत नन्दकी सोंह करि ॥
वृषभासुर सुनि हरिकी बानी * मनमें गर्व कियो यह जानी ॥
याही बालकके वधकाजा * आदरदै पठयो न्वहि राजा ॥

१ पहाड़ २ धूर ३ लाल ४ लाल ५ धरती

भले शकुन मैं मनमें आयो * जो याको तुरतहि लखि पायो ॥
अबहीं याहि पलकमें मारों * नृपतिराज वरि जाय जुहारों ॥
ऐसे अपने निय अनुमानी * चल्यो श्याम स मुख अभिमानी॥
टूटि पन्यो हरिऊपर आई * लिये सींग गहि कुँवर कन्हाई ॥
यह आवत हरिकी दिशि धाइ * हरि पाछे लै जात हटाई ॥
पाछे पेलि श्याम तिहि दीनों * बहुरो वृषभासुर बल कीनो ॥
आवत जाय असुर जब छायो * ग्रीवँ मोडि तब धरणि पछायो ॥
पन्यो असुर पर्वतआकारा * मुखते चली रुधिरकी धारा ॥
असुर मारि उत्तम गति दीनी * जय जय ध्वनि देवन नभ कीनी ॥
भये सुखी सब सुरसमुदाई * बरषि सुमन अस्तुति सुख गाई ॥

दो०–चकित भये लखि परस्पर, कहत सकल ब्रजबाल ॥
हम जान्यो कोउ वृषभ है, यह तो असुर कराल ॥

सो०–दुष्टदलन गोपाल, मुदित कहत नर नारि सब ॥
भक्तनको रक्षपाल, ब्रजवासी नँदलाडिलो ॥

जब अरिष्ट मान्यो गिरिधारी * भयो कंस सुनि बहुत दुखारी ॥
आये ऋषि नारद तिहि काला * कह्यो कंससों सुन भूपाला ॥
जिन मारे सब असुर तुम्हारे * ते नहिं होहिं नन्दके बारे ॥
मैं जान्यो निश्चय यह भेऊ * हैं वसुदेव पुत्र वे दोऊ ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाइ * सो वह हती यशोमति जाई ॥
भयो बहू यह सुतु छल राजा * को जानै कनाके काजा ॥
यह तौ पुत्र भयोहो जबहीं * कही हुती तोसों मैं तबहीं ॥
अपनी सो बहुतै तुम कीनो * सो क्यों मिटै जो विधिलिखि दीनो॥

१ कठ २ धरती ३ फूल ४ भेद

करहु यत्न तुम अबहु सवारे * यह कहि नारद स्वर्ग सिधारे ॥
उठ्यो कंस सुनि मुनिकी बानी * भयो शोचवश मूढ अज्ञानी ॥
प्रथम देवकी अरु वसुदेऊ * छोडे हुते वंदितें दोऊ ॥
बहुत बुरो मान्यो तिन पाहीं * राखे बहुरि बन्दिके माहीं ॥
दो०–कैसे मारौं कह करौं, निशि दिन यहै विचार ॥
शालि रहे नृप कंस उर, हलधर नन्दकुमार ॥
सो०–अब धौं पठऊँ काहि, मनहीं मन शोचत खरो ॥
काहु न मान्यो ताहि, असुर गये ते सब मरे ॥

अथ केशीवधलीला ॥

असुरनमाहि बडो बलधारी * केशीअसुर वीर अति भारी ॥
कंस ताहि तब बोलि पठायो * अति आदर करि ढिग बैठायो ॥
कहत कंस केशी सुनु मोसों * जीकी बात कहत मैं तोसों ॥
मो समान राजा कोउ नाहीं * मेरी आन सकल जगमाहीं ॥
ये सेवक मेरे नहि ऐसे * जैसे मैं चाहत हौं तैसे ॥
जासों कहौं बात मैं जोई * करि आवे कारज वह सोई ॥
ताते मोहि यही पछितायो * तब केशी कहि बचन सुनायो ॥
ऐसो कहा कठिन प्रभु काजा * जाको तुम शोचतहो राजा ॥
तुम हो सब असुरनके नायक * और कौन दूनो तुम लायक ॥
जाहि क्रोध करि चितवो जबहीं * ताको नाश होय नृप तबहीं ॥
आयसु कहा मोहि किन दीजै * सो कारज अबही हम कीजै ॥
यह सुनि कंस हर्ष जिय आन्यो * केशीको बहु भाँति बखान्यो ॥
दो०–असुरवश सबही हुते, काहि कहौं ब्रजजान ॥
नँदमहरके छोहरा, करि आवैं बिन प्रान ॥

१ आशीर्वाद २ बुरी ३ मारे.

सो०–कियो न तिन कछु काज, आगे जे पठये असुर ॥
यह सुनिकै अति लाज, मारे सब नँदबालकन ॥

ताते कछु हूहै मैं जानत * बडो बीर तोको मैं मानत ॥
ता कारण अब तोहिं पठाऊँ * बहुत और कहि कहा सिखाऊँ ॥
जिहि तिहि विधि छलबल करि कोऊ * मारि आव नँदबालक दोऊ ॥
कै लै आव बाँधि दोउ भैया * कहत जिन्हैं बलराम कन्हैया ॥
यह सुनि गर्व असुर भटकीनों * चल्यो ब्रजहि नृप आयसु दीनों ॥
मनहि कहत देखौंधौं ताही * कस नृपति डरपत सब जाही ॥
अश्वरूप[1] ह्वै मनमें आयो * अति बल गरजि चहूदिशि धायो ॥
वेगवन्त अति वेपुष[2] विशाला * झारत ग्रीव पूँछ विकराला ॥
बारहि बारहि सो ध्वनि करही * ब्रजके लोगन भारत फिरही ॥
जित तित भाजि चले नरनारी * भये विकल सब अति भय भारी ॥
कह्यो जाय आतुर हरि पाहीं * अश्व एक आयो ब्रजमाहीं ॥
अति विकराल न जात बतायो * कैधौं बहुरि असुर कोउ आयो ॥

दो०–ब्रज आयो केशी असुर, जानि लियो नँदलाल ॥
सन्मुख ताके हरषिकै, चले कंसके काल ॥

सो०–शीश मुकुट वनमाल, कटि कसि बांध्यो पीतपट ॥
उर भुज नयन विशाल, असुर विदारन सुरसुखद ॥

जब केशी देखे हरि आवत * भयो क्रोधवरि सन्मुख धावत ॥
अति बल दोऊ चरण उठाये * प्रभुके उरवो चपल चलाये ॥
देखत हरे सकल मनवासी * गहे बीचही हरि[3] अविनाशी ॥
छूटन असुर बहुत बल कीनो * ठेलि श्याम पाछे तब दीनो ॥

१ घोडेका रूप धरके २ शरीर ३ श्रीकृष्ण

गिरो धरेणिपर मूर्च्छित भारी * उठ्यो क्रोधकरि बहुरि सँभारी ॥
दाव घात करिकै बहु धावै * पुनि पुनि चरण चपेट चलावै ॥
अतिहि वेग हरि जात बचाई * करत युद्ध कौतुक सुखदाई ॥
देखत सुर मुनि चढे अकाशा * कछु हर्ष मन कछु इक त्रासा ॥
तकत गोप गोपी भय बाढे * चकित चित्र लिखेसे ठाढे ॥
वदनै पसारि असुर तब धायो * चाहत हरिको मुखमें नायो ॥
तबहि श्याम यह बुद्धि उपाई * दियो हाथ ताके मुखनाई ॥
दाँतन दानि सक्यो सो नाहीं * वृक्ष समान भयो मुखमाहीं ॥

दो०-एक हाथ मुख नाइकै, तुरत केश गहि धाय ॥
बली सुवत नँदरायके, पटक्यो असुर फिराय ॥
सो०-शब्द भयो आघात, धरक्यो उर सुनि कंसको ॥
नँदमहरके तात, जान्यो केशीको हन्यो ॥

देखत सुरगण भये सुखारी * वर्षे सुमन सुमंगलकारी ॥
प्रफुलित भये सकल ब्रजवासी * बढ्यो हर्ष उरे मिटी उदासी ॥
गावत जय यश प्रभुहि सुनाई * असुरनिकंदन जन सुखदाई ॥
धाय धाय हरिको सब भेटैं * धन्य धन्य कहि कहि दुख मेटैं ॥
बडो दुष्ट मोहन तुम मान्यो * ब्रजवासिनको प्राण उबान्यो ॥
कान्हहिं सदा सहाय हमारी * धन्य धन्य मोहन गिरिधारी ॥
लिये लाय उर यशुमति मैया * पुनि पुनि मुखचूँ लेत बलैया ॥
नंद देखि आनँद अति कीनो * बहुत दान विप्रनको दीनो ॥
हरिको लै पुनि पुनि उर लावत * मुख चूँवत लखि छवि सुख पावत ॥
केशी मारि श्याम गृह आये * भये सकल आनन्द बधाये ॥

१ धरतीपर २ डर ३ मुख ४ छातीमें ५ ब्राह्मणोंको

घर घर सब ब्रजलोग लुगाई * नन्दनँदनकी करत बड़ाई ॥
ब्रजवासी प्रभु जनप्रतिपालक * सतत सुखद असुरकुल घालक ॥

दो०–धनि धनि ब्रजमें अवतरे, भक्तनके हित आय ॥
सुखसागर शोभा अधिक, बलनिधि त्रिभुवनराय ॥

सो०–बल मोहन दोउ भाय, चिरजीवो जोरी युगल ॥
देत अशीश मनाय, ब्रजवासी प्रभुको सबै ॥

अथ व्योमासुरवधलीला ॥

दूजे दिन सुंदर ब्रजनाथा * गये बनहिं गायनके साथा ॥
बलदाऊ अरु ग्वाल सुहाये * शोभित संग सुभग मन भाये ॥
गईं गाय बनमें अगुवाई * जहँ तहँ चरन लगीं सुख पाई ॥
ग्वालन संग श्याम अनुरागे * चोर मिहिचनी खेलन लागे ॥
भये मग्न तनु सुधि कछु नाहीं * दौरत दुरत फिरत मगमाहीं ॥
तबहि कंस केशीवध सुनिकै * बार बार शोचत शिर धुनिकै ॥
व्योमासुर इक अति बलवाना * मायाचरित बहुत सो जाना ॥
पठयो ताको तब ब्रजमाहीं * मारन कह्यो श्यामको ताहीं ॥
गोपवेष धरि सो ब्रज आयो * ढूँढत हरिको बनमें पायो ॥
गयो समाय सखनके माहीं * ताको किनहूँ जान्यों नाहीं ॥
व्योमासुर इक बुद्धि उपाई * प्रथम बालकन लेहुँ चुराई ॥
इकलोकरि जब हरिको पाऊँ * तब मारिकै गैहि लै जाऊँ ॥

दो०–दुरने जाहिं बालक जहां, तहां असुर सँग जाय ॥
आवहि एकहि एकले, पर्वत माहिं दुराय ॥

सो०–रहि गये थोरे ग्वाल, जब यों बहु बालक हरे ॥
तब जान्यो नँदलाल, व्योमासुरके कपटको ॥

---

१ शरीर. २ बनाई ३ पकड़कर ४ छिपनेकेलिये

धन्यो ध्यान तब कुँवर कन्हाई * हरिसों ताकी कहा बसाई ॥
तुरत असुर लै भूपर पटक्यो * प्राण देह तजि स्वर्गहि सटक्यो ॥
असुर मारिकै दीनदयाला * बालक शोधन चले गोपाला ॥
ऋषि नारद आये तिहि काला * देखि श्याम मुख लरयो विशाला ॥
उपज्यो प्रेम हृद उर पावन * बीन बजाय लगे यश गावन ॥
जय जय ब्रह्म सनातन स्वामी * आदिपुरुष प्रभु अन्तर्यामी ॥
अलेख अनीह अनन्त अपारा * को जानै प्रभु रूप तुम्हारा ॥
सकल सृष्टिके सिरजनहारे * पालन लय सब ख्याल तुम्हारे ॥
युग युग यह अवतार गुसाईं * भक्तनहित प्रभु लेत सदाईं ॥
धरणीभार पाप भइ भारी * सुरन संग लै जाय पुकारी ॥
त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी * राखि लेहु प्रभु शरण उबारी ॥
राज अनीति सुरन तब भाषी * नाहि अरु गैर भये सब साखी ॥

दो०–क्षीरसिन्धु अहिफेणु प्रभु, श्रवणन परी पुकार ॥
तब जान्यों सुरसन्त महि, दुखित दनुजके भार ॥

सो०–कह्यो भूमि अवतार, सिंधुमध्य वाणी प्रगट ॥
श्रीपति प्रभु असुरारि, जगत्राता दाता अभय ॥

ते ब्रज युवतिन बनहिं विहारे * कमलनयन प्रभु नन्ददुलारे ॥
नील जेलजतनु सुन्दर श्यामा * मोर मुकुट कुण्डल अभिरामा ॥
मुरलीधर पीताम्बर धारी * वनमाला धर कुञ्जविहारी ॥
बसहु रूप यह उर धर पाऊँ * बहुरि नाथ प्रभु विनय सुनाऊँ ॥
यह अवतार जवहि प्रभु लीनो * आयसु सुरन यहै प्रभु दीनो ॥
दैत्यदहन सन्तन सुखकारी * अब मारहु प्रभु वस प्रचारी ॥

दो०–जब वह गाथा गायकै, नारद कही सुनाय ॥
बोले प्रभु करि तब कृपा, सुधा वचन मुसुकाय ॥

सो०–जाहु वेगि मुनिराय, करहु सुरनको काज यह ॥
पठवहु मोहिं बुलाय, नृप आयसुते मधुपुरी ॥

तब प्रभु हँसि यह आयसु दीनो * तब प्रमाण प्रभुको ऋषि कीनो ॥
हरषि चले मुनि नृपके पासा * यहै बुद्धि मन करत प्रकाशा ॥
यहै बात हलधर समुझाई * जो वाणी ऋषि गये सुनाइ ॥
तुम प्रभु अखिल लोकके कारन * जन्मे हौ भुवभार उतारन ॥
परमपुरुष अनिगति अविकारा * अविनाशी अद्वैत अपारा ॥
सिंधुरूप जनहित सुखकारी * त्रिभुवनपति श्रीपति असुरारी ॥
सवपण जब ऐसो भाष्यो * मुनि मुनि श्याम हृदय सब राख्यो ॥
तब हँसि कही भ्रातसों बानी * जो तुम कहत बात मैं जानी ॥
कंसनिकन्दन नाम कहाऊँ * केश गहौं पुहुमी घसिटाऊँ ॥
ऐसे प्रभु हलधर समुझाये * बालक बहुरि शोधि सब लाये ॥
व्योमासुर मार्यो नँदलाला * भये मुदित सब देखि गुवाला ॥
धन्य धन्य सब प्रभुको भाषे * कहत आज तुम हम सब राखे ॥

१ कमल २ अमृत ३ धरती

दो०-गायो गोप हलधर सहित, भये परम आनन्द ॥
साझ समय बनसे चले, ब्रजको श्रीनँदनन्द ॥

सो०-आये नन्द अवासे, प्रभु ब्रजवासी दासके ॥
गये कंसके पास, ऋषि नारद मथुरापुरी ॥

नारद गये कंसके पासा * मन मारे मुख करे उदासा ॥
आदर करि आसन बैठाये * हर्षि कंस मुनि निकट बुलाये ॥
कैसो मुख ऋषि मन क्यों मारे * कह चिन्ता मन बढी तुम्हारे ॥
नारद कही सुनो हो राऊ * यह बैठ कछु करो उपाऊ ॥
त्रिभुवनमें नाहीं कोउ ऐसो * देख्यो नन्दभुवनमें जैसो ॥
करत कहा रजधानी ऐसी * उपजी तुमको बात अनैसी ॥
दिन दिन भयो प्रबल बहु भारी * हम सब हितकी कहत तुम्हारी ॥
तब बोल्यो नृप गर्वित बानी * यह नारद तुम कहा बखानी ॥
यदपि कहतहौ तुम हितकेरी * तदपि बराबरि नहि वह मेरी ॥
कोटि दनुँज मोसम मो पासा * जिनको देखि सुरन मन त्रासा ॥
कोटि कोटि जिनके सँग योधा * जीतनके को जिनको क्रोधा ॥
तिनके बल कहँ कहूँ बताई * देखत जिनको काल डराई ॥

दो०-रहत द्वार सतत खरी, कोटि भटनकी भीर ॥
अतिप्रचण्ड कोदण्डधर, महाबली रणधीर ॥

सो०-महामत्त गज एक, त्रिभुवनगामी कुवलिया ॥
ऐसे सुभट अनेक, नामी सुभटन को गने ॥

महा ग्वालके बालक दोऊ * तदपि बली उपजेहैं कोऊ ॥
प्रजालोग मझके सब मेरे * सेवा करत सदा रहे नेरे ॥

१ घर २ प्रहर ३ भय ४ धनुषधारी

ताते सकुचनहौं उन काजा * बालक सुनत होत मोहिं लाजा ॥
भलीकरी यह बात बुझाई * मनकी डारी सटक[1] मिटाई ॥
सुनहु और मुनि नारद हमसों * कहत भलेकी बाणी तुमसों ॥
उनपर सेना महा पठाऊँ * नन्द सहित सहजहिं बुलवाऊँ ॥
डारौं गनके चरण खुदाई * और प्रजा ब्रज देउँ बसाई ॥
यहै बात मेरे मन आई * तब मुनि मुनि बोले मुसकाई ॥
जो तुम अपनो गर्व सँभारो * तो जानो अब तुम उन मारो ॥
त्रिभुवनमें को बलहिं तुम्हारे * यह कहि मुनि निधि[1] धाम पधारे ॥
कंस आपने निय यह जानी * नारद हितकी बात बखानी ॥
अब मारों नहिं गहर[2] लगाऊँ * मथुरा जिहि तिहि भाँति बुलाऊँ ॥

दो०–यहै शोच उरमे परयो, नहिं विचार कछु और ॥
कैसे तिन्हैं बुलाइये, करत मनहिं मन दौर ॥

सो०–कबहुँ विचारत हीय, आपहि चढ़ि धाऊँ ब्रजहि ॥
पुनि सकुचतहै जीय, ब्रजवासी प्रभुगुण समुझि ॥

जन्महिते वेहैं असुरारी * सातहि दिनके बकी सँहारी ॥
कागासुर बल गयो बढ़ाई * सो मुरझाय गिरयो फिर आई ॥
शकट तृणा क्षणहीमें मारे * ग्यालहि और असुर संहारे ॥
गये प्रतिज्ञा[3] करि करि जोई * आयो नहिं जीवत फिरि कोइ ॥
अब उनको सहजही बुलाऊँ * ऐसेको निहि लेन पठाऊँ ॥
जाय नन्दसों वह बुझाइ * श्याम राम सुन्दर दोउ भाइ ॥
सुनि सुनि अति नृपके मन भाये * देखनको मधुपुरी[4] बुलाये ॥
ऐसे करि जब वे ह्यां ऐहैं * बहुरो नियत जान नहिं पैहैं ॥
यह विचार उरमें ठहरायो * तब आतुर अक्रूर बुलायो ॥

---

१ स्वर्ग २ देर ३ वायदा ४ मथुरा

सुनि अक्रूर मनमें भय पायो * किहि कारण नृप वेगि बुलायो ॥
आतुर गयो पवँरि पर धाई * जाय पवँरिया खबरि जनाई ॥
सुनतहि बोलि महलमें लीनो * सकुचि गमन सुफ¹लकसुत कीनो ॥

दो०–कछु डर कछु जिय धीर धरि, गयो नृपतिके पास ॥
देखि डरयो मुख शोचवश, उरते लेत उसास ॥

सो०–हाथ जोरि शिर नाय, अनबोल्यो सन्मुख रह्यो ॥
लीनो ढिग बैठाय, मर्म वचन कहि कस तब ॥

आपहि और तहाँ कोउ नाहीं * बोल्यो नृप सुफलकसुत पाहीं ॥
कहि जु गये नारद ऋषि बानी * सो सब कहिकै प्रगट बखानी ॥
सुनि अक्रूर कहत सत तोको * श्यामराम शा²लत उँर मोको ॥
ज्यहि त्यहि विधि अब उनको मारौं * यह कछु दोष हृदय नहिं धारौं ॥
पठवौ काहि जाहि ब्रज जोई * कहैं प्रीतिकरि नदहि सोई ॥
बल मोहन तुव तनय सुहाये * तुर्मांट सहित नृपराज बुलाये ॥
सुन गुण रूपहि अगम अगाधा * है नृपको देखनकी साधा ॥
काली पीठ कमल ले आये * तब ते नृपके मनमें भाये ॥
सो बखसीस इन्हैं अब दैहैं * इनके बचन सुनत सुख पैहैं ॥
यह कहिकै उनको लै आवै * भेदसु कोऊ जान न पावै ॥
ऐसे कहि जब कस सुनायो * तब अक्रूरहि धीरज आयो ॥
मन मन कहत कहा यह भावै * आपुहि अपनो काल बुलावै ॥

दो०–कियो विचार अक्रूर तब, कहत जु कछु मैं और ॥
तौ मारैगो मोहिं यह, अबहीं याही ठौर ॥

---

१ अक्रूर २ छेदता है ३ छातीमें

सो०-कह्यो मानिहै नाहिं, काल याहि आयो निकट ॥
यह बिचारि मनमाहिं, सुफल्कसुत बोल्यो हरषि ॥
सुनहु नृपति नीके मन आनी * धनि धनि नारद सत्य बखानी ॥
बड शत्रु हमको वे दोऊ * उपने नन्दभवनमें सोऊ ॥
कीजै वेग नृपति यह काजा * तुमसर और कौन म्हिं राजा ॥
सुनऊं आयसु जो करि पाऊं * मोर वेगि तिहि ब्रजहि पठाऊं ॥
सुफल्कसुत यह कही सयानी * तब इम्यों नृप मुनि यह बानी ॥
फिर फिर कहत हिये गरवाई * प्रात बोलि मारों दोउ भाई ॥
आधी निशि लों यह मन कीनो * तब अक्रूर बिदा करि दीनो ॥
परयो सेज आलस जिय जानी * सेवाकरन लगीं सब रानी ॥
नेक पलक लागी झपकाई * लखे स्वप्न बलराम कन्हाई ॥
कालसरिस दोउ देख डरानो * झिझकि उठ्यो भरम्यो ससकानो ॥
देखे जागत हों नहि दोऊ * चकित भई रानी सब कोऊ ॥
बूझन लगि सबै अकुलाई * कह झिझके स्वप्ने नृपराई ॥

दो०-महाराज झिझके कहा, स्वप्ने आज सकाय ॥
कहिये काको शोच अति, जीमें रह्यो समाय ॥

सो०-तब मनमें सकुचाय, सहजहि रानिनसों कह्यो ॥
भेद न भयो जनाय, मन शंका उर धकधकी ॥
सावधान प्रतिपाल कराये * जहँ तहँ योधा सकल जमाये ॥
श्याम राम भय पलक न लावै * अंतर शोच न प्रगट जनावै ॥
जाग्यो आप संग सब नारी * भई यामनिशि युगते भारी ॥
बैठत कबहुँ उठत अकुलाई * ठाढो होत कबहुँ अँगनाई ॥

१ अक्रूर २ जल्दी ३ होशयार ४ भीतर ५ एकपहर रात

घरियालीसों पूछि पठावै * वार वार निशि खबर मँगावै ॥
सोचत सब भ्रातहि कह करिहै * क्रोध भऱ्यो नृप का शिर परिहै ॥
कही घरी निशि गणिकन बाकी * इक इक क्षण युग यह गति ताकी ॥
कहत मनहि धौं काहि पठाऊँ * जासों कहि नँदसुवन मँगाऊँ ॥
पठवों अक्रूरहिको जाई * ल्यावैं ब्रजते ठगि दोउ भाई ॥
इत देख्यो सपनो नँदराई * बल मोहन कहुँ गये हिराई ॥
ग्वाल बाल रोवत पछिताहीं * कहत श्याम तौ अब ब्रज नाहीं ॥
सगहि खेलत, रहे हमारे * निठुर होय कहुँ अन्त सिधारे ॥

दो०-दूत एक कोउ आयकै, सँगले गयो लिवाय ॥
याहीके दोउ ह्वैगये, ब्रजवासिन बिसराय ॥

सो०-अतिव्याकुल नँदराय, मुरछि परे धरणी सुनत ॥

अक्रूरहि निजधर पहिरायो * बहुत कृपाकरि वचन सुनायो ॥
ल्यावहु नन्दमहरि सुत दोऊ * तुमसम और चतुर नहिं कोऊ ॥
दो०–सुख हरष्यो अक्रूर सुनि, हृदय गयो बिलसाय ॥
अक्रूर त्रास जियमें पर्‌यो, वचन कह्यो नहिं जाय ॥
सो०–दीनो रथहि चढ़ाय, जाहु वेगि व्रज नृप कह्यो ॥
लै आवहु दोउ भाय, अबहिं विलम्बै न कीजिये ॥
तब अक्रूर कह्यो कर जोरी * सुनहु देव विनती इक मोरी ॥
बल मोहन प्रातहि दोउ भैया * वनको जायँ चरावन गैया ॥
जो उनको घरमें नहिं पाऊँ * जातें प्रभु यह बात सुनाऊँ ॥
आन नन्दगृह बनिहौं जाई * प्रातहि लै आवहुँ दोउ भाई ॥
ऐसे जब अक्रूर जनायो * कंस बात यह मानि पठायो ॥
श्रीनाथ तब रथ चढ़ि हाँक्यो * सुफल्कसुत मन सन्मुख ताक्यो ॥
बहु प्रशंसि सब मल्ल बुलाये * चाणूरादि सबल चलि आये ॥
तिनसों कह्यो सुनो सब वीरा * व्रजमें रहत जु नन्द अहीरा ॥
कहियत बली तासु सुत दोऊ * राम कृष्ण जिन यह सब केरू ॥
बहुत असुर मेरे उन मारे * तातें हैं वे शत्रु हमारे ॥
उनको मैं मधुपुरी बुलायो * सुफल्कसुतको लेन पठायो ॥
उनको मति जानो तुम बारे * हैंवे महाकठिन बलभारे ॥
दो०–रंगभूमि तातें रचौ, चित्र विचित्र बनाय ॥
सावधान ह्वैकै तहाँ, रहौ मल्ल सब जाय ॥
सो०–ऊँचो एक मचान, तहाँ और सुन्दर रच्यो ॥
जहाँ असुर परधान, बैठें सब मेरे निकट ॥

१ डर २ दर ३ अक्रूर. ४ ग्वाल.

योधा और अनेक बुलावो * सावधान करि सब बैठावो ॥
ताते और पौरके बाहर * रहै कुवलियागज तिहि ठाहर ॥
राखो द्वार तीसरे जाई * गरुव कठिन अति धनुप धराई ॥
बहु भट तहाँ रहै रखवारी * अस्त्र शस्त्र धारी बलभारी ॥
ऐसे सजग रहौ सब कोऊ * जब आवैं वे बालक दोऊ ॥
प्रथम धनुप उनसों चढवावो * उन्हैं कहौ यह धनुप उठावो ॥
जब वे धनुप उठावैं नाहीं * घेरि लेहु उनको तिहिठाहीं ॥
ताही ठौर मारि दोउ लीज्यो * भीतरलौं आवन नहिं दीज्यो ॥
जो कदापि ह्याँतें चलि आवैं * तौ गजते आवन नहिं पावैं ॥
डारो गजके चरण रुँदाई * तुमको राखत अबहिं जनाई ॥
जो छल बल करिकैं बचि आवैं * रंगभूमि आवन नहिं पावैं ॥
तौ सब मछ मारि उन लेहू * मो समीपै आवन नहिं देहू ॥

दो०-ठौरहि ठौर सजायके, सजग रहौ यहि भाँत ॥
जिहिं तिहिं विधि मारौं उन्हैं, नहीं दूसरी बात ॥

सो०-मन मन मौज बढाय, ऐसे आयसु दे सबन ॥
गयो सदन नृपराय, सुनहु कथा अक्रूरकी ॥

अथ अक्रूरआगमनलीला ॥

सुफलकँसुत मन सोच अपारा * है नृप कंस बड़ो हत्यारा ॥
मन्त्र कियो मिलि मेरे साथा * पठयो मोहि लेन व्रजनाथा ॥
कैसे आनिदेउँ मैं जाई * मो देखत मारै दोउ भाई ॥
नगर निकसि रथ कीनो ठाढो * पर्यो विचार हृदय अति गाढो ॥
गज मुष्टिक चाणूर सुमिरिकै * आयो नीर लोचनन ढरिकै ॥
अति बालक बलराम कन्हाई * कहा करौ कछु नाहिं बसाई ॥

१ पाम. २ घर. ३ अक्रूर.

मोहिं मारि वरु वंदि करावै * यह विचार करि रथ न चलावै ॥
पुनि पुनि कृष्ण हृदयमें ध्यावै * चलत फिरत वछु वनि नहिं आवै॥
प्रभु कृपालु सब अंतर्यामी * सुफलकसुत मन पूरण स्वामी ॥
सुमिरत कृष्णहृदय यह आई * वे श्रीपति प्रभु त्रिभुवनराई ॥
अखिल जगतके कारण कर्ता * उत्पति पालन अरु संहर्ता ॥
भूमिभार वारण अवतारा * को जानै गुणरूप अपारा ॥

दो०-धन्य कंस जिन मोहिं भज, पठयो लैन गोपाल ॥
जाय रूप यह देखिहौं, निगमैं नेति नँदलाल ॥

सो०-यह विचार उर आनि, रथ हाक्यो अक्रूर तब ॥
भयो शकुन शुभवानि, मृगगण आये दाहिने ॥

दहिने देखि मृगनकी माला * सुफल्कसुत उर हर्ष विशाला ॥
कहत आज इन शकुन जनाई * भुज भरि मिलिहौं प्रभु सुखदाई ॥
श्याम सुभग तनु परम सुहावन * इदुवदनै त्रय ताप नशावन ॥
अंग त्रिभंग किये गोपाला * सारसहूते नयन विशाला ॥
मोर मुकुट कुण्डल वनमाला * कटिकछनी पट पीत विशाला ॥
तनु चंदनकी खौर बनाये * नटवरवेष मनोजै लजाये ॥
ह्वैहैं गैयनके संग ठाढ़े * ग्वालन मध्य महाछवि बाढ़े ॥
सो दरशन लखि होव सनाथा * धरिहौं जाय चरणपर माथा ॥
जे शुभ चरण पितामह ध्यावैं * महिमा जिनकी वेद बतावैं ॥
जिन चरणन कमलौ रति मानी * शंभु धन्यो शिर जिनको पानी ॥
सनकादिक नारद यश गावैं * जिन चरणन योगी चित ध्यावैं ॥
वलि जिनकी मर्याद न पाई * हारि मानि निजपीठ नपाई ॥

१ सब २ वेद ३ पतार ४ चन्द्रमाके समान मुख ५ काम देव ६ ब्रह्मा ७ लक्ष्मी ८ हाथ

दो०–शिलाशाप मोचन करन, हरन भक्त उरपीर ॥
आज देखिहौं ते चरण, सकल सुखनकी सीर ॥

सो०–अरुण कंजके रंग, अंकित अंकुश कुलिश ध्वज ॥
गोप बालकन संग, गो चारत वन पाइहौं ॥

परिहौं जाय चरणपर जवहीं * भुजन उठाय भेटिहौं तवहीं ॥
परसत उर आनँद उपजैहैं * अगन पुलकि तनूरुह ऐहैं ॥
देखत दरश परश सुख भैहैं * प्रेम सलिल लोचन भरिजैहैं ॥
कुशल पूछि हैं म्वहिं सुखदानी * कहि नहिं सकिहौं गद्गद बानी ॥
वारहि बार वचन मृदु कैहैं * सुनि सुनि श्रवणै परम सुख पैहैं ॥
यों अक्रूर ध्यानमें अटक्यो * भूल्यो पथि फिरत रथ भटक्यो ॥
हरि अनुराग भऱ्यो उरमाहीं * रही देहकी सुधि कछु नाहीं ॥
साँझ भई गोकुल नहिं पायो * नहिं जानत मोहीं यह आयो ॥
किन पठयो कहँ जात न जानी * रथ वाहनकी सुरति भुलानी ॥
भयो हर्ष उर प्रेम विशाला * दशहूँ दिशि पूरण गोपाला ॥
हरि अंतर्यामी सव जानी * भक्तवछल है जिनकी बानी ॥
भक्त भाव करि जो कोउ ध्यावै * मिलत तिन्हें नहि विलम लगावै ॥

दो०–ग्वाल संग वृन्दा विपिन, चारत धेनु सुजान ॥
चले हर्षि हलधरसहित, भक्त हेतु जिय जान ॥

सो०–यमुन पार करि गाय, गौरी गावत हर्षि हरि ॥
गायन तहां मँगाय, लागे गोदोहन करन ॥

गायन दुहन लगे सव ग्वाला * आपहु दुहत भये नँदलाला ॥
भक्त हेतु यह सुख उपजायो * तहँा दरश सुफल्कसुत पायो ॥

१ अहिल्या. २ रोंगटे ३ कान.

रहि न सक्यो रथपर सुख व्याकुल * उतरि पन्यो भूपर अति आकुल॥
भयो मनोरथ मनको भायो * दौरि श्याम चरणन शिर नायो॥
पुलकि गात लोचन जलधारा * हृदय प्रेम आनंद अपारा॥
कृपासिंधु करि कृपा उठायो * भक्तहेतु मिलि कंठ लगायो॥
भयोजु सुख सो सोई जाने * ब्रजवासी किहिभाँति बखाने॥
जो अक्रूर चरित मन कीनो * तैसिय भाँति दरश हरि दीनो॥
मधुर वचन श्रवँणन सुखदाई * पुनि पुनि पूछत कुँवर कन्हाई॥
आनँन चारु निरखि सुखकारी * तब बोल्यो अक्रूर सँभारी॥
कुशल नाथ अब दरश निहारी * दैत्यदलन भक्तनहितकारी॥
भेदहि भेद कंसकी बानी * सुफलकसुत सब प्रगट बखानी॥

दो०-सुनत वचन अक्रूरके, मुसकाने ब्रजचन्द ॥
फरकि भुजा भूभारकी, टारन असुर निकंद ॥

सो०-मिले राम पुनि आय, परमप्रीति अक्रूरसों ॥
उर आनँद न समाय, वासुदेव दोऊ निरखि ॥

कहि कहि उठत हहै नँदलाला * हमहिं बुलायो कंस भुआला॥
लेवेको अक्रूर पठाये * कालहिं करि अति कृपा मँगाये॥
सुनतहि भये चकित सब ग्वाला * कहा कहतहैं मदनगोपाला॥
भये प्रेमवश मति अकुलानी * भरि आयो नयननमें पानी॥
निरखि सबनको सुख सुखदानी * तब बोले करि श्याम सयानी॥
चलहु काल्हि देखहिं नृप कंसा * मति आनौ जियमें कछु संसा॥
यह कहि चले हर्षि ब्रजबालन * कछू हर्ष कछु संशय ग्वालन॥
अति कोमल बलराम कन्हाई * हँसि लीन्हें अक्रूर उठाई॥

१ शरीर. २ कान. ३ मुख. ४ नाशकरनेवाले. ५ चतुर.

सुमनहुते हरुवे सुरा दनियां * दोउ लसत सुफलकसुत कैनियाँ ॥
ग्वाल सकल लीनों रथ डोरी * पहुँचे आय सकल ब्रजखोरी ॥
लखि जहँ तहँ ब्रजलोग चकाने * कस दूत सुनि नन्द सकाने ॥
सबो समुझि शोच उर छायो * मन मन कहत कहाँ यों आयो ॥

दो०–आतुर उठि आगे चले, लेत नन्द उपनन्द ॥
देखन धाये घरनते, सुनत नारि नर वृन्द ॥

सो०–श्याम राम उरलाय, स्यंदन तजि सुफलक्सुवन ॥
आवत लखि नँदराय, भये हर्ष विस्मय विवश ॥

सादर तिनको शीश नवाये * कुशल प्रश्नकरि गृह लै आये ॥
चरण धोय बैठक शुभ दीनी * विविध भाँति भोजन विधि कीनी
सर्कर्षण अरु कुवर कन्हैया * मिलिगये अक्रूरहिं दोउ भैया ॥
क्षणक होत नहिं नेक नियारे * मनहुँ दुलार उनहि प्रतिपारे ॥
तब अक्रूर सग लै दोऊ * भोजन कियो लसत सब कोऊ ॥
हरि इत उत फैरत नहिं आखैं * सब ब्रजलोग मनहि मन भाखैं ॥
उठे अँचै तब पान खवाये * आदर सहित पलँग बैठाये ॥
पुनिकरजोरि नन्द यों भाख्यो * बड़ा कृपा करि पग इत राख्यो ॥
तब ऐसे अक्रूर सुनायो * बल मोहनको नृपहि बुलायो ॥
तुमको कह्यो संगलै आवैं * सुनि सुनि गुण मेरे मन भावैं ॥
देखनको अभिलाष जनायो * ताते वेगहि प्रात बुलायो ॥
ब्रजके लोग सुनत यह बानी * भये चकित सुधि बुद्धि हिरानी ॥

दो०–चकित नन्द यशुमति चकित, मनहीं मन अकुलान॥
हरि हलधरको सैनदे, सबै बुलावत जात ॥

१ गोदी २ रथ ३ दुःख ४ इच्छा

सो०-माया रहित मुकुंद, जाके योग वियोग नहिं ॥
सदा एक आनंद, अविगति[1] अविनाशी पुरुप ॥

प्रेम भक्तकी कछु उर लाजा * कीनो चहै भूमि सुर काजा ॥
जाते नहिं काहू तन हेरत * बोलत नहीं नयन नहिं फेरत ॥
जनु पहिंचान कबहुँ की नाहीं * लखि लखि सब डरपत मनमाहीं ॥
हरि सुफलकसुतसों मन लायो * यहै कहत नृप हमहिं बुलायो ॥
हुती साध हमहू मनमाहीं * कबहुँ नृपति बोल्यो क्यों नाहीं ॥
हँसि हँसि ऐसे कहत मुरारी * यह सुनि विकल सकल नरनारी॥
श्याम नहीं कछु मनमें आने * भये नेहतजि तुरत विराने ॥
कहति परस्पर तिय अकुलाई * कितते आयो यह दुखदाई ॥
महाक्रूर अक्रूर नामको * जैहै प्रात लिवाय श्यामको ॥
जान कहत यासंग कन्हाई * कैसे प्राण रहँगे माई ॥
बिलखि वचन शोचति सब ठाढी * मनहुं विचित्र चित्र लिखि काढी ॥
अब हम संग तुम्हारे जैहैं * भली भाँति नृप देखन पैहैं ॥

दो०-ठौर ठौर ऐसी दशा, कहत न आवत बयनें[4] ॥
बडी श्यामबिछुरन व्यथा, ढरत उमँगजल नयन ॥

सो०-फिरत विकल सब ग्वाल, पूछत एकहि एकसों ॥
चलन कहत नँदलाल, मन मलीन व्याकुल सबै ॥

व्रजके लोग विकल सब देखै * तब अक्रूर सबन परितोखै[5] ॥
चिन्ता मतिहि करो मनमाहीं * इनको कछू और डर नाहीं ॥
भंजन धनुष यज्ञके काजा * मधुपुरि इनहि बुलायो राजा ॥

१ जिनकी गति न जानीजाय. २ शरीर. ३ रंजके. ४ वचन. ५ भरोसा दे.

व्याकुल महरि यशोमति धाई * आतुर परी चरण पर आई ॥
सुफलकसुत मैं दासि तुम्हारी * सुनौ कृपाकरि विनय हमारी ॥
सन्तनधाम परम उपकारी * सुनियत कीरति बड़ी तिहारी ॥
बड़े दुखनमें यह प्रतिपारे * राम श्याम प्राणनते प्यारे ॥
धनुप तोर कहँ जानैं बारे * इन कब देखे मल्ल अखारे ॥
राजसभाको यह कह जानै * कब इन नृप जुहार पहिचानै ॥
राज अंश अपनो सब लीजे * और कहौ-बरु अधिको दीजै ॥
जाहु नद उपनदहि लैकै * मैं कह करौं सुतनको दैकै ॥
हे अक्रूर तुम्हारो नामा * नगर कहा लरिकनको कामा ॥

दो०-कहा धनुप यह देखि हैं, बालक अति अज्ञान ॥
किया नृपति कछु कपट यह, परत मोहिं यों जान ॥

सो०-देहुँ नहीं हों जान, मैं निधनीके श्याम धन ॥
लेहि कंस बरु प्रान, को जीवे नँदनँदनबिन ॥

कहति बिलखि हरिसों दुख भारी* क्यों मोहन मन छोड़ै बिसारी ॥
दुखित जानि अपनी महतारी * मथुरा जाहु न मैं बलिहारी ॥
ये अक्रूर क्रूर व्रत रचिकै * आये तुम्हें लेन रथ सजिकै ॥
तिरछी भई करमगति आई * यह धो निधना कहा बनाई ॥
मौसी मात महरसों ताता * कहत रहत क्षण क्षण दोउ भ्राता ॥
तिहि मुख जान कहत हो प्यारे * कैसे रहिहैं प्राण हमारे ॥
मैं बलि ऐसी नियमति धारो * मथुरामें यहु काज तिहारो ॥
निरखि रूप यशुमति अकुलाई * व्याकुल परी धरणि मुरझाई ॥
कहि अब लेवें प्राण कन्हैया * हैवें निठुर जातहैं मैया ॥
क्यों अक्रूर गोकुलहि आयो * मेरे प्राण लेनको धायो ॥

१ दुखी होकर २ अक्रूर ३ दया ४ धरनी

नाम अक्रूर गुण क्रूर तुम्हारा * करिहौ सुनो भवँन हमारा ॥
रोवत वदन रोहिणी मैया * अनके जीवन ये दोउ भैया ॥

दो०–भये निठुर अक्रूर मिल, घरहू आवत नाहिं ॥
कहा करौं कासो कहौं, को राखै गहि बाहिं ॥

सो०–अति व्याकुल व्रज बाम, जहँ तहँ बिलैसी कहैं ॥
चलन चहत घनश्याम, इक जुरहैं सखि प्राणतनु ॥

कहँ वह सुख हरिको सँग सजनी * विविधि विलास शरदकी रजनी ॥
हरिमुखशशि शीतल सुखकारा * चख चकोर लखि रहत सुखारी ॥
कह वह सुंदरि हरि गरबाहीं * पियत अधर रस मन न अघाहीं ॥
जग उपहास रह्यो जिहिलागी * कुलअभिमान लाज सब त्यागी ॥
छुट्यो चहत सो हमसों आली * करी कठिण विधि परमकुचाली ॥
कहू सखी फिरि कबहू ऐसे * मिलिहैं अब मिलियत हैं जैसे ॥
कहिहैं बहुरि बात हसि कबहीं * लागत परम निठुर म्वहिं अबहीं ।
विरहानल अग्निहुते ताती * विछुरत श्याम पीर अति छाती ॥
व्यायहि सखी नागरी नारी * जरत विरह उर अमित प्रचारी ॥
अब सहिहैं ऐसो दुख प्राना * निशिदिन करि उर वज्रसमाना ॥
एक कहति कैसे हरि जैहैं * यशुमति पैं सरिहि नान न पैहैं ॥
कह करि है अक्रूर हमारो * फिरि जैहै करि मुख निज कारो ॥

दो०–हम तजि हरि नहिं जाइहैं, मोहिं जीय विश्वास ॥
कहा लेहिंगे मधुपुरी, छाँड़ि यशोमति पास ॥

सो०–धन्यो तनक जब धीर, सुनि ताकी वाणी सबन ॥
सा जानै यह पीर, जो रँगराती श्यामके ॥

---

१ दुष्ट २ घर ३ दुखी ४ अनेक प्रकारके ५ रात ६ होट

शकट तृणावत परम अन्याई * अघ अरिष्ट केशी दुखदाई ॥
एकहि पलमें सकल सँहारे * विष जलते सब सखा उबारे ॥
गोवर्धन जिन करपर धाऱ्यो * महाप्रलयको जल सब टाऱ्यो ॥
हरि सम बली और कोउ नाहीं * तू मन शोच करै मनमाहीं ॥
हम बालक कह तुमहिं सिखावैं * धीर धरौ हम फिरि ब्रज आवैं ॥

दो०-मुनि चरित्र गोपालके, उर आयो अँवरोहि ॥
जो कछु करै सो सत्य प्रभु, आवत है सब सोहि ॥

सो०-कह्यो नन्द तब आय, मैं लैजैहौं सँग हरि ॥
धनुपयज्ञ दिखराय, लै ऐहौं तुरतहि बहुरि ॥

अथ मथुरागमनलीला ॥

ऐसेहि भयो रात विहानी * भयो प्रात चिरिया चुहचानी ॥
महर कह्यो सब गोप बुलाई * दधि घृत भार सजौ बहु जाई ॥
नृपति भेंटहित करहु सँजोई * हरिके संग चलौ सब कोई ॥
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने * चहत श्याम मधुपुरि निज जाने ॥
पऱ्यो शोर ब्रज घर जहँ ताई * हरिमुख देखनको सब धाई ॥
सजत ग्वाल चलवेको साजा * गैया फिरत दुहनके काजा ॥
कह्यो श्याम अक्रूरहि तबहीं * जोतहु तात तुरत रथ अबहीं ॥
सुफलकँसुत आयसु जब पायो * सहित सँकोच रथहि पलनायो ॥
सुफलक ढिगते दोऊ भाई * होत नहीं न्यारे यहुँ राई ॥
देखतही यशुमति अकुलानी * परी धरणि विलपति बिलल्लानी ॥
विकल कहति मोहिं तजो दुलारे * जात कियें सूनो ब्रज प्यारे ॥
यह अक्रूर ठगौरी लाई * मोहे मेरे बाल कन्हाई ॥

१ भरआन. २ बीती. ३ अक्रूर. ४ धरती.

करत नन्द उपनन्द बिचारा * करिये कहा कौन उपचारा ॥
को जाने कह नृप मनमाहीं * नृप आयसु मेट्यो नहि जाहीं ॥
अति बालक बलराम कन्हाई * भये शोचवश अब नँदराई ॥
तब बोल्यो यक गोप पुरानो * प्रभुप्रभाव उर राखि सयानो ॥
कहतकि मो मनमें यह आवै * सोई करो जो श्यामहि भावै ॥
इनको बालक करि मति जानो * कह्यो गर्ग सोई परमानो ॥
ये करता हरता सबहीके * भार उतारनहार महीके ॥
जिन गिरि कर धरि ब्रजहि बचायो * बहुरि हमैं बैकुंठ दिखायो ॥
जाहि गयो सुरपति शिरनाइ * ल्यायो नाथि कालि अहि जाई ॥
वरुणधाम देखी प्रभुताइ * करति हते सब तुमहिं बड़ाई ॥
कहा कंस ताको भय मानैं * इनकी महिमा येही जानैं ॥
जितव धनुष हरि तुरत चढ़ै हैं * देखत इनहि कंस दुख पैहैं ॥

दो०–जो करिहै कछु कपट तौ, सब समरथ गोपाल ॥
हरि हलधर भैया उभय, ये कालहुके काल ॥

सो०–हर्षे सबै अहीर, हरिप्रताप उरमें समुझि ॥
सब लायक बल वीर, धीर धरा यह जानिकै ॥

बार बार यशुमति अकुलाइ * कहत रहौ सुत कुँवर कन्हाई ॥
अबहीं तात बहुत तुम बारे * मथुरा बसत मल्ल हत्यारे ॥
क्यों बलराम कहत तुम नाहीं * तुमबिन लाल मात मरि जाहीं ॥
कहत राम सुनु यशुमति मैया * तू मति भोरो जान कन्हैया ॥
गतिहि कंसभय व्याकुल होहीं * एक भरोसो हरिको मोहीं ॥
प्रथमहिं कंस कपट करि आई * अतिहि प्रबल विष कुच लपटाई ॥
गानहि दिनके तबहिं कन्हाई * सो दगताही ताहि नैशाइ ॥

१ बचाव २ इन्द्र ३ सर्प ४ छोटासा लड़का ५ मारी

शकट तृणावत वत्स अन्यारे * अथ अरिष्ट केशी दुखदाई ॥
एनहि पलमें सकल सँहारे * विष जलते सब सखा उबारे ॥
गोवर्धन निज करपर धान्यो * महाप्रलयको जल सब टान्यो ॥
हरि सम बली और कोउ नाहीं * तू मत शोच करै मनमाहीं ॥
हम बालक कह तुमहि सिखावैं * धीर धरौ हम फिरि ब्रज आवैं ॥

दो०-सुनि चरित्र गोपालके, उर आयो अँवरोहि ॥
जो कछु करैं सो सत्य प्रभु, आवत है सब सोहि ॥

सो०-कह्यो नन्द तब आय, मैं लैजैहों सँग हरि ॥
धनुपयज्ञ दिखराय, लै ऐहौं तुरतहि बहुरि ॥

अथ मथुरागमनलीला ॥

ऐसेहि सबको रात बिहानी * भयो प्रात चिरिया चुहचानी ॥
महर कह्यो सब गोप बुलाइ * दधि घृत भार सजौ बहु जाई ॥
नृपति भेंटहित करहु सँजोइ * हरिके संग चलौ सब कोई ॥
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने * चहत श्याम मधुपुरि निज जाने ॥
पन्यो शोर मन घर जहँ ताई * हरिमुख देखनको सब धाई ॥
सजत ग्वाल चलवेको साजा * गैया फिरत दुहनके काजा ॥
कह्यो श्याम अक्रूरहि तबहीं * जोतहु तात तुरत रथ अबहीं ॥
सुफलकसुत आयसु जब पायो * सहित सँकोच रथहि पलनायो ॥
सुफलक ढिगते दोऊ भाई * होत नहीं न्यारे कहुँ राई ॥
देखतही यशुमति अकुलानी * परी धरणि विलपति बिल्लानी ॥
निरख कहति मोहिं तजो दुलारे * जात कितै सुनौ ब्रज प्यारे ॥
यह अक्रूर ठगौरी ला * मोहे मेरे बाल कन्हाइ ॥

१ भरआन २ बीती ३ अक्रूर ४ धरती

दो०-यह सुफलकसुत बूझिये, तुम्हीं हरे मो बाल ॥
वृद्ध समयकी लकुटियाँ, मेरे मदनगोपाल ॥
सो०-देखहु मनहिं विचारि, लाभ कछु यामें तुम्हें ॥
दियो धरम डरडारि, क्रूर भये इत आयकें ॥
चलत जात चितवन ब्रजनारी * विरहविकल तनुसुरत बिसारी ॥
जहँ तह चित्र लिखीसी ठाढी * नयनन नीरनदी जिमि बाढी ॥
लगत निमेषे[2] कूल दोउ नाहीं * भ्रमति नाव पुलरी तामाहीं ॥
ऊरध श्वास समीर[3] झकोरत * चित्र कपोल तीर तरु तोरत ॥
काजलकीच कुचील किये तट * अधर[4] कपोले[5] उरज अचलपट[6] ॥
रहे जहा तह पथिक जकेसे * चरण हस्त मुख वचन थकेसे ॥
श्याम विरह व्याकुल ब्रजबाला * नीरहीन जिमि मीन बिहाला ॥
सूखत अधर मदन मुरझाने * जनु हिम परम कमल कुम्हिलाने ॥
कहति परस्पर वचन अधीरा * गदगद वचन ढरत दृग नीरा ॥
जीवन धन प्राणनको प्यारो * लिये जात अक्रूर हमारो ॥
सुनहु सखी अब कीजै सोई * जाते बहुरि सैल नहि होई ॥
गयो दूर रथ रह्यो न जैहैं * पुनि पाछे पछितायो ऐहैं ॥
दो०-परिहरि यशआशा जियन, लाज पचकी कान ॥
करिये विनती श्यामसों, सखी समय पहिंचान ॥
सो०-होनी होय सो होय, पाँय परशि हरि राखिये ॥
नातरु मरिहैं रोय, समय चूक उर शालिहै[7] ॥
प्रभु अन्तर्यामी सुखदानी * विरह विकल गोपीजन जानी ॥
चितये नयन कमल दल लोचन * सकल शोच सताप विमोचन ॥

१ लकडी २ पलक ३ हवा ४ होठ ५ गाल ६ घूघट ७ दर्द

मृदु मुसकानि ठगोरी डारी * श्याम ठगीं सब व्रजकी नारी ॥
रहि गईं चितवत वचन न आयो * चढ़े श्याम रथ अवसर पायो ॥
हरिको नाम सुमिरि मनमाहीं * चढे अक्रूर तुरत तहांहीं ॥
देखत महरि यशोमति धाई * पुत्र पुत्र कहि टेर लगाई ॥
मोहन नेकु देखि इत लेहीं * बिछुरत लाल भेंट म्वहिं देहीं ॥
राखहु तात बोधे करि मैया * बहुरी चढहु विमान कन्हैया ॥
लेहु निहारि जनमको खेरो * बहुरो व्रजमें होत अँधेरो ॥
यह कहि ग्वाल सखनको टेरो * अपनी गाय जाय सब घेरो ॥
एसे कहि यशुमति बिलखाई * जिये यश बहु प्राण न जाई ॥
बिलपति विकल राम महतारी * अति व्याकुल सब व्रजकी नारी ॥

दो०-देखि दुखित व्रज लोग सब, और यशोदा माय ॥
सब हरि कहि यह सुख दियो, बहुरि मिलेंगे आय ॥

सो०-धरणीके हितकारी, मथुरातन चितये बहुरि ॥
कह्यो द्रगनें सनकारि, रथ हांकन अक्रूरसों ॥

बार बार यशुदा यों भाखे * कोऊ चलत गोपालहि राखै ॥
श्वफल्कसुत बैरी भयो आई * हरे प्राण धन बाल कन्हाई ॥
हरहु मम बहु गोधन सारो * क बरि मोहि बन्दिमें डारो ॥
ऐसेहू दुख श्याम समागे * खेलहिं मों नयननके आगे ॥
यह कहि महि लोटत अकुलानी * अतिही दुखित नन्दकी रानी ॥
गोपीजन विरहानलें डाढी * रहि गइ प्रेम वियोगनि ठाढीं ॥
जिमि कुमुदिनिगण नीरविहीना * रविहि प्रकाशत भासते दीना ॥
श्यामविमुख क्षणक्षण कुम्हिलानी * बहुरो मिलन कठिन जियजानी ॥
बुलबुधि थकित श्रवत जल लोचन * चलि नहिं सकीं रहीं मदमोचन

१ मोहनी २ पिता ३ समझाना ४ नचोंसे ५ विरहकी आग ६ पानी

ग्वेंडेलों सब गईं बिहाला * ब्रज तजि गमन कियो गोपाला॥
लै गये मधु अक्रूर नियारी * माखी ज्यों सब दीन बिडारी ॥
देखत रहीं थकी टकलाई * जब लगि धूरि दृष्टिमें आई ॥

दो०-भये ओट जब दृगनते, मूर्च्छि परीं बिलखाय ॥
कहति गयो रथ दूरि अब, धूरि न परति लखाय ॥

सो०-कहा करैं ब्रज जाय, मन हरि लैगयो साँवरो ॥
परत न आगे धाय, पाछेही लोचन लखत ॥

वदने[1] विकल विरहारसमार्तीं * भईं न पवन सङ्ग उड़ि जातीं ॥
रजहू नहीं विधाता वानी * जाती चरणकमल लपटानी ॥
भईं नहीं यक रथको अङ्गा * जाती चली तहाँ लगि सङ्गा ॥
बिछुरे आज श्याम सुखराशी * तौ परतीति दृगनकी नाशी ॥
उड़ि नहि गये श्याम सँग लागे * कृष्ण मयी नहिं भये अभागे ॥
रसिक प्रेमके जगत बखाने * रूप लालची सब कोउ जाने ॥
सो करनी कछु इन नहिं कीनी * वृथा मीनें[2] की छबि हरि लीनी ॥
धनि धनि मीन प्रीतिपथ साचे * सखि ये नयन हमारे काचे ॥
अब ये शूल सहत जिय शोचत * उमँगि उमगि भरि भरि जल मोचत
हरि बिन अब लखिये ब्रज सूनो * समय चूक सहिये दुख दूनो ॥
भईं अजान सबै मनमाहीं * काहू चलत गह्यो रथ नाहीं ॥
वृथा लाज करिकाज बिगान्यो * सह्यो दुसह विरहा दुख भान्यो ॥

दो०-यों ब्रजतिय पछिताय सब, देखि यशोदहि दीनँ ॥
लै आईं सब नन्दगृह, कृश तनु वर्दन मलीन ॥

१ मुख २ मछली ३ व्याकुल ४ मुख

सो०–ब्रजतिय परम उदास, हरिबिन सुखसंपति सपन ॥
रहैं प्राण इहि आस, श्याम कह्यो मिलिहौं बहुरि॥

खग मृग विकल जहाँतहँ डोलें * गाय वच्छ रोंभत सब टोलें ॥
तरु बेली पल्लव कुम्हिलानी * ब्रजकी दशा न बरनि बखानी ॥
चले नंद गोपन सँगलेकै * ब्रजवासिनको धीरज दैकै ॥
बाल सखा हरिके सुखदाई * दरशनलागि चले सब धाई ॥
उत अक्रूर शोच मनमाहीं * कियो कान मैं नीको नाहीं ॥
बल मोहन भैया दोउ बारे * अति कोमल नवनीत पियारे ॥
करिकै जननी जनक दुखारी * व्याकुल सबै घोषकी[1] नारी ॥
ये रे जात कंसपै जिनको * सो देखत मारैगो इनको ॥
धृक धृक धृक कुबुद्धि यह मेरी * जाहुँ फिराय इन्हें मग फेरी ॥
कंस आज मारै वरु मोको * हरिको जाय देउँ नहिं ओहो ॥
यहि अंतर यमुना नियराई * ठाढ़ो कियो तहाँ रथ जाई ॥
अंतर्यामी हरि भगवाना * भक्तहृदय संशय पहिचाना ॥

दो०–भूख लगी तब हरि कह्यो, हमैं कलेऊ देहु ॥
करि यमुना अस्नान पुनि, तात तुमहुँ कछु लेहु ॥

सो०–सुनत वचन मृदुकान, सुफल्कसुत पुनि सुरतही ॥
कछु मेवा पकवान, भोजन दुहुँ भैयन दियो ॥

आप स्नान करन मन दीनो * यमुना पैठि संकल्प कीनो ॥
जबहीं शीश नीरमें डार्‍यो * तब अचरज यक भाँत निहार्‍यो ॥
राम कृष्ण रथपर सुखदाई * जलभीतर शोभित दोउ भाई ॥
चकित भयो जलतें शिर काढ्यो * देख्यो रथ बाहरसो ठाढ्यो ॥

---

१ अहीरकी २ पीतम ३ आश्चर्य

बहुरो बूड़ि सलिलेमें पेख्यो * वैसोइ फेरि तहाँ रथ देख्यो ॥
क्षण जलमें क्षण प्रगट निहारे * पुनि पुनि सभ्रम बुद्धि विचारे ॥
स्वप्न किधौं जाग्रत यह होई * कैधौं मो मतिमें भ्रम कोई ॥
कैधौं जलमें रथकी छाया * कैधौं यह हरिकी कछु माया ॥
भयो विकलमति थिर कछु नाहीं * देखन लग्यो बहुरि जलमाहीं ॥
जब अक्रूर बहुत अकुलायो * निज स्वरूप तहँ श्याम दिखायो ॥
देखत भयो तहाँ जलमाहीं * सकल देव ठाढे हरि पाहीं ॥
प्रस्तुति करत चरण चित दीने * नमित कधपर सम्पुट कीने ॥

दो०–शेष सहसफणिमणियुत, जगमग ज्योति अनूप ॥
श्वेत चरण पटपीत युत, राजित हलधर रूप ॥

सो०–नव नीरद[१] तनु श्याम, पीत बसन लावण्यनिधि ॥
भुज प्रलम्ब अभिराम, शेष अंक हरि सोहहीं ॥

चारु अरुण पङ्कजदलनयना * चितवन चारु चारु मृदुवयना ॥
चारु तिलक वर वाल विराजें * चारु कुटिल कुन्तलें छवि छाजै ॥
चारु तिलक नासिका सुहाई * चारु कपोल अधर अरुणाई ॥
सुन्दर श्रवण चिबुक दरग्रीवा * चारु बसन विहसनछवि सीवा ॥
उर विशाल श्रीचिन्ह विराजै * उदर सुधर रोमावलि राजै ॥
नाभि गँभीर क्षीण कटिदेशू * भुज विशाल बरचारु सुबेशू ॥
जघ गुल्फ अति चारु सुहाई * पदकमलन नख शशि छविछाई ॥
नख शिख अनुपम रूप विराजै * दिव्याभरण सकल अँग छाजै ॥
कुडल मुकुट जटित मणिमाला * मुक्तमाल वनमाल विशाला ॥
यज्ञोपवीत पीताम्बर काँधे * कौस्तुभ मणि अङ्गन बरबाँधे ॥
कर पल्लवन मुद्रिका राजै * शङ्ख चक्र गद पद्म बिराजै ॥

१ पानीमें २ भगवानको ३ बादल ४ बाल ५ शंखकीसी गरदन

सुदेघटिका अति छविकारा * मणिन जटित नूपुर छबि भारा ॥

दो०-नन्दसुनन्दादिकनते, दिव्य पारषद आहिं ॥
कर जोरे ठाढ़े सबै, परिचर्याके माहिं ॥

सो०-ठाढ़ी जोरे हाथ, माया निज माया सहित ॥
भक्त भक्तके साथ, अंबरीष प्रह्लाद बलि ॥

शिव अनसहित शिवा अरु बानी * सनकादिक नारद अरु ज्ञानी ॥
भक्तन सहित सुरासुर जेते * कर जोरे ठाढ़े सब तेते ॥
चन्द्र कुबेर वरुण दिक्पाला * मनु विश्वकर्म धर्म यम काला ॥
वदन करत चरण धरि माथा * गावत वेद सकल गुणगाथा ॥
जलमें लखि अक्रूर भुलान्यो * कृष्ण प्रभाव प्रगट सब जान्यो ॥
चिंता सकल चित्तकी नाशी * जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनाशी ॥
मोहिं कृपा करि दर्शन दीनो * तहँ प्रणाम सुफलकसुत कीनो ॥
अति आनद बढ़्यो मनमाहीं * अस्तुति करन लग्यो तिहि ठाहीं ॥
धन्य धन्य प्रभु अंतर्यामी * नारायण त्रिभुवनके स्वामी ॥
सकल विश्व तुमहा विस्तारो * विश्वरूप है रूप तुम्हारो ॥
निर्गुण निर्विकार अविनाशी * लीला सगुण गुणनकी राशी ॥
प्रभु तुम सब देवनके देवा * जानै कौन तुम्हारी सेवा ॥

छं०-कोजान तुम्हरो भेव हरि, तुम सकल देवमयी प्रभो॥
आदिकारण सबहिके तुम, विश्व सब तुम्हरो विभो ॥
नाग नर सुर असुर खग जग, दास सब तुम्हरो हरी॥
रहति माया सब तुम्हारी, जाहि तुम ज्यहि विधि करी॥
योग यज्ञ अनेक कर्मनकरि, तुम्हें सब ध्यावहीं ॥

१ तागड़ीवाकधनी २ कथा ३ समूह ४ उद्धार

जैसो जाको भाव तैसो, तुमहिंते फल पावहीं ॥
अति अगाध अपार तुम गति, पार काहू नहिं लह्यो ॥
शभु शेष गणेश विधना, नेति निगमनहू कह्यो ॥
भक्तहित धरि विविध तनु तुम, चरित अद्भुत विस्तरो ॥
मच्छ कच्छ वराह वपु हुय, वेदगिरि तुम उद्धरो ॥
होय नरहरि भक्त प्रण करि, शरण हित वामन भये ॥
भृगुवशमणि अभिराम तनु धरि, मानमय क्षत्रिय हये ॥
रामरूप निपाति रावण, अरु विभीषण नृप कियो ॥
कसअरि यदुवशभूपण, कृष्णवपु छविनिधि लियो ॥
बौद्धरूप दयालु कलिकिहिंसादि, कर्मन भावहीं ॥
नि क्लक मलेच्छहा, दशरूप श्रुति तव गावहीं ॥
दो०–तव गुण रूप अनत प्रभु, हौं अजान जगदीश ॥
यो स्तुति अक्रूर करि, नायो पदपर शीश ॥
सो०–तबहिं श्याम सुखदाय, अंतरहित जलते भये ॥
निकस्यो अति अकुलाय, तब जलते अक्रूर पुनि ॥

लखी कृष्णकी जब प्रभुताई * बढ्यो हर्ष अति उर न समाई ॥
भूले नेम न कछु कहि नाई * मगन ध्यान बलराम कन्हाइ ॥
कहत मनहि मन यह अविनाशी * पूरण ब्रह्म सकल गुणराशी ॥
हरण करण समरथ भगवाना * नाहिंन इन समान कोउ आना ॥
कितक कंस भेदी उर संशा * ये करिहैं तारो निरवंशा ॥
चल्यो हाँकि रथ तब हर्षाई * नँद उपनद मिले तहँ आई ॥

१ सुंदर २ म्लेच्छोंके मारनवाले ३ वंद

हरि अक्रूरहि बूझत जाहीं * करि सयान मन मन मुसकाहीं ॥
कहो तात तुम अब हरषाने * प्रथमहि कछू बहुत मुरझाने ॥
कहो साच हमसों सोइ बानी * तब अस्तुति अक्रूर बखानी ॥
धन्य धन्य प्रभु धनि श्रीकंता * गुणन अगाध अनादि अनंता ॥
निगम नेति वहि नाहि बखानैं * सहसानन नित नव गुण गानैं ॥
करिके कृपा जानि निज दासा * दियो दरश संशय सब नासा ॥

दो०-अब म्वहिं प्रभु बूझत कहा, तुम त्रिभुवनके नाथ ॥
कर्ता हर्ता जगतके, सकल तुम्हारे हाथ ॥

सो०-कहा बापुरो कंस, कहा मल्ल कह कुवलिया ॥
अब करिये निर्वंश, वेग नाथ ऐसे खलन ॥

सुनि मोहन सुफलकसुत बानी * भये प्रसन्न भक्तसुखदानी ॥
जात चले रथपर दोउ भाई * सन्मुख दृष्टि मधुपुरी आई ॥
तरणि किरण महलन छवि छाई * जगमगात नभ सुंदरताई ॥
अक्रूरहि बूझत घनश्यामा * कहियनहै मधुपुर ये नामा ॥
श्रवणन सुनत रहत हैं जाही * देख्यो आजु दृगनते ताही ॥
कंचन[१] कोटि कंगूरा सोहैं * बैठे मनहु मदन मन मोहैं ॥
वन उपवन[२] पुरके चहुँ पाहीं * अति भावत मेरे मनमाहीं ॥
लखि लखि हरि मथुराकी शोभा * पुनि पुनि पुलकत धरि मन लोभा ॥
तहाँ न्म जियमें करि जाने * ताते अधिक हर्ष उर माने ॥
बाजति नौबति नृपति दुवारा * होत शब्द घरियाल उदारा ॥
सुनि सुनि मन आनन्द बढावै * नगर शोर सुनि रुचि उपजावै ॥
कनकखचित मणिजटित अगारी * भवन नवल अति ऊँचि सँवारी ॥

१ सुवर्ण २ दिवार ३ बगीचा

दो०–ध्वजपताक तोरण कलश, जहँतहँ ललितवितान ॥
मुक्ता झालरि झलमलैं, को करिसकै बखान ॥
सो०–निरखि निरखि हर्षात, मनमोहन अक्रूरको ॥
बलहि देखावत जात, ललित लालकर पलवन ॥

कह अक्रूर सुनहु मननाथा * भई आजु मधुपुरी सनाथा ॥
तुमहिं विलोकि विराजति ऐसी * पति आगमें तिय सोहति जैसी ॥
वसी कोट कटि किंकिणि[2] मानौ * उपवन बसन विविध रँग जानौ ॥
मंदिर चित्र विचित्र सुहाये * जनु भूषण रचि रंग बनाये ॥
जहँ तहँ विविध बाजने बाजें * मनहु चरण नूपुर ध्वनि साजैं ॥
धामन ध्वजा विराजतहैं जिमि * संभ्रम गति अचल चचल तिमि ॥
उच्च अटन पट ऋतु छबि छाजे * जनु उर आनद उमँगि विराजे ॥
भूलीं अति सुख संभ्रम ताते * प्रगटे कनककलश कुच जाते ॥
मोखा द्वार दरीची[3] द्वारा * लागे विद्रुम कुलिश किंवारा ॥
मनहु तुम्हारे दरशन लागी * नयनन रहीं निमेषन त्यागी ॥
मुक्ता झालरि खिरकि विराजैं * हँसति मनों आनन्दन साजैं ॥
जगमगि ज्योतिरही छबि झूली * जनु तुम पथ निहारत भूली ॥

दो०–नीके हरि अवलोकिये, पुरी परम रुचि रूप ॥
असुर कंसको जीतिके, होहु इहाँके भूप ॥
सो०–सुनि बिहँसे नँदलाल, ललित वचन अक्रूरके ॥
पहुँच्यो रथ ततकाल, जाय निकट मथुरा पुरी ॥

नगर निकट पहुँचे जब जाई * सुफलकसुवन सहित दोउ भाई ॥
गौर श्याम रथपर दोउ राजैं * कोटिनकाम निरखि छबि लाजैं ॥

१ भनेवे २ कधरी ३ गुफा ४ मूंगे ५ रास्ता ६ पुत्र

कसदूत लरि जहँ तहँ धाये * समाचार सब नृपति सुनाये ॥
आये बल मोहन दोउ भाई * सुनतहि नाम उठ्यो अकुलाई ॥
गहि कर खड्ग चर्मले धायो * रंगभूमिके महलन आयो ॥
गज मुष्टिक चाणूर बुलाये * और सुभट सब बालि पठाये ॥
तिन सन कह्यो सजग सब होऊ * ठावहि ठावँ रहौ सब कोऊ ॥
बहुतक असुर निकट बैठाये * धनुषपास बहु सुभट पठाये ॥
पठवत दूत दूत परधाई * आये जहँ लगि देखौ जाई ॥
गजें कस सेन सब साजे * द्वारे विविध बाजने बाजे ॥
पीरो भयो हृदय डर मानो * सूखत अँधर बदन कुम्हिलानो॥
नन्दमहरके सुत सुनि आवत * मन मन मारन गर्व बढावत ॥

दो०-पर्यो शोर मथुरा नगर, आवत नन्दकुमार ॥
सुनि धाये नर नारि सब, गृहको काम बिसार ॥

सो०-लाज कानपरहार, कोउ खिरकिन कोउ अटनपर ॥
कोऊ खडी दुवार, कोउ धावत गलियन फिरत ॥

कियो प्रवेश नगरमें आई * असुर निकन्दनै जन सुखदाई॥
इन्दुवैरण श्यामर दोउ बीरा * सुभग श्यामवर गौर शरीरा ॥
शीश मुकुट कुण्डल छबि छाजे * कुण्डल एक राम श्रुति राजे ॥
नीलपीत वर बसन निकाई * मुक्तमाल बनमाल सुहाई ॥
निरखि सकल पुरजन अनुरागे * धाय धाय रथके सँग लागे ॥
युगल रूपलखि होहिं सुखारे * यवटक लोचन टरहिं न टारे ॥
चढी अटारिन देखहिं नारी * बढ्यो प्रेम आनँद उर भारी ॥
निशिदिन सुनि गुणगण अभिलासी * अति आरत दरशनकी प्यासी ॥
शशि आनन मृदुबैष किशोरा * भये निरखि दोउ नयन चकोरा

१ अनेक प्रकार २ होठ ३ नाश करनवाले ४ चन्द्रसमान रंगवाले

पुलकि गात दृग आनँद पानी * कहत सप्रेम परस्पर बानी ॥
येई सखि बलराम कन्हाइ * सुनियत जिनकी बहुत बड़ाई ॥
नन्दगोपके ये दोउ ढोटा * गौर श्याम सुन्दर बर जोटा ॥

दो०–मणि कचनके शिखर दोउ, किधौं मानसर हंस ॥
कैं प्रगटे ब्रजदेन सुख, त्रिभुवनके अवैतस ॥

सो०–धनि धनि गोकुल ग्राम, धन्य श्याम बलराम धनि ॥
धनि धनि ब्रजकी बाम, प्रगट प्रीतिपाली जिन्हन ॥

सुनति हुती पुरुषारथ जिनके * देखहु रूप नयन भरि तिनके ॥
अतिहि अनूप वेष नट सोहैं * कहहु सो को छवि देख न मोहै॥
पूरब जन्म सुकृत कोउ कीनो * सो विधि यह नयननफल दीनो
अति अभिराम श्याम छवि धारी * इनहीं प्रथम पूतना मारी ॥
शकट तृण इनहीं संहारे * बरस बका अघ पुनि इन मारे ॥
इन्द्र कोप वर्षन ब्रज कीनो * इनहीं गिरिकर धरिनख लीनो ॥
जलते काली इनहिं निकान्यो * पुनि अरिष्ट केशी इन मान्यो ॥
गौर शरीर नाम बल सोइ * धेनुक अरु प्रलम्बहा सोई ॥
अब अक्रूर पठै नृपराई * इहाँ बोलि पठये दोउ भाई ॥
रंगभूमि रचि कियो अखारो * कहा करनधौं हृदय विचारो ॥
जननी धीर धऱ्यो धौं कैसे * अति बालक पठयेहैं ऐसे ॥
देहिं असीश माँगि विधिपाहीं * न्हातहुबार खसहु तनुनाहीं ॥

दो०–लेत बलैया वारिकै, आँचर यह कहि नार ॥
करिहे इनसों कपट नृप, सो ह्वैहै जरिछार ॥

१ लड़के २ जोड़ी ३ गहने ४ क्रिया ५ धर्म

सो०–सफल भये मनकाम, देखि दरश इनको सखी ॥
कुशल जाहु निज धाम, देत असीश सुनाय सब ॥

कहत युवति यक सुनहु सयानी * मैं जो सुन्यो सो कहत बखानी॥
ये वसुदेवकुँवर सखि दोऊ * ऐसे लोग कहत सब कोऊ ॥
कंस त्रास करि मात पठाये * नन्दसखा गृह जाय दुराये ॥
करि दुलार[1] यशुमति पय प्याये * हित करि तिनके बाल[2] बढ़ाये ॥
गौर अंग नयनन रतनारे * जो प्रलम्बको मारनहारे ॥
कुंडल एक बाम श्रुति धारी * ते रोहिणीसुवन[3] सुखकारी ॥
अति अभिराम महाबल धामा * ताते नाम धर्यो बलरामा ॥
श्याम सुभगतनु उर बनमाला * शीश मुकुट दृग नयन विशाला॥
जिन्हें हेत करि सँग ब्रजबामा * मान्यो नाह सकल सुखधामा ॥
जिनके चरण छुवत बड़ पापी * पाई सुगति सुदर्शन शापी ॥
अमित प्रभाव कृष्ण सब कहहीं * जिनके नाम अधमगति लहहीं॥
कहत देवकी सुत सब तिनसों * कंस राज भय मानत जिनसों ॥

दो०–आयेहैं अक्रूर सँग, तात मात सुख दैन ॥
रंगभूमि रिपु जीतिकै, करिहैं यदुकुल चैन ॥

सो०–सुनिसुनि मुदित सुनारि, अति प्रिय वाणी तासुकी॥
. मांगत गोद पसारि, विधिसों ऐसो होय सब ॥

देत सबन सुख यों मनभावन * उतरे जाय बाग इक पावन ॥
गोपन सहित नन्द तहँ राख्यो * तब सुफलकसुतसों[5] हरि भाख्यो
कहहु तात आगे तुम जाई * आये श्याम राम दोउ भाई ॥
बहुरि नृपति जब हमैं बुलैहैं * धरि विश्राम हमहुँ तब ऐहैं ॥

१ प्यार २ लाल ३ पुत्र ४ सुन्दर ५ अक्रूर

पुलकि गात दृग आनँद पानी * कहत सप्रेम परस्पर बानी ॥
येई सखि बलराम कन्हाइ * सुनियत जिनकी बहुत बडाइ ॥
नन्दगोपके ये दोउ ढोटा * गौर श्याम सुन्दर बर जोटा ॥

दो०–मणि कचनके शिखर दोउ, किधौं मानसर हंस ॥
के प्रगटे ब्रजदेन सुख, त्रिभुवनके अवतंस ॥

सो०–धनि धनि गोकुल ग्राम, धन्य श्याम बलराम धनि ॥
धनि धनि ब्रजकी वाम, प्रगट प्रीतिपाली जिन्हन ॥

सुनति हुती पुरुषारथ जिनके * देखहु रूप नयन भरि तिनके ॥
अतिहि अनूप वेष नट सोहे * कहहु सो को छवि देख न मोहे ॥
पूरब जन्म सुकृत कोउ कीनो * सो विधि यह नयननफल दीनो ॥
अति अभिराम श्याम छवि धारी * इनही प्रथम पूतना मारी ॥
शकट तृण इनहीं संहारे * बत्स बका अघ पुनि इन मारे ॥
इन्द्र कोप बर्षन ब्रज कीनो * इनहीं गिरिकर धरिनख लीनो ॥
जलते काली इनहिं निकाऱ्यो * पुनि अरिष्ट केशी इन माऱ्यो ॥
गौर शरीर नाम बल सोई * धेनुक अरु प्रलम्बहा सोई ॥
अब अक्रूर पठै नृपराई * इहाँ बोलि पठये दोउ भाई ॥
रंगभूमि रचि कियो अखारो * कहा करनधौं हृदय विचारो ॥
जननी धीर धऱ्यो धौं कैसे * अति बालक पठयेहैं ऐसे ॥
देहिं अशीश माँगि विधिपाहीं * न्हातहुबार खसहु तनुनाहीं ॥

दो०–लेत बलैया वारिकै, आँचर यह कहि नार ॥
करिहै इनसों कपट नृप, सौ ह्वैहै जरिछार ॥

१ लडके २ जोडी ३ गहने ४ स्त्रिया ५ धर्म

तिनको पहिरि नृपति पै जैहैं * देहैं बहुरि तुम्हैं जब ऐहैं ॥
जो पहिरावन नृपसों पैहैं * तामें कछु तुमहूँको देहैं ॥
कै पहिरैहौ लेहौ हमसों * बूझत हैं तैसी हम तुमसों ॥

दो०-हँसो वचन सुनि श्यामके, कह्यो गर्व करि बैन ॥
बलिके बकरा है रहे, आयेहैं पट लैन ॥

सो०-राखैं धरी बनाय, है आवहु नृप द्वारलौं ॥
तब लीजो पठ आय, जो भावै सो दीजियो ॥

बन बन फिरत चरावत गैया * अहिरजाति कामरी उढैया ॥
नटको भेष साजके आये * नृपअम्बर पहिरन मन भाये ॥
जुरिकै चले नृपतिके पासा * पहिरावन लेवेकी आसा ॥
नेक आश जीवनकी जोऊ * खोवन चहत अबहिं पुनि सोऊ॥
यह सुनि श्याम कह्यो मुसकाई * देहु बैसन है तुमहिं भलाई ॥
हम माँगतहैं सहजहि तुमसों * तुमक्त करत इती रिस हमसों॥
सहज बातको रिस नहि कीजै * माँगे देहु मानि गुण लीजै ॥
भौंह ऐंठ तब रजक रिसानो * ये नृपबसन नहीं तुम जानो ॥
अबहीं सुनत क्षणकमें मारैं * नन्ददि पकरि बंदिमें डारैं ॥
जाहु चले द्वारतें अबनीके * कैहहो अबहीं बिन जीके ॥
करत अचगरी मोसों आइ * दुहुन मारिहौं कंस दुहाई ॥
यह सुनि कियो श्यामसों रयाला * भुजापकरि पटक्यो ततकाला ॥

दो०-तुरत गयो तनु तजि स्वरग, कीन्हो रजक निहाल ॥
जन्म मरणते रहगयो, ऐसो गुण गोपाल ॥

१ कापडे २ छड छाड ३ धोबी

तब अक्रूर जोरि युग पाणी * बोल्यो सुनत श्यामकी वाणी ॥
मोहिं न्यारो क्यों करत गोसाई * राखे निकट दासकी नाई ॥
कंसदूत मोको जनि मानो * निजसेवक अपनो करि जानो ॥
अरु मेरे मनमें यह आसा * चलि पावन कीजै मो वासा ॥
तब हँसिकै बोले घनश्यामा * ऐहौं एक दिना तुम धामा ॥
ऐसे कहि अक्रूर पठाये * विदा होय नृप पास सिधाये ॥
रथते उतरि परे दोउ भाइ * ग्वालवाल सब लिये बुलाई ॥
सखा भ्रात सँग सहज हुलासा * गये यमुनतट नगर निवासा ॥

दो०–बाल वयस शोभित सुभग, बाल सखनके संग ॥
गौर श्याम शोभा निरखि, लज्जित कोटि अनंग ॥

सो०–अति विचित्रको जान, ब्रजवासी प्रभुके चरित ॥
अमित गुणनकी खान, जनरंजन दुष्टनदलन ॥

अथ रजकवधलीला ।

नृपति रँजक अँम्बर नृप धोवै * आवत देखि श्याम तनु जोवै ॥
हसत गर्व बातैं यों चालै * कंसराजके उर ये शालै ॥
लघु लघु वैंयस गोपके जाये * बहुत अचगरी करि ये आये ॥
तृणावर्त प्रभु रह्यो हमारो * इनहीं ताहि शिलापर मारो ॥
अति खोटो जिहि नाम कन्हाई * प्रथम ताहि डारै मरवाई ॥
है बलभद्र तैसई खोटो * गोरो अंग महाबल मोटो ॥
ताहूको मारैगो राजा * बोले हैं याहके काजा ॥
ऐसे कहत परस्पर बानी * प्रभु अंतर्यामी सब जानी ॥
बालन सहित गये तेहि पाहैं * कह्यो कछू अंबर हम चाहैं ॥

१ कामदेव २ राजाका धोबी ३ कपडे ४ उमर

तिनको पहिरि नृपति पै जैहैं * देहैं बहुरि तुम्हैं जब ऐहैं ॥
जो पहिरावन नृपसों पैहै * तामें कछु तुमहूँको दैहैं ॥
कै पहिलेही लेहो हमसों * पूछत है तैसी हम तुमसों ॥

दो०–ऍसो वचन सुनि श्यामके, कह्यो गर्व करि बैन ॥
चलिके चकरा ह्वै रहे, आयेहैं पट लैन ॥

सो०–राखें घरी बनाय, ह्वै आवहु नृप द्वारलौं ॥
तब लीजो पठ आय, जो भावै सो दीजियो ॥

वन वन फिरत चरावत गैया * अहिरजाति कामरी उढ़ैया ॥
नटको भेष साजके आये * नृपअम्बर पहिरन मन भाये ॥
जुरिकै चले नृपतिके पासा * पहिरावन लेवेकी आसा ॥
नेक आश जीवनकी जोऊ * खोवन चहत अबहि पुनि सोऊ॥
यह सुनि श्याम कह्यो मुसकाई * देहु बैसन है तुमहिं भलाई ॥
हम माँगतहैं सहजहि तुमसों * तुमकत करत इती रिस हमसों॥
सहज बातको रिस नहि कीजै * माँगे देहु मानि गुण लीजै ॥
भौंह ऐंठ तब रजक रिसानो * ये नृपवसन नहीं तुम जानो ॥
अबहीं सुनत क्षणकमें मारै * नन्दहि पकरि वन्दिमें डारै ॥
जाहु चले छोर्ते अवनीके * कैहुदो अबहीं बिन जीके ॥
करत अचगरी मोसों आई * दुहुंन मारिहीं कंस दुहाई ॥
यह सुनि कियो श्यामसों ख्याला * भुजापकरि पटक्यो ततकाला ॥

दो०–तुरत गयो तनु तजि स्वरग, कीन्हो रजक निहाल ॥
जन्म मरणते रहगयो, ऐसो गुण गोपाल ॥

१ कपडे. २ छेड छाड. ३ चोरी

सो०–लखिके गये पैराय, सगी ताके सब रजक ॥
लीन्हे वसन लुटाय, श्याम प्रथमहीं नृपतिके ॥

रजक मारि सब वसन लुटाये * आप पहिरि ग्वालन पहिराये ॥
विविध रङ्ग बहुभाँति नवीने * निज निज रुचि ग्वालन सब लीने
चले तहाँते सब हरषाई * मिल्यो एक दरजी पुनि आई ॥
प्रभुको देखि बहुत सुख पायो * चरणकमलको माथ नवायो ॥
घाट बाट जो वसन सुहाये * ते उनकरि सम तुरत बनाये ॥
ताको कृतहि मान प्रभु लीन्हो * अभय दानदै निजपद दीन्हो ॥
पुनि यक माली हुतो सुदामा * ताके द्वार गये घनश्यामा ॥
तुरत आइ तिन पद शिर नायो * हरि हलधर लखि हर्ष बढ़ायो॥
आदरसहित सदनमें आने * चरण धोय निज भाग्य बखाने॥
नृपतिहेतु जो हार बनाये * ते सप्रेम प्रभुको पहिराये ॥
हाथ जोरि बहु विनय सुनाई * जय जय श्रीपति प्रभु यदुराई ॥
मोको बहुत अनुग्रह कीन्हो * दीन जानि आपनो करि लीन्हो॥

दो०–सुनि सप्रेम ताके वचन, रीझे श्याम सुजान ॥
माली पूरण काम करि, दियो भक्ति वरदान ॥

सो०–सखन सहित दोउ भाय, बहुरि हर्षि आगे चले ॥
तहां पथमें आय, कुबिजा लै चन्दन मिली ॥

निरखि श्याम छवितनु सुधि भूली * बोली हर्षि प्रेम रस फूली ॥
हो प्रभु दीनबन्धु सुखदाई * तुम्हैं नाथ चन्दन मैं ल्याई ॥
मोहिं कल्पना यह जगवन्दन * चरचों अंग तुम्हारे चन्दन ॥
दासीकुल कुबिजा मम नाऊँ * नृपके उर चन्दन नित लाऊँ ॥

१ मान २ कृपा ३ रास्तेमें

तुमहिं जानिकै प्रभु तिहिं ठाहीं * अरि अरु मित्र बसत उरमाहीं ॥
आजहि दरश प्रकट प्रभु पायो * मोजियकी सनाप नशायो ॥
अव यह मत्य कृपा करि लीजै * पूरण काम नाथ मम कीजै ॥
अन्तर्यामी प्रभु सुखदानी * भाव भक्ति कुविना पहिंचानी ॥
भावहिके वश त्रिभुवन राई * हित करि कुविना निकट बुलाई ॥
वन्दन करि पुनि दोउ भाई * रहा श्याम छवि निरखि भुलाई ॥
तब हरि हलधरसों हँसि भाख्यो * हेत बहुत इन हममों राख्यो ॥
हमहूँ कछु यावो हित कीजै * सुखे अह नेक करि दीजै ॥

दो०–पगराख्यो पग पीठपर, धरेउ शीशकर श्याम ॥
नेक उठाई चिबुक गहि, भई सुन्दरी बाम ॥

सो०–को करिसके बखान, जाहि बनाई आपु हरि ॥
भई रूप गुणखान, कुबिजामन आनन्द अति ॥

महाकुरूप कूबरी तैसी * परसतै तुरत भइ रति जैसी ॥
तब कुबिजा अपने मन मान्यो * मिले मोहिं मोहन पति जान्यो ॥
पुनि पुनि चरण कमल शिर नाई * हाथ जोरि बहु विनय सुनाई ॥
जिमि कीनी म्वहिं कृपा कृपाला * तिमि मम सदन चलहु नदलाला ॥
अपने चरणकमल तहँ धरिये * सफल मनोरथ मेरो करिये ॥
तासों विहसि कह्यो घनश्यामा * कस देखि अइहा तव धामा ॥
अपनी करि तिय सदन पठाई * चले धनुष देखन दोउ भाई ॥
ग्वाल सखा सँग सुभग सुहाये * कामसेन वर रूप बनाये ॥
पुरजन भीर चहूँदिशि भारी * चढ़ीं अटारिन देखहिं नारी ॥
निरखि श्याम मुखइन्दु उदारा * जनु पुर उदधि तरङ्ग अपारा ॥
जहँ तहँ कहत सकल पुरवासी * भइ सुन्दरी कुबिजा दासी ॥

१ वरी २ ठोढ़ी ३ कूबड़ो ४ घर ५ समुद्र

श्याम कछू चेटक्सो कीन्हो * अंग सुधारि रूप वर दीन्हो ॥

दो०–रजक मारि लूटे बसन, करी कूबरी चारु ॥
बालभाव मोहत मनहिं, है कोउ देव उदारु ॥

सो०–सुनत रहे दिन रैन, पुरषारथ इनको भवन ॥
तैसे देखे नैन, ब्रजवासी प्रभु नन्दसुत ॥

गये धनुषशाला दोउ बीरा * देखत चकित भये भटभीरा ॥
अस्त्र सँभारि उठे अकुलाई * देखि थके सुन्दर दोउ भाई ॥
धनुष समीप असुर सब ठाढ * अति बलवत धीर नर गाढ ॥
सहजहि घेरि लिये दोउ भैया * बोलि उठे सब सुनहु कन्हैया ॥
सुनियत अतिबल भुजा तुम्हारी * यह कोदण्डै चढावहु भारी ॥
तिनसों निहँसि कह्यो सुखरासी * कहा करत हमसों यह हासी ॥
कहाँ बाल हम बैस किशोरा * कहाँ धनुष अति गरुअ कठोरा ॥
शूरवीर ठाढे सब लहिये * तिनसों धनुष चढावन कहिये ॥
खेलन कहौ खेल कछु हमको * सो हम खेल दिखावैं तुमको ॥
ऐसे श्याम हँसत तिनमाहीं * अरु अक्रूर गये नृप पाहीं ॥
समाचार सब जाय सुनाये * नन्द सहित बल मोहन आये ॥
यह कहि घर अक्रूर सिधारे * रजक जाय तिहि काल पुकारे ॥

दो०–मारे बिन दूँषण हमैं, नन्दगोपके बाल ॥
लीन्हे बसन लुटायकै, पहिराये सब ग्वाल ॥

सो०–सुनतहि उठ्यो रिसाय, बोल्यो सबन बुलाय नृप ॥
करी प्रथमहीं आय, देखो इन ढीठे बड़े ॥

अब मारिहौं अवेशि दोउ भाई * लेहुँ आज सब ब्रजहि लुटाई ॥

१ सुन्दर २ धनुष ३ देव ४ जरूर

देहु वन्दिमें नन्दहि ल्याइ * गये अहीर बहुत इतराई ॥
मैं सादर करि इनहिं बुलायो * आगे दै इन रजक मरायो ॥
देवहु कोउ जान नहि पावै * असुर जाय सबको गहिल्यावै ॥
ऐसे कस कहत रिस पाई * तवहीं दूतन खबरि जनाई ॥
कुबिजासों चन्दन हरि लीन्हो * ताको रूप अनूपम दीन्हो ॥
धनुष निकट पहुँचे दोउ भाई * यह सुनतहि कछु गयो सुखाई ॥
बहुरि धीर धरि असुर पठाये * ते यह कहत श्याम पहँ आये ॥
पहिले तोरि धनुष गोपाला * बहुरि बुलायो निकट भुवालै ॥
सुनि असुरनके वचन कन्हाई * बोले मनहीं मन मुसकाई ॥
याहीको नृप हमहिं बुलायो * जोरेउ बैर जानि यह पायो ॥
गैहन लगे ते बालक जानी * तवहिं श्याम कछु रिस उर आनी

छं०–उर आनीरिस गहि पाँणि तुरतहि, असुर ले मारे सबै
अतिहि बेगि उठाये धनुषहि, तोरि महि डारेउ तबै ॥
उठे तब करि क्रोध योधा, मार मार पुकारहीं ॥
नन्दसुत रणधीरहो धर धीर, असुर सँहारहीं ॥
एक झटकत एक पटकत, तेन भटकत फिरतहीं ॥
एक अटकत एक लटकत, एक सटकत जहिं तहीं ॥
ताल चटकत चमकि छटकत, देखि भटकत नट भले ॥
एक पकरि फिराय इटकत, जासते नृप पहँ चले ॥

दो०–ख्यालहि मारे असुर सब, तोरि धनुष नँदलाल ॥
चले सामुह पँवारतकि, जहँ कुवलिया बँयाल ॥

१ राक्षस २ उपमारहित ३ राजा ४ पकड़न लगे। ५ हाथ ६ पोली ज्योंप

सो०-देखत चढे विमान, ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनि ॥
झारत सुमन सुजान, ब्रजवासी प्रभुपद हरषि ॥

रंगभूमि हरि हलधर आये * संग सखा सब ग्वाल सुहाये ॥
आप आपनी छबि सब छाये * रवि शशि उडुगण उदित सुहाये
देख्यो द्विरद द्वार पर ठाढो * मनहुँ गर्वको गिरिधर गाढो ॥
गथकेशरी गर्व प्रहारी * बल तन हँसे गैयन्द निहारी ॥
ताछिनकी छवि कही न जाई * कसत पीत पट कटि लपटाई ॥
श्याम सुभग लट घूघुर वारी * पाग पेच मिलि पाग सँवारी ॥
मधुपुरकी युवती सब बाढी * कहत परस्पर महलन ठाढी ॥
लखहु सखी अँग अंग लुनाई * रूपराशि मन हरण कन्हाई ॥
कोटि मदन छवि विधि लुनलीनी * तब यह मूरति साँवरि कीनी ॥
अतिहि कुशल ये लखि सुखदाता * हम अभागिके क्रूर विधाता ॥
धनि ब्रजतिय इनके सँग लागीं * निशिदिन रहत प्रेम रस पागीं॥
बनवीथिन कुंजन बिच डोलैं * राम हास रस करत कलोलैं ॥

सो०-होय हमारे सुकृत कछु, सुनहु सखी तौ आज ॥
जैसे तोरेउ धनुष हरि, त्यों जीतैं गजराज ॥

सो०-सुरन मनावत जात, अति कोमल नँदलाल लखि ॥
बचहु कुशल दोउ भ्रात, मात पिताके पुण्यते ॥

देखि मतंग द्वार मतवारो * गजपालहि बलराम हँकारो ॥
सुनहु महावत बात हमारी * लेहु द्वारते वारण टारी ॥
जान देहु हमको नृप पासा * नातर ह्वैहै गजको नासा ॥

१ तारोंके समूह २ हाथी ३ हाथी ४ मथुराकी ५ सुंदरता ६ कामदेव ७ हाथी

कहे देत नहिं दोष हमारो * मति जानै तू हरिको वारो ॥
त्रिभुवनपति दुष्ट सहारी * धरणीभार उतारनकारी ॥
सुनत बोल गजपाल रिसानो * रे गोपाल तुम्हैं मैं जानो ॥
त्रिभुवनपति अब गाय चराये * गांडे रान गजनसों आये ॥
बादतें बड़े शूरको भाई * जैहैं प्राण अबहिं क्षण माई ॥
तोरेउ धनुष भयो अति गारो * नहिं जानत यह गज अति भारो ॥
दश सहस्र गजको बल याही * डरपत हैं ऐरावति ताही ॥
जबलगि यासो लरि नहिं लैहौ * तबलगि कैसे भीतर जैहौ ॥
ऐसे कहि अंकुश कर लीन्हो * गज गजपाल सामुहे कीन्हो ॥

दो०-तबहिं कोपि हलधर कह्यो, सुनुरे मूढ कुजात ॥
गजसमेत पटकौं अबहिं, मुँह सँभारि कहु बात ॥

सो०-नेक न लगि है वार, वीरण मरिजैहै अबहिं ॥
तासों कहत पुकार, मान अजहुँ मेरो कह्यो ॥

यह सुनि गज गजपाल चलायो * झटकि सूँड बहुरो गज धायो ॥
लीन्हो लपटि सूँडक माहीं * देखत शूरवीर चहुपाहीं ॥
तब बलराम कोप करि भारी * वज्र समान थाप यक मारी ॥
तनु समेटि कैंर करि सकुचान्यो * दह कृक मदरा सुखान्यो ॥
तबहीं उचरि भये बल न्यारे * असुर सेन देखत हिय हारे ॥
हँसत निकट ठाढे दोउ भाई * देखि महावत रहेउ रुनाई ॥
थकित रहेउ हाथी जब जान्यो * तब मनमें गजपाल डरान्यो ॥
जो ये बालक बधे न जाहीं * मारैं कंस मोहि पलमाहीं ॥
अंकुश मसक शीश परदीन्हो * बहुरि गयन्दहि तातहि कीन्हो ॥
भयो क्रोध हाथी मनमाहीं * गण्डसल मद अर्बु चुचाहीं ॥

१ बोले २ बमन ३ हाथी ४ हाथ ५ पानी

पवन वेगते आतुर धायो * गरजि घुमरि दोउन पर आयो॥
महा कोप करि गहे कन्हाई * परेउ दशन दै धरणि धमाई ॥
दो०-डरपि उठे तेहि काल सब, सुर मुनि पुर नर नारि ॥
दुहुँ दशन बिच ह्वै खडे, बलनिधि प्रभु दैत्यारि ॥
सो०-उठे गजहिके साथ, बहुरि रयालई हाँकदै ॥
तुरतहि भये सनाथ, देखि चरित सब श्यामके ॥
हाँक सुनत अति कोप बढायो * झटकि सूँड बहुरो गज धायो ॥
रहे उदरतर दबकि मुरारी * गये जान गज रहेउ निहारी ॥
पाछे प्रगट बहुरि हरि टेरेउ * बलदाऊ आगे ते घेरेउ ॥
लागे गजहि खेलावन दाऊ * चकित भये देखत सब कोऊ ॥
चहुँधा फिरत चक्री नाई * सूंड पूछ क्षण क्षण छै जाई ॥
नेक नहीं अवसर गज पावै * चारों दिशिं हरि फिरत नचावै
घात करत मनहीं मनमाहीं * गजरिसबिकल इन्हैं रिसनाहीं॥
कबहूं पूँछ पकरिके झेलैं * ज्यों बालक बछरन सँग खेलैं ॥
कबहु इत उत ते दोउ बीरा * भजत मारिके मुष्टि गँभीरा ॥
कबहू उदरतर है कढि जाहीं * नेक छुवन पावत गज नाहीं ॥
नीलपीत पट कटि फहराहीं * चपल नयन दीरघ बरबाहीं ॥
खेलत गज चचल सँगराजै * निर्तत मदन मनहुगति साजै ॥
छं०-जनु मदन निर्तत साजिगति, इमिश्याम अरु गजखेलहीं
पूछ कर गहि कबहुँ आगे, कबहुँ पाछे पेलहीं ॥
गजहि लखि पुर नारि नर सब, विकल विधिहि मनावहीं
वेगि मारि श्याम गजको, हम निरखि सुख पावहीं ॥

---

१ पेटके भीतर २ दिशाओंमें ३ स्त्री

दीन्हो महावत बहुरि अंकुश, क्रोधकरि हाथी चल्यो ॥
जबहिं हरि गहि पूँछ पटक्यो, नेक नहिं भूँपर हल्यो ॥
लये खैंच मृणाल ज्यों रैंद, सुमन झर देवनकरी ॥
दास ब्रजबासी हरषि सब, असुरकी सेना डरी ॥
दो०-हँसत हँसत मारेउ प्रबल, द्विरद कुवलिया श्याम ॥
सखन सहित ठाढ़े मुदित, छबि निरखत ब्रजबाम ॥
सो०-मारेउ गज बल भ्रात, जहँ तहँ सब कोऊ कहत ॥
चिरजीवहु दोउ भ्रात, प्रभु ब्रजबासी दासके ॥

अथ मल्लयुद्धलीला ॥

चले जहाँ सब मल्ल गोपाला * द्विरद दंत धरि कंध विशाला ॥
गौर श्याम सुंदर दोउ भाई * श्रमसीकर मुखकमल सुहाई ॥
छबि अपार बलनिधि गंभीरा * संग गोप बालकर्न्ह नीरा ॥
सुनत कंस जिय अति भय मान्यो * नवरँग ज्यों पिंजर अकुलान्यो ॥
भाजनको मन मांझ विचारा * भाजि न सक्यो लाजको मारा ॥
गये रंगमहि मोहन जबहीं * ज्यहिवस भाव दरशतेहि तबहीं
उठे शंक सब मल्ल अधीरा * बल समूह देखे दोउ बीरा ॥
दुष्टी दैत्य हते तहँ जेते * रूप भयानक दरशे तेते ॥
कंस समीप भूप जे आये * तिन्हें राजवंशी दरशाये ॥
साधु सिद्ध देखहि शुभ धामा * इष्ट देव पूरण सब कामा ॥
देखे सुरगण गेगन सुखकारी * सब देवनके देव मुरारी ॥
ग्वालबाल सब देखत ऐसे * सदा संग खेलत मन जैसे ॥

१ पृथ्वी २ दांत ३ पुष्प ४ पक्षी ५ आकाश ६ श्रीकृष्ण

दो०–महलनते देखैं प्रभुहि, सकल सुंदरी बाम ॥
कोटि काम शोभाहरण, नव किशोर सुखधाम ॥

सो०–देखत अति विपरीति, कस नृपति नन्दलालको ॥
कपि उठ्यो भय भीति, प्रकटकाल दरशन भयो ॥

सब भाव पूरण भगवाना * अबलहिं अबल बलहिं बलवाना
ललितहि ललित साधुको साधू * छलन छली सब गुणन अगाधू॥
जो जन जैसो ध्यान लगावै * ताको तिहि विधि दरश दिखावै॥
कहत देखि सब सुन्दर जोटा * येई नंद महरके ढोटा ॥
रजक मारि नृप बसन लुटाये * कीन्हे कुबिजा अंग सुहाये ॥
इनहीं असुरसमूह सँहारेहु * धनुष तोरि हाथी इन मारेउ ॥
धरे दंत गजदंत विराजैं * बालक गोप सखा सँग राजैं ॥
देखत असुर बीर चहुँपासा * जिनके वशमें भूमि अकाशा ॥
लीन्हे घेरि त्रस भय मानी * तब चाणूर कहत हँसि बानी ॥
आवहु श्याम इतहि पग धारो * सुनत हुते बहु नाम तुम्हारो ॥
सब कोउ तुम्हरे बलहि बखानै * हारि जीत काकी को जानै ॥
कहा भयो जो गज तुम मारो * लरहु आज हम संग अखारो ॥

दो०–कहा नाम हमरो सुन्यो, हँसि बोले घनश्याम ॥
हम बालक भोरे अबहिं, हमें खेलसो काम ॥

सो०–कहिये बात विचार, हमें तुम्हें लरिबो कहा ॥
अपगति यह व्यवहार, आप देखि देखहु हमें ॥

जाहु देहु हमको नृप पाहीं * काहेको रोकत मगमाहीं ॥
नृप हमरो करि हेत बुलायो * तुम यह हमको कहा सुनायो ॥

१ स्त्रियां २ बेहद ३ रास्ता

तब चाणूर कह्यो पुनि ऐसे * तुमको बालक कहिये कैसे ॥
किये चर्त्रि ब्रजमें तुम जैसे * देखे सुने नहीं कहुँ वैसे ॥
गिरि गोवर्धन करपै धारेउ * जलते कालीनाग निकारेउ ॥
औरो असुर बीर बल मारे * सुनियत खेलतही तुम मारे ॥
सो बल आज देखि हम लेहैं * आगे जाय तुम्हें तब देहैं ॥
ज्यों ज्यों कंस लखत दोउ भाई * त्यों त्यों भय व्याकुल अकुलाई ॥
कहि कहि बारहि बार पठावै * मल्लनको बहु त्रास सुनावै ॥
क्यों रे सकुच करत मनमाहीं * मारत शत्रु वेग क्यों नाहीं ॥
जो दोउ बालक आज न मारो * करों सकुल तो नाश तुम्हारो ॥
नृपसँदेश सुनि मल्ल डराने * कहत परस्पर मन सकुचाने ॥

दो०—लोन नृपतिको मानकै, नन्दसुवनसों आज ॥
लर मरिये कै मारिये, करैं कंसको काज ॥

सो०—लेहु सुयश नृपपास, अब विलंब नहिं कीजिये ॥
कछू क्रोध कछु त्रास, बोलि उठे तब मल्ल सब ॥

हमसों श्याम लरत क्यों नाहीं * धारि न कछु हमते बलमाहीं ॥
पशुपालक तुम कुँवर कन्हाई * जीते बहुतक पशुनसिलाई ॥
अबलगि नही मल्ल कोउ भेट्यो * अबतौ हम सँग पर्‍यो चपेट्यो ॥
मल्लयुद्ध तुमसों हम लरिहैं * अब नैरपतिको कारज करिहैं ॥
ऐसे कहि कहि प्रभुहि सुनावैं * भुजा ऐंठि रज अंग चढावैं ॥
ठोंकैं ताल गाँज ज्यों गरजैं * गहैंगाँमें हरि तनतकि तरजैं ॥
आपुसमें सब करत निचारा * टारहु मारि उभय सुकुमारा ॥
सुनि सुनि हरि हलधर मुसकाहीं * बोले बहुरि विहँसि तिन्हपाहीं ॥

---

१ डर. २ पुरुषे. ३ राजाको. ४ बिजली. ५ फांस.

सुनिये सकल मल्ल समुदाई * यहै तुम्हारे मन अब आई ॥
नृपपै हमैं जाय नहिं देहो * बड़ो सुयश हमसों करिलेहौ ॥
निपट खोन अब परे हमारे * यह न बसी उर भली तुम्हारे ॥
हम न कहैं तौ तुम चित जैसी * कहत कहा कीजै अब तैसी ॥
दो०–जबहिं श्याम ऐसे कह्यो, बिलखि उठीं सब नार ॥
देखौरी मारन चहत, मल्ल उभय सुकुमार ॥
सो०–अति कोमल अति चार, बाचैं कैसे हूँ दई ॥
कहत नयन जलढार, क्यों जननी पठये इहाँ ॥
अतिहि निठुर उर जाति अहीरा * लागे लागि पठये दोउ बीरा ॥
येती बालक अतिहि अजाना * कियो कहा उन यह अज्ञाना ॥
दोन चहत अबधौं यह कैसी * कहत बनै यहँ बात अनैसी ॥
कहत सबै हमरो यह भावै * करि सहाय विधि इनहिं बचावै ॥
तोर्यो धनुष हन्यो गज जैसे * जीतहि श्याम इनहुँको तैसे ॥
जोरि जोरि कर विधिके आगे * अचर छोरि छोरि सब मागे ॥
तब चाणूर कृष्णपै आयो * सहज श्याम करिपद रपटायो ॥
भुज भुज जोरि भये गिरि ठाढे * तकि तकि दाँव चलावत गाढे ॥
ऐसेहि मुष्टिक बलरामा * भिड़े बढाय बाद बलधामा ॥
दोऊ बीर लरत अति सोहैं * देखत सुर नरके मन मोहैं ॥
दीरघ नयन कमलते आछे * ललितलाल कछनी कटिकाछे ॥
तनु चन्दन चित्रित छबि जाला * वृषभकन्ध उरबाहु बिशाला ॥
दो०–शिरसों शिर भुजसों भुजा, दृष्टि दृष्टिसों जोरि ॥
चरण चरण गहि झपटिकै, लपटझपट झकझोरि ॥

१ हारो २ शरीर ३ बैस

सो०–गहन न पावत थाह, छूटि जात लपटात पुनि ॥
सिर त्रिधि पै न गहात, तिन्हैं मल्ल चाहत गहन ॥

श्याम सहन मल्लनमों खेलै * पकरि पकरि भुज दण्डन पेलै ॥
भये प्रथम कोमल तनु ताहीं * शिथिल रूप पणिवत मनमाहीं ॥
तब चाणूर मनहिं गरबान्यो * हरिके बलहि तुच्छ करि मान्यो॥
कोटि कुलिशसम तनुतिहि काला * तुरतहि होय गये नँदलाला ॥
करिके कोप मुष्टि यक मारी * फूलसमान श्याम उर धारी ॥
पुहुपपुते कोमल तिहि मान्यो * तिन मान्यो अपने निय जान्यो॥
भयो वेगि अति हर्षि नियारो * कहन लग्यो मुरि अहिर पछारो॥
देख्यो हँसत गोपालहि ठाढो * पन्यो शोच प्राणन अति गाढो ॥
नन्दसुवन महिमा तब जानी * निश्चय मीचु आपनी मानी ॥
तब मोहन करि कोप हँकान्यो * मनु गजको मृगराज पुकान्यो ॥
सुनत हाँक सब दाँव भुलानो * थरथराइ चाणूर डरानो ॥
धन्यो धाय तब झपट कन्हाइ * पटक्यो महि गहि चरण फिराई ॥

छं०–पटक्यो चरण गहि फेरि महि, चाणूर अति बल साँवरे॥
धसि गयो धरणी मसकि अंग, सब विकटभूरयोदाँवरे ॥
भयो शब्दाघात सुनि नृप, कस डर धसको पन्यो ॥
निरखि पुर नर नारि नभ सुर, हर्षि हिय आनँद भन्यो ॥
पकरि ऐसिय भाँति तब, बलराम मुष्टिक मारियो ॥
कहैं धनि धनि लोग सब, जय जयति सुरन उचारियो ॥
शाल अरु अति मल आदिक, मल तहँ जितने हते ॥
लपटि झपटि पछारिकै, पुनि नन्दसुत मारे तिते ॥

१ बहुत बोझ २ वज्रकसमान ३ फूल ४ मौत ५ सिंह ६ पृथ्वी

दो०—जब मारे हरि मल्ल सब, पर्यो कटकमें शोर ॥
जिमि तारागण रवि उदय, छपैं असुर चहुँओर ॥
सो०—सखन सहित दोउ वीर, रंगभूमि राजत खरे ॥
हरण भक्त भय पीर, ब्रजवासी प्रभु नन्दके ॥

अथ कंसासुरवधलीला ॥

जबही श्याम मल्ल सब मारे * चपे असुर सब लखि हिय हारे ॥
देखि कंस अति भयो दुखारी * सेनापतिन कहत दै गारी ॥
चापत लिये खड्ग बहु क्रोधा * चहत गये तितरे सब योधा ॥
लै हथियार ढाल सब कोऊ * डारहु मारि नन्दसुत दोऊ ॥
डारे मारि मल्ल सब मेरे * तनक छोहरा अहिरनकेरे ॥
डर नहिं करत चले इत आवै * देखहु जीवत जान न पावैं ॥
असुर वीर अपनी सेर जेते * लखे नाम पठाये तेते ॥
कहा द्वारपालन भय बाढो * करहु कपाट पँवरिको गाढो ॥
नृप भय मानि असुर सब धाये * अस्त्र शस्त्र ले हरिपर आये ॥
भये विकल लखि पुर नर नारी * मनमन देत कंसको गारी ॥
कहतहिं भई कठिन यह बाता * बचहिं श्यामसों करे विधाता ॥
आवत लखी असुरकी भीरा * भिरे हाँक देदे दोउ बीरा ॥
छं०—अवलोकि असुरसमूह आवत, हांक दै दोऊ भिरे ॥
मनहुँ गजगण निरखि, केहरि धाय तिन ऊपर परे ॥
सुनत शब्द गँभीर हरिको, हहरि सेनापति गये ॥
लपकि गहि महि पटकि जहँ तहँ, शोध कर यत्नू इये ॥

१ समान २ पछाड़ा ३ सिंह

कंसासुरवधलीला
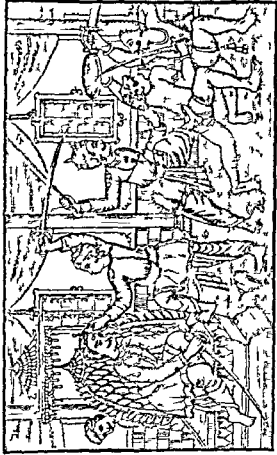
श्याम गौर किशोर सुन्दर, असुरगणविच यों लँसैं ॥
जनु शांत अरु शृंगार धरि तन, वीरकी करनी कँरैं ॥
आत नहिं बरणी चटक गहि, पटक इत उत धावहीं ॥
भूमिभार अपार अघनिधि, असुरनिकैर नशावहीं ॥

दो०–पर्यो नगर खल भल सकल, अति भय व्याकुल कंस ॥
पुनि पुनि मंत्रिनसों कहत, वढ्यो अधिक उर संस ॥

सो०–कीजै कछु उपाय, जियत जाहिं नहिं बंधु दोउ ॥
मारहु नन्द बुलाय, ब्रज कोउ रहन न पावहीं ॥

पुनि वसुदेव देवकी दोऊ * मारहु कठिन बन्धुनै सोऊ ॥
वहुरों उग्रसेनको मारों * पिता दोप कछु उरनहिं धारों ॥
ऐसे पुनि पुनि वचन उचारे * कंपित रिसन खड्ग कर धारे ॥
क्षण बैठत क्षण उठत अधीरा * मारे असुर सकल दोउ वीरा ॥
अति बलवन्त नन्दके बाँरे * तब सकोप नृप ओर निहारे ॥
गये मचान मचकि चढि दोऊ * बाज झपट देखत सब कोऊ ॥
है गयो चकित नृपति भय मान्यो * आयो काल निकट यह जान्यो ॥
रहि गयो लिये खड्ग करमाहीं * हरिको मारि सक्यो सो नाहीं ॥
तबहीं श्याम लात यक मारी * गिरि गयो मुकुट शीशते भारी ॥
दीन ढकेलि मचते भूपर * कूद परे हरि ताके ऊपर ॥
तहाँ चतुर्भुज रूप दिखायो * सो स्वरूप दै स्वर्ग पठायो ॥
मान्यो कंस कहत सब बानी * जयध्वनि सुरगण गगन बखानी ॥

छं०–जयध्वनि गगँन सुरगण बखानी, सुँमनकी वर्षा भई॥
कहत सब हरि कंस मान्यो, हाँक यह त्रिभुवन गई ॥

१ पाप. २ समूह. ३ लड़के ४ आकाश. ५ फूलोंकी

ब्रह्मादि सुर मुनि सिद्ध गंधर्व, मुदित मन अस्तुति भनी
भूरि सुर उपकार हित, अवतार धनि त्रिभुवनधनी ॥
धन्य गज धनि मल्ल मारे, धन्य कंसासुर अँनी ॥
परसि तनु अनुपम लही गति, जान नहिं महिमा गनी
धन्य अलख ब्रह्मांडनायक, भक्तहित नरतनु धन्यो ॥
धन्यब्रजवासी सकल जिन, प्रेम करि तुम वश कन्यो॥

दो०–करि अस्तुति पुनि पुनि हरषि, सुमन वर्षि सुरवृंद ॥
मुदित बजावत दुन्दुभी, कहि जय जय नँदनंद ॥

सो०–मथुरापुर नर नारि, अति प्रफुल्लित सबको हियो ॥
मनहु कुमुद बन चारि, विकसत हरि शशि मुख निरखि

मान्यो कंस जबहिं भगवाना * भ्राता अष्ट तासु बलवाना ॥
करि करि कोप युद्धको धाये * ते पुनि सब बलदेव नशाये ॥
बहुरि केशगहि कंस मुरारी * दियो घसीट यमुन जलढारी ॥
कीह्नो कछुक तहाँ विश्रामा * भयो विश्राम घाट तिहि नामा ॥
सुनिकै मरन कंसकी नारी * और सकल भ्राताकी प्यारी ॥
रोदन करि करि विविध विलापा* सुमिरि भूपगुण रूप प्रतापा ॥
निजहित समुझि भयो दुख भारी* चहत मरण पति नेह विचारी ॥
गये तहाँ बहुरो दोउ भ्राता * करुणार्णव कोमल सुखदाता ॥
करि प्रबोध बोलीं सब रानी * रहीं मरण ते सुनि प्रभुबानी ॥
बहुत भाँति तिनको समुझाई * आये महल द्वार दोउ भाई ॥
कालनेमिके वंश सुहायो * उग्रसेन सुनकै उठि धायो ॥
तिन प्रभु चरण आय शिर नायो* जोहि प्राटि कहि वचन सुनायो॥

१ मस्त. २ सेना. ३ श्रीकृष्ण. ४ दयावान्. ५ रक्षा करो.

छं०—त्राहि त्राहि सुनाय आरत, वचन प्रभु चरणन गिन्यो
अब करहु करुणानिधि क्षमा, अपराध यह हमते पन्यो॥
असुर मारे कंस भाइन, सहित सो उचितै करी ॥
परद्रोह रति खेलदलन हित, अवतार यह तुम्हरो हरी॥
करिकै कृपा अब प्रजापालन, हेत प्रभु चित दीजिये ॥
वर बैठि सिंहासन सुभग, यह राज्य मधुपुरि कीजिये॥
सुनि दीन वचनन हर्षि, तब उग्रसेन उठायकै ॥
बहुभाँति करि सन्मान पुनि पुनि, लिये हृदय लगायकै॥

दो०—श्रीमुखसों कर जोरि पुनि, कह्यो सुनहु महराज ॥
यदुवंशिनको शापहे, हमें उचित नहिं राज ॥

सो०—करहु देव तुम राज, दूरी करो सन्देह सब ॥
हम करिहैं सब काज, जो आयसु देहो हमैं ॥

जो नहिं मानै आनि तुम्हारी * ताहि दण्ड करिहैं हम मारी॥
और कछू चित शोच न कीजै * नीति सहित परजहि सुख दीजै॥
यादव जिते कंसकी त्रासा * गृह तजितजि भजिगये प्रवासा॥
तिन सबको अब खोज बुलावो * सुखदै मथुरा माँझ बसावो॥
विप्र धेनु सुर पूजन कीजै * इनकी रक्षामें चित दीजै॥
यों प्रभु उग्रसेन समुझाये * राजसिंहासन पुनि बैठाये॥
शिरपर मञ्जुल छत्र फिराई * निजवर चँवर लिये दोउ भाई॥
युग युग प्रभु भक्तनसुखदाई * राखत जनकी सदा बड़ाई॥
बरषि सुमन सुर कहत सुरारी * जय जय जय भक्तनहितकारी॥

---

१ दुष्ट २ मद ३ सुरर ४ पूलोंकी वृष्टि.

उग्रसेन नृप करि बैठायो * लखि मथुरा लोगन सुख पायो ॥
धनि धनि कहत सकल नरनारी * अब करिहैं पितु मातु सुखारी ॥
यहै बात सब घरघरमाहीं * इनसम और जगत कोउ नाहीं ॥
छं०–नर नारि सब यह कहत घर घर, और नहिं इनते कियो
धनि मातु पितु दिनराति धनि, सोजन्म जग जब हरिलियो
गहि कंस सहित सहाय मान्यो, मरन नहिं रानिन दियो ॥
उग्रसेन नरेश करि पुनि, चवँर कर अपने कियो ॥
विबुध हर्षे सुमन वर्षे, सुथिर सब यदुकुल भयो ॥
अब पावहीं पितु मातु सुनि सुख, सकलदुख उनको गयो।
हम जिये अब सब निरखि मुख छवि,जन्मको फल जगलह्यो
जियहु युगयुग भ्रात दोऊ, हरषि पुरवासिन कह्यो ॥
दो०–कंस मारि भूभार हरि, उग्रसेन करि भूप ॥
कहाँ हमारे मातु पितु, तब बोले सुखरूप ॥
सो०–सगहि चले लिवाय, उग्रसेन अक्रूर तब ॥
राम कृष्ण दोउ भाय, ब्रजवासी जन दुखहरन ॥
उत वसुदेव स्वप्न निशि आयो * हृदय हर्षि देवकी सुनायो ॥
रामकृष्ण जनु मधुपुर आये * सुफलकसुत सँगनृपति बुलाये ॥
असुर सेन हति कंसहि मान्यो * उग्रसेन नृप करि बैठान्यो ॥
सुनि तिय कहै नयन भरिपानी * कहत कहा पिय ऐसी बानी ॥
सुनिहैं दूत कोऊ दुखदाई * कहिहैं अबहिं कंससों जाई ॥
हम करि पाप जन्म जगलीन्हो * सो फल हमें विधाता दीन्हो ॥

---

१ देवता २ चेंवर के ३ रात ४ अक्रूर

बधे सात सुत देखत आगे * बच्यो एक हरि ब्रजलै भागे ॥
तापर बन्दि किये हम दोऊ * धृग जीवन परवश जगकोऊ ॥
हमको मीचे नीचविधि भूल्यो * होहु कमको वश निमूल्यो ॥
कह वसुदेव रोउ मति नारी * धोवो वेदन दीन्ह जलझारी ॥
कहियतहै दुखहरण गोपाला * गर्व प्रहारी दीनदयाला ॥
हैहैं प्रगट कबहुँ सुखदाई * तात तुम्हारे त्रिभुवन राई ॥

दो०–अब जनि होहु अधीर तिय, धरहु धीर सुखपाय ॥
आँयु तुलानी कंसकी, देखत जाय बिलाय ॥

सो०–स्वम वृथा नहिं जाय, मानु कह्यो मेरो प्रिया ॥
आज कालिह में आय, तोहि मिलैं तेरे सुवन ॥

यदि अन्तर्ह द्वारे हरि आये * वज्र कपाट जहाँ जडिलाये ॥
करुणाकरि हरि तिन्हैं निहारा * गये सहज सब उघरि किवारा ॥
लखि वसुदेव सामुहे पाये * कहत कुँवर काके दोउ आये ॥
दियो दरशतिहि प्रेम सुहायो * जन्मसमय जो दरशन पायो ॥
मिले धाय पितु मातु निहारे * कह्यो तात हम सुवन तुम्हारे ॥
रोवत मधुर निरखि सुत दम्पति * सुनै न कंस मनहिं मन कम्पति ॥
तबहीं कृष्ण कह्यो सुनु माता * मान्यो कसअमुर हम ताता ॥
मल्ल पछारि सुभट सब मारे * द्विरद कुवलिया दन्त उखारे ॥
यह कहकरि पितु मातु सुधारे * तुरत तोरि पगबन्धन टारे ॥
तब जननी निश्चय करिजानी * रोवन लगी कण्ठलपटानी ॥
बारहि बार कहत उर लाये * मैं नहिं कबहूँ गोद खिलाये ॥
द्वादशवर्षं कहाँ रहे प्यारे * माता पिता जाहि बलिहारे ॥

१ मौत. २ मुग. ३ उमर. ४ बीचमें ५ पुत्र. ६ स्त्री पुरुष ७ हाथी.

दो०–सुनि जननीके वचन प्रभु, करुणानिधि यदुराय ॥
भये प्रेमवश दुखित हरि, बोले अति सकुचाय ॥
सो०–लिख्यो न मेट्यो जाय, मति कर मात विषाद चित॥
अब पुरवैं दोउ भाय, तुव मनके अभिलाष सब॥
पुत्रजन्म जगमें सुखकारी • तुम पायो हमते दुख भारी ॥
मात पिता जाते दुख पावैं • वृथा जन्म सुत तासु बतावैं ॥
ताते अब दोष न मनमें दीजै • होनहार तासों कह कीजै ॥
अब जननी सब शोच निवारो • तजो सोच आनँद उर धारो ॥
सकल मनोरथ तुमरो करिहौं • त्याग पलाउ मात नहिं टरिहौं ॥
अष्टसिद्धि नव निधि लै आऊं • घर घर मथुरा माहि बसाऊं ॥
सुनि प्रभुवचन जननि सुख पायो • बार बार गहि कण्ठ लगायो ॥
अति आनन्द भयो मनमाहीं • सो कहि सकत शारदा नाहीं ॥
कहत तात तुम बदन निहारो • सफल भयो अब जन्म हमारो ॥
सुत हित श्रैवत पयोधर छीरैं • मिटी सकल उर अंतर पीरा ॥
वसुदेव हृदय हर्ष अति आयो • मिटि श्रम मानहु जनु पायो ॥
पूरवपुण्य फल्यो सुखकारी • पायो सुत हित करि देखारी ॥

अथ वसुदेवगृहउत्सवलीला ॥

दो०–तुरत बोलि तब विप्रवर, प्रीत सहित परि पाँय ॥
प्रथमहिं सकल्पी हतीं, दई लक्षने गाय ॥
सो०–और दियो बहु दान, बन्दीजन आये सुनत ॥
परिताषे सन्मान, अति उछाह वसुदेव मन ॥

---

१ हरसनी २ टपकनाहै ३ दूध ४ मीनरकी

तब देवकी कह्यो पतिपासा * भरी परम आनन्द हुलासा ॥
प्रगटो आज सुवन मम धामा * करहु जन्म उत्सवकी सामा ।
सुनि वसुदेव परमसुख पावा * हर्षे द्वार दुंदुभी बजावा ॥
यदुवंशी सगरे जुरि आये * ध्वज पताक मंदिरन बँधाये ॥
रोपे कदली खंभ रसाला * बांधी रचि रुचि बंदनमाला ॥
लखि हरिजन्म अनन्द बधाई * ऋद्धि सिद्धि प्रकटी सब आई ॥
हाटक कलश अनेकविधाना * मंगल द्रैव्य रचे बिधि नाना ॥
गज मुक्तनके चौक बनाये * मंदिर गलिन सुगंध सिंचाये ॥
सुनि सब मथुरा पुर नर नारी * उमगि उठीं आनंद उर भारी ॥
घरघर सबहिन मंगल साजे * द्वार द्वार प्रति बाजन बाजे ॥
नौ सत साजु सकल बरनारी * सजि सजि मंगल कंचन थारी ॥
गान करत कलकंठ लजावैं * श्रीवसुदेव धामको आवैं ॥

दो०–जाति पाँति परिजन प्रजा, बधुहितू सब लोग ॥
लै लै आवत भेंट सनि, हरपत निज निज योग ॥

सो०–भई भवन अति भीर, नट नाचत गावत गुणी ॥
धरि धरि मनुज शरीर, मानहुँ सुर आये सकल ॥

तब जननी मन अति सुखपाये * उबटन करि दोउ सुत अन्हवाये ।
निज कर अंग अँगोछि सुहायो * तन दुति लखि दृग ताप नशायो ।
केसरि मैल्य मिलिय रुचिकारी * दियो तिलकवर भाल सुधारी ॥
भूषण बसन शृँगारत कैसे * राजकुवँर वर पहरत जैसे ॥
कंचन मणिमय रचित नवीनो * क्रीट मुकुट शोभित शिर कीनो ॥
कलगी ललित जड़ाव जड़ाइ * तुरा मध्य अनूप सुहाई ॥
गजमुक्तनके कुण्डल श्रानन * अति विशाल छबि शोभित आनन

१ ओर २ सुवर्ण ३ पदार्थ ४ कोकिल ५ चमक ६ चंदन ७ मुरा

कंठ पदिकके हार विराजें * उर विशाल पर अति छवि छाजें ॥
पच रत्नके अगद भावें * शोभित भुजन भावने जावें ॥
कर चूरा नव रतनजराइ * पाणि पहुंचन छाप सुहाइ ॥
किंकिणिललित कलित रववारी * कटिकेहरि पर वलित सवाँरी ॥
घूरा चारु मनोहर पांयन * चरणकमल मचन सुखदायन ॥

दो०—नील पीत वर बसन तनु, दोउ सुतन शृंगार ॥
धार अलक मुख शशि झलक, निरखिजात बलिहार॥

सो०—हते श्यामके साथ, ग्वाल तिन्हें पुनि देवकी ॥
पहिराये निज हाथ, जानि कृष्ण प्रीतम सबै ॥

ग्वाल बाल सब चकित निहारे * कहि न सकत कछु मनहिं विचारे॥
येतो कृष्ण देवकी जाये * झूठहि यशुमति सुवन कहाये ॥
करत शोच मनहीं मनमाहीं * अब हरि मन चलिहैं कै नाहीं ॥
तब दोउ कुवँर चौक बैठारे * विप्रवृन्द वसुदेव हँकारे ॥
विधिवत पूजि तिलक करवाये * दान बहुत हरि हाथ दिवाये ॥
बहुरि आरती मात उतारी * लखि छवि मुदित सकल नरनारी॥
वेदध्वनि महिदेवन कीन्हों * द्रव्य अनेक निछावरि दीन्हों ॥
वरुण सहित सुरनम यश गावें * बरषि कुसुम दुंदुभी बजावें ॥
परमानन्द सकल पुरवासी * निधि सिधि सब गृह गृहकी दासी॥
बहुरो सरस सहित दोउ भैया * निजकर परसि जिमाये मैया ॥
पूजी सकल कामना जीकी * मिटी कल्पना दारुण हीकी ॥
यहि विधि कंस मारि यदुराइ * मात पिताकी बंदि छुड़ाई ॥

छं०—इहि भाँति कंसनिपातियदुपति, मातुपितुको सुखदयो॥

१ हाथ २ बाल ३ ब्राह्मण ४ पुष्प

हर्षे अति नर नारि मथुरा, घरनघर आनँद भयो ॥
परमपावन यश सुहावन, पलहिंमें त्रिभुवन गयो ॥
जीव जल थल नाग नर सुर, सरनरस जहँ तहँ भयो ॥
यह कसहतन पुनीत यश, नितनर सुनें जे गावहीं ॥
ते न भवबंधन परहिं, फिरि अघसमूह नशावहीं ॥
मिटहिं दारिद दोष दुरमति, विपति निकट न आवहीं ॥
सकल मनवांछित लहें अरु, भक्ति अविचल पावहीं ॥

दो०-कठिन शूल संकट हरण, मंगल करण अशेष ॥
राम कृष्णके चरित वर, गावत सुनत विशेष ॥

सो०-नरतनु पाय सुजान, अनुदिन[1] गावत हरिकथा ॥
सकल सुखनकी खान, व्रजबासी प्रभुके सुयश ॥

अथ कुविजागृहप्रवेशलीला ॥

श्रीयदुकुल कुल कमल तमारी * दीनबन्धु भक्तन हितकारी ॥
करिके जननी जनक सुखारी * तब कुबिजाकी सुरति सवाँरी ॥
नृपतिभवन तजिकै अभिरामा * चले वसन कुबिजाके धामा ॥
कृष्ण कृपा सबहो पै न्यारी * भाव भनन कुबिजा भई प्यारी ॥
साँचो भाव हृदय जहँ जाने * विवश होय तेहि हाथ बिकाने ॥
नारि पुरुष कछु नाहिंन भेदा * नीच ऊंच नहिं वरत निषेदा ॥
प्रथमहिं आय मिली मग पाई * सोहित मानि लियो यदुराई ॥
चन्दन चौंचि तनक[3] तनु दीन्हो * मनहुँ कोटि तप याशी कीन्हो ॥
अति अकुलीन कसकी दासी * परसत पावन भई रैंमासी[4] ॥

---

१ पाप २ नित्यप्रति ३ लगाकर ४ लक्ष्मी

आये पुनि प्रभुताके धामा * भक्तवत्सल है जिनको नामा ॥
जब कुबिजा जान्यो हरि आये * पाटम्बर पाँवड़ बिछाये ॥
अति आनंद लियो उठि आगे * पूरब पुण्य पुञ्ज सब जागे ॥

दो०–टेढ़ीते सूधी करी, दियो रूप अभिराम ॥
दासीते रानी भई, पूरे सब मनकाम ॥

सो०–कोकरिसके प्रकाश, अति विचित्र हरिके गुणन ॥
सदा दासको दास, भयो रहै प्रभु जननके ॥

पुरवासिन सबहिन यह जानी * राजा हरि कुबिजा पटरानी ॥
घर घर कहत सकल नरनारी * कियो कहाधौं इन तप भारी ॥
मिली तनक चन्दन दे मगमें * भई विदित अति पावन जगमें ॥
यह महिमा कछु कहत न आवै * को ताकी पटतर अब पावै ॥
भूलि कहत कुबिजा जो कोऊ * ताहि रिसाय उठत सब कोऊ ॥
सो तो भई कृष्णकी प्यारी * दासी कहत डरत नर नारी ॥
करत प्रेम मनमें सब प्राणी * डारहि मारि सुनै जो रानी ॥
जापर कृपा करैं यदुराई * ताहि नहीं यह कछु अधिकाई ॥
सन्त सन्त हरिकी यह रीती * मानत एक भक्तसों प्रीती ॥
धनि धनि कुबिजा हरिकी रानी * धनि धनि कृष्ण प्रीति परिमानी ॥
धनि धनि चन्दन अंग लगायो * धनि धनि भवन जहाँ हरि आयो ॥
कहि कहि सब सुर नारि सिहाहीं * आज कूबरीसम कोउ नाहीं ॥

दो०–बसे श्याम कुबिजासदन, तहँ करि कछु विश्राम ॥
पुनि आये वसुदेवगृह, जन मन पूरण काम ॥

सो०–तब श्रीनन्दकुमार, व्रजवासिनकी सुरति करि ॥
मनमें कियो विचार, अब सब चलिये नन्दपै ॥

---

१ सुन्दर २ पवित्र ३ नय ४ घर ५ याद

लै वसुदेव संग दोउ भाइ * गे जहँ उग्रसेन नृपराई ॥
तहा बहुरि यादव सब आये * पुनि उद्धव अक्रूर बुलाये ॥
तब हरि ऐसे वचन सुनाये * ममहित ब्रजवासी सब आये ॥
नंदादिक सब गोप जितेका * रह्यो नहीं ब्रजमें कोउ एका ॥
गाय बत्स सब तजे अनेरे * हैं सूने मन्दिर सब केरे ॥
ह्वैहै दुखित यशोमति मैया * जिन हम प्रतिपाले दोउ भैया ॥
बहुत हेत उन हमसो कीन्हो * विविध भाँति अबलों सुख दीन्हो ॥
सकुचत हौं अपने मनमाहीं * उनसों उऋण कबहुँ मैं नाहीं ॥
पलटो नहिं जो उनको दीजै * अब चलि बिदा उन्हैं ब्रजकीजै ॥
सुनि हरिवचन परम सुख पाइ * सब मिलि चले जहाँ नन्दराइ ॥
सुनी नन्द गोपन यह बाता * मारो कंस जाय दोउ भ्राता ॥
सोच नहीं मनमें कछु माने * प्रजा भाव सब रहे सकाने ॥

दो०–मनही मन शोचत खड़े, नहिं आये बलराम ॥
ब्रजमें आये ह्वैगयो, तिन्हैं आयबो वाम ॥

सो०–अब कैसे ब्रज जाहिं, बल मोहन दोऊ विना ॥
अति व्याकुल मन माहिं, कबधौं नयनन देखिहैं ॥

अथ नन्दविदालीला ॥

आये तबही कुँवर कन्हाइ * नृप वसुदेव सहित दोउ भाई ॥
देखत नन्द मिले उठि धाई * लिये लगाय कण्ठ सुखदाई ॥
अब चलि ह्वैब्रजको यह जान्यो * अति आनन्द हृदय हरषान्यो ॥
लखि वसुदेव बहुत सुख पाइ * मिले नन्दसों सादर धाई ॥
उग्रसेन तब नन्द जुहारे * आदर सहित सकल बैठारे ॥
उग्रसेन वसुदेव उपँगसुन * सुफल्कसुत अरु यादवगण युत ॥

१ कठिन २ रुकी ३ अक्रूर

बैठे निति हरि हलधर भाइ * नन्दहि मिले निकट बैठाई ॥
और गोप ठाड़े सव घरैं * यशुमति सुतको भाव न देरैं ॥
नन्द मनहिं मन अति अकुलाहीं * चलत वेगि अव मन क्यों नाहीं ॥
सवहीके मनमें यह आइ * हरि अव हमसों प्रीति घटाई ॥
करत विचार श्याम मनमाहीं * प्रीतिविवश बोलत सकुचाहीं ॥
तव हरि यों मुख वचन उचारे * बहुत कियो प्रतिपाल हमारे ॥

दो०-झझकि परे नँदराय सुनि, कहा कहत गोपाल ॥
मोसो कहत कि आनसो, किन कीन्हों प्रतिपाल ॥

सो०-चौंकत जिय नँदराय, मति मोसों ऐसे कहैं ॥
गौहयर हिय भरि आय, टारि सकत नहिं नयन जल ॥

तव हरि मधुर कह्यो नँदराइ * सुनहु तात हम कहत लजाइ ॥
कही गर्ग तुमसों जो वानी * सो तुम तव निश्चय नहिं जानी ॥
पुत्र हेतु हमको प्रतिपारे * तात मात निमि अधिक दुलारे ॥
खेलत हँसत वसत मजमाहीं * जात हते दिन जाने नाहीं ॥
हमको तुम दीन्हों सुख जितनो * कह्यो न जात वँदनते तितनो ॥
तुम सम मात पिता न हमारे * जहाँ रहें तहँ तात तुम्हारे ॥
विछुरन मिलन मोह अरु माया * यह प्रपंच जग विधि उपजाया ॥
है है दुखित यशोमति मैया * मोबिन मज तिय अरु सव गैया ॥
ताते गमन वेगि मन कीजै * जाय सवनको धीरज दीजै ॥
यशुमतिसों विनती मम कहियो * माने सदा पुत्रहित रहियो ॥
मेरी सुरति न उरते टारो * मैं तुमते कवहूँ नहिं न्यारो ॥
हरि यों नन्दहि वचन सुनाई * बहुरो रहे सकुचि अरगाई ॥

१ गहरा २ मुख ३ व्यवहार ४ जल्दी

दो०-निठुर वचन सुनि श्यामके, भये विकल अति नंद ॥
उमगि नीर नयनन चल्यो, परिगये दुखके फंद ॥

सो०-दुखित सखा अरु गोप, चकित रहे हरिमुख निरखि॥
करत मनहिं मन कोप, ये चरित्र अक्रूरके ॥

परे नन्द तब चरणन धाई * कहत न ऐसी कबहुँ कन्हाई ॥
हों मोहन तजि चरण न जैहौं * तुम विन जाय कहा ब्रज लैहौं ॥
मधुवन तुमहि छाँडि जो जाऊँ * यशुदै उत्तर कहा सुनाऊँ ॥
सन्मुख सुनत दौरि जब एहै * तुमनिन काहि गोद भरि लैहै ॥
पथ निहारत हैहै मैया * चलहु वेगि मन कुँवर कन्हैया ॥
सद माखन मथि कीन्हों हैहै * कहो सो तुमबिन काहि खवैहै ॥
क्यों जीहै बिन दरशन पाये * होत निठुर कित मथुरा आये ॥
बारह वर्ष कियो हम गारो * नहिं जान्यो परताप तुम्हारो ॥
अब प्रकटे वसुदेवकुमारा * कीन्हो वचन गर्ग निरधारा ॥
कत हम कान महारिपु मारे * कत दरिद्र दुख हरे हमारे ॥
डारि न दियो कमलकर गिरिवर * दबि मरते ब्रज जन ताकेतर ॥
कहैं नंद यों विकल अधीरा * भइ कठिन बिछुरनकी पीरा ॥

दो०-देखि प्रीति अति नंदकी, मन वसुदेव सिहात ॥
सकुचि रहे सब प्रेमवश, कहि न सकत कछु बात ॥

सो०-व्याकुल सबै अहीर, मानहु पन्नगके डसे ॥
हरिमुख लखत अधीर, ठाढ़े काढ़े चित्रसे ॥

तब हलधर नंदै समुझावा * कहत तात तुम कत दुख पावत ॥
करि कछु काज बहुरि ब्रज आवैं * तुमविन और कहाँ सुख पावैं ॥

१ सब २ देखते हैं ३ बलदाउ

हरि प्रगटे भूभार उतारन * कह्यो गर्ग तुमसों सब कारन ॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ * तुम्हरे सुवन कहावे दोऊ ॥
हमै तुम्हैं सुन रिनुको नातो * और परे अब होन न हानो ॥
बहुल कियो प्रतिपाल हमारो * जाय कहाँ उर ध्यान तुम्हारो ॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वै है * तुम्हें गये धीरज कछु पैहै ॥
व्याकुल नन्द सुनत यह बानी * पुनि पुनि कहत जोरि युग पानी ॥
अंब के चल्हु श्याम मम गोहन * व्रजमें मिलि आवहु फिरि मोहन ॥
मारेउ कंस कियो सुरकाजा * दीन्हो उग्रसेनको राजा ॥
सुत वसुदेव देवकी पायो * भयो सकल यदुकुल मन भायो ॥
यदपि यशोमति निज गिरिधारी * को जाने प्रभु टेक तुम्हारी ॥
दो०-ऐसे कहि अति विकल ह्वै, रहे नंद गहि पाँय ॥
भई क्षीण द्युति हीन मति, नयनन जल न रहाय ॥
सो०-माया रहित मुकुन्द, नहीं विरह संयोग तिह ॥
ब्रह्म पूरणानन्द, सब घटवासी एकरस ॥
देखि विरह अति कोदर नदहि * सखा वृन्द अरु सब उपनन्दहि ॥
विछुरत सजन चलतहैं प्राना * तब यह चरित रच्यो भगवाना ॥
मेरी अति दुस्तर है माया * जिनकर जीवविमुख भरमाया ॥
तिन कछु ईन्द्र कियो जगमाहीं * तब हरि बोध करत नँद पाहीं ॥
कन पछितात तातही एतो * व्रज अरु मथुरा अंतर केतो ॥
कहा दूरि तुमते कहुँ जाहीं * करि विचार देखौ मनमाहीं ॥
हैं व्रजके नरनारि दुखारी * ताते कीजत विदा तुम्हारी ॥

१ पृथ्वीका भार. २ रक्षा. ३ हाथ ४ साम. ५ डरपोक.
६ समूह. ७ कठिन. ८ युद्ध. ९ दूरी

ऐसे बोध कियो ब्रजनाथा * तव नंद कह्यो जोरी युग हाथा ॥
जो प्रभु तुमको ऐसे भाई * तौ अब मेरो कहा बसाई ॥
जैहौं ब्रज प्रभु कहे तुम्हारे * जात बचन मोपे नहिं टारे ॥
बहुत करी तुम मम प्रभुताई * नीच दशाते ऊँच चढाई ॥
परमगँवार ग्वाल पशुपाला * भयो धन्य सब जगत विशाला ॥

दो०–मेटि पाप सताप सब, कियो सुकृतकी खान ॥
भरी साखि चौदह भुवन, सुर मुनि वेद पुरान ॥

सो०–ऐसे कहि नँदराय, परे बहुरि हरिके चरण ॥
लीन्हे श्याम उठाय, कह्यो जान सन्मान तब ॥

तब वसुदेव विनय बहु भाषी * आगे बहुत संपदा राखी ॥
कियो जो हममति तुम उपकारा * ताको बदलो नहिं ससारा ॥
बालक ये अपनेही जानो * इहाँ उहाँ कछु भेद न आनो ॥
सुनि सुनि नंद महर पछिताई * रहे ठगे तनुदशा भुलाई ॥
ऊरध श्वास नयन बह पानी * कंपित तनु कहि जात न बानी ॥
सो कछु संपति नंद न लीनी * विनती बहुरि श्यामसों कीनी ॥
मागतहौं प्रभु यह वर जोरी * ब्रजपर कृपा होय नहिं थोरी ॥
तब सब गोप नृपनि पहँ आये * बहुत बोध करि ब्रजहि पठाये ॥
गोप सखा बोध हरि सबहीं * बिदा किये आदरदै तबहीं ॥
चले सकल ब्रज शोचत भारी * हारे सरबस मनहु जुआरी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं * लटपट चरण परत मगमाहीं ॥
मारतन जात बिलोकत मथुरा * विरहव्यथा बाढी व्याकुल तरा ॥

---

१ पशुसी २ ग्वाल

दो०-भये विरहवारिधिमगन, अति अचेत अकुलाय ॥
श्यामराम तजि मधुपुरी, आये व्रज नियराय ॥
सो०-उतहि गये हरि गेह, उग्रसेन वसुदेवयुत ॥
ब्रजवासिनको नेह, पुनि पुनि श्रीमुखते कहत ॥

पुनि पुनि नंद कहत पछिताई * चूक परी हरिकी सेवकाई ॥
कहँलगि गनिये यह अपराधू * किये कर्म हम परम असाधू ॥
कोमल पद बन अति कठिनाई * तहँ हरिपै हम गाय चराई ॥
किंचक दधिके काज रिसाई * बाँधे यशुमति ऊखल लाई ॥
इंद्रकोप ब्रजलोग बचाये * वरुणलोग ममहित उठि धाये ॥
हम मतिमन्द न उनहीं जाने * निकट बसत नाहिन पहिंचाने ॥
तन धन लोभ कर्म भयपाई * करि दीन्हे आगे दोउ भाई ॥
ऐसे समुझि नंद निज करनी * परे मुरछि व्याकुल अति धरनी ॥
बार बार जोवत मग माता * व्याकुल बिन मोहन बल ताता ॥
आवत देखि गोप ब्रज ओरी * हरषि हृदय आतुर उठि दोरी ॥
धाई धेनु वत्सको जैसे * माखन प्यारेहैं धौं कैसे ॥
दनिया लेवेको अतुरानी * आये बल मोहन यह जानी ॥

दो०-धाई अति हर्षित हिये, सुनत रोहिणी पास ॥
दरश आश आई सबै, ब्रजतिय हिये हुलास ॥
सो०-त्यहि क्षण अति आनन्द, ब्रजवासी ब्रजतिय सबै ॥
अति सकोचवश नन्द, सो दुख कापै जात कहि ॥

अथ ब्रजकी विरहलीला ॥

आतुर सकल गईं नँदपासा * मनमोहन दर्शनकी आशा ॥

१ मास २ धरती ३ रास्ता

पेखे नन्द गोप सब देखे * श्याम राम दोऊ नहि पेखे ॥
बूझत यशुमति अति अकुलाई * कह मेरे श्याम राम दोउ भाई ॥
सुनत वचन व्याकुल नँदराई * नयन नीर भरि नारिनबाई ॥
देखत सूखि गई ब्रजनारी * जनु प्रफुलित कुमुदिनिहिमेंहारी॥
जान्यो आन भई निधि सोई * कहि गये वचन गर्ग मुनि जोई ॥
अति व्याकुल सब बिन ब्रजनाथा* भये सकल नरनारि अनाथा ॥
परे भूमि सब टेर लगाई * कौन दोष प्रभु हम बिसराई ॥
यशुमति अति बिलपतिबिलखानी* कहत सरोषै नदसों बानी ॥
धिग धिग महर कहा यह कीनो * मथुरा तजि सुत ब्रज पग दीनो ॥
मारग सूझि परेउ केहि भाँती * बिदा होत फाटी नहिं छाती ॥
अर्ध वचन सुनतहि उठि धाये * कहा लेन सुत ब्रजमें आये ॥

दो०–कैसे प्राण रहे हिये, बिछुरत आनँदकन्द ॥
सुनी नहीं दशरथ कथा, कहूँ श्रवण मतिमन्द ॥
सो०–मैं मधुपुरको जाय, रहिहौं हरिकी धायह्वै ॥
लीजै ठोंकि बजाय, अब अपनो ब्रज नंद यह ॥

यह सुनि नन्द परे मुरझाई * अति व्याकुल ब्रज लोग लुगाई ॥
पुनि पुनि कहति यशोमति टेरे * कहँ छाँड़े दोऊ सुत मेरे ॥
जीवन प्राण सकल ब्रज प्यारो * छीनि लियो वसुदेव हमारो ॥
सुफलकसुत वैरी भयो भारी * लै गयो जीवन मूरि हमारी ॥
हौं न गई हरि संग अभागी * सिखये इन लोगनके लागी ॥
जो मैं जानि पावती गोहन * तोक्यों छाँड़ि आवती मोहन ॥
ऐसे रोवत करत विलापू * कहि न जात यशुमति परितापू ॥

१ बरफ २ धरती ३ क्रोधसे. ४ अक्रूर.

हरि बिन सब नरनारि उदासी * आये नन्दहि सकल ब्रजवासी ॥
नहीं श्याम बिन मंदन सुहाई * मनहु मशान भूमि धरा खाई ॥
पूछत बिलखि यशोमति मैया * कहाँ नंद वह कह्यो कन्हैया ॥
तुमको विदा मनहि नव कीन्हो * हरि कछु मोहिं सदेसो दीन्हो ॥
तुम कछु हरिसों विनय न भाषी * कहा श्याम मनमें यह राखी ॥

दो०–मैं अपनोसो बहु कियो, वे प्रभु त्रिभुवननाथ ॥
जो चाहैं सोई करैं, कहा सु मेरे हाथ ॥

सो०–कहिकै तोहिं प्रणाम, बहुरि श्याम ऐसे कह्यो ॥
करिकै कछु सुरकाम, मिलिहौं तुमसों आय ब्रज ॥

पुनि बोले ऐसे बल भैया * दुखी होन पावै नहिं मैया ॥
धीरज देहु तात तुम जाइ * कछु दिनमें हम मिलिहैं आइ ॥
पठयो मोहिं तासि हितलागी * तब मैं वचन सक्यो नहिं त्यागी ॥
सुनि संदेश यशुमति दुख पागी * रहे प्राण हरि चरणन लागी ॥
एक पलक बिछुरत हरि नाहीं * गहि रहि मिलन आश मनमाहीं॥
ब्रज घरघर सब कहत गुवाला * किये कृष्ण मथुरा जो ख्याला ॥
मारेउ रजक जाय हरि जबहीं * नहिं निबहै जान्यो हम तबहीं ॥
चन्दन बहुरि कसको लीन्हो * रूप अनूपम कूबरि दीन्हो ॥
वैसो धनुष तोरि पुनि डारेउ * फिरि दोउ भाज्न गजको मारेउ॥
रङ्गभूमि सब मल्ल पछारे * असुर अनेक युद्ध करि मारे ॥
कहत हते मनमें हरि जैसे * कियो नाथ कंसहि पुनि तैसे ॥
केश पकरि माहु तुरत गिरायो * मारि यमुनाजलमाहिं बहायो ॥

दो०–उग्रसेन राजा कियो, निजकर चमर ढुराय ॥
मथुरा नर नारी सबै, आनन्दे सुख पाय ॥

---

१ घर २ मरघट ३ धोबी

सो०–पुनि भेंटे हरि जाय, देवकि अरु वसुदेवसों ॥
कह्यो परम सुख पाय, तात मात कहि भ्रात दोउ ॥

तहाँ भयो उत्सव अति भारी * दियो दान बहु विप्र हँकारी ॥
हरिहि वसन भूषण पहिराये * मंगल सब नर नारिन गाये ॥
मथुरा घर घर बजी बधाई * बहु सम्पति वसुदेव लुटाई ॥
अब नहिं गोप गोपाल कहावैं * वासुदेव सब नाम बुलावैं ॥
यदुकुलकमल सकल जगनायक * विरद बान वर्णत गुण गायक ॥
भये कृष्ण मथुराके राजा * अहिरनदेखि लगति अति लाजा ॥
पुनि ग्वालन यह बात सुनाई * बसे श्याम कुविजा गृह जाई ॥
भये जासुवश अति हित मानी * कीन्ही ताहि आपनी रानी ॥
राजा हरि कुबिजा भइ रानी * गोपिन सुनी जबहिं यह बानी ॥
गइ विरहतन तपत सिराई * सौति शौल[1] साल्यो उर आई ॥
भयो दुसह दुख ऊरध श्वासा * मिटी श्याम आवनकी आशा ॥
नयनन जलधारा अति बाढ़ी * रही शोच बैठीं कोउ ठाढ़ी ॥

दो०–जुरि आईं ब्रजतिय सबै, सुनि कुविजाकी बात ॥
लागीं आपसमें कहन, मन दुख मुख हपात ॥

सो०–करी सुहागिनि श्याम, कुविजा दासी कंसकी ॥
आपुन पति वह वाम, कियो नाम तिहुँ पुर विदित ॥

लै श्रीखण्ड मिली मग माइ * सुनियत ताते अति मन भाइ ॥
भली बुरी कछु जात न चीन्ही * बहुत रूप दै सम कर लीन्ही ॥
वे बहु रमण नगरकी सोऊ * बन्यो संग अब नीको ओऊ ॥
कं त जु वह सोइ अब मानैं * निशि दिन वाके गुणहि बखानैं ॥

[1] आनन्द २ निर्मल ३ वांग

जानि अनोखी नेह बढ़ावें * अब नहिं सखी श्याम ब्रज आवैं॥
अपर कह्यो कछु रोप जनाई * श्याम सदाके ऐसेइ माई ॥
जब अक्रूर लेन ब्रज आयो * कान लागि तब यहै सुनायो ॥
नई कूबरी नारि बताई * तबहि गये ताके सँग धाई ॥
बोली और एक तिनमाहीं * कुबिजा तुम देखी कै नाहीं ॥
दधि बेचन जब जात तहाँरी * तब नीके हम ताहि निहारी ॥
अँगटेढी मालिनकी जाई * हँसत जाहि सब लोग लुगाई ॥
बसत दिगन नृप महलन जोई * सुनियत करी सुन्दरी सोई ॥

दो०-कोटि बार दाहौ अनल, कोटिकसौ किन सोय ॥
तौ कत पीतरते कहूँ, कैसे सोनो होय ॥

सो०-हरि तजि दीन्हीं लाज, हमैं होस सुनिकै हँसी ॥
जाय कूबरी काज, मथुरा मारेउ कसनृप ॥

बोली सखी और इक नागी * अलि यह बात नहीं तुम जानी ॥
कुबिजा सदा श्यामकी प्यारी * वे भर्ता उनकी वह नारी ॥
तैसे वहाँ ताहि करि दासी * राखी ये अवगति गुणराशी ॥
रूप रतन कूबरमें राख्यो * जिमि मोती सीपनमें भाख्यो ॥
कंस मारिकै सो अब लीन्ही * ताकी प्रभुता प्रगट न कीन्ही ॥
ब्रजवनिता लागीं अब बातें * बूझी सकल श्यामकी घातें ॥
कहत एक तब सुनु सखिएरी * वे दिन हरिको बिसरि गयेरी ॥
लिये फिरतहीं जब सब कनियाँ * पहिरावन सिखये हमतनियाँ ॥
घर घर डोलत माखन खाते * यशुदहि उरहन देतलजाते ॥
बहुरि भये जब कछुक सयाने * बाट घाट अवगुण बहु ठाने ॥
जो जो उन हममों गुण ठान्यो * हम सब ताहीमें सुख मान्यो ॥

१ नई तरहकी. २ बेटी. ३ स्त्री

जिमि भजि आप गोकुलै आये * गोप भेष धरि रहे छिपाये ॥
दो०-देव मनावत दिन गये, बड़े होनकी आस ॥
बड़े भये तब यह कियो, बसे कूबरी पास ॥
सो०-यशुमति लाड़ लड़ाय, बारेते सेवा करी ॥
ताहूको बिसराय, भये देवकीपुत्र अब ॥
सुनो सखी अब कह्यो हमारो * नहिं कीजै तिनको पतियारो ॥
जो जन जगमें कृतहि न माने * निज स्वारथ लगि बहु गुणठाने ॥
ज्यों भँवरा कल कूज सुहाई * बैठन चाहि सुमनपर आई ॥
रसहि चाखि पुनिहित नहिंमाने * तहाँ जात जहँ नूतन जाने ॥
पालत काग पिकैहि हितमाने * मिलत कुलहि जब होत सयाने ॥
सोई भई हमहिं अरु नन्दहि * कहिये कहा सखी गोविन्दहि ॥
जे खोटे मन कपट सयाने * औसेर परे परै पहिंचाने ॥
बैठत अब नृप आसनमाहीं * सुनियत मुरलि देखि लजाहीं ॥
मोर पख देखत नहिं भावै * भजको नाम लेत वहरावै ॥
सुरभी चिमहुमें जो हेरत * तोलजाय इतउत मुख फेरत ॥
हमरो नाम सुनत चपि जाहीं * सुरत करत ग्वालनकी नाहीं ॥
वे कह जानैं पीर पराई * जिनकी प्रकृति परी यह आई ॥
दो०-भयो नयो अब राजहां, नये मात पित गेह ॥
नई नारि कुविजा मिली, भये सखा नवनेह ॥
सो०-बिसरे भजकी बात, कुंजकेलि रस रासको ॥
गये आपनी घात, दिन दिन दुख दूनो लह्यो ॥
कौन बातको करै परेखो * सखि अपने जिय शोच न देखो ॥

१ उपकार. २ मतलब. ३ कोकिल. ४ मौका. ५ गाय. ६ स्वभाव

नाहरि जाति न पाति हमारा * निनरो दुख मानिये कहारा ॥
गोपीनाथ नन्दके लाला * अब न कहावत याह गुवाला ॥
वसुदेव अब उहाँ कहावत * यदुकुलदीप भाटवर गावत ॥
नहि वनमाल गुन उरमाहीं * मोरपिच्छ माथेपर नाहीं ॥
गृह वनरी सब प्रीति भुलाइ * वा मुरली सँग गइ भगाइ ॥
अब यह सुरति होत मन रानन * दिनदश प्रीति करी तिन कानन॥
सबै अजान भई तिहि काला * सुनि मुरलीको शब्द रसाला ॥
अब मन नलनिधि सगउरो थाके * फिरिफिरि शरण जहा जिहिताके
रहत एक मथुरा व्रजनाथा * व्रज अब मानों कियो अनाथा ॥
नव वह कृपा हुती मन माहीं * राख्यो गिरिवर करतलमाहीं ॥
बहुरो और प्रताप पियोरी * दमहित दावानल अचयोरी ॥
दो०-अब यह दोष लगै हमैं, समुझत सकुचत जीय ॥
भयो व्रजहूते कठिन, निठुरत पठ्यो न हीय ॥
सो०-अब लागे दिन जान, सुनु सखि मोहनलाल विन ॥
रहत देहमें प्रान, विन यह सूरति साँवरी ॥
रहत वदनै देखे विन नयना * श्रवण न रहत सुने विन वयेना॥
रहतहियो विन हरि कर परसे * वेधत बाण मनोभव बरसे ॥
अब सखियों सहियत दुख भारो * मनहुं नयन तन प्राण हमारो ॥
जब विधि बालक वत्स चुराये * तब हरि वैसेइ और बनाये ॥
जनु वैसेइ कुवँर कन्हाइ * विरह वृष्टि व्रज ओर चलाइ ॥
ऐसे मन गुण गुणि गोपाला * भइ विरहवश सब व्रजबाला ॥
अतिही कठिन भयो दुख मनमें * व्यापी दशइँ अवस्था तनमें ॥

१ हथेली २ वनकी अग्नि ३ मुख ४ कान ५ वचन ६ कामदेव
* बछडे

कोउ वह लोचन दीन हमारे * क्यों जीवहि बिनश्याम निहारे॥
ज्यों चकोर बिन चन्द्र दुखारी * जैसे री बारिजविन[1] बारी॥
बिरवन जिमि ग्रीषमके खजन * जैसे दुखी भ्रमर बिन कजन॥
श्याम सिंधुते बिछुरि परेरी * तलफडात ज्यों मीन खरेरी॥
भरत ढरत पुनि पुनि अकुलाहीं * हरि बिन धरत धीर दृग नाहीं॥

दो०–देख्यो नहीं सुहात कछु, गृहवन बिन नँदनन्द॥
बिरहव्यथा जारत नहीं, भयो तपनि अति चन्द॥

सो०–बिन श्वासाकी देह, और रूप ह्वै जात जिमि॥
तिमि लागत ब्रज गेह, हरि बिन सखी भयावनो॥

इहि बिरियाँ बनते हरि आवत * दूरिहिते कलै[2] वेणु बजावत॥
कबहुँक परम चतुर गोपाला * गावत ऊंचेस्वरन रसाला॥
कबहुँक लैलै नाम सुनावत * धौरी धूमरि धेनु बुलावत॥
देत दृगन सुख बनते आई * वह मनमोहन रूप दिखाई॥
और सखी बोली यक ऐसे * बहुरो क्वहुँ देखिये वैसे॥
बैठे ग्वाल बालकन साथा * बाँटत खात अशनै[3] ब्रजनाथा॥
यकदिन दधि चोरत मम धामा * मैं दुरि देखि रही छबिदामा॥
वे भाजे॰ मम लखि परछाहीं * तब मैं धाय लई गहिबाहीं॥
मुखकर पोंछि लिये गहि कनियाँ[4] * प्रेम प्रीतिरसके सुख दनियाँ॥
रहेलागि छातीसों जैसे * सो वह कहो जात सुख कैसे॥
जिन धामन वे सुख अवलोके * ते अब धरि धरि खात रिलोके[5]॥
सुमिरि सुमिरि वे गुणगण नाना * हरिबिन रहत अधम तनुप्राना॥

दो०–कहँलगि कहिये ये सखी, मनमोहनके खेल॥
उन बिन अंब गोकुल भयो, ज्यो दीपक बिनतेल॥

---

१ कमल २ सुंदर ३ भोजन ४ गोदी ५ अनेकप्रकारके

सो०-रहत नयन जल छाय, सुमिरि सुमिरि गुण श्यामके ॥
कहिये काहि सुनाय, भये पराये कान्ह अब ॥

एक प्रलाप करत मनमाहीं * कहै आय कोऊ हरि पाहीं ॥
टेरु आय निज गायन घेरी * फिरत नहीं ग्वालनरी पेरी ॥
बिंरी फिरत सबल बनमाहीं * तुमबिन काहि काहु पतियाहीं ॥
अपनो जानि सँभारहुआइ * मति बिसरो ब्रजहेत कन्हाई ॥
बिलपत गाय बतम सब ग्वाला * नेकु सुनावहु वेणु रसाला ॥
बूड़त बिरहसिंधुमें नारी * टेरु आय गहि भुजा निकारी ॥
कोऊ कहत कहै कोउ जाई * बसौ फेरि ब्रज कुवँर कन्हाई ॥
अब नहिं तुमसों गाय चरावैं * नहिं जगाय बन प्रात पठावैं ॥
माखन खात बरजिहैं नाहीं * नहि उरहन यशुदहि लैजाहीं ॥
नहि दावँरि यशुमतिको देहैं * नहि अब ऊखलसों बँधवैहैं ॥
चोरी प्रगट करै नहिं काहू * नहीं अनावहिं अवगुण ताहू ॥
बेनी फूल गुहन नहिं देहैं * मही महावर चरण दिवैहैं ॥

दो०-माँगत दान न बरजिहैं, हठ नहिं करिहै मान ॥
आय दरश अब दीजिये, रहत न तुम बिन प्रान ॥

सो०-ऐसे कहि गहि पाँय, ल्यावहिं फेरि मनाय हरि ॥
बसहिं बहुरि ब्रज आय, तौ ब्रजनन्दन साँवरो ॥

एक कहत अब हरिहि आवैं * नृपपद तजि क्यों ग्वाल कहावैं ॥
वहँ गज रथ चढि चलत कन्हाई * इहँ क्यों गाय चरावहिं आई ॥
उहाँ पटम्बर पहिरि दिखावै * इहाकि क्यों अब कामरि भावै ॥
अब उन यशुमति मातु बिसारी * कौन चलावै बात हमारी ॥

१ बिचार २ घूमती ३ रस्सी ४ रेशमी वस्त्र

बोली अपर सखी निरखाई * भये निठुर अब कुँवर कन्हाई ॥
करी प्रीति हमसों हरि ऐसी * सुनु सखि सलिले मीनकी जैसी ॥
तफलत मीन निपट अकुलाने * नीर कछू उर पीर न जाने ॥
इतनी दूर दया नहिं कीन्ही * बीति अवधि खबरि नहिं लीन्ही॥
दै गये बिहँसि चलत परतीती * मिलिहौं आय बहुरि रिपु जीती ॥
हारे नयन उतहि मग जोवत * रोय रोय उर कचुकि धोवत ॥
जैसा दिन निशि तैसी जाई * पल भर नीद परत नहिं आई ॥
मद समीर चद दुखदाई * इतने जरत सेज अधिकाई ॥

दो०-स्वमे हूतो देखिये, नींद परे जो नयन ॥
कीन्हे विविध उपाय मन, क्योंहू लहे न चैन ॥

सो०-बोलि उठी इक वामै, सुन सखि हौं तोसों कहौं ॥
जबते बिछुरे श्याम, आज लखे मैं स्वममे ॥

आये जनु मम सदन गोपाला * हँसि भुज पाणि गहे नँदलाला ॥
कहा कहौं अरि नींद भरीरी * एकहु क्षण नहिं और रहीरी ॥
ज्यों चकई लखि निज परछाहीं * पतिहि जानि हरषी मनमाहीं ॥
तबहीं निठुर विधाता आई * दियो पवन मिस सलिलडुलाई ॥
मेरी दशा भई सखि सोइ * जो जागों तो ढिग नहिं कोई ॥
देखहु यहा अधिक अकुलाई * विरह जरी अरु वाम जराई ॥
महा कहौं निहिं दोष लगाऊँ * अपनी चूक समुझि पछिताऊँ ॥
निठुरतही नाहं तज्यो शरीरा * समुझि परी तबहीं यह पीरा ॥
महादुखित अब अग हमारे * भये सखी दोउ नयन पनारे ॥
अतिही भ्रम माते बिन देखे * चाहत रूप श्यामको पेखे ॥

१ पानी २ बैरी ३ स्त्री ४ पशु.

रसना यही नेम गहि राख्यो * हरि बिन और न चाहत भाख्यो॥
जबते बिछुरे कुँवर कन्हाई * तबते भये सबै दुखदाई ॥
दो०-वोई निशि[1] वोई दिवस, वोई ऋतु वह मास ॥
बदले सबै सुभाव जनु, बिन हरि मदन[2] विलास ॥
सो०-चली औरही चाल, अब या ब्रजमें ऐसखी ॥
विमुख भये गोपाल, भये दुखद जे सुखद सब ॥
गृह कन्दरा सेज भइ शूली * शशिकी किरणि अग्नि सम तूली॥
सींचत अली मलैय[3] घसि नीरा * होत अधिक ताते उर पीरा॥
फूली अरुण फूल बन डारी * झरत देखियत मनहुँ अँगारी॥
हरि बिन फूल लगत सब कैसे * मनहुँ त्रिशूल शूल उर जैसे॥
तब इन तरुन अमृत फल लागे* अबते फल सब विष रस पागे॥
त्रिविधि[4] समीर तीर सम लागे * कोकिल शब्द अग्नि जनु दागे॥
तप्त तेल सम वारिद पानी * उठत दाह सुनि चातक बानी॥
सुनु सखि चातक दोष न दीजै * ज्यावे या पक्षीके जीजै॥
जैसे पिय पिय हम रट लावत * वैसेही कहि कहि वह गावत॥
अति सुकंठ पीतम हित मानी * क्षण नहिं रहत रटत पिय बानी॥
आप सुधा रस पी सुख पावै * टेरि टेरि विरहिनको ज्यावै॥
जो यह खग नहिं करत सहाई* लहत प्राग तो दुख अधिकाई॥
दो०-यापक्षी सम औरको, सुन सखि सुकृत समाज ॥
सफल जन्म है तासुको, जो आवै परकाज ॥
सो०-मगन सकल ब्रजबाल, ऐसे हरिके विरह बश ॥
नहिं बिसरत नँदलाल, सोवत जागत दिवस निशि॥

१ रात. २ कामदेव. ३ चन्दन. ४ तीनतरहकी. ५ मेह. ६ अमृत.

पथिक जात मधुवन तन हेरैं * ताहि धाय ब्रजतिय सब घेरैं ॥
कहत परहिं हम पायँ तुम्हारे * सुनहु बटोही बचन हमारे ॥
उतहै बसत कृष्ण ब्रजनाथा * कहियो तिनसों ब्रजकी गाथा ॥
तुम जु इन्द्रको यश नशायो * पुनि गिरि कर धर ब्रजै बचायो ॥
सो अब वह विरहा है आयो * चाहत हैं मन फेरि बहायो ॥
बरषत निशि दिन दृग घनकारे * बहत कुचन बिच सलिलपनारे ॥
ऊरध श्वास पवन झक झोरे * गर्जत शब्द पीर घन घोरे ॥
महावज्र दुख सुख द्रुम डारे * व्याकुल अंग सकल अति मारे ॥
व्यथा प्रवाह बढ्यो अति भारी * बूड़त निकल सकल ब्रजनारी ॥
चितवत मग सब नाथ तुम्हारो * जानि आपनो आइ उबारो ॥
गये मिलन कहि श्रीमुख बानी * अवधि बदीते सबै सिरानी ॥
तुम बिन तलफत प्राण हमारे * जैसे मीनै सलिलते न्यारे ॥

दो०-एक बार फिर आयकै, देहु सुदरशन श्याम ॥
तुम बिन ब्रज ऐसो लगत, ज्यों दीपक बिन धाम ॥

सो०-मिलते वेणु बजाय, अब वह कृपा भई कहा ॥
पुनि का करिहौ आय, प्राण गये ब्रज आयकै ॥

सुनहु पथिक त्वहि राम दुहाई * कहियो यह मोहनसे जाई ॥
तुम बिन राधेके तनु थाई * भई सबै विपरीतैं बनाई ॥
बदन छपाकर प्रीति छिपानी * भर रहगई कलंक निशानी ॥
अँखियाकुतों कमल पखुरीसी * सो अब मनहुँ रंग निचुरीसी ॥
आँच लगे कंचन जिमि साचो * तिमि तनु विरहानलको ताचो ॥
कदलीदलसी पीठ सुहाई * सो अब मानों उलटि बनाई ॥

१ मछली २ उकटी ३ चन्द्रमा ४ सोना

तुमरी सपति सकल नशानी * जारत मई कोकिला मानी ॥
अब सब साद मानकी नासी * है रहि तुम्हरे दरश पियासी ॥
चातक पिक मृग अलि कुल जाती * तब इनको देखत मनखाती ॥
अब तिनसों पूछत हैं धाई * तुम्हरे चरणकमल कुम्हिलाई ॥
ललितादिक सखियां लखि धाई * जानि अटा चढ़ि गय बढ़ाई ॥
मय यहि सखी तिन्हें अकुलाई * मिले रोयवै कठ लगाई ॥

दो०–सुधि बुधि सब तनुकी गई, रह्यो विरह दुख छाय
होन घहत दशई दिशा, वेगि मिलहु तिहिआय ॥

सो०–ऐसे निज निज हेत, कहत सँदेसो श्यामसों ॥
पथिकहि चलन न देत, होत साँझ ताको तहाँ ॥

विरह विकल सब व्रजकी बाला * हरि वियोग उर पीर विशाला ॥
हरि दरशनबिन कल नहि पावै * ज्यहि त्यहि कहि उर व्यथा जनावै
जब पपिहा बोलत निशि आई * कहत ताहि कोऊ अनखाई ॥
हौं तो विरह जरी संतापी * तू वन जारत रे खग पापी ॥
पिय पिय कहि अधरात पुकारै * मृढ़ मृतक ऍबलन कत मारै ॥
तू नहिं सुखित दुखित विन नीरा * तेउ न समुझत शठ परपीरा ॥
बरत बड़ा इतनी कठिनाई * हरिविन बोलत मनपर आई ॥
उपजावत विरहिन उर आरत * काहे अगिलो जन्म निगारत ॥
एक कहत चातकसों टेरी * हैं सारंग चेरी हम तेरी ॥
पौढे होहिं जहा सुखदाई * ऊँचे टेरि सुनावहु जाई ॥
गइ ग्रीषम पावसऋतु आयो * सब काहू चित चाव बढ़ायो ॥
तुम विन व्रजतिय डोलत ऐसे * नाव विना करयाकी जैसे ॥

१ स्त्रियोंको २ घर

दो०—मानैगे तेरो कह्यो, तेरे हित घनश्याम ॥
लेहु सुयश चातक बड़ी, लै आवहु सुखधाम ॥
सो०—सुनि चातकके बैन, कोऊ सखि ऐसे कहत ॥
यह बिहग सुख दैन, सखि स्वहिं प्यारो पीवते ॥

निशिदिन पिय पिय रटत विचारो * पियके विरह भयो जरि कारो ॥
स्वाति बूँद लगि रहत दुखारो * तज्यो सिंधुको जल करि खारो।
आप पीर पर पीरहि पावै * जियको जीवन नाम सुनावै ॥
प्रेमबाण लाग्यो जेहि होई * जानै व्यैथा प्रेमकी सोई ॥
कोऊ कहत कोकिलहिं टेरी * सुनरी सखी सीख यक मेरी ॥
बसत जहाँ हित कुँवर कन्हाई * फिरि आवहिं बारेक तहँ जाई ॥
तू कुलीन कोकिला सयानी * सबहिं सुनावत मीठी बानी ॥
तोसम कोउ नहीं उपकारी * जानतहौ विरहिन दुख भारी ॥
उपवन बैठि श्यामको टेरी * कहियो अबलन मैन्मथ घेरी ॥
श्रवैण सुनाय मधुर कल बानी * मनलै आव श्याम सुखदानी ॥
प्राणहुँ पलट मिलत नहिं एरी * सैंतहु बिकत सुयशकी ढेरी ॥
ह्वै हैं विन मोलन हम चेरी * गावहिं गोकुल कीरति तेरी ॥

दो०—कोऊ ऐसे कहि उठत, बरजहु बोलत मोर ॥
रह्यो परत नहिं टेर सुनि, विन श्रीनन्दकिशोर ॥
सो०—बोलत करत विहाल, मोरहु सखि वैरी भये ॥
बसे विदेश गोपाल, ये वनते न टरैं मरैं ॥

विरहमैंग्न यों ब्रजकी नारी * नहीं कृष्णसों पलभर न्यारी ॥

१ पीडा २ कामदेव ३ कान ४ डूबी हुई

रही कृष्ण छवि दृगन समाई * रसना कृष्ण नाम रट लाई ॥
मनमें गुणहिं सदा गुन हरिके * श्रवण रहे हरिको यश भरिके ॥
बसी श्याम मूरति उरमाहीं * बिसरत सुरत एक पल नाहीं ॥
बैठत उठत चलत घर बाहर * श्याम सनेह गुप्त अरु जाहर ॥
सोवत जागत दिन अरु राती * प्रीतम कृष्ण प्रीतिरस माती ॥
सब अँग कृष्ण प्रेमरस पागी * भई कृष्णमय सकल सभागी ॥
धनि सो प्रीति कृष्णसों लागी * धनि सो सुरति कृष्णरस पागी ॥
धनि सो सुख हरि संग विहारी * धनि सो दुख हरि विरह विचारी
धनिसु परेखो हरिसों होई * धन्य सरेखो हरिको होई ॥
धनिसो ज्ञान ध्यान धनि सोई * जप तप धन्य जो हरिहित होई॥
धन्य जन्म जो हरिको दासा * सब विधि धन्य जिन्हें हरि आशा

दो०-नंद यशोमति गोपिकन, निशि वासर हरिध्यान ॥
व्रजवासी प्रभु दासकी, आश रहे लगि प्रान ॥
सो०-बिसरे सब व्यवहार, और न दूजी गति कछू ॥
अंध लकुटिया धार, एक सुरति नँदनन्दकी ॥

अथ श्रीकृष्णजीकी यज्ञोपवीतलीला ॥

रहे जाय मथुरा हरि जबते * नितनव मोद होत तहँ तबते ॥
देवनि मन अभिलाष पुरावैं * निरखि निरखिदोउसुत सुखपावैं
परमानद मगन वसुदेऊ * सुखी सकल यादवगण तेऊ ॥
मुदित सकल मथुरा पुरवासी * देत सबन सुख प्रभु सुखरासी॥
एक दिवस वसुदेव सुजाना * बोले जे कुलमध्य प्रधाना ॥
करि आदर मानता बड़ाई * तिनसों कहि यह बात सुनाई ॥

१ मनमें २ दिन ३ इच्छा

राम कृष्ण अबलों दोउ भाई * ग्वालन मध्य रहे यदुराई ॥
यदुवंशिनकी रीति न जाने * ई अबहीं कुलधर्म अयाने ॥
ताते यह विचार अब कीजै * यज्ञोपवीत दुहुनको दीजै ॥
सुनि ये वचन सबन मन भाये * गर्ग आदि सब विप्र बुलाये ॥
पूछि सुदिन शुभ लग्न धराई * यज्ञकाज सब सौंज मगाई ॥
सकल तीरथन ते जल आये * राम कृष्ण तासों अन्हवाये ॥

दो०–सकल वेदविधि मंत्र पढ़ि, करि अभिषेक पुनीत ॥
दोउ भाइन तब गर्ग मुनि, दियो यज्ञउपवीत ॥

सो०–अन्त न पावै शेश, वेद श्वास जाको सकल ॥
ताहि दियो उपदेश, गायत्री गुरु गर्ग मुनि ॥

दियो दान वसुदेव अनेका * पुत्र सब द्विज[3] सहित विवेका[1] ॥
सब नर नारी मङ्गल गायो * बन्दीजनन द्रव्य बहु पायो ॥
लखि कौतुक सुरगण सुख पावै * वरषि सुमन दुन्दुभी[5] बजावैं ॥
अति आनन्द भयो सबकाहू * तात मात उर परम उछाहू ॥
पुनि यक दिन वसुदेव सज्ञानी * यह इच्छा अपने मन ठानी ॥
पण्डित भलो कहूं जो पैये * तो विद्या सब सुतन पढैये ॥
याहू तब यह बात बखानी * सदीपन पण्डित बड ज्ञानी ॥
रहें अवन्ती पुरके माहीं * तासम जग पण्डित कोउ नाहीं ॥
यह सुनि कृष्ण सकल गुणखानी * पितुके मनकी रुचि पहिचानी ॥
ह्वैकै नेमसहित दोउ भाई * विद्या पढ़न गये यदुराई ॥
वेद विदित सेवा हरि कीन्ही * अल्प काल विद्या सब लीन्ही ॥
लखि प्रभाव गुरु अति सुख पायो * जानि जगपति मन हर्षायो ॥

१ विवेकना २ जनेऊ ३ ब्राह्मण ४ ज्ञान ५ नगाड़

दो०–तब हरि गुरुसों जोरि कर, बोले सहित सनेहु ॥
गुरुदक्षिणा कछु चाहिये, माँगिसो हमसों लेहु ॥

सो०–तब गुर कह्यो विचारि, तुम प्रभु कर्ता जगतके ॥
बूझि लेहुँ निज नारि, जो वह कहै सो दीजिये ॥

तब संदीपन तिय पहँ आये * वचन कृष्णके ताहि सुनाये ॥
देन कहत हरि दक्षिणा हमरो * माँगै कहा सो बूझै तुमरो ॥
मरे हुते ताके सुत दोइ * तिन माँगे हरिसों पुनि सोइ ॥
कृष्ण सकल जीवनके स्वामी * जल थल सब जिनके अनुगामी ॥
गये बहुरि भक्तन सुखकारी * जग उतपति पालन लयकारी ॥
चाहैं कियो होय सब सोई * आनि दिये गुरुके सुत दोइ ॥
भये सुखी द्विज अरु द्विजनारी * मन संताप मिट्यो दुख भारी ॥
है प्रसन्न गुरु आशिष दीन्हो * नमस्कार प्रभु गुरुको कीन्हो ॥
गुरु आयसु ले पुनि दोउ भाई * आये मधुपुरि जन सुखदाई ॥
तात मात लखि अति सुख पायो * भयो मनोरथ सब मन भायो ॥
राज काज पुनि प्रभु सब करइ * उग्रसेन आयसु अनुसरई ॥
हित जन परिजन नर अरु नारी * सुखी सकल हरिबदन निहारी ॥

दो०–उद्धव अरु अक्रूर ले, सखा श्यामके साथ ॥
मिलि बैठत खेलत हँसत, इनके सँग यदुनाथ ॥

सो०–ब्रजबासिनको ध्यान, ब्रजवासी प्रभुके सदा ॥
यदपि ब्रह्म सुखखान, तदपि भक्तवश प्रेमरस ॥

---

१ सुख

रुक्मिणी चरित्र

(क्षेपक)

रुक्मिणीचरित्र.

दो०–बलदाऊको संग लै, कुन्दनपुर हरि जाय ॥
भीष्मक नृप तनया सुक्मिमि, लाये असुर नसाय ॥

कहहु कथा सो मम समुझाई * जिहि प्रकार रुकमनि हरि पाई ॥
सुनु[1] भक्त यह कथा सुहाई * कही पुराननमें जस गाई ॥
देश विदर्भमाझ इक सुन्दर * कुन्दनपुर कहि नाम नगर[2] कर ॥
भीष्मक नाम नृपतिही ठामा * जासु सुयश जग भयउ ललामा ॥
तासु सदन लिय प्रिय अवतारा * लिये बुलाय गनेक[3] तिहि बारा ॥
जासु नाम रुकमनि विनु राखा * रमासमान शील गुण भाखा ॥
रूप निधान महा चतुराई * परनैंहि[4] आदिपुरुष इहि भाइ ॥
गनकन इमि जब नृपसन भाखा * भयउ मुदित मन बढ़ि अभिलाखा ॥
कछुक दिवस बीते यह बाला * भइ विवाहजोग सुखशाला ॥
करति कुतूहल नाना रंगा * विहरति हँसति सखिनके संगा ॥
एकदिन मुनि नारद तहँ आये * निरखि क्षादि द्वारका सिधाये ॥
कहा कृष्ण सन असतिन नाईं * भीष्मक भूपसुता इक पाई ॥

दो०–सो गुनखान रमासम, सब प्रकार प्रभुजोग ॥
ताको ब्यरिये कृपानिधि, बना सुभग संयोग ॥

नारदसन हरि सुनि इहि गाथा * निसदिन दिय मन ताकर साथा ॥
इहि विधि हरि रुकमनि सुधपाई * सुनहु कृष्ण सुधि रुकमनि पाई ॥
एक समैं दिशि दिशि के याचक * कुन्दनपुर आये शुभ वाचक ॥
किये चरित्र हरीने जैसे * जन्म लियो उन मधुपुरि[6] तैसे ॥

१ सुन्दर २ घर ३ ज्योतिषी ४ ब्याहेंगी ५ सुनकी घर ६ मथुरा

गाय गाय तिन सबन सुनाये * लोगलुगाइ सब जुरि आये ॥
नगरनिवासी सुनि हरिगाथा * कहा नृपति सन जोरे हाथा ॥
चढी अटा रुकमनि तिहिकाला * श्रवैन परी हरिकथा रसाला ॥
सब सुधि विसरगइ इक संगा * उपजी उरधर प्रेमतरंगा ॥
इमि हरिसुध रुकमनि सुनिपाई * रहति सदा तिय लगन लगाइ ॥
प्रात अन्हाय मृत्तिका लावै * गौरी प्रतिमा सुघर बनावै ॥
रोरी अक्षत पुष्प चढावै * धूप दीप नैवेद्य लगावै ॥
जोरि पानि सिर नाय वहोरी * विनती करति गौरिकी ओरी ॥

दो०–गवरिमात अबकृपा करि, नन्दनन्दन पति देहु ॥
अधिक करो विनती कहा, जान हृदयकी लेहु ॥

इहि विधि नितप्रति पूजन ठानें * कृष्ण कृष्ण रट उरमें आनें ॥
इकदिन खेलति सखियनपासा * निरखि भूपमन भयउ उदासा ॥
भई विवाहयोग्य अब बाला * हेरियै वरघरकइ इहि काला ॥
जिहि घर कन्या दीरघ होई * जपतप पुनि लागत नहिं कोइ ॥
बन्धु बुलाय नृपति असुकहइ * योग्यविवाह सुता मम अहई ॥
इहि सम रूपशील गुनगाना * हेरिय वर सुन्दर कुलधाना ॥
सुनत तिनतु बहु भूपन केरे * कहे रूपगुनशील घनेरे ॥
तिनकर कहा नदिय नृपकाना * ज्येष्ठ तनय तब रुकम बखाना ॥
नगर चन्देरी करवर राजा * है शिशुपाल रूपगुन साजा ॥
देशि २ जस जाकर छावा * जिहिघर राज सदा चलिआवा ॥
फौज फटगा अगनित जाके * इवनों माहि कहो किहि कामे ॥
रूपशीलसौं सब गुन आगर * दूर्में दंती जाके बाखर ॥

१ कान २ मूरत ३ ढुंढना चाहिये ४ हाथी ५ घर

दो०—सब विधि सौं अपनी सरिस, शीलवन्त बलवान ॥
ताकहँ कन्या दीजिये, लीजे सुजस निदान ॥

मुनी न नृप कछु ताकर वानी * रुकमकेश तब कहा बखानी ॥
रुक्मनि कृष्ण चन्द्र कहँ दीजै * यदुकुल सन नृप नातौ कीजै ॥
सुनि भूपति लघुसुतकी वानी * है प्रसन्न असकहा बखानी ॥
कहानीक सुत मोमन भावा * परम ज्ञानकिहि तोहि सिखावा ॥
लघुदीपसन कछू न भाषा * सारवचन कछु मानहि राजा ॥
अस आशय नृप हृदय विचारा * यदुकुल आदिपुरुष अवतारा ॥
तिनवर गृह रुकमनिजो दीजै * तौ सुख सुयश जगतमें लीजै ॥
यह सुनि सकल सभा अमभाखा * भली भूप कीनी अभिलाखा ॥
सुनत समासद वच इहि भांती * बोला रुक्म दांति रदपाती ॥
अवहि सभासद सकल गवारा * समुझत नाहिं कृष्ण व्यवहारा ॥
पटदश बरष नन्दघर रहेऊ * तव अहीर सब लोकन कहेऊ ॥
कामरि ओढी गऊ चराई * बनबिच बैठि छाक छितिखाई ॥

दो०—भेद न जान्यौ जातकौ, नहीं ठाम ठिक ठाक ॥
वालग्वाल सँग जाय बन, खात फिरतहैं छाक ॥

कोउ कह नन्दतनय तिहि नामा * कोउ वसुदेवपुत्र परिनामा ॥
अवलग भेद न काहू जाना * नित २ मति सब धरत बखाना ॥
हमहि सबन मन पूछत आजा * कवल यदुवंशी भये राजा ॥
है शिशुपाल चन्देरी राजा * ताहि पठैये तिलक समाजा ॥
यह सुनि भूप मर्द्द है रहेऊ * रुक्म गनकगन बोलत भयऊ ॥
शुभदिन सोधि विप्र बुलवाई * पठइ नृप शिशुपाल सगाई ॥
लीनैं बोलि पुरोहित राजा * लइ हाथ धरि शुभदिन साजा ॥

१ बराबर २ दांतोंकी पंक्ति ३ कलेवा ४ चुपका

कहा विप्र भीष्मक ढिंगआइ * लई हाथ धरि नृपति सगाई ॥
सजि बरात आवहिं इहिठामा * सबसन कहा विनय परिनामा ॥
सुनि यह भीमक भये उदासा * तुरत चले रनवास सुपासा ॥
प्रकट जाय पटरानिहि कहेऊ * सोचविचार नहिं कछु करेऊ ॥
पुनि नृप मुख्य प्रधान बुलावा * समाचार कहि सकल सुनावा ॥

दो०–मंगल साज लगे रचन, सजि सजि रथ हय[१] दन्त[२] ॥
घर घर मंगल गाव तिय, सजे कलस सब पन्थ[३] ॥

इहि अंतर इक सहचरि आई * रुकमनि सन अस कहा बुझाई ॥
सुनतहि उर चिंता बहु बाढ़ी * जिहि जिय कृष्णलगन अति गाढ़ी
द्विज बुलाय द्वारिका पठावा * पहुचा नगर निरखि सुख पावा॥
दीन पत्रिका कृष्णहि जाई * जो सप्रेम रुकमनी पठाई ॥
बूझा कृष्ण द्विजहि सिरनाई * कथा सकल कह मोहि सुनाई ॥
विप्र कथा पुनि सकल बखानी * जिहि विधिसों भइ प्रकट कहानी॥
पुनि पत्रिका बाचि यदुनाथा * कहा द्विजहि चलिहौं तव साथा
लैहों रुकमनि असुर सँहारी * करहु न सोच विप्र हितकारी ॥
यह कहि सनि तनवसन अनूपा * गये जहां बैठे यदुभूपा ॥
जिहि विधि द्विनकर पाती आई * कुदनपुरकी बात सुनाई ॥
जो तुम कुंदनपुर कहँ आवहु * सकल सैन लै सँग सिधावहु ॥
करहु न किङ्कुमन पुत्र ल्राई * करि विवाह घर आवहु भाई ॥

दो०–यह सुनि द्विजके संगही, कीनउ कृष्ण पयान[४] ॥
बन उपबन सरिता लखत, परा न मगश्रम जान[५] ॥

जाय कृष्ण कुंदनपुर देखा * मंगलचार होत अनलेखा ॥
उत शिशुपाल सैनवद साजैं * चढ़ि आवा वह बाजन बाजैं ॥

१ घोडा २ हाथी ३ मार्ग ४ नौकरनी ५ गमन

सुनि भीष्मक शिशुपाल आगमन * सनमुख गयेउ सग भ्रातागन ॥
अति आदर आगौनी कीनी * सबहींकों पहिरावनि दिनी ॥
हय हाथी भूषण बहु दीने * लै आये पुर डेरा कीन्हे ॥
पुरवासिन यह सुधि सुनि पाई * उग्रसेन सब कहा बुझाई ॥
तब भूपति बलदेव बुलाये * बहुत सैन दे तुरत पठाये ॥
कृष्णचन्द्र कुंदनपुर आये * समाचार रुक्मनि नहिं पाये ॥
अति उदास दृगे बरसत नीरा * बदन मलिन अति विकल सरीरा ॥
कहति मनहिमन सोच विचारी * किहि कारन आये न मुरारी ॥
इहि अंतर सो द्विज तहँ आवा * कृष्ण आगमन संपदि सुनावा ॥
सुनि आगम रुकमनि सुखछावा * जनु तापस तपकर फल पावा ॥

दो०–कियौ मान अति विप्रकौं, धन पट सगरे दीन ॥
पुनि द्विज भीष्मक ढिंग कह्यौ, कृष्ण आगमन कीन ॥

सुनत भूप आतुर उठि धावा * चलत चलत हरिके ढिंग आवा ॥
निरखि भूप हरियुत बलरामा * जोरि हाथ किय दंड प्रणामा ॥
अब प्रभु आय दर्श तुम दीना * मोर मनोरथ पूरन कीना ॥
यों कहि भूप कृष्णके पासा * गयेउ धाम निज दै जनवासा ॥
लखि २ छबि हरि पुरके लोगा * कहहिं अहहि वर रुकमिनियोगा
इहि अंतर ते दोनोहु भाई * देखन आये पुर अँमराई ॥
जहँ २ जाय देखि दोउ भाई * तहँ २ जुरहि बहुत जन आई ॥
दरि कटक चंदेलि नृपकेरा * पुनि मसन आये निजडेरा ॥
यह सुधि यदू रुक्म सुनि पावा * कह सरोस हरि वचन बुलावा ॥
पितुसन कहि कछु वचन कुमाजा * गयेउ जहा चन्देली राजा ॥

१ आंख २ मुख ३ कृष्ण ४ बीचमें ५ शीघ्र ६ घर. ७ आमोंकी बगीचियां

कह्यौ कृष्ण दाऊ यहँ आये * रहहु सजग कपटी जग गाये ॥
सुनि शिशुपाल नृपति घबरावा * रुक्म सुबलहि बिलखि समुझावा॥

दो०–जान चँदेली नृप बिकल, करि आपनी बरान ॥
जरासिंध कहने लग्यौ, धल अपनौं चित ठान ॥

जिहि जिहि बिधिसन भई लराई * कही कथा सबही समुझाई ॥
कहा बहुरि इमि रुक्म बखानी * मम सनमुख जनि करहु गलानी
धेनु चरावत बेनु बजावत * सो कहा मम आगै रण आवत॥
सब यादव बलदेव समेता * मारि गिरावौं यहँ रण खेता ॥
इमि समझाय रुक्म घर आवा * होन लगे नृप मेदन बधावा ॥
तब रुकमिनि एक बिप्र बुलावा * कृष्ण निकट अस कहन पठावा॥
आन विवाहदिवस मम अहही * देवीपूजन कर पन रहही ॥
नगर निकट पूरब दिशिओरा * है मन्दिर दुरगाकौ धौरा ॥
दिन द्वै धरी रहहि जब आई * करहु अंबिका पूजन जाइ ॥
यह कहि द्विज निज सदन सिधावा* रुकमिनि रथकौं तुरत मगावा ॥
देवीपूजन चली सयानी * सखियन मध्य रमा जनु आनी
यह सुधि पाय भूप शिशुपाला * पठये सूरबीर रछिपाला ॥
सखिन मध्य सजि सकल सिंगारा* चली रुकमिनी रूप अपारा ॥

दो०–सो असुरन बिच लसति अस, श्यामघटाबिच चन्द॥
जाय रुकमिनी देविकौ, पूजन कियौ सुछन्द ॥

विप्र वधुन भोजन करवावा * अँसन वसनँ बहु भाँति लुटावा॥
लै असीस द्विज कामिन केरी * दीन परिक्रम प्रीति घनेरी ॥
चंदमुखी बहु चंपक बरनी * पिक बयनी बारन गति हरनी॥
सखिन संगले करि मृगनैनी * चली लौटि चितवति सुखदैनी॥

१ घर २ लक्ष्मी ३ भोजन ४ वस्त्र

तदहि कृष्ण रथ चढ़ि तहँ आयें * चहुँ दिशि रक्षक शस्त्र उठाये ॥
पूजि गवरि ज्यौं भवन सिधारी * कह्यौ सखी हरि आये प्यारी ॥
लखिहरि रथध्वज रुकमनिदरखी* प्रतिमा प्रकट प्रेमकी बरखी ॥
सखि कर गहे मोहनी डारें * मृदु मुसुक्यानि मदगति धारे ॥
आगे कृष्णचन्द्र चलि आये * चकित भये रक्षक भय छाये ॥
अतर पटकहँ पटकत भयेऊ * रूप मोहिनी रुकमिनि ठयेऊ ॥
मूर्छित भये भूप रखवारे * भृकुटी धनुष नैनसर मारे ॥
चित्र लिखेसे सब जन भयेऊ * रुकमिनि निकट कृष्णरथ गयेऊ॥

दो०–रुकमिनि बाँह पसारिके, लई कृष्ण सुखधाम ॥
उल रथ बैठारी तुरत, पूरन प्रीति सकाम ॥

नृपत तन मन सकुचन भारी * छोड़ि रुकमिनी सग सिधारी ॥
इहि अन्तर बलदेव सिधारे * सग सैन बह देत नगारे ॥
कितक दूरि रथ जब चलि आवा * तब हरि रुकमिनि कहँ समझावा
जिन चिय सोच करहु सुकुमारी * करहु विवाह वेदविधि सारी ॥
अस कहि निजमाला गल डारी * बाम बाहँ तनक्हु बैठारी ॥
पुनि प्रभु पाञ्चजन्य धुनि कीन्ही * भई शत्रु सेना बलहीनी ॥
घर २ प्रति अस चरचह भयऊ * कृष्ण रुकमिनी हरि लै गयऊ ॥
सुनि शिशुपाल जरासिंध राजा * भये क्रोध साजि शस्त्र समाजा ॥
सूरबीर साँवंत लै सगा * सनमुख चले करन रनरगा ॥
बोले जाय शस्त्र करि आडे * भागहु जनि रनमें रह ठाडे ॥
छत्री सूरबीर बल करहीं * रनमें पीठ देत जिय डरहीं ॥
यह सुनि यादव सनमुख आये * इततें असुर अस्त्र गहि धाये ॥

१ मूर्छि २ हाथ ३ शत्रु ४ योद्धा

दो०–तीर तुपक तोमर विविध, चलन लगे बहसस्त्र ॥
रुकमिनि सासति विकल व्है, मानों दूसरि भस्त्र ॥

निरखत सुर रन चढ़े विमाना * यादव असुर लरत बलवाना ॥
द्वद्वयुद्ध दोउ दल करहीं * घायल घूमि घूमि महि परहीं ॥
रुधिरनदी चढ़ि चली अपारा * कायर कपत भजत चहु द्वारा ॥
लरत कबध लयैं करवारा * परति लोथ परि लोथ अगारा ॥
चुनि चुनि सुन्दर सीस त्रिसूली * मुडमाल पहिरत उर फूली ॥
भूत पिशाच सग बहुतेरे * नाचत कौतुक करत घनेरे ॥
गिध्र शृगाल स्वाँन मयमाते * ऐंचि ऐंचि लरि लोथनखाते ॥
काक कक खँग मास अहारी * खावहि आत निकारि निकारी ॥
लखत सुरन कर हरि बलरामा * सब दलमारि जारि संग्रामा ॥
जरासिंध शिशुपाल सग तब * घायल वाहनी लियें साथ सब ॥
ठाढ़ भये लिये कठिन निषगा * सोहे जनु पर हीन पतगा ॥

दो०–लै उसास शिशुपाल तब, कहन लग्यौ निलखाय ॥
घोरयुद्ध अब ठानिकै, मरिहौं सगर जाय ॥

नाहितौ परिहरिकै सब आसा * करिहौं योग ठानि बनवासा ॥
राजनीति कहि कहि बहुदावा * जरासिंध भूपहि समझावा ॥
इहि प्रकार घायल करि साथा * कीन पयान चन्देली नाथा ॥
यहँ शिशुपाल प्रातलखि आगम * करनलगी मगलविधि आगम ॥
सनमुख छीक भई तिहि काला * फरका वाम नयन सिर हाला ॥
इहि अतर कोउ आन पुकारा * तवसुत अटक सकल हरि मारा ॥
मिली न रुकमनि भई हँसाइ * भजि आये निजनीय बचाई ॥

१ तोप २ लुहारकी धौंकनी ३ कुत्ते ४ पक्षी ५ कृष्ण ६ बाण

सुनि शिशुपाल मान यह बाता * भूमि भई मुरछे सब गाता ॥
सुनि भीपाल जरासिंध मागे * रुकम सक्रोध कहन अस लागे ॥
ऐहै कृष्ण कहा मम आगे * लाऊ मारि रुकमिनिहि जागे ॥
तौ मम नाम रुकम सुनि माऊ * नातर देउ न पुरमें पाऊ ॥
अस कहि साजि सैन चतुरंगा * इक अक्षौहिनि वीर अभंगा ॥

दो०–जिमि शृगाल केहरि निकट, दीपक पास पतंग ॥
तिमि सो हरि सन्मुख चल्यो, करन हेत रनरंग ॥

कृष्णचन्द्र सनमुख चढिधावा * जिमि पतंग दीपकपर आवा ॥
जाय निकट अस कहा बखानी * रे गँवार मूरख अज्ञानी ॥
तू कह जाने नृप व्यवहारा * चोरि दूध दधि खावनहारा ॥
हम ब्रजबासी हैं न अहीरा * अस कहि मारे अतिखर तीरा ॥
तिनहि काटि हरि दिय निरबाना * हयसमेत सारथी उदाना ॥
गिरा धनुष कर लिय करवाला * रथतें उतरि चला गहि ढाला ॥
कृष्ण निकट आतुर चलि गयऊ * करन हेत रनरंग कहऊ ॥
जिमि शृगाल केहरि सन जाई * अरु पतंग दीपक न समाई ॥
ज्यौं इव गदा दई रथ ओरी * बाधा हरि गहिकै यह डोरी ॥
लैकर खड्ग हननचित चाहा * गह्यौ हाथ रुकमिनि करिहाहा ॥
मारहु जिन भाई यह मोरा * छाँड़हु नाथ दास हैं तोरा ॥
मारे याहि अयश जग छै हैं * मंगल समय अमंगल हुइ है ॥

दो०–अस रुकमिनि समुझाय हरि, इत आये बलराम ॥
निरखि रुकम गति कह्यौ हरि, कहा कियौ यह काम

छाँड़हु याहि सगा तव साला * लै कलंक कुल करहु न काला ॥
अस कहि छाड रुकमहूँ दीना * समाधान रुकमिनि करलीना ॥

१ शरीर २ सेना ३ तरवार ४ सिंह ५ तश्तरी

लखिसनमुख हलधरहि रुकमिनी * छपजी उर सकोच अतिघनी ॥
अपने पतिसन कहा बुझाई * हांकहु रथ कहा वेर लगाई ॥
सुनि हरि रथ द्वारा तनु हाका * गा निजपुर भीष्मक सुत वाका ॥
निजलोगन सन कह सकुचाई * यहँ न रहौं मरिहौं कहु जाई ॥
तव तिन विविध भाति समुझावा * राजनीति मारग दरसावा ॥
कहा रुकम तब सबन बुझाई * जियत न देउँ नगर पद भाई ॥
यह मम पन गहि कृष्ण न लाऊँ * तौ न देउं पुनि निजपुर पाऊँ ॥
अस कहि तहँ इकनगर बसावा * नाम भोजकट प्रकट रखावा ॥
रामकृष्ण द्वारा ढिग आये * उडी रेणु नभ दृश दिशिछाये ॥
प्रथमहिं पुरवासिन सुधि पाई * खवरि जाय रनवास सुनाई ॥

दो०–हौनलगे मगल विविध, करन लगी तियँ गान ॥
कचन कलस सजायकें, रचि ध्वजि तोर्न निशान ॥

उग्रसेन वसुदेव समारे * वह यादव लै सग सिधारे ॥
करि कुलरीति भवन लै आये * लखि सोभा पुर इन्द्र लजाये ॥
यथायोग्य सबकर सनमाना * कीनेउ कृष्णचन्द्र भगवाना ॥
पुनि निजमदिर कीन प्रवेशा * सुयश छयेउ यह देश विदेशा ॥
इकदिन कृष्णचन्द्र असुरारी * आये यादव सभा मझारी ॥
सूरसेन वसुदेव आदि जहँ * बडे बडे यादव बैठे जहँ ॥
करि प्रणाम अस कहा बहोरी * सुनहु सकल विनती इक मोरी ॥
जो रननीति भामिनी लावै * सो राक्षसी निवाह कहावै ॥
सूरसेन सुनि हरिकी बानी * लीने बोलि गँनकगन सानी ॥
यहां तिनन्ह सँन अस समझाई * एसउ विवाह मुहूरत भाई ॥
सुनि तिन पुस्तक लै निज हाथहि * सोधि मुहूरत दिय यदुनाथहि ॥

१ स्त्रियां २ सुवर्णके कलस ३ ज्योतिषियोंके समूह

उग्रसेन निज सचिव बुलावा * रचहु विवाह साजश्रुति गावा ॥
दो०–सुरत सबन मिलि के रची, तय्यारी बहु भांति ॥
घर घर बजत बधावने, गावत सुन्दरि पांति ॥
देश देश कहँ पत्र पठाये * बाचत पाडवादि उठि धाये ॥
भीष्मक नृप यह सुधि सुनि पावा * भूषण बसन समाज सजावा ॥
रथ शिबिरौ हाथी हयखासा * बहु आयुध दासी अरु दासा ॥
करि संकल्प मनहि इक्माथा * पठय द्वारिका द्विजके हाथा ॥
जिहि दिन सुधा विवाह मुहूरत * पहुचा द्विज मग बूझत बूझत ॥
सब सामान जाय द्विज दीना * सादर नृपति सीस धरि लीना ॥
कीन वेदविधि कृष्ण विवाहू * कुलदेवी पूजी अति छाहू ॥
अति आनन्द नगरमहँ छावा * घर घर प्रति बहु बजत बधावा ॥
पुनि नृप जे दिशि दिशि ते आये * सादर सबन सदन पहुचाये ॥
दीने दान द्विनन मनमाने * मागध वदीजन सनमाने ॥
रुक्मिनिचरित कहा यह गाई * सुनहि सुनावहि जो चितलाई ॥
सुख संतति संपति बहु पावहि * अतकाल बैकुठ सिधावहि ॥

अथ सुदामचरित्र.

दक्षिण दिशि इक द्राविड़ देशा * बसत जहा द्विज वनिक नरेशा ॥
घर घर प्रति हरिभजन प्रधाना * करत सकल तप धर्म सुदाना ॥
साधु सन्त गो द्विज सनमाना * हरितन कछू न जानत आना ॥
तिहिठा विप्र सुदामा नामा * कृष्णचन्द्र गुरु भ्रात अकामा ॥
अति मलीन तन बसनविहीना * परम दरिद्र कियौ पुनि छीना ॥
तृन आच्छादित हतौ निवासा * भोजनहित कछु अन्न न पासा ॥

१ नौकर. २ वेद ३ पालकी ४ घोड़े ५ अन्न ६ ब्राह्मण

लखिसनमुख हलधरहि रुक्मिनी * उपनी उर सकोच अतिघनी ॥
अपने पतिसन कहा बुझाई * हाकहु रथ कहा बेर लगाई ॥
सुनि हरि रथ द्वारा तनु हाका * गा निजपुर भीष्मक सुत वाका ॥
निजलोगन सन कह सकुचाई * यहँ न रहौं मरिहौं कहु जाई ॥
तब तिन विविध भाति समुझावा * राजनीति मारग दरसावा ॥
कहा रुक्म तब सबन बुझाई * जियत न देउँ नगर पद भाई ॥
यह मम पन गहि कृष्ण न लाऊँ * तौ न देउ पुनि निजपुर पाऊँ ॥
अस कहि तहँ इकनगर बसावा * नाम भोजकट प्रकट रखावा ॥
रामकृष्ण द्वारा ढिंग आये * उडी रेणु नभ दृश दिशिछाये ॥
प्रथमहिं पुरवासिन सुधि पाई * खबरि जाय रनवास सुनाई ॥

दो०–हौनलगे मगल विविध, करन लगी तिर्यं गान ॥
कंचन कलस सजायके, रचि ध्वजि तोर्न निशान ॥

उग्रसेन वसुदेव समारे * वह यादव लै सग सिधारे ॥
करि कुलरीति भवन लै आये * लखि सोभा पुर इन्द्र लजाये ॥
यथायोग्य सबवर मनमाना * कीनेउ कृष्णचन्द्र भगवाना ॥
पुनि निजमदिर कीन प्रवेशा * सुयश छयेउ यह देश विदेशा ॥
इकदिन कृष्णचन्द्र असुरारी * आये यादव सभा मझारी ॥
सूरसेन वसुदेव आदि कह * वडे वडे यादव वैठे जहँ ॥
करि प्रणाम अस कहा बहोरी * सुनहु सकल विनती इक मोरी ॥
जो रनजीति भामिनी लावै * सो राक्षसी विवाह कहावै ॥
शूरसेन सुनि हरिकी वानी * लीने बोलि गैनवगन सानी ॥
कहा तिनहु सँन अस समझाई * लखउ विवाह मुहूरत भाई ॥
सुनि तिन पुस्तक लै निज हाथहि * सोधि मुहूरत दिय यदुनाथहि ॥

१ स्त्रियां २ सुवर्णके कलश ३ ज्योतिषियोंके समूह

उग्रसेन निज सचिव बुलाया * रचहु विवाह साजश्रुति गाथा ॥
दो०–तुरत सबन मिलि कै रची, तय्यारी बहु भांति ॥
घर घर बजत बधावने, गावत सुन्दरि पांति ॥
देश देश कहँ पत्र पठाये * बाजत पाटवादि उठि धाये ॥
भीष्मक नृप यह सुधि सुनि पावा * भूषन बसन समाज सजावा ॥
रथ शिबिरै हाथी हयग्रामा * बहु आयुध दासी अरु दामा ॥
करि संकल्प मनहिं रुक्माधा * पठय द्वारिका द्विजके हाथा ॥
जिहि दिन शुधा विवाह मुहूरत * पहुँचा द्विज मग सूझत सूरत ॥
सब सामान जाय द्विज दीना * सादर नृपति सीस धरि लीना ॥
कीन वेदविधि कृष्ण विवाहू * कुलदेवी पूजी अति चाहू ॥
अति आनन्द नगरमहँ छावा * घर घर प्रति बहु बजत बधावा ॥
पुनि नृप जे दिशि दिशि ते आये * सादर सबन सदन पहुंचाये ॥
दीने दान द्विजन मनमाने * मागध बंदीजन मनमाने ॥
रुक्मिणिचरित कहा यह गाई * सुनहिं सुनावहिं जो चितलाई ॥
सुख संतति संपति बहु पावहिं * अन्तकाल वैकुंठ सिधावहिं ॥

अथ सुदामचरित्र.

दक्षिण दिशि इक द्राविड़ देशा * बसत जहां द्विज वनिक नरेशा ॥
घर घर प्रति हरिभजन प्रथाला * करत सकल तप धर्म सुढाला ॥
साधु संत गो द्विज सनमाला * हरितज कछु न जानत आना ॥
तिहिठां विप्र सुदामा नामा * कृष्णचन्द्र गुरु भ्रात अकामा ॥
अति मलीन तन वसनविहीना * परम दरिद्र कियो पुनि छीना ॥
तृन आच्छादित हतो निवासा * भोजनहित कछु अन्न न पासा ॥

१ गोसा. २ वेद. ३ पाल्की. ४ घोड़े. ५ अस्त्र. ६ ब्राह्मण

सुदामचरित्र.

इक दिन तासु वधू सुखदाई * दारिद दुखत अति अकुलाई ॥
डरपति कपित गै पतिपासा * बोली वचन निसासि उदासा ॥
प्राणनाथ दारिदके मारे * अब हम तुम अति भये दुखारे ॥
परम मित्र तव कृष्ण विलासी * त्रिभुवननाथ द्वारकावासी ॥
जो तुम नाथ जाहु तिहिपासा * तौ दुख दूर होय अनयासा ॥
वे हैं प्रभु त्रिभुवनके नायक * जीवन चार पदारथ दायक ॥

दो०–इहि विधिसों जब तिय कहे, वचन सुखद समुझाय ॥
कह्यो विप्र कछु विन दयें, कृष्ण न देत अघाय ॥

मैं निहचै अपने चित चीन्हा * काहू न कछू जनमें दीना ॥
जो तुव वचन मान तह जैहौं * पै बिनदयें कौन निधि पैहौं ॥
सुनि इमि वचन विप्रकी दौरा * परम पुरान वसन इक फारा ॥
तंदुल तनक बाधि तामाहीं * दीन भेटहित प्रभुके ताहीं ॥
लै लकुटी कर लोटा डोरी * पति सनमुख धरि दीन्हि बहोरी ॥
लोटा डोरि कंध द्विज धारा * काख पुटरिया तंदुल वारी ॥
लै लकुटी गणपति उरध्याई * चला द्वारिका कृष्ण मनाई ॥
चलत बाट मनही मनमाहा * सोचा विप्र कर्म धन नाहीं ॥
पै आनन्दकन्द प्रभु केरा * हैं हैं दरसन भाग बड मेरा ॥
चलत चलत चिंतित इह राते * पहुचा पुरी यामत्रय बीते ॥
चहुदिशि उदधि मध्य सो अहही * प्रफुलित वन उपवन छविलहही ॥
कमलनु कलित तडाग अनेरा * बापी सुगढ एकत एरा ॥

दो०–ठौर ठौर गन गउनके, फिरत चरत मृगपांति ॥
ग्वाल बाल सब निडर ह्वै, करैं खेल बहु भांति ॥

---

१ स्त्री २ सहजमें ३ आदरण ४ स्त्री ५ पुराना ६ चावल ७ लकुटी ८ प्रहर

वन उपवन शोभा लसत, गे द्विज पुरीमझार ॥
देखत भामिनि मणि जटित, कंचन मंदिर चारु ॥
तिन पट परत प्रभा रविकेरी * जगमग होति जोति बहुतेरी ॥
ठौर ठौर बिच ठये अथाई * बैठे यदुवंशी इहिं माई ॥
सुन्दर इन्द्र समासी जोरे * तिन कहँ निरखि शीस सुर ढोरे ॥
हाट बाट चौहट चहु फेरा * है रह्या वनिज वस्तु अन केरा ॥
सदन सदन जहँ तहँ विधि नाना * होत दान हरियश बखाना ॥
नगरनिवासी सकल सुजाना * करत अनन्द भोग मन माना ॥
लखन लखत यह चरित सुहावा * बूझत हरिमन्दिर द्विज आवा ॥
सिंह पवरिपर पद तिहि ठयऊ * डरत डरत किहँ बूझत भयऊ ॥
इहि मंदिर पैठहु द्विज राई * सन्मुखही बैठे जदुराई ॥
रतनसिंहासन ऊपर राजै * शीस मुकुट पीतांवर साजै ॥
सुनि यह वचन सुदामा तावर * पैठा भवन लखे करनाकर ॥
देखत द्विज हरि दीनदयाला * तजि सिंहासन नयनविशाला ॥
दो०–भेटे आगे आय प्रभु, लै गे भवन सप्रीति ॥
बैठन सिंहासन दियौ, बोले वचन विनीति ॥
पांवधोय चरणामृत लीना * चंदनादि लै पूजन कीन्हा ॥
जोरि हाथ जदुनाथ सुदामहि * बूझा कुशल गेहयुत बामहि ॥
कहा विप्र तव चरन प्रसादा * नाथ कुशल सब रहित विषादा ॥
यह चरित्र लखि बैसु पटरानी * दशपट सहस गोपिका सयानी ॥
मनमहँ करहिंसु संशय भारी * दिव दिव करहिं नेगि विसारी ॥
अरु जे यदुवंशिनु हरि देखे * मनही मन भाषत इहि लेखे ॥

१ वनीचा २ यो ३ कृष्णचन्द्र ४ गो. ५ आठ ६ चतुर

दीन मलीन निपट तन छीना * परम दरिद्री बसनविहीना ॥
इहि द्विज कवन पूर्व तप कीन्हा * जिहिं जगपति अस आदर दीन्हा॥
अतर्यामी कृष्ण सुजाना * तिहि छिन मनकर मनकी जाना॥
तिनकर संसय मेटनकाजा * विप्र सुदामासन महराजा ॥
गुरु घरकी गंथ गूढ़ पुरानी * कहन लगे इहिविधि मृदुवानी ॥
वह सुधि है किन तुम कहु भाई * जो कछु आपन परवनि आई ॥

दो०–पठये इक दिन गुरु तिया, ईंधनहित बनमाहिं ॥
आवत मग छायो तिमिर, दीख पन्था कछु नाहिं ॥

मूसलधार मेह पुनि छावा * हम तुम भीजि परम दुख पावा ॥
महेउ शीत इक तरुतर रहेऊ * सब निशि जगन २ थक गयेऊ ॥
भोरहि गुरु खोजत घर आये * सदय अशीश संग घर लाये ॥
यों कहि पुनि श्रीकृष्ण सुजाना * बोले वचन प्रेमरस साना ॥
तब तें बिछुरे मित्र सुजाना * आकरि आज मिले मो आना ॥
नहि सुधि तुम्हरी नेकहु पाई * कहा करत तुम रहे सुनु भाई ॥
अब यहँ आय दरस तुम दीना * अति सुखदै पवित्र घर कीना ॥
कहा सुदामा सुन गुणआगर * दीनबन्धु हे करुणासागर ॥
तुम अंतर्यामी जगस्वामी * हो सबके घट घट अनुगामी ॥
ऐसी बात कवन जगमाहीं * जाहि नाथ तुम जानत नाहीं ॥
सुनि इमि वचन सुदामा केरे * अरु मन समझि मनोरथ घनेरे ॥
अंतरयामी कृष्ण सुजाना * विहँसि वचन बोले भगवाना ॥

दो०–भाभजि पठई भेट कछ, देत न क्यों सकुचात ॥
कांखै छिपावत जोग नहिं, करत मीतसँग घात ॥

१ विरकुल २ कथा. ३ रात ४ घर. ५ दयाके समुद्र. ६ भीतर-की जाननेवाले. ७ जगतमें.

यह सुनि सकुचि सुदामा रहेऊ * शीस नवाय अवनि तनु लयेऊ ॥
तदुल गाठि तिया जो दीनी * सो हरि काढि काखतें लीनी ॥
पुनि तिहि खोलि परम रुचि ताई* द्वै मुष्टिकै लिय तदुल खाई ॥
मुष्टिक तृतीय भरन ज्यों चाई * गहे हाथ रुक्मनि द्रुत जाइ ॥
दिये लोक द्वै अब कह देहौ * आपन हेत नठौर बचै हौ ॥
यह द्विज दीखतहै अति त्यागी * परम कुलीन सुशील विरागी ॥
पाय विभव अस जिहि मनमाहीं* तनक्हु हर्ष भयो हिय नाहीं ॥
हानि लाभ सम जानत अहही * मिलै हर्ष गत शोक न लहही ॥
सुनि रुक्मिनि मुखतें यह वानी * कहा कृष्ण सुनि सुमुखि सयानी॥
यह मम परम मित्र है प्यारी * कहौं कहाँलौं इहिगुन भारी ॥
रहत सदा सनेह मम साना * तृणसम सब संसारहि जाना ॥
इहि प्रकार कहि वचन कन्हाई* दीन रुकमनि कह समुझाई ॥

दो०–ल्येगे पुनि द्विज भवन महँ, सादर पाय धुलाय ॥
सुन्दर पढा विठाइकै, षटरस दिये जिवाय ॥

पान खवाय फेन सम सैया * दिय द्विज कहँ बैठाय कन्हैया ॥
मारग थकित हुता द्विज आगे * सोय गयेउ शीतल्तल लागे ॥
तब हरि जर्गकमहि बुलवाई * कहा वचन प्रभु इमि समझाई ॥
विप्र सुदामाकर घर जावहु * वचन मंदिर तुरत बनावहु ॥
तामहँ रतन अनेक लगावहु * अष्ट सिद्धि नवनिधि धरि आवहु॥
सुनि हरिवचन चला सो तहँवा * विप्रसुदामा कर घर जहँवा ॥
तुरत बनाय भवन तिहि आवा* पुनि आपन अस्थान सिधावा ॥
तब प्रातहि उठि विप्र सुदामा * करि अस्नान ध्यान जप कीना ॥

१ मुट्ठी २ जल्दी ३ आनन्द ४ होशयार ५ पलँग ६ विश्वकर्मा

विदा होन हित प्रभुके पासा * आवा उर न कछू अभिलासा ॥
तब तिहिमन प्रभु कछु न कहेऊ * प्रेममगन व्है दृगे भरि रहेऊ ॥
विदा मागि करि दृढ प्रणामा * घर कहु चले तुरत सुदामा ॥
मनही मन सोचत मगमाहीं * मैं प्रभुसन मागा कछु नाहीं ॥

दो०–भली करी जो मागतौ, देते यदि प्रभु सोहि ॥
पै अति लोभी लालची, विप्रै जानते मोहि ॥

जो कहिये कछु तिया सयानी * समझै हौं कहिकै यह बानी ॥
दियेउ न धन कछु मोहि मुरारी * समझा निर्लोभी अविकारी ॥
किय सनमान कृष्ण मम भारी * खान पान मृदु वचन उचारी ॥
यही लाभ मैं मन बड़ जाना * करि हैं सब निवाह भगवाना ॥
इमि मग सोचत चला सुदामा * आवा निपट निकट निजधामा ॥
निरखा विप्र धाम निज जहँवा * नवहु ठौर ठिकाम न तहँवा ॥
तृण आच्छादित धाम न सोई * इन्द्रपुरीसम जगमग होई ॥
देखि दुखित व्है कहा सुदामा * विधि तैं कहा कीन्ह यह कामा ॥
हुता एक दारिद दुख भारी * सह दूसर आगे दिय डारी ॥
कहँ मम तृणआच्छादित धामा * कहँ कुलवति विदित वरवामा ॥
तिहिमन बूझहँ सुधि तिय केरी * करनि न कहा कछू मति मेरी ॥
यह कहि द्वारनिकट द्विज आई * बूझा द्वारपाल मन जाई ॥

दो०–मन्दिर सुन्दर कौनके, जगमग होत अनूप ॥
कौन धनिक आकरि रह्यौ, कै कोइ बस्यौ सुभूप ॥

द्वारपाल विप्रहिं समुझाई * बोला वचन सहज समुझाई ॥
कृष्णचन्द्रकर मित्र सुदामा * ताकर अति सुन्दर यह धामा ॥

---

१ नेत्र २ ब्राह्मण. ३ कृष्ण. ४ सुंदर. ५ घर

इमि सुनि द्वारपालकी बानी * द्विज जिय भाखनकी कछु ठानी ॥
मनमह लेके विचौ अति भारा * कहा कीन यह कृपा मुरारी ॥
तबलौं द्विजतिय मन मुसक्यानी * करि सोलह सिंगार सयानी ॥
रचासु आननमें बरबीरा * लगी सुगन्ध सग अति भीरा ॥
सग सखी लै पति ढिंग आई * मानहु रंभा रक पहुँचाई ॥
पैरँवर पावड़े बिछाये * बोली बचन प्रेमरस छाये ॥
जब पिय तुम द्वारिका सिधाये * विस्वकर्मा हरि इहा पठाये ॥
गये सकुचन भवन बनाई * अष्टसिद्धि नवनिधिहिं बसाई ॥
क्यौं ठाड़े मदिर पग धारहु * मन कर सब सदेह बिसारहु ॥
सुभग सुमन्दिर अपने जानहु * नहिं यामें सशय कछु आनहु ॥

दो०–अब कह सोचत प्राणपति, मनमहँ करहु आनन्द ॥
कृष्णचन्द्रकी कृपातें, हुये सकल आनन्द ॥

सुन इमि बचन प्रियाके मुनवर * गये सुदामा भीतर मन्दिर ॥
दखि विभवपर परम प्रकासा * भये सुदामा सहज उदासा ॥
*लखि प्रीतम उदास मनमाहीं * बोली विप्रबधू पतिपाहीं ॥*
लोग प्रसन्न होत धन पायें * तुम किमि जिय उदास किहिभायें ॥
कहहु कृपाकर तापर कारन * होय मोर संदेह निवारन ॥
कहा सुदामा सुनहु पियारी * यह माया ठगनी बड़ भारी ॥
सब जग ठगा ठगति नित अहही * अरु ठगिहै जावर ढिंग रहही ॥
सो प्रभु ल्है प्रसन्न मोहि दीनी * अरु मम प्रेम प्रतीति न कीन्ही ॥
मव रतनमन याची यह संपति * दई मोहि यातें उदास मति ॥
यह द्विज बधु सुनहु मम स्वामी * वे प्रभु हैं उर अंतरजामी ॥

---

१ पिचार. २ रूपी ३ रेशमी वस्त्र

सुनहि सकल गेध सिनहिं कहेही * घर घरनी सब जानत हेही ॥
मैं मन साधन परजो द्वारा * सो परिपूरन दान मुरारा ॥

दो०—सुनत सुदामा तियवचन, उर आना संतोष ॥
मगन भयौ भोगन लगौ, सुखसयुत धनकोषै ॥
यह प्रसंग जे जन सुनहिं, श्रवण सुनावत आहिं ॥
सुख संपति भोगहि भवन, अंत विष्णुपुर जाहिं ॥

(इति सुदामाचरित्र)

अथ जांबवतीसतभामाविवाह.

दो०—सत्राजित यादव हरिहि, मणिकौ हरन लगाय ॥
झूठ जानि पुनि किमि दई, निजकन्या परणाय ॥

यह सुनि नृप अस बूझा आइ * कौ सत्राजित किमि मणि पाई ॥
अरु चोरा किमि हरिहि लगाई * भूपा ममसंशय किमि पछताई ॥
कह मुनि सुनहु कथा जिमि अहही * सत्राजित इक यादव रहही ॥
बहु दिन तिन रवि सेवा कीनी * ह्वै प्रसन्न तिन मणि इक दीनी ॥
अरु तिहिमन अस कहा बुझाई * सौमन्तक यह मणि है भाई ॥
सुख संपतिकर यह अस्थाना * कल्पतरु इहि और समाना ॥
जप तप अरुसंयम इहि ध्यावहु * मनवांछित फल सबही पावहु ॥
जिहि पुर देश जाहु लै याही * दुख दरिद्र दुर्भिक्ष न ताही ॥
राखहु गे यह मणि जिहि ठामा * रिद्धि सिद्धि करिहैं विश्रामा ॥
अस कहि रवि सत्राजित केरा * किया दीन करि कृपा घनेरा ॥
लै मणिको निज गेह सिधावा * भेद न यह काहू सुनि पावा ॥
धूप दीप नैवेद्य चढाइ * पूजहिसो नित चित्त लगाइ ॥
अष्टभार सुवरन मणि देइ * यह प्रसन्न सत्राजित लेइ ॥

---

१ कथा २ कृष्ण ३ खजाना ४ चोरी ५ झूठ ६ मणिका नाम
७ अकाल. ८ एकप्रकारकी तोल

जांबवती सत्यभामाविवाह.

दो०—इक दिन पूजन करतमें, मन अस कियौ विचार ॥
मणि दिखरावौं कृष्णकौं, जो दायक फल चार ॥२॥

अस बिचार मणि कंठ बधाई * यादव सभहि चला हरषाई ॥
परमें प्रकास प्रगट मणि केरा * दूर हितै यादव अनु हेरा ॥
कृष्णचन्द्र सन तिनु समुझावा * तव दर्शनहित रवि चलि आवा ॥
कृष्ण कहा यह रवि नहिं होई * सत्राजित यादव है सोई ॥
जिहि सूरजकी सेवा कीनी * है प्रसन्न तिन इहि मणि दीनी ॥
जब लौं कथा कही हरिने सव * वैठा जाय सतराजित तव ॥
यादव सव लगिकै छविमणिकी* रहे लुभाय भूल सुध धनकी ॥
कृष्णचन्द्र तिहि मणितन हेरा * परम प्रकास प्रगट जिहि केरा ॥
निमिष छिनक सो सदन सिधावा* पुनि प्रभात यादव सँदि आवा ॥
इहि विधि वैठ सभा नित आई * यदुजन हरिसन कहा बुझाई ॥
नहिं इहिकंठ सोंभ मणि लहही * भूपतिकंठ जोग यह अहही ॥
सत्राजितसन मणि यह लीजै * उग्रसेन भूपति कहँ दीजै ॥

दो०—तव सव यादव मिलि कह्यौ, मणिकौं भूपहि देहु ॥
जगत प्रसंसा होइहै, लोकनमहँ जस लेहु ॥ ३ ॥

मौनँ साध सो सदन सिधारा * जाय बधुसन वचन उचारा ॥
आज कृष्ण याची मणि मोसौं * मैं न दीन सति भाखहु तोसौं ॥
सुनि वाणी इमि बाधव केरी * सो मणि लै अपने गलगेरी ॥
धनु सधानि चढत हय भयेऊ * मृगयाहेत महावन गयेऊ ॥
सूकर रीछ हिरन बहु मारे * कितकन्तु घायल करडारे ॥
इक मृग पाछे तुरँग लगावा * भगत भगत आगे सो धावा ॥

१ बहुत. २ ठहरकर ३ घर. ४ सभा. ५ चुप ६ घोडा

हती तहां इक गुहा पुरानी * पहुचा नृपति तहां हठ ठानी ॥
मृग हय नृपपद आहठ पावा * इहितें निकरि सिंह इक आवा ॥
मारि नृपति मृग हय मणि लीनी * पठि गुहा जगमग दुति दीनी ॥
तासु उजास उदित अस भयेऊ * लोक पताल प्रकासित भयेऊ ॥
जाववत इक रीछ सुजाना * रहत तहां युगात परिमाना ॥
देखि उजास अधिक मणिकेरा * धावा सरोस सिंह तहँ हेरा ॥

दो०–मारि ताहि मणि लै गयेउ, दापी पलना जाय ॥
जाम्बवती पुत्री सुभग, रूपशील गुण भाय ॥
करति कुतूहल सुता सोइ, लखि लखि मणि परकास
सकल सदनमहँ दिवसनिशि, व्यापेउ अधिक उजास

इहि विधि मणिहि प्रसेन गवाँई * अरु बनमाहा मृत्यु तिहि पाई ॥
साथी हरि[3] हेरि तहा हारे * सत्राजितसन जाय पुकारे ॥
गयेउ अकेल हमहि नृप त्यागी * हेरत थके थाह नहि लागी ॥
खानपान तजि तब सत्राजित * ह्वै उदास सोचत भा मह चित ॥
है यह काम कृष्णवर मोई * मारि बधु बैठा घर सोई ॥
प्रथम याचना मोसन कीनी * अब मम बधु मारि मणि लीनी ॥
इमि विचार मनही मन जरही * रैन दिवस चिंता अनुसरही ॥
इकदिन रैनिसमें तियपासा * बैठि रहा मन किये उदासा ॥
दसि दसा तिय हसि अस कहेऊ * किमि पिय निय उदास ह्वै रहेऊ ॥
मन मलीन तन छीन अचिंता * मौन किये बैठे किहि चिंता ॥
सत्राजित तिहि कहा बुझाई * तिय उरमें न बात ठहराई ॥
नियसन गूढ़ बातकर भेदा * कहेहि न चतुर सुना अस वेदा ॥

१ दुम्बेमें आकर २ उजाला ३ पुकार पुकारकर ४ मलान ५ चुप ६ गुप्त

दो०-थोरीसीहू बातजो, सुन पावै घरमाहिं ॥
कहत फिरत घर घर तुरत, लोग लुगाइन पाहिं ॥

भले बुरेकर उर न विचारा * बात बकत कछु लगे न वारा ॥
सुनि अस वचन क्रोध करि बाला* बोली पति सनकरि दृग लाला ॥
कहहु भवन धर कवन जुवाला * कौन प्रकट हम बाहिर जाता ॥
हौं थकि सबतिय एक समाना * जो तुम नितमुख करत बखाना ॥
जबलग कहहु न मन धर बाला * तनौं अन्न पानी बिन जाता ॥
सत्राजित बोला सुनि प्यारी * कहों गूढ़ गँथ तौ सनसारी ॥
एक बात उपजी उर मोरे * कहौ गुपत गथ सन्मुख तोरे ॥
प्रगट न करियो आन अगारी * भलेहि नाथ भाखेउ अस नारी ॥
एक दिना मणि मागि मुरारी * मैं न दीन तिहि चित्त विचारी ॥
सारि बन्धु मम लीन है साइ * कौन काम यह इत उत गोइ ॥
सो सुन तियहिं नींद नहि आइ * प्रात ससिनसन कहा बुटाई ॥
तिनउ परस्पर चरचा ठानी * बानन कानन चली कहानी ॥
सुनि इक दासी गइ रनवासा * कीन प्रगट गथ सब करपासा ॥
यह सुन सबन कहा सति अहही* सभाजित तिय मृषा न कहही ॥

दो०-कहन लग्यो रनवास, सब कियो मुरारि अकर्म ॥
जातें जगमें होइगो, अपयश और अधर्म ॥

इहि अतर हरिसों किहु कहेऊ * कैसें नाथ मष्ट करि रहेऊ ॥
मणिहित कृष्ण प्रसेनहिं मारा * यह कलंक तव ऊपरि डारा ॥
यह सुनि प्रथम सोच हरि कीना* पुनि प्रवेस यादव गृह कीना ॥
जहँ बैठ बसुदेव सुजाना * उग्रसेन हलधर बलवाना ॥

१ हृदयमें. २ नेत्र ३ कथा ४ छुपकर ५ झूट ६ कृष्ण

हती तहा इक गुहा पुरानी * पहुचा नृपति तहा हठ ठानी ॥
मृग हय नृपपद आरूढ पावा * इहितैं निकरि सिंह इक आवा ॥
मारि नृपति मृग हय मणि लीनी * पैठि गुहा जगमग दुति कीनी ॥
तासु उजास उदित अस भयेऊ * लोक पताल प्रकासित भयेऊ ॥
जाववस इक रीछ सुजाना * रहत तहा सुगात परिमाना ॥
देखि उजास अधिक मणिकेरा * धावा सरुस सिंह तहँ हेरा ॥

दो०–मारि ताहि मणि ले गयेउ, बाधी पलना जाय ॥
जाववती पुत्री सुभग, रूपशील गुण भाय ॥
करति कुतूहल सुता सोइ, लखि लखि मणि परकास
सकल सदनमहँ दिवसनिशि, व्यापेउ अधिक उजास

इहि विधि मणिहि प्रसेन गवाँई * अरु बनमाझ मृत्यु तिहि पाई ॥
साथी हेरि[3] हेरि तहा हारे * सत्राजितसन जाय पुकारे ॥
गयेउ अकेल हमहि नृप त्यागी * हेरत थके थाह नहि लागी ॥
खानपान तजि तब सत्राजित * है उदास सोचत भा यह चित ॥
है यह काम कृष्णकर सोई * मारि बधु बैठा घर सोई ॥
प्रथम याचना मोसन कीनी * अब मम बन्धु मारि मणि लीनी ॥
इमि विचार मनही मन जरही * रैन दिवस चिंता अनुसरहीं ॥
इकदिन रैनिसमें तियपासा * बैठि रहा मन किये उदासा ॥
देखि दसा तिय हँसि अस कहेऊ * किमिपिय जिय उदास व्है रहेऊ ॥
मन मलीन तन छीन अतिता * मेंट किये बैठे किहि चिंता ॥
सत्राजित तिहि यहा बुझाई * तिय उरमें न बात ठहराई ॥
तियसन गूढ बातकर भेदा * कहेहि न चतुर सुना अस वेदा ॥

१ गुस्सेमें आकर २ दरनाला ३ पुकार पुकारकर ४ अत्यन्त ५ चुप ६ गुप्त

दो०-थोरीसीहू बातजो, सुन पावै घरमाहिं ॥
कहत फिरत घर घर तुरत, लोग लुगाइन पाहिं ॥

भले बुरेवर उर न बिचारा * बात बकत कछु लगै न बारा ॥
सुनि असवचन क्रोध करि बाला* बोली पति सनकरि दृगै लाला ॥
कहहु भवन कर कवन जुवाता * कौन प्रकट हम बाहिर जाता ॥
हौ यकि सवतिय एक समाना * जो तुम निजमुख करत बखाना ॥
जबलग कहहु न मनकर बाता * तबौं अन्न पानी बिन जाता ॥
सत्राजित बोला सुनि प्यारा * कहौं गूढ़ गैय तौ सनसारा ॥
एक बात उपजी उर मोरे * कहौ गुपत गथ सन्मुख तोरे ॥
प्रगट न करियो आन अगारा * भलेहि नाथ माखेउ अस नारा ॥
एक दिना मणि मागि मुरारी * मैं न दीन तिहि चित्त बिचारी ॥
मारि बन्धु मम लीन है साइ * कीन काम यह इत उत गोइ ॥
सो सुन तियहिं नींद नहि आइ * प्रात सखिनसन कहा सुनाइ ॥
तिनउ परस्पर चरचा ठानी * कानन कानन चली कहानी ॥
सुनि इक दासी गइ रनवासा * कीन प्रगट गथ सब वरपासा ॥
यह सुन सबन कहा सति अहहा* सत्राजित तिय मृषा न कहही ॥

दो०-कहन लग्यों रनवास, सब किर्या मुरारि अकर्म ॥
जात जगमें होइगौ, अपयश और अधर्म ॥

इहि अतर हरिसौं मिलु कहेऊ * कैस नाथ मष्ट करि रहेऊ ॥
मणिहित कृष्ण प्रसेनहिं मारा * यह कलंक तव ऊपरि टारा ॥
यह सुनि प्रथम सोच हरि कीना* पुनि प्रवेस यादव गृह कीना ॥
जहँ बैठ वसुदेव सुजाना * उग्रसेन हलधर बलवाना ॥

१ हृदयमें २ नेत्र ३ कथा ४ दुपहर ५ हार ६ मृषा

कहा कृष्ण सबसन अम जाई * अहहि सकल पुरजन अन्याई ॥
मारि प्रसेन छीन मणि लीनी * यह कलंक पदवी मोहि दीनी ॥
इहि हित मणिसोनन वन जाऊ * तव सीसन लै अंघहि बहाऊ ॥
अस कहि कृष्ण गवन वनकीना * यादव कितिक संग करि लीना ॥
अरु प्रसेन साथिनु कर आगे * खोजन चले बनहिं भय त्यागे ॥
कछुक दूरि हय पदकर चीन्हा * परे दृष्टि पहिचान सुलीना ॥
लखत २ जिहि दिशि पग धारा * जुत प्रसेन हय सिंह सहारा ॥
दुहुकर लोथ सिंहपद चीन्हा * लखि सब कहा मारि हरि लीन्हा ॥

दो०–आगे जाय गुहाहती, अति गँभीर अँधियारि ॥
सबन सगले गये तहँ, मृतक सिंह जहा धारि ॥

लखी न मणि अचरज बड़ जाना * सबन कृष्णसन प्रगट बखाना ॥
इहि वन कवन बली अस आवा * हँरि हति मणिले गुहहि सिधावा ॥
अब न सोच कीजै उरमाहीं * चलहु भवन यहँ बस कछु नाहीं ॥
सिंह प्रसेनसहित हय मारा * तब कलंक विधि सकल निवारा ॥
अस पातक केहँरि सिर आवा * जिहिं प्रसेन हयसयुत खावा ॥
यह सुनु कृष्ण कहा सुन भाई * पैठि गुहा देखहुँ सब जाई ॥
सिंह मारि वह मणि किन लीनी * जिहिं हित कठिन तपस्या कीनी ॥
सबन कहा कृष्णहि समुझाई * परम भयानक गुह यह भाइ ॥
निरखत याहि लगत उरत्रासा * किमि अंतर पैठहि उपहासा ॥
इहि बिच आप प्रवेस न ठानहु * हमरो कहा नाथ जो मानहु ॥
परम भयानक अधिक अधेरी * कठिन गुहा न जान किहिकेरी ॥
चलहु सदन हम सब मिलि भाइ * कहिहैं नगर मध्य अस जाइ ॥

१ आज्ञा २ पाप ३ सिंह ४ सिंह ५ घर ६ पाप ७ सिंह ८ घर

दो०–मारि प्रसेनहि मणि लई, सिंह मारि कोउ जंत ॥
सो लै पैठेउ गुहाबिच, लख्यौ इमन बलवंत ॥

कहा कृष्ण मैं निज सुधि पाये * फिरहु न पुरहि कहाँ सति भाये॥
अब मैं पैठि गुहा इहि जाऊं * दिन दश गये उलटि यहँ आऊं॥
रहहु यहा तवलग सब भाई * होय विलंब कहहु घर जाई ॥
अस कहिगे गुह पैठि अँधेरी * चलत चलन बर भई घनेरी ॥
पहुंचे जांबवतके पासा * सोवत हैता न डर कछु त्रासा ॥
तासुतिया कर बहु विधि लालन * सुता झुलावतही बिच पालन ॥
निरखि कृष्णभय पाय पुकारी * जाववंत तव आख उघारी ॥
दौरि कृष्ण तनसौं लिपटाना * मल्लयुद्ध गुँह अंतर ठाना ॥
छलबलनि करि करि सवतन थाके * तब उपजा अचरज उर ताके ॥
मम सम बलधर लछिमन रामा * को जग और जुरै संग्रामा ॥
मनही मन विचार करि रीछा * धरेउ ध्यान उपजी अस ईछा ॥
कै प्रभु लीन बहुरि अवतारा * हरन हेत सब भुँवकर भारा ॥

दो०–करि विचार इमि मनहि मन, जांववंत धरि ध्यान ॥
हरि सन्मुख ठाढ़ौ भयौ, संजग जोरि युगपान ॥

अरु सिरनाय कहा सकुचाई * दरसन देहु प्रगट रघुराई ॥
भली कीन प्रभु लिय अवतारा * हरिहौ अखिल भूमिकर भारा ॥
त्रेतायुगतें इहि थल रहेऊ * भेद आपकर नारद कहेऊ ॥
मणिहित प्रभु इहि थल चलि ऐहैं * तवहि तोहि द्रुत दरसन दैहैं ॥
जाववंत इमि कहा बखानी * प्रभु उरलगन तासु पहिचानी ॥

१ था २ डर. ३ गुफाके भीतर ४ थक गये ५ लड़ाई ६ पृथ्वीका.
७ होशयार. ८ दोनों हाथ ९ शीघ्र.

रामरूप करि धरि धनुबाना * दर्शन दीन्ह प्रगट भगवाना ॥
जाववत करि दडप्रनामा * कहा बहुरि सुनिये गुनधामा ॥
दीनबधु जो सौसन पाऊँ * निज मनोर्थ करि प्रगट सुनाऊँ ॥
कहहु कहा प्रभु सो पुनि बोला * दीनबधु मम मन अस तोला ॥
जावबती कन्या यह मोरी * करहु चरनदासी प्रभु तोरी ॥
भलेहि कृष्ण इमि कहा बहोरी * पूरन करिहौं इच्छा तोरी ॥
चदन धूप दीप आदिक सब * लै पूजन किय जाववत तब ॥

दो०-पुनि श्रुतिविधिसो व्याह करि, दाइज मणियुत दीन ॥
जाववती मणिसहित हरि, गमन गुहातें कीन ॥ ११ ॥

यहा प्रसेन कृष्णको सगी * रहे हते गुह द्वार अभगी ॥
वसु अरु वीस गये दिन बीती * तब तजि हरि आगमन प्रतीती ॥
व्है निरासचित चिंता छाये * रुदन करत द्वारिका सिधाये ॥
समाचार सुनि यदु घबराये * सब रनवास शोकसन छाये ॥
लै लै नाम कृष्णकर रानी * रोवति पीटति उर अकुलानी ॥
मन मलीन तन छीन बहोरी * चली भवन तजि सराय बोरी ॥
देवीकर मदिर जहँ सोई * करत विलाप जाय तहँ रोई ॥
करि पूजन देवीकर रानी * जोरि हाथ बोली मृदुबानी ॥
मात तुम्हैं सुरनर मुनि ध्यावत * जो मागत सोई फल पावत ॥
घटरकी गति निज उर आनति * भूत भविष्यत सब तुम जानति ॥
तब चरनन हम शीस नवावहिं * कहहु कृष्ण इहि ठौं कब आवहिं ॥
इहि विधि क्षर रानी सब रानी * रुदन करति तजि भोजन पानी ॥

---

१ आज्ञा २ वेद ३ जगह

दो०–उग्रसेन बलदेवयुत, बैठे यादव साथ ॥
करत चितवन विविधविध, जोहि रहे सब पाथ ॥

इहि अन्तर बिहँसत यदुनाथा * आये जाम्बवती लै साथा ॥
राजसभामहँ प्रविसन भयऊ * लखि सबके उर आनँद छयऊ ॥
यह सुनि धूनि अम्बिका रानी * आइ राजभवन तजि ग्लानी ॥
करन लगीं मंगल विधि नाना * दीन अनेक द्विजन कहँ दाना ॥
पैठन सभा कृष्ण जिनचावा * सत्राजित कहँ बोलि पठावा ॥
दै मणि ताहि कहा सुनु भाई * इहि चोरी तुम हमहिं लगाई ॥
जाम्बवत यह मणि हरिलीनी * जाम्बवतीके दायज दीनी ॥
लै मणि सो चिंतित घर आवा * हरिकहँ मृषा कलंक लगावा ॥
मैं अपराध कीन अति भारी * बिन बूझे कृष्णहिं दइ गारी ॥
अब अपराध क्षमहिं हरि जैसे * करि उपाय जाय घर तैसे ॥
इमि मनहीं मन करत विचारा * आवा मंदिर सोच मन भारा ॥
लखि तिय कहि मन काहि उदासा * कहहु कन्त उर कारी साँसा[५] ॥

दो०–मनकर सकल विचार तब, कहा दार[६] सन जाय ॥
सो सुनु बोली नाथ तुम, भलौ विचारौ दायँ[७] ॥

सतिभामा मणि हरिकी दीजै * सब जग माझ सुयश प्रभु लीजै ॥
सत्राजित सुनि अस प्रियबानी * बोलि लयेउ इक द्विजवर ज्ञानी ॥
सोधि सुलगन मुहूरत नीका * दान पठय श्रीकृष्णहिं टीका ॥
सजि बरात हरि व्याहन आये * सकल नगर मैं मंगल छाये ॥
सत्राजित सुत वेदविधाना * दान हरिहि कर कन्यादाना ॥
बहुतक धन मणि सयुत दीना * कृष्णचन्द्र कहँ दायज दाना ॥

१ राजा २ छटा ३ देव ४ घर ५ भय ६ दें ७ दव

दाइज वस्तु सकल हरिलीनी * मणि उठाइ बाहिर धरदीनी ॥
कहा कृष्ण सत्राजित पाहीं * यह मणि हमरे हितकी नाहीं ॥
तुम यह मणि रवि तपकर पाई * राखहु गृह सब सोच विहाई ॥
हमरे कुल इक तजि भगवाना * लै नहिं आन देवकर दाना ॥
कृष्णचन्द्र इमि जबहि बखाना * लै मणि सत्राजित सकुचाना ॥
तब हरि दै वरि विजय नगारे * सतिभामा लै सदन सिधारे ॥
आय भवन शुभ मंगल साजे * राजभवन पुनि जाय बिराजे ॥

दो०-कहा नृपति मुनिराजसों, दीजै मोहि बताय ॥
हरिको लग्यौ कलंक किमि, जगमें अपयस छाय ॥
कह्यौ मुनी सुनु क्षितिपती, कृष्णचन्द्र सुखकन्द ॥
भाद्र चौथ सुदि विधु लख्यौ, लग्यौसु यह फरफंद ॥
तातें जनि कोइ देखहू जो कछु दीखहु जाय ॥
होइ कथा इहि श्रवणतें, फल पुनि बुरो नसाय ॥

इति जाबवती सतभामा विवाह सपूर्ण ॥

अथ जरासंधवध ॥

दो०-वदत चरनसरोज जिहिं, सुरी आसुरी नारि ॥
जरासिंध वध कहत अब, सो सारद उर धारि ॥

एक दिन दीनबन्धु असुरारी * करुणासिंधु भक्तहितकारी ॥
ऋषि मुनि विप्र सभाके माहीं * बैठे कृष्णचन्द्र कहुं आहीं ॥
नृपति युधिष्ठिर तहँ चलि आवा * जोरि हाथजुग शीस नवावा ॥
करि विनती इमि कहि अवनीसा * हे प्रभु शिवविरंचिके ईसा ॥
सुरमुनि ऋषि योगीश सुजाना * करत गान तव सदा अमाना ॥

१ धर २ चन्द्रमा ३ नाश ४ राजा ५ ब्रह्मा

जरासंधवध.

अलख अगोचर वरनत वेदा * नहि जानत कोऊ तव भेदा ॥
बड़े बडे योगी मुनि ध्यावत * पै तिनकर उर छिनहु न आवत॥
हम कहँ देत दरस घर आई * प्रेम भक्तिकर मान मिताई ॥
ऐसी मोहन लीला करहू * काहूसन नहिं जाने परहू ॥
माया भ्रम भूला संसारा * तुमसन करत लोक व्यवहारा ॥
जे जगदीस तुमहिं डर आनत * आपन ईश तिनहिं कर मानत ॥
सांचन के तुम जीवन मूरी * अभिमाननितें हो अति दूरी ॥

दो०–इहि विधिके कहिं वचन मृदु, बोले दुइ कर जोरि ॥
भये सिद्ध सब काम मम, पूर्ण अनुग्रह तोरि ॥

इक अभिलाख रही उरमाई * कहा कृष्ण सो कवन गुसाँई ॥
एक मनोरथ है प्रभु मोरा * महाराज तव सन्मुख थोरा ॥
हौं इक राजसूयमख करहूं * तव अर्पण करि भवनिधि तरहूं ॥
सुनि यह कृष्ण भूपकर काजा * कहै प्रसन्न बोले महराजा ॥
यह किय नीक मनोरथ सारा * भावत मम उरमाहिं उँदारा ॥
सुरनर मुनि मिलि सब सुख लैहैं * करन कठिन कछु नाहीं पैहैं ॥
है तव चार वन्धु बलवाना * परम प्रतापी बुद्धि निधाना ॥
अर्जुन भीम नकुल सहदेवा * जिन सन भिरहिं न दानव देवा ॥
प्रथम इनहिं दश दिशिन पठावहु * कहिकि जीत सब भूपन लावहु ॥
जब ये जीति सकल नृप आवहिं * तब यहँ यज्ञ निरंतर ठानहिं ॥
सुनि नृप निज जुग बंध बुलाये * सैन संग दै दिशनु पठाये ॥
दक्षिन कहँ सहदेव पधारे * पश्चिम ओर नकुल पगधारे ॥

---

१ जो दीख न सके. २ इन्द्रियोंसे परे. ३ इच्छा. ४ अच्छा.

दो०–उत्तर दिशि अर्जुन गये, पूरबकौं गे भीम ॥
सात दीप नव खंडकौं, जीति फिरे सो असीम ॥

दिशि दिशि कर नृप वसकर सारे * लाये सग भूपके द्वारे ॥
तब कर जोरि युधिष्ठिर राना * कहा कृष्णसन सुनु महाराना ॥
तव प्रताप आने नृपजीती * अब कह करिय सो कहहु सप्रीती ॥
इहि अतर उद्धव इमि भाखा * सुनु धर्मावतार ,अभिलाखा ॥
आये सब देशनके राजा * भा परिपूरन मनकर काजा ॥
पै इक मगध देशकर नाथा * जरासिंध नहिं आयउ साथा ॥
जबलग वश न होइ सो राजा * सफल न होय यज्ञकर काजा ॥
भूप जयद्रथ सुतकर सोई * महाबली तेजस्वी होई ॥
धर्मात्मा अति दानी रहही * सहज न जाकर जीतन अहही ॥
यह सुनि नृप उदास निय भयेऊ * करिय न सोच कृष्ण अस कहेऊ ॥
भ्रात भीम अर्जुनके साथा * आयसु देहु हमैं नरनाथा ॥
छलबल जीति ताहि हम लावहिं * कै हम मारि नाहि तहँ नासहिं ॥

दो०–सुनि नृप दीनी सीस बहु, किये कृष्ण सँग भ्रात ॥
मगध देशके निकट पुनि, बोले श्रीपति बात ॥

विप्ररूप आपन तन धारहु * छलबल करि शत्रुहि संहारहु ॥
यह कहि विप्र भेष हरिकीन्हा * अर्जुन भीमहु सो पुनि लीन्हा ॥
दै त्रिपुंड तिहि पुस्तक बैंखा * अति उज्वल स्वरूप गतमाखा ॥
चले मनहु त्रय गुन धरि देहा * कै मगधश कालगुह ऐहा ॥
चलत चलत तिनतै दिन गयेऊ * मगधदेशमहँ पहुँचत भयेऊ ॥
मध्य दिवस मगधेश्वर द्वारे * ठाढे भये आय छल धारे ॥

१ वेहद २ इच्छा ३ बगल

द्वारपाल लखि उज्वल भेषा * कहेउ जाय जहँ रहेउ नरेशा ॥
अतिथि तीन द्विज आये भूपा * बड़ विद्वान तपस्वी रूपा ॥
अति ज्ञानी कछु याचन काजा * ठडे द्वार पर हे महाराजा ॥
सुनि इमि बचन नृपति तह आवा * करि प्रणाम तिहुँकह सुख पावा ॥
बहु सन्मान सहित नरनाथा * लै आयेउ गृह अपने साथा ॥
पुनि सिंहासन पर महिपाला * बैठाये करि मान विशाला ॥
आपुन नृपति दुहू कर जोरैं * ठाडा सन्मुख शीस निहोरैं ॥
निरखि निरखि विप्रन कररूपा * सोचत सोचत भाखेउ भूपा ॥

दो०–याचक बनिके द्वारपर, जो आवहि कहु कोय ॥
यद्यपि होय महान नृप, अतिथि कहावै सोय ॥

तुम न विप्र अति योद्धा कोई * कपट बात कछु भली न होई ॥
दुरहिनै तव छवि छत्रिनुवारी * सूर बीर दीखत बलधारी ॥
तेजस्वी तुम तीनहु भाई * शिव विरचिं हरिसम वरदाई ॥
मैं जाना निहचै कर ज्ञाना * करहु देव किन आप बखाना ॥
जो तुमरे जिय इच्छा होई * करौं न टरौं बचन कहि कोई ॥
झूट बचन नहि बोलहि दानी * होतहु तनधन सरवस हानी ॥
जो कछु मागहु देहौं दाना * पुत्र प्रिया सपति सन्माना ॥
कहा कृष्ण हम छत्री अहहीं * वासुदेव मो कह सब कहहीं ॥
भली भाति हमकौ तुम जानहु * ये अर्जुन अरु भीम पछानहु ॥
हैं मम भ्रात बुवाके जाये * तुमसन युद्ध याचनहि आये ॥
हमसन युद्ध करहु बलवाना * याचा यही कहा भगवाना ॥
और न कछु याचन चित चहेऊ * यह सुनि जरासंध हँसि कहेऊ ॥

१ राजा २ बड़ा ३ नहीं छुपता है ४ ब्रह्मा. ५ विष्णु

दो०–तुमसन युद्ध करौं कहा, भागे कितनिहि वार ॥
अर्जुनहूसों नहि लरौं, रह विदर्भ बन नार ॥

कहहु तौ भीमसेनसन लरऊं * यह मोसम न सकुच उर धरऊं ॥
पहिले तुम भोजन करि खावहु * पीछे मध्य अखारें आवहु ॥
सुन्दर भोजन कीनहु दीन्हा * पुनि आगमन द्वारपर कीन्हा ॥
लीना भीमहिं बोल पठाइ * महायुद्धकी खवर सुनाइ ॥
आपुन गदा भीम कह दीनी * दूसरि गदा नृपति कर लीनी ॥
बैठिगये हरि सभा बनी तहँ * ठाढे भये भीम अरु नृप जहँ ॥
कसैं काछनी टोपी धारें * नटवर रूप दुहूं तन धारैं ॥
जिहि छन दोहन वीर अखारे * ठाढ भये खम फट कारे ॥
तान गदा मेघ बदलाये * झुक कर युद्धहि सन्मुख आये ॥
तिहि छिनकी छबि कवि अनुसारे * जुग्गे दोउ जनु वैरि मतवारे ॥
कहा भूप सब भीम न पावहु * प्रथमहिं मोपर गदा चलावहु ॥
विप्ररूप आये मम द्वारा * करहुँ न तुमपर प्रथम प्रहारा ॥

दो०–सुनि बोले पुनि भीम यह, करत धर्मकी रौर ॥
सोचजनि करौ भूप अब, प्रथम करौ निजवार ॥

यों करि वीर परस्पर गाथा * भिरे चलाइ गदा इक साथा ॥
निज निज घात तक तवे आहीं * चोट चलाय दाहिनी वाहीं ॥
उछरि धरैं पद अग बचावहि * गदा गदाभिरि अग्नि उपावहिं ॥
खन खन गदा शब्द चटकारी * होत कुलाहल चहुदिशि भारी ॥
इहि बिधि धर्मयुद्ध दिन करहीं * साझ संग भोजन करि परहीं ॥
लरतलरत इहि विधि अवनीशा * बीते दिवस सप्त अरु बीसा ॥

---

१ दोनो २ हाथी ३ चोट ४ एडाइ ५ कथा ६ राजा

एक दिवस हरि कीन्ह विचारा * यह नहिं मारा मरै जुझारा ॥
जब यह जनम लियो दुखदाई * फाक द्वै भई प्रकट दिखाई ॥
जेरा आय मूदे मुख नाका * भयेउ एक मिलकै जुग फाका ॥
यह गथ सुनी वृहद्रथ राजा * लिय बुलाय जोतिषी समाजा ॥
बूझा उनहि नाम यहा कहै है * कैसी पुनि पदवी यह पैहै ॥
गनकन अस भूपति सन भाषा * जरासंध इह नामहि राखा ॥

दो०–अजर प्रतापी अमर अरु, इहिहैं इहितन दोउ ॥
जबलगि संधिन देह महँ, मारि न सकिहै कोउ॥

यह कहि गनिक गये निजधामा * सो बर सत्य करनके कामा ॥
निज बल भीमहि दै भगवाना * चीरेउ इक तृण सैन निदाना ॥
चीरत तृणहि भीम बलधारी * दयेहु भूप कहुँ भूमि पछारी ॥
दै इक जघ पाव करि नीचा * दूसर पद गहि ऊपर खींचा ॥
दातुनि ज्यों ताकर तन चीरा * जंघ ठोकि ठाढ़ौ हय बीरा ॥
मरतहि जरासिंध बलवाना * सुरनर मुनि गधर्व सुजाना ॥
ढोल मृदंग बजाय बजाई * जय जय करत सुमन बरसाई ॥
दुख अरु द्वंद्व दूरि व्है गयेऊ * सकल नगरमहँ आनँद भयेऊ ॥
तिहि छिन जरासंधकी रानी * रोवति पीटति उर दृग पानी ॥
कृष्णचन्द्र सन्मुख चलि आई * जोरि जुगलकर विनय सुनाई ॥
धन्य धन्य हौ नाथ सुजाना * प्रभु करतब मै तुमरो जाना ॥
जिन दीन्हो सरवस निज तुमकों * वृथा प्राण लीन्हों तुम उनकौ ॥

दो०–जे जन सुत वित आपनों, तुमहिं समर्पैं आन ॥
तास न करत ब्यौहार अस, धन धन कृपानिधान ॥

१ जरानाम राक्षसी २ कथा ३ जो बूढ़ा न होय. ४ जो मरे नहीं

कपट रूप धरि अस छल कीना * यह जस जगत आय तुम लीना॥
यों करुणाकरि जरासिंध तिय * करुणानिधि आगे विनती किय॥
तब प्रभुहै अतिहीं दयाल जिय * जरासंधकी प्रथम क्रिया किय॥
पुनि तिहि सुत सहदेव बुलावा * कहि वैर वचन ताहि समुझावा॥
राजतिलककी करि अनुशासन * बैठायउ नृपवर सिंहासन॥
अरु तिहि सनमाखेउ महाराना * नीतिसहित सुन करि यौ राना॥
ऋषि मुनि गऊ विप्रकुलकेरी * रहियो रक्षा करत घनेरी॥
इहिविधि जरासंधकौं मारा * सकल लोक प्रभुयश विस्तारा॥
जो जन सादर कथा कहावै * धनसुतसंयुत संपति पावै॥
इमि कहि जरासंधकी गाथा * टेकि पूण हुइ प्रभुकौं माथा॥

अथ उद्धवजीकी विदालीला॥

उद्धव यदुपति सखा सज्ञानी * एक ब्रह्मसुखमें रति मानी॥
हरिको निर्गुण रूप करि मानैं * प्रेम कथा कछु उर नहि आनैं॥
जब हरि मनकी बात चलावैं * तब उद्धव हसिकै उचरावै॥
हरि लखि मनहीं मन पछितांहीं * भला बानि याकी यह नाहीं॥
रूप रेख जाके नहिं कोई * धन्यो नेम उरमें इन सोई॥
निर्गुण कथा योगकी गावै * जामें कछु रस स्वाद न आवै॥
मानत एक ब्रह्म अविनाशी * ज्ञान गर्वमें रहत उदासी॥
बिछुरन मिलन दुःख सुख जाहा * नहीं प्रेम उपजत तेनुमाहा॥
कनक[6] कलश पानी बिन जैसे * याको रूप बन्योह तैसे॥
जोहौं कहीं कहा यह मानै * निन्दा और हमारी ठानै॥
कहिये काहि प्रेमकी गाथा * कयो हस वायसको साथा॥

---

१ सुन्दर २ आज्ञा ३ बहुत ४ घमंड ५ शरीर ६ सुवर्ण ७ काग

मनको ध्यान सदा उर मेरे * प्रम भजन याके नहिं नेरे ॥

दो०–कहा यशोदा नन्दसे, सुखद तात अरु मात ॥
कँह वह सुख ब्रज धामको, नहिं विसरत दिन रात

सो०–कहा सखनको संग, कहाँ केलि वृन्दाविपिन ॥
कहँ वह प्रेमतरंग, बंशीवट यमुना निकट ॥

कहाँ नवल ब्रजगोपकुमारी * कहँ राधा वृषभानुदुलारी ॥
कहँ वह प्रीतिरीति सुखसंगा * वहाँ रासरस हास तरंगा ॥
कहँ कुंजन बनकेलि निकाई * कहाँ मानलीला सुखदाई ॥
कहँलगि ब्रजके सुखन सँभारों * जिहिं लगि पुर वैकुंठ बिसारों ॥
कहिये यह रस वाके आगे * उद्धव सुनत प्रेमको भागे ॥
वैसे प्रम होय यामाहीं * मेरे कहे मानिहैं नाहीं ॥
ब्रजको याको देउ पठाई * पैहैं प्रेम तहाँ यह जाई ॥
याके मन अभिमान[1] बढ़ाऊँ * कहि युवतिनकी प्रीति सुनाऊँ ॥
यह बात यदुपति उर आनी * पठाऊँ ब्रज यदि आपत ज्ञानी ॥
कहौं बोध तिनको करि आवो * प्रम मिटाय ज्ञान समुझावो ॥
जैहैं तुरत सुनत यह वाता * कहिहैं हरि जानत स्वहिं नाता ॥
करि अभिमान तुरत मन जैहै * ह्लाँते जाय साथ है ऐहैं ॥

दो०–ऐसे हरि बैठे करत, अपने उर अनुमान ॥
उद्धवके उरते करो, दूर ज्ञानअभिमान ॥

सो०–आय गये तिहि काल, उद्धवजी हरिके निकट ॥
निहँसि मिले नँदलाल, सखा सखा करि अंक भरि

अति सुंदर साँवरि छबिछायो * जब हरिको प्रतिबिम्ब सुहायो ॥

१ मन २ घमंड ३ स्त्रियोंकी ४ परछाँई

अस भुजा देके यदुराई * उद्धवसे मनबात चलाई ॥
उद्धव सुनो यहाँ तुम पाही * मजको सुख क्वहिं बिसरत नाहीं॥
नेकहु नहीं यहाँ मन लागत * उठि उठि पुनि उतहीको भागत॥
यह मन होन वहीं पुनि जैये * गोपी ग्वालनमें सुख पैये॥
कबहुं हेत यशोमति मैया * दैदै माखन लेत बलैया॥
नहिं बिसरैत मनते बिसराई * वह राधाकी प्रीति सुहाई॥
गोप सखा वृन्दावन गैया * नहिं भूलत वशीवटछैयाँ॥
लागत तिन्है बहुत दुख पाये * मिटत नहीं मनते पछिताये॥
उद्धव सुनि बोले मुसकाई * कहा कहत हरि यों अकुलाई॥
सदा रहत यह हित थिर नाहीं * जगव्यवहार सकल मिथ्याहीं॥
मोसों सुनो बात यदुराई * एकै ब्रह्म सदा सुखदाई॥

दो०-जब उद्धव ऐसे कही, विहँसि ज्ञानकी बात ॥
तब यदुपति सुख पायकै, पुनि बोले हर्षात ॥

सो०-भाई मो मनमाहीं, उद्धव कहि जो बात तुम ॥
तुमसमान कोउ नाहिं, सखा और मेरो हितू ॥

उद्धव तुम ब्रज वेग सिधारो * करि आवहु यह काज हमारो॥
पूरण ब्रह्म अलख अन जोइ * मात पिता ताके नहिं कोई॥
रूप न रेख जाति कुल नाहीं * व्यापिरह्यो सब घटघट माहीं॥
हौताके ज्ञाता तुम ज्ञानी * गोपी सकल प्रीतिरत मानी॥
यह मत तिन्हैं बोध करि आवो * प्रेम मेटिकै ज्ञान दृढावो॥
मेरे प्रेम विवश वे बाला * सहत विरहदुख दुसह विशाला॥

१ भूलताहै

काम अग्नि तनु तूंल समाना * शोच श्वास मारुत बलवाना ॥
भस होन पावत सो नाहीं * भीज रहत नयननजलमाहीं ॥
इहै आज लोपै इहि भांती * विरह व्यथाव्याकुल दिनराती ॥
एतेपै कैसे वे न्यारे * समाधान बिन धीरज धारे ॥
ताते सखा वेगि तुम जाहू * मेटौ तिनके उरको दाहू ॥
पठऊ नारिनके ढिग सोई * जो तुमहीसों लायक होई ॥

दो०–यक प्रवीण गुरु सखा मम, तुमते ज्ञानी कौन ॥
सो कीजै ज्यहि ब्रजवधू, साध न सीखे पौन ॥

सो०–जिहि सुख पावैं नारि, ज्ञानयोग उपदेशते ॥
डारें मोहिं बिसारि, ब्रह्म अलख परचौकरैं ॥

उद्धव सुनो कहत मैं तुमको * तुम मम हितू और नहिं हमको ॥
कैसहु उन गोपिनमो मोहीं * उऋण कीजिये बिनवत तोहीं ॥
निशिदिन भक्ति मेरियै उनको * नाहिं आनि रुचि वैसिहु तिनको ॥
सर्बस तिनन मोहिं सब दीनो * तन मन प्राण समर्पण कीनो ॥
मुक्ति तीन तिनको मैं दीनी * सोउनहित एकहु नहिं कीनी ॥
रही एक सो योजन कहियै * मो यह ज्ञानबिना नहिं लहियै ॥
सो अब देहु तिनहिं तुम ज्ञानू * जिहि पावैं परपद निर्वानू ॥
जो अंगीकृत करें न तासू * तौ मैं हौं उनको ऋणदासू ॥
गाय चरावत उनकी रैहौं * बन तजि नहीं अनत कहुँ जैहौं ॥
यहै बात मेरे मन भावै * और न कछु मोपै बनि आवै ॥
उद्धव जाहु विलम्ब करी जिन * उनको युग बीतत मोबिनि छिन ॥
समाधान तिनको करि आवो * ब्रजमें जाय विलम्बन लावो ॥

१ रुई २ हवा ३ मित्र. ४ चतुर ५ मोक्ष ६ देर.

दो०-उद्धव भजमें जायके, विलँवि न रहियो जाइ ॥
तुम बिन हम अकुलायहै, श्याम करत चतुराइ ॥
सो०-तुम हौ सखा प्रवीन, बार बार सिखउँ कहा ॥
तिय ज्यों जल बिन मीन, सोई मत्तौ विचारिये ॥

कही श्याम ऐसे नव बानी * तब उद्धव अपने जिय जानी ॥
यदुपति योग साँच अब जान्यो * ज्ञान गर्व अपने मन आन्यो ॥
बोल्यो अति अभिमान बढाइ * तुम आयसु शिरपर यदुराइ ॥
तुम पठवत गोपिनके माहा * म कैसे प्रभु करौं कि नाहीं ॥
तुम्हरे रहे गोकुलहि जैहौं * ज्ञानकथा ब्रजलोगन कैहौं ॥
जो मानि हैं ब्रह्म उपदेशू * तो कहिहौं समुझाय सँदेशू ॥
दिन द्वै रहि मनमें सुख देहौं * बहुरो आय चरण पुनि गेहौं ॥
यह सुनि विहँसि कह्यो हरि तबहीं * जाहु उपगसुतै ब्रजको अबहीं ॥
ज्ञान दृढाय सबरि तिन दीजै * एक पन्थ द्वैधारज कीजै ॥
आये आन इते हम दोऊ * तब ते ब्रज पठयो नहिं कोऊ ॥
जाय नन्द यशुमति परितोषो * ज्ञान कथा कहि युवतिन पोषो ॥
सबुचो मतिहि जानि ब्रजनारी * तुहि यो ज्ञानयोग विस्तारी ॥

दो०-वचन कहतही समुझिहैं, वेहैं परम प्रवीन ॥
ह्वैहैं शीतल विरहते, ज्यों जल पायो मीन ॥
सो०-पठवत थापि महन्त, उद्धवको यहि काज हरि ॥
ह्वै आवैगे सन्त, ब्रज भक्तनके दरशते ॥

अपनोहा रथ तुरत मँगायो * दै उपगसुतरो पलनायो ॥

१ धर्म २ उद्धव ३ प्रसन्न करो ४ मढ़लिया

अपनेइ भूषण वसन सुहाये * निज कर उद्धवको पहिराये ॥
अपनइ मुकुट आपनी माला * पहिराई उर विहस विशाला ॥
उद्धव तव हरिरूप सुहाये * यक भृगुपदके चिह्न बराये ॥
लिख्यो पत्रिका श्रीयदुराई * नन्दबबाको विनय बडाई ॥
पालागन कहियो कर जोरी * यशुमतिसे यहि भाँति करोरा ॥
बालक ग्वाल सखा समुदाई * लिख्यो मिलन सबहीं उरलाई ॥
अरु नर नारी सकल ब्रज जेते * प्रीति जनाय लिखे सब तेते ॥
लिखि गोपिनको योग पठायो * भाव जानि काहू नहिं पायो ॥
लेहु दृढाय प्रीति ब्रजबाला * यह आनी उरमें नदलाला ॥
नीके रहियो यशुमति मैया * कछु दिनमें अइहैं दोउ भैया ॥
लिखि पाती उद्धवकर दीन्ही * और मुखागर विनती कीन्ही ॥

मित्र एक मम दरशन दैहो * देखत ताहि परम सुख लैहो ॥
वृंदावनमें रहत निरंतर * होत नहीं कवहू उर अन्तर ॥
सघन कुंज तरु लता सुहाई * मिलियो ताको शीश नवाई ॥
इहि विधि उद्धवसों यदुराई * कहि सब मनकी बात सुनाई ॥
वल करि ताको प्रेम जनायो * ज्ञान गर्व ताके उर छायो ॥

दो०—ऐसे उद्धवसों करी, प्रकट श्याम ब्रजप्रीति ॥
उद्धव तिनको ज्ञानलै, चले करन विपरीति ॥

सो०—लखि उद्धवको जात, हलधर लिये बुलाय ढिग ॥
समुझत ब्रजकी बात, आये जल भरि नैन पुनि ॥

कह्यो कहौ उद्धव मैं तुमसों * यशुमति करत हेत जो हमसों ॥
एक दिवस खेलत मोसाथा * खेल नियो झगरो यदुनाथा ॥
मोको दौरि गोद तब लीन्हो * करसों ठेलि श्यामको दीन्हो ॥
नन्दबबा तब वनते आये * इन्हें गोदलै मोहि खिझाये ॥
लगे कहन नान्हो तेरो भाई * तोको छोह लगत नहि राई ॥
वह हित नहि भूलत है हमको * कहत सदेश बनत नहि तिनको॥
कहियो तुम प्रणाम पुर जाई * अरु दोउ भैयनकी कुशलाई ॥
कहियो हमहैं तनैय तुम्हारे * मात पिता नहिं आन हमारे ॥
मिलिहैं आय धायकै तुमको * कारज कछुक औरहै हमको ॥
नहि बिसरत क्षण गोकुल गाई * तुम तजि सुखको हमै देखाई ॥
सुनि वसुदेव देवकी पायो * उद्धव ब्रजको जात पठायो ॥

दो०—नंद यशोमति हित समुझि, लिखि पाती वसुदेव ॥
पालि दिये तुम सुत हमैं, नहीं उऋण तुम सेव ॥

---

१ सदा २ पुत्र

अपनेइ भूषण बसन सुहाये * निज कर उद्धवको पहिराये ॥
अपनइ मुकुट आपनी माला * पहिराई उर विहँस विशाला ॥
उद्धव तब हरिरूप सुहाये * यक भृगुपदके चिन्ह बराये ॥
दियो पत्रिका श्रीयदुराइ * नन्दववाको विनय बडाई ॥
पालागन कहियो कर जोरी * यशुमतिसे यहि भाँति करोरी ॥
बालक ग्वाल सखा समुदाइ * लिख्यो मिलन सबहीं उरलाई ॥
अरु नर नारी सकल ब्रज जेते * प्रीति जनाय लिखे सब तेते ॥
लिखि गोपिनको योग पठायो * भाव जानि काहू नहिं पायो ॥
लेहु दुराय प्रीति ब्रजवाला * यह आनी उरमें नँदलाला ॥
नीके रहियो यशुमति मैया * कछु दिनमें अइहैं दोउ भैया ॥
लिखि पाती उद्धवकर दीन्ही * और मुखागर विनती कीन्ही ॥

दो०–कहा कहौं कछु दिवसते, जननी बिछुरेउँ तोहिं ॥
ता दिनते कोऊ नहीं, कहत कन्हैया मोहिं ॥

सो०–कह्यो सँदेश न जात, अति दुख पायो मात तुम ॥
अब मोको निजतात, वसुदेव अरु देवकि कहत ॥

कहियो नन्दबबासों जाइ * कह मन धरी इती निठुराइ ॥
जबते दियो इतै पहुँचाइ * बहुरो मोध लियो नहिं आई ॥
बारेक बरसानेलौं जैयो * समाचार तहँके सब लैयो ॥
ग्वालबाल सब सखा हमारे * हैं हैं वे ममविरह दुखारे ॥
तिन्हें नाय मम शिशिते भेटो * कहि सँदेश जिनको दुख मेटो ॥
ब्रजवासी जेते नरनारी * गोप बत्स सँग मृग बनचारी ॥
जोनिहि विधिवासों तिहि भाती * अरम परस करियो सुखलाती ॥

१ मुखाग्र २ बछड़ ३ परद

नित एक मम दरशन देहो * देरात सादि परम सुख लेहो ॥
वृंदावनमें रहत निरंतर * होत नहीं कबहूं उर अन्तर ॥
सघन कुंज तरु लता सुहाई * मिलियो ताको शीश नवाई ॥
इहि विधि उद्धवसो यदुराई * कहि सब मनकी बात सुनाई ॥
बल करि ताको प्रेम जनायो * ज्ञान गर्व ताके उर छायो ॥

दो०-ऐसे उद्धवसों करी, प्रकट श्याम ब्रजप्रीति ॥
उद्धव तिनको ज्ञानलै, चले करन विपरीति ॥

सो०-लखि उद्धवको जात, हलधर लिये बुलाय ढिग ॥
समुझत ब्रजकी बात, आये जल भरि नैन पुनि ॥

कहा कहों उद्धव मैं तुमसो * यशुमति करत हेत जो हमसों ॥
एक दिवस खेलन मोमाधा * खेल कियो झगरो यदुनाथा ॥
मोको दौरि गोद तब लीन्हो * करसों ठेलि श्यामको दीन्हो ॥
नन्दबबा तब बनते आये * इन्हें गोदलै मोहिं खिझाये ॥
लगे कहन नान्हो तेरो भाई * तोको छोह लगत नहिं राई ॥
वह हित नहिं भूलत है हमको * कहत सँदेश बनत नहिं तिनको॥
कहियो तुम प्रणाम पुर जाई * अरु दोउ भैयनकी कुशलाई ॥
कहियो हमहैं तनय तुम्हारे * मात पिता नहिं आन हमारे ॥
मिलिहैं आय धावहै तुमको * कारज कछुक औरहै हमको ॥
नहि विसरत क्षण गोकुल गाई* तुम तजि सुखको हमै देखाई ॥
सुनि वसुदेव देवकी पायो * उद्धव ब्रजको जात पठायो॥

दो०-नंद यशोमति हित समुझि, लिखि पाती वसुदेव ॥
पालि दिये तुम सुत हमैं, नहीं उऋण तुम सेव ॥

१ सदा. २ पुत्र.

सो०–मति सकुचो जियमांहिं, राम कृष्ण तुम्हरे तनय ॥
हम कहिबेको आहिं, मात पिता तुम दुहुनके ॥
बालपनें तुम पालनहारे * बालकेलिरस तुम्है दुलारे ॥
हमनो पाये वैस कुमारा * सो यह सब उपकार तुम्हारा ॥
मति कल्पो अपने मनमाहीं * हरिसों मिलिकिन जात इहांहीं ॥
श्याम राम नहिं तुम्हैं भुलावैं * दिवस रैनि तुम्हरे यश गावैं ॥
ऐसे लिखि पाती सुखदाई * उद्धव कर वसुदेव पठाई ॥
तब हरि उद्धव बेगि पठायो * तुरत अकेले रथ बैठायो ॥
आयसु लियो बिदा हरि कीन्हों * चले उपँगसुत ब्रजपथ लीन्हों ॥
उद्धव चले गर्व मन धारी * कहा ज्ञान समुझैंगी ग्वारी ॥
देखौं हौं ब्रजलोगन धाई * मानत इतो तिन्हैं यदुराई ॥
चले उपँगसुत जब हर्षाई * गोपिनमन तब गयो जनाई ॥
पुनि पुनि भ्रमर श्रवण लगिजाई * भयो कछुक दुख कछु हर्षाई ॥
समुझि सो शकुन दरश अनुरागी * जहँ तहँ कांग उड़ावन लागीं ॥
दो०–जो गोकुल हरि आवहीं, तौतू उधरे काग ॥
दधि ओदन ख्वहिं देहुँगी, अरु अंचलकी पाग ॥
सो०–सुनि गोपिनके बैन, उठि बैठत बायँस अनंत ॥
लगि पावत सब चैन, कहत परस्पर आपसे ॥
सखी आज गोकुल हरि आवै * कैधौं कोहू ब्रजहि पठावैं ॥
नीकी बात सुनावै कोऊ * फरकत बाम नयन भुज दोऊ ॥
बिन बयारि अम्बर फहराई * टूटि टूटि कंचुकि बँदजाई ॥
उठि उठि बैठैं काग कहेते * उमगत मन आनँद रहेते ॥

१ प्यारे. २ उपंगजी. ३ काग. ४ आपसमें. ५ अंगीया.

भ्रमर एक चहुँदिशि मडराई * पुनि पुनि बार लगत है आई ॥
होत शकुन सुन्दर शुभ काला * आवनहार भये नँदलाला ॥
जानत भाग्यदशा निधि फेरी * दूर करो अब दुख मन केरी ॥
बहुरि गोपाल मिलैं जो आई * सुख सनेह करिलीजै माइ ॥
आसन हृदयकमलमें दीजै * नयनन निरखि वदनछवि लीजै ॥
देखत रूप मान तजिदीजै * प्रेम भजन अपनो करि लीजै ॥
आवैं जो मन कुजबिहारी * बड़िभागिनी सबै मननारी ॥
नन्द यशोमति सखि सुख पावैं * अति बड़िभागिनि बहुरि कहावैं ॥

दो०-घर घर शकुन बिचारहीं, ब्रजकी तिय बड़भाग ॥
ब्रजवासी प्रभु दरशको, सबके मन अनुराग ॥

सो०-मधुरातन टक लाय, अनुदिन पथ निहारहीं ॥
कब आवहिं ब्रजराय, यहै करत अभिलाष सब ॥

अथ उद्धवजीकी ब्रजागमनलीला ॥

उद्धव चले मनहि समुहाये * मथुरा तजि गोकुल नियराये ॥
रथपर बैठे शोभित कैसे * दूजे नन्दनन्दन मनु जैसे ॥
बड़े मुकुट पीताबर काछे * श्याम रूप शोभित अंग आछे ॥
दूरहिते रथकी उजियारी * देखत हरषीं ब्रजकी नारी ॥
आन्यो आवत कुँवर कन्हाई * आतुर जहँ तहँते उठिधाई ॥
कहत परस्पर देखहु आली * मधुबनते आवत बनमाली ॥
गये श्याम रथपर चढ़ि जाहीं * तैसो रथ आवत मनमाहीं ॥
तैसइ मुकुट मनोहर राजै * तैसइ पट कुंडल छवि छाजै ॥
रथ तन सब देखत अनुरागा * श्यामको सुख लूटन लागी ॥

१ राजा २ पास ३ सखी

ज्यों ज्यों रथ आतुर चलि आवै * त्यों त्यों पीताबर फहरावै ॥
भई सकल सुन व्याकुल नारी * प्रमविवश आनन्द उर भारी ॥
जवलगि रथ आवत नियराई * तवलगि मानहु कल्प विहाई ॥

दो०–यहै शोर ब्रज घर घरन, आवत हैं नँदलाल ॥
देखनको निकसे हरषि, तरुण वृद्ध अरु बाल ॥

सो०–सुनत यशोदा नन्द, लेन चले आगे हरषि ॥
भये परम आनन्द, तिहि क्षण व्रजके लोग सब ॥

जब कछु रथ आगे नियरायो * तब संदेह सबन मन आयो ॥
श्याम अकेले रथके माहीं * हलधर संग देखियत नाहीं ॥
कोऊ कहत न हैं मजनाथा * जोपै हलधेर नाहिन साथा ॥
इतना कहत निकट रथ आयो * उद्धव निरखि नयन जल छायो ॥
रहीं ठगीसी सब ब्रजबाला * नूतन विरह भइ बेहाला ॥
मनहु गई निधि केहूवाई * बहुरि हाथते तुरत गँवाई ॥
हैगइ सपनेरी रजधानी * जागत कछु नहीं पछितानी ॥
जवहीं कह्यो श्यामतो नाहीं * यशुमति मुरछि परी मैहिमाहीं ॥
परी विकल यशुमति ज्यहिठाई* ब्रजतिय धाय तहाँ चलिआई ॥
श्याम बिना रथलखि अकुलानी* जहाँ सो तहाँ रहीं मुरझानी ॥
रुदन करत व्याकुल अति भारी* लई उठाय पोंछि दृगँवारी ॥
यह कहि बोध करत सब बाला * उद्धवको पठयो गोपाला ॥

दो०–भली भई मारग चल्यो, सगा पठायो श्याम ॥
उठहु बूझिये हरि कुशल, कहति महरिसों वाम ॥

सो०–सफल घरीहै आज, करहु जानि यह मन हरष ॥
आवनको ब्रजराज, इनक भर ह्वैहै लिख्यो ॥

---

१ जयान २ बलदेवजी ३ धरनीपर. ४ आँसू ५ जमोदा

यह सुनि उठीं चतुर सुखपाइ * उद्धव निकटहि पहुची आइ ॥
हरिके रूप निरखि सुख पायो * श्यामसखा कहि सबन सुनायो ॥
उद्धव निरखि बहुत व्रजनारी * सुन्दर मन्जु सुशील महारी ॥
ताहाने हरि यादि पठायो * ले संदेश मोहनको आयो ॥
नीके नीके वचन सुनैहै * सुनि सुनि श्रवणन हियो सिरैहै ॥
यह जानिये वेगि हरि ऐहैं * याके मुख अब यह सुनिपैहैं ॥
चहुदिशि घेरि लियो रथ जाइ * नन्द गोप मनलोग सुगाइ ॥
गये लिवाय नन्द तिनद्वारे * उद्धव रथते हर्षि उतारे ॥
अर्घ्य देय भीतर घरलीन्हो * धनि धनि तिनकहि आदरकीन्हो॥
चरण धोय आसन बैठाये * बहुप्रकार भोजन करवाये ॥
विविधभांति करिके पहुनाई * नन्द श्यामकी बात चलाई ॥
उद्धव कहो कुशल दोउ भैया * अरु वसुदेव देवकीमैया ॥

दो०-करत हमारी सुधि कबहुँ, कहु उद्धव बलवीर ॥
पुलकि गात गद्गद वचन, पूछत नन्द अधीर ॥

सो०-चूपकरी अनजान, कह पछिताने आजके ॥
घर आये भगवान, जाने हम निज अहिर करि ॥

प्रथम गर्गमुनि कह्यो बखानी * भूल्यो सहदोष हित जानी ॥
अरु उद्धव बिछुरे गिरिधारी * मरियत समुझि शूल स्वःभारी ॥
कह्यो यशोमति दृग भरिपानी * उद्धव हम ऐसी नहिं जानी ॥
सुतको हितकरके हम माने * हरिहैं वासुदेव भगवाने ॥
ज्यहि विरंचि शिव ध्यान लगावैं * निशिदिन वृन्द विभूति चलावैं ॥
सो व लन हम अतिहि कर्योन्या * उखलमों बाध्यो गहिपायो ॥
फाटत नहीं वज्र सम छाती * अब यह समुझि हृदय पछिताती॥

१ जल्दी २ आव ३ ब्रह्मा ४ छोटा

बसे भाग कबहु अब अइहैं * बहुरि श्यामको गोद खिलैहैं ॥
जबते हरि मधुपुरी सिधारे * तबते उद्धव प्राण दुखारे ॥
तलफत मीन नीरबिन जैसे * देख्यो श्याम मनोहर कैसे ॥
उठिकैं प्रात जगतिहीं खरिका * देखत दुहत औरके लरिका ॥
उठत शूलै उद्धव मनमाहीं * क्यों ये प्राणनिकसि न[1]जाहीं ॥
दो०–ग्वाल सखा सँग जोरि अब, को गैया ले जाय ॥
को आवै सध्यासमय, बनते गाय चराय ॥
सो०–काहि लेहुँ उर लाय, आचरसों रज झारिकै ॥
काकी लेहु बलाय, चूमि मनोहर कमल मुख ॥
मैं बलि साची कहियो ऊधो * कैसे श्याम रहत हाँ सूधो ॥
दही मही माखन नित खाई * रात कौनके धाम कन्हाई ॥
कौन ग्वाल बलनके साथा * भोजन करत तहां ब्रजनाथा ॥
कौन सखा लीहे सँग डोलै * खेलत हसत कौनसे बोलै ॥
काको माखन चोरैं जाइ * देत उरहनो को अब आई ॥
बनमें यमुनातीर कन्हाई * किन गोपिनको रोकत जाई ॥
जिनको दूध दही ढरकावैं * जिनसों दधिको दान चुकावैं ।
इतनी बूझति यशुमति माई * भई विकल गुण सुमिरि कन्हाई ।
बोले नन्द बिलखि तब बानी * कहियो उद्धव साँच बखानी ॥
श्याम कबहुँ बहुरो ब्रज अइहैं * ब्रजवासिनकी ताप नशैहैं ॥
मोहिं तात यशुमतिसों माता * सदा कहतहैं हरि मुसक्याता ॥
कहि गये चलती बार मुरारी * मिलिहौं बहुरि तात यश बारी ॥
दो०–करिहैं सो अपनो वचन कबहुँ श्याम प्रतिपाए ॥
कह उद्धव तुमसों कछू कह्यो कि नाहिं गोपाल ॥

[1] मछली [2] दद [3] श्रीकृष्ण

एकवार गोकुल फिरि आवै * मनकरि माखन भोग लगावै ॥
सपति रहे गोकुलमें नाही * उलटि बहुरि मधुपुरियों जाहीं ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई * उद्धव चरण रही शिरनाई ॥
तब उद्धव बोले सुख पाई * धन्य यशोमति धनि नँदराई ॥
धन्य धन्यहे भाग्य तुम्हारे * जिनको कृष्ण प्राणते प्यारे ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखराशी * जगत आतमा सब घटबासी ॥
हैं व्यापक पूरण सब पाहीं * जैसे अग्नि काठके माहीं ॥
मतिजानो हरि हमते न्यारे * वेहैं सब जनके रखवारे ॥

दो०–मति जानो सुत करि तिन्है, वे सबके करतार ॥
तात मात तिनके नहीं, भक्तनहित अवतार ॥

सो०–हम हैं सब अज्ञान, प्रभुमहिमा जान नहीं ॥
वे प्रभु पुरुष पुरान, जन्म कर्म करिके रहित ॥

हम सब अपने भ्रमहिं भुलाने * नर समान हरिको करि जाने ॥
ज्यों शिशु आप चक्रमम फिरई * ताको फिरत जानि सब परई ॥
तातें प्रभुहि जानि हरि ध्यावो * जातें मुक्ति पदारथ पावो ॥
उद्धव जो तुम हमहिं सिखावत * हमहूं बहुत मनहिं समझावत ॥
यद्यपि वह मृदुरूप कन्हाई * देखे बिना रह्यो नहिं जाई ॥
सब ब्रजके जीवन हरि बारे * उद्धव कैसे जात बिसारे ॥
जादिन मोहन बनहिं न जाते * तादिन बन गैया मृग अकुलाते ।
नहिं अघात देखे वह मूरति * रूपनिधान साँवरी सूरति ॥
सो मृग तृण भरि उदरे न खाहीं * भये रहत कृशे श्याम बिनाहीं ॥
मुरली ध्वनि खग मोहे जाई * सो अब सुख फल खात न कोई ॥

१ दुर्बलहुई २ पक्षी ३ दुबल।

जे वन सदा नवल सुखदाता * ते अब सूखे जीरण पाता ॥
कोकिल कीर मोर नहिं बोलें * व्याकुल भये सकल मन डोलें ॥

दो०–जिन्हें चरावत श्यामजू, फिरत दुखारी गाय ॥
जहँ जहँ गोदोहन कियो, सूघत तहँ तहँ जाय ॥

सो०–सब व्रज विरह अधीर, युगसम बीतत पल हमें ॥
धरैं कौन विधि[1] धीर, उद्धव मनमोहन बिना ॥

ऐसहि कहत सुनत गुण हरिके * बैठे बीतिगइ निशि भरिके ॥
ठाढ़े यशुदहि रनि बिहानी * भरि भरि लोचन ढारत पानी ॥
व्रज घर घर सब होत बधाई * कहत कान्हकी पाती आई ॥
निपट समीपी सखा सुहायो * उद्धवको हरि व्रजहि पठायो ॥
कर्नैनकलश दूध दधि रोरी * नन्दसदन लै आवत गोरी ॥
गोप सखा सब कृष्ण उपासी * आये धाय सकल व्रजवासी ॥
उद्धवको हरिरूप निहारी * भये सुखी सब नर अरु नारी ॥
व्रजयुवती मिलि तिलक बनावैं * करि परदक्षिण शीश नवावैं ॥
कहत पायरै दरश तुम्हारो * भयो जन्म अब सफल हमारो ॥
बूझत कुशल सकल नर नारी * नन्द अँवास भीर भइ भारी ॥
उद्धव लखि व्रज प्रेम नवेसे * बोलि सकत नहिं रहे थकेसे ॥
इसकात चहुदिशि सब ठाढ़े * उद्धव रहे मौन गहि गाढ़े ॥

दो०–उद्धवकी लखिकै दशा, व्रजजन मन अकुलात ॥
क्यों उद्धव तुम कहत नहिं, राम कृष्ण कुशलात ॥

सो०–इक क्षण युगसम जाहिं, हमें सुने बिन प्रीति हरि ॥
आवन कह्याकि नाहिं, व्रजहि कृपा कार साँवरे ॥

---

१ पुरन २ तरह ३ सुवर्ण ४ घर

तब उद्धव बोले धरि धीरा * सदा कुशल हरि हलधर बीरा ॥
दियो तुम्हें लिखि पत्र सँदेशू * अरु श्रीमुख यह कह्यो सँदेशू ॥
करि समाधि अंतर म्वहि ध्यावो * गोप सखा करि मति चितलावो ॥
हौं अनादि अविगति अविनाशी * सदा एकरस सब घटवासी ॥
निर्गुण ज्ञान विन मुक्ति न होई * वेद पुराण कहत हैं सोई ॥
ताते दृढ करि यह मन धारो * सगुण रूप तजि निर्गुण विचारो ॥
तुरत तापत्रय टरि दुखदाई * मिलिहौ ब्रह्म सुखहि सब जाई ॥
उद्धव कही जबहिं यह बानी * गोपीजन सुनिकै बिलखानी ॥
इतनी दूर बसत सुनि आली * अब कछु और भये बनमाली ॥
इहा विरहकी बात विचारी * बूड़ी सकल मनहुँ बिनवारी ॥
मिलन आश गइ सुनत सँदेशू * उपज्यो उर अति कठिन अँदेशू ॥
फैल गइ जहँ तहँ यह बानी * करत परस्पर सब अकुलानी ॥

दो०-यह सब दोष लगै हमैं, कर्मरेखको जान ॥
प्रेम सुधारस सानिकै, अब लिखि पठयो ज्ञान ॥

सो०-इक ऐसे यह देह, रही झरसि विरहा अनल ॥
ऐसाहूते खेह, अब आयो उद्धव करन ॥

रूपराशि जो सब सुखदाई * मनके जीवन मूरि कन्हाई ॥
बिछुरे जिन्हें इतो दुख पायो * सो अब हिरदयमाहिं बतायो ॥
तिन्हैं कहत चितवो मनमाहीं * वेहैं पूरण भरि सब ठाहीं ॥
जाको यत्न करतहैं योगी * निर्गुण निराकार निर्भोगी ॥
सो धरि वृथा आइकै ऊधो * धीधिन मास बढायो सूधो ॥
अबला कारण श्याम पठायो * व्यापक अगह गरावन आयो ॥

---

१ धीचमें २ तीन तरहके दुख ३ आपसमें ४ अगून ५ छियोंहे

भयो आय विरक्त सब कोई * गायो निगुण निगमने जोई ॥
*जो समदृष्टि एक रस सोहन * तो क्ति चित चुरायो मोहन ॥*
उद्धव यह हित लागै काहे * जोपै इष्ट कृष्ण हिय माहे ॥
निशिदिन नयन दरशहित जागत * जल नहिं परत पलक नहि लागत॥
चहु दिशि चितवत विरह अधीरा * बिलखि बिलखि भरि डारत नीरा॥
ऐसहु दुख प्रकटत क्यों नाहीं * जोपै श्यामहि कहत इहाहीं ॥

दो०–रहन देहु ऐसहि हमहिं, अवधि आशकी थाह ॥
फिरि चाहे नहि पाय हैं, डारे अगुण अथाह ॥

सो०–ल्याये युवतिन योग, जो योगिनको भोग तुम ॥
हम तनु भरेउ वियोग, भयो अधिक दुख श्रवणसुनि

एक कहत दूषण नहिं यावो * यह आयो पठयो कुबिजाको ॥
वाने जो कहि याहि पठायो * सोई याने आय सुनायो ॥
अब कुबिजा जो याहि सिखावे * सोई ताको गायो गावे ॥
कबहुँ श्याम कहे नहिं ऐसी * कही आय मनमें इन जैसी ॥
एसी बात सुनै को माई * उठै शूल सुनि सहि नहि जाई ॥
कहत भोग तजि योग अराधो * ऐसी कैसे कहिहै माधो ॥
जप तप संयम नेम अचारा * यह सब विधवनको व्यवहारा ॥
युग युग जीवहु कुँवर कन्हाई * शीश हमारे पर सुखदाई ॥
अच्छत पति विभूति लिलाई * कहो कहाँकी रीति चलाई ॥
हमरे योग भोग मन एहा * नन्दनँदनपद सदा सनेहा ॥
उद्धव तुम्हें दोष को लावै * यह सब कुबिजा नाच नचावै ॥
जब युवतिन यह बात सुनाई * उद्धव रह्यो मौन सकुचाई ॥

१ वेदशास्त्र २ कान ३ दर्द ४ विधाताका ५ चुप

दो०-योगकथा युवतिन कही, मनहीं मन पछिताय ॥
प्रेम वचन तिनके सुनत, रहि गयो शीश नवाय ॥

सो०-तब जान्यो मनमाहिं, ये गुणहैं सब श्यामके ॥
स्वहिं पठयो इहि ठाहिं, याही कारणके लिये ॥

उद्धव सुनि गोपिनकी बानी * गुरु करि तिन्हें प्रथमहीं मानी ॥
मन मन करि प्रणाम हर्षाने * उद्धव चले बहुरि बरसाने ॥
श्रीवृषभानुकुवँरि हरि प्यारी * और सकल ब्रज गोपकुमारी ॥
जिनके मनमोहन नँदलाला * सुनी सबन यह बात रसाला ॥
कोऊ है मधुबनते आयो * हित करि श्रीनँदलाल पठायो ॥
यूँथ यूथ मिलि अति अनराई * पिय सँदेश सुनतै उठि धाई ॥
मिले उपँगसुत पथ मझारी * रथ लखि कहत परस्पर नारी ॥
बहुरि सखी सुफलक सुत[1] आयो * वैसोई रथ परत लखायो ॥
लैगयो प्रथमहिं प्राण हमारो * अबधा कहा काज जिय धारो ॥
तिहि क्षण उद्धव दरश देखायो * तब धीरज सबके मन आयो ॥
संगी सखा श्यामको चीन्हों * सबन प्रणाम जोरि कर कीन्हों ॥
उद्धव लखि अति भये सुखारी * मनहुँ विरह झख पायो बारी ॥

दो०-तब उद्धव रथते उतरि, बैठे तरुकी छाहिं ॥
भई भीर गोपीनकी, अति आनँद मनमाहिं ॥

सो०-अति प्रिय पाहुन जान, सुधि ल्याये ब्रजराजकी ॥
करिकै अति सन्मान, प्रेमसहित पूजे सबनि ॥

हाथ जोरि पुनि विनय सुनाई * कहिये उद्धव निज कुशलाई ॥
बहुरि कहो मधुबन कुशलाता * हैं वसुदेव देवकी माता ॥

[1] ह्युउ. २ कधोजी. ३ अक्रूरजी

कुशल क्षेम कहिये बलदाऊ * अरु अक्रूर कुशल कुबिजाऊ ॥
बूझत श्याम कुशल अकुलानी * नयन नीर मुख गदगद बानी ॥
लखि गोपिनकी प्रीति सुहाई * प्रेम मगन मे उद्धवराई ॥
पुलकित गात अँखियन जल छाई * गयो ज्ञानको गर्व हराई ॥
पुनि पुनि यहै कहत मनमाहीं * ऐसी हरिको बूझिय नाहीं ॥
व्रज नारिनको योग पठावें * चितने मजकी प्रीति मिटावें ॥
पुनि उद्धव उरमें धरि धीरा * बोले शोधि नयनको नीरा ॥
सब विधि कहि हरिकी कुशलाती * दीन्ही प्रथम श्यामकी पाती ॥
लै लै करन मिलति सब पाती * कोउ नयन कोउ लावत छाती ॥
काहू लैकर शीश चढाई * बूझत आपन लिखी कन्हाई ॥

दो०—अतिहित पाती श्यामकी, सब मिलि मिलि सुख पाय॥
उद्धव कर दीन्ही बहुरि, दीजै बाँचि सुनाय ॥

सो०—उद्धव सबन समोध, बाँचि श्यामकी पत्रिका ॥
लागे करन प्रबोध, ज्ञानकथा विस्तारिकै ॥

मोको हरि तुम पास पठायो * आतमज्ञान सिखावन आयो ॥
जाते पाप नशा नियराई * मनते विषय देहु बिसराई ॥
हरि आपहि नर आपुहि नारी * आपहि गृही आप ब्रह्मचारी ॥
आपहि पिता आपही माता * आपहि पुत्र आपही भ्राता ॥
आपहि पडित आपहि ज्ञानी * आपहि राजा आपहि रानी ॥
आपहि धरती आप अकाशा * आपहि स्वामी आपहि दासा ॥
आपहि ग्वाल आपही गाई * आपहि गाय दुहावन जाई ॥
आपहि भ्रमर आपही फूला * आपहि ज्ञान बिना जग मूला ॥

१ माता २ चिट्ठी ३ ज्ञान, ४ भौंरा.

राव रंक[1] दूजा नहिं कोई * आपहि आप निरन्तर[2] होई ॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एकू * तैसइ जानों ब्रह्म विवेकू[3] ॥
यहि प्रकार जाको मन लागै * जरा मरण संशय भ्रम भागै ॥
योग समाधि ब्रह्म चित लावै * ब्रह्मानन्द सुखहि तब पावै ॥

दो०–सुनतहि उद्धवके वचन, रहीं सबै शिरनाय ॥
मानहु मांगत सुधारस, दीन्हों गरॅल[4] पियाय ॥

सो०–रहीं ठगीसी नारि, हरि सँदेश दारुण सुनत ॥
बोलीं सँभारि, बहु उद्धवसों करजोरिके ॥

भले मिले तुम उद्धवराई * भली आय कुशलात सुनाई ॥
कछुयक हती मिलनकी आशा * कियो आय ताको तुम नाशा ॥
इन बातन कैसे मन दीजै * श्याम विरह तनु पल पल छीजै ॥
बिन देखे वह मूरति प्यारी * कुंडल मुकुट पीत पट धारी ॥
उद्धव कहो कौन विधि जीजै * योग युक्ति लैकै कह कीजै ॥
छाँडि अछत नँदनन्दन प्यारो * को लिखि पूजै भीति पगारो ॥
हम अहीर गोरसके भोगी * योग युक्ति जानै कोउ योगी ॥
उद्धव तुमसों साँच बखानै * प्रेम भक्ति हमरे मन मानै ॥
हमको भजनानन्द पियारो * ब्रह्मानँद सुख कहा विचारो ॥
ब्यावरि ब्यथा न वर्ध्या[5] जानै * ये दृग हरि दरशन सुखमानै ॥
पुनि पुनि हमैं वहे सुधि आवै * कृष्णरूप विन और न भावै ॥
नव किशोरको नयन निहारै * कोटि ज्योति ताऊपर वारै ॥

दो०–अधर[6] अरुण मुरली धरे, लोचन कमल विशाल ॥
क्यों विसरत उद्धव हमैं, मोहन मदन गोपाल ॥

१ दरिद्री २ सदा. ३ ज्ञान ४ विष ५ बाझ जिसके पुत्र नहो ६ होठ.

सो०—सपल मेघतनु श्याम, रूपराशि आनँद भर्यो ॥
मोहीं सब ब्रजबाम, और न जानत ब्रह्म हम ॥

उद्धव सुनि गोपिनकी बानी * बोले बहुरो साजि सयानी ॥
जौलगि हृदय ज्ञान नहि नीकै * तौलौं सब पानीकी लीकै ॥
बूझे बिन सपनो सब होइ * बिन विवेक सुख पाव न कोइ ॥
रूप रेख जाके कछु नाहा * नयन मूदि चितवो मनमाहां ॥
हृदयकमलमें ज्योति बिराजै * अनहद नाद निरंतर बाजै ॥
इडा पिंगला सुखमन नारी * सहज शून्यमें बसत मुरारी ॥
नासा अग्र ब्रह्मको बासा * धरहु ध्यान तहँ ज्योति प्रकासा ॥
क्रम क्रम योग पथ अनुसरहू * इहि प्रकार भव दुस्तर तरहू ॥
उद्धव हम गोपाल उपासी * ब्रह्मज्ञान सुनि आवत हाँसी ॥
जो वै रूप रेख नहिं चीन्हा * हाथ पाँव मुख नयन विहीना ॥
तौ यशुदा करि काको जायो * काको पलना घालि झुलायो ॥
कैसे ऊखल हाथ बँधायो * चोरि चोरि कैसे दधि खायो ॥

दो०—कौन खिलाये गोदकरि, कहे न तुतरे बैन ॥
उद्धव ताको न्याय है, जाहि न सूझै नैन ॥

सो०—नटवर वेष प्रकाश, श्रीवृन्दावनचन्द्र तजि ॥
को खोजै आकाश, सुख समाधि लगायकै ।

जानि बूझि मति होहु अयानी * मानहु सत्य हमारी बानी ॥
भजो ब्रह्म ब्रह्म सब होहू * छाडि देहु ममता मदू अरु मोहू ॥
मायाजित आँधरा न बूझे * ज्ञान अनन्त नयन सब सूझे ॥
मैं यह कहत कृष्णकी भाषी * देखहु बूझि वेद सब साखी ॥

१ ज्ञान २ जिसकी हद—इयत्ता नहीं ३ सदा ४ कठिन ५ माया

लगे आगि घर घूर जरावै * को निज गृह तजि घूर बुझावै ॥
घरी करौ बलयोग सबारो * भक्ति विरोधी ज्ञान तुम्हारो ॥
योग कहा सब ओढ़ि बिछावैं * दुसह वचन हमको नहि भावै ॥
अबलन आनि सिखावत योगू * हम भूली केधौं तुम लोगू ॥
ऐसे कहि गोपी अनखानी * मनमें श्याम परेखो आनी ॥
ताही समय भ्रमर इक आयो * सहज निकट ह्वै वचन सुनायो ॥
तासों कहि सब बात सुनावै * उद्धव प्रति बहु व्यङ्ग्य बनावै ॥
वचन स्वभाव निगुण अनुसारी* लागी कहन सकल ब्रजनारी ॥

दो०-कोऊ उद्धवसों कहत, कोइ आली प्रति बात ॥
निज निज मनकी उक्ति करि, अपनी अपनी घात ॥

सो०-उद्धव भूले ज्ञान, उत्तर बोल न आवहीं ॥
रहे मौनसों मान, सुनत वचन नारीनके ॥

बोलि उठी ऐसे इक ग्वारी * आय सुनोरी सब ब्रजनारी ॥
आयो मधुप देन पदनीको * ली है शशी सुयशको टीको ॥
तजन कहत भूषण पट गेहा * सुत पति बधू सजन सनेहा ॥
शीश जटा अरु भस्म लगावो * सगुण छाँड़ि निगुण मन लावो ॥
आये करन तियन परछोहीं * बस्ती छाँड़ि बतावत खोहा ॥
सुनि सखि कहत एक अरुबाला* ये मधुपुरे दोउ बसत मराला ॥
वै अक्रूर और ये ऊधो * निरवारक पानी अरु दूधो ॥
जानत भली गासकी बाता * इनही कस करायो घाता ॥
इनके कुल ऐसी चलि आई * प्रगट उजागर बड़ा सदाई ॥
अबकरि कृपा ब्रजहि उठिधाये * अबलन योग सिखावन आये ॥
ऐसे एक कहत अरु ग्वाली * ये दोउ इयमन सुनरी आली ॥

१ गोपियोंको २ टेढ ३ दया ४ सखी

तब अकूर अबहिं ये ऊधो * मन ओखेट बीन इन सूधो ॥

दो०-वचन फाँसि फाँसि हँसि हरन, उन लिय रथ बैठाय ॥
हर लीन्हीं इन गोपिका, हनी ज्ञान शर आय ॥

सो०-देखहु दीन्ही लाय, चहुँ दिशि दावा योगको ॥
भई कठिन अति आय, अबधौं का चाहत कियो ॥

लागी कहन और इक ग्वारी * मधुकर जानी बात तुम्हारी ॥
तुम जो हमैं योग यह आन्यो * करो भली कान्हीसो जान्यो ॥
इक हरि विरह रही हम जरिकै * सुनते अधिक उठी अब बरिकै ॥
तापर अब जनि लोन लगावो * मते पराई बात चलावो ॥
दई श्याम तुम्हरे कर पाती * सुनिकै बहुत सिरानी छाती ॥
कीन्हों उलटो न्याय कन्हाई * बहेजान माँगत उतराई ॥
इक हम दुसह विरह दुख पावैं * दूने लिखि लिखि योग पठावैं ॥
मधुकर श्याम मेरु अब पायो * नहरल उन कछु गँवायो ॥
पहिले अधर सुधारस प्यायो * नियो पोष बहु लाड़ लड़ायो ॥
बहुरो शिशु।। खेल बनायो * गृहरचना रचि चलत मिटायो ॥
साप कचुरी ज्यों लपटाई * ऐसी हितकी रीति दिखाई ॥
बहुरो सुरति न्इ नहिं जैसे * लगी श्याम हमको अब ऐसे ॥

दो०-काहु राज जहँ जाउ तहँ, लेहु अपन दिरभार ॥
दीजत सबै असीस यह, न्हातहु रुसो न बार ॥

सो०-बहुरङ्गी सुखतूल जितहिं जात तितहीं सदा ॥
इक रंगी दुखमूल, चातक मीनै पतग गति ॥

मैधुप बड़ा कहि तुम्हें सुनैये * अरिकै प्रीति सबै पछितैये ॥

१ शिकार २ बाण ३ ठढी हुई ४ मछली ५ भौंरा

निबहैगी ऐसे हम जानी * उन लंकै कछु औरै ठानी ॥
मारे तेनुको कहा पत्यारो * मृदु मुसकनि मन हरो हमारो ॥
तव माहू मन हरत न जान्यो * हँसि हँसि सब लोगन सुख मान्यो ॥
वरवहि कुबिजा कीन्हो नीको * सुनि सुनि मधुप मिटत दुखजीको ॥
चन्दन तनक श्याम उर धरिकै * श्रीसरबस पियो सब भरिकै ॥
जैसो छल हमसों हरि कीन्हों * ताको दाँव कूबरी लीन्हों ॥
बोली और एक या नारी * भाग दशा उद्धव किन जारी ॥
विरुपत रहत सकल ब्रजनारी * कुबिजा भई श्यामकी प्यारी ॥
खात बच्यो असुरनको जोई * अब कुलवधू कहावत सोई ॥
राजकुँवरि कोऊ हरि वरते * तो कछु हम चितमें नहिं धरते ॥
बन्यो साथ अब अतिही आगर * कागा और मैराल उजागर ॥

दो०–अब खेलत दोउ लाज तजि, बारहमासी फाग ॥
लौंड़ी की डौंडी बजी, हाँसी अरु अनुराग ॥

सो०–हमें देत बैराग, अपना दासी वश भये ॥
चतुर चचोरत आग, उद्धव यह अचरज बड़ो ॥

उद्धव हरि ऐसे काजनकारि * सुयश रह्यो त्रिभुवनमाहीं भरि ॥
आये असुर जिते ब्रजमाही * मारे सकल बच्यो कोउ नाहीं ॥
विषजलसों सब ग्वाल जिवाये * कालीनाग नाथि लै आये ॥
इन्द्रमान दलि ब्रजहि बचायो * गोवर्द्धन कर बाम उठायो ॥
जब विधि बालक वत्से चुराये * वरिकै यल आप उपजाये ॥
धनुप तोरि गज प्रवल सहारो * मल्लन सहित कंस नृप मारो ॥
कीन्हों उग्रसेनको राजा * भये सकल देवनके काजा ॥

१ शरीर. २ हंस ३ बछड़े.

ऐसी कीरति करि सब नारी * कीन्ही नारि कूबरी दासी ॥
कहँ श्रीपति त्रिभुवन सुखदायक * अखिल लोक ब्रह्माडके नायक ॥
ब्रह्मा शिव इन्द्रादिक देवा * करत निरंतर जाकी सेवा ॥
उद्धव कहाँ कसकी दासी * यह सुनि होत सकल ब्रजहाँसी ॥
कन मारत यदुकुलको लाजन * अब करिकै हरि ऐसे काजन ॥

दो०–गावत जग सब गीत अब, वा चेरीके काज ॥
उद्धव यह अनुचित बड़ो, चेरीपनि ब्रजराज ॥

सो०–उद्धव कहिये जाय, अबहूँ चेरी परिहरें ॥
यह दुख सह्यो न जाय, सबनि कहावति कूबरी ॥

दोनों ओर बाम यक ऐसे * उद्धव हरि रीझे धौं कैसे ॥
यक चेरी अरु कूबर पाछे * सोवत नहीं उताने आछे ॥
कुटिल कुरूप जाति कुलहीनी * ताको श्याम सुहागिनि कीनी ॥
कहा सिद्धि धौं कूबरमाहीं * हमको लिखि पठवत क्यों नाहीं॥
हमहूँ कूबर यत्न बनावें * चलिकै टेढा चाल दिखावें ॥
कहे श्याम सोई अब कीजै * लोकलाज भामिनि तजिदीजै ॥
होहिं आय गोकुलके बासी * तजैं निगोडी कुबिजादासी ॥
मधुकर जो हरि हमें बिसार्‌यो * गोपीनाथ नाम क्यों धार्‌यो ॥
जो नहिं काज हमारे आवत * तौ कलंक कन हमहिं लगावत ॥
जोपै प्रीति करी कुबिजाकी * तौ अब बिरद बुलावहिं ताकी ॥
करतहि सुगम सबन करि पाई * प्रीति निबाहन अति कठिनाई ॥
अब परतीति कौन बिधि माने * क्षणमें होगये श्याम बिराने ॥

दो०–ज्यों गजके रद लोंकरी, हरि हमसों पहिंचान ॥
दिखरावनको आनहीं, काज करनको आन ॥

१ सर २ हमशा ३ घी ४ दान

सो०–विपक्षीरा विष खात, छाँड़ि छुहारा दाख फल ॥
मन मन कीजै बात, उद्धव कहिये वाहिसों ॥

उद्धव कहि यह तुम्है सुनाव * जैसे हरिबिन हम दुख पावें ॥
वरु रहते मथुरा घनश्यामा * कित आये यशुदाके धामा ॥
कत करि गोपवेश सुख दीन्हों * कत गोवर्धन करपर लीन्हों ॥
कतहि रासरस रचि वनमाहीं * किये विविध सुख वरणि न जाहीं॥
करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई * अब मन भरी इती निठुराई ॥
जबते ब्रज तजि गये विहारी * तबते ऐसी दशा हमारी ॥
घटे अहार विहार हर्ष हिय * भोग सँयोग आश आवन जिय ॥
बाढी निशा वलय आभूषण * लोचन जल अचल प्रति अजन॥
उर चिन्ता कचुकी उसासा * जीवन रह्यो अवधिकी आसा ॥
बीतत निशा गनत नभतारे * दिवस तस्त पथ लोचन हारे ॥
रही नही सुधि बुधि मनमाही * विरहानैलतनु जरत सदाहीं ॥
सुमिरि सुमिरिकै हरि गुणग्रामा * दुख अधिकात सुहात न धामा ॥

दो०–कहँलगि कहिये निज व्यथा, अरु हरिकी निठुराय ॥
तापर लाये योग अलि, अबलन करत सहाय ॥

सो०–कठिन विरहकी पीर, जिहि व्यापै सो जानही ॥
क्यो धरिये मन धीर, सुनि अलिवचन भयावने॥

जे कर्चे फूल फुलेल सँवारे * निज कर हरि ग्रन्थे निरवारे ॥
कहि पठयो तिनको मन भावन* भस्मै सानिकै जटा बनावन ॥
रत्नजटित ताटँक सुहाये * जिन कानन मोहन पहिराये ॥
तिनको अब मुद्रा माटीके * ल्याये है उद्धव गढ़िनीके ॥

१ रचकर २ अनेकप्रकारक ३ विरहकी आच ४ बाल ५ राख ६झुमके

भाल तिलक अञ्जन नक बेसर * मृगमेद मलैयन कुंकुम केसर ॥
उर कचुँकी मणिनके हारा * सब तनि कहत लगावहु छौरा ॥
उपहिगर श्याम सुभग सुन मेली * पठइ लहि आँगी अरु सेली ॥
पहिरे जातसु चीर सुहावन * ताहि भगाहों कहत रँगावन ॥
जामुख पान सुगन्ध सुहाये * तिन हाथन ब्रजराज खवाये ॥
रस विवाद बहुतान तरंगा * गावन कहत रहत हरिसंगा ॥
सदन विलास हासरस भाष्यो * हरिमुख अधर सुधारस चाख्यो ॥
तिन मुख मौन कौन विधि कीजै * ऊरध श्वास घुटि जिमि चीजै ॥

दो०—वे तो हरि अतिही कठिन, जानी तिनकी घात ॥
मधुप तुम्है नहिं चाहिये, कहत कठिन यों बात ॥

सो०—तब बजाय मृदुबैन, अधरासव चोटी नहीं ॥
किये रास रस ऐन, अब कटु वचन सुनावहीं ॥

मधुवर मधु माधवकी बानी * हम सब जिमि माखी लपटानी ॥
उडि नहिं सकी फँसी हैं तामें * आवत सोच कहे अब वामें ॥
जिमि अहारवश मीन विचारे * कटक गिलत कठिन अनियारे ॥
अटकत कुटिल हृदय दुख बाढै * बहुरि कौन विधि तिनको काढै ॥
जैसे बधिक सुनाद सुनावै * मृग मन मोहि समीप बुलावै ॥
बहुरि करत धनु शर सधाना * तुरतहि मारि हरतहै प्राना ॥
जिमि सनेह बल दीप प्रकाशै * रजनीके तमको दुख नाशै ॥
रूप लोभ शर मनहिं दिखाइ * क्षणमें तिनको देत चराई ॥
जिमि ठग मद मोदक न खवावै * पथिक नैननसों प्रीति जनावै ॥
रस विश्वास बढ़ावत भारा * प्राण सहित अर्थ हरत पिछारा ॥

---

१ कस्तूरी २ चंदन ३ आगी ४ धूल ५ भगवाँ ६ रातके ७ अंगोछो ८ लड्डू ९ गाट

तिमि मृदु मुसकनि मनहिं चुराई * खगजिमि हम ब्रजनाथ भुळाई ॥
पाछे अब करनी यह कीनी * योगछुरी सबके गरदीनी ॥
दो०– हरि हमसों ऐसी करी, कपट प्रीति बिस्तार ॥
भई विरह विषवेलि ब्रज, रसकी ऊख उखार ॥
सो०–कहिये कहा बखान, जिनसों हित यह मति तिन्हैं ॥
हरिजू हमरे प्रान, हम हरिके भावैं नहीं ॥
यह सुनि कह्यो और इक ग्वाली * कहतकहा मधुररसों आली ॥
उनहींको संगी यह जोऊ * चचल चित्त श्याम तनु दोऊ ॥
वे मुरलीध्वनि जग मनमोहन * इनकी गुंज सुमन दलजोहन ॥
वे निशि अनत प्रात वहुं आनैं * येवसि कमल अनत रुचि मानैं ॥
वे द्वै चरण सुभग भुज चारी * ये षट्पद दोउ विपिनैं बिहारी ॥
वे पटपीत मंजु तनु काछे * इनके पीत पख दोउ आछे ॥
वे माधव ये मधुप कहावत * याह भाँति भेद नहिं आवत ॥
वे ठाकुर ये सेवक उनके * दोऊ मिले एकही गुणके ॥
कहा प्रतीति कीजिये इनकी * परी प्रकृति ऐसी है जिनकी ॥
निरस जानि भाजत पलमाहीं * दया धर्म इनके कछु नाहीं ॥
मनदै सरवस प्रथम चुरावैं * बहुरो ताके काम न आवैं ॥
इनकी प्रीति किये यों माई * ज्यों भुस परकी भीति उठाई ॥
दो०–कह्यो एक तिय सुन सखी, कारे सब इक सार ॥
इनसों प्रीति न कीजिये, कपटिनकी चटसार[३] ॥
सो०–देख्यो करि अनुमान, कारे अहि[४] कारे जलद[५] ॥
कवि जन करत बखान, भ्रमर काग कोयल कपट॥

१ भौंरे २ वन ३ पढनेकी जगह ४ साँप ५ मेघ.

राखि पिटारेनो अहि कारो * पयं पियाय अतिहित प्रतिपारो ॥
कुल स्वभावसों डसि भजिनाहीं * यदपि तिहें लाभ कछु नाहीं ॥
जैलद सलिल बरषत चहुपाहीं * भरत सकल सर सरितामाहीं ॥
निशि दिन ताहि पपीहा ध्यावै * बाँवरि देह प्रीति बढ़ावे ॥
एक बूंदको लहि तरसावै * भ्रमर मालतीसों मन लावै ॥
जब रसहीन होत वा माहा * निर्मोहा तजि जाहि पराहां ॥
सुनियत कथा काग पिकेरी * अन्नसेव बरावत हेरा ॥
बड़े होत निज कुल उन्नाहीं * बैठत निजमाता पितुपाहीं ॥
ये सब कारे हरि परवारे * मवहिनमें अनिहो अतियारे ॥
सबकी उपमा अरु गुण योगू * याय देत पन्तर यनि लोगू ॥
अलिकुल अलक कोकिलावानी * भुन भुजग तनु नन्द बखानी ॥
समझी बात आज यह सारी * जानि कपटकी कुजविहारी ॥

दो०–मृदु मुसकनि विष डारिकें, गये भुजग ज्यों भाग ॥
नन्द यशोदा यों तज्यो, ज्यों कोकिल सुत काग ॥

सो०–गये प्रीति यों तोर, निमि अलि रस लै सुमनसों ॥
धनले भये कठोर, चातकसो हम रटत सब ॥

उद्धव सुनो एक उपखानो * बानी तात राय पहिचानो ॥
हरि आगे तुमसे अधिकारी * क्यों नहि दुख पावें भजनारी ॥
कहत सुनत लागतहो ऐसे * मीठो बढ़त गरलसों जैसे ॥
पायो छोर ल्पनको तबहीं * लखि आयो निगुण पद जबहीं ॥
योग तहाँ अधिकारहि पाये * क्योंनाहं तुवा यहा बोवाये ॥
सुनिलीने उद्धवजी हमसों * राज काज चलिहै नहिं तुमसों ॥
करिये पोष आपनी काया * आये इतै करी बड़ि माया ॥

१ दूध २ मद ३ जल ४ नदी ५ कोकिल ६ भौंर ७ विष

जो तुम है हमरे हित आन्यो * सो हम शिरचढाय सुख मान्यो ॥
सुनिकै सब ब्रजलोग अनखो * नरनारी परच्यो कर बखो ॥
अब सभारि अपनो यह लीजै * जिन तुम पठये तिनहीं दीजै ॥
उनहिनमें यह योग समैहै * इहां न काहूपै निरवैहै ॥
हम ब्रज वसत अहीर गँवारी * योग सोगकी नहिं अधिकारी ॥

दो०-अंध आरसी बधिर ध्वनि, रोग ग्रसित तनु भोग ॥
उद्धव तिनको न्यावहै, हमै सिखावत योग ॥

सो०-हमैं योग जो योग, सोई योग मिलाइये ॥
कहे न जानै रोग, कहा कीजिये वैद्यसों ॥

उद्धव जाउ भले तुम ओऊ * अपने स्वारथके सब कोऊ ॥
निर्गुण ज्ञान कहा तुम पायो * कौने या ब्रज तुम्ह पठायो ॥
और कह्यो सदेशो कोऊ * कहि निवरै अब सुनिये सोऊ ॥
तब अक्रूर आय वह कीन्हो * सगरे ब्रजको सुख हरिलीन्हो ॥
तुम आये उद्धव यहि ठाटी * अन्न छुडाय खवावत माटी ॥
जोपै हती ज्ञानकी गाथा[१] * तौ कत रास नचे ब्रजनाथा ॥
मन हरिलीन्हो वेणु बजाई * आधी निशि सब नारि बुलाई ॥
रसलीला वृन्दावन ठानी * अब मथुरा ह्वै बैठे ज्ञानी ॥
तब ममता क्यों नहिं उरधारी * मातुल[२] मान्यो कंस पछारी ॥
बूझि परे नीके सब काई * हुती कछुक आशा सोउ खोई ॥
पढे सबै एकै परिपाटी[३] * अधिक एकते एक न घाटी ॥
हम बावरी चली नहि लोंहो * ज्यों जग चलत आपनी गोंहो[४] ॥

सो०-मनकी मनहीमें रही, करिये कहा विचार ॥
हम गुहारि जितते चहत, तितते आई धार ॥

---
१ कथा २ मामा ३ रीति ४ रस्ता

सो०–जानतहैं सब कोय, जैसी तुम हमसों करी ॥
हम महिंऽीनी सोय, पावोगे अपनो कियो ॥

उद्धवजी पूछत हम तुमसों * जो हरियोग सिखावत हमको ॥
ता करि कृपा आपनें न आवे * योग ज्ञान कहि प्रगट जनावे ॥
जो उपदेशी निकट न आवे * तो श्रोता क्यहि विधि मनलावे ॥
अबलग सुनी न काहू आननें * मग्न देन लागे विन कानन ॥
जबलगि युक्ति न सिद्धि बतावे * तबलगि साधक कैसे पावे ॥
हम गोकुल वे मथुरामाहीं * खेती होन सँदेशन नाहीं ॥
नोपै करी श्याम यह माया * करैं और तो इतनी दाया ॥
दरशन प्रथम दिखावें आइ * करहिं पवित्र चरण पखराई ॥
योग जानिकै नगर तियागैं * सघन कुंजवन मन अनुरागैं ॥
आसन मौन नेम आचारा * जप तप संयम व्रत व्यवहारा ॥
यग अंग कहियतहैं जेते * वनहीमें बनिआवे तेते ॥
करि प्रबोध कर माथ छुवावे * होहिं सिद्ध फल तौ सुख पावे ॥

दो०–तबनो खेलन सांड करि, रागयो कछु न सुहाय ॥
अब यह योग मिल्यो कहाँ, उद्धव कहियो जाय ॥

सो०–हमको निर्गुण ज्ञान, जहं स्वारथ तहँ सगुणहैं ॥
लिख पठयो निदान, चांटे सहत लगायके ॥

बोली और एक रिस मानी * मधुकर समुझ कहत जिनवानी ॥
पर मधु पिये जात नहिं दीजै * मुख देखेको न्याय न कीजै ॥
बीचहि परे गलत सो मारे * राव रंककी शंक न राखे ॥
सूझ न परत दिवस अरु राती * बात कहन ही ठकुर सुहाती ॥

१ प्रकार २ मुख ३ ज्ञान ४ मरोबकी

मनयुवतिनको योग सिखावत * वृषभ जोति सुरभी न गनावत ॥
रे कृतघ्न लपट व्यभिचारा * कीरति इहै आनि विस्तारा ॥
हम जान्यो अलि है रसभोगी * कत सीख्यो यह योग कुयोगी ॥
जे भयभीत होहिं लखि माला * ते क्यों छुवें भयानक व्याला ॥
क्यों शठ वक्त छाडि लज्जाडर * कहँ अबला कहँ देश दिगम्बर ॥
साधु होय तो उत्तर दीजै * कहा तोहिं कहि अपयश लीजै ॥
भई वायसी देखियत तोहीं * इन बातन डर लागत मोहीं ॥
प्रथमहि यत्न आपनो कीजै * तापाछे औरन सिख दीजै ॥

दो०—कत श्रम करि बकबक करत, कौन सुनत तुव बात ॥
बन कारो यो होतहै, उठिकिन छोंते जात ॥

सो०—देखि मूढ़ चित चाय, कहँ परमारथ कहँ विरह ॥
राज रोग कफ जाय, ताहि खवावतहौ दही ॥

बोली और एक कोउ नारी * उद्धव सुनिये बात हमारी ॥
प्रथमहि ब्रजकी कथा विचारो * पाछे योग सिद्ध विस्तारो ॥
जा कारण पठये हैं माधो * सो विचार कछु जियमें साधो ॥
केतिक बीच विरह परमारथ * देखौ जियमें समुझि यथारथ ॥
परम चतुर हरिके निज दासा * रहत सदा सतनके पासा ॥
जल बूडत पुनि पुनि अकुलाई * कहा फेन पकरत हो धाई ॥
सुदर श्याम कमलदललोचन * सब विधि सुखद सकल दुख मोचन ॥
ब्रजको जीवन नन्ददुलारो * कैसे उरते जात बिसारो ॥
योगयुक्ति किहिकाज हमारे * वाकी मुरलीपर सब वारे ॥
तुम निर्गुणकी कीरति गाइ * करै कहा सो बहुत बडाई ॥

१ बैल २ उपकार न माननवाल ३ लपाटिया ४ रहीनाज ५ सर्प ६ स्त्री ७ श्रीकृष्ण

अति अगाध पैह नहिं पारा * मन बुधि कर्म सबनके सारा ॥
रूप रेख वपु वर्ण न जासों * कैसे नेह निबाहै तासों ॥
दो०-बिनहीं तोय तरंग अरु, बिन चेतन चतुराय ॥
अबलों व्रजमें नहिं हुती, मधुप करी तुम आय ॥
सो०-कहो विविध विध कोय, नहिं सुहात नँदनन्द बिन ॥
अन्न सुधारत जोय, रूखे चन्दन क्यों सुख लहै ॥
लागी कहन और यक ग्वाली * कितवे[1]यान कहत है आली ॥
कहिये त्यहि जो होय विवेकी[2] * यह अंति[3] निर्गुं[4] बातनको टेकी ॥
बकियासों को मूड़ पचावै * पर्के सुसी हाथ कह आवै ॥
तनि रस गेह नेह हरि पीको * सिखवत नीरस निगुण फीको ॥
देखत प्रगट नयन कछु नाहीं * ज्योतिज्योति खोजत तनुमाहीं ॥
श्रवणे सुनत जाकी मुरलीधुन * भूलि रहे शिवमे योगी जन ॥
सोप्रभु भुज ग्रीवापर डारी * बन बन लाल छुड़ाय विहारी ॥
राग विलास विविध उपजायो * संग हमारे नाच दिखायो ॥
लोकलाज कुलकानि नशाई * हम सब तिनके हाथ बिकाई ॥
काटि सुहाग भ्रमरसो ढेली * बोवत योग जहरकी बेली ॥
चौपद होय ताहि समुझैये * कौनभांति पर्पैदहि सिखैये ॥
लागै कौन कहे अब याके * छाछौ दूध बराबर जाके ॥
दो०-हम बिरहिनि बिरहा जरी, जारी और अनंग ॥
सुख तौ तबहीं पाइहैं, जब नाचैं फिर संग ॥
सो०-छाडि जगत उपहास, दृढ व्रत कीन्हो श्यामसों ॥
सोई हमें सुपास, और युक्ति चाहैं नहीं ॥

---

१ मान्य २ ज्ञानी ३ मौरा ४ रिझो ५ कान ६ गरदन ७ भौरेको ८ चामरव

सुनु रे मधुपे कुटिल कुविचारी * ये ब्रज लोग कृष्णव्रतधारी ॥
सुन्दर श्याम रूप रस साने * श्रीगोपाल तजि और न जाने ॥
जो तजि श्याम औरको ध्यावै * व्यभिचारी ते भक्त कहावै ॥
विद्यमान तजि सुरसरि तीरा * चाहत कूप खोदिकै नीरा ॥
सुनै कौन यह सीख तुम्हारी * अति अनन्य मण्डली हमारी ॥
योगमोट तुम शिर धरि आनी * सो नहिं ब्रजवासिन मनमानी ॥
इतनी दूर जाहु लै कासी * चाहत मुक्ति तहांके वासी ॥
हम कह करैं मुक्तिलै रूखी * अवला श्यामसंगकी भूखी ॥
ओसन प्यास कौनविधि जाइ * जबलगि नीर न पियै अघाई ॥
ऐसी बात कहौ अलि हमसों * तदहु शोच मिलिहै हरि तुमसों ॥
हेतु हमारे जो पगु धारे * तौ हितकरि दुख हरो हमारे ॥
करहु सो यत्न श्याम जिमि आवैं * प्रगट देखि छवि हम सुख पावैं ॥

दो०–सत्य ज्ञान औ ध्यान अलि, साँचो योग उपाय ॥
हमको साँचो नन्दसुत, गर्ग कह्यो समुझाय ॥

सो०–वश कीन्ही मृदुहास, हम चेरी नंदनन्दकी ॥
नख शिख अंग विलास, तिनहीं देखें जीजिये ॥

इतनेहीसों काज हमारो * मिलिहि फेरि ब्रजनन्द दुलारो ॥
और अनेक उपाय तिहारो * राज करहु अलि हमहि न प्यारो ॥
तुम तो मधुप प्रीति रस जानो * हम काजै कत होत अयानो ॥
सर्व सुमनमें फिरि फिरि आवत * क्यों कमलनमें आप बँधावत ॥
ज्यहि बल काठ फोरि घर करहू * क्यों न कमल दल टारत तबहू ॥
रँगे श्याम रंग जे पाहलेस * चढ़त और रँग तिनपर कैसे ॥

---

१ हे भौरे २ रंडीबाज ३ गंगाजी ४ जिसके समान दुसरी नहो ५ पानी ६ लिये

पारस परसि जो लोह सुहायो * सो किमि बहुरि चुंबक लपटायो ॥
सुने जिनन मुरली ध्वनि कानन * सो किमि सुनत कौगेरी तानन ॥
बसे जासु उर सगुण कन्हाई * कैसे निर्गुण तहाँ समाई ॥
यह मन श्याम स्वरूप लुभानो * कहा करै लै योग बिरानो ॥
सिंह सदा आमिष रुचि मानै * तृण न भखै पुनि तजै पुराने ॥
हरि तजि हमैं न और सुहाई * कोटि भाँति कोउ कहै बुझाई ॥

दो०–द्वैदग रूप विराटके, कहियत एक समान ॥
ताहूमें हित चन्द्रमा, नहीं चकोरहि भान ॥

सो०–लोचन रूप अधीन, सगुण सलोने श्यामके ॥
क्यों सुख पावै मीन, जल बिन डारे धूपमें ॥

नहैं मानत ये नयन हमारे * सुख न लहत बिन कान्ह निहारे ॥
*भये श्याम छबि जलके मीना * मुरली ध्वनिके मृग आधीना ॥
अलि लोभी पंकज पद करके * कोकिकोकि नदसुत दिनैकरके ॥
बदनै इन्दुके कुमुद चकोरा * तन घन छबिके चातक मोरा ॥
वहै रूप परगट अब देखैं * जीवन सफल तबहिं करि लेखैं ॥
बिगरि परे मन मधुप हमारे * ज्ञान बचन नहिं सुनत तुम्हारे ॥
ललित अनङ्ग रूप रस साने * खरे चकित ताते जग जाने ॥
मानपूछ लौं सम नहिं होई * जो कोउ यत्न करै पचि कोई ॥
सो मन गयो श्यामके साथा * सुनै कौन अब निर्गुण गाथा ॥
एकै मन एकै वह मूरति * अटक्यो ताहि न तजी महूरति ॥
जो होतो दूजो मन कोऊ * तो हम लै धरती तहँ सोऊ ॥

---

* यहां श्रीकृष्णजीके अरु गोपियोंके नयोंका रूपक है जैसे कृष्णजी हरि लाल गोपियोंके नयन मीन।

१ कावेरी २ मांस ३ सूर्यके ४ मुख ५ भैंरे ६ कथा

रहै प्राण तनु प्रेमहि खोई * कौन काज आवै पुनि सोई ॥
बिना प्रेम शोभा नहिं पावै * निशा गये जिमि शशि न सुहावै ॥
बिना प्रेम जग खग बहुतेरे * चातक यश गावत सब टेरे ॥
प्रेमसहित मीननकी करणी * नयन अछत देखहु जग बरणी ॥
हमते प्रेम जात नहिं दीन्हो * दुहूँ भाँति हम तो यश लीन्हो ॥
मिलै श्याम तो अधिक रखायो * नातर सकल जगत यश गायो ॥
कहँ हम यह गोकुलकी ग्वारी * वर्णहीन घट जाति हमारी ॥
कहँ वे श्रीकमलाके नाथा * बैठे पाँति हमारे साथा ॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अतीना * सो मन भये हमारे मीता ॥
तिन्है संगलै रास विलासी * मुक्ति इते पर पायी दासी ॥
यह सुनि बोलि उठी इक मानै * मेरो बुरो न कोऊ मानै ॥
रसकी बात रसिकही जानै * निरस यहा रसकी पहिचानै ॥

दो०–दादुर[1] कमलन ढिग बसत, जन्म मरण पहिचानि ॥
अलि अनुरागी जानिकै, आप बँधावत आनि ॥

सो०–जानै कहा मिठास, गूंगो बात सवादको ॥
मानहुँ काटचो घास, इनसों कहिबो प्रेमरस ॥

धनि धनि उद्धव तुम बड़भागी * हरिसों हित नहिं मन अनुरागी ॥
पुँरइन बसत यथा जलमाहीं * जलको दाग लग्यो कहुँ नाहीं ॥
गागर नेहनीरमें जैसे * अपरस रहत न भीजन तैसे ॥
पैरत नदी बूद नहिं लागी * नैक रूपसों दृष्टि न पागी ॥
हम सब ब्रजकी नारि अयानी * ज्यों गुटसों चींटी लपटानी ॥
अब कासों वह लगत बखानै * लागे बिन उद्धवको जानै ॥

---

१ बाहर २ मेंडक ३ काई

उद्धव हरि हैं इश हमारे * ते अब कैसे जात विसारे ॥

दो०–योग दीजिये लै तिन्हैं, जिनके मन दशशीश ॥

कित डारत निर्गुण इते, उद्धव व्रजमें खीश ॥

सो०–गुण कर मोही श्याम, वो निर्वाही निर्गुणहि ॥

क्यि जन्मके काम, क्यो तजिये नँदनन्द अब ॥

कहत मधुप तुम बात सुहाई * कहतहि सुगम करत कठिनाई ॥
प्रथम अग्नि चन्दनसी जानी * सती होन उम है सुसमानी ॥
ताकी तपत और सियराई * कहै कौन पाछे पुन आई ॥
पैठन सुभट यथा रण जाई * कुसुमलता सम खैङ्ग सुहाई ॥
दियो अपनपौ शूर उदारा * वो अब करै तासु निरवारा ॥
ये मनमोहनसों उरझाने * दुख सुख लाभ हानि नहि जाने ॥
प्रेमपथ सूधो अति ऊधो * मति निर्गुण कटक लै रूधो ॥
नेह न होइ पुरानो क्योंहीं * सँरितप्रवाह नयों नित ज्योंहीं ॥
निरसहिं आनँद रूप छरी जल * रवि प्रतीति नहि मान चरै थल ॥
बूड़त उमहि सिन्धुके माहा * येतउ नीर न पियत अघाहां ॥
दिन दिन बढ़त कमल दल जैसे * हरि छवि दृगन लालसा तैसे ॥
बसे गुपाल हृदय अँम्बुज अँलि * निबसत नाहिं सनेह रहे रलि ॥

दो०–योगकथा अब मति कहौ, उद्धव बारहिंबार ॥

भजै आन नँदनन्द तजि, ताकी जननी छार ॥

सो०–यहै हमारे भाव, अब कोऊ कछुवै कहौ ॥

जैसो होय सुजाय, रही प्रीति नँदलालकी ॥

---

१ सहन २ ठढी हुइ ३ तरवार ४ नदीका बहाव ५ कमल ६ भौंरा

रहैं प्राण तनु प्रेमहि सोई * कौन काज आवै पुनि सोई ॥
विना प्रेम शोभा नहिं पावै * निशा गये जिमि शशि न सुहावै ॥
विना प्रेम जग खग बहुतेरे * चातक यश गावत सब टेरे ॥
प्रेमसहित मीननकी करणी * नयन अछत देखहु जग वरणी ॥
हमतें प्रेम आत नहिं दीन्हो * दुहूँ भाँति हम तो यश लीन्हो ॥
मिलैं श्याम तो अधिक सुहायो * नातर सकल जगत यश गायो ॥
कहँ हम यह गोकुलकी ग्वारी * वर्णहीन घट जाति हमारी ॥
कहँ वे श्रीकमलाके नाथा * बैठे पाँति हमारे साथा ॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अतीता * सो ब्रज भये हमारे मीता ॥
तिन्हें सगले रास विलासी * मुक्ति इतै पर वापुरी दासी ॥
यह सुनि बोलि उठी इक आनै * मेरो बुरो न कोऊ मानै ॥
रसकी बात रसिकही जानै * निरस वहा रसकी पहिचानै ॥

दो०–दादुर कमलन ढिंग बसत, जन्म मरण पहिचानि ॥
अलि अनुरागी जानिकै, आप बँधावत आनि ॥

सो०–जानै कहा मिठास, गूंगो बात सवादको ॥
मानहुँ काटयो घास, इनसों कहिबो प्रेमरस ॥

धनि धनि उद्धव तुम बड़भागी * हरिसों हित नहिं मन अनुरागी ॥
पुरइन बसत यथा जलमाहीं * जलको दाग लग्यो कहुँ नाहीं ॥
गागर नेहनीरमें जैसे * अपरस रहत न भीजत तैसे ॥
पैरत नदी बूंद नहिं लागी * नेकु रूपसों दृष्टि न पागी ॥
हम सब मनकी नारि अयानी * ज्यों गुड़सों चींटी लपटानी ॥
अब यासों वह लगत बखानैं * लागे निन उद्धवसों जानैं ॥

१ बाहर २ मेंढक ३ काई

हृदय दहै निन शोचत रहिये * पशु वेदन ज्यों मन मन दहिये ॥
सबते पीर लगनकी भारी * यत्न रहित दुख सुखते न्यारी ॥
मन्त्र यन्त्र उपचार न पावै * वेद कहालगि ताहि बतावै ॥
घायल पीर जानिहै सोई * लाग्यो घाव जाहिके होई ॥
प्रेम न रुक्त हमारे बूते * गज यहुँ बँधत कमलके सूते ॥
*कैसे विरह समुद्र सुखाई * योग अग्निकी तनक लुराई ॥*

दो०–यद्यपि समुझाये बहुत, हम करि मनहि कठोर ॥
तदपि न कबहूँ भूलई, उद्धव नन्दकिशोर ॥

सो०–क्यों सुख पावै प्रान, पलक लगत तब सहत नहिं ॥
लागे वर्ष बिहान, अब बिन देखे श्यामके ॥

तब षटमास रासके माहीं * एक निमिषे सम जाने नाहीं ॥
अब औरै गति बिना कन्हाई * एक एक पल कलप बिहाई ॥
तब वन वन हरि संग विहारी * अब व्रजमें यह दशा हमारी ॥
ज्यों देवी उजारि पुरमाहीं * को पूजै कोउ मानत नाहीं ॥
कहत और यौवन बन ऐसो * चित्र अचेरे घरको जैसो ॥
नवरादि अति सीरो अब ताती * भयो सकल सुख करि तनु हाती ॥
मनकरि प्रीति गये मनभावन * जासों हम लागी दुख पावन ॥
फिरि फिरि यहै समुझि पछिताहीं * कह्यो हतो आवन हम पाहीं ॥
याही आश प्राण तनु माहैं * बारेक बहुरि मिल्योही चाहैं ॥
उद्धव हृदय कठोर हमारे * फटे न बिछुरत नंददुलारे ॥
हमते भली जलचरी होइ * अपनो नेह निबाहत जाई ॥
जा हम प्रीतरीति नहि जानी * ता मननाथ तजी दुख मानी ॥

१ उपम २ पलकमात्र

दो०-कहँ लगि कहिये आपनी, उद्धव तुमसों चूक ॥
हम व्रजवास बसी मनहुँ, सब दाहिने शूक ॥

सो०-उद्धव कह्यो न जाय, मोहन मदनगोपालसों ॥
नयनन देखो आय, एक बार व्रजकी दशा ॥

बोली और एक व्रजबाला * उद्धव भली करी गोपाला ॥
अब मन कबहूँ आवैं नाहीं * मधुरहि रहैं सदा सुखमाहीं ॥
इहाँ चली अब उलटी चाली * देखत दुख अइहैं बनमाली ॥
तपत हैन्दु सूरजकी भाँती * चन्दन पवन सेज सब ताती ॥
भूषण बसन भैनलसम दागे * गृहवन कुंज भयावन लागे ॥
नितनित मार हूमनकी हारन * धनु शर लिये करतहै मारन ॥
हमतो न्याय सहैं दुख येतो * मजवासिनी ग्वाल जड़ केतो ॥
वे प्रभु भोग सँयोग सुवाला * क्यों सहिहैं कोमल तनु ज्वाला ॥
उद्धव कह्यो सँदेश सिधारो * जान्यो सब परपंच तिहारो ॥
बातन कहा हमैं भरमावत * जलमथि सुन्यो न माखन आवत ॥
सगुण निकट दर्शतहैं जिनको * निर्गुण ओट बतावत तिनको ॥
जोपै निन तुम यहै बखानो * प्रभु पूरण सबमें समजानो ॥

दो०-तो तुम कापै करतहौ, उद्धव आवागौन ॥
को नेरे[7] को दूर है, कहा कोन हा कौन ॥

सो०-खोजहु पावत नाहिं, योगी योग समुद्रमें ॥
इहा बँधावत बाहिं, सो यशुदाके प्रेमवश ॥

---

१ हालन २ श्रीकृष्ण ३ चन्द्रमा ४ आंच ५ कामदेव ६ पड़ोसी ७ पास

हम गुवाल गोकुलके बासी * गोपनाम गोपाल उपासी ॥
राजा नद यशोदा रानी * यमुना नदी परम सुखदानी ॥
गिरिवरधारी मिन हमारे * वृन्दावन मिलि सग विहारे ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि सब दासी * इहा न योग विराग उदासी ॥
वहे प्रेमकी रसकी सब भूखी * दीजे कहा मुक्ति रूखी ॥
निर्गुण कहा प्रेमरस जाने * उपदेशहु जे लोग सयाने ॥
हम ऐसेहि अपनी रुचिमाने * रहिहैं विरह वायु बौराने ॥
निशिदिन सपने सोवत जागे * वहे श्याम छबिसों दृगपागे ॥
बालचरित्र किशोरी लीला * सुधा समुद्र सकल सुखशीला ॥
सुमिरि सुमिरि सोइ गुणग्रामा * रटिरटि मरिहैं माधव नामा ॥
विरहा मधुप प्रेमको करई * ज्यों पट पुटत रग गहि भरई ॥
ज्योंघट प्रथम अनल तनु तावे * बहुरि उमदि रस भरि सुख पावे ॥

दो०–सम्मुख सरसहि सूर जय, रवि रथ बेधत जाय ॥
प्रथम बीज अंकुरनमहि, पुनि फल फरत अघाय ॥

सो०–को दुख सुखहि डराय, कृष्ण प्रेमके पथ चढि ॥
और न कछु उपाय, उद्धव मीनेन नीर बिन ॥

बोली एक सखी सुनि लीजे * अपने काज कहा नहिं कीजे ॥
रिनाचारि यदपू मव करिये * जो हरि मिलै योगहू धरिये ॥
जटा बनाय भस्म तनु सानै * मूँदरहैं नयन बिन आँनै ॥
सिंगी दट लेहि मृगछाला * पहिरें यथा सेली माला ॥
धरिधीरज मनगुन सार मदिये * मानो आज उचार न लहिये ॥
विरह ज्ञान बिन बिनहीं काजै * मरियतहै यह दुसह दुराजै ॥
एक सखी ऐसे कहदीन्हों * उद्धव तुम जु कह्यो सब कीन्हों ॥

१ आठ २ नव ३ अमृत ४ आंच ५ मर्यादायां ६ जल ७ राख

नयन मूँदिकै ध्यान लगायो * इतउत मनको बहुत चलायो ॥
उरझि रह्यो नँदलाल प्रेमवश * नेक न चलत गयो गाढ़े फँस ॥
जो हरि मिलत जानिहु परते * तो ले योग शीशपर धरते ॥
पहिले देहु तिन्हहिं फिरजाई * जिन पठये तुम इतहि सिखाई ॥
लेहिं न वेऊ ज्ञान हमारे * देखियत माथे परेउ तुम्हारे ॥

दो०–भूले योगी योग जिहिं, तुमसे कियो बखान ॥
आन्यो गयो न पचमुख, ब्रह्मरंध्र तजि प्रान ॥

सो०–हम उर जाको ध्यान, हमहिं दिखावहु ज्योतिसो ॥
निपटहि छूछो ज्ञान, उद्धव कहा सुनावहू ॥

उद्धव जबते श्याम निहारे * तबते योगी नयन हमारे ॥
शिखासीख गुरुजनकी टारी * धरेउ जनेऊ लाज उतारी ॥
पल्व वमन धुँधुट गृह त्यागे * दिशा दिगम्बर मन अनुरागे ॥
सुनत समाधि रूप टकलाये * भये सिद्ध नहिं डिगत डिगाये ॥
ताके बीच विघ्नके कर्ता * पचि पचि रहे मातु पितु भर्ता ॥
अब ये और योग नहिं जाने * वही श्याम छवि साधु भुलाने ॥
भये कृष्णमय नयन हमारे * नहीं कृष्ण हमते कहुँ न्यारे ॥
हममों कहत कौनकी बातें * गया कौन तजि हमकों घातें ॥
मथुरा जाय रजक किन मारेउ * धनुष तोरि किन द्विरद पछारेउ ॥
किन मल्लन मथि कंस बहायो * उग्रसेन किन बन्दि छुड़ायो ॥
को वसुदेव देवकी जाये * तुम किनके पठये मन आये ॥
कुंडल मुकुट गुंज उर राजैं * गोकुल यशुदा नन्द विराजैं ॥

दो०–को पूरण को अलखै गति, को गुणरहित अपार ॥
करत वृथा बकवाद कत, यहि ब्रज नन्दकुमार ॥

१ शिव २ बगे. ३ हाथी ४ जो दीख नसके

हनति ताप चहुँ दिशि तनु देखो * पियत धूम उपदेश विशेषो ॥
करि सुप्रेम वदन जगवदन * कर्म धर्म कामना निकदन ॥
हमजु समाधि प्रीति बानिकहरि * अंग माधुरी हृदय रहीं धरि ॥
निरखत रहत निमेष न लागत * यह अनुराग योग नित जागत ॥
सगुण रूप रग रस रागे * भ्रकुटि नैन नैनन लगि लागे ॥
हँसनप्रकाश सुमुख कुडल द्युति * शशि अरु पैर देखियेऊ श्रुति ॥
मुरली अधर मधुर सुर गाजै * शब्द अनाद स्वई ध्वनि बाजै ॥

दो०–वर्षत रस रुचि मन अचै, रह्यो परम सचमान ॥
अति अगाध सुख सङ्गको, पद आनन्द समान ॥

सो०–मन्त्र दियो रतिऐन, भजन ज्ञान हरिको हमैं ॥
गुरू करैं अब कौन, कौन सुनै फीको मतो ॥

उद्धव मनकी रीति विहारी * भये विवश निज नेम विसारी ॥
लाग्यो कहन धन्य ब्रजबाला * जिनके सवस मदनगोपाला ॥
धन्य धन्य यह प्रेम तुम्हारो * भक्ति सिखाय मोहि निस्तारो ॥
तुम मम गुरु मैं दास तुम्हारो * धन्य कृष्णपद दृढ मत धारो ॥
मैं जड़ कीन्हो और उपाई * अब तुम दरदा भक्ति नित पाई ॥
उद्धव आयो योग सिखावन * सीखे प्रेमभक्ति अति पावन ॥
भये मग्न रस प्रेम विशाला * लागे गावन गुणगोपाला ॥
लोटत कबहुँ कुनमें धाई * कबहूँ विटपन भेंटत धाई ॥
कबहूँ ब्रज रज शीश चढावें * कबहूँ गोपिन पद शिर नावें ॥
पुनि पुनि कहत धन्य ब्रजनारी * धन्य ग्वाल गैया वनचारी ॥
धन्य भूमि यह सुखद सुहावन * धन्य धाम वृंदावन पावन ॥
ऐसे प्रेम मगन मन फूल्यो * कोहौं कित आयो सुधि भूल्यो ॥

१ हँसी २ सूर्य ३ वृथ ४ पवित्र

सो०–जाहि चरावत धेनु, दिन उठि ग्वालन संग मिलि ॥
मधुर बजावत बेनु, आवत सध्याके समय ॥

जिन उद्धव मथुरा तव देख्यो * मजबसि नाम सफल करि लेख्यो ॥
लेहौ कहा जाय प्रभु तामें * परिहौ नाय राज्य विपतामें ॥
निरख्यो गोकुल बाल कन्हाई * घरघर माखन खात चुराई ॥
नाम कर्म गुण गावो नीके * परम मधुर सुखदायक जीके ॥
नन्दराय उत्सव किमि कीन्हौं * कैसे दान द्विजनको दीन्हौं ॥
कैसे गोपी जन सुनि धाई * कैसे पट भूषण पहिराई ॥
कैसे गोप ग्वाल सब आये * नृत्यत भेष विचित्र बनाये ॥
कैसे दधिकी कीच मचाई * मन सब भई अनन्द बधाई ॥
बाल बिनोद कौनविधि कीन्हो * कैसे गोवर्द्धन कर लीन्हो ॥
कैसे दधिको दान चुकायो * शरद रास सुख किन उपजायो ॥
यह रस प्रेमकथा जिन लावो * अपनी नीरस कथा बहावो ॥
निगम नेति निगुणको ध्यावै * क्यों नहिं प्रगट दरश चितलावै ॥

दो०–भावतहैं जो कृष्णको, योग सो हमसों देरि ॥
उद्धव सब तनु खेहकरि, सुमति होय करि पेरि ॥

सो०–सब अँग करिके कान, बैठो मनहिं चटोरिके ॥
तजहु ज्ञान अभिमान, तौ यह अर्थ सुनावहीं ॥

नहीं जटा नहिं भस्म लगावैं * रूँधे श्वास न शृंग बजावैं ॥
नहीं वेद नहिं पढहिं पुराना * शम दम नेम न संयम ध्याना ॥
हम श्री गोकुलचन्द्र अराध्यो * प्रेम योग तप निमों साध्यो ॥
मन वच क्रम और नहिं जाने * लोक वेद दुख सुख भ्रममानें ॥
मानपमान निंद कुल करसी * अग्नि औ गुरु जन कर सरसी ॥

१ भ्रमरोंको २ राख

हननि ताप चहुँ दिशि तनु देखो * पियत धूम उपदीम विशेषो ॥
हरि सुप्रेम मदन जगवदन * कर्म धर्म वासना निकंदन ॥
हमनु समाधि प्रीति वानिक्हरि * अंग माधुरी हृदय रही धरि ॥
निरखत रहत निमेष न त्यागत * यह अनुराग योग नित जागत ॥
सगुण रूप रंग रस रागे * भ्रुकुटि नैन नैनन लगि लागे ॥
हँसनप्रकाश सुमुख कुंडल द्युति * शशि अरु सूर देखियेउ युति ॥
मुरली अधर मधुर सुर गाजै * शब्द अनाद स्वइ ध्वनि बाजै ॥

दो०–वर्षत रस रुचि मन भचे, रह्यो परम सचमान ॥
अति अगाध सुख सद्मको, पद आनन्द समान ॥

सो०–मद्य दियो रतिपैन, भजन ज्ञान हरिको हमैं ॥
गुरू करै अब कौन, कौन सुनै फीको मतो ॥

उद्धव मजकी रीति विहारी * भये विवश निज नेम बिसारी ॥
लाग्यो कहन धन्य मजबाला * जिनके सवस मदनगोपाला ॥
धन्य धन्य यह प्रेम तुम्हारो * भक्ति सिखाय मोहि निस्तारो ॥
तुम मम गुरु मैं दास तुम्हारो * धन्य कृष्णपद दृढ मन धारो ॥
मैं जड़ कीन्हो और उपाइ * अब तुम दरश भक्ति निज पाइ ॥
उद्धव आयो योग सिखावन * सीखे प्रेमभक्ति अति पावन ॥
भये मम रस प्रम विशाला * लागे गावन गुणगोपाला ॥
लोटत कबहुँ कुंजमें जाइ * कबहूँ विटैपन भेंटत धाई ॥
कबहूँ मन रज शीश चढावै * कबहू गोपिन पद शिर नावै ॥
पुनिपुनि कहत धन्य मजनारी * धन्य ग्वाल गैया वनचारी ॥
धन्य भूमि यह सुखद सुहावन * धन्य धाम वृंदावन पावैन ॥
ऐसे प्रेम मगन मन फूल्यो * कोहों किन आयो सुधि भूल्यो ॥

१ हँसी २ सूर्य ३ वृक्ष ४ पवित्र

दो०-उद्धव मन आनन्द अति, लखिकै प्रेम विलास ॥
आयोहौ दिन दोयको, बीति गये षटमास ॥

सो०-जब उपज्यो उर शोच, वचन कृष्णके सुरति करि ॥
मनमें भयो सकोच, बोल्यो हो प्रभु वेग ल्यहिं ॥

तब उपगसुत रथहि पलान्यो * मथुरा चलवेको अतुरान्यो ॥
उद्धव जात गोपिकन जानी * आई धाय सकल अकुलानी ॥
तब उद्धव सवको शिरनाई * हाथ जोरिकै विनय सुनाई ॥
अब ल्यहिं देवि अनुग्रह कीजै * जाऊँ कृष्णपै आयसु दीजै ॥
मैं सेवक जैसो उनकेरो * त्यों जानिये आपनो चेरो ॥
कह्यो जु मैं कछु तुमसों आइ * कृष्ण कहेते करि ढिठाइ ॥
सो अपराध क्षमा अब कीजै * है प्रसन्न यह आशिष दीजै ॥
जासों कृष्ण करैं ल्यहिं दाया * रहै प्रीति तुम चरण अमाया ॥
करौं बडाई कहा तुम्हारी * ऐसी निर्मल न बुद्धि हमारी ॥
कृष्ण सदा तुम्हरो यश गावैं * जाको अंत वेद नहिं पावैं ॥
कबहुँक सुरत करत मम रहियो * जानि आपनो जनहित गहियो ॥
सुनि उद्धवकी निर्मल बानी * भइ विवश सब तिय सुख मानी ॥

दो०-क्यों नहिं उद्धवजी कहो, ऐसे वचन विचारि ॥
अन्त बड़े सब भाँति तुम, हम निदान व्रजनारि ॥

सो०-होय न शील समान, लघु दीरघ ताते भये ॥
भृगु कीन्हों अपमान, श्रीपति कर भूषण लियो ॥

कहाँ गरल्सें वचन हमारे * यह अति शीतल मृदुल तुम्हारे ॥
तुम दिन कह्यो हमैं गुरुमानी * तरन उपाय वेदनिधि वानी ॥

---

१ महीने २ वैष्णव ३ निर्मल ४ विष

हम गँवारि उल्टी सब बूझी * कही कटुक तुममों जो सूझी ॥
लोक वेद छोड़यो हम जैसो * तासो फल भुगतेहैं तैसो ॥
कहा करै मन बहु समझाऊँ * श्याम दरशबिन सुरन नहिं पाऊँ॥
दुर्लभ दरश तुम्हारो हमको * कहिये जान कौन विधि तुमरो ॥
करिके कृपा कीजियो सोई * जैसे दरश श्यामको होई ॥
देखतही या तनुको दहिबो * ममय पाय हरि आगे कहिबो ॥
घोष बसनकी चूक हमारी * मन नहिं धरै लाल गिरिधारी ॥
जानि हमैं अति दीन दुखारी * करहि कृपा मन गुणहिं विचारी ॥
आवन अवधि कहीही जोई * धरिहैं सुरति वचनकी सोई ॥
बहुत कहा कहिये ब्रजराजहि * करिहैं बाँह गहेकी लाजहि ॥

दो०-प्रभु दीननपति दीनहित, यही हमारे आश ॥
कबहुँक दर्श दिखायके, हरिहैं लोचन प्यास ॥

सो०-ऐसे कहि ब्रजबाम, भईं विरहसागर मगन ॥
उद्धव करि परणाम, आये यशुमति नन्दपै ॥

माँगी बिदा जोरिकर दोऊ * तुमसम धन्य और नहिं कोऊ ॥
राम कृष्ण करि सुत जिन पाये * बाल भावकरि गोद खिलाये ॥
धनि गोकुल धनि गोकुल वासी * कियै प्रेमवश जिन अविनाशी ॥
कृपाकरी स्वहि कृष्ण पठायो * जाते दरश सबनको पायो ॥
अब तुम मोको देहु निदेशू * जाय कृष्णसों कहीं सँदेशू ॥
सुनि सप्रीति उद्धवकी बाता * नन्द बबा अरु यशुमति माता ॥
उमग्यो प्रेम नयन जलबाढ़े * भये जोरिकर आगे ठाढे ॥
उर बल श्याम विरहकी पीरा * कहत संदेश बहत दृगनीरा ॥
उद्धव हरिसों कहियो जाई * यशुदाकी आशीष सुनाई ॥

१ जो मिल न सके. २ समुद्र ३ आज्ञा ४ उदाई ५ आसू

कमलनयन सुंदर सुखदाई * कोटि युगन जीवहु दोऊ भाई ॥
कहियो बहुरि इती समुझाई * तुमबिन दुखित यशोमति माई ॥
इतनी दया मातपे कीजे * एक बार दरशन फिर दीजे ॥

दो०–नन्द दोहनी भरि दई, कह्यो नयन भरि नीर ॥
वा धौरीको दूध यह, भावत हो बलबीर ॥

सो०–दई यशोमति माय, मुरली ललित गोपालकी ॥
उद्धव दीजो जाय, प्यारीही अति लालकी ॥

॥ अथ उद्धवजीकी मथुरागमनलीला ॥

उद्धव लै माथे धरलीनी * लखि शुभप्रीति दंडवत कीनी ॥
चल्यो योगकी नाव बुडाई * व्हैगयो आप गोप ब्रज आई ॥
जाय कृष्णपद शीश नवायो * प्रभु सादरहै कंठ लगायो ॥
कहिये सखा कुशलसो आये * ब्रजमें जाय बहुत दिन लाये ॥
नंदबबा अरु यशुमति माई * कहो कौनविधि देखे जाई ॥
बसत प्राण मोहीमें जिनके * कैसे दिन बीततहैं तिनके ॥
कहा दशा ब्रजगोपिनकेरी * जिनके प्रीति निरंतर मेरी ॥
उद्धव समुझत ब्रजकी बाता * भये प्रेमवश पुलकित गाता ॥
भूल्यो यदुपति नाम बडाई * कह्यो सुनौ गोपाल गुसाई ॥
कहौं कहा प्रभु तुम्हैं सुनाई * ब्रजकी रीति कही नहिं जाइ ॥
कृपाकरी मोहिं तहाँ पठायो * ब्रजवासिनको दरश दिखायो ॥
जादिन गयो तुम्है शिरनाई * पहुँच्यो साँझ गोकुलहि जाइ ॥

दो०–दूरहिते लखि रथ ध्वजा, अरु पट पीत रसाल ॥
जानि तुम्हैं आवत हरषि, धाये गोपी ग्वाल ॥

१ शरीर २ मुझको ३ प्रसन्न हुए

सो०-रथपर मोहिं निहार, रहे ठगेसे थकि सबै ॥
चली दृगनभरि धार, रहे मुरछि व्याकुल धरणि ॥

भये विकल सब आशाटूटे * विरह घात झुरझे फिर फूटे ॥
जब तुम्हार पठयो म्वहिं जान्यों * लै नन्दसदनमाहिं सनमान्यो ॥
तुमविन यशुमति परम दुखारी * बूझी कुशल सराम तुम्हारी ॥
तृषित चातकी ज्यों अकुलानी * कृष्ण कृष्ण लागी ववबानी ॥
वारहिं वार यहै पछिताही * प्रभु प्रभाव हम जान्यो नाहीं ॥
बांधे ऊखल तनक दहीको * अब कसकत वमनी सोहीको ॥
ब्रज अब शून्य विना मनमोहन * परम अभागी गई न गोहन ॥
ठाढ़ी रहा ठगोरा लाइ * विरधवयँस तजिगये कन्हाई ॥
दशरथ प्राण तन सुतलागी * मैं देखतही रही अभागी ॥
अब न तु एसेही मरि जैहों * बहुरि न श्यामहिं कँनियाँ लैहाँ ॥
यों तुम्हरे हित यशुमति माता * अतिहिं दीन दुखित विलखाता ॥
नदहु सुमिरन तुम गुणग्रामा * बीती निशा चारहू यामा ॥

दो०-यद्यपि मैं बोधे बहुत, तुम विन कछु न स्वहात ॥
तिनकी दशा विलोकि म्वहिं, युगसम बीती रात ॥

सो०-नद यशोदहि पाय, गयो प्रात वृषभानुपुर ॥
सुनि सब आईं धाय, धाम काम तजि बाम तहँ ॥

मोहिं तुम्हारो निज जन जानी * सनमान्यो सबही सुख मानी ॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारे * भइ प्रमवश सुरत सम्हारे ॥
शिथिल अग भरि आये नयना * पूछी कुशल सुगदगदवयना ॥
जब मैं कह्यो सँदरा तुम्हारो * सुनतहिं आयो सवन पन्यारो ॥

१ आंखोंसे २ पृथ्वी ३ बूढी उमर ४ गोद ५ गोहन

बीती घरिक धीर उर आन्यो * मेरो कह्यो साँच नहिं मान्यों ॥
दूषण सब कुबिजाको दीन्हों * कछुक परेखो तुमसों कीन्हों ॥
तिनकी बात न जात बखानी * प्रेम पन्थ वे सकल सयानी ॥
वह रसरीति देखि उनकेरी * कटक कथा लागी म्वहि फेरी ॥
यद्यपि मैं बहु विधि समुझाई * ग्रन्थ युक्ति सब कथा सुनाई ॥
नहिवे में न कछू मकराख्यो * भयो पवन ज्यों भुसमें भाष्यो ॥
ज्ञानपथ जो श्रीमुख बानी * सो सब तिनको भई कहानी ॥
वहदक यही बनाइ अनेका * उनके दृढ़ व्रत पतिव्रतएका ॥

दो०–गही एकहि गहन उन, मेटि वेदविधि नीति ॥
गोपमेप भजि साँवरे, रही विश्वभरि जीति ॥

सो०–नहिं सीखैं शिख आन, जो विधि[1] जाहि सिखावहीं ॥
तुमहूँ बड़े सुजान, उहां जाहु तो जानहू ॥

क्षमा करो आयसु जो पाऊँ * तौ अपनी सब विपति सुनाऊं ॥
योगकथा कहि अबलनमाहीं * होवै इतो दुःख क्यों नाहीं ॥
मैं निर्गुण गुण एक बखानो * सोऊ पूरो कहि नहिं जानो ॥
वे सब उमगे वैरिधि ज्योंहीं * जामें थाह न पाऊँ क्योंही ॥
कहौं एक मैं पहरेक माहीं * वे कोटिक क्षणमें कहि जाहीं ॥
कौन कौनको उत्तर आवै * सुनत सबै उनहींको भावै ॥
प्रेम प्रीति उनकी लखि बाँकी * धरी रही सब बात यहांकी ॥
रह्यो चकित जिमि मनकी ऊलैं * जैसे हरिण चौकरी भूलैं ॥
वे पारत पटिया मो शीशा * सिखवौं काहि योग जगदीशा ॥
वे पटनेचा सबल सभाऊ * मैं शठ बारह सरी पढ़ाऊँ ॥

---

१ पशा २ विधाता ३ समुद्र

अवलैन वचन सुनतही मेरे * भई अग्नि ज्यों घृतकेगेरे ॥
बहुतभाँति करि मै सब याँची * एकै अंग न कोऊ काँची ॥

दो०–सगुण प्रेम दृढ उन गह्यो, यथा पपीहा पैद ॥
जानि लेहु प्रभु तुम यहाँ, कहा निरोगहिं वैद ॥

सो०–तिन्हैं निरंतर ध्यान, श्याम राम अंबुंज नयन ॥
लागत फीको ज्ञान, अवलोकत उनको भजन ॥

मैं देख्यो पटमास खोजकर * एकैरीति सबै ब्रज घरघर ॥
ज्यों कुरुखेत दिये बाढत धन * त्या अधिकात प्रेमनित तुम तन ॥
प्रकट तुह्मारे गुण चित दीन्हे * देह गेह अर्पण सब कीन्हे ॥
कोऊ कहत गये गोचारन * कोउ कहगये अघासुर मारन ॥
कोऊ कहत इंद्रजल जाई * गोवर्धन कर लियो कन्हाई ॥
कोऊ कहत यमुन सुनि काली * नाथन गये ताहि वैनमाली ॥
घरघर दुहत कहत कोउ बाला * कोउ कह वन खेलत नँदलाला ॥
कोऊ कहत कुटिल लंपट हरि * बसे जायरी धौं काके घरि ॥
एक कहत वन वेणु बजावैं * चली सुनत यों कहि उठि धावैं ॥
ऐसी लीला प्रकट बखानै * मेरो कह्यो न कोऊ मानैं ॥
हरि मानी निजमति घटज्ञानी * सुनि लीन्ही उनकी मैं बानी ॥
प्रीति रीति लखि तहाँ डुलान्यो * नाथ तुम्हारी सुँरति भुलान्यो ॥

दो०–तुमसों आवन कहिगयो, वेगहि ब्रजते नाथ ॥
उन लखि उनसों हैलग्यो, गावन उनके साथ ॥

सो०–बीत गये पट मास, समुझि परी आयो कहाँ ॥
तब उपज्यो जिय त्रास, भाज चलो दै आन कहि॥

---

१ स्त्रियोंने. २ सदा. ३ कमल ४ भगवान. ५ याद.

बहुरि कहा मोकों सुख वैसो * रसलीला विनोद व्रज कैसो ॥
सहन न बनै देखतहि भावै * यह सुख बडभागी सरपावै ॥
बस्यो न पाँचो दिन उनमाहीं * तासु नाम नगमाहिं वृथाहीं ॥
नहिं श्रुति शेष ब्रह्म सुख पायो * जो रस व्रज गोपिन मिलि गायो ।
निरखत यदपि यहाँ यह सूरत * तदपि नाय उतही मन पूरत ॥
वैरही मुकुट गुंजकी माला * मुख मुरली ध्वनि वेणु विशाला ॥
आगे धेनु रेणुमण्डित तन * तिरछी चितवन चारु हरण मन॥
गोपी ग्वालनसों हरि बोलत * खेलत सात हँसत व्रज डोलत ॥
तब वह सुख समुझत मन भावै * इत यह छबि कछु कहत न आवै
तुम्हरी अकथ कथा तुम जानो * मैं कह समुझों मूढ अयानो ॥
हियमें मोहिं बहुत यह शाले * तुम तौ प्रभु करुणाके आले ॥
होत कठोर कठिन मन काहे * बनत कौन विधि बिनानिवाहे ॥

दो०–निगम कहत यश भक्तके, पूरण सब सुख साज ॥
करि सुदृष्टि व्रज पेखिये, गहो विरहकी लाज ॥

सो०–अतिहि दुखित तनु क्षीन, व्रजवासी तुम विरहवश
तुम तन धन मन लीन, रटत चातकी ज्यों सबै ॥

यहाँ कहा गति प्रभु राधाकी * जैसी विरह व्यथा बाधाकी ॥
भूषण बिन अति क्षीण शरीरा * वसन मलीन श्रवत दृग नीरा ॥
सुधि बुधि कछू देहकी नाहीं * रहत बावरी ज्यों घरमाहीं ॥
कबहुक कृष्ण कृष्ण रट लावैं * कबहुक नाम आपनो गावैं ॥
निशिदिशि अति दाह तृण जैसे * सहन विरहदुख दुहदिशि तैसे ॥
रहत न कबहूं शीतल ताई * कबहूं रहत मौन शिरनाई ।

सूखी निमि मेलनी विन पानी * जुगवत यत्न न सखा सदानी ॥
तृणके अग्र ओसकण जैसे * आशा अवधि प्राण तनु तैसे ॥
अचरज मोहि बड़ो यह आवै * प्रभु तुमको कैसो यह भावै ॥
करुणामय प्रभु अन्तर्यामी * भक्तन हित तनुधारी स्वामी ॥
वेगि कृपाकरि दरशन दीजै * व्रज जन मरत ज्याय सब लीजै

दो०–यह मुरली दै बिलखिकै, कह्यो यशोमति माय ॥
एक बार हित नन्दके, दरश दिखावहिं आय ॥
सो०–तिन गैयनको श्याम, आप चराई हेत करि ॥
बहुरि न आई धाम, फिरती कुञ्जनमें फिरत ॥

सुनिकै प्रभु उद्धवके बैना * उमँगे प्रेम भरे दोउ नैना ॥
व्रजजनप्रीति आय उरशाली * भये विवश तन प्रण प्रतिपाली ॥
लै उठाय मुरली उर लाई * धरि मनध्यान रहे अरगाई ॥
सहज स्वभाव कृपालुहि ऐसे * होत तुरत जैसनको तैसे ॥
पुनिहिं व्रजकहि छाँडि उसासू * पोंछ पीत पट नयनसों आँसू ॥
उद्धवसों यों वचन सुनाये * भले सँदेशा लिपटे व्रज आये ॥
मनमें यों प्रभु कियो विचारा * व्रज भक्तन मम रूप अधारा ॥
मेरे मुक्ति बडी निधि मोह * सोवै नहीं आदरत कोई ॥
ताते जो जनके मन भावै * सोइ मोहि करत बनि आवै ॥
भक्ताधीन सो पर्ण हमारे * व्रजवासी मोको अतिप्यारे ॥
सदा बसत ताते व्रजमाहीं * इन सम मोहि और रितु नाहीं ॥
सब समरथ प्रभु सब गुणसागर * व्रजवासी जनके सुखसागर ॥

१ हर्षशिनी २ मित्र

बहुरि कहाँ मोकों सुख वैसो * रसलीला निनोद ब्रज कैसो ॥
कहत न बनै देखतहि भावै * यह सुख बडभागी सखपावै ॥
बस्यो न पाँचो दिन उनमाहीं * तासु जन्म जगमाहिं वृथाहीं ॥
नहिं श्रुति शेष महा सुख पायो * जो रस व्रज गोपिन मिलि गायो॥
निरखत यदपि यहाँ यह सूरत * तदपि जाय उतही मन पूरत ॥
वैरही मुकुट गुञ्जकी माला * मुख मुरली ध्वनि वेणु विशाला ॥
आगे धेनु रेनुमण्डित तन * तिरछी चितवन चारु हरण मन॥
गोपी ग्वालनसों हरि बोलत * खेलत खात हँसत ब्रज डोलत ॥
तब वह सुख समुझत मन भावै * इत यह लखि कछु कहत न आवै ॥
तुम्हरी अकथ कथा तुम जानो * मै कह समुझों मूढ अयानो ॥
हियमें मोहि बहुत यह शाले * तुम तौ प्रभु करुणाके आले ॥
होत कठोर कठिन मन काहे * बनत कौन विधि विनानिवाहे ॥

दो०–निगम कहत यश भक्तके, पूरण सब सुख साज ॥
करि सुदृष्टि ब्रज पेखिये, गहो विरहकी लाज ॥

सो०–अतिहि दुखित तनु क्षीन, ब्रजबासी तुम विरहवश ॥
तुम तन धन मन लीन, रटत चातकी लौं सबै ॥

कहौं कहा गति प्रभु राधाकी * जैसी विरह व्यथा बाधाकी ॥
भूषण विन अति क्षीण शरीरा * बसन मलीन श्रॅवत दृग नीरा ॥
सुधि बुधि कछू देहकी नाहीं * रहत बावरी ज्यों घरमाहीं ॥
कबहुँक कृष्ण कृष्ण रट लावै * कबहुँक नाम आपनो गावै ॥
बिबिदिशि अग्नि काठ कृमि जैसे * सहत विरहदुख दुहँदिशि वैसे ॥
रहत न कबौंहू शीतल ताई * कबहूँ रहत मौन शिरनाई ॥
गृहजन देखि दरति दुख पावैं * नहिं कछु सुनति कोटि समुझावैं ॥

१ वेद २ मोरपक्ष ३ विरमिरी ४ निकलनहैं

सूखी जिमि नेलनी[1] बिन पानी * ज्ञुपवत यन्न न सखा सयानी ॥
तृणके अग्र ओसकण जैसे * आशा अवधि प्राण तनु तैसे ॥
अचरज मोहिं बडो यह आवै * प्रभु तुमको कैसो यह भावै ॥
करुणामय प्रभु अन्तर्यामी * भक्तन हित तनुधारी स्वामी ॥
वेगि कृपाकरि दर्शन दीजै * ब्रज जन मरत ज्याय सब लीजै

दो०-यह मुरली दै बिलखिकै, कह्यो यशोमति माय ॥
एक बार हित नन्दके, दरश दिखावहिं आय ॥
सो०-जिन गैयनको श्याम, आप चराई हेत करि ॥
बहुरि न आई धाम, बिहरी कुंजनमें फिरत ॥

सुनिकै प्रभु उद्धवके बैना * उमँगे प्रेम भरे दोउ नैना ॥
ब्रजजनप्रीति आय उरशाली * भये विवश जन प्रण प्रतिपाली ॥
लै उठाय मुरली उर लाई * धरि मनध्यान रहे अरगाई ॥
सहज स्वभाव कृपालुहि ऐसे * होत तुरत जैसनको तैसे ॥
पुनिहा ब्रजबहि छाँडि उसासू * पोंछ पीत पट जलसों आँसू ॥
उद्धवसों यों वचन सुनाये * भले सखा[2] शिघरे मन भाये ॥
मनमें यों प्रभु कियो विचारा * ब्रज भक्तन मम रूप अधारा ॥
मेरे मुक्ति बडी निधि सोई * सोवे नहीं आदरत कोई ॥
ताते जो जनके मन भावै * सोई मोहिं करत बनि आवै ॥
भक्ताधीन मो पणे हमारे * ब्रजवासी मोको अतिप्यारे ॥
सदा वसत ताते ब्रजमाहीं * इन सम मोहिं और हितु नाहीं ॥
सब समरथ प्रभु सब गुणनागर * ब्रजवासी जनके सुखसागर ॥

---

१ कमलिनी २ मित्र

दो०–मन करि हरि व्रजमें रहे, मिलि व्रजजन मनसाथ ॥
तनकहि देवन काजहित, भये द्वारकानाथ ॥

सो०–सदा बसत व्रज श्याम, नटवर वेणु मुरली धरे ॥
व्रज जन पूरण काम, कोटि काम लावण्य निधि[1] ॥

बसत सदा व्रज कुँवर कन्हाई * व्रजवासी जनके सुखदाई ॥
कृष्ण प्रेम मूरति व्रजनारी * कबहू नहीं कृष्णते न्यारी ॥
नित्य नवल नित वनहिं विहारा * व्रज विलास नित नवल उदारा ॥
नित्य धाम वृन्दावन पावन * नित्य रास रस परम सुहावन ॥
शिवसनकादि शेष ज्यहि ध्यावैं * सुर नर मुनि सब ध्यान लगावैं ॥
व्रज गोपिनकी महत बडाई * एक समय ब्रह्मा सब गाई ॥
भृगु नारद आदिक जे भक्ता * पूछत भये विनय संयुक्ता ॥
तिनसों विधि यहि भाँति बखानो * वेद ऋचा सब व्रजतिय जानो ॥
इन सम सत्य कहौं तुम पाहा * मो शिव शेषरु लक्ष्मी नाहीं ॥
नहीं कृष्णते इक क्षण न्यारी * इनते और न कोउ अधिकारी ॥
इनके भाव कृष्ण जो ध्यावैं * प्रीति रीति दृढ़ करि मन लावैं ॥
नारि पुरुष कोऊ किन होई * वेद ऋचा पावै गति सोई ॥

दो०–परसे इनकी चरणरज, वृन्दावन महिमाहिं ॥
सोऊ गति इनकी लहै, यामें संशय नाहिं ॥

सो०–यों विधि कही बुझाय, महिमा व्रज गोपीनकी ॥
व्यास कही सो गाय, पावन बृहतपुराणमें ॥

ताते भृगु आदिक नारद मुनि * इन्द्रादिक सुर शिव ब्रह्मा पुनि ॥
अरु हरिभक्त जगतगत अहहीं * वृन्दावन रज वाञ्छितरहहीं ॥

१ शरीर २ सुंदरता ३ समुद्र ४ पवित्र ५ पवित्र

ब्रजरज अति दुर्लभ श्रुति गावै * बड़भागी जन तेई पावै ॥
चित धरि सोई ब्रज रस रासा * ब्रजविलास गायो ब्रजदासा ॥
कृष्ण चरित ब्रजवन निकुंजको * सार सकल सुख सुकृत पुंजको ॥
सार ज्ञान विज्ञान ध्यानको * वेद शास्त्र अरु स्मृति पुराणको ॥
सार बहुरि इतिहास भजनको * योग जाप अरु यज्ञ जननको ॥
सार अमित मुनि संत मतनको* हरि पदपकज प्रेम यतनको ॥
सार जन्म अरु सुगति मुक्तिको* परमानन्दरु विमलै भक्तिको ॥
सार सकल रस रसिकाईको * परम मधुर सुन्दरताईको ॥
सार सारको परम सुहायो * ब्रजविलास भक्तन मन भायो ॥
सहितस्वभाव प्रीति जो गैहै * ते जन गति गोपिनकी पैहैं ८

छं०—यह ब्रजविलास हुलास सो नर, भारि सुनि जे गाइहैं
सीखैं सिखावैं पढै रुचिकर, प्रेम मन उपजाइहैं ॥
धरि भाव भरता कृष्णसों, उर कमल पद चित लाइहैं
हरि राधिकापरसादते ब्रज, गोपिका गति पाइहैं ॥
पूरण सकल मनकाम सबसुख, धाम यश नँद लालको
दलन दारिद दोष दुख भय, भय हरण यम कालको॥
यह जानि गावहिं सुजन गायो, जिनन आनँद पदलह्यो
तिनकी कृपा बल पाय कछु, इकदास ब्रजवासी कह्यो॥

दो०—ब्रजविलास ब्रजराजको, कोकहि पावै पार ॥
भक्त भाव गावत भगत, भजन प्रभाव विचार ॥
सिगरे दोहा आठसौ, और नवासी आहिं ॥

---

१ वेद. २ उर. ३ निर्मल